

# Anna Karenina

Leo Tolstoy

# Table of Contents

|                                   |           |
|-----------------------------------|-----------|
| <b><u>Anna Karenina</u></b> ..... | <b>1</b>  |
| <u>Leo Tolstoy</u> .....          | 1         |
| <b><u>PART ONE</u></b> .....      | <b>6</b>  |
| <u>I.</u> .....                   | 6         |
| <u>II.</u> .....                  | 7         |
| <u>III.</u> .....                 | 10        |
| <u>IV.</u> .....                  | 12        |
| <u>V.</u> .....                   | 16        |
| <u>VI.</u> .....                  | 21        |
| <u>VII.</u> .....                 | 22        |
| <u>VIII.</u> .....                | 24        |
| <u>IX.</u> .....                  | 26        |
| <u>X.</u> .....                   | 30        |
| <u>XI.</u> .....                  | 35        |
| <u>XII.</u> .....                 | 38        |
| <u>XIII.</u> .....                | 40        |
| <u>XIV.</u> .....                 | 41        |
| <u>XV.</u> .....                  | 46        |
| <u>XVI.</u> .....                 | 47        |
| <u>XVII.</u> .....                | 48        |
| <u>XVIII.</u> .....               | 50        |
| <u>XIX.</u> .....                 | 54        |
| <u>XX.</u> .....                  | 58        |
| <u>XXI.</u> .....                 | 61        |
| <u>XXII.</u> .....                | 62        |
| <u>XXIII.</u> .....               | 65        |
| <u>XXIV.</u> .....                | 67        |
| <u>XXV.</u> .....                 | 70        |
| <u>XXVI.</u> .....                | 74        |
| <u>XXVII.</u> .....               | 75        |
| <u>XXVIII.</u> .....              | 77        |
| <u>XXIX.</u> .....                | 79        |
| <u>XXX.</u> .....                 | 80        |
| <u>XXXI.</u> .....                | 82        |
| <u>XXXII.</u> .....               | 84        |
| <u>XXXIII.</u> .....              | 85        |
| <u>XXXIV.</u> .....               | 87        |
| <b><u>PART TWO</u></b> .....      | <b>90</b> |
| <u>I.</u> .....                   | 90        |
| <u>II.</u> .....                  | 92        |
| <u>III.</u> .....                 | 95        |
| <u>IV.</u> .....                  | 97        |
| <u>V.</u> .....                   | 99        |
| <u>VI.</u> .....                  | 101       |
| <u>VII.</u> .....                 | 105       |
| <u>VIII.</u> .....                | 109       |
| <u>IX.</u> .....                  | 111       |
| <u>X.</u> .....                   | 113       |

# Table of Contents

## Anna Karenina

|                    |     |
|--------------------|-----|
| <u>XI.</u>         | 113 |
| <u>XII.</u>        | 115 |
| <u>XIII.</u>       | 116 |
| <u>XIV.</u>        | 120 |
| <u>XV.</u>         | 123 |
| <u>XVI.</u>        | 126 |
| <u>XVII.</u>       | 129 |
| <u>XVIII.</u>      | 131 |
| <u>XIX.</u>        | 132 |
| <u>XX.</u>         | 135 |
| <u>XXI.</u>        | 137 |
| <u>XXII.</u>       | 140 |
| <u>XXIII.</u>      | 143 |
| <u>XXIV.</u>       | 145 |
| <u>XXV.</u>        | 148 |
| <u>XXVI.</u>       | 151 |
| <u>XXVII.</u>      | 153 |
| <u>XXVIII.</u>     | 155 |
| <u>XXIX.</u>       | 158 |
| <u>XXX.</u>        | 160 |
| <u>XXXI.</u>       | 162 |
| <u>XXXII.</u>      | 164 |
| <u>XXXIII.</u>     | 168 |
| <u>XXXIV.</u>      | 170 |
| <u>XXXV.</u>       | 174 |
| <u>PART THREE.</u> | 177 |
| <u>I.</u>          | 178 |
| <u>II.</u>         | 179 |
| <u>III.</u>        | 181 |
| <u>IV.</u>         | 185 |
| <u>V.</u>          | 188 |
| <u>VI.</u>         | 191 |
| <u>VII.</u>        | 194 |
| <u>VIII.</u>       | 196 |
| <u>IX.</u>         | 198 |
| <u>X.</u>          | 200 |
| <u>XI.</u>         | 203 |
| <u>XII.</u>        | 205 |
| <u>XIII.</u>       | 207 |
| <u>XIV.</u>        | 210 |
| <u>XV.</u>         | 212 |
| <u>XVI.</u>        | 215 |
| <u>XVII.</u>       | 217 |
| <u>XVIII.</u>      | 220 |
| <u>XIX.</u>        | 222 |
| <u>XX.</u>         | 224 |
| <u>XXI.</u>        | 225 |

# Table of Contents

## Anna Karenina

|                   |     |
|-------------------|-----|
| <u>XXII.</u>      | 230 |
| <u>XXIII.</u>     | 233 |
| <u>XXIV.</u>      | 235 |
| <u>XXV.</u>       | 236 |
| <u>XXVI.</u>      | 238 |
| <u>XXVII.</u>     | 241 |
| <u>XXVIII.</u>    | 245 |
| <u>XXIX.</u>      | 248 |
| <u>XXX.</u>       | 250 |
| <u>XXXI.</u>      | 252 |
| <u>XXXII.</u>     | 254 |
| <u>PART FOUR.</u> | 256 |
| <u>I.</u>         | 256 |
| <u>II.</u>        | 258 |
| <u>III.</u>       | 259 |
| <u>IV.</u>        | 263 |
| <u>V.</u>         | 265 |
| <u>VI.</u>        | 268 |
| <u>VII.</u>       | 271 |
| <u>VIII.</u>      | 273 |
| <u>IX.</u>        | 276 |
| <u>X.</u>         | 280 |
| <u>XI.</u>        | 283 |
| <u>XII.</u>       | 284 |
| <u>XIII.</u>      | 287 |
| <u>XIV.</u>       | 289 |
| <u>XV.</u>        | 292 |
| <u>XVI.</u>       | 294 |
| <u>XVII.</u>      | 296 |
| <u>XVIII.</u>     | 301 |
| <u>XIX.</u>       | 303 |
| <u>XX.</u>        | 307 |
| <u>XXI.</u>       | 308 |
| <u>XXII.</u>      | 310 |
| <u>XXIII.</u>     | 313 |
| <u>PART FIVE.</u> | 316 |
| <u>I.</u>         | 316 |
| <u>II.</u>        | 319 |
| <u>III.</u>       | 323 |
| <u>IV.</u>        | 324 |
| <u>V.</u>         | 328 |
| <u>VI.</u>        | 330 |
| <u>VII.</u>       | 331 |
| <u>VIII.</u>      | 334 |
| <u>IX.</u>        | 335 |
| <u>X.</u>         | 337 |
| <u>XI.</u>        | 338 |

# Table of Contents

## Anna Karenina

|                 |     |
|-----------------|-----|
| <u>XII.</u>     | 341 |
| <u>XIII.</u>    | 342 |
| <u>XIV.</u>     | 344 |
| <u>XV.</u>      | 346 |
| <u>XVI.</u>     | 348 |
| <u>XVII.</u>    | 350 |
| <u>XVIII.</u>   | 353 |
| <u>XIX.</u>     | 355 |
| <u>XX.</u>      | 357 |
| <u>XXI.</u>     | 361 |
| <u>XXII.</u>    | 363 |
| <u>XXIII.</u>   | 366 |
| <u>XXIV.</u>    | 367 |
| <u>XXV.</u>     | 370 |
| <u>XXVI.</u>    | 372 |
| <u>XXVII.</u>   | 374 |
| <u>XXVIII.</u>  | 377 |
| <u>XXIX.</u>    | 379 |
| <u>XXX.</u>     | 382 |
| <u>XXXI.</u>    | 384 |
| <u>XXXII.</u>   | 386 |
| <u>XXXIII.</u>  | 388 |
| <u>PART SIX</u> | 393 |
| <u>I.</u>       | 393 |
| <u>II.</u>      | 395 |
| <u>III.</u>     | 399 |
| <u>IV.</u>      | 401 |
| <u>V.</u>       | 403 |
| <u>VI.</u>      | 404 |
| <u>VII.</u>     | 407 |
| <u>VIII.</u>    | 411 |
| <u>IX.</u>      | 414 |
| <u>X.</u>       | 416 |
| <u>XI.</u>      | 419 |
| <u>XII.</u>     | 424 |
| <u>XIII.</u>    | 426 |
| <u>XIV.</u>     | 427 |
| <u>XV.</u>      | 430 |
| <u>XVI.</u>     | 433 |
| <u>XVII.</u>    | 436 |
| <u>XVIII.</u>   | 439 |
| <u>XIX.</u>     | 441 |
| <u>XX.</u>      | 444 |
| <u>XXI.</u>     | 447 |
| <u>XXII.</u>    | 449 |
| <u>XXIII.</u>   | 454 |
| <u>XXIV.</u>    | 457 |

# Table of Contents

## Anna Karenina

|                    |     |
|--------------------|-----|
| <u>XXV.</u>        | 460 |
| <u>XXVI.</u>       | 461 |
| <u>XXVII.</u>      | 463 |
| <u>XXVIII.</u>     | 464 |
| <u>XXIX.</u>       | 467 |
| <u>XXX.</u>        | 470 |
| <u>XXXI.</u>       | 473 |
| <u>XXXII.</u>      | 475 |
| <u>PART SEVEN.</u> | 478 |
| <u>I.</u>          | 478 |
| <u>II.</u>         | 480 |
| <u>III.</u>        | 483 |
| <u>IV.</u>         | 485 |
| <u>V.</u>          | 488 |
| <u>VI.</u>         | 489 |
| <u>VII.</u>        | 490 |
| <u>VIII.</u>       | 493 |
| <u>IX.</u>         | 495 |
| <u>X.</u>          | 497 |
| <u>XI.</u>         | 500 |
| <u>XII.</u>        | 502 |
| <u>XIII.</u>       | 503 |
| <u>XIV.</u>        | 506 |
| <u>XV.</u>         | 509 |
| <u>XVI.</u>        | 510 |
| <u>XVII.</u>       | 512 |
| <u>XVIII.</u>      | 515 |
| <u>XIX.</u>        | 517 |
| <u>XX.</u>         | 518 |
| <u>XXI.</u>        | 521 |
| <u>XXII.</u>       | 525 |
| <u>XXIII.</u>      | 526 |
| <u>XXIV.</u>       | 528 |
| <u>XXV.</u>        | 531 |
| <u>XXVI.</u>       | 535 |
| <u>XXVII.</u>      | 537 |
| <u>XXVIII.</u>     | 539 |
| <u>XXIX.</u>       | 542 |
| <u>XXX.</u>        | 543 |
| <u>XXXI.</u>       | 545 |
| <u>PART EIGHT.</u> | 547 |
| <u>I.</u>          | 547 |
| <u>II.</u>         | 549 |
| <u>III.</u>        | 552 |
| <u>IV.</u>         | 553 |
| <u>V.</u>          | 554 |
| <u>VI.</u>         | 556 |

## Table of Contents

### Anna Karenina

|               |     |
|---------------|-----|
| <u>VII.</u>   | 558 |
| <u>VIII.</u>  | 559 |
| <u>IX.</u>    | 560 |
| <u>X.</u>     | 561 |
| <u>XI.</u>    | 563 |
| <u>XII.</u>   | 565 |
| <u>XIII.</u>  | 567 |
| <u>XIV.</u>   | 568 |
| <u>XV.</u>    | 571 |
| <u>XVI.</u>   | 574 |
| <u>XVII.</u>  | 576 |
| <u>XVIII.</u> | 577 |
| <u>XIX.</u>   | 579 |

# Anna Karenina

Leo Tolstoy

translated by Constance Garnett

This page copyright © 2001 Blackmask Online.

<http://www.blackmask.com>

- PART ONE

- I.
- II.
- III.
- IV.
- V.
- VI.
- VII.
- VIII.
- IX.
- X.
- XI.
- XII.
- XIII.
- XIV.
- XV.
- XVI.
- XVII.
- XVIII.
- XIX.
- XX.
- XXI.
- XXII.
- XXIII.
- XXIV.
- XXV.
- XXVI.
- XXVII.
- XXVIII.
- XXIX.
- XXX.
- XXXI.
- XXXII.
- XXXIII.
- XXXIV.

- PART TWO

- I.



- II.
- III.
- IV.
- V.
- VI.
- VII.
- VIII.
- IX.
- X.
- XI.
- XII.
- XIII.
- XIV.
- XV.
- XVI.
- XVII.
- XVIII.
- XIX.
- XX.
- XXI.
- XXII.
- XXIII.
- XXIV.
- XXV.
- XXVI.
- XXVII.
- XXVIII.
- XXIX.
- XXX.
- XXXI.
- XXXII.
- XXXIII.
- XXXIV.
- XXXV.

• PART THREE

- I.
- II.
- III.
- IV.
- V.
- VI.
- VII.
- VIII.
- IX.
- X.
- XI.
- XII.
- XIII.
- XIV.

- XV.
- XVI.
- XVII.
- XVIII.
- XIX.
- XX.
- XXI.
- XXII.
- XXIII.
- XXIV.
- XXV.
- XXVI.
- XXVII.
- XXVIII.
- XXIX.
- XXX.
- XXXI.
- XXXII.

• PART FOUR

- I.
- II.
- III.
- IV.
- V.
- VI.
- VII.
- VIII.
- IX.
- X.
- XI.
- XII.
- XIII.
- XIV.
- XV.
- XVI.
- XVII.
- XVIII.
- XIX.
- XX.
- XXI.
- XXII.
- XXIII.

• PART FIVE

- I.
- II.
- III.
- IV.

- V.
- VI.
- VII.
- VIII.
- IX.
- X.
- XI.
- XII.
- XIII.
- XIV.
- XV.
- XVI.
- XVII.
- XVIII.
- XIX.
- XX.
- XXI.
- XXII.
- XXIII.
- XXIV.
- XXV.
- XXVI.
- XXVII.
- XXVIII.
- XXIX.
- XXX.
- XXXI.
- XXXII.
- XXXIII.

• PART SIX

- I.
- II.
- III.
- IV.
- V.
- VI.
- VII.
- VIII.
- IX.
- X.
- XI.
- XII.
- XIII.
- XIV.
- XV.
- XVI.
- XVII.
- XVIII.
- XIX.

- XX.
- XXI.
- XXII.
- XXIII.
- XXIV.
- XXV.
- XXVI.
- XXVII.
- XXVIII.
- XXIX.
- XXX.
- XXXI.
- XXXII.

• PART SEVEN

- I.
- II.
- III.
- IV.
- V.
- VI.
- VII.
- VIII.
- IX.
- X.
- XI.
- XII.
- XIII.
- XIV.
- XV.
- XVI.
- XVII.
- XVIII.
- XIX.
- XX.
- XXI.
- XXII.
- XXIII.
- XXIV.
- XXV.
- XXVI.
- XXVII.
- XXVIII.
- XXIX.
- XXX.
- XXXI.

• PART EIGHT

- I.

- II.
- III.
- IV.
- V.
- VI.
- VII.
- VIII.
- IX.
- X.
- XI.
- XII.
- XIII.
- XIV.
- XV.
- XVI.
- XVII.
- XVIII.
- XIX.

## PART ONE

*Vengeance is mine; I will repay*

### I.

Happy families are all alike; every unhappy family is unhappy in its own way.

Everything was in confusion in the Oblonskys' house. The wife had discovered that the husband was carrying on an intrigue with a French girl, who had been a governess in their family, and she had announced to her husband that she could not go on living in the same house with him. This position of affairs had now lasted two days, and not only the husband and wife themselves, but all the members of their family and the household, were painfully conscious of it. All the members of the family and the household felt that there was no sense in their living together, and that even stray people brought together by chance in any inn had more in common with one another than they, the members of the family and the household of the Oblonskys. The wife did not leave her own apartments; the husband had not been home for two days. The children ran wild all over the house; the English governess quarreled with the housekeeper, and wrote to a friend asking her to look out for a new employ for her; the man cook had walked off the day before just at dinnertime; the kitchenmaid and the coachman had given warning.

Two days after the quarrel, Prince Stepan Arkadyevich Oblonsky Stiva, as he was called in the fashionable world, woke up at his usual hour, that is, at eight o'clock in the morning, not in his wife's bedroom, but on the leather-covered sofa in his study. He turned over his stout, well-cared-for person on the springy sofa, as though he would sink into a long sleep again; he vigorously embraced the pillow on its other side and buried his face in it; but all at once he jumped up, sat up on the sofa, and opened his eyes.

"Yes, yes, how was it now?" he thought, going over his dream. "Yes, how was it? Yes! Alabin was giving a dinner at Darmstadt; no, not Darmstadt, but something American. Yes, but then, Darmstadt was in America. Yes, Alabin was giving a dinner on glass tables, and the tables sang, *Il mio tesoro* no, not *Il mio tesoro*, but

## Anna Karenina

something better, and there were some sort of little decanters on the table, and, at the same time, these decanters were women," he recalled.

Stepan Arkadyevich's eyes twinkled gaily, and he pondered with a smile. "Yes, it was jolly, very jolly. There was a great deal more that was delightful, only there's no putting it into words, or even expressing it in one's waking thoughts." And noticing a gleam of light peeping in beside one of the woolen-cloth curtains, he cheerfully dropped his feet over the edge of the sofa and felt about with them for his slippers, a present on his last birthday, worked for him by his wife on gold-colored morocco. And, as he used to do for the last nine years, he stretched out his hand, without getting up, toward the place where his dressing gown always hung in the bedroom. And thereupon he suddenly remembered that he was not sleeping in his wife's room, but in his study, as well as the reason; the smile vanished from his face and he knit his brows.

"Ah, ah, ah! Oo!..." he muttered, recalling everything that had happened. And again every detail of his quarrel with his wife was present to his imagination, all the hopelessness of his position, and, worst of all, his own fault.

"Yes, she won't forgive me, and she can't forgive me. And the most awful thing about it is that it's all my fault all my fault, though I'm not to blame. That's the point of the whole tragedy," he reflected. "Oh, oh, oh!" he kept repeating in despair, as he remembered the acutely painful sensations caused him by this quarrel.

Most unpleasant of all was the first minute when, on coming from the theater, good-humored and lighthearted, with a huge pear in his hand for his wife, he had not found his wife in the drawing room, to his surprise, nor in the study, but saw her at last in her bedroom, clutching the unlucky letter that revealed everything.

She, his Dolly, forever fussing and worrying over household details, and limited in her ideas, as he considered, was sitting motionless with the letter in her hand, looking at him with an expression of horror, despair and indignation.

"What is this? This?" she asked, pointing to the letter.

And at this recollection, Stepan Arkadyevich, as is so often the case, was not so much annoyed at the fact itself as at the way in which he had met his wife's words.

There happened to him at that instant that which happens to people when they are unexpectedly caught in something very disgraceful. He did not succeed in adapting his face to the situation in which he was placed toward his wife by the discovery of his fault. Instead of being hurt, denying, defending himself, begging forgiveness; instead of remaining indifferent even anything would have been better than what he did do his face utterly without his volition ("cerebral reflexes," mused Stepan Arkadyevich, who was fond of physiology) had assumed its habitual good-humored, and therefore stupid, smile.

This stupid smile he could not forgive himself. Catching sight of that smile Dolly shuddered as though from physical pain, broke out with her characteristic heat into a flood of cruel words, and rushed out of the room. Since then she had refused to see her husband.

"It's all the fault of that stupid smile," Stepan Arkadyevich was thinking.

"But what's to be done? What's to be done?" he kept saying to himself in despair and found no answer.

## II.

Stepan Arkadyevich was a truthful man in his relations with himself. He was incapable of self-deception and of

## Anna Karenina

persuading himself that he repented his conduct. He could not at this date repent the fact that he, handsome, susceptible to love, a man of thirty-four, was not in love with his wife, the mother of five living and two dead children, and only a year younger than himself. All he repented was that he had not succeeded better in hiding this from his wife. But he felt all the difficulty of his position and was sorry for his wife, his children, and himself. Possibly he might have managed to conceal his sins better from his wife if he had anticipated that the knowledge of them would have had such an effect upon her. He had never clearly reflected on the subject, but he had vaguely conceived that his wife must long ago have suspected him of being unfaithful to her, and had shut her eyes to the fact. He had even supposed that she, a worn-out woman no longer young or good-looking, and in no way remarkable or uncommon merely a good mother ought from a sense of fairness to take an indulgent view. It had turned out quite the other way.

"Oh, it's awful! Oh dear, oh dear! Awful!" Stepan Arkadyevich kept repeating to himself, and he could think of nothing to be done. "And how well things were going up till now! How well we got on! She was contented and happy in her children; I never interfered with her in anything; I let her manage the children and the house just as she liked. True, it's bad her having been a governess in our house. That's bad! There's something common, vulgar, in flirting with one's governess. But what a governess!" (He vividly recalled the roguish black eyes of Mlle. Roland and her smile.) "But after all, while she was in the house, I kept myself in hand. And the worst of it all is that she's already... It seems as if ill luck would have it so! Oh, oh! But what, what is to be done?"

There was no solution, save that universal solution which life gives to all questions, even the most complex and insolvable: One must live in the needs of the day that is, forget oneself. To forget himself in sleep was impossible now, at least till nighttime; he could not go back now to the music sung by the decanter women; so he must forget himself in the dream of daily life.

"Then we shall see," Stepan Arkadyevich said to himself, and getting up he put on a gray dressing gown lined with blue silk, tied the tassels in a knot, and, drawing a deep breath of air into his broad chest, he walked to the window with his usual confident step, turning out his feet that carried his full frame so easily. He pulled up the blind and rang the bell loudly. It was at once answered by the appearance of an old friend, his valet, Matvei, carrying his clothes, his boots and a telegram. Matvei was followed by the barber with all the necessaries for shaving.

"Are there any papers from the board?" asked Stepan Arkadyevich, taking the telegram and seating himself at the looking glass.

"On the table," replied Matvei, glancing with inquiring sympathy at his master; and, after a short pause, he added with a sly smile:

"They've sent from the carriage jobber."

Stepan Arkadyevich made no reply, but merely glanced at Matvei in the looking glass. The glance, in which their eyes met in the looking glass, made it clear that they understood one another. Stepan Arkadyevich's eyes seemed to ask: "Why do you tell me that? Don't you know?"

Matvei put his hands in his jacket pockets, thrust out one leg, and gazed silently, with a good-humored, faint smile, at his master.

"I told them to come on Sunday, and till then not to trouble you or themselves for nothing," he said. He had obviously prepared the sentence beforehand.

Stepan Arkadyevich saw Matvei wanted to make a joke and attract attention to himself. Tearing open the telegram, he read it through, guessing at the words, misspelled as they always are in telegrams, and his face

brightened.

"Matvei, my sister Anna Arkadyevna will be here tomorrow," he said, checking for a minute the sleek, plump hand of the barber, cutting a pink path between his long, curly side whiskers.

"Thank God!" said Matvei, showing by this response that he, like his master, realized the significance of this arrival: Anna Arkadyevna, the sister his master was so fond of, might bring about a reconciliation between husband and wife.

"Alone, or with her husband?" inquired Matvei.

Stepan Arkadyevich could not answer, as the barber was at work on his upper lip, and he raised one finger. Matvei nodded at the looking glass.

"Alone. Is the room to be got ready upstairs?"

"Inform Darya Alexandrovna: where she orders."

"Darya Alexandrovna?" Matvei repeated, as though in doubt.

"Yes, inform her. Here, take the telegram; give it to her, and then do what she tells you."

"You want to try it out," Matvei guessed, but only said: "Yes, sir."

Stepan Arkadyevich was already washed and combed and ready to be dressed, when Matvei, stepping slowly in his creaky boots, came back into the room with the telegram in his hand. The barber had gone.

"Darya Alexandrovna told me to inform you that she is going away. 'Let him' that is you 'do as he likes,'" he said, laughing only with his eyes, and, putting his hands in his pockets, he watched his master with his head on one side. Stepan Arkadyevich was silent a minute. Then a good-humored and rather pitiful smile showed itself on his handsome face.

"Eh, Matvei?" he said, shaking his head.

"Never mind, sir; everything will come round," said Matvei.

"Come round?"

"Just so, sir."

"Do you think so? Who's there?" asked Stepan Arkadyevich, hearing the rustle of a woman's dress at the door.

"It's I," said a firm, pleasant feminine voice, and the stern, pockmarked face of Matrona Philimonovna, the nurse, was thrust in at the door.

"Well, what's the matter, Matriosha?" queried Stepan Arkadyevich, meeting her in the doorway.

Although Stepan Arkadyevich was completely in the wrong as regards his wife, and was conscious of this himself, almost everyone in the house (even the nurse, Darya Alexandrovna's chief ally) was on his side.

"Well, what now?" he asked cheerlessly.



## Anna Karenina

"Go to her, sir; own your fault again. Maybe God will aid you. She is suffering so, it's pitiful to see her; and besides, everything in the house is topsy-turvy. You must have pity, sir, on the children. Beg her forgiveness, sir. There's no help for it! One must pay the piper...."

"But she won't see me."

"You do your part. God is merciful; pray to God, sir pray to God."

"Come, that'll do, you can go," said Stepan Arkadyevich, blushing suddenly. "Well, now, let's dress," he turned to Matvei and resolutely threw off his dressing gown.

Matvei was already holding up the shirt like a horse's collar, and, blowing off some invisible speck, he slipped it with obvious pleasure over the well-cared-for person of his master.

### III.

When he was dressed, Stepan Arkadyevich sprinkled some scent on himself, pulled down his shirt cuffs, distributed into his pockets his cigarettes, pocketbook, matches and watch, with its double chain and seals, and, shaking out his handkerchief, feeling himself clean, fragrant, healthy and physically at ease, in spite of his misfortune, he walked with a slight swing of each leg into the dining room, where coffee was already waiting for him and, alongside of his cup, the letters and papers from the office.

He read the letters. One was very unpleasant, from a merchant who was buying a forest on his wife's property. To sell this forest was absolutely essential; but at present, until he was reconciled with his wife, the subject could not be discussed. The most unpleasant thing of all was that his pecuniary interests should in this way enter into the question of his reconciliation with his wife. And the idea that he might be led on by his interests, that he might seek a reconciliation with his wife on account of the sale of the forest that idea hurt him.

When he had finished his letters, Stepan Arkadyevich moved the office papers close to him, rapidly looked through two cases, made a few notes with a big pencil, and, pushing away the papers, turned to his coffee. Sipping it, he opened a still damp morning paper and began to read it.

Stepan Arkadyevich took in and read a liberal paper, not an extreme one, but one advocating the views held by the majority. And in spite of the fact that science, art and politics had no special interest for him, he firmly held those views on all these subjects which were held by the majority and by his paper, and he only changed them when the majority changed them or, more strictly speaking, he did not change them, but they imperceptibly changed of themselves within him.

Stepan Arkadyevich had not chosen his political opinions or his views these political opinions and views had come to him of themselves just as he did not choose the shapes of his hat and coat, but simply accepted those that were being worn. And for him, living in a certain society owing to the need, ordinarily developed at years of discretion, for some degree of mental activity to have views was just as indispensable as to have a hat. If there was a reason for his preferring liberal to conservative views, which were held also by many of his circle, it arose not from his considering liberalism more rational, but from its being in closer accordance with his manner of life. The liberal party said that in Russia everything was wrong, and indeed Stepan Arkadyevich had many debts and was decidedly short of money. The liberal party said that marriage was an institution quite out of date, and that it stood in need of reconstruction, and indeed family life afforded Stepan Arkadyevich little gratification, and forced him into lying and hypocrisy, which were so repulsive to his nature. The liberal party said, or rather allowed it to be understood, that religion was only a curb to keep in check the barbarous classes of the people, and indeed Stepan Arkadyevich could not stand through even a short service without his legs aching, and could never

## Anna Karenina

make out what was the object of all the terrible and high-flown language about another world when life might be so very amusing in this world. And with all this Stepan Arkadyevich, who liked a merry joke, was fond of embarrassing some plain man by saying that if one were to pride oneself on one's origin, one ought not to stop at Rurik and disown the founder of the line the monkey. And so liberalism had become a habit of Stepan Arkadyevich, and he liked his newspaper, as he did his cigar after dinner, for the slight fog it diffused in his brain. He read the leading article, which maintained that it was quite senseless in our day to raise an outcry that radicalism was threatening to swallow up all conservative elements, and that the government ought to take measures to crush the revolutionary hydra; that, on the contrary, "in our opinion the danger lies not in that imaginary revolutionary hydra, but in the obstinacy of traditionalism clogging progress," etc., etc. He read another article, too, a financial one, which alluded to Bentham and Mill, and dropped some innuendoes reflecting on the ministry. With his characteristic quick-wittedness he caught the drift of each innuendo, divined whence it came, at whom and on what ground it was aimed, and that afforded him, as it always did, a certain gratification. But today that gratification was embittered by Matrona Philimonovna's advice and the unsatisfactory state of his household. He read, too, that Count Beist was rumored to have left for Wiesbaden, and that one need have no more gray hair, and of the sale of a light carriage, and of a young person seeking a situation; but these items of information did not give him, as usual, a quiet, ironical gratification.

Having finished the paper, a second cup of coffee and a roll and butter, he got up, shaking the crumbs off his waistcoat; and, squaring his broad chest, he smiled joyously; not because there was anything particularly agreeable in his mind the joyous smile was evoked by a good digestion.

But this joyous smile at once recalled everything to him, and he grew thoughtful.

Two childish voices (Stepan Arkadyevich recognized the voices of Grisha, his youngest boy, and Tania, his eldest girl) were heard outside the door. They were carrying something, and dropped it.

"I told you not to sit passengers on the roof," said the little girl in English; "there, pick them up!"

"Everything's in confusion," thought Stepan Arkadyevich; "there are the children running about by themselves." And going to the door, he called them. They left off the box that represented a train, and came in to their father.

The little girl, her father's favorite, ran up boldly, embraced him and hung laughingly on his neck, enjoying as she always did the well-known smell of scent that came from his whiskers. At last the little girl kissed his face, which was flushed from his stooping posture and beaming with tenderness, loosed her hands, and was about to run away again; but her father held her back.

"How is mamma?" he asked, passing his hand over his daughter's smooth, soft little neck. "Good morning," he said, smiling to the boy, who had come up to greet him.

He was conscious that he loved the boy less, and always tried to be fair; but the boy felt it, and did not smile responsively to his father's chilly smile.

"Mamma? She is up," answered the girl.

Stepan Arkadyevich sighed.

"That means she hasn't slept again all night," he thought.

"Well, is she cheerful?"

## Anna Karenina

The little girl knew that there was a quarrel between her father and mother, and that her mother could not be cheerful, and that her father must be aware of this, and that he was pretending when he asked about it so lightly. And she blushed for her father. He at once perceived it, and blushed too.

"I don't know," she said. "She did not say we must do our lessons, but she said we were to go for a walk with Miss Hoole to grandmamma's."

"Well, go, Tania, my darling. Oh, wait a minute, though," he said, still holding her and stroking her soft little hand.

He took off the mantelpiece, where he had put it yesterday, a little box of sweets, and gave her two, picking out her favorites, a chocolate and a bonbon.

"For Grisha?" said the little girl, pointing to the chocolate.

"Yes, yes." And still stroking her little shoulder, he kissed the nape of her neck, and let her go.

"The carriage is ready," said Matvei; "but there's someone to see you with a petition."

"Been here long?" asked Stepan Arkadyevich.

"Half an hour or so."

"How many times have I told you to tell me at once?"

"One must let you drink your coffee in peace, at least," said Matvei, in the affectionately gruff tone with which it was impossible to be angry.

"Well, show the person up at once," said Oblonsky, frowning with vexation.

The petitioner, the widow of a staff captain Kalinin, came with a request impossible and unreasonable; but Stepan Arkadyevich, as he generally did, made her sit down, heard her to the end attentively without interrupting her, and gave her detailed advice as to how and to whom to apply, and even wrote for her, easily and clearly, in his large, sprawling calligraphic and legible hand, a little note to a personage who might be of use to her. Having got rid of the staff captain's widow, Stepan Arkadyevich took his hat and stopped to recollect whether he had forgotten anything. It appeared that he had forgotten nothing except what he wanted to forget his wife.

"Ah, yes!" He bowed his head, and his handsome face assumed a melancholy expression. "To go, or not to go?" he said to himself; and an inner voice told him he must not go, that nothing could come of it but falsity; that to amend, to set right their relations was impossible, because it was impossible to make her attractive again and able to inspire love, or to make him an old man, not susceptible to love. Except deceit and lying nothing could come of it now; and deceit and lying were opposed to his nature.

"It must be some day, though: it can't go on like this," he said, trying to give himself courage. He set straight his chest, took out a cigarette, lighted it, took two whiffs at it, flung it into a mother-of-pearl ash tray, and with rapid steps walked through the drawing room and opened the other door into his wife's bedroom.

## IV.

Darya Alexandrovna, in a dressing jacket, and with her now scanty hair (once luxuriant and beautiful) fastened up

## Anna Karenina

with hairpins on the nape of her neck, with a sunken, thin face and large, startled eyes, which looked prominent from the thinness of her face, was standing, among a litter of all sorts of things scattered all over the room, before an open bureau, from which she was taking something. Hearing her husband's steps, she stopped, looking toward the door, and trying in vain to give her features a severe and contemptuous expression. She felt she was afraid of him, and afraid of the coming interview. She was just attempting to do what she had attempted to do ten times already in these last three days to sort out the children's things and her own, so as to take them to her mother's and again she could not bring herself to do this; but now again, as each time before, she kept saying to herself, that things cannot go on like this, that she must undertake something, punish him, put him to shame, avenge on him some little part at least of the suffering he had caused her. She still continued to tell herself that she should leave him, but she was conscious that this was impossible; it was impossible because she could not get out of the habit of regarding him as her husband and of loving him. Besides this, she realized that if even here in her own house she could hardly manage to look after her five children properly, they would be still worse off where she was going with all of them. As it was, even in the course of these three days, the youngest was unwell from being given unwholesome soup, and the others had almost gone without their dinner the day before. She was conscious that it was impossible to go away; but, cheating herself, she went on all the same sorting out her things and pretending she was going.

Seeing her husband, she dropped her hands into the drawer of the bureau as though looking for something, and only looked round at him when he had come quite up to her. But her face, to which she tried to give a severe and resolute expression, expressed bewilderment and suffering.

"Dolly!" he said in a subdued and timid voice. He had hunched up his shoulders and tried to look pitiful and humble, but for all that he was radiant with freshness and health. In a rapid glance she scanned his figure, beaming with freshness and health. "Yes, he is happy and content!" she thought; "while I... And that disgusting good nature which everyone likes him for and praises I hate that good nature of his," she thought. Her mouth stiffened, the muscles of the cheek trembled on the right side of her pale, nervous face.

"What do you want?" she said in a rapid, deep, unnatural voice.

"Dolly!" he repeated, with a quiver in his voice. "Anna is coming today."

"Well, what is that to me? I can't see her!" she cried.

"But you must, really, Dolly..."

"Go away, go away, go away!" she shrieked, without looking at him, as though this shriek were called up by physical pain.

Stepan Arkadyevich could be calm when he thought of his wife, he could hope that everything would come round, as Matvei expressed it, and had been able to go on reading his paper and drinking his coffee; but when he saw her tortured, suffering face, heard the tone of her voice, submissive to fate and full of despair, his breath was cut short and a lump came to this throat, and his eyes began to shine with tears.

"My God! What have I done? Dolly! For God's sake!... You know..." He could not go on; there was a sob in his throat.

She shut the bureau with a slam, and glanced at him.

"Dolly, what can I say?... One thing: forgive me... Remember, cannot nine years of our life atone for an instant..."

## Anna Karenina

She dropped her eyes and listened, expecting what he would say, as if beseeching him in some way or other to make her believe differently.

"...instant of passion..." he said, and would have gone on, but at that word, as at a pang of physical pain, her lips stiffened again, and again the muscles of her right cheek worked.

"Go away, go out of the room!" she shrieked still more shrilly, "and don't talk to me of your passions and your vilenesses."

She tried to go out, but tottered, and clung to the back of a chair to support herself. His face relaxed, his lips became puffy; tears welled up in his eyes.

"Dolly!" he said, sobbing now. "For mercy's sake, think of the children; they are not to blame! I am to blame punish me then, make me expiate my fault. Anything I can do, I am ready to do! I am to blame, no words can express how much I am to blame! But, Dolly, forgive me!"

She sat down. He listened to her hard, heavy breathing, and he was unutterably sorry for her. She made several attempts to speak, but could not. He waited.

"You remember the children, Stiva, to play with them; but I remember, and know that they go to ruin now," she said obviously one of the phrases she had more than once repeated to herself in the course of the last three days.

She had called him "Stiva," and he glanced at her with gratitude and moved to take her hand, but she drew back from him with aversion.

"I remember the children, and for that reason I would do anything in the world to save them; but I don't myself know the means. By taking them away from their father, or by leaving them with a vicious father yes, a vicious father.... Tell me, after what... has happened, can we live together? Is that possible? Do tell me is it possible?" she repeated, raising her voice. "After my husband, the father of my children, enters into a love affair with his own children's governess...."

"But what's to be done? What's to be done?" he kept saying in a pitiful voice, not knowing what he was saying, as his head sank lower and lower.

"You are loathsome to me, repulsive!" she shrieked, getting more and more heated. "Your tears mean nothing! You have never loved me; you have neither a heart nor a sense of honor! You are hateful to me, disgusting, a stranger yes, a complete stranger!" With pain and wrath she uttered the word so terrible to herself stranger.

He looked at her, and the fury expressed in her face alarmed and amazed him. He did not understand that it was his pity for her that exasperated her. She saw in him compassion for her, but not love. "No, she hates me. She will not forgive me," he thought.

"It is awful Awful!" he said.

At that moment in the next room a child began to cry; probably it had fallen down. Darya Alexandrovna listened, and her face suddenly softened.

She seemed pulling herself together for a few seconds, as though she did not know where she was nor what she was doing, and, getting up rapidly, she moved toward the door.

## Anna Karenina

"Well, she loves my child," he thought, noticing the change of her face at the child's cry, "my child: how can she hate me then?"

"Dolly, one word more," he said, following her.

"If you follow me, I will call in the servants, and the children! Let them all know you are a scoundrel! I am going away at once, and you may live here with your mistress!"

And she went out, slamming the door.

Stepan Arkadyevich sighed, mopped his face, and with a subdued tread walked out of the room. "Matvei says everything will come round; but how? I don't see the least chance of it. Ah, ah, how horrible it is! And how vulgarly she shouted," he said to himself, remembering her shrieks and the words "scoundrel" and "mistress." "And very likely the maids were listening! Horribly vulgar, horribly." Stepan Arkadyevich stood a few seconds alone, wiped his eyes, thrust out his chest and walked out of the room.

It was Friday, and in the dining room the watchmaker, a German, was winding up the clock. Stepan Arkadyevich remembered his joke about this punctual, bald watchmaker, "that the German was wound up for a whole lifetime himself, to wind up watches," and he smiled. Stepan Arkadyevich was fond of a nice joke. "And maybe it will come round!" That's a good expression, 'come round,' he thought. "I must tell that."

"Matvei!" he shouted. "Arrange everything with Marya in the sitting room for Anna Arkadyevna," he said to Matvei when he came in.

"Yes, sir."

Stepan Arkadyevich put on his fur coat and went out on the front steps.

"You won't dine at home?" said Matvei, seeing him off.

"It all depends. But here's for the housekeeping," he said, taking ten roubles from his pocketbook. "Will it be enough?"

"Enough or not enough, we must make it do," said Matvei, slamming the carriage door and going back to the steps.

Darya Alexandrovna meanwhile having pacified the child, and knowing from the sound of the carriage that he had gone off, went back to her bedroom. It was her only refuge from the household cares which crowded upon her directly she went out from it. Even now, in the short time she had been in the nursery, the English governess and Matriona Philimonovna had succeeded in putting several questions to her, which did not admit of delay, and which only she could answer: "What were the children to put on for their walk? Should they have any milk? Should not a new cook be sent for?"

"Ah, let me alone, let me alone!" she said, and going back to her bedroom she sat down in the same place she had occupied when talking to her husband, clasping tightly her thin hands, her rings slipping down on her bony fingers, and fell to going over her recollections of the entire interview. "He has gone! But what has he finally arrived at with her?" she thought. "Can it be he sees her? Why didn't I ask him! No, no, reconciliation is impossible. Even if we remain in the same house, we are strangers strangers forever!" She repeated again with special significance the word so dreadful to her. "And how I loved him! my God, how I loved him!... How I loved him! And now don't I love him? Don't I love him more than before? The most horrible thing is," she began, but did not finish her thought, because Matriona Philimonovna put her head in at the door.

## Anna Karenina

"Let us send for my brother," she said; "he can get a dinner anyway, or we shall have the children getting nothing to eat till six again, like yesterday."

"Very well, I will come directly and see about it. But did you send for some new milk?"

And Darya Alexandrovna plunged into the duties of the day, and drowned her grief in them for a time.

### V.

Stepan Arkadyevich had learned easily at school, thanks to his excellent abilities, but he had been idle and mischievous, and therefore was one of the lowest in his class. But in spite of his habitually dissipated mode of life, his inferior grade in the service, and his comparative youth, he occupied the honorable and lucrative position of president of one of the government boards at Moscow. This post he had received through his sister Anna's husband, Alexei Alexandrovich Karenin, who held one of the most important positions in the ministry to which the Moscow office belonged. But if Karenin had not got his brother-in-law this berth, then through a hundred other personages—brothers, sisters, cousins, uncles and aunts—Stiva Oblonsky would have received this post or some other like it, together with the salary of six thousand absolutely needful for him, as his affairs, in spite of his wife's considerable property, were in a poor state.

Half Moscow and Peterburg were friends and relations of Stepan Arkadyevich. He was born in the midst of those who had been, and had become, the powerful ones of this world. One-third of the men in the government, the older men, had been friends of his father's, and had known him in pinafores; another third were his intimate chums, and the remainder were friendly acquaintances. Consequently the distributors of earthly blessings in the shape of posts, rents, concessions and such, were all his friends, and could not overlook one of their own set; and Oblonsky had no need to make any special exertion to get a lucrative post. He had only not to refuse things, not to show jealousy, not to be quarrelsome or take offense, all of which from his characteristic good nature he never did. It would have struck him as absurd if he had been told that he would not get a position with the salary he required, especially as he expected nothing out of the way; he only wanted what the men of his own age and standing did get, and he was no worse qualified for performing duties of this kind than any other man.

Stepan Arkadyevich was not merely liked by all who knew him for his good humor, his bright disposition and his unquestionable honesty; in him, in his handsome, radiant figure, his sparkling eyes, black hair and eyebrows, and his white and pink complexion, there was something which produced a physical effect of kindness and good humor on the people who met him. "Aha! Stiva! Oblonsky! The man himself!" was almost always said with a smile of delight on meeting him. Even though it happened at times that after a conversation with him it seemed that nothing particularly delightful had happened, the next day, and the next, everyone was just as delighted to meet him again.

After filling for two years the post of president of one of the government boards at Moscow, Stepan Arkadyevich had won the respect, as well as the liking, of his fellow officials, subordinates and superiors, and all who had had business with him. The principal qualities in Stepan Arkadyevich which had gained him this universal respect in the service consisted, in the first place, of his extreme indulgence for others, founded on a consciousness of his own shortcomings; secondly, of his perfect liberalism—not the liberalism he read of in the papers, but the liberalism that was in his blood, in virtue of which he treated all men perfectly equally and exactly the same, whatever their fortune or rank might be; and thirdly—the most important point—of his complete indifference to the business in which he was engaged, in consequence of which he was never carried away, and made no mistakes.

On reaching the offices of the board Stepan Arkadyevich, escorted by a deferential porter with a portfolio, went into his little private room, put on his uniform, and went into the board room. The clerks and officials all rose,

## Anna Karenina

greeting him with good-humored deference. Stepan Arkadyevich moved quickly, as always, to his place, shook hands with the members of the board, and sat down. He made a joke or two, and talked just as much as was consistent with due decorum, and began work. No one knew better than Stepan Arkadyevich how to hit on that exact limit of freedom, simplicity and official stiffness which is necessary for the agreeable conduct of business. A secretary, with the good-humored deference common to everyone in Stepan Arkadyevich's office, came up with papers, and began to speak in the familiar and easy tone which had been introduced by Stepan Arkadyevich.

"We have succeeded in getting the information from the government department of Penza. Here, would you care?..."

"You've got it at last?" said Stepan Arkadyevich, laying his finger on the paper. "Now, gentlemen..."

And the sitting of the board began.

"If they but knew," he thought, inclining his head with an important air and listening to the report, "what a guilty little boy their president was half an hour ago!" And his eyes were laughing during the reading of the report. Till two o'clock the sitting would go on without a break then there would be an interval and luncheon.

It was not yet two, when the large glass doors of the board room suddenly opened and someone came in.

All the members of the board, sitting at the table, from below the portrait of the Czar and from behind the mirror of justice, delighted at any distraction, looked round at the door; but the doorkeeper standing there at once drove out the intruder, and closed the glass door after him.

When the case had been read through, Stepan Arkadyevich got up and stretched, and by way of tribute to the liberalism of the times took out a cigarette, being in the board room, and went into his private room. Two of his board fellows, the old veteran in the service, Nikitin, and the Kammerjunker Grinevich, went in with him.

"We shall have time to finish after lunch," said Stepan Arkadyevich.

"To be sure we shall!" said Nikitin.

"A pretty sharp fellow this Fomin must be," said Grinevich of one of the persons taking part in the case they were examining.

Stepan Arkadyevich frowned at Grinevich's words, giving him thereby to understand that it was improper to pass judgment prematurely, and made him no reply.

"Who was it who came in?" he asked the doorkeeper.

"Some fellow, your excellency, sneaked in without permission directly my back was turned. He was asking for you. I told him: when the members come out, then..."

"Where is he?"

"Maybe he's gone into the passage, he was strolling here till now. That's he," said the doorkeeper, pointing to a strongly built, broad shouldered man with a curly beard, who, without taking off his sheepskin cap, was running lightly and rapidly up the worn steps of the stone staircase. One of the officials going down a lean fellow with a portfolio stood out of his way, looked disapprovingly at the legs of the running man, and then glanced inquiringly at Oblonsky.



## Anna Karenina

Stepan Arkadyevich was standing at the top of the stairs. His good-naturedly beaming face above the embroidered collar of his uniform beamed more than ever when he recognized the man coming up.

"Why, it's actually you, Levin, at last!" he said with a friendly mocking smile, gazing on the approaching man. "How is it you have deigned to look me up in this den?" said Stepan Arkadyevich and, not content with shaking hands, he kissed his friend. "Have you been here long?"

"I have just come, and very much wanted to see you," said Levin, looking about him shyly, and, at the same time, angrily and uneasily.

"Well, let's go into my room," said Stepan Arkadyevich, who knew his friend's sensitive and irritable shyness, and, taking his arm, he drew him along, as though guiding him through dangers.

Stepan Arkadyevich was on familiar terms with almost all his acquaintances, and called almost all of them by their Christian names: old men of sixty, boys of twenty, actors, ministers, merchants and adjutant generals, so that many of his intimate chums were to be found at the extreme ends of the social ladder, and would have been very much surprised to learn that they had, through the medium of Oblonsky, something in common. He was the familiar friend of everyone with whom he took a glass of champagne, and he took a glass of champagne with everyone, and when in consequence he met any of his disreputable chums, as he used in joke to call many of his friends, in the presence of his subordinates, he well knew how, with his characteristic tact, to diminish any possible disagreeable impression. Levin was not a disreputable chum, but Oblonsky, with his ready tact, felt that Levin fancied Oblonsky might not care to show his intimacy with him before subordinates, and so Stepan Arkadyevich made haste to take him off into his room.

Levin was almost of the same age as Oblonsky; their intimacy did not rest merely on champagne. Levin had been the friend and companion of his early youth. They were fond of one another in spite of the difference of their characters and tastes, as friends are fond of one another who have been together in early youth. But in spite of this, each of them as is often the way with men who have selected careers of different kinds though in discussion he would even justify the other's career, in his heart despised it. It seemed to each of them that the life he led himself was the only real life, and the life led by his friend was a mere phantasm. Oblonsky could not restrain a slight mocking smile at the sight of Levin. How often he had seen him come up to Moscow from the country where he was doing something, but what precisely Stepan Arkadyevich could never quite make out, and indeed took no interest in the matter. Levin arrived in Moscow always excited and in a hurry, rather ill at ease and irritated by his own want of ease, and for the most part with a perfectly new, unexpected view of things. Stepan Arkadyevich laughed at this, and liked it. In the same way Levin in his heart despised the town mode of life of his friend, and his official duties, which he laughed at and regarded as trifling. But the difference was that Oblonsky, since he was doing the same as everyone did, laughed assuredly and good-humoredly, while Levin laughed without assuredness and sometimes angrily.

"We have long been expecting you," said Stepan Arkadyevich, going into his room and letting Levin's hand go as though to show that here all danger was over. "I am very, very glad to see you," he went on. "Well, what now? How are you? When did you come?"

Levin was silent, looking at the unfamiliar faces of Oblonsky's two companions, and especially at the elegant Grinevich's hands with such long white fingers, such long yellow nails, curved at their end, and such huge shining studs on the shirt cuff, that apparently these hands absorbed all his attention, and allowed him no freedom of thought. Oblonsky noticed this at once, and smiled.

"Ah, to be sure, let me introduce you," he said. "My colleagues: Philip Ivanich Nikitin, Mikhail Stanislavich Grinevich" and turning to Levin "a Zemstvo member, a modern Zemstvo man, a gymnast who lifts five poods with one hand, a cattle breeder and sportsman, and my friend Constantin Dmitrievich Levin, the brother

of Sergei Ivanovich Koznishev."

"Delighted," said the veteran.

"I have the honor of knowing your brother, Sergei Ivanovich," said Grinevich, holding out his slender hand with its long nails.

Levin frowned, shook hands coldly, and at once turned to Oblonsky. Though he had a great respect for his half-brother, an author well known to all Russia, he could not endure it when people treated him not as Constantin Levin, but as the brother of the celebrated Koznishev.

"No, I am no longer a Zemstvo man. I have quarreled with them all, and don't go to the sessions any more," he said, turning to Oblonsky.

"You've been quick about it!" said Oblonsky with a smile. "But how? Why?"

"It's a long story. I will tell you some time," said Levin but began telling him at once. "Well, to put it shortly, I was convinced that nothing was really done by the Zemstvo councils, or ever could be," he began, as though someone had just insulted him. "On one side it's a plaything; they play at being a parliament, and I'm neither young enough nor old enough to find amusement in playthings; and on the other side" (he stammered) "it's a means for the coterie of the district to feather their nests. Formerly they did this through wardships and courts of justice, now they do it through the Zemstvo instead of taking the bribes, they take the unearned salary," he said, as hotly as though one of those present had opposed his opinion.

"Aha! You're in a new phase again, I see a conservative," said Stepan Arkadyevich. "However, we can go into that later."

"Yes, later. But I had to see you," said Levin, looking with hatred at Grinevich's hand.

Stepan Arkadyevich gave a scarcely perceptible smile.

"But you used to say you'd never wear European dress again," he said, gazing on Levin's new suit, obviously cut by a French tailor. "So! I see: a new phase."

Levin suddenly blushed, not as grown men blush, slightly, without being themselves aware of it, but as boys blush, feeling that they are ridiculous through their shyness, and consequently ashamed of it, and blushing still more, almost to the point of tears. And it was so strange to see this sensible, manly face in such a childish plight, that Oblonsky left off looking at him.

"Oh, where shall we meet? You know I want very much to talk to you," said Levin.

Oblonsky seemed to ponder.

"I'll tell you what: let's go to Gurin's to lunch, and there we can talk. I am free till three."

"No," answered Levin, after an instant's thought, "I have another visit to make."

"All right, then, let's dine together."

"Dine together? But I have nothing very particular just a word or two, a question; then a little chatting."

## Anna Karenina

"Well, let's have your word or two right now and we'll talk it over in the course of the dinner."

"Well, it's this," said Levin, "however it's of no importance."

His face suddenly assumed an expression of anger from the effort he was making to surmount his shyness.

"What are the Shcherbatskys doing? Everything as it used to be?" he said.

Stepan Arkadyevich, who had long known that Levin was in love with his sister-in-law, Kitty, gave a hardly perceptible smile, and his eyes sparkled merrily.

"You've said your word or two, but I can't answer in a few words, because... Excuse me for just a minute...."

A secretary came in, with respectful familiarity and the modest consciousness, characteristic of every secretary, of superiority to his chief in the knowledge of affairs; he went up to Oblonsky with some papers, and began, under pretense of asking a question, to explain some objection. Stepan Arkadyevich, without hearing him out, laid his hand genially on the secretary's sleeve.

"No, you do as I told you," he said, smoothing his remark with a smile, and with a brief explanation of his view of the matter he moved away the papers, and said: "So do it that way, if you please, Zakhar Nikitich."

The secretary retired in confusion. During the consultation with the secretary Levin had completely recovered from his embarrassment. He was standing with elbows on the back of a chair, and on his face was a look of ironical attention.

"I don't understand it I don't understand it," he said.

"What don't you understand?" said Oblonsky, smiling just as cheerfully, and picking up a cigarette. He expected some queer outburst from Levin.

"I don't understand what you are doing," said Levin, shrugging his shoulders. "How can you be serious about it?"

"Why not?"

"Why, because there's nothing in it."

"You think so yet we're overwhelmed with work."

"On paper. But, there, you've a gift for it," added Levin.

"That's to say, you think there's a lack of something in me?"

"Perhaps so," said Levin. "But all the same I admire your grandeur, and am proud to have such a great person as a friend. You've not answered my question, though," he went on, with a desperate effort looking Oblonsky straight in the face.

"Oh, that's all very well. You wait a bit, and you'll come to this yourself. It's very nice for you to have three thousand dessiatinas in the Karazinsky district, and such muscles, and the freshness of a girl of twelve; still you'll be one of us one day. Yes, as to your question, there is no change, but it's a pity you've been away so long."

"Oh, why so?" Levin queried, frightened.

## Anna Karenina

"Oh, nothing," responded Oblonsky. "We'll talk it over. But what's brought you up to town?"

"Oh, we'll talk about that, too, later on," said Levin, reddening again up to his ears.

"All right. I see," said Stepan Arkadyevich. "I should ask you to come to us, you know, but my wife's not quite well. But I'll tell you what: if you want to see them, they're sure now to be at the Zoological Gardens from four to five. Kitty skates. You drive along there, and I'll come and fetch you, and we'll go and dine somewhere together."

"Capital. So good—by till then."

"Now mind, you'll forget I know you! or rush off home to the country!" Stepan Arkadyevich called out laughing.

"No, truly!"

And Levin went out of the room, recalling only when he was in the doorway that he had forgotten to take leave of Oblonsky's colleagues.

"That gentleman must be a man of great energy," said Grinevich, when Levin had gone away.

"Yes, my dear sir," said Stepan Arkadyevich, nodding his head, "he's a lucky fellow! Three thousand dessiatinas in the Karazinsky district; everything before him; and what youth and vigor! Not like some of us."

"But why are you complaining, Stepan Arkadyevich?"

"Why, it goes hard with me, very bad," said Stepan Arkadyevich with a heavy sigh.

## VI.

When Oblonsky asked Levin what had brought him to town, Levin blushed, and was furious with himself for blushing, because he could not answer: "I have come to make your sister-in-law a proposal," though that was solely what he had come for.

The families of the Levins and the Shcherbatskys were old, noble Moscow families, and had always been on intimate and friendly terms. This intimacy had grown still closer during Levin's student days. He had both prepared for the university with the young Prince Shcherbatsky, the brother of Kitty and Dolly, and had entered at the same time with him. In those days Levin was a frequent visitor at the house of the Shcherbatskys, and he was in love with the Shcherbatsky household. Strange as it may appear, it was with the household, the family that Constantin Levin was in love, especially with the feminine half of the household. Levin did not remember his own mother, and his only sister was older than he was, so that it was in the Shcherbatskys' house that he saw for the first time that inner life of an old, noble, cultured and honorable family of which he had been deprived by the death of his father and mother. All the members of that family, especially the feminine half, were pictured by him, as it were, wrapped about with a mysterious poetical veil, and he not only perceived no defects whatever in them, but, under the poetical veil that shrouded them, he assumed the existence of the loftiest sentiments and every possible perfection. Why it was the three young ladies had one day to speak French, and the next English; why it was that at certain hours they played by turns on the piano, the sounds of which were audible in their brother's room above, where the students used to work; why they were visited by those professors of French literature, of music, of drawing, of dancing; why at certain hours all the three young ladies, with Mademoiselle Linon, drove in the coach to the Tverskoy boulevard, dressed in their satin cloaks, Dolly in a long one, Natalie in a half-long one, and Kitty in one so short that her shapely legs in tightly-drawn red stockings were visible to all beholders; why it

## Anna Karenina

was they had to walk about the Tverskoy boulevard escorted by a footman with a gold cockade in his hat all this and much more that was done in their mysterious world he did not understand, but he was sure that everything that was done there was very good, and he was in love precisely with the mystery of the proceedings.

In his student days he had all but been in love with the eldest, Dolly, but she was soon married to Oblonsky. Then he began being in love with the second. He felt, as it were, that he had to be in love with one of the sisters, only he could not quite make out which. But Natalie, too, had hardly made her appearance in the world when she married the diplomat Lvov. Kitty was still a child when Levin left the university. Young Shcherbatsky went into the navy, was drowned in the Baltic and Levin's visits to the Shcherbatskys, despite his friendship with Oblonsky, became less frequent. But when early in the winter of this year Levin came to Moscow, after a year in the country, and saw the Shcherbatskys, he realized which of the three sisters he was indeed destined to love.

One would have thought that nothing could be simpler than for him, a man of good family, rather rich than poor, and thirty-two years old, to make the young Princess Shcherbatskaia an offer of marriage; in all likelihood he would at once have been looked upon as a good match. But Levin was in love, and so it seemed to him that Kitty was so perfect in every respect, a creature so far above everything earthly, while he was a creature so low and so earthly that it could not even be conceived that other people and she herself could regard him as worthy of her.

After spending two months in Moscow in a state of befuddlement, seeing Kitty almost every day in society, into which he went so as to meet her, he abruptly decided that it could not be, and went back to the country.

Levin's conviction that it could not be was founded on the idea that in the eyes of her family he was a disadvantageous and worthless match for the charming Kitty, and that Kitty herself could not love him. In her family's eyes he had no ordinary, definite career and position in society, while his comrades by this time, when he was thirty-two, were already one a colonel, and another a professor, another director of a bank and railways, or chairman of a board, like Oblonsky. But he (he knew very well how he must appear to others) was a country gentleman, occupied in breeding cattle, shooting game and building barns; in other words, a fellow of no ability, who had not turned out well, and who was doing just what, according to the ideas of the world, is done by people fit for nothing else.

The mysterious, enchanting Kitty herself could not love such an ugly person as he conceived himself to be, and, above all, such an ordinary, in no way striking person. Moreover, his attitude to Kitty in the past the attitude of a grown-up person to a child, arising from his friendship with her brother seemed to him yet another obstacle to love. An ugly, good-natured man, as he considered himself, might, he supposed, be liked as a friend; but to be loved with such a love as that with which he loved Kitty, one would need to be handsome and, still more, a distinguished man.

He had heard that women often did care for ugly and ordinary men, but he did not believe it, for he judged by himself, and he could not himself have loved any but beautiful, mysterious and exceptional women.

But, after spending two months alone in the country, he was convinced that this was not one of those passions of which he had had experience in his early youth; that this feeling gave him not an instant's rest; that he could not live without deciding the question as to whether she would or would not be his wife; that his despair had arisen only from his own imaginings, and that he had no sort of proof that he would be rejected. So he had now come to Moscow with a firm determination to make a proposal, and get married if he were accepted. Or... he could not conceive what would become of him if he were rejected.

## VII.

On arriving in Moscow by a morning train, Levin had put up at the house of his elder half-brother, Koznishev.

After changing his clothes he went down to his brother's study, intending to talk to him at once about the object of his visit, and to ask his advice; but his brother was not alone. With him there was a well-known professor of philosophy, who had come from Charkov expressly to clear up a difference that had arisen between them on a very important philosophical question. The professor was carrying on a hot crusade against materialists. Sergei Koznishev had been following this crusade with interest, and after reading the professor's last article had written him a letter stating his objections. He accused the professor of making too great concessions to the materialists. And the professor had promptly appeared to argue the matter out. The point in discussion was the question then in vogue: Is there a line to be drawn between psychical and physiological phenomena in man? And if so, where?

Sergei Ivanovich met his brother with the smile of chilly friendliness he always had for everyone, and, introducing him to the professor, went on with the conversation.

A little man in spectacles, with a narrow forehead, tore himself from the discussion for an instant to greet Levin, and then went on talking without paying any further attention to him. Levin sat down to wait till the professor should go, but he soon began to get interested in the subject under discussion.

Levin had come across the magazine articles about which they were disputing, and had read them, interested in them as a development of the first principles of science, familiar to him when a natural science student at the university. But he had never connected these scientific deductions as to the origin of man as an animal, as to reflex action, biology and sociology, with those questions as to the meaning to himself of life and death, which had of late been more and more often in his mind.

As he listened to his brother's argument with the professor, he noticed that they connected these scientific questions with those spiritual problems that at times they almost touched on the latter; but every time they were close upon what seemed to him the chief point they promptly beat a hasty retreat, and plunged again into a sea of subtle distinctions, reservations, quotations, allusions and appeals to authorities, and it was with difficulty that he understood what they were talking about.

"I cannot admit it," said Sergei Ivanovich, with his habitual clearness and distinctness of expression, and elegance of diction. "I cannot in any case agree with Keiss that my whole conception of the external world has been derived from impressions. The most fundamental idea the idea of existence has not been received by me through sensation; indeed, there is no special sense organ for the transmission of such an idea."

"Yes, but they Wurst, and Knaust, and Pripassov would answer that your consciousness of existence is derived from the conjunction of all your sensations, that that consciousness of existence is the result of your sensations. Wurst, indeed, says plainly that, assuming there are no sensations, it follows that there is no idea of existence."

"I maintain the contrary," began Sergei Ivanovich.

But here it seemed again to Levin that, just as they were close upon the real point of the matter, they were again retreating, and he made up his mind to put a question to the professor.

"According to that, if my senses are annihilated, if my body is dead, I can have no existence of any sort?" he queried.

The professor, in annoyance, and, as it were, mental suffering at the interruption, looked round at the strange inquirer, more like a hauler of a barge than a philosopher, and turned his eyes upon Sergei Ivanovich, as though to ask: What's one to say to him? But Sergei Ivanovich, who had been talking with far less stress and one-sidedness than the professor, and who had sufficient breadth of mind to answer the professor, and at the same time to comprehend the simple and natural point of view from which the question was put, smiled and said:

## Anna Karenina

"That question we have no right to answer as yet...."

"We have not the requisite data," confirmed the professor, and he went back to his argument. "No," he said; "I would point out the fact that if, as Pripassov directly asserts, sensation is based on impression, then we are bound to distinguish sharply between these two conceptions."

Levin listened no more, and simply waited for the professor to go.

### VIII.

When the professor had gone, Sergei Ivanovich turned to his brother.

"Delighted that you've come. For how long? How's your farming getting on?"

Levin knew that his elder brother took little interest in farming, and only put the question in deference to him, and therefore he told him only about the sale of his wheat and money matters.

Levin had meant to tell his brother of his determination to get married, and to ask his advice; he had indeed firmly resolved to do so. But after seeing his brother, listening to his conversation with the professor, hearing afterward the unconsciously patronizing tone in which his brother questioned him about agricultural matters (their mother's property had not been divided, and Levin took charge of both their shares), Levin felt that he could not for some reason broach to him his intention of marrying. He felt that his brother would not look on it as he would have wished him.

"Well, how is your Zemstvo doing?" asked Sergei Ivanovich, who was greatly interested in Zemstvo establishments and attached great importance to them.

"I really don't know."

"What! But surely, you're a member of the board?"

"No, I'm not a member now; I've resigned," answered Levin, "and I no longer attend the sessions."

"What a pity!" commented Sergei Ivanovich, frowning.

Levin in self-defense began to describe what took place at the sessions in his district.

"That's how it always is!" Sergei Ivanovich interrupted him. "We Russians are always like that. Perhaps it's our strong point, really this faculty of seeing our own shortcomings; but we overdo it, we comfort ourselves with irony, which we always have on the tip of our tongues. All I say is, give such rights as our Zemstvo establishments to any other European people, and... Why, the Germans or the English would have worked their way to freedom with them, while we simply turn them into ridicule."

"But how can it be helped?" said Levin penitently. "It was my last trial. And I did try with all my soul. I can't. I'm no good at it."

"It's not that you're no good at it," said Sergei Ivanovich, "it is that you don't look at it as you should."

"Perhaps not," Levin answered dejectedly.

## Anna Karenina

"Oh! do you know brother Nikolai's turned up again?"

This brother Nikolai was the elder brother of Constantin Levin, and half-brother of Sergei Ivanovich; a man who was done for, who had dissipated the greater part of his fortune, was living in the strangest and lowest company, and had quarreled with his brothers.

"What did you say?" Levin cried with horror. "How do you know?"

"Procophii saw him in the street."

"Here in Moscow? Where is he? Do you know?" Levin got up from his chair, as though on the point of starting off at once.

"I'm sorry I told you," said Sergei Ivanovich, shaking his head at his younger brother's excitement. "I sent to find out where he is living, and sent him his I O U to Trubin, which I paid. This is the answer he sent me."

And Sergei Ivanovich took a note from under a paperweight and handed it to his brother.

Levin read in the queer, familiar handwriting: "I humbly beg you to leave me in peace. That's the only favor I ask of my gracious brothers. Nikolai Levin."

Levin read it, and without raising his head stood with the note in his hands opposite Sergei Ivanovich.

There was a struggle in his heart between the desire to forget his unhappy brother for the time, and the consciousness that it would be base to do so.

"He obviously wants to offend me," pursued Sergei Ivanovich; "but he cannot offend me, and I should have wished with all my heart to assist him, but I know it's impossible to do that."

"Yes, yes," repeated Levin. "I understand and appreciate your attitude to him; but I shall go and see him."

"If you want to, do; but I shouldn't advise it," said Sergei Ivanovich. "As regards myself, I have no fear of your doing so; he will not make you quarrel with me; but for your own sake, I should say you would do better not to go. You can't do him any good; still, do as you please."

"Very likely I can't do any good, but I feel especially at such a moment but that's another thing I feel I could not be at peace."

"Well, that's something I don't understand," said Sergei Ivanovich. "One thing I do understand," he added, "it's a lesson in humility. I have come to look very differently and more indulgently on what is called infamy since brother Nikolai has become what he is... you know what he did...."

"Oh, it's awful, awful!" repeated Levin.

After obtaining his brother's address from Sergei Ivanovich's footman, Levin was on the point of setting off at once to see him, but on second thought he decided to put off his visit till the evening. The thing to do to set his heart at rest was to accomplish what he had come to Moscow for. From his brother's Levin went to Oblonsky's office, and on getting news of the Shcherbatskys from him, he drove to the place where he had been told he might find Kitty.



IX.

At four o'clock, conscious of his throbbing heart, Levin stepped out of a hired sleigh at the Zoological Gardens and turned along the path to the frozen mounds and the skating ground, knowing that he would certainly find her there, as he had seen the Shcherbatskys' carriage at the entrance.

It was a bright, frosty day. Rows of carriages, sleighs, drivers and gendarmes were standing in the approach. Crowds of well-dressed people, with hats bright in the sun, swarmed about the entrance and along the well-swept paths between the little houses adorned with carving in the Russian style. The old curly birches of the gardens, all their twigs laden with snow, looked as though freshly decked in sacred vestments.

He walked along the path toward the skating ground, and kept saying to himself "You mustn't be excited, you must be calm. What's the matter with you? What do you want? Be still, foolish one," he conjured his heart. And the more he tried to compose himself, the more breathless he found himself. An acquaintance met him and called him by his name, but Levin did not even recognize him. He went toward the mounds, whence came the clank of the chains of sleighs as they slipped down or were dragged up, the rumble of the sliding sleighs and the sounds of merry voices. He walked on a few steps, and the skating ground lay open before him, and at once, amid all the skaters, he recognized her.

He knew she was there by the rapture and the terror that seized his heart. She was standing talking to a lady at the opposite end of the ground. There was apparently nothing striking either in her dress or her attitude, but for Levin she was as easy to find in that crowd as a rose among nettles. Everything was made bright by her. She was the smile that shed light on all around her. "Is it possible I can go over there on the ice approach her?" he thought. The place where she stood seemed to him a holy shrine, unapproachable, and there was one moment when he was almost retreating, so overwhelmed was he with terror. He had to make an effort to master himself, and to remind himself that people of all sorts were moving about her, and that he, too, might have come there to skate. He descended, for a long while avoiding looking at her as at the sun, yet seeing her, as one does the sun, without looking.

On that day of the week, and at that time of day, people of one set, all acquainted with one another, used to meet on the ice. There were skillful skaters there, showing off their skill, and beginners clinging to chairs with timid, awkward movements, and boys and elderly people skating with hygienic motives. They seemed to Levin an elect band of blissful beings because they were here, near her. All the skaters, it seemed, with perfect self-possession, skated toward her, skated by her, even spoke to her, and were happy, quite apart from her, enjoying the capital ice and the fine weather.

Nikolai Shcherbatsky, Kitty's cousin, in a short jacket and tight trousers, was sitting on a bench with his skates on. Seeing Levin, he shouted to him:

"Ah, the first skater in Russia! Been here long? First-rate ice do put your skates on."

"I haven't got my skates," Levin answered, marveling at this boldness and ease in her presence, and not for one second losing sight of her, though he did not look at her. He felt as though the sun were coming near him. She was in a corner, and turning out her slender feet in their high boots, she, with obvious timidity, skated toward him. A boy in Russian dress, desperately waving his arms and bending down to the ground, overtook her. She skated a little uncertainly; taking her hands out of the little muff that hung on a cord, she held them ready for emergency, and looking toward Levin, whom she had recognized, she smiled at him and at her own fears. When she had got round the turn, she got a start with one foot and skated straight up to Shcherbatsky. Clutching at his arm, she nodded with a smile to Levin. She was more beautiful than he had imagined her.

## Anna Karenina

When he thought of her, he could call up a vivid picture of her to himself, especially the charm of that little fair head, so freely set on the shapely girlish shoulders, and so full of childish brightness and kindness. Her childish countenance, together with the delicate beauty of her figure, made up that special charm of hers, which he appreciated so well. But what always struck him in her as something unlooked for was the expression of her eyes soft, serene and truthful; and, above all, her smile, which always transported Levin to an enchanted world, where he felt moved and tender, as he remembered himself during certain rare days of his early childhood.

"Have you been here long?" she said, giving him her hand. "Thank you," she added, as he picked up the handkerchief that had fallen out of her muff.

"I? Not long ago... yesterday... I mean I arrived... today..." answered Levin, in his emotion not comprehending her question immediately. "I meant to come and see you," he said; and then, recollecting what his intention was in seeking her, he was promptly overcome with confusion, and blushed. "I didn't know you could skate, and skate so well."

She looked at him attentively, as though wishing to make out the cause of his confusion.

"Your praise is worth having. The tradition is kept up here that you are the best of skaters," she said, with her little black-gloved hand brushing some needles of hoarfrost off her muff.

"Yes, I used to skate with passion once upon a time; I wanted to attain perfection."

"You do everything with passion, I think," she said smiling. "I should so like to see how you skate. Do put on skates, and let's skate together."

"Skate together Can that be possible?" thought Levin, gazing at her.

"I'll put them on directly," he said.

And he went off to get skates.

"It's a long while since we've seen you here, sir," said the attendant, supporting his foot, and screwing on the heel of the skate. "Except you, there's none of the gentlemen first-rate skaters. Will that be all right?" said he, tightening the strap.

"Oh, yes, yes; make haste, please," answered Levin, with difficulty restraining the smile of rapture which would overspread his face. "Yes," he thought, "this is life, this is happiness! Together, she said; let us skate together! Speak to her now? But that's just why I'm afraid to speak because I'm happy now, happy even though only in hope.... And then?... But I must! I must! I must! Away, faintheartedness!"

Levin rose to his feet, took off his overcoat, and, gaining speed over the rough ice round the pavilion, came out on the smooth ice and skated without effort, as it were, by, simple exercise of will, increasing and slackening speed and turning his course. He approached her with timidity, but again her smile reassured him.

She gave him her hand, and they set off side by side, going faster and faster, and the more rapidly they moved the more tightly she grasped his hand.

"With you I should soon learn; I somehow feel confidence in you," she said to him.

"And I have confidence in myself when you are leaning on me," he said, but was at once frightened at what he had said, and blushed. And indeed, no sooner had he uttered these words, than all at once, like the sun going

## Anna Karenina

behind a cloud, her face lost all its tenderness, and Levin detected the familiar change in her expression that denoted mental concentration; a tiny wrinkle came upon her smooth brow.

"Is there anything troubling you? However, I've no right to ask such a question," he said hurriedly.

"Oh, why so?... No, I have nothing to trouble me," she responded coldly, and immediately added: "You haven't seen Mlle. Linon, have you?"

"Not yet."

"Go and speak to her she likes you so much."

"What's wrong? I have offended her. Lord help me!" thought Levin, and he flew towards the old Frenchwoman with the gray ringlets, who was sitting on a bench. Smiling and showing her false teeth, she greeted him as an old friend.

"Yes, you see we're growing up," she said to him, glancing toward Kitty, "and growing old. Tiny bear has grown big now!" pursued the Frenchwoman, laughing, and she reminded him of his joke about the three young ladies whom he had compared to the three bears in the English nursery tale. "Do you remember that's what you used to call them?"

He remembered absolutely nothing, but she had been laughing at the joke for ten years now and was fond of it.

"Now, go and skate, go and skate. Our Kitty has learned to skate nicely, hasn't she?"

When Levin darted up to Kitty her face was no longer stern; her eyes looked at him with the same sincerity and tenderness, but Levin fancied that in her tenderness there was a certain note of deliberate composure. And he felt depressed. After talking a little of her old governess and her peculiarities, she questioned him about his life.

"Surely, you must feel dull in the country in the winter," she said.

"No, I'm not dull I am very busy," he said, feeling that she was making him submit to her composed tone, which he would not have the strength to break through just as had been the case at the beginning of the winter.

"Are you going to stay in town long?" Kitty questioned him.

"I don't know," he answered, not thinking of what he was saying. The thought came into his mind that if he were held in submission by her tone of quiet friendliness he would end by going back again without deciding anything, and he resolved to mutiny against it.

"How is it you don't know?"

"I don't know. It depends upon you," he said, and was immediately horror-stricken at his own words.

Whether it was that she did not hear his words, or that she did not want to hear them, she made a sort of stumble, twice struck out, and hurriedly skated away from him. She skated up to Mlle. Linon, said something to her, and went toward the pavilion where the ladies took off their skates.

"My God! What have I done! Merciful God! Help me, guide me," said Levin, praying inwardly, and at the same time, feeling a need of violent exercise, he skated about, describing concentric and eccentric circles.

## Anna Karenina

At that moment one of the young men, the best of the skaters of the day, came out of the coffeehouse on his skates, with a cigarette in his mouth. Taking a run he dashed down the steps on his skates, crashing and leaping. He flew down, and without even changing the free-and-easy position of his hands, skated away over the ice.

"Ah, that's a new trick!" said Levin, and he promptly ran up to the top to perform this new trick.

"Don't break your neck! This needs practice!" Nikolai Shcherbatsky shouted after him.

Levin went to the steps, took a run from above as best he could, and dashed down, preserving his balance in this unwonted movement with his hands. On the last step he stumbled, but barely touching the ice with his hand, with a violent effort recovered himself, and skated off, laughing.

"What a fine, darling chap he is!" Kitty was thinking at that moment, as she came out of the pavilion with Mlle. Linon and looked toward him with a smile of quiet kindness, as though he were a favorite brother. "And can it be my fault, can I have done anything wrong? They talk of coquetry. I know it's not he that I love; but still I am happy with him, and he's so nice. Only, why did he say that?..." she mused.

Catching sight of Kitty going away, and her mother meeting her at the steps, Levin, flushed from his rapid exercise, stood still and pondered a minute. He took off his skates, and overtook the mother and daughter at the entrance of the gardens.

"Delighted to see you," said Princess Shcherbatskaia. "On Thursdays we are home, as always."

"Today, then?"

"We shall be pleased to see you," the Princess said stiffly.

This stiffness hurt Kitty, and she could not resist the desire to smooth over her mother's coldness. She turned her head, and with a smile said:

"Good-by till this evening."

At that moment Stepan Arkadyevich, his hat cocked on one side, with beaming face and eyes, strode into the garden like a buoyant conqueror. But as he approached his mother-in-law, he responded to her inquiries about Dolly's health with a mournful and guilty countenance. After a little subdued and dejected conversation with her he set straight his chest again, and took Levin by the arm.

"Well, shall we set off?" he asked. "I've been thinking about you all this time, and I'm very, very glad you've come," he said, looking him in the face with a significant air.

"Yes, come along," answered Levin in ecstasy, hearing unceasingly the sound of that voice saying, "Good-by till this evening," and seeing the smile with which it was said.

"To England or The Hermitage?"

"It's all the same to me."

"Well, then, England it is," said Stepan Arkadyevich, selecting that restaurant because he owed more there than at The Hermitage, and consequently considered it mean to avoid it. "Have you got a sleigh? That's fine for I sent my carriage home."

## Anna Karenina

The friends hardly spoke all the way. Levin was wondering what that change in Kitty's expression had meant, and alternately assuring himself that there was hope, and falling into despair, seeing clearly that his hopes were insane, and yet all the while he felt himself quite another man, utterly unlike what he had been before her smile and those words, "Good—by till this evening."

Stepan Arkadyevich was absorbed during the drive in composing the menu of the dinner.

"You like turbot, don't you?" he said to Levin as they were arriving.

"Eh?" responded Levin. "Turbot? Yes, I'm awfully fond of turbot."

### X.

When Levin went into the restaurant with Oblonsky, he could not help noticing a certain peculiarity of expression, as it were, a restrained radiance, about the face and whole figure of Stepan Arkadyevich. Oblonsky took off his overcoat, and with his hat over one ear walked into the dining room, giving directions to the Tatar waiters, who were clustered about him in evening coats, and with napkins under their arms. Bowing right and left to acquaintances who, here as everywhere, greeted him joyously, he went up to the bar, took a little wineglass of vodka and a snack of fish, and said to the painted Frenchwoman decked in ribbons, lace and ringlets, behind the desk, something so amusing that even that Frenchwoman was moved to genuine laughter. Levin for his part refrained from taking any vodka only because he found most offensive this Frenchwoman, all made up, it seemed, of false hair, poudre de riz and vinaigre de toilette. He made haste to move away from her, as from a dirty place. His whole soul was filled with memories of Kitty, and there was a smile of triumph and happiness shining in his eyes.

"This way, Your Excellency, please. Your Excellency won't be disturbed here," said a particularly pertinacious, white-headed old Tatar with immense hips and coattails gaping widely behind. "Walk in, your Excellency," he said to Levin being attentive to his guest as well, by way of showing his respect to Stepan Arkadyevich.

Instantly flinging a fresh cloth over the round table under the bronze sconce, though it already had a tablecloth on it, he pushed up velvet chairs and came to a standstill before Stepan Arkadyevich with a napkin and a bill of fare in his hands, awaiting his commands.

"If you prefer it, Your Excellency, a private room will be free directly: Prince Golitsin with a lady. Fresh oysters have come in."

"Ah, oysters!" Stepan Arkadyevich became thoughtful.

"How if we were to change our program, Levin?" he said, keeping his finger on the bill of fare. And his face expressed serious hesitation. "Are the oysters good? Mind, now!"

"They're Flensburg, Your Excellency. We've no Ostend."

"Flensburg will do but are they fresh?"

"Only arrived yesterday."

"Well, then, how if we were to begin with oysters, and so change the whole program? Eh?"

"It's all the same to me. I should like cabbage soup and porridge better than anything; but of course there's nothing

like that here."

"Porridge a la Russe, Your Honor would like?" said the Tatar, bending down to Levin, like a nurse speaking to a child.

"No, joking apart, whatever you choose is sure to be good. I've been skating, and I'm hungry. And don't imagine," he added, detecting a look of dissatisfaction on Oblonsky's face, "that I shan't appreciate your choice. I don't object to a good dinner."

"I should hope so! After all, it's one of the pleasures of life," said Stepan Arkadyevich. "Well, then, my friend, you give us two or better say three dozen oysters, clear soup with vegetables..."

"Printaniere," prompted the Tatar. But Stepan Arkadyevich apparently did not care to allow him the satisfaction of giving the French names of the dishes.

"With vegetables in it, you know. Then turbot with thick sauce, then... roast beef; and mind it's good. Yes, and capons, perhaps, and then stewed fruit."

The Tatar, recollecting that it was Stepan Arkadyevich's way not to call the dishes by the names in the French bill of fare, did not repeat them after him, but could not resist rehearsing the whole menu to himself according to the bill: "Soupe printaniere, turbot sauce Beaumarchais, poulard a l'estragon, Macedoine de fruits..." and then instantly, as though worked by springs, laying down one bound bill of fare, he took up another, the list of wines, and submitted it to Stepan Arkadyevich.

"What shall we drink?"

"What you like, only not too much. Champagne," said Levin.

"What! to start with? You're right though, I dare say. Do you like the white seal?"

"Cachet blanc," prompted the Tatar.

"Very well, then, give us that brand with the oysters, and then we'll see."

"Yes, sir. And what table wine?"

"You can give us Nuits. Oh, no better the classic Chablis."

"Yes, sir. And your cheese, Your Excellency?"

"Oh, yes, Parmesan. Or would you like another?"

"No, it's all the same to me," said Levin, unable to suppress a smile.

And the Tatar ran off with flying coattails, and in five minutes darted in with a dish of opened oysters in their nacreous shells, and a bottle between his fingers.

Stepan Arkadyevich crushed the starchy napkin, tucked it into his waistcoat, and, settling his arms comfortably, started on the oysters.

## Anna Karenina

"Not bad," he said, detaching the jellied oysters from their pearly shells with a small silver fork, and swallowing them one after another. "Not bad," he repeated, turning his dewy, brilliant eyes now upon Levin, now upon the Tatar.

Levin ate the oysters too, though white bread and cheese pleased him better. But he was admiring Oblonsky. Even the Tatar, uncorking the bottle and pouring the sparkling wine into the delicate funnel-shaped glasses, and adjusting his white cravat, kept on glancing at Stepan Arkadyevich with a perceptible smile of satisfaction.

"You don't care much for oysters, do you?" said Stepan Arkadyevich, emptying his wineglass, "or are you worried about something. Eh?"

He wanted Levin to be in good spirits. But it was not that Levin was not in good spirits, he was ill at ease. With what he had in his soul, he felt hard and awkward in the restaurant, in the midst of private rooms where men were dining with ladies, in all this fuss and bustle; the surroundings of bronzes, looking glasses, gas and Tatars all of this was offensive to him. He was afraid of sullyng what his soul was brimful of.

"I? Yes, I am worried; but besides that, all this bothers me," he said. "You can't conceive how queer it all seems to a countryman like me, as queer as that gentleman's nails I saw at your office...."

"Yes, I saw how much interested you were in poor Grinevich's nails," said Stepan Arkadyevich, laughing.

"It's too much for me," responded Levin. "Do try, now, to put yourself in my place take the point of view of a countryman. We in the country try to bring our hands into such a state as will be most convenient for working with. So we cut our nails; sometimes we tuck up our sleeves. And here people purposely let their nails grow as long as possible, and link on small saucers by way of studs, so that they can do nothing with their hands."

Stepan Arkadyevich smiled gaily.

"Oh, yes, that's just a sign that he has no need to do coarse work. His work is with the mind...."

"Maybe. But still it's queer to me, just as at this moment it seems queer to me that we countryfolks try to satiate ourselves as soon as we can, so as to be ready for work, while here are we trying to delay satiety as long as possible, and with that object are eating oysters...."

"Why, of course," objected Stepan Arkadyevich. "But that's just the aim of culture to make everything a source of enjoyment."

"Well, if that's its aim, I'd rather be a savage."

"You are a savage, as it is. All you Levins are savages."

Levin sighed. He remembered his brother Nikolai, and felt ashamed and pained, and he scowled; but Oblonsky began speaking of a subject which at once drew his attention.

"Oh, I say, are you going tonight to our people the Shcherbatskys', I mean?" he said, his eyes sparkling significantly as he pushed away the empty rough shells, and drew the cheese toward him.

"Yes, I shall certainly go," replied Levin; "though I fancied the Princess was not very warm in her invitation."

"What nonsense! That's her manner.... Come, boy, the soup!... That's her manner grande dame," said Stepan Arkadyevich. "I'm coming, too, but I have to go to the Countess Bonin's rehearsal. Come, isn't it true that you're a

## Anna Karenina

savage? How do you explain the sudden way in which you vanished from Moscow? The Shcherbatskys were continually asking me about you, as though I ought to know. The only thing I know is that you always do what no one else does."

"Yes," said Levin, slowly and with emotion, "you're right. I am a savage. Only, my savageness is not in having gone away, but in coming now. Now I have come..."

"Oh, what a lucky fellow you are!" broke in Stepan Arkadyevich, looking into Levin's eyes.

"Why?"

"I can tell the gallant steeds," by some... I don't know what... 'paces'; I can tell youths 'by their faces,'" declaimed Stepan Arkadyevich. "Everything is before you."

"Why, is it over for you already?"

"No; not over exactly, but the future is yours, and the present is mine, and the present well, it's only fair to middling."

"How so?"

"Oh, things aren't right. But I don't want to talk of myself, besides I can't explain it all," said Stepan Arkadyevich. "Well, why have you come to Moscow, then?... Hi! clear the table!" he called to the Tatar.

"Are you trying to surmise?" responded Levin, his eyes, gleaming in their depth, fixed on Stepan Arkadyevich.

"I am, but I can't be the first to talk about it. You can see by that whether I surmise right or wrong," said Stepan Arkadyevich, gazing at Levin with a subtle smile.

"Well, and what have you to say to me?" said Levin in a quivering voice, feeling that all the muscles of his face were quivering too. "How do you look at it?"

Stepan Arkadyevich slowly emptied his glass of Chablis, never taking his eyes off Levin.

"I?" said Stepan Arkadyevich. "There's nothing I desire so much as that nothing! It would be the best thing that could happen."

"But you're not making a mistake? You know what we're speaking of?" said Levin, piercing him with his eyes. "You think it's possible?"

"I think it's possible. Why not?"

"No! Do you really think it's possible? No tell me all you think! Oh, but if... If refusal's in store for me!... Indeed I feel sure..."

"What makes you think so?" said Stepan Arkadyevich, smiling at his excitement.

"It seems so to me sometimes. That will be awful for me, and for her too."

"Oh, well, anyway there's nothing awful in it for a girl. Every girl's proud of a proposal."



"Yes, every girl, but not she."

Stepan Arkadyevich smiled. He so well knew that feeling of Levin's, that for him all the girls in the world were divided into two classes: one class all the girls in the world except her, and those girls with all sorts of human failings, and very ordinary girls: the other class she alone, having no failings of any sort and higher than all humanity.

"Stay, take some sauce," he said, holding back Levin's hand, who was pushing the sauce away.

Levin obediently helped himself to sauce, but would not let Stepan Arkadyevich go on with his dinner.

"No, stop a minute, stop a minute," he said. "You must understand that it's a question of life and death for me. I have never spoken to anyone of this. And there's no one to whom I could speak of it, except yourself. You know we're utterly unlike each other, different in tastes, and views, and everything; but I know you're fond of me and understand me, and that's why I like you awfully. But for God's sake, be quite straightforward with me."

"I tell you what I think," said Stepan Arkadyevich, smiling. "But I'll say more: my wife is a wonderful woman..." Stepan Arkadyevich sighed, recalling his relations with his wife, and, after a moment's silence, resumed "She has a gift of foreseeing things. She sees right through people; but that's not all; she knows what will come to pass, especially in the way of marriages. She foretold, for instance, that Princess Shahovskaia would marry Brenteln. No one would believe it, but it came to pass. And she's on your side."

"How do you mean?"

"It's not only that she likes you she says that Kitty is certain to be your wife."

At these words Levin's face suddenly lighted up with a smile, a smile not far from touching tears.

"She says that!" cried out Levin. "I always said she was charming, your wife. There, that's enough said about it," he said, getting up from his seat.

"Well, but do sit down."

But Levin could not sit down. He walked with his firm tread twice up and down the little cage of a room, blinked his eyelids that his tears might not fall, and only then sat down to the table.

"You must understand," said he, "it's not love. I've been in love, but it's not that. It's not my feeling, but a sort of force outside me that has taken possession of me. I went away, you see, because I made up my mind that it could never be you understand, like a happiness which is not of this earth; but I've struggled with myself, and I see there's no living without it. And it must be settled."

"What did you go away for?"

"Ah, stop a minute! Ah, the thoughts that come crowding on one! The questions one must ask oneself! Listen. You can't imagine what you've done for me by what you said. I'm so happy that I've become positively hateful; I've forgotten everything. I heard today that my brother Nikolai... you know, he's here... I had forgotten even him. It seems to me that he's happy too. It's a sort of madness. But one thing's awful.... Here, you've been married, you know the feeling.... It's awful that we fully mature with a past... a past not of love, but of sins... are brought all at once so near to a creature pure and innocent; it's loathsome, and that's why one can't help feeling oneself unworthy."

## Anna Karenina

"Oh, well, you haven't many sins on your conscience."

"Ah, still," said Levin, "'When, with loathing, I go o'er my life, I shudder and I curse and bitterly regret...' Yes."

"What would you have? That's the way of the world," said Stepan Arkadyevich.

"There's one comfort, like that of the prayer which I always liked: 'Forgive me not according to my deeds, but according to Thy loving-kindness.' That's the only way she can forgive me."

## XI.

Levin emptied his glass, and they were silent for a while.

"There's one other thing I ought to tell you. Do you know Vronsky?" Stepan Arkadyevich asked Levin.

"No, I don't. Why do you ask?"

"Give us another bottle," Stepan Arkadyevich directed the Tatar, who was filling up their glasses and fidgeting round them just when he was least wanted.

"Why, you ought to know Vronsky because he's one of your rivals."

"Who's Vronsky?" said Levin, and his face was suddenly transformed from the look of childlike ecstasy which Oblonsky had just been admiring to an angry and unpleasant expression.

"Vronsky is one of the sons of Count Kirill Ivanovich Vronsky, and one of the finest specimens of the gilded youth of Petersburg. I made his acquaintance in Tver, when I was there on official business, and he came there for the levy of recruits. Fearfully rich, handsome, great connections, an aide-de-camp, and with all that a very fine good-natured fellow. But he's more than simply a good-natured fellow, as I've found out here he's a cultured man, too, and very intelligent; he's a man who'll make his mark."

Levin scowled and kept silent.

"Well, he turned up here soon after you'd gone, and, as I can see, he's over head and ears in love with Kitty, and you know that her mother..."

"Excuse me, but I know nothing," said Levin, frowning gloomily. And immediately he recalled his brother Nikolai, and how vile he was to have been able to forget him.

"You wait a bit wait a bit," said Stepan Arkadyevich, smiling and touching his hand. "I've told you what I know, and I repeat that in this delicate and tender matter, as far as one can conjecture, I believe the chances are in your favor."

Levin dropped back in his chair; his face was pale.

"But I would advise you to settle the thing as soon as possible," pursued Oblonsky, filling up his glass.

"No, thanks, I can't drink any more," said Levin, pushing away his glass. "I shall get drunk.... Come, tell me how are you getting on?" he went on, obviously anxious to change the conversation.

## Anna Karenina

"One word more: in any case I advise you to settle the question soon. Tonight I don't advise you to speak," said Stepan Arkadyevich. "Go round tomorrow morning, make a proposal in classic form, and God bless you...."

"Oh, do you still think of coming to me for some shooting? Come next spring, do," said Levin.

Now his whole soul was full of remorse that he had begun this conversation with Stepan Arkadyevich. His peculiar feeling was profaned by talk of the rivalry of some Petersburg officer, of the suppositions and the counsels of Stepan Arkadyevich.

Stepan Arkadyevich smiled. He knew what was passing in Levin's soul.

"I'll come some day," he said. "Yes, my dear, women they're the pivot everything turns upon. Things are in a bad way with me, very bad. And it's all through women. Tell me frankly, now," he pursued, picking up a cigar and keeping one hand on his glass; "give me your advice."

"Why, what is it?"

"I'll tell you. Suppose you're married; you love your wife, but are fascinated by another woman..."

"Excuse me, but I'm absolutely unable to comprehend how just as I can't comprehend how I could now, after my dinner, go straight to a baker's shop and steal a loaf."

Stepan Arkadyevich's eyes sparkled more than usual.

"Why not? A loaf will sometimes smell so good that one can't resist it.

"Himmlich ist's wenn ich bezwungen  
Meine irdische Begier;  
Aber doch wenn's nicht gelungen  
Hatt' ich auch recht hubsch Plaisir!"

As he said this, Stepan Arkadyevich smiled subtly. Levin, too, could not help smiling.

"Yes, but joking apart," resumed Oblonsky, "you must understand that the woman, a sweet, gentle, loving creature, poor and lonely, has sacrificed everything. Now, when the thing's done, don't you see, can one possibly cast her off? Even supposing one parts from her, so as not to break up one's family life, still, can one help feeling for her, setting her on her feet, lightening her lot?"

"Well, you must excuse me there. You know to me all women are divided into two classes.... Well, no... it would be truer to say: there are women, and there are... I've never seen charming fallen beings, and I never shall see them, but such creatures as that painted Frenchwoman at the counter with the ringlets are vermin to my mind, and all fallen women are like her."

"But the Magdalen?"

"Ah, drop that! Christ would never have said those words if He had known how they would be abused. Of all the Gospel those words are the only ones remembered. However, I'm not saying so much what I think, as what I feel. I have a loathing for fallen women. You're afraid of spiders, and I of these vermin. Most likely you've not made a study of spiders and don't know their character; and so it is with me."

"It's very well for you to talk like that; it's very much like that gentleman in Dickens who used to fling all difficult

## Anna Karenina

questions over his right shoulder with his left hand. But denying the facts is no answer. What's to be done you tell me that; what's to be done? Your wife gets older, while you're full of life. Before you've time to look round, you feel that you can't love your wife with love, however much you may esteem her. And then all at once love turns up and you're done for; you're done for," Stepan Arkadyevich said with weary despair.

Levin smiled slightly.

"Yes, you're done for," resumed Oblonsky. "But what's to be done?"

"Don't steal loaves."

Stepan Arkadyevich laughed outright.

"Oh, moralist! But you must understand, there are two women; one insists only on her rights, and those rights are your love, which you can't give her; while the other sacrifices everything for you and asks for nothing. What are you to do? How are you to act? There's a fearful tragedy in it."

"If you care for my profession of faith as regards that, I'll tell you that I don't believe there was any tragedy about it. And this is why. To my mind, love... both sorts of love, which you remember Plato defines in his Banquet, serve as the touchstone of men. Some men only understand one sort, and some only the other. And those who only know the nonplatonic love talk in vain of tragedy. In such love there can be no sort of tragedy. 'I'm much obliged for the gratification, my humble respects,' that's all the tragedy. And in platonic love there can be no tragedy, because in that love all is clear and pure, because..."

At that instant Levin recollected his own sins and the inner conflict he had lived through. And he added unexpectedly:

"But perhaps you are right. Very likely... I don't know I positively don't know."

"You see," said Stepan Arkadyevich, "you're very much all of a piece. That's your quality and your failing. You have a character that's all of a piece, and you want the whole of life to be of a piece too but that's not how it is. You despise public official work because you want the reality to be constantly corresponding with the aim and that's not how it is. You want a man's work, too, always to have a defined aim, and love and family life always to be undivided and that's not how it is. All the variety, all the charm, all the beauty of life is made up of light and shadow."

Levin sighed and made no reply. He was thinking of his own affairs, and was not listening to Oblonsky.

And suddenly both of them felt that though they were friends, though they had been dining together, and drunk wine which should have drawn them closer, yet each was thinking only of his own affairs, and they had nothing to do with one another. Oblonsky had more than once experienced this extreme sense of aloofness, instead of intimacy, coming on after dinner, and he knew what to do in such cases.

"Let's have the check!" he called, and he went into the next room, where he promptly came across an aide-de-camp of his acquaintance and dropped into conversation with him about an actress and her protector. And at once, in this conversation with the aide-de-camp, Oblonsky had a sense of relaxation and relief after his conversation with Levin, which always put him to too great a mental and spiritual strain.

When the Tatar appeared with a check of twenty-six roubles and some kopecks, besides a tip for himself, Levin, who would another time have been horrified, like anyone from the country, at his share of fourteen roubles, did not notice it, paid, and set off homeward to dress and go to the Shcherbatskys', where his fate was to be decided.

## XII.

The young princess Kitty Shcherbatskaia was eighteen. It was the first winter that she had been out in the world. Her success in society had been greater than that of either of her elder sisters, and greater even than her mother had anticipated. To say nothing of the young men who danced at the Moscow balls being almost all in love with Kitty, two serious suitors had already, the first winter, made their appearance: Levin, and, immediately after his departure, Count Vronsky.

Levin's appearance at the beginning of the winter, his frequent visits, and evident love for Kitty, had led to the first serious conversations between Kitty's parents as to her future, and to disputes between them. The Prince was on Levin's side; he said he wished for nothing better for Kitty. The Princess for her part, going round the question in the manner peculiar to women, maintained that Kitty was too young, that Levin had done nothing to prove that he had serious intentions, that Kitty felt no great attraction to him, and there were some other reasons too; but she did not state the principal point, which was that she looked for a better match for her daughter, that Levin was not to her liking, and that she did not understand him. When Levin had abruptly departed, the Princess was delighted, and said to her husband triumphantly: 'You see, I was right.' When Vronsky appeared on the scene, she was still more delighted, confirmed in her opinion that Kitty was to make not simply a good, but a brilliant match.

In the mother's eyes there could be no comparison between Vronsky and Levin. The mother disliked in Levin his strange and uncompromising opinions and his shyness in society, founded on his pride, as she supposed, and his queer sort of life, as she considered it, absorbed in cattle and peasants. She did not very much like it that he, who was in love with her daughter, had kept coming to the house for six weeks, as though he were waiting for something, inspecting, as though he were afraid he might be doing them too great an honor by making a proposal, and did not realize that a man who continually visits at a house where there is a young unmarried girl, is bound to make his intentions clear. And suddenly, without doing so, he disappeared. "It's as well he's not attractive enough for Kitty to have fallen in love with him," thought the mother.

Vronsky satisfied all the mother's desires. Very wealthy, clever, of aristocratic family, on the highroad to a brilliant career in the army and at court, and a fascinating man. Nothing better could be wished for.

Vronsky openly flirted with Kitty at balls, danced with her, and came continually to the house; consequently there could be no doubt of the seriousness of his intentions. But, in spite of that, the mother had spent the whole of that winter in a state of terrible anxiety and agitation.

Princess Shcherbatskaia had herself been married thirty years ago, her aunt arranging the match. The wooer, about whom everything was well known beforehand, had come, looked at his intended, and been looked at. The matchmaking aunt had ascertained and communicated their mutual impression. That impression had been favorable. Afterward, on a day fixed beforehand, the expected proposal was made to her parents, and accepted. All had passed very simply and easily. So it seemed, at least, to the Princess. But over her own daughters she had felt how far from simple and easy is the business, apparently so commonplace, of marrying off one's daughters. The panics that had been lived through, the thoughts that had been brooded over, the money that had been wasted, and the disputes with her husband over marrying the two elder girls, Darya and Natalya! Now, since the youngest began to come out in the world, the Princess was going through the same terrors, the same doubts, and still more violent quarrels with her husband, than she had over the elder girls. The old Prince, like all fathers indeed, was exceedingly scrupulous on the score of the honor and reputation of his daughters; he was unreasonably jealous over his daughters, especially over Kitty, who was his favorite, and at every turn he had scenes with the Princess for compromising her daughter. The Princess had grown accustomed to this already with her other daughters, but now she felt that there was more ground for the Prince's scrupulousness. She saw that of late years much was changed in the manners of society, that a mother's duties had become still more difficult. She saw that girls of Kitty's age formed some sort of clubs, went to some sort of lectures, mixed freely in men's society, drove about

the streets alone; many of them did not curtsy; and, what was the most important thing, all of them were firmly convinced that to choose their husband was their own affair, and not their parents'. "Marriages aren't made nowadays as they used to be," was thought and said by all these young girls, and even by their elders. But just how marriages were made nowadays, the Princess could not learn from anyone. The French fashion of the parents arranging their children's future was not accepted; it was condemned. The English fashion of the complete independence of girls was also not accepted, and not possible in Russian society. The Russian fashion of matchmaking was considered unseemly; it was ridiculed by everyone even by the Princess herself. But how girls were to be married, and how parents were to marry them, no one knew. Everyone with whom the Princess had chanced to discuss the matter said the same thing: "Mercy on us, it's high time in our day to cast off all that old-fashioned business. It's the young people have to marry, and not their parents; and so we ought to leave the young people to arrange it as they choose." It was very easy for anyone to say who had no daughters, but the Princess realized that, in the process of getting to know each other, her daughter might fall in love, and fall in love with someone who did not care to marry her, or who was quite unfit to be her husband. And, however much it was instilled into the Princess that in our times young people ought to arrange their lives for themselves, she was unable to believe it, just as she would have been unable to believe that, at any time whatever, loaded pistols were the most suitable playthings for children five years old. And so the Princess was more uneasy over Kitty than she had been over the elder daughters.

Now she was afraid that Vronsky might confine himself to simply flirting with her daughter. She saw that her daughter was in love with him, but tried to comfort herself with the thought that he was an honorable man, and would not do this. But at the same time she knew how easy it is, with the freedom of manners of today, to turn a girl's head, and how lightly men generally regard such a crime. The week before, Kitty had told her mother of a conversation she had with Vronsky during a mazurka. This conversation had partly reassured the Princess; yet her assurance could not be perfect. Vronsky had told Kitty that both he and his brother were so used to obeying their mother that they never made up their minds to any important undertaking without consulting her. "And, just now, I am impatiently awaiting my mother's coming from Peterburg, as a peculiar piece of luck," he had told her.

Kitty had repeated this without attaching any significance to the words. But her mother saw them in a different light. She knew that the old lady was expected from day to day, that she would be pleased at her son's choice, and she felt it strange that he should not make his proposal through fear of vexing his mother. However, she was so anxious for the marriage itself, and still more for relief from her fears, that she believed it was so. Bitter as it was for the Princess to see the unhappiness of her eldest daughter, Dolly, on the point of leaving her husband, her anxiety over the decision of her youngest daughter's fate engrossed all her feelings. Today, with Levin's reappearance, a fresh source of anxiety arose. She was afraid that her daughter, who had at one time, as she fancied, a feeling for Levin, might, from an extreme sense of honesty, refuse Vronsky, and that Levin's arrival might generally complicate and delay the affair, now so near conclusion.

"Why, has he been here long?" the Princess asked about Levin, as they returned home.

"He came today, maman."

"There's one thing I want to say..." began the Princess, and from her serious and alert face, Kitty guessed what it would be.

"Mamma," she said, flushing hotly and turning quickly to her, "please, please don't say anything about that. I know, I know all about it."

She wished what her mother wished for, but the motives of her mother's wishes hurt her.

"I only want to say that to raise hopes..."

"Mamma, darling, for goodness' sake, don't talk about it. It's so horrible to talk about it."

"I won't," said her mother, seeing the tears in her daughter's eyes; "but one thing, my love; you promised me you would have no secrets from me. You won't?"

"Never, mamma none," answered Kitty, flushing and looking her mother straight in the face; "but I have nothing to tell you now, and I... I... If I wanted to, I don't know what to say or how... I don't know..."

"No, she could not tell an untruth with those eyes," thought the mother, smiling at her agitation and happiness. The Princess smiled: so immense and so important seemed to the poor child everything that was taking place just now in her soul.

### XIII.

After dinner, and till the beginning of the evening, Kitty was experiencing a sensation akin to that of a young man before a battle. Her heart throbbed violently, and her thoughts would not rest on anything.

She felt that this evening, when both these men would meet for the first time, would be a turning point in her life. And she was continually picturing them to herself, at one moment each individually, and then both together. When she mused on the past, she dwelt with pleasure, with tenderness, on the memories of her relations with Levin. The memories of childhood and of Levin's friendship with her dead brother have a special poetic charm to her relations with him. His love for her, of which she felt certain, was flattering and delightful to her; and it was easy for her to think of Levin. In her memories of Vronsky there always entered a certain element of awkwardness, though he was in the highest degree a fashionable and even-tempered man, as though there were some false note not in Vronsky, he was very simple and charming but in herself; while with Levin she felt herself perfectly simple and clear. But, on the other hand, directly she thought of the future with Vronsky, there arose before her a perspective of brilliant happiness; with Levin the future seemed misty.

When she went upstairs to dress, and looked into the looking glass, she noticed with joy that it was one of her good days, and that she was in complete possession of all her forces she needed this so for what lay before her: she was conscious of external composure and free grace in her movements.

At half-past seven she had only just gone down into the drawing room, when the footman announced, "Constantin Dmitrievich Levin." The Princess was still in her room, and the Prince had not come in. "So it is to be," thought Kitty, and all the blood seemed to rush to her heart. She was horrified at her paleness, as she glanced into the looking glass.

At that moment she knew beyond doubt that he had come early on purpose to find her alone and to propose to her. And only then for the first time the whole thing presented itself in a new, different aspect; only then she realized that the question did not affect her only with whom she would be happy, and whom she loved but that she would have that moment to wound a man whom she liked. And to wound him cruelly... Wherefore? Because he, dear fellow, loved her, was in love with her. But there was no help for it; it must be so it would have to be so.

"My God! shall I myself really have to say it to him?" she thought. "Can I tell him I don't love him? That will be a lie. What am I to say to him? That I love someone else? No, that's impossible. I'm going away I'm going away."

She had reached the door, when she heard his step. "No It's not honest. What have I to be afraid of? I have done nothing wrong. What is to be, will be! I'll tell the truth. And with him one can't be ill at ease. Here he is," she said to herself, seeing his powerful and timid figure, with his shining eyes fixed on her. She looked straight into his face, as though imploring him to spare her, and gave him her hand.

## Anna Karenina

"It's not time yet; I think I'm too early," he said glancing round the empty drawing room. When he saw that his expectations were realized, that there was nothing to prevent him from speaking, his face became somber.

"Oh, no," said Kitty, and sat down at a table.

"But this was just what I wanted, to find you alone," he began, without sitting down, and not looking at her, so as not to lose courage.

"Mamma will be down directly. She was very much tired yesterday. Yesterday..."

She talked on, not knowing what her lips were uttering, and not taking her supplicating and caressing eyes off him.

He glanced at her; she blushed, and ceased speaking.

"I told you I did not know whether I should be here long... that it depended on you..."

She dropped her head lower and lower, not knowing herself what answer she should make to what was coming.

"That it depended on you," he repeated. "I meant to say... I meant to say... I came for this... To have you be my wife!" he blurted out, not knowing what he was saying, but feeling that the most terrible thing was said, he stopped short and looked at her.

She was breathing heavily, without looking at him. She was feeling ecstasy. Her soul was flooded with happiness. She had never anticipated that his utterance of love would produce such a powerful effect on her. But it lasted only an instant. She remembered Vronsky. She lifted her clear, truthful eyes, and, seeing Levin's desperate face, she answered hastily:

"That cannot be... Forgive me."

A moment ago, and how close she had been to him, of what importance in his life! And how aloof and remote from him she had become now!

"It could not have been otherwise," he said, without looking at her. He bowed, and was about to leave.

## XIV.

But at that very moment the Princess came in. There was a look of horror on her face when she beheld them alone, and saw their disturbed faces. Levin bowed to her, and said nothing. Kitty neither spoke nor lifted her eyes. "Thank God, she has refused him," thought the mother, and her face lighted up with the habitual smile with which she greeted her guests on Thursdays. She sat down and began questioning Levin about his life in the country. He sat down again, waiting for other visitors to arrive, in order to go off unnoticed.

Five minutes later there came in a friend of Kitty's, married the preceding winter Countess Nordstone.

She was a thin, sallow, sickly and nervous woman, with brilliant black eyes. She was fond of Kitty, and her affection for her showed itself, as the affection of married women for girls always does, in the desire to make a match for Kitty after her own ideal of married happiness; she wanted her to marry Vronsky. Levin she had often met at the Shcherbatskys' early in the winter, and she had always disliked him. Her invariable and favorite pursuit, when they met, consisted in making fun of him.



## Anna Karenina

"I do like it when he looks down at me from the height of his grandeur, or breaks off his wise conversation with me because I'm a fool, or is condescending to me. I like that so to see him condescending! I am so glad he can't bear me," she used to say of him.

She was right, for Levin actually could not bear her, and despised her for what she was proud of and regarded as a fine characteristic her nervousness, her refined contempt and indifference for everything coarse and earthly.

The Countess Nordstone and Levin had got into that mutual relation not infrequently seen in society, when two persons, who remain externally on friendly terms, despise each other to such a degree that they cannot even take each other seriously, and cannot even be offended by each other.

The Countess Nordstone pounced upon Levin at once.

"Ah, Constantin Dmitrievich! So you've come back to our corrupt Babylon," she said, giving him her tiny, yellow hand and recalling what he had chanced to say early in the winter, that Moscow was a Babylon. "Come, is Babylon reformed, or have you degenerated?" she added, glancing with a simper at Kitty.

"It's very flattering for me, Countess, that you remember my words so well," responded Levin, who had succeeded in recovering his composure, and at once from habit dropped into his tone of joking hostility to the Countess Nordstone. "They must certainly make a great impression on you."

"Oh, I should think so! I always note everything down. Well, Kitty, have you been skating again?..."

And she began talking to Kitty. Awkward as it was for Levin to withdraw now, it would still have been easier for him to perpetrate this awkwardness than to remain all the evening and see Kitty, who glanced at him now and then and avoided his eyes. He was on the point of getting up, when the Princess, noticing that he was silent, addressed him.

"Shall you be long in Moscow? You're busy with the Zemstvo, though, aren't you, and can't be away for long?"

"No, Princess, I'm no longer a member of the board," he said. "I have come up for a few days."

"There's something the matter with him," thought Countess Nordstone, glancing at his stern, serious face. "He isn't in his old argumentative mood. But I'll draw him out. I do love making a fool of him before Kitty, and I'll do it."

"Constantin Dmitrievich," she said to him, "do explain to me please, what does it mean you know all about such things in our village of Kaluga all the peasants and all the women have drunk up all they possessed, and now they can't pay us any rent. What's the meaning of that? You always praise the mouzhiks so."

At that instant another lady came into the room, and Levin got up.

"Excuse me, Countess, but I really know nothing about it, and can't tell you anything," he said, and looked round at the officer who came in behind the lady.

"That must be Vronsky," thought Levin, and, to be sure of it, glanced at Kitty. She had already had time to look at Vronsky, and looked round at Levin. And, simply from the look in her eyes, that grew unconsciously brighter, Levin knew that she loved this man knew it as surely as if she had told him in so many words. But what sort of a man was he?

## Anna Karenina

Now, whether for good or for ill, Levin could not choose but remain; he must find out what the man was like whom she loved.

There are people who, on meeting a successful rival, no matter in what, are at once disposed to turn their backs on everything good in him, and to see only what is bad. There are people who, on the contrary, desire above all to find in that successful rival the qualities by which he has worsted them, and seek with a throbbing ache at heart only what is good. Levin belonged to the second class. But he had no difficulty in finding what was good and attractive in Vronsky. It was apparent at the first glance. Vronsky was a squarely built, dark man, not very tall, with a good-humored, handsome and exceedingly calm and firm face. Everything about his face and figure, from his short-cropped black hair and freshly shaven chin down to his loosely fitting, brand-new uniform, was simple and at the same time elegant. Making way for the lady who had come in, Vronsky went up to the Princess and then to Kitty.

As he approached her, his beautiful eyes shone with an especially tender light, and with a faint, happy and modestly triumphant smile (so it seemed to Levin), bowing carefully and respectfully over her, he held out his small broad hand to her.

Greeting and saying a few words to everyone, he sat down without once glancing at Levin, who had never taken his eyes off him.

"Let me introduce you," said the Princess, indicating Levin. "Constantin Dmitrievich Levin, Count Alexei Kirillovich Vronsky."

Vronsky got up and, looking cordially at Levin, shook hands with him.

"I believe I was to have dined with you this winter," he said, smiling his simple and open smile; "but you had unexpectedly left for the country."

"Constantin Dmitrievich despises and hates the town, and us townspeople," said Countess Nordstone.

"My words must make a deep impression on you, since you remember them so well," said Levin, and, suddenly becoming conscious that he had said just the same thing before, he reddened.

Vronsky looked at Levin and Countess Nordstone, and smiled.

"Are you always in the country?" he inquired. "I should think it must be dull in the winter."

"It's not dull if one has work to do; besides, one's not dull by oneself," Levin replied abruptly.

"I am fond of the country," said Vronsky, noticing, yet affecting not to notice, Levin's tone.

"But I hope, Count, you would not consent to live in the country always," said Countess Nordstone.

"I don't know; I have never tried for long. I experienced a queer feeling once," he went on. "I never longed so for the country Russian country, with bast shoes and peasants as when I was spending a winter with my mother in Nice. Nice itself is dull enough, you know. And, indeed, Naples and Sorrento are only pleasant for a short time. And it's just there that Russia comes back to one's mind most vividly, and especially the country. It's as though..."

He talked on, addressing both Kitty and Levin, turning his serene, friendly eyes from one to the other, and saying obviously just what came into his head.

## Anna Karenina

Noticing that Countess Nordstone wanted to say something, he stopped short without finishing what he had begun, and listened attentively to her.

The conversation did not flag for an instant, so that the old Princess, who always kept in reserve, in case a subject should be lacking, two heavy guns the classical and professional education, and universal military service had not to move out either of them, while Countess Nordstone had no chance of chaffing Levin.

Levin wanted to, and could not, take part in the general conversation; saying to himself every instant, "Now go," he still did not go, as though waiting for something.

The conversation fell upon table turning and spirits, and Countess Nordstone, who believed in spiritualism, began to describe the miracles she had seen.

"Ah, Countess, you really must take me; for pity's sake do take me to see them! I have never seen anything extraordinary, though I am always on the lookout for it everywhere," said Vronsky, smiling.

"Very well next Saturday," answered Countess Nordstone. "But you, Constantin Dmitrievich are you a believer?" she asked Levin.

"Why do you ask me? You know what I shall say."

"But I want to hear your opinion."

"My opinion," answered Levin, "is merely that this table turning proves that educated society so called is no higher than the peasants. They believe in the evil eye, and in witchcraft and conjurations, while we..."

"Oh, then you aren't a believer?"

"I can't believe, Countess."

"But if I've seen for myself?"

"The peasant women, too, tell us they have seen hobgoblins."

"Then you think I tell a lie?"

And she laughed a mirthless laugh.

"Oh, no, Masha, Constantin Dmitrievich merely said he could not believe," said Kitty, blushing for Levin, and Levin saw this, and, still more exasperated, would have answered; but Vronsky with his bright frank smile rushed to the support of the conversation, which was threatening to become disagreeable.

"You do not admit the possibility at all?" he queried. "But why not? We admit the existence of electricity, of which we know nothing. Why should there not be some new force, still unknown to us, which..."

"When electricity was discovered," Levin interrupted hurriedly, "it was only the phenomenon that was discovered, and it was unknown from what it proceeded and what were its effects, and ages passed before its applications were conceived. But the spiritualists, on the contrary, have begun with tables writing for them, and spirits appearing to them, and have only later started saying that it is an unknown force."

Vronsky listened attentively to Levin, as he always did listen, obviously interested in his words.

## Anna Karenina

"Yes, but the spiritualists say we don't know at present what this force is, but there is a force, and these are the conditions in which it acts. Let the scientific men find out what the force consists of. No, I don't see why there should not be a new force, if it..."

"Why, because with electricity," Levin interrupted again, "every time you rub tar against wool, a certain phenomenon is manifested; but in this case it does not happen every time, and so it follows it is not a natural phenomenon."

Feeling probably that the conversation was taking a tone too serious for a drawing room, Vronsky made no rejoinder, but by way of trying to change the conversation, he smiled brightly, and turned to the ladies.

"Do let us try at once, Countess," he said; but Levin would finish saying what he thought.

"I think," he went on, "that this attempt of the spiritualists to explain their miracles as some sort of new natural force is most futile. They boldly talk of spiritual force, and then try to subject it to material experiment."

Everyone was waiting for him to finish, and he felt this.

"Why, I think you would be a first-rate medium," said Countess Nordstone, "there's something enthusiastic about you."

Levin opened his mouth, was about to say something, reddened, and said nothing.

"Do let us try table turning at once, please," said Vronsky. "Princess, will you allow it?"

And Vronsky stood up, looking about for a little table.

Kitty got up to fetch a table, and, as she passed, her eyes met Levin's. She felt for him with her whole heart, the more because she was pitying him for a suffering of which she was herself the cause. "If you can forgive me, forgive me," said her eyes, "I am so happy."

"I hate them all, and you, and myself," his eyes responded, and he took up his hat. But he was not destined to escape. Just as they were arranging themselves round the table, and Levin was on the point of retiring, the old Prince came in, and, after greeting the ladies, addressed Levin.

"Ah!" he began joyously. "Been here long, my boy? I didn't even know you were in town. Very glad to see you." The old Prince embraced Levin, and, talking to him, did not observe Vronsky, who had risen, and was calmly waiting till the Prince should turn to him.

Kitty felt how grievous her father's cordiality was to Levin after what had happened. She saw, too, how coldly her father responded at last to Vronsky's bow, and how Vronsky looked with amiable perplexity at her father, trying and failing to understand how and why anyone could be hostilely disposed toward him, and she flushed.

"Prince, let us have Constantin Dmitrievich," said Countess Nordstone, "we want to try an experiment."

"What experiment? Table turning? Well, you must excuse me, ladies and gentlemen, but to my mind it is better fun to play the ring game," said the old Prince, looking at Vronsky, and guessing that it had been his suggestion. "There's some sense in that, anyway."

Vronsky looked wonderingly at the Prince with his firm eyes, and, with a faint smile, began immediately talking to Countess Nordstone of the great ball that was to come off next week.

## Anna Karenina

"I hope you will be there?" he said to Kitty. As soon as the old Prince turned away from him, Levin slipped out unnoticed, and the last impression he carried away with him of that evening was the smiling, happy face of Kitty answering Vronsky's inquiry about the ball.

### XV.

At the end of the evening Kitty told her mother of her conversation with Levin, and in spite of all the pity she felt for Levin, she was glad at the thought that she had received a proposal. She had no doubt that she had acted rightly. But after she had gone to bed, she could not sleep for a long while. One impression pursued her relentlessly. It was Levin's face, with his scowling brows, and his kind eyes looking out in dark dejection below them, as he stood listening to her father, and glancing at her and at Vronsky. And she felt so sorry for him that tears came into her eyes. But immediately she thought of the man for whom she had given him up. She vividly recalled his manly, firm face, his noble calmness, and the good nature so conspicuous toward everyone. She remembered the love for her of the man she loved, and once more all was gladness in her soul, and she lay on the pillow smiling with happiness. "I'm sorry, I'm sorry; but what could I do? It's not my fault," she said to herself; but an inner voice told her otherwise. Whether she felt remorse at having captivated Levin, or at having refused him, she did not know. But her happiness was poisoned by doubts. "Lord, have pity on us; Lord, have pity, Lord, have pity!" she said over to herself till she fell asleep.

Meanwhile there took place below, in the Prince's little study, one of the scenes so often repeated between the parents on account of their favorite daughter.

"What? I'll tell you what!" shouted the Prince, brandishing his arms, and at once wrapping his squirrel-lined dressing gown round him again. "That you've no pride, no dignity; that you're disgracing, ruining your daughter by this vulgar, stupid matchmaking!"

"But, really, for mercy's sake, Prince, what have I done?" said the Princess, almost crying.

She, pleased and happy after her conversation with her daughter, had gone to the Prince to say good night as usual, and though she had no intention of telling him of Levin's proposal and Kitty's refusal, still she hinted to her husband that she fancied things were practically settled with Vronsky, and would be definitely so as soon as his mother arrived. And thereupon, at those words, the Prince had all at once flown into a passion, and begun to use unseemly language.

"What have you done? I'll tell you what. First of all, you're trying to allure an eligible gentleman, and all Moscow will be talking of it, and with good reason. If you have evening parties, invite everyone, don't pick out the possible suitors. Invite all these whelps [so the Prince styled the youths of Moscow]; engage a piano player, and let them dance and not as you did tonight: only the wooers, and doing your matching. It makes me sick sick to see it and you've gone on till you've turned the poor lass's head. Levin's a thousand times the better man. As for this Petersburg swell they're turned out by machinery, all on one pattern, and all precious rubbish. But if he were a prince of the blood, my daughter need not run after anyone."

"But what have I done?"

"Why, you've..." The Prince was yelling wrathfully.

"I know if one were to listen to you," interrupted the Princess, "we should never marry off our daughter. If it's to be so, we'd better go into the country."

"Well, we had better."

## Anna Karenina

"But do wait a minute. Do I wheedle them? I don't wheedle them in the least. A young man, and a very nice one, has fallen in love with her, and she, I fancy..."

"Oh, yes, you fancy! And how if she really is in love, and he's no more thinking of marriage than I am!... Oh, that I should live to see it!... "Ah spiritualism! Ah Nice! Ah the ball!" And the Prince, imagining that he was mimicking his wife, made a mincing curtsy at each word. "And this is how we prepare wretchedness for Katenka; and she's really got the notion into her head..."

"But what makes you suppose so?"

"I don't suppose; I know. For such things we have eyes; womenfolk haven't. I see a man who has serious intentions, that's Levin: and I see a quail, like this cackler, who's only amusing himself."

"Oh, well, when once you get an idea into your head!..."

"Well, you'll remember my words, but too late, just as with Dashenka."

"Well, well, we won't talk of it," the Princess stopped him, recollecting her unlucky Dolly.

"By all means, and good night!"

And signing each other with the cross, the husband and wife parted with a kiss, feeling that each remained of his or her own opinion.

The Princess had at first been quite certain that that evening had settled Kitty's fortune, and that there could be no doubt of Vronsky's intentions, but her husband's words had disturbed her. And returning to her own room, in terror before the unknown future, she, too, like Kitty, repeated several times in her heart, "Lord, have pity; Lord, have pity; Lord, have pity!"

## XVI.

Vronsky had never had a real home life. His mother had been in her youth a brilliant society woman, who had had during her married life, and still more afterward, many love affairs notorious in the whole fashionable world. His father he scarcely remembered, and he had been educated in the Corps of Pages.

Leaving the school very young as a brilliant officer, he had at once got into the circle of wealthy Peterburg army men. Although he did go more or less into Peterburg society, his love affairs had always hitherto been outside it.

In Moscow he had for the first time felt, after his luxurious and coarse life at Peterburg, all the charm of intimacy with a sweet and innocent girl of his own rank, who cared for him. It never even entered his head that there could be any harm in his relations with Kitty. At balls he danced principally with her. He was a constant visitor at her house. He talked to her as people commonly do talk in society all sorts of nonsense, but nonsense to which he could not help attaching a special meaning in her case. Although he said nothing to her that he could not have said before everybody, he felt that she was becoming more and more dependent upon him, and the more he felt this, the better he liked it, and the tenderer was his feeling for her. He did not know that this mode of behavior in relation to Kitty had a definite character, that it is courting young girls with no intention of marriage, and that such courting is one of the evil actions common among brilliant young men such as he was. It seemed to him that he was the first who had discovered this pleasure, and he was enjoying his discovery.

If he could have heard what her parents were saying that evening, if he could have put himself at the point of view

## Anna Karenina

of the family, and have heard that Kitty would be unhappy if he did not marry her, he would have been greatly astonished, and would not have believed it. He could not believe that what gave such great and delicate pleasure to him, and above all to her, could be wrong. Still less could he have believed that he ought to marry.

Marriage had never presented itself to him as a possibility. He not only disliked family life, but a family, and especially a husband, in accordance with the views general in the bachelor world in which he lived, were conceived as something alien, repellent, and, above all, ridiculous. But though Vronsky had not the least suspicion of what the parents were saying, he felt on coming away from the Shcherbatskys' that the secret spiritual bond which existed between him and Kitty had grown so much stronger that evening that some step must be taken. But what step could and should be taken he could not imagine.

"What is so exquisite," he thought, as he returned from the Shcherbatskys', carrying away with him, as he always did, a delicious feeling of purity and freshness, arising partly from the fact that he had not been smoking for a whole evening, and with it a new feeling of tenderness at her love for him "what is so exquisite is that not a word has been said by me or by her, yet we understand each other so well in this unseen language of looks and tones, that this evening more clearly than ever she told me she loves me. And how sweetly, simply, and most of all, how trustfully! I feel myself better, purer. I feel that I have a heart, and that there is a great deal of good in me. Those sweet, loving eyes! When she said: 'Indeed I do...'"

"Well, what then? Oh, nothing. It's good for me, and good for her." And he began wondering where to finish the evening.

He passed in review the places he might go to. "Club? a game of bezique; champagne with Ignatov? No, I'm not going. Chateau des Fleurs; there I shall find Oblonsky, songs, the cancan. No, I'm sick of it. That's why I like the Shcherbatskys', because I'm growing better. I'll go home." He went straight to his room at Dussot's Hotel, ordered supper, and then undressed, and as soon as his head touched the pillow, fell into a sound sleep.

## XVII.

Next day, at eleven o'clock in the morning, Vronsky drove to the station of the Peterburg railway to meet his mother, and the first person he came across on the great flight of steps was Oblonsky, who was expecting his sister by the same train.

"Ah! Your Excellency!" cried Oblonsky, "Whom are you meeting?"

"My mother," Vronsky responded, smiling, as everyone did who met Oblonsky. He shook hands with him, and together they ascended the steps. "She is to be here from Peterburg today."

"I was looking out for you till two o'clock last night. Where did you go from the Shcherbatskys'?"

"Home," answered Vronsky. "I must own I felt so well content yesterday after the Shcherbatskys' that I didn't care to go anywhere."

"I can tell the gallant steeds' by some... I don't know what... 'paces'; I can tell youths 'by their faces,'" declaimed Stepan Arkadyevich, just as he had done before to Levin.

Vronsky smiled with a look that seemed to say that he did not deny it, but he promptly changed the subject.

"And whom are you meeting?" he asked.

## Anna Karenina

"I? I've come to meet a pretty woman," said Oblonsky.

"So that's it!"

"Honi soit qui mal y pense! My sister Anna."

"Ah! that's Madame Karenina," said Vronsky.

"You know her, no doubt?"

"I think I do. Or perhaps not... I really am not sure," Vronsky answered heedlessly, with a vague recollection of something stiff and tedious evoked by the name Karenina.

"But Alexei Alexandrovich, my celebrated brother-in-law, you surely must know. All the world knows him."

"I know him by reputation and by sight. I know that he's clever, learned, religious somewhat... But you know that's not... not in my line," said Vronsky in English.

"Yes, he's a very remarkable man; rather a conservative, but a very nice man," observed Stepan Arkadyevich, "a very nice man."

"Oh, well, so much the better for him," said Vronsky smiling. "Oh, you've come," he said, addressing a tall old footman of his mother's standing at the door; "come here."

Besides the charm Oblonsky had in general for everyone, Vronsky had felt of late specially drawn to him by the fact that in his imagination he was associated with Kitty.

"Well, what do you say? Shall we give a supper on Sunday for the diva?" he said to him with a smile, taking his arm.

"Of course. I'm collecting subscriptions. Oh, did you make the acquaintance of my friend Levin?" asked Stepan Arkadyevich.

"Yes; but he left rather early."

"He's a capital fellow," pursued Oblonsky. "Isn't he?"

"I don't know why it is," responded Vronsky, "in all Moscow people present company of course excepted," he put in jestingly, "there's something uncompromising. They are all on the defensive, lose their tempers, as though they all want to make one feel something...."

"Yes, that's true, it's so," said Stepan Arkadyevich, laughing cheerfully.

"Will the train be in soon?" Vronsky asked a railway official.

"The train's signaled," answered the man.

The approach of the train was more and more evident by the preparatory bustle in the station, the rush of porters, the movement of gendarmes and attendants, and crowding people meeting the train. Through the frosty vapor could be seen workmen in short sheepskins and soft felt boots crossing the rails of the curving line. The hiss of the boiler could be heard on the distant rails, and the rumble of something heavy.



## Anna Karenina

"No," said Stepan Arkadyevich, who felt a great inclination to tell Vronsky of Levin's intentions in regard to Kitty. "No, you haven't got a true impression of Levin. He's a very nervous man, and is sometimes out of humor, it's true, but then he is often very charming. He has such a true, honest nature, and a heart of gold. But yesterday there were special reasons," pursued Stepan Arkadyevich, with a meaning smile, totally oblivious of the genuine sympathy he had felt the day before for his friend, and feeling the same sympathy now, only for Vronsky. "Yes, there were reasons why he could not help being either particularly happy or particularly unhappy."

Vronsky stood still and asked directly: "How so? Do you mean he proposed to your belle-soeur yesterday?"

"Maybe," said Stepan Arkadyevich. "I fancied something of the sort yesterday. Yes, if he went away early, and was out of humor too, such must be the case.... He's been so long in love, and I'm very sorry for him."

"So that's it!... I should imagine, though, she might reckon on a better match," said Vronsky, setting his chest straight and walking about again, "though I don't know him, of course," he added. "Yes, that is a hateful position! That's why most fellows prefer to have to do with the Claras. If you don't succeed with them it only proves that you've not enough cash, but in this case one's dignity is in the balance. But here's the train."

The engine had already whistled in the distance. A few instants later the platform began to shake, and, with puffs of steam hanging low in the air from the frost, the engine rolled up, with the rod of the middle wheel rhythmically moving up and down, and the bowed, muffled figure of the engine driver covered with hoarfrost. Behind the tender, setting the platform more and more slowly and more powerfully shaking, came the luggage van with a dog whining in it. At last the passenger carriages rolled in, quivering before coming to a standstill.

A smart guard jumped out, giving a whistle, and after him one by one the impatient passengers began to get down: an officer of the guards, holding himself erect, and looking severely about him; a nimble young merchant with a bag, smiling gaily; a peasant with a sack over his shoulder.

Vronsky, standing beside Oblonsky, watched the carriages and the passengers, totally oblivious of his mother. What he had just heard about Kitty excited and delighted him. Unconsciously he straightened his chest, and his eyes flashed. He felt himself a conqueror.

"Countess Vronskaia is in that compartment," said the smart guard, going up to Vronsky.

The guard's words roused him, and forced him to think of his mother and his approaching meeting with her. He did not in his heart respect his mother, and, without acknowledging it to himself, he did not love her, though in accordance with the ideas of the set in which he lived, and with his own upbringing, he could not have conceived of any behavior to his mother not in the highest degree respectful and obedient, and the more externally obedient and respectful, the less in his heart he respected and loved her.

## XVIII.

Vronsky followed the guard to the carriage, and at the door of the compartment he stopped short to make room for a lady who was getting out.

With the habitual feeling of a man of the world, from one glance at this lady's appearance Vronsky classified her as belonging to the best society. He begged pardon, and was getting into the carriage, but felt he must glance at her once more; not because she was very beautiful, not because of that elegance and modest grace which were apparent in her whole figure, but because in the expression of her charming face, as she passed close by him, there was something peculiarly caressing and soft. As he looked round, she too turned her head. Her shining gray eyes, that looked dark because of her thick lashes, rested with friendly attention on his face, as though she were

## Anna Karenina

recognizing him, and then promptly turned away to the passing crowd, as though seeking someone. In that brief look Vronsky had time to notice the suppressed animation which played over her face, and flitted between the brilliant eyes and the faint smile that curved her red lips. It was as though her nature were so brimming over with something that, against her will, it showed itself now in the flash of her eyes, and now in her smile. Deliberately she shrouded the light in her eyes, but it shone against her will in her faintly perceptible smile.

Vronsky stepped into the carriage. His mother, a dried-up old lady with black eyes and ringlets, screwed up her eyes, scanning her son, and smiled slightly with her thin lips. Getting up from the seat and handing her maid a handbag, she gave her little wrinkled hand to her son to kiss, and lifting his head from her hand, kissed him on the cheek.

"You got my telegram? Quite well? Thank God."

"You had a good journey?" said her son, sitting down beside her, and involuntarily listening to a woman's voice outside the door. He knew it was the voice of the lady he had met at the door.

"All the same I don't agree with you," said the lady's voice.

"It's the Peterburg view, madame."

"Not Peterburg, but simply feminine," she responded.

"Well, well, allow me to kiss your hand."

"Good-by, Ivan Petrovich. And would you see if my brother is here, and send him to me?" said the lady in the doorway, and stepped back again into the compartment.

"Well, have you found your brother?" said Countess Vronskaia, addressing the lady.

Vronsky understood now that this was Madame Karenina.

"Your brother is here," he said, standing up. "Excuse me, I did not know you, and, indeed, our acquaintance was so slight," said Vronsky bowing, "that no doubt you do not remember me."

"Oh, no," said she, "I should have known you because your mother and I have been talking, I think, of nothing but you all the way." As she spoke she let the animation that would insist on coming out show itself in her smile.

"And still no sign of my brother."

"Do call him, Aliosha," said the old countess.

Vronsky stepped out onto the platform and shouted: "Oblonsky! Here!"

Madame Karenina, however, did not wait for her brother, but catching sight of him she stepped out with her light, resolute step. And as soon as her brother had reached her, with a gesture that struck Vronsky by its decision and its grace, she flung her left arm around his neck, drew him rapidly to her, and kissed him warmly. Vronsky looked on, never taking his eyes from her, and smiled, he could not have said why. But recollecting that his mother was waiting for him, he went back again into the carriage.

"She's very sweet, isn't she?" said the Countess of Madame Karenina. "Her husband put her with me, and I was delighted to have her. We've been talking all the way. And so you, I hear... vous filez le parfait amour. Tant mieux, mon cher, tant mieux."

## Anna Karenina

"I don't know what you are referring to, maman," he answered coldly. "Come, maman, let us go."

Madame Karenina entered the carriage again to say good-by to the Countess.

"Well, Countess, you have met your son, and I my brother," she said gaily. "And all my stories are exhausted; I should have nothing more to tell you."

"Oh, no," said the Countess, taking her hand. "I could go all around the world with you and never be dull. You are one of those delightful women in whose company it's sweet either to be silent or to chat. Now please don't fret over your son; you can't expect never to be parted."

Madame Karenina stood quite still, holding herself very erect, and her eyes were smiling.

"Anna Arkadyevna," the Countess said in explanation to her son, "has a little son eight years old, I believe, and she has never been parted from him before, and she keeps fretting over leaving him."

"Yes, the Countess and I have been talking all the time, I of my son and she of hers," said Madame Karenina, and again a smile lighted up her face a caressing smile intended for him.

"I am afraid that you must have been dreadfully bored," he said, promptly catching the ball of coquetry she had flung him. But apparently she did not care to pursue the conversation in that strain, and she turned to the old Countess.

"Thank you so much. The time has passed so quickly. Good-by, Countess."

"Good-by, my love," answered the Countess. "Let me kiss your pretty face. I speak plainly, at my age, and I tell you simply that I've lost my heart to you."

Stereotyped as the phrase was, Madame Karenina obviously believed it and was delighted by it. She flushed, bent down slightly, and put her cheek to the Countess's lips, drew herself up again, and, with the same smile fluttering between her lips and her eyes, she gave her hand to Vronsky. He pressed the little hand she gave him, and was delighted, as though at something special, by the energetic squeeze with which she freely and vigorously shook his hand. She went out with the rapid step which bore her rather fully developed figure with such strange lightness.

"Very charming," said the Countess.

That was precisely what her son was thinking. His eyes followed her till her graceful figure was out of sight, and then the smile remained on his face. He saw out of the window how she went up to her brother, put her arm in his, and began telling him something animatedly obviously something that had nothing to do with him, Vronsky, and at that he felt annoyed.

"Well, maman, are you perfectly well?" he repeated, turning to his mother.

"Everything has been delightful. Alexandre has been very good, and Marie has grown very pretty. She's very interesting."

And she began telling him again of what interested her most the christening of her grandson, for which she had been staying in Peterburg, and the special favor shown her elder son by the Czar.

"Here's Lavrentii," said Vronsky, looking out of the window; "now we can go, if you like."

## Anna Karenina

The old butler who had traveled with the Countess came to the carriage to announce that everything was ready, and the Countess got up to go.

"Come; there's not such a crowd now," said Vronsky.

The maid took a handbag and the lap dog, the butler and a porter the other baggage. Vronsky gave his mother his arm; but just as they were getting out of the carriage several men ran suddenly by with panic-stricken faces. The stationmaster, too, ran by in his extraordinarily colored cap. Obviously something unusual had happened. The crowd was running to the tail end of the train.

"What?... What?... Where?... Flung himself!... Crushed!..." was heard among the crowd.

Stepan Arkadyevich, with his sister on his arm, turned back. They too looked scared, and stopped at the carriage door to avoid the crowd.

The ladies got in, while Vronsky and Stepan Arkadyevich followed the crowd to find out details of the disaster.

A watchman, either drunk or too much muffled up in the bitter frost, had not heard the train moving back, and had been crushed.

Before Vronsky and Oblonsky came back the ladies heard the facts from the butler.

Oblonsky and Vronsky had both seen the mutilated corpse. Oblonsky was evidently distressed. He frowned and seemed ready to cry.

"Ah, how awful! Ah, Anna, if you had seen it! Ah, how awful!" he kept repeating.

Vronsky did not speak; his handsome face was serious, but perfectly calm.

"Ah, if you had seen it, Countess," said Stepan Arkadyevich. "And his wife was there.... It was awful to see her!... She flung herself on the body. They say he was the only support of an immense family. How awful!"

"Couldn't one do anything for her?" said Madame Karenina in an agitated whisper.

Vronsky glanced at her, and immediately got out of the carriage.

"I'll be back directly, maman," he remarked, turning round in the doorway.

When he came back a few minutes later, Stepan Arkadyevich was already in conversation with the Countess about a new singer, while she was impatiently looking toward the door, waiting for her son.

"Now let us be off," said Vronsky, coming in.

They went out together. Vronsky was in front with his mother. Behind walked Madame Karenina with her brother. Just as they were going out of the station the stationmaster overtook Vronsky.

"You gave my assistant two hundred roubles. Would you kindly explain for whose benefit you intend them?"

"For the widow," said Vronsky, shrugging his shoulders. "I should have thought there was no need to ask."

## Anna Karenina

"You gave that?" cried Oblonsky behind, and, pressing his sister's hand, he added: "Most charming, most charming! Isn't he a fine fellow? Good—by, Countess."

And he and his sister stood still, looking for her maid.

When they went out the Vronskys' carriage had already driven away. People coming in were still talking of what had happened.

"What a horrible death!" said a gentleman, passing by. "They say he was cut in two."

"On the contrary, I think it's the easiest instantaneous," observed another.

"How is it they don't take proper precautions?" a third was saying.

Madame Karenina seated herself in the carriage, and Stepan Arkadyevich saw with surprise that her lips were quivering, and that she was with difficulty restraining her tears.

"What is it, Anna?" he asked, when they had driven a few hundred sagues.

"It's an omen of evil," she said.

"What nonsense!" said Stepan Arkadyevich. "You've come, that's the chief thing. You can't conceive how I'm resting my hopes on you."

"Have you known Vronsky long?" she asked.

"Yes. You know we're hoping he will marry Kitty."

"Yes?" said Anna softly. "Come now, let us talk of you," she added, tossing her head, as though she would physically shake off something superfluous oppressing her. "Let us talk of your affairs. I got your letter, and here I am."

"Yes, all my hopes are in you," said Stepan Arkadyevich.

"Well, tell me all about it."

And Stepan Arkadyevich began his story.

On reaching home Oblonsky helped his sister out, sighed, pressed her hand, and set off to his office.

## XIX.

When Anna entered the tiny drawing room, she found Dolly sitting there with a white-headed plump little boy, already resembling his father; she was listening to a lesson in French reading. As the boy read, he kept twisting and trying to tear off a button that was nearly off his jacket. His mother had several times taken his hand from it, but the plump little hand went back to the button again. His mother pulled the button off and put it in her pocket.

"Keep your hands still, Grisha," she said, and she took up her work, a coverlet she had long been making. She always set to work on it at depressed moments, and now she knitted at it nervously, twitching her fingers and counting the stitches. Though she had sent word the day before to her husband that it was nothing to her whether

## Anna Karenina

his sister came or not, she had made everything ready for her arrival, and was expecting her sister-in-law with agitation.

Dolly was crushed by her sorrow, utterly swallowed up by it. Still she did not forget that Anna, her sister-in-law, was the wife of one of the most important personages in Peterburg, and was a Peterburg grande dame. And, thanks to this circumstance, she did not carry out her threat to her husband—that is to say, she had not forgotten that her sister-in-law was coming. "And, after all, Anna is in no wise to blame," thought Dolly. "I know nothing save the very best about her, and I have seen nothing but kindness and affection from her toward myself." It was true that as far as she could recall her impressions at Peterburg at the Karenins', she did not like their household itself; there was something artificial about the whole arrangement of their family life. "But why should I not receive her? If only she doesn't take it into her head to console me!" thought Dolly. "All consolations and exhortations and Christian forgiveness I have thought all this over a thousand times, and it's all no use."

All these days Dolly had been alone with her children. She did not want to talk of her sorrow, but with that sorrow in her heart she could not talk of outside matters.

She knew that in one way or another she would tell Anna everything, and she was alternately glad at the thought of speaking freely, and angry at the necessity of speaking of her humiliation with her, his sister, and of hearing her ready-made phrases of exhortation and consolation.

She had been on the lookout for her, glancing at her watch every minute, and, as often happens, let slip that precise minute when her visitor arrived, so that she did not hear the bell.

Catching the sound of skirts and of light steps at the door, she looked round, and her careworn face unconsciously expressed not gladness, but wonder. She got up and embraced her sister-in-law.

"What, here already?" she said as she kissed her.

"Dolly, how glad I am to see you!"

"I am glad, too," said Dolly, faintly smiling, and trying by the expression of Anna's face to find out whether she knew. "Most likely she knows," she thought, noticing the sympathy in Anna's face. "Well, come along, I'll take you to your room," she went on, trying to defer as long as possible the time of explanation.

"Is this Grisha? Heavens, how he's grown!" said Anna; and kissing him, never taking her eyes off Dolly, she stood still and flushed. "No, please, let us stay here."

She took off her shawl and her hat, and catching it in a lock of her black hair, which was a mass of curls, she tossed her head and shook her hair down.

"You are radiant with health and happiness!" said Dolly, almost with envy.

"I?... Yes," said Anna. "Merciful heavens, Tania! You're the same age as my Seriozha," she added, addressing the little girl as she ran in. She took her in her arms and kissed her. "Delightful child, delightful! Show me them all."

She mentioned them, not only remembering the names, but the years, months, characters, illnesses of all the children, and Dolly could not but appreciate that.

"Very well, we will go to them," she said. "It's a pity Vassia's asleep."

## Anna Karenina

After seeing the children, they sat down, alone now, in the drawing room, to coffee. Anna took the tray, and then pushed it away from her.

"Dolly," she said, "he has told me."

Dolly looked coldly at Anna; she was waiting now for hypocritically sympathetic phrases, but Anna said nothing of the sort.

"Dolly, darling," she said, "I don't want to intercede for him, nor to try to comfort you that's impossible. But, my dearest, I'm simply sorry, sorry from my heart for you!"

Under the thick lashes of her shining eyes tears suddenly glittered. She moved nearer to her sister-in-law and took her hand in her own, vigorous and little. Dolly did not shrink away, but her face did not lose its frigid expression. She said:

"To comfort me is impossible. Everything's lost after what has happened, everything's over!"

And directly she had said this, her face suddenly softened. Anna lifted the wasted, thin hand of Dolly, kissed it and said:

"But, Dolly, what's to be done, what's to be done? How is it best to act in this awful position that's what you must think of."

"All's over, and there's nothing more," said Dolly. "And the worst of it all is, you see, that I can't cast him off: there are the children my hands are tied. And I can't live with him! It's a torture for me to see him."

"Dolly, darling, he has spoken to me, but I want to hear it from you: tell me all about it."

Dolly looked at her inquiringly.

Sympathy and love unfeigned were apparent on Anna's face.

"Very well," she suddenly said. "But I will begin at the beginning. You know how I was married. With the education mama gave us I was more than innocent I was foolish. I knew nothing. They say, I know, men tell their wives of their former lives, but Stiva" she corrected herself "Stepan Arkadyevich told me nothing. You'll hardly believe it, but till now I imagined that I was the only woman he had known. So I lived eight years. You must understand that I was not only far from suspecting infidelity, but I regarded it as impossible, and then try to imagine it with such conceptions to find out suddenly all the horror, all the loathsomeness... You must try and understand me. To be fully convinced of one's happiness, and all at once..." continued Dolly, holding back her sobs, "To get a letter... His letter to his mistress, a governess in my employ. No, it's too awful!" She hastily pulled out her handkerchief and hid her face in it. "I can understand if it were passion," she went on, after a brief silence, "but to deceive me deliberately, slyly... And with whom?... To go on being my husband while he and she... It's awful! You can't understand..."

"Oh, yes, I understand! I understand! Dolly, dearest, I do understand," said Anna, pressing her hand.

"And do you imagine he realizes all the awfulness of my position? Dolly resumed. "Not in the slightest! He's happy and contented."

"Oh, no!" Anna interposed quickly. "He's to be pitied, he's weighed down by remorse..."

## Anna Karenina

"Is he capable of remorse?" Dolly interrupted, gazing intently into her sister-in-law's face.

"Yes. I know him. I could not look at him without feeling sorry for him. We both know him. He's good-natured, but he's proud, and now he's so humiliated. What touched me most..." (And here Anna guessed what would touch Dolly most.) "He's tortured by two things: that he's ashamed for the children's sake, and that, loving you yes, yes, loving you beyond everything on earth," she hurriedly interrupted Dolly, who would have rejoined "he has hurt you, pierced you to the heart. 'No, no, she cannot forgive me,' he keeps on saying."

Dolly looked pensively past her sister-in-law as she listened to her words.

"Yes, I can see that his position is awful; it's worse for the guilty than the innocent," she said, "if he feels that all the misery comes from his fault. But how am I to forgive him, how am I to be his wife again after her? For me to live with him now would be torture, just because I love my past love for him..."

And sobs cut short her words.

But as though of set design, each time she was softened she began to speak again of what exasperated her.

"She's young, you see, she's pretty," she went on. "Do you know, Anna, my youth and my beauty are gone, taken by whom? By him and his children. I have worked for him, and all I had has gone in his service, and now of course any fresh, vulgar creature has more charm for him. No doubt they talked of me together, or, worse still, they were silent about me.... Do you understand?"

Again her eyes glowed with hatred.

"And after that he will tell me... What! Am I to believe him? Never! No, everything is over, everything that once constituted my comfort, the reward of my work and of my sufferings... Would you believe it? I was teaching Grisha just now: once this was a joy to me, now it is a torture. What have I to strive and toil for? Why to have children? What's so awful is that all at once my heart's turned, and instead of love and tenderness, I have nothing but hatred for him; yes, hatred. I could kill him and..."

"Darling Dolly, I understand, but don't torture yourself You are so insulted, so excited, that you look at many things mistakenly."

Dolly grew calmer, and for two minutes both were silent.

"What's to be done? Think for me, Anna, help me. I have thought over everything, and I see nothing."

Anna could not find anything, but her heart echoed instantly to each word, to each change of expression on her sister-in-law's face.

"One thing I would say," began Anna. "I am his sister, I know his character, that faculty of forgetting everything, everything" (she waved her hand before her forehead), "that faculty for being completely carried away, but for completely repenting, too. He cannot believe it, he cannot comprehend now, how he could have acted as he did."

"No; he understands, and understood!" Dolly broke in. "But I... You are forgetting me... Does that make it easier for me?"

"Wait a minute. When he told me, I will own I did not realize all the horror of your position. I saw nothing but him, and that the family was broken up. I felt sorry for him, but after talking to you, I see it, as a woman, quite differently. I see your agony, and I can't tell you how sorry I am for you! But, Dolly, darling, while I fully realize



## Anna Karenina

your sufferings, there is one thing I don't know; I don't know... I don't know how much love there is still in your heart for him. That you know whether there is enough for you to be able to forgive him. If there is forgive him!"

"No," Dolly was beginning, but Anna cut her short, kissing her hand once more.

"I know more of the world than you do," she said. I know how men like Stiva look at it. You speak of his talking of you with her. That never happened. Such men are unfaithful, but their own home and wife are sacred to them. Somehow or other these women are still looked on with contempt by them, and do not touch on their feeling for their family. They draw a sort of line that can't be crossed between them and their families. I don't understand it, but it is so."

"Yes, but he has kissed her..."

"Dolly, hush, darling. I saw Stiva when he was in love with you. I remember the time when he came to me and cried, talking of you, and of what a poetry and loftiness you were for him, and I know that the longer he has lived with you the loftier you have been in his eyes. You know we have sometimes laughed at him for putting in at every word: "Dolly's a marvelous woman." have always been a divinity for him, and you are that still, and this has not been a passion of the heart..."

"But if it be repeated?"

"It cannot be, as I understand it..."

"Yes, but could you forgive it?"

"I don't know, I can't judge... No, I can judge," said Anna, thinking a moment; and grasping the position in her thought and weighing it in her inner balance, she added: "Yes, I can, I can, I can. Yes, I could forgive. I could not be the same, no; but I could forgive, and forgive as though it had never been, never been at all...."

"Oh, of course," Dolly interposed quickly, as though saying what she had more than once thought, "else it would not be forgiveness. If one forgives, it must be completely, completely. Come, let us go; I'll take you to your room," she said, getting up, and on the way she embraced Anna. "My dear, how glad I am you came. It has made things better, ever so much better."

## XX.

The whole of that day Anna spent at home that is, at the Oblonskys', and received no one, though some of her acquaintances had already heard of her arrival, and came to call the same day. Anna spent the whole morning with Dolly and the children. She merely sent a brief note to her brother to tell him that he must not fail to dine at home. "Come, God is merciful," she wrote.

Oblonsky did dine at home: the conversation was general, and his wife, speaking to him, addressed him as "Stiva," as she had not done for some time past. In the relations of husband and wife the same estrangement still remained, but there was no talk of separation, and Stepan Arkadyevich saw the possibility of explanation and reconciliation.

Immediately after dinner Kitty came in. She knew Anna Arkadyevna, but only very slightly, and she came now to her sister's with some trepidation, at the prospect of meeting this fashionable Peterburg lady, of whom everyone spoke so highly. But she made a favorable impression on Anna Arkadyevna she perceived that at once. Anna

## Anna Karenina

was unmistakably admiring her loveliness and her youth: before Kitty knew where she was she found herself not merely under Anna's sway, but in love with her, as young girls do fall in love with older and married women. Anna did not resemble a fashionable lady, or the mother of a boy eight years old. In the elasticity of her movements, the freshness and the animation which persisted in her face and broke out in her smile and her glance, she would rather have passed for a girl of twenty, had it not been for a serious and, at times, a mournful look in her eyes, which struck and attracted Kitty. Kitty felt that Anna was perfectly simple and was concealing nothing, but that she had another higher world of interests, complex and poetic, which were inaccessible to Kitty.

After dinner, when Dolly withdrew to her own room, Anna rose quickly and went up to her brother, who was just lighting a cigar.

"Stiva," she said to him, winking gaily, making the sign of the cross over him, and glancing toward the door, "go, and God help you."

He tossed away his cigar, having understood her, and departed through the doorway.

When Stepan Arkadyevich had disappeared, she went back to the sofa where she had been sitting, surrounded by the children. Either because the children saw that their mother was fond of this aunt, or that they themselves sensed a special charm in her, the two elder ones, and the younger following their lead, as children so often do, had clung about their new aunt since before dinner, and would not leave her side. And it had become a sort of game among them to sit as close as possible to their aunt, to touch her, hold her little hand, kiss it, play with her ring, or even touch the flounce of her skirt.

"Come, come, as we were sitting before," said Anna Arkadyevna, sitting down in her place.

And again Grisha poked his little face under her arm, and nestled with his head on her gown, beaming with pride and happiness.

"And when is your next ball?" she asked Kitty.

"Next week and a splendid ball. One of those balls where one always enjoys oneself."

"Why, are there balls where one always enjoys oneself?" Anna said, with tender irony.

"It's strange, but there are. At the Bobrishchevs' one always enjoys oneself, and at the Nikitins' too, while at the MezHKovs' it's always dull. Haven't you noticed it?"

"No, my dear, for me there are no balls now where one enjoys oneself," said Anna, and Kitty detected in her eyes that peculiar world which was not revealed to her. "For me there are some which are less dull and tiresome than others."

"How can you be dull at a ball?"

"Why should not I be dull at a ball?" inquired Anna.

Kitty perceived that Anna knew what answer would follow.

"Because you always look the loveliest of all."

Anna had the faculty of blushing. She blushed, and said:

## Anna Karenina

"In the first place it's never so; and secondly, if it were, what difference would it make to me?"

"Are you coming to this ball? asked Kitty.

"I imagine it won't be possible to avoid going. Here, take it," she said to Tania, who was pulling the loosely fitting ring off her white, slender-tipped finger.

"I shall be so glad if you go. I should so like to see you at a ball."

"Anyway, if I do go, I shall comfort myself with the thought that it's a pleasure to you.... Grisha, don't pull my hair. It's untidy enough without that," she said, putting up a straying lock, which Grisha had been playing with.

"I imagine you at the ball in lilac."

"And why in lilac, precisely?" asked Anna, smiling. "Now, children, run along, run along. Do you hear? Miss Hoole is calling you to tea," she said tearing the children from her, and sending them off to the dining room.

"I know why you press me to come to the ball. You expect a great deal of this ball, and you want everyone to be there and take part in it."

"How do you know? Yes!"

"Oh! What a happy time you are at," pursued Anna. "I remember, and I know this blue haze, like the mist on the mountains in Switzerland. This mist, which covers everything in that blissful time when childhood is just ending, and out of that vast circle, happy and gay, there is a path growing narrower and narrower, and it is delightful and alarming to enter the ballroom, bright and splendid as it is.... Who has not been through it?"

Kitty smiled without speaking. "But how did she go through it? How I should like to know all her love story!" thought Kitty, recalling the unromantic appearance of Alexei Alexandrovich, her husband.

"I know something. Stiva told me, and I congratulate you. I liked him so much," Anna continued. "I met Vronsky at the railway station."

"Oh, was he there?" asked Kitty, blushing. "What was it Stiva told you?"

"Stiva blabbed about it all. And I should be so glad. I traveled yesterday with Vronsky's mother," she went on; "and his mother talked without a pause of him; he's her favorite. I know mothers are partial, but..."

"What did his mother tell you?"

"Oh, a great deal! And although I know that he's her favorite, one can still see how chivalrous he is.... Well, for instance, she told me that he had wanted to give up all his property to his brother; that he had done something extraordinary when he was quite a child saved a woman from the water. He's a hero, in fact," said Anna, smiling and recollecting the two hundred roubles he had given at the station.

But she did not tell Kitty about the two hundred roubles. For some reason it was disagreeable to her to think of it. She felt that there was something that had to do with her in it, and something that ought not to have been.

"She pressed me very much to go and see her," Anna went on; "and I shall be glad to go to see her tomorrow. Stiva is staying a long while in Dolly's room, thank God," Anna added, changing the subject, and getting up, Kitty fancied, displeased with something.

## Anna Karenina

"No, I'm first! No, I!" screamed the children, who had finished tea, running up to their Aunt Anna.

"All together," said Anna, and she ran laughing to meet them, and, embracing them, threw all the children, shrieking with delight, into a swarming heap.

### XXI.

Dolly came out of her room to the tea of the grownups. Stepan Arkadyevich did not come out. He must have left his wife's room by a back door.

"I am afraid you'll be cold upstairs," observed Dolly, addressing Anna; "I want to move you downstairs, and we shall be nearer."

"Oh, please, don't trouble about me," answered Anna, looking intently into Dolly's face, trying to make out whether there had been a reconciliation or not.

"It will be lighter for you here," answered her sister-in-law.

"I assure you that I can sleep like a marmot anywhere and any time."

"What's all this?" inquired Stepan Arkadyevich, coming out of his room and addressing his wife.

From his tone both Kitty and Anna at once gathered that a reconciliation had taken place.

"I want to move Anna downstairs, but we must hang up blinds. No one knows how to do it; I must see to it myself," answered Dolly addressing him.

"God knows whether they are fully reconciled," thought Anna, hearing her tone, cold and composed.

"Come, Dolly, why be always making difficulties," answered her husband. "There, I'll do it all, if you like..."

"I know how you do everything," answered Dolly. "You tell Matvei to do what can't be done, and go away yourself, leaving him to make a muddle of everything," and her habitual, mocking smile curved the corners of Dolly's lips as she spoke.

"Full, full reconciliation full," thought Anna, "thank God!" and rejoicing that she was the cause of it, she went up to Dolly and kissed her.

"Not at all. Why do you always look down on me and Matvei?" said Stepan Arkadyevich, smiling hardly perceptibly, and addressing his wife.

The whole evening Dolly was, as always, a little mocking in her tone to her husband, while Stepan Arkadyevich was happy and cheerful, yet not so as to seem as if, having been forgiven, he had forgotten his fault.

At half-past nine o'clock a particularly joyful and pleasant family conversation over the tea table at the Oblonskys' was broken up by an apparently simple incident. But this simple incident for some reason struck everyone as strange. Having begun talking about common acquaintances in Peterburg, Anna got up quickly.

"She is in my album," she said; "and, by the way, I'll show you my Seriozha," she added, with a mother's smile of pride.

## Anna Karenina

Toward ten o'clock, when she usually said good night to her son, and often, before going to a ball put him to bed herself, she felt depressed at being so far from him; and whatever she was talking about, she kept coming back in thought to her curly-headed Seriozha. She longed to look at his photograph and talk of him. Seizing the first pretext, she got up, and with her light, resolute step went for her album. The stairs up to her room came out on the landing of the great warm main staircase.

Just as she was leaving the drawing room, a ring was heard in the hall.

"Who can that be?" said Dolly.

"It's too early for me to be fetched, and for anyone else it's too late," observed Kitty.

"It's sure to be someone with papers for me," put in Stepan Arkadyevich. When Anna was passing the top of the staircase, a servant was running up to announce the visitor, while the visitor himself was standing under a lamp. Anna, glancing down, at once recognized Vronsky, and a strange feeling of pleasure and, at the same time, of some dread, stirred in her heart. He stood there, without taking off his coat, and pulling something out of his pocket. At the instant when she was just halfway up the stairs he raised his eyes, caught sight of her, and the expression of his face changed to embarrassment and dismay. With a slight inclination of her head she passed, hearing behind her Stepan Arkadyevich's loud voice calling him to come up, and the quiet, soft, and calm voice of Vronsky refusing.

When Anna returned with the album he was already gone, and Stepan Arkadyevich was telling them that he had called to inquire about the dinner they were giving next day to a foreign celebrity.

"And nothing would induce him to come up. What a queer fellow he is!" added Stepan Arkadyevich.

Kitty blushed. She thought that she was the only person who knew why he had come, and why he would not come up. "He has been at home," she thought, "and didn't find me, and thought I should be here, but he did not come up because he thought it late, and Anna's here."

All of them looked at each other, saying nothing, and began to look at Anna's album.

There was nothing either exceptional or strange in a man's calling at half-past nine on a friend to inquire details of a proposed dinner party and not coming in, yet it seemed strange to all of them. And to Anna it seemed stranger and more unpleasant than to any of the others.

## XXII.

The ball was only just beginning as Kitty and her mother walked up the great staircase, flooded with light, and lined with flowers and footmen in powder and red coats. From the rooms came a constant, steady noise, like that of a hive aswarm; and as they were giving the final little touches to hair and dresses before a mirror on the landing between potted trees, they heard, coming from the ballroom, the gently distinct notes of the fiddles of the orchestra, beginning the first waltz. A little ancient in civilian dress, arranging his gray curls before another mirror, and diffusing an odor of scent, stumbled against them on the stairs, and stood aside, evidently admiring Kitty, whom he did not know. A beardless youth, one of those society youths whom the old Prince Shcherbatsky called whelps, in an exceedingly open waistcoat, straightening his white tie as he went, bowed to them and after running by, came back to ask Kitty for a quadrille. As the first quadrille had already been given to Vronsky, she had to promise this youth the second. An officer, buttoning his glove, stood aside in the doorway, and, stroking his mustache, admired the rosy Kitty.

## Anna Karenina

Although her dress, her coiffure, and all the preparations for the ball had cost Kitty much trouble and planning, at this moment she walked into the ballroom in the elaborate tulle dress over a pink slip as unconcernedly and simply as though all the rosettes and lace, all the minute details of her attire, had not cost her or her family a moment's attention, as though she had been born in this tulle and lace, with this towering coiffure, surmounted by a rose and two small leaves.

When, just before entering the ballroom, the old Princess tried to adjust a sash ribbon that had become twisted, Kitty had drawn back a little. She felt that everything must be right of itself, and graceful, and that nothing could need setting straight.

Kitty had one of her good days. Her dress was not uncomfortable anywhere; her lace bertha did not droop anywhere; her rosettes were neither crushed nor torn off; her pink slippers with high, curving heels did not pinch, but gladdened her tiny feet; and the thick bandeaux of fair hair kept up on her head. All the three buttons buttoned up without tearing on the long glove that covered her hand without concealing its lines. The black velvet ribbon of her locket nestled with special tenderness round her neck. This velvet ribbon was a darling; at home, regarding her neck in the looking glass, Kitty had felt that that velvet was speaking. About all the rest there might be a doubt, but the velvet ribbon was a darling. Kitty smiled here too, at the ball, when she glanced at it in the glass. Her bare shoulders and arms gave Kitty a sensation of chill marble—a sensation she particularly liked. Her eyes sparkled, and her rosy lips could not help but smile from the consciousness of their own attractiveness. She had scarcely entered the ballroom and reached the tulle—ribbon—lace—colored throng of ladies, waiting to be asked to dance. Kitty was never one of that throng when she was asked for a waltz, and asked by the best partner, the first star in the hierarchy of the ballroom, a renowned conductor of the dances and master of ceremonies, married man, handsome and well built, Iegorushka Korsunsky. He had only just left the Countess Banina, with whom he had danced the first turn of the waltz, and, scanning his demesne—that is to say, a few couples who had started dancing—he caught sight of Kitty entering, and flew up to her with that peculiar, easy amble which is confined to conductors of the dances. Bowing and without even asking her if she cared to dance, he put out his arm to encircle her slender waist. She looked round for someone to give her fan to, and their hostess, smiling to her, took it.

"How good of you to come in good time," he said to her, embracing her waist; "such a bad habit to be late."

Bending her left arm, she laid it on his shoulder, and her little feet in their pink slippers began swiftly, lightly, and rhythmically moving over the slippery floor in time to the music.

"It's a rest to waltz with you," he said to her, as they fell into the first slow steps of the waltz. "It's charming—such lightness, precision." He said to her the same thing he said to almost all his partners whom he knew well.

She smiled at his praise, and continued to look about the room over his shoulder. She was not like a girl at her first ball, for whom all faces in the ballroom melt into one vision of fairyland. And she was not a girl who had gone the stale round of balls till every face in the ballroom was familiar and tiresome. But she was in the middle stage between these two; she was excited, and at the same time she had sufficient self-possession to be able to observe. In the left corner of the ballroom she saw the very flower of society grouped together. There—impossibly naked—was the beauty Liddy, Korsunsky's wife; there was the lady of the house; there shone the bald pate of Krivin, always to be found wherever the best people were; in that direction gazed the young men, not venturing to approach; there, too, she descried Stiva, and there she saw the charming figure and head of Anna in a black velvet gown. And he was there. Kitty had not seen him since the evening she refused Levin. With her farsighted eyes, knew him at once, and was even aware that he was looking at her.

"Another turn, eh? You're not tired?" said Korsunsky, a little out of breath.

"No, thank you!"

"Where shall I take you?"

"Madame Karenina's here, I think.... Take me to her."

"Wherever you command."

And Korsunsky began waltzing with measured steps straight toward the group in the left corner, continually saying, "Pardon, mesdames, pardon, pardon, mesdames," and steering his course through the sea of lace, tulle and ribbon, and not disarranging a feather, he turned his partner sharply round, so that her slim ankles, in light, transparent stockings, were exposed to view, and her train floated out in fan shape and covered Krivin's knees. Korsunsky bowed, set straight his open shirt front, and gave her his arm to conduct her to Anna Arkadyevna. Kitty, flushed, took her train from Krivin's knees, and, a little giddy, looked round, seeking Anna. Anna was not in lilac, as Kitty had so urgently wished, but in a black, low-cut, velvet gown, showing her full shoulders and bosom, that looked as though carved in old ivory, and her rounded arms, with tiny, slender hands. The whole gown was trimmed with Venetian guipure. On her head, among her black hair her own, with no false additions was a little wreath of pansies, and a similar one on the black ribbon of her sash, among white lace. Her coiffure was not striking. All that was noticeable was the little willful tendrils of her curly hair that persisted in escaping on the nape of her neck, and on her temples. Encircling her sculptured, strong neck was a thread of pearls.

Kitty had been seeing Anna every day; she adored her, and had pictured her invariably in lilac. But now, seeing her in black, she felt that she had not fully perceived her charm. She saw her now as someone quite new and surprising to her. Now she understood that Anna could not have been in lilac, and that her charm was precisely in that she always stood out against her attire, that her dress could never be noticeable on her. And her black dress, with its sumptuous lace, was not noticeable on her; it was only the frame and all that was seen was she simple, natural, elegant, and at the same time gay and animated.

She was standing, as always, very erect, and when Kitty drew near the group she was speaking to the master of the house, her head slightly turned toward him.

"No, I won't cast a stone," she was saying, in answer to something, "though I can't understand it she went on, shrugging her shoulders, and she turned at once with a soft smile of protection toward Kitty. With a cursory feminine glance she scanned her attire, and made a movement of her head, hardly perceptible, but understood by Kitty, signifying approval of her dress and her looks. "You came into the room dancing," she added.

"This is one of my most faithful supporters," said Korsunsky, bowing to Anna Arkadyevna, whom he had not yet seen. "The Princess helps to make any ball festive and successful. Anna Arkadyevna, a waltz?" he said, bending down to her.

"Why, have you met?" inquired their host.

"Is there anyone we have not met? My wife and I are like white wolves everyone knows us," answered Korsunsky. "A waltz, Anna Arkadyevna?"

"I don't dance whenever it's possible not to," she said.

"But tonight it's impossible," answered Korsunsky.

During the conversation Vronsky was approaching them.

"Well, since it's impossible tonight, let us start," she said, not noticing Vronsky's bow, and hastily put her hand on Korsunsky's shoulder.

"What is she vexed with him about?" thought Kitty, discerning that Anna had intentionally not responded to Vronsky's bow. Vronsky went up to Kitty, reminding her of the first quadrille, and expressing his regret at not having seen her all this time. Kitty gazed in admiration at Anna waltzing, as she listened to him. She expected him to ask her for a waltz, but he did not, and she glanced wonderingly at him. He flushed, and hurriedly asked her to waltz, but he had barely put his arm round her slender waist and taken the first step when the music suddenly stopped. Kitty looked into his face, which was so close to her own, and long afterward for several years this look, full of love, to which he made no response, cut her to the heart with an agony of shame.

"Pardon! Pardon! Waltz! Waltz!" shouted Korsunsky from the other side of the room, and, seizing the first young lady he came across he began dancing.

### XXIII.

Vronsky and Kitty waltzed several times round the room. After the waltz Kitty went to her mother, and she had hardly time to say a few words to Countess Nordstone when Vronsky came up again for the first quadrille. During the quadrille nothing of any significance was said: there was disjointed talk between them of the Korsunskys, husband and wife, whom he described very amusingly, as delightful children at forty, and of the future popular theater; and only once did the conversation touch her to the quick when he asked her whether Levin were here, and added that he liked him very much. But Kitty did not expect much from the quadrille. She looked forward with a sinking heart to the mazurka. She fancied that the mazurka would decide everything. The fact that he did not during the quadrille ask her for the mazurka did not trouble her. She felt sure she would dance it with him, as she had done at former balls, and refused five young men, saying she was engaged for the mazurka. The whole ball up to the last quadrille was for Kitty an enchanted vision of delightful colors, sounds and motions. She only sat down when she felt too tired and begged for a rest. But as she was dancing the last quadrille with one of the tiresome young men whom she could not refuse, she chanced to be vis-à-vis with Vronsky and Anna. She had not been near Anna since the beginning of the evening, and now she again suddenly saw her as quite new and surprising. She saw in her the signs of that excitement of success she knew so well in herself; she saw that she was intoxicated with the delighted admiration she was exciting. She knew that feeling and knew its signs, and saw them in Anna; saw the quivering, flashing light in her eyes, and the smile of happiness and excitement unconsciously curving her lips, and the distinct grace, precision and lightness of her movements.

"Who is it?" she asked herself. "All or one?" And without keeping up her end of the conversation, the thread of which the harassed young man she was dancing with lost and could not pick up again, she obeyed with external liveliness the peremptory shouts of Korsunsky starting them all into the grand rond, and then into the chaine, and at the same time she kept watch with a growing pang at her heart. "No, it's not admiration of the crowd that has intoxicated her, but the adoration of one. And that one? Can it be he?" Every time he spoke to Anna the joyous light flashed into her eyes, and the smile of happiness curved her red lips. She seemed to make an effort to control herself, in order not to show these signs of delight, but they appeared on her face of themselves. "But what of him?" Kitty looked at him and was horrified. What was pictured so clearly to Kitty in the mirror of Anna's face she saw in him. What had become of his always calm, firm manner, and the carelessly calm expression of his face? Now every time he turned to her he bent his head, as though he would have fallen at her feet, and in his eyes there was nothing but humble submission and dread. "I would not offend you," his eyes seemed to be saying each time, "but I want to save myself, and I don't know how." On his face was a look such as Kitty had never seen before.

They were speaking of common acquaintances, keeping up the smallest of small talk, but to Kitty it seemed that every word they said was determining their fate and hers. And strangely enough, although they were actually



## Anna Karenina

talking of how absurd Ivan Ivanovich was with his French, and how the Eletsy girl might have made a better match, these words were yet fraught with significance for them, and they sensed this as much as Kitty did. The whole ball, the whole world, everything seemed screened by a fog within Kitty's soul. Nothing but the stern discipline of her bringing-up supported her and forced her to do what was expected of her—that is, to dance, to answer questions, to talk, even to smile. But before the mazurka, when they were beginning to rearrange the chairs and a few couples moved out of the smaller rooms into the big room, a moment of despair and horror came for Kitty. She had refused five partners, and now she was not dancing the mazurka. She had not even a hope of being asked for it, because she was so successful in society that the idea would never occur to anyone that she had remained disengaged till now. She would have to tell her mother she felt ill and go home, yet she had not the strength to do this. She felt crushed.

She went to the farthest end of the second drawing room and sank into a low chair. Her light, transparent skirts rose like a cloud about her slender waist; one bare, thin, soft, girlish arm, hanging listlessly, was lost in the folds of her pink tunic; in the other she held her fan and with rapid, short strokes fanned her burning face. Yet, while she looked like a butterfly clinging to a blade of grass, and just about to open its rainbow wings for fresh flight, her heart ached with a horrible despair.

"But perhaps I am wrong—perhaps it was not so?" And again she recalled all she had seen.

"Kitty, what is it?" said Countess Nordstone, stepping noiselessly over the carpet toward her. "I don't understand it."

Kitty's lower lip began to quiver; she got up quickly.

"Kitty, you're not dancing the mazurka?"

"No, no," said Kitty in a voice shaking with tears.

"He asked her for the mazurka in my presence," said Countess Nordstone, knowing Kitty would understand who he and her were. "She said: 'Why, aren't you going to dance it with Princess Shcherbatskaia?'"

"Oh, it doesn't matter to me!" answered Kitty.

No one but she herself understood her position; no one knew that she had refused yesterday the man whom perhaps she loved, and refused him because she had put her faith in another.

Countess Nordstone found Korsunsky, with whom she was to dance the mazurka, and told him to ask Kitty.

Kitty danced in the first couple, and luckily for her she had not to talk because Korsunsky was all the time running about, overseeing his demesne. Vronsky and Anna were sitting almost opposite her. She saw them with her farsighted eyes, and saw them, too, close by when they met in the figures, and the more she saw of them the more convinced was she that her unhappiness was consummated. She saw that they felt themselves alone in this crowded room. And on Vronsky's face, always so firm and independent, she saw the look that had struck her, of bewilderment and humble submissiveness, like the expression of an intelligent dog when it has done wrong.

Anna smiled—and her smile was reflected by him. She grew thoughtful—and he became serious. Some supernatural force drew Kitty's eyes to Anna's face. She was charming in her simple black dress; charming were her round arms with their bracelets; charming was her firm neck with its thread of pearls; charming the straying curls of her loose hair; charming the graceful, light movements of her little feet and hands, charming was that lovely face in its animation—yet there was something terrible and cruel in her charm.

## Anna Karenina

Kitty admired her more than ever, and more and more acute did her suffering grow. Kitty felt crushed, and her face showed it. When Vronsky caught sight of her, coming upon her in the mazurka, he did not at once recognize her, so changed was she.

"Delightful ball!" he said to her, merely for the sake of saying something.

"Yes," she answered.

In the middle of the mazurka, repeating a complicated figure, newly invented by Korsunsky, Anna came forward into the center of the circle, chose two gentlemen, and summoned Kitty and another lady. Kitty gazed at her in dismay as she went up. Anna looked at her with drooping eyelids, and smiled, pressing her hand. But, noticing that Kitty only responded to her smile by a look of despair and amazement, she turned away from her, and began gaily talking to the other lady.

"Yes, there is something uncanny, devilish and charming about her," said Kitty to herself.

Anna did not want to stay for supper, but the master of the house began urging her.

"Nonsense, Anna Arkadyevna," said Korsunsky placing her bare hand upon his coat sleeve. "I've such an idea for a cotillon! Un bijou!"

And he moved gradually on, trying to draw her along with him. Their host smiled approvingly.

"No, I'm not going to stay," answered Anna, smiling, but, in spite of her smile, both Korsunsky and the master of the house saw from her resolute tone that she would not stay.

"No; why, as it is, I have danced more at your ball in Moscow than I have all the winter in Petersburg," said Anna, looking round at Vronsky, who stood near her. "I must rest a little before my journey."

"Are you definitely going tomorrow then?" asked Vronsky.

"Yes, I suppose so," answered Anna, as though wondering at the boldness of his question; but the irrepressible, quivering brilliance of her eyes and her smile set him on fire as she said it.

Anna Arkadyevna did not stay to supper, but went home.

## XXIV.

"Yes, there must be something disgusting, repulsive about me," reflected Levin, as he left the Shcherbatskys', and set out on foot for his brother's lodgings. "And I don't get on with other people. Pride, they say. No, I haven't even pride. If I had any pride, I should not have put myself in such a position." And he pictured to himself Vronsky, happy, good-natured, clever and calm certainly never placed in the awful position in which he had been that evening. "Yes, she was bound to choose him. It must be so, and I cannot complain of anyone or anything. I am myself to blame. What right had I to imagine she would care to join her life to mine? Who am I, and what am I? A nobody, not wanted by anyone, nor of use to anybody." And he recalled his brother Nikolai, and dwelt with pleasure on the thought of him. "Isn't he right in saying that everything in the world is bad and vile? And are we fair in our judgment, present and past, of brother Nikolai? Of course, from the point of view of Procophii, seeing him in a torn cloak and tipsy, he's a despicable person. But I know him differently. I know his soul, and know that we are alike. And I, instead of going to seek him out, went out to dinner, and then came here." Levin walked up to a lamppost, read his brother's address, which was in his pocketbook, and called a cabby. All the long way to his

brother's Levin vividly recalled all the facts, familiar to him, of his brother Nikolai's life. He remembered how his brother, while at the university, and for a year afterward, had, in spite of the jeers of his companions, lived like a monk, strictly observing all religious rites, services and fasts, and avoiding every sort of pleasure especially women. And now, afterward, he had all at once broken out: had associated with the most horrible people, and rushed into the most senseless debauchery. He remembered later the scandal over a boy, whom he had taken from the country to bring up, and, in a fit of rage, had so violently beaten that proceedings were brought against him for personal injury. Then he remembered the scandal with a sharper, to whom he had lost money, and given a promissory note, and against whom he had himself lodged a complaint, asserting that he had cheated him. (This was the money Sergei Ivanovich had paid.) Then he remembered how he had spent a night in a police station for disorderly conduct in the street. He remembered the shameful proceedings he had instituted against his brother Sergei Ivanovich, accusing him of not having paid him, apparently, his share of his mother's estate; and the last scandal, when he had gone to a Western province in an official capacity, and there had got into trouble for assaulting a village elder.... It was all horribly vile, yet to Levin it appeared not at all as vile as it inevitably would to those who did not know Nikolai, did not know all his story, did not know his heart.

Levin remembered that when Nikolai had been in the devout stage, the period of fasts and monks and church services, when he was seeking in religion a support and a curb for his passionate temperament, everyone, far from encouraging him, had jeered at him and Levin had, too, with the others. They had teased him, calling him Noah and Monk; yet, when he had broken out, no one had helped him, but had all turned away from him, with horror and loathing.

Levin felt that brother Nikolai, in spite of all the ugliness of his life, in his soul, in the very depths of his soul, was no more in the wrong than the people who despised him. He was not to blame for having been born with his unbridled character and some pressure upon his intellect. For he had always wanted to be good. "I will tell him everything, without reserve, and I will make him speak without reserve, too, and I'll show him that I love him, and therefore understand him," Levin resolved to himself, as, toward eleven o'clock, he reached the hotel of which he had the address.

"At the top, twelve and thirteen," the porter answered Levin's inquiry.

"At home?"

"Probably he is at home."

The door of No. 12 was half open, and, together with a streak of light, there issued thick fumes of cheap, poor tobacco, and the sound of a voice, unknown to Levin; but he knew at once that his brother was there: he recognized his cough.

As he went in at the door, the unknown voice was saying:

"It all depends with how much judgment and knowledge the thing's done."

Konstantin Levin looked in at the door, and saw that the speaker was a young man with an immense shock of hair, wearing a Russian coat, and that a pock-marked young woman in a woolen gown, without collar or cuffs, was sitting on the sofa. His brother was not to be seen. Konstantin felt a sharp pang at his heart at the thought of the strange company in which his brother spent his life. No one had heard him, and Konstantin, taking off his galoshes, listened to what the gentleman in the Russian coat was saying. He was speaking of some enterprise.

"Well, the devil flay them, these privileged classes," his brother's voice responded, with a cough. "Masha! get us some supper, and serve up some wine, if there's any left; or else send for some."

## Anna Karenina

The woman rose, came out from behind the partition, and saw Konstantin.

"There's some gentleman here, Nikolai Dmitrievich," she said.

"Whom do you want?" said the voice of Nikolai Levin, angrily.

"It's I," answered Konstantin Levin, coming forward into the light.

"Who's I?" Nikolai's voice said again, still more angrily. He could be heard getting up hurriedly, stumbling against something, and Levin saw, facing him in the doorway, the big scared eyes, and the huge, gaunt, stooping figure of his brother, so familiar, and yet astonishing in its oddity and sickliness.

He was even thinner than three years before, when Konstantin Levin had seen him last. He was wearing a short coat, and his hands and big bones seemed huger than ever. His hair had grown thinner, the same straight mustache hid his lips, the same eyes gazed strangely and naively at his visitor.

"Ah, Kostia!" he exclaimed suddenly, recognizing his brother, and his eyes lighted up with joy. But the same second he looked round at the young man, and gave the nervous jerk of his head and neck that Konstantin knew so well, as if his cravat were choking him; and a quite different expression wild, suffering and cruel rested on his emaciated face.

"I wrote to you and Sergei Ivanovich both that I don't know you, and don't want to know you. What is it you want?"

He was not at all the same as Konstantin had been fancying him. The worst and most oppressive part of his character, which made all relations with him so difficult, had been forgotten by Konstantin Levin when he thought of him; and now, when he saw his face, and especially that nervous twitching of his head, he remembered it all.

"I didn't want to see you for anything," he answered timidly. "I've simply come to see you."

His brother's timidity obviously softened Nikolai. His lips twitched.

"Oh, so that's it?" he said. "Well, come in; sit down. Like some supper? Masha, bring supper for three. No, stop a minute. Do you know who this is?" he said, addressing his brother, and indicating the gentleman in the Russian coat: "This is Mr. Kritsky, a friend of my Kiev days a very remarkable man. He's persecuted by the police, of course, since he's not a scoundrel."

And he surveyed, as it was a habit of his, everyone in the room. Seeing that the woman standing in the doorway was starting to go, he shouted to her. "Wait a minute, I said." And with that inability to express himself, the incoherence that Konstantin knew so well, he began, with another look round at everyone, to tell Kritsky's story to his brother: how he had been expelled from the university for starting a benevolent society for the poor students, and classes on Sunday, and how he had afterward been a teacher in a rural school, and had been driven out of that, too; and had afterward been on trial for something or other.

"You're of the Kiev University?" said Konstantin Levin to Kritsky, to break the awkward silence that followed.

"Yes I was in Kiev," Kritsky replied angrily, his face darkening.

"And this woman," Nikolai Levin interrupted him, pointing to her, "is my lifemate, Marya Nikolaevna. I took her out of a dive, and he jerked his neck as he said it. "But I love her and respect her, and anyone who wants to know me," he added, raising his voice and knitting his brows, "is requested to love her and respect her. She's precisely

## Anna Karenina

the same as a wife to me precisely. So now you know whom you've got to do with. And if you think you're lowering yourself well, there's the door, and God speed thee!"

And again his eyes traveled inquiringly over all of them.

"But how will I lower myself? I don't understand."

"Then, Masha, tell them to bring supper; three portions, and vodka and wine... No, wait a minute... No, it doesn't matter... Go ahead."

## XXV.

"So you see," pursued Nikolai Levin, painfully wrinkling his forehead and twitching.

It was obviously difficult for him to think of what to say and do.

"Here, do you see?... He pointed to some sort of short iron bars, fastened together with twine, lying in a corner of the room. "Do you see that? That's the beginning of a new enterprise we're going into. This enterprise will be an industrial association...."

Konstantin scarcely heard him. He looked into his sickly, consumptive face, and he was more and more sorry for him, and he could not force himself to listen to what his brother was telling him about the association. He saw that this association was a mere anchor to save him from self-contempt. Nikolai Levin went on talking:

"You know that capital oppresses the worker. Our workers, the mouzhiks, bear all the burden of labor, and are so placed that, no matter how much they work, they can't escape from their position of beasts of burden. All the profits of labor, on which they might improve their position, and gain leisure for themselves, and after that education all the surplus values, are taken from them by the capitalists. And society is so constituted that the harder they work, the greater the profit of the merchants and landowners, while they stay beasts of burden to the end. And that state of things must be changed," he finished up, and looked questioningly at his brother.

"Yes, of course," said Konstantin, looking at the patch of red that had come out on his brother's projecting cheekbones.

"And so we're founding a locksmiths' association, where all the production and profit, and the chief instruments of production everything will be in common."

"Where is the association to be?" asked Konstantin Levin.

"In the village of Vozdrem, government of Kazan."

"But why in a village? In the villages, I think, there is plenty of work as it is. Why a locksmiths' association in a village?"

"Why? Because the peasants are just as much slaves as they ever were, and that's why you and Sergei Ivanovich don't like people to try and get them out of their slavery," said Nikolai Levin, exasperated by the objection.

Konstantin Levin sighed, looking meanwhile about the cheerless and dirty room. This sigh seemed to exasperate Nikolai still more.

## Anna Karenina

"I know Sergei Ivanovich's, and your, aristocratic views. I know that he applies all the power of his intellect to justify existing evils."

"I say, why do you talk of Sergei Ivanovich?" Levin let drop, smiling.

"Sergei Ivanovich? I'll tell you why!" Nikolai Levin shrieked suddenly at the name of Sergei Ivanovich. "I'll tell you why... But what's the use of talking? There's only one thing... What did you come to me for? You look down on all this; very well, then; but go away, in God's name go away!" he shrieked, getting up from his chair. "Go away go away!"

"I don't look down on it at all," said Konstantin Levin timidly. "I don't even dispute it."

At that instant Marya Nikolaevna came back. Nikolai Levin looked round angrily at her. She went quickly to him, and whispered something.

"I'm not well; I've grown irritable," said Nikolai Levin, getting calmer and breathing painfully; "and then you talk to me of Sergei Ivanovich and his essay. It's such rubbish, such lying, such self-deception! What can a man write about justice who knows nothing of it? Have you read his essay?" he turned to Kritsky, sitting down again at the table, and clearing a space for himself by pushing back some half-made cigarettes.

"I haven't," Kritsky responded gloomily, obviously not desiring to enter into the conversation.

"Why not?" said Nikolai Levin, now turning with exasperation upon Kritsky.

"Because I didn't see the use of wasting my time over it."

"Oh, if you please how did you know it would be wasting your time? That essay's too deep for many people that is to say, it's over their heads. But it's different with me, I see through his ideas, and I know wherein the essay's weakness lies."

They all fell silent. Kritsky got up sluggishly and reached for his cap.

"Won't you have supper? All right, good-by! Come round tomorrow with the locksmith."

Kritsky had hardly gone out when Nikolai Levin smiled and winked.

"He, too, is poor stuff," he said. "For I can see..."

But at that instant Kritsky, at the door, called him.

"What do you want now?" he said, and went out to him in the passage. Left alone with Marya Nikolaevna, Levin turned to her.

"Have you been long with my brother?" he said to her.

"Yes, more than a year. His health has become very poor. He drinks a great deal," she said.

"Just how?"

"He drinks vodka, and it's bad for him."

"And a great deal?" whispered Levin.

"Yes," she said, looking timidly toward the doorway, where Nikolai Levin had reappeared.

"What were you talking about?" he said, knitting his brows, and turning his scared eyes from one to the other. "What was it?"

"Oh, nothing," Konstantin answered in confusion.

"Oh, if you don't want to say, don't. Only it's no good your talking to her. She's a wench, and you're a gentleman," he said, with a jerk of the neck. "You understand everything, I see, and have taken stock of everything, and look with commiseration on my transgressions," he began again, raising his voice.

"Nikolai Dmitrich, Nikolai Dmitrich," whispered Marya Nikolaevna, again going up to him.

"Oh, very well, very well!... But where's the supper? Ah, here it is," he said, seeing a waiter with a tray. "Here, set it here," he added angrily, and promptly seizing the vodka, he poured out a pony and drank it greedily. "Like a drink?" he turned to his brother, and at once became better-humored. "Well, enough of Sergei Ivanovich. I'm glad to see you, anyway. After all's said and done, we're not strangers. Come, have a drink. Tell me what you're doing," he went on, greedily munching a piece of bread, and pouring out another pony. "How are things with you?"

"I live alone in the country, as I always have. I'm busy looking after the land," answered Konstantin, watching with horror the greediness with which his brother ate and drank, and trying to conceal that he noticed it.

"Why don't you get married?"

"No opportunity has presented itself," Konstantin answered, reddening.

"Why not? For me now, everything's at an end! I've made a mess of my life. But this I've said, and I say still, that if my share had been given me when I needed it, my whole life would have been different."

Konstantin made haste to change the conversation.

"Do you know your little Vania's with me a clerk in the countinghouse at Pokrovskoe?"

Nikolai jerked his neck, and sank into thought.

"Yes, tell me what's going on at Pokrovskoe. Is the house still standing, and the birch trees, and our schoolroom? And Philip the gardener is he living? How I remember the summerhouse and the sofa! Now mind and don't alter anything in the house, but make haste and get married, and make everything as it used to be again. Then I'll come and see you, if your wife is a fine woman."

"Why, come to me now," said Levin. "How snugly we could settle down!"

"I'd come and see you if I were sure I shouldn't find Sergei Ivanovich."

"You wouldn't find him there. I live quite independently of him."

"Yes, but say what you like, you have to choose between me and him," he said, looking timidly into his brother's face.

This timidity touched Konstantin.

"If you want to hear my confession of faith on the subject, I tell you that in your quarrel with Sergei Ivanovich I take neither side. You're both wrong. You're rather wrong outwardly, and he, rather inwardly."

"Ah, ah! You see that, you see that!" Nikolai shouted joyfully.

"But I personally value friendly relations with you more because..."

"Why, why?"

Konstantin could not say that he valued it more because Nikolai was unhappy, and needed affection. But Nikolai knew that this was just what he meant to say, and scowling he took to the vodka again.

"Enough, Nikolai Dmitrich!" said Marya Nikolaevna, stretching out her plump, bare arm toward the decanter.

"Let it be! Don't annoy me! I'll beat you!" he shouted.

Marya Nikolaevna smiled a sweet and good-humored smile, which was at once reflected on Nikolai's face, and whisked the decanter off.

"And do you suppose she understands nothing?" said Nikolai. "She understands everything better than all of us. Tell the truth isn't there something good and sweet about her?"

"Were you never before in Moscow?" Konstantin said to her, for the sake of saying something.

"Only you mustn't be formal with her. It frightens her. No one ever spoke to her so but the justice of the peace who tried her for trying to get out of a house of ill fame. My God, what senselessness there is in this world!" he cried suddenly. "These new institutions, these justices of the peace, these Zemstvo what hideousness it all is!"

And he began to enlarge on his encounters with the new institutions.

Konstantin Levin listened to him, and that disbelief in the sense of all public institutions, which he shared with him, and often expressed, was now distasteful to him, coming from his brother's lips.

"In the other world we shall understand it all," he said lightly.

"In the other world? Ah, I don't like that other world! I don't like it," he said, letting his scared wild eyes rest on his brother's face. "Here one would think that to get out of all the baseness and the mess, one's own and other people's, would be a good thing, and yet I'm afraid of death, awfully afraid of death." He shuddered. "But do drink something. Would you like some champagne? Or shall we go somewhere? Let's go to the gypsies! Do you know, I've gotten very fond of the gypsies, and of Russian songs."

His speech had begun to falter, and he skipped at random from one subject to another. Konstantin, with the help of Masha, persuaded him not to go out anywhere, and got him to bed hopelessly drunk.

Masha promised to write to Konstantin in case of need, and to persuade Nikolai to go and stay with his brother.



## XXVI.

In the morning Konstantin Levin left Moscow, and toward evening he reached home. On the journey in the train he talked to his fellow travelers about politics and the new railways, and, just as in Moscow, he was overcome by a sense of confusion of ideas, by dissatisfaction with himself, and shame of something or other. But when he got out at his own station, when he saw his one-eyed coachman Ignat, with the collar of his coat turned up; when, in the dim light falling through the station windows, he saw his own carpeted sledge, his own horses with their tails up, in their harness trimmed with rings and tassels; when the coachman Ignat, as he put in his luggage, told him the village news that the contractor had arrived, and that Pava had calved he felt that little by little the confusion was clearing up, and the shame and self-dissatisfaction were passing away. He felt this at the mere sight of Ignat and the horses; but he began to see what had happened to him in quite a different light, when he had put on the sheepskin coat brought for him, and, all muffled up, had taken his seat in the sleigh and started off, pondering on the work that lay before him in the village, and staring at the off horse, that had been formerly his saddle horse, overridden, but a spirited animal from the Don. He felt himself, and did not want to be anyone else. All he wanted now was to be better than before. In the first place, he resolved that from that day on he would give up hoping for the extraordinary happiness which the marriage was to afford him, and consequently he would not disdain the present so. In the second place, he would never again let himself give way to low passion, the memory of which had so tortured him when he had been making up his mind to propose. Then, remembering his brother Nikolai, he resolved that he would never allow himself to forget him, that he would watch him, and not lose sight of him, so as to be ready to help should things go ill with him. And that would be soon, he felt. Then, too, his brother's talk of communism, which he had treated so lightly at the time, now made him reflect. He considered an alteration in economic conditions nonsense; yet he had always felt the injustice of his own abundance in comparison with the poverty of the common folk, and he now determined that, in order to feel quite in the right, though he had worked hard and lived by no means luxuriously before, he would now work still harder, and would allow himself even less luxury. And all this seemed to him so easy a conquest over himself that he spent the whole drive in most pleasant reveries. With a lively feeling of hope in a new, better life, he drove up to his house about nine o'clock at night.

The snow of the little quadrangle before the house was lit up by light falling from the windows in the room of his old nurse, Agathya Mikhailovna, who performed the duties of housekeeper in his house. She was not yet asleep. Kouzma, awakened by her, sleepy and barefooted, ran out onto the steps. A setter bitch, Laska, leaped out too, almost upsetting Kouzma, and whining, rubbed against Levin's knees, jumping up and longing, yet not daring, to put her forepaws on his chest.

"You're soon returned, my dear," said Agathya Mikhailovna.

"I grew homesick, Agathya Mikhailovna. East or West, home is best," he answered, and went into his study.

The study was gradually lit up as the candle was brought in. The familiar details came out: the stag's horns; the bookshelves; the plain stove with its warm-hole, which had long wanted mending; his father's sofa, a large table, and, on the table, an open book, a broken ash tray, a notebook with his handwriting. As he saw all this, there came over him for an instant a doubt of the possibility of arranging the new life, of which he had been dreaming on the road. All these traces of his life seemed to clutch him, and to say to him: "No, you're not going to get away from us, and you're not going to be different but you're going to be the same as you've always been: with doubts, everlasting dissatisfaction with yourself, vain efforts to amend, and lapses, and everlasting expectation of a happiness which you won't get, and which isn't possible for you."

But it was his things that said this to him, while another voice in his heart was telling him that he must not fall under the sway of the past, and that one can do anything with oneself. And hearing that voice, he went into the corner where stood his two dumbbells, of one pood each, and began jerking and pushing them up, trying to induce

a state of well-being. There was a creak of steps at the door. He hastily put down the dumbbells.

The bailiff came in, and said that everything, thank God, was well, but also informed him that the buckwheat in the new drying machine had been a little scorched. This piece of news irritated Levin. The new drying machine had been constructed and partly invented by Levin. The bailiff had always been against this drying machine, and now it was with suppressed triumph that he announced that the buckwheat had been scorched. Levin was firmly convinced that if the buckwheat had been scorched it was only because precautions had not been taken, for which he had hundreds of times given orders. He was annoyed, and reprimanded the bailiff. But there had been an important and joyful event: Pava, his best cow, an expensive beast, bought at a show, had calved.

"Kouzma, give me my sheepskin coat. And you, do tell them to fetch a lantern I'm going to have a look at her," he said to the bailiff.

The cowhouse for the more valuable cows was just behind the house. Walking across the yard, passing a snowdrift by the lilac tree, he went into the cowhouse. There came a warm, steamy smell of dung when the frozen door was opened, and the cows, astonished at the unfamiliar light of the lantern, stirred on their fresh straw. He caught a glimpse of the broad, smooth, black and piebald back of a Dutch cow. Berkoot, the bull, was lying down with his ring in his lip, and seemed about to get up, but thought better of it, and only gave two snorts as they passed by him. Pava, the reddish beauty, huge as a hippopotamus, with her back turned to them, screened her calf from the arrivals and sniffed it all over.

Levin went into the stall, looked Pava over, and hefted the reddish and red-dappled calf up on its unsteady, spindly legs. Pava, uneasy, began lowing, but when Levin put the calf close to her she was soothed, and, sighing heavily, began licking her with her rough tongue. The calf fumbling, poked its nose under its mother's groin, and twirled its tiny tail.

"Bring the light here, Fiodor bring the lantern here," said Levin, examining the heifer. "Like the dam! though the color takes after the sire. A perfect beauty! Long, and broad in the haunch. Isn't she a beauty now, Vassilii Fiodorovich?" he addressed the bailiff, quite forgiving him for the buckwheat under the influence of his delight in the heifer.

"What bad blood could she take after? Semion the contractor came the day after you left. You must settle with him, Konstantin Dmitrich," said the bailiff. "And I have already told you about the machine."

This matter alone was enough to bring Levin back to all the details of his estate, which was on a large scale, and complicated. He went straight from the cowhouse to the countinghouse, and, after a short talk with the bailiff and Semion the contractor, he went back to the house and straight upstairs to the drawing room.

## XXVII.

The house was big and old-fashioned, and Levin, though he lived alone, heated and used the whole house. He knew that this was stupid, he knew that it was even wrong, and contrary to his present new plans, but this house was a whole world to Levin. It was the world in which his father and mother had lived and died. They had lived just the life that to Levin seemed the ideal of perfection, and that he had dreamed of renewing with his wife, with his family.

Levin scarcely remembered his mother. His conception of her was for him a sacred memory, and his future wife was bound to be, in his imagination, a repetition of that exquisite, holy ideal of a woman that his mother had been.

He was so far from conceiving of love for woman apart from marriage that he positively pictured to himself first

the family, and only secondarily the woman who would give him a family. His ideas of marriage were, consequently, quite unlike those of the great majority of his acquaintances, for whom getting married was merely one of the many affairs of everyday life. For Levin it was the chief affair of life, on which its whole happiness turned. And now he had to give up that!

When he had gone into the second drawing room, where he always had tea, and had settled himself in his armchair with a book, and Agathya Mikhailovna had brought him tea, and with her usual, "Well, I'll stay a while, my dear," had taken a chair at the window, he felt that, however strange it might be, he had not parted from his daydreams, and that he could not live without them. Whether with her, or with another it was still bound to be. He was reading his book, pondering on what he was reading, and pausing to listen to Agathya Mikhailovna, who gossiped away without flagging, and yet, with all that, all sorts of pictures of his work and a future family life rose disconnectedly before his imagination. He felt that in the depth of his soul something was steadying, settling down, and abating.

He heard Agathya Mikhailovna talking of how Prokhor had forgotten his duty to God, and, with the money Levin had given him to buy a horse, had been drinking without a letup, and had beaten his wife till he'd half-killed her. He listened, and read his book, and recalled the whole train of ideas suggested by his reading. It was Tyndall's Treatise on Heat. He recalled his own criticisms of Tyndall for his self-complacency in the cleverness of his experiments, and for his lack of philosophic insight. And suddenly there floated into his mind the joyful thought: "In two years' time I shall have two Dutch cows in my herd; Pava herself will perhaps still be alive; a dozen young daughters of Berkoot, and these three added for show it would be marvelous!" He took up his book again. "Now well, electricity and heat are the same thing; but is it possible to substitute one quantity for the other in an equation for the solution of any problem? No. Well, then what of it? The connection between all the forces of nature is felt instinctively, anyway.... It'll be particularly pleasant when Pava's daughter will be a red-dappled cow like all the herd, to which the other three should be added! Splendid! I'll go out with my wife and visitors to meet the herd.... My wife says, 'Kostia and I looked after that heifer like a child.' 'How can it interest you so much?' says a visitor. 'Everything that interests him, interests me.' But who will she be?" And he remembered what had happened at Moscow.... "Well, there's nothing to be done.... It's not my fault. But now everything shall go on in a new way. It's nonsense to pretend that life won't let one, that the past won't let one. One must struggle to live better far better...." He raised his head, and sank into thought. Old Laska, who had not yet fully digested her delight at his return, and had run out into the yard to bark, came back wagging her tail, and crept up to him, bringing in the scent of the fresh air, put her head under his hand, and yelped plaintively, asking to be stroked.

"If she could but speak," said Agathya Mikhailovna. "Even though it's a dog... Yet she understands that her master's come home, and that he's low-spirited."

"Why low-spirited?"

"Do you suppose I don't see it, my dear? It's high time I should know the gentlefolk. Why, I've grown up from a little thing with them. Never mind, sir, so long as one has health and a clear conscience."

Levin looked intently at her, surprised at how well she had fathomed his thoughts.

"Shall I fetch you another cup?" she asked and, taking his cup, went out.

Laska kept poking her head under his hand. He stroked her, and she promptly curled up at his feet, laying her head on a protruding hand-paw. And in token of all now being well and satisfactory, she opened her mouth a little, smacked her lips, and settling her sticky lips more comfortably about her old teeth, she sank into blissful repose. Levin watched her last movements attentively.

"That's what I'll do," he said to himself; "that's what I'll do! Never mind.... All's well."

XXVIII.

After the ball, early next morning, Anna Arkadyevna sent her husband a telegram that she was leaving Moscow the same day.

"No, I must go, I must go"; she explained the change in her plans to her sister-in-law, in a tone that suggested that she had to remember so many things that there was no enumerating them: "no, really, it had better be today!"

Stepan Arkadyevich was not dining at home, but he promised to come and see his sister off at seven o'clock.

Kitty, too, did not come, sending a note that she had a headache. Dolly and Anna dined alone with the children and the English governess. Whether it was because children are fickle, or because they have acute senses, and they felt that Anna was quite different that day from what she had been when they had taken such a fancy to her, that she was not now interested in them—they had abruptly dropped their play with their aunt, and their love for her, and were quite indifferent to her leaving. Anna was absorbed the whole morning in preparations for her departure. She wrote notes to her Moscow acquaintances, jotted down her accounts, and packed. Altogether Dolly fancied she was not in a placid state of mind, but in that worried mood which Dolly knew so well in her own case, and which does not come without cause, and for the most part covers dissatisfaction with oneself. After dinner, Anna went up to her room to dress, and Dolly followed her.

"How queer you are today!" Dolly said to her.

"I? Do you think so? I'm not queer, but I'm nasty. I am like that sometimes. I keep feeling as if I could cry. It's very stupid, but it'll pass off," said Anna quickly, and she bent her flushed face over a tiny bag in which she was packing a nightcap and some cambric handkerchiefs. Her eyes were particularly bright, and were continually dimmed with tears. "In the same way I didn't want to leave Peterburg—and now I don't want to go away from here."

"You came here and did a good deed," said Dolly, looking intently at her.

Anna's eyes were wet with tears as she looked at her.

"Don't say that, Dolly. I've done nothing, and could do nothing. I often wonder why people are all in league to spoil me. What have I done, and what could I do? In your heart there was found love enough to forgive...."

If it had not been for you, God knows what would have happened! How happy you are, Anna!" said Dolly. "Everything is clear and good in your heart."

"Every heart has its own skeleton, as the English say."

"You have no sort of skeleton, have you? Everything is so clear in you."

"I have!" said Anna suddenly, and, unexpectedly after her tears, a sly, mocking smile puckered her lips.

"Come, he's amusing, anyway, your skeleton, and not depressing," said Dolly, smiling.

"No, he is depressing. Do you know why I'm going today instead of tomorrow? This is a confession that weighs on me; I want to make you its recipient," said Anna resolutely letting herself drop into an armchair, and looking straight into Dolly's face.

## Anna Karenina

And to her surprise Dolly saw that Anna was blushing up to her ears, up to the curly black ringlets on her neck.

"Yes," Anna went on. "Do you know why Kitty didn't come to dinner? She's jealous of me. I have spoiled... I've been the cause of that ball being a torture to her instead of a pleasure. But truly, truly, it's not my fault, or only my fault a little bit," she said, daintily drawling the words "a little bit."

"Oh, how like Stiva you said that!" said Dolly, laughing.

Anna was hurt.

"Oh no, oh no! I'm not Stiva," she said, knitting her brows. "That's why I'm telling you, just because I do not even for an instant permit myself to doubt about myself," said Anna.

But at the very moment she was uttering the words, she felt that they were not true. She was not merely doubting about herself she felt emotion at the thought of Vronsky, and was going away sooner than she had meant, solely to avoid meeting him.

"Yes, Stiva told me you danced the mazurka with him, and that he..."

"You can't imagine how absurdly it all came about. I only meant to be matchmaking, and all at once it turned out quite differently. Possibly against my own will..."

She flushed and stopped.

"Oh, they feel it immediately!" said Dolly.

"But I should be in despair if there were anything serious in it on his side," Anna interrupted her. "And I'm certain it will all be forgotten, and Kitty will leave off hating me."

"All the same, Anna, to tell you the truth, I'm not very anxious for this marriage for Kitty. And it's better it should come to nothing, if he, Vronsky, is capable of falling in love with you in a single day."

"Oh, heavens, that would be too silly!" said Anna, and again a deep flush of pleasure appeared on her face, as she heard the idea that absorbed her put into words. "And so here I am, going away, having made an enemy of Kitty, whom I liked so much! Ah, how sweet she is! But you'll make it right, Dolly? Eh?"

Dolly could scarcely suppress a smile. She loved Anna, but she was pleased to see that she, too, had her weaknesses.

"An enemy? That can't be."

"I did so want you all to care for me, as I do for you, and now I care for you more than ever," said Anna, with tears in her eyes. "Ah, how silly I am today!"

She passed her handkerchief over her face and began dressing.

At the very moment of starting Stepan Arkadyevich arrived, late, rosy and good-humored, smelling of wine and cigars.

Anna's emotionalism infected Dolly, and when she embraced her sister-in-law for the last time, she whispered:

## Anna Karenina

"Remember, Anna, what you've done for me I shall never forget. And remember that I love you, and shall always love you as my dearest friend!"

"I don't know why," said Anna, kissing her and hiding her tears.

"You understand me, and still understand. Good-by, my darling!"

### XXIX.

"Now, it's all over God be praised!" was the first thought that came to Anna Arkadyevna, when she had said good-by for the last time to her brother, who had stood blocking up the entrance to the carriage till the third bell rang. She sat down on her lounge beside Annushka, and looked about her in the twilight of the sleeping carriage. "Thank God! tomorrow I shall see Seriozha and Alexei Alexandrovich, and my life, good and familiar, will go on in the old way."

Still in the same anxious frame of mind in which she had been all that day, Anna took a meticulous pleasure in making herself comfortable for the journey. With her tiny, deft hands she opened and shut her little red bag, took out a cushion, laid it on her knees, and, carefully wrapping up her feet, settled herself comfortably. An invalid lady had already lain down to sleep. Two other ladies began talking to Anna, and a stout elderly lady tucked up her feet, and made observations about the heating of the train. Anna answered the ladies in a few words, but not foreseeing any entertainment from the conversation, she asked Annushka to get a small lantern, hooked it on the arm of her seat, and took from her bag a paper knife and an English novel. At first she could not get interested in her reading. The fuss and stir were disturbing; then, when the train had started, she could not help listening to the noises; then the snow beating on the left window and sticking to the pane, and the sight of the muffled guard passing by, covered with snow on one side, and the conversations about the terrible blizzard raging outside, distracted her attention. And after that everything was the same and the same: the same jouncing and rattling, the same snow lashing the window, the same rapid transitions from steaming heat to cold, and back again to heat, the same flitting of the same faces in the half-murk, and the same voices; and then Anna began to read, and to grasp what she read. Annushka was already dozing, the red bag on her lap, clutched by her broad hands, in gloves, of which one was torn. Anna Arkadyevna read and grasped the sense, yet it was annoying to her to read that is, to follow the reflection of other people's lives. She had too great a desire to live herself. If she read that the heroine of the novel were nursing a sick man, she longed to move with noiseless steps about his sickroom; if she read of a member of Parliament delivering a speech, she longed to deliver it; if she read of how Lady Mary had ridden after the hounds, and had provoked her sister-in-law, and had surprised everyone by her daring she, too, longed to be doing the same. But there was no chance of doing anything; and, her little hands toying with the smooth paper knife, she forced herself to read.

The hero of the novel was already beginning to attain his English happiness, a baronetcy, and an estate, and Anna was feeling a desire to go with him to his estate, when she suddenly felt that he ought to feel ashamed, and that she was ashamed of the same thing. But what was it he was ashamed of? "What have I to be ashamed of?" she asked herself in injured surprise. She abandoned the book and sank against the back of her chair, tightly gripping the paper knife in both hands. There was nothing to be ashamed of. She went over all her Moscow recollections. All were fine, pleasant. She recalled the ball, recalled Vronsky and his enamored, submissive face; she recalled all her conduct with him there was nothing shameful. Yet, with all that, at this very point in her reminiscences, the feeling of shame was intensified, as though some inner voice, precisely here, when she recalled Vronsky, were saying to her: "Warm, very warm hot!" "Well, what is it?" she said to herself resolutely, shifting on her seat. "What does it mean? Am I afraid to look at this without blinking? Well, what is it? Can it be that between me and this boy-officer there exist, or can exist, any other relations than such as are common with every acquaintance?" She laughed contemptuously and took up her book again; but now she was absolutely unable to make sense of what she read. She passed the paper knife over the windowpane, then laid its smooth, cool surface to her cheek,

## Anna Karenina

and almost laughed aloud at the unreasoning joy that all at once possessed her. She felt that her nerves, like strings, were being tautened more and more upon some kind of tightening peg. She felt her eyes opening wider and wider, her fingers and toes twitching nervously, something within stopping her breathing, while all images and sounds seemed in the swaying half-murk to strike her with extraordinary vividness. Moments of doubt were continually besetting her: was the car going forward, or back, or was it standing absolutely still? Was it really Annushka at her side, or a stranger? "What's that on the arm of the chair a fur cloak or some beast? And what am I myself: is it I, or some other woman?" She was afraid of yielding to this trance but something was drawing her into it, and, at will, she could yield to it or resist it. She got up to rouse herself, and slipped off her plaid and the cape of warm dress. For a moment she regained her self-possession, and realized that the thin peasant who had come in wearing a long nankeen overcoat, with a button missing from it, was the fireman, that he was looking at the thermometer, that the wind and snow had burst in after him through the door; but then everything grew confused again.... That peasant with the long waist took to gnawing something within the wall; the little crone started stretching her legs the whole length of the car and filled it with a black cloud; then there was a dreadful screeching and banging, as though someone were being rent into pieces; then a red blaze blinded her eyes, and, at last, everything was screened by a wall. Anna felt that she had plunged downward. Yet all this was not terrible, but joyful. The voice of a man muffled up and covered with snow shouted something in her very ear. She arose and came to, realizing that they had come to a station, and that this was the conductor. She requested Annushka to hand her the cape she had taken off, and her shawl, put them on, and went toward the door.

"Do you wish to get out?" asked Annushka.

"Yes, I want to get a breath of air. It's very hot in here."

And she opened the door. The blizzard and the wind rushed to meet her and began to contend with her for the door. And even this seemed joyful to her. She opened the door and stepped out. This seemed to be all that the wind had been lying in wait for; it set up a gleeful whistle and was about to snatch her up and whirl her away, but she clutched the cold doorpost and, holding on to her shawl, descended to the platform and the shelter of the car. The wind had been mighty on the steps, but on the platform, in the lee of the train, there was a lull. With enjoyment she drew deep breaths of the snowy, frosty air and, standing near the car, looked about the platform and the lighted station.

### XXX.

The frightful storm raged and whistled between the wheels of the cars, along the posts, around the corner of the station. The cars, posts, people everything in sight were covered with snow on one side, and were getting more and more snowed under. For a moment there would come a lull in the storm, but then it would again swoop down with such gusts that it seemed impossible to withstand it. Meanwhile some men or other were dashing about, gaily talking to one another, making the boards of the platform creak and ceaselessly opening and shutting the big doors. A stooping human shadow glided by at her feet, and she heard a hammer tapping upon iron. "Let's have the telegram!" came an angry voice out of the stormy murk on the other side. "This way! No. 28!" other voices were also shouting, and muffled figures scurried by, plastered with snow. Two gentlemen passed by her, cigarettes glowing in their mouths. She drew in one more deep breath, and had just taken her hand out of her muff to grasp the doorpost and enter the car, when still another man in a military overcoat, quite close beside her, stepped between her and the flickering light of a lantern. She looked round, and the same instant recognized Vronsky's face. Putting his hand to the peak of his cap, he bowed to her and asked if there weren't anything she wanted, whether he could not be of some service to her? She gazed rather long at him, without any answer, and, in spite of the shadow in which he was standing, she saw (or fancied she saw) the expression both of his face and his eyes. It was again that expression of reverent rapture which had affected her so yesterday. More than once she had told herself during the past few days, and only just now, that Vronsky was for her only one of the hundreds of

## Anna Karenina

young men, forever exactly the same, that one meets everywhere; that she would never permit herself even to think of him; yet now at the first flush of meeting him, she was seized by an emotion of joyous pride. She had no need to ask why he was here. She knew, as surely as if he had told her, that he was here only to be where she was.

"I didn't know you were going. And why are you going?" she said, letting fall the hand which had grasped the doorpost. And irrepressible joy and animation shone in her face.

"Why am I going?" he repeated, looking straight into her eyes. "You know that I am going to be where you are," he said; "I cannot do otherwise."

And at this very point, as though it had overcome all obstacles, the wind scattered the snow from the car roofs, and began to flutter some sheet of iron it had torn off, while the low-pitched whistle of the engine set up a roar in front, dismal and lamenting. All the awesomeness of the blizzard now seemed still more splendid to her. He had uttered precisely what her soul yearned for, but which her reason dreaded. She made no answer, and in her face he beheld a struggle.

"Forgive me, if what I have said displeases you," he said humbly.

He had spoken courteously, deferentially, yet so firmly, so obdurately that, for long, she could find no answer.

"What you say is wrong, and I beg of you, if you are a good man, to forget what you have said, even as I shall forget it," she said at last.

"Not a single word of yours, nor a single gesture, shall I ever forget nor could I forget...."

"Enough, enough!" she cried, vainly attempting to give a stern expression to her face, which he was avidly scrutinizing. Clutching at the cold doorpost, she clambered up the steps and quickly entered the corridor of the car. But in this little corridor she paused, reviewing in her imagination all that had occurred. Without recalling her own words or his, she realized instinctively that that conversation had brought them fearfully closer; and she was both frightened and made happy thereby. After standing thus a few seconds, she went into the car and sat down in her place. That tensed state which had tormented her at first was not only renewed, but grew greater and reached such a pitch that she was afraid that, at any moment, something would snap within her from the excessive tension. She did not sleep all night. But in that nervous tension, and in the reveries that filled her imagination, there was nothing unpleasant or gloomy; on the contrary, there was something joyous, glowing and exhilarating. Toward morning Anna dozed off as she sat, and when she awoke it was already light, and the train was nearing Peterburg. At once thoughts of home, of her husband and son, and the details of the day ahead, and days to follow, came thronging upon her.

At Peterburg, as soon as the train stopped and she got out, the first face that attracted her attention was that of her husband. "Oh, my God! What has happened to his ears?" she thought looking at his frigid and imposing figure, and especially the ears, that struck her so now, as they propped up the brim of his round hat. Catching sight of her he went to meet her, pursing his lips into their habitual mocking smile, and fixing her with his big, tired eyes. Some unpleasant sensation contracted her heart as she met his obdurate and tired glance, as though she had expected to see him a different man. She was particularly struck by that feeling of dissatisfaction with herself which she experienced on meeting him. This was an intimate, familiar feeling, like that state of dissimulation which she experienced in her relations with her husband; but hitherto she had not taken note of the feeling; now she was clearly and painfully aware of it.

"Yes, as you see, your tender spouse, as devoted as he was during the second year after marriage, was consumed by the desire of seeing you," he said in his dilatory, high-pitched voice, and in that tone which he almost always used to her a tone of bantering at anyone who should speak thus in earnest.



"Is Seriozha quite well?" she asked.

"And is this all the reward," said he, "for my ardor? He's well quite well...."

### XXXI.

Vronsky had not even attempted to fall asleep all that night. He sat in his armchair, his eyes fixed before him or scanning the people who got in and out, and if he had indeed, on previous occasions, struck and aroused people who did not know him by his air of unshakable calmness, he now seemed prouder and more self-sufficient than ever. He regarded people as if they were things. A nervous young man, a clerk in a law court, who had the seat opposite his, conceived a hatred for him because of this air. The young man asked him for a light, and entered into conversation with him, and even jostled him, to make him feel that he was not a thing, but a man. But Vronsky kept on regarding him as if he were a lamppost, and the young man grimaced, feeling that he was losing his self-possession under the oppressiveness of this refusal to recognize him as a human being.

Vronsky saw nothing and no one. He felt himself a king, not because he believed that he had made any impression on Anna he did not yet believe that but because the impression she had made on him afforded him happiness and pride.

What would come of it all he did not know, or even think. He felt that all his forces, hitherto dissolute, scattered, were centered on one thing, and bent with fearful energy toward one blissful goal. And therein lay his happiness. He did but know that he had told her the truth, that he had come where she was, that all the happiness of life, the sole meaning in life for him, now lay in seeing her and hearing her voice. And when he got out of his car at Bologovo to get some seltzer water, and had caught sight of Anna, his very first word had involuntarily told her his very thoughts. And he was glad he had told her, that she knew now, and was thinking of it. He did not sleep all night. Back in his compartment, he incessantly kept ruminating upon every posture in which he had seen her, every word she had uttered; and, in his imagination, making his heart swoon, floated pictures of a possible future.

When he got out of the train at Peterburg, he felt after his sleepless night as lively and fresh as after a cold bath. He paused near his car, waiting for her to emerge. "Once more," he said to himself, smiling unconsciously, "once more I shall see her walk, her face; she may say something, turn her head, glance, smile, perhaps." But before he caught sight of her, he saw her husband, whom the stationmaster was deferentially escorting through the crowd. "Ah, yes. The husband." Only now, for the first time, did Vronsky realize clearly the fact that there was someone attached to her a husband. He had known that she had a husband, but had hardly believed in his existence, and only now, when he saw him, did he fully believe in him, with his head, and shoulders, and his black-trousered legs; especially when he saw this husband placidly take her arm, with a consciousness of proprietorship.

Seeing Alexei Alexandrovich with his spick-and-span Peterburg face and austere self-confident figure, in his round hat, with his rather prominent spine, he believed in him, and was aware of a disagreeable sensation, such as might be felt by a man who, tortured by thirst, finds, on reaching a spring, a dog, a sheep or a pig therein that has not only drunk of it, but also muddied the water. Alexei Alexandrovich's manner of walking, gyrating his whole pelvis and his flat feet, was especially offensive to Vronsky. He could recognize in no one but himself an indubitable right to love her. But she was still the same, and the sight of her affected him the same way, physically reviving him, stirring him, and filling his soul with happiness. He told his German valet, who ran up to him from the second class, to take his things and go on, he himself went up to her. He saw the first meeting between the husband and wife, and noted, with a lover's insight, the sign of the slight embarrassment with which she spoke to her husband. "No, she does not love him, and cannot love him," he decided to himself.

At the very moment that he was approaching Anna Arkadyevna from the back, he noticed with joy that she was conscious of his drawing near, and that she looked round; after which, seeing him, she turned again to her

husband.

"Have you had a good night?" he said, bowing both to her and to her husband, and leaving it to Alexei Alexandrovich to accept the bow on his own account, and to return it or not, as he might see fit.

"Thank you a very good one," she answered.

Her face seemed tired, and lacking in that play of animation which usually hovered between her smile and her eyes; but for a single instant, as she glanced at him, something flashed in her eyes, and although this flash died away at once, he was made happy by that moment. She glanced at her husband, to find out whether he knew Vronsky. Alexei Alexandrovich was regarding Vronsky with displeasure, absent-mindedly trying to recall who he was. Vronsky's calmness and self-confidence had here run up, like a scythe against a stone, on the frigid self-confidence of Alexei Alexandrovich.

"Count Vronsky," said Anna.

"Ah! We are acquainted, I believe," said Alexei Alexandrovich apathetically, proffering his hand. "You set out with the mother and return with the son," he said to Anna, articulating distinctly, as though each word were a coin of high value bestowed by him on his hearers. "You're back from leave, I suppose?" he said, and without waiting for a reply, he addressed his wife in his bantering tone: "Well, were a great many tears shed in Moscow at parting?"

By addressing his wife thus he meant Vronsky to perceive that he wished to be left alone, and, turning slightly toward him, he touched his hat; but Vronsky turned to Anna Arkadyevna:

"I hope to have the honor of calling on you," he said.

Alexei Alexandrovich glanced with his weary eyes at Vronsky.

"Delighted," he said coldly. "We're at home Mondays." Then, dismissing Vronsky entirely, he said to his wife: "I am rather lucky to have just half an hour to meet you, so that I can prove to you my fondness," he went on, in the same bantering tone.

"You lay too great a stress on your fondness for me to value it very much," she responded in the same bantering tone, involuntarily listening to the sound of Vronsky's steps behind them. "But what have I to do with that?" she said to herself, and began questioning her husband as to how Seriozha had got on without her.

"Oh, capitally! Mariette says he has been a very darling boy, and... I must disappoint you... But he has not languished for you as your husband has. But once more merci, my dear, for bestowing a whole day upon me. Our dear Samovar will be enraptured." (He called the Countess Lidia Ivanovna, well known in society, a samovar, because she was bubbling over with excitement on any and every occasion.) "She has been asking for you. And, d'you know, if I may venture to advise you, you ought to go to see her today. You know how she takes everything to heart. Just now, with all her own cares, she's anxious about the reconciliation of the Oblonskys."

The Countess Lidia Ivanovna was a friend of her husband's, and the center of that one of the coteries of the Petersburg beau monde with which Anna was, through her husband, in the closest rapport.

"But I wrote to her."

"Yes, but she must have full details. Go to see her, if you're not too tired, my dear. Well, Kondratii will take you in the carriage, while I go to my committee. Once more I shall not be alone at dinner," Alexei Alexandrovich

## Anna Karenina

continued, but no longer in a jesting tone. "You wouldn't believe how I've grown used to you...."

And, with a prolonged pressure of her hand, and a particular smile, he helped her into her carriage.

### XXXII.

The first person to meet Anna at home was her son. He dashed down the stairs to her, in spite of the governess's call, and with frenzied rapture shrieked: "Mother! mother!" Running up to her, he hung on her neck.

"I told you it was mother!" he shouted to the governess. "I knew it!"

And her son, like her husband, aroused in Anna a feeling akin to disappointment. In her imagination he had been better than he was in reality. She had to descend to reality to enjoy him as he was. But, even so, he was charming, with his fair curls, his blue eyes and his chubby, graceful little legs in tightly pulled-up stockings. Anna experienced an almost physical delight in the sensation of his nearness, and his caresses; and a moral reassurance, when she met his ingenuous, trusting and loving glance, and heard his naive questions. Anna took out the presents Dolly's children had sent him, and told her son about Tania, a little girl in Moscow, and how Tania could read, and even taught the other children.

"Why, am I not as good as she?" asked Seriozha.

"To me you're better than anyone else in the whole world."

"I know that," said Seriozha, smiling.

Anna had scarcely drunk her coffee when the Countess Lidia Ivanovna was announced. The Countess Lidia Ivanovna was a tall, fleshy woman, with an unwholesomely yellow complexion and beautiful, pensive black eyes. Anna liked her, but today she seemed, for the first time, to see her with all her shortcomings.

"Well, my friend, were you the bearer of the olive branch?" asked Countess Lidia Ivanovna, the minute she entered the room.

"Yes, it's all over, but it was not at all as serious as we thought," answered Anna. "My belle-soeur is, in general, much too categorical."

But Countess Lidia Ivanovna, who was interested in everything that did not concern her, had a habit of never listening to what interested her; she interrupted Anna:

"Yes, there's plenty of sorrow and evil in the world and I am so fatigued today!"

"Oh, why?" asked Anna, trying to repress a smile.

"I'm beginning to weary of vainly breaking lances for the truth, and at times I'm altogether unstrung. The affair with our Dear Sisters [this was a religiously patriotic, philanthropic institution] started off splendidly, but it's impossible to do anything with such people," added Countess Lidia Ivanovna, with a mocking submissiveness to fate. "They pounced on the idea, and mangled it, and afterward they thrash it out so pettily and trivially. Two or three people, your husband among them, grasp all the significance of this affair but the others merely degrade it. Yesterday Pravdin wrote to me..."

Pravdin was a well-known Pan-Slavist abroad, and Countess Lidia Ivanovna told the gist of his letter.

## Anna Karenina

Next the Countess spoke of other unpleasantnesses and intrigues against the work of the unification of the churches, and departed in haste, since that day she had to attend the meeting of another society, and also a Slavonic committee.

"All this is as it has always been; but how is it I didn't notice it before?" Anna asked herself. "Or has she been very much irritated today? It's really ludicrous: her object is to do good; she's a Christian; yet she's forever angry, and forever having enemies and always enemies in the name of Christianity and doing good."

After Countess Lidia Ivanovna another friend came, the wife of a director of the Department, who told her all the news of the town. At three o'clock she too went away, promising to come to dinner. Alexei Alexandrovich was at the Ministry. Anna, left alone, spent the time till dinner in lending her presence to her son's dinner (he dined apart from his parents), in putting her things in order, and in reading and answering the notes and letters which had accumulated on her *escritoire*.

The feeling of unreasoning shame, which she had felt during the journey, and her agitation, had completely vanished. In the accustomed conditions of her life she again felt herself firm and irreproachable.

She recalled with wonder her state of mind only yesterday. "What was it? Nothing. Vronsky said something silly, which it was easy to put an end to, and I answered just as I should have. To speak of it to my husband would be unnecessary and impermissible. To speak of it would be to attach importance to that which has none." She remembered how she had told her husband of what was almost declaration made her in Peterburg by a young man, a subordinate of her husband's, and how Alexei Alexandrovich had answered that every woman of the world was exposed to this sort of thing, but that he had the fullest confidence in her tact, and would never permit himself to degrade her and himself by jealousy. "So then, there's no reason to say anything? And, thank God, there isn't anything to say," she told herself.

### XXXIII.

Alexei Alexandrovich came back from the Ministry at four o'clock, but as often happened, had no chance to drop in at her room. He went into his study to see the people waiting for him with petitions, and to sign certain papers brought him by his head clerk. At dinnertime (there were always at least three people dining with the Karenins) there arrived an old lady, a cousin of Alexei Alexandrovich; the director of the Department and his wife; and a young man who had been recommended to Alexei Alexandrovich for a post. Anna went into the drawing room to entertain these guests. Precisely at five o'clock, before the bronze Peter the First clock had finished the fifth stroke, Alexei Alexandrovich made his entry, in white tie and evening coat with two stars, as he had to go out directly after dinner. Every minute of Alexei Alexandrovich's life was taken up and apportioned. And in order to accomplish all that each day held for him, he adhered to the strictest orderliness. "Nor haste nor rest," was his device. He entered the dining hall, bowed to all, and hurriedly sat down, smiling to his wife:

"Yes, my solitude is over. You wouldn't believe how uncomfortable [he laid stress on the word uncomfortable] it is to dine alone."

At dinner he chatted with his wife about things at Moscow, and asked, with his mocking smile, about Stepan Arkadyevich; but the conversation was for the most part general, dealing with the official and public news of Peterburg. After dinner he spent half an hour with his guests, and, again with a smile, pressed his wife's hand, withdrew, and drove off to the Council. Anna went that evening neither to the Princess Betsy Tverskaia, who, hearing of her return, had invited her, nor to the theater, where she had a box for that evening. Her principal reason for not going out was because the dress she had expected to wear was not ready. All in all, Anna was exceedingly annoyed when she started to dress for the evening after the departure of her guests. Before her departure for Moscow she, who was generally a mistress of the art of dressing well yet inexpensively, had given

## Anna Karenina

her dressmaker three dresses to make over. The dresses were to be made over so that their old selves would be unrecognizable, and they should have been ready three days ago. It turned out that two dresses were nowhere near ready, while the other one had not been made over to Anna's liking. The dressmaker came to explain, asserting that her way was best, and Anna had become so heated that she blushed at the recollection. To regain her composure fully she went into the nursery and spent the whole evening with her son, putting him to bed herself, making the sign of the cross over him, and tucking him in. She was glad she had not gone out anywhere, and had spent the evening so well. She felt so lighthearted and calm, she saw so clearly that all that had seemed to her so significant on her railway journey was merely one of the ordinary trivial incidents of fashionable life, and that she had no cause to feel ashamed before anyone else or before herself. Anna sat down near the fireplace with an English novel and waited for her husband. Exactly at half-past nine she heard his ring, and he entered the room.

"Here you are at last!" she observed, extending her hand to him.

He kissed her hand and sat down beside her.

"All in all, I can see your trip was a success," he said to her.

"Yes, very much so," said she, and she began telling him everything from the beginning: her journey with Countess Vronskaja, her arrival, the accident at the station. Then she described the pity she had felt, first for her brother, and, afterward, for Dolly.

"I do not suppose there is any excuse for such a man, even though he is your brother," said Alexei Alexandrovich sternly.

Anna smiled. She knew that he said this precisely to show that family considerations could not prevent him from expressing his sincere opinion. She knew this trait in her husband and liked it.

"I am glad everything has ended so well, and that you have returned," he went on. "Well, and what do they say there about the new bill I have got passed in the Council?"

Anna had heard nothing of this bill, and she felt conscience-stricken that she could so readily forget what was to him of such importance.

"Here, on the other hand, this has created a great deal of talk," said he, with a self-satisfied smile.

She saw that Alexei Alexandrovich wanted to tell her something that pleased him about it, and she brought him by questions to telling it. With the same self-satisfied smile he told her of the ovations he had received as a consequence of the bill he had passed.

"I was very, very happy. It shows that at last an intelligent and firm view of the matter is forming among us."

After his second cup of tea, with cream and bread, Alexei Alexandrovich got up, and went toward his study.

"And you went nowhere this evening? Weren't You really bored?" he said.

"Oh, no!" she answered, getting up after him and accompanying him across the room to his study. "What are you reading now?" she asked.

"Just now I'm reading Duc de Lille *Poisie des enfers*," he answered. "A most remarkable book."

## Anna Karenina

Anna smiled, as people smile at the weaknesses of those they love, and, putting her hand in his, she kept him company to the door of his study. She knew his habit, now become a necessity, of reading in the evening. She knew, too, that in spite of his official duties, which engrossed almost all his time, he deemed it his duty to keep up with everything of note that appeared in the intellectual sphere. She knew, too, that his actual interest lay in books dealing with politics, philosophy and theology, that art was utterly foreign to his nature; but, in spite of this or rather, in consequence of it Alexei Alexandrovich never missed anything which created a sensation in the world of art, but made it his duty to read everything. She knew that in politics, in philosophy, in theology, Alexei Alexandrovich was a doubter and a seeker; yet in matters of art and poetry and, above all, of music, of which he was totally devoid of understanding he had the most definite and decided opinions. He was fond of discoursing on Shakespeare, Raphael, Beethoven, on the significance of new schools of poetry and music, all of which were classified by him with most obvious consistency.

"Well, God be with you," she said at the door of the study, where a shaded candle and a decanter of water were already placed near his armchair. "As for me, I'm going to write to Moscow."

He squeezed her hand, and again kissed it.

"Still, he's a good man; truthful, kindhearted, and remarkable in his own sphere," Anna said to herself, back in her room, as though defending him before someone who accused him, saying that one could not love him. "But why is it his ears stick out so queerly? Or has he had his hair cut?..."

Exactly at twelve, as Anna was still sitting at her desk finishing a letter to Dolly, she heard the sound of measured, slipped steps, and Alexei Alexandrovich, washed and combed, a book under his arm, approached her.

"Come, come," said he, with a particular smile, and passed on into their bedroom.

"And what right had he to look at him like that?" reflected Anna, recalling how Vronsky had looked at Alexei Alexandrovich.

Having disrobed, she went into the bedroom; but her face had none of the animation which, during her stay at Moscow, had fairly spurted from her eyes and her smile; on the contrary, now the fire seemed extinct in her, or hidden somewhere far away.

## XXXIV.

Upon his departure from Peterburg Vronsky had left his large apartments on Morskaia to his friend and favorite comrade Petritsky.

Petritsky was a young lieutenant, not particularly well-connected, and not merely not wealthy, but in debt all around. Toward evening he was always drunk, and he had often found himself in the guardhouse because of sorts of ludicrous and disgraceful scrapes, but he was a favorite both of his comrades and his superior officers. At twelve o'clock, as Vronsky was driving up from the station to his quarters, he saw, near the entrance of the house, a hired carriage familiar to him. Even as he rang he heard, beyond the door, masculine laughter, the twitter of a feminine voice, and Petritsky's shout: "If that's one of the villains, don't let him in!" Vronsky told the servant not to announce him, and slipped noiselessly into the first room. Baroness Shilton, a friend of Petritsky's, with a rosy little face and flaxen-fair, resplendent in a lilac satin gown, and filling the whole room, like a canary, with her Parisian accents, sat at a round table, brewing coffee. Petritsky, in his overcoat, and the cavalry captain Kamerovsky, in full uniform, probably just come from duty, were sitting near her.

"Bravo! Vronsky!" shouted Petritsky, jumping up, scraping his chair. "Our host himself! Baroness, some coffee

## Anna Karenina

for him out of the new coffeepot. There, we didn't expect you! I Hope you're satisfied with the adornment of your study," he said, indicating the Baroness. "You know each other, of course?"

"I should say so!" said Vronsky, with a bright smile, squeezing the Baroness's little hand. "Why, we're old friends."

"You've just returned after traveling," said the Baroness, "so I'll run along. Oh, I'll be off this minute, if I'm in the way!"

"You're home, wherever you are, Baroness," said Vronsky. "How do you do, Kamerovsky?" he added, coldly shaking hands with Kamerovsky.

"There, you can never say such charming things," said the Baroness, turning to Petritsky.

"No why not? After dinner even I can say things quite as good."

"After dinner there's no merit in them! Well, then, I'll give you some coffee; go wash and tidy up," said the Baroness, sitting down again, and anxiously turning a gadget in the new coffee urn. "Pierre, give me the coffee," she said, addressing Petritsky, whom she called Pierre, playing on his surname, making no secret of her relations with him. "I want to put some more in."

"You'll spoil it!"

"No, I won't spoil it! Well, and how is your wife?" said the Baroness suddenly, interrupting Vronsky's conversation with his comrade. "We've been marrying you off here. Have you brought your wife along?"

"No, Baroness. I was born a gypsy, and a gypsy I'll die."

"So much the better so much the better. Shake hands on it."

And the Baroness, detaining Vronsky, began telling him, interspersing her story with many jokes, about her latest plans of life, and seeking his counsel.

"He persists in refusing to give me a divorce! Well, what am I to do?" (He was her husband.) "Now I want to begin a suit against him. What would you advise? Kamerovsky, look after the coffee it's boiled out; you can see I'm taken up with business! I want a lawsuit, because I must have my property. You can understand the stupidity of his saying that I am unfaithful to him," she said contemptuously, "yet through it he wants to get the benefit of my fortune."

Vronsky heard with pleasure this lighthearted prattle of a pretty woman, said yes to everything, gave her half-joking counsel, and altogether dropped at once into the tone habitual to him in talking to such women. In his Petersburg world all people were divided into two utterly opposed kinds. One, the lower, consisted of vulgar, stupid and, above all, ridiculous people, who believe that one husband ought to live with the one wife whom he has lawfully wedded; that a girl should be innocent, a woman modest, and a man manly, self-controlled, and strong; that one ought to bring up one's children, earn one's bread and pay one's debts; and various similar absurdities. Those people were of an old-fashioned and ridiculous kind. But there was another kind of people real people, to which they all belonged, and here the chief thing was to be elegant, magnanimous, daring, gay, and to abandon oneself without a blush to every passion, and to laugh at everything else.

For the first moment only, Vronsky was startled, after the impressions of a quite different world that he had brought with him from Moscow; but immediately, as though he had thrust his feet into old slippers, he stepped

into his former lighthearted, pleasant world.

The coffee was really never made, but spluttered over everyone and boiled away, doing just what was required of it—that is, providing cause for much noise and laughter, and spoiling a costly rug and the Baroness's gown.

"Well, good—by now or else you'll never get washed, and I shall have on my conscience the worst offense any decent person can commit—uncleanliness. So you would advise a knife at his throat?"

"Absolutely—and in such a way that your little hand may not be far from his lips. He'll kiss it, and all will end well," answered Vronsky.

"So, the Francais tonight!" and, with a rustle of her skirts, she vanished.

Kamirovsky got up too, and Vronsky, without waiting for him to go, shook hands and went off to his dressing room. While he was washing, Petritsky briefly outlined to him his position, as far as it had changed since Vronsky's departure from Petersburg. No money whatsoever. His father said he wouldn't give him any, nor pay his debts. His tailor was trying to get him locked up, and another fellow, too, was threatening to do so without fail. The colonel of his regiment had announced that if these scandals did not cease a resignation would be inevitable. As for the Baroness, he was fed up with her, particularly because she was forever wanting to give him money. But there was another girl—he intended showing her to Vronsky—a marvel, exquisite, in the strict Oriental style, "genre of the slave Rebecca, you see." He had had a row, too, with Berkoshev, and the latter intended sending seconds, but, of course, it would all come to nothing. Altogether everything was going splendidly and was most jolly. And, without letting his comrade enter into further details of his position, Petritsky proceeded to tell him all the interesting news. As he listened to Petritsky's familiar stories, in the familiar setting of the rooms he had spent the last three years in, Vronsky felt the delightful sensation of coming back to the insouciant and customary life of Petersburg.

"Impossible!" he cried, releasing the pedal of the wash basin in which he had been sousing his stalwart red neck. "Impossible!" he cried, at the news that Laura had dropped Fertinghof and had tied up with Mileev. "And is he as stupid and satisfied as ever? Well, and what's Buzulukov doing?"

"Oh, Buzulukov got into a scrape—simply lovely!" cried Petritsky. "You know his passion for balls—and he never misses a single one at court. He went to a big ball in a new casque. Have you seen the new casques? Very good, and lighter. Well, he's standing... No—do listen."

"I am listening," answered Vronsky, rubbing himself with a rough towel.

"The Grand Duchess passes by with some ambassador or other, and, as ill luck would have it, their talk veers to the new casques. And so the Grand Duchess wanted to show the new casque to the ambassador.... Just then they catch sight of our dear boy standing there." (Petritsky mimicked him, standing with his casque.) "The Grand Duchess requested him to give her the casque—he doesn't do so. What's up? Well, they all wink at him, and nod and frown—give it to her, do! He still doesn't. Just stands there, stock-still. You can picture it to yourself!... Well, this... what's his name... tries to take the casque from him... He won't give it up!... This chap tore it from him, and hands it to the Grand Duchess. "This is the new casque," says the Grand Duchess. She turned the casque over, and—just picture it!—bang went a pear and candy out of it—two pounds of candy!... He'd collected all that—our dear boy!"

Vronsky rolled with laughter. And, long afterward, even when he was talking of other things, he would go off into peals of his hearty laughter baring his strong, closely set teeth, whenever he thought of the casque.



## Anna Karenina

Having learned all the news, Vronsky, with the assistance of his valet, got into his uniform, and went off to report himself. He intended, afterward, to go to his brother and to Betsy, and to pay several visits, as an entering wedge into that society where he might meet Madame Karenina. As always in Petersburg, he left home without any intention of returning before very late at night.

## PART TWO

### I.

Toward the end of winter, in the house of the Shcherbatskys, a consultation was being held, which was to determine the state of Kitty's health, and what was to be done to restore her failing strength. She had been ill, and, as spring came on, she grew worse. The family doctor gave her cod-liver oil, then iron, then lunar caustic; but since neither the first, nor the second, nor the third availed, and since his advice was to go abroad before the beginning of the spring, a celebrated doctor was called in. The celebrated doctor, not yet old and a very handsome man, demanded an examination of the patient. He maintained, with special satisfaction, it seemed, that maiden modesty is merely a relic of barbarism, and that nothing could be more natural than for a man who was not yet old to handle a young girl in the nude. He deemed this natural, because he did it every day, and neither felt nor thought, as it seemed to him, anything evil as he did it and, consequently, he considered girlish modesty not merely as a relic of barbarism, but, as well, an insult to himself.

It was necessary to submit, for, although all the doctors studied in the same school, all using the same textbooks, and all learned in the same science, and though some people said this celebrated doctor was but a poor doctor, in the Princess's household and circle it was for some reason held that this celebrated doctor alone had some peculiar knowledge, and that he alone could save Kitty. After thorough examination and tapping of the patient, distraught and dazed with shame, the celebrated doctor, having painstakingly washed his hands, was standing in the drawing room talking to the Prince. The Prince frowned and coughed as he listened to the doctor. As a man who had seen something of life, and neither a fool nor an invalid, he had no faith in medicine, and at soul was wrought up with all this comedy, especially as he was probably the only one who fully understood the cause of Kitty's illness. "You're barking up the wrong tree," he mentally applied this phrase from the hunter's vocabulary to the celebrated doctor, as he listened to the latter's patter about the symptoms of his daughter's complaint. The doctor, for his part, found difficulty in restraining the expression of his contempt for this old grandee, as well as in condescending to the low level of his comprehension. He perceived that it was useless to talk to the old man, and that the head of this house was the mother and she it was before whom he intended to scatter his pearls. It was at this point that the Princess entered the drawing room with the family doctor. The Prince retreated, doing his best not to betray how ridiculous he regarded the whole comedy. The Princess was distraught, and did not know what to do. She felt herself at fault before Kitty.

"Well, doctor, decide our fate," said the Princess. "Tell me everything." "Is there any hope?" was what she had wanted to say, but her lips quivered, and she could not utter this question. "Well, doctor?"

"Immediately, Princess I will discuss the matter with my colleague, and then have the honor of laying my opinion before you."

"Then we had better leave you?"

"As you please."

The Princess, with a sigh, stepped outside.

## Anna Karenina

When the doctors were left alone, the family doctor began timidly explaining his opinion, that there was an incipient tubercular process, but... and so on. The celebrated doctor listened to him, and in the middle of the other's speech looked at his big gold watch.

"That is so," said he. "But..."

The family doctor respectfully ceased in the middle of his speech.

"As you know, we cannot determine the incipience of the tubercular process; until the appearance of vomicae there is nothing determinate. But we may suspect it. And there are indications: malnutrition, nervous excitability, and so on. The question stands thus: if we suspect a tubercular process, what must we do to maintain nutrition?"

"But then, you know, there are always moral, spiritual causes at the back of these cases," the family doctor permitted himself to interpolate with a subtle smile.

"Yes, that's to be taken for granted," retorted the celebrated doctor, again glancing at his watch. "Beg pardon but is the Iauzsky bridge finished yet, or must one still make a detour?" he asked. "Ah! It is finished. Well, in that case I can make it in twenty minutes. As we were saying, the question may be posited thus: the nutrition must be maintained and the nerves improved. The one is bound with the other; one must work upon both sides of this circle."

"But what about the trip abroad?" asked the family doctor.

"I am a foe to trips abroad. And take notice: if there is any incipient tubercular process, which we cannot know, a trip abroad will not help. We must have a remedy that would improve nutrition, and do no harm."

And the celebrated doctor expounded his plan of treatment with Soden waters, in designating which his main end was evidently their harmlessness.

The family doctor heard him out attentively and respectfully.

"But in favor of foreign travel I would urge the change of habits, the removal from conditions which evoke memories. And then the mother wishes it," he added.

"Ah! Well, in that case, one might go; well, let them go; but those German charlatans may do harm.... Our instructions ought to be followed.... Well, let them go then."

He again glanced at his watch.

"Oh! it's time to go," and he went to the door.

The celebrated doctor informed the Princess (prompted by a feeling of propriety) that he must see the patient once more.

"What! Another examination!" the mother exclaimed in horror.

"Oh, no I merely need certain details, Princess."

"Come this way."

## Anna Karenina

And the mother, followed by the doctor, went into the drawing room to Kitty. Wasted and blushing, with a peculiar glitter in her eyes—a consequence of the shame she had gone through, Kitty was standing in the middle of the room. When the doctor came in she turned crimson, and her eyes filled with tears. All her illness and its treatment seemed to her a thing so stupid—even funny! Treatment seemed to her as funny as reconstructing the pieces of a broken vase. It was her heart that was broken. Why, then, did they want to cure her with pills and powders? But she could not hurt her mother—all the more so since her mother considered herself to blame.

"May I trouble you to sit down, Princess?" the celebrated doctor said to her.

Smiling, he, sat down facing her, felt her pulse, and again started in with his tiresome questions. She answered him, and suddenly, becoming angry, got up.

"You must pardon me, doctor—but really, this will lead us nowhere. You ask me the same things, three times running."

The celebrated doctor did not take umbrage.

"Sickly irritability," said he to the Princess, when Kitty had left the room. "However, I had finished...."

And the doctor scientifically defined to the Princess, as to an exceptionally clever woman, the condition of the young Princess, and concluded by explaining the mode of drinking the unnecessary waters. When the question of going abroad came up, the doctor was plunged into profound considerations, as though deciding a weighty problem. Finally his decision was given: they might go abroad, but must put no faith in charlatans, but turn to him in everything.

It seemed as though some cheerful influence had sprung up after the doctor's departure. The mother grew more cheerful when she returned to her daughter, while Kitty too pretended to be more cheerful. She had frequent, almost constant, occasions to be pretending now.

"Really, I'm quite well, maman. But if you want to go abroad, let's!" she said, and, trying to show that she was interested in the proposed trip, she began talking of the preparations for the departure.

## II.

Right after the doctor Dolly arrived. She knew that the consultation was scheduled for that day, and, despite the fact that she had only recently gotten up from her lying-in (she had had another little girl at the end of the winter), despite her having enough trouble and cares of her own, she had left her breast baby and an ailing girl to come and learn Kitty's fate, which was being decided that day.

"Well, what's what?" said she, entering into the drawing room, without taking off her hat. "You're all in good spirits. That means good news, then?"

An attempt was made to tell her what the doctor had said, but it proved that, even though the doctor had talked coherently and long, it was utterly impossible to convey what he had said. The only point of interest was that going abroad was definitely decided upon.

Dolly could not help sighing. Her dearest friend, her sister, was going away. And her life was far from gay. Her relations with Stepan Arkadyevich after their reconciliation had become humiliating. The wedding Anna had made proved not at all solid, and family concord had broken down again at the same point. There was nothing definite, but Stepan Arkadyevich was hardly ever at home; also, there was hardly ever any money, and Dolly was

## Anna Karenina

constantly being tortured by suspicions of infidelities, and by now she drove them away from her, dreading the agony of jealousy she had already experienced. The first explosion of jealousy, once lived through, could never return, and even the discovery of infidelities could never affect her now as it had the first time. Such a discovery now would only mean breaking up her family habits, and she permitted him to deceive her, despising him and still more herself for this weakness. Besides this, the cares of her large family were a constant torment to her: now the nursing of her breast baby did not go well; now the nurse would leave, now (as at the present time) one of the children would fall ill.

"Well, how's everybody in your family?" asked her mother.

"Ah, maman, we have enough trouble of our own. Lili has taken ill, and I'm afraid it's scarlatina. I have come here now to find out about Kitty, and then I shall shut myself up entirely, if God forbid it really be scarlatina."

The old Prince too had come in from his study after the doctor's departure, and, after offering his cheek to Dolly, and chatting awhile with her, he turned to his wife:

"What have you decided are you going? Well, and what do you want to do with me?"

"I think you had better stay here, Alexandre," said his wife.

"Just as you wish."

"Maman, why shouldn't father come with us?" said Kitty. "He'll feel better, and so will we."

The old Prince got up and stroked Kitty's hair. She lifted her head and looked at him with a forced smile. It always seemed to her that he understood her better than anyone else in the family did, though he spoke but little with her. Being the youngest, she was her father's favorite, and she fancied that his love for her gave him insight. When now her gaze met his blue, kindly eyes, scrutinizing her intently, it seemed to her that he saw right through her, and understood all the evil things that were at work within her. Reddening, she was drawn toward him, expecting a kiss; but he merely patted her hair and said:

"These silly chignons! One can't as much as get near one's real daughter, but simply stroke the hair of defunct females. Well Dolinka," he turned to his elder daughter, "what's your ace up to now?"

"Nothing, papa," answered Dolly, who knew that this referred to her husband. "He's always out; I hardly ever see him," she could not resist adding with a mocking smile.

"Why, hasn't he gone into the country yet about the sale of the forest?"

"No; he's still getting ready."

"Oh, that's it!" said the Prince. "And so I'm to be getting ready, too? At your service," he said to his wife, sitting down. "And as for you, Katia," he went on, addressing his younger daughter, "you must wake up one fine day and say to yourself: Why, I'm quite well, and merry, and I'm going out again with papa for an early morning stroll in the frost. Eh?"

What her father said seemed simple enough, yet at these words Kitty grew confused and upset, like a criminal caught red-handed. "Yes, he knows all, he understands all, and in these words he's telling me that though I'm ashamed, I must live through my shame." She could not pluck up spirit enough to make any answer. She made an attempt but suddenly burst into tears, and ran out of the room.

## Anna Karenina

"See what comes of your jokes!" the Princess pounced on her husband. "You're always..." she launched into her reproachful speech.

The Prince listened to the Princess's reproaches rather a long while and kept silent, but his face grew more and more glowering.

"She's so much to be pitied, poor thing, so much to be pitied, yet you don't feel how it pains her to hear the least hint as to the cause of it all. Ah! to be so mistaken in people!" said the Princess, and by the change in her tone both Dolly and the Prince knew she meant Vronsky. "I don't know why there aren't laws against such vile, dishonorable people."

"Ah, I oughtn't to listen to you!" said the Prince glumly, getting up from his chair, as if to go, yet pausing in the doorway. "There are laws, my dear, and since you've challenged me to it, I'll tell you who's to blame for it all: you you, you alone. Laws against such young gallants have always existed, and still exist! Yes, if there weren't anything that ought not to have been, I, old as I am, would have called him out to the barrier, this swell. Yes, and now go ahead and physic her, and call in these charlatans."

The Prince, it seemed, had plenty more to say, but no sooner had the Princess caught his tone than she subsided at once, and became penitent, as was always the case in serious matters.

"Alexandre, Alexandre," she whispered, approaching him and bursting into tears.

As soon as she began to weep the Prince, too, calmed down. He went up to her.

"There, that's enough, that's enough! You feel badly too, I know. Nothing can be done about it! It's not so very bad. God is merciful... thanks..." he said, without knowing himself what he was saying now, responding to the moist kiss of the Princess that he felt on his hand. And the Prince went out of the room.

No sooner had Kitty gone out of the room, in tears, than Dolly, with her motherly, domestic habit, had promptly perceived that here a woman's work lay before her, and got ready for it. She took off her hat, and, morally speaking, tucked up her sleeves and got ready for action. While her mother was attacking her father, she tried to restrain her mother, so far as daughterly reverence would allow. During the Prince's outburst she was silent; she felt ashamed for her mother and tender toward her father for so quickly being kind again. But when her father left, she made ready for what was most necessary to go to Kitty and compose her.

"I've intended long since to tell you something, maman: did you know that Levin meant to propose to Kitty when he was here last? He told Stiva so."

"Well, what of it? I don't understand..."

"Why, perhaps Kitty refused him?... Did she say nothing to you?"

"No, she said nothing to me either of the one or the other; she's too proud. But I know it's all on account of this..."

"Yes, but suppose she has refused Levin and she wouldn't have refused him if it hadn't been for the other, I know. And then, this fellow has deceived her so horribly."

It was too frightful for the Princess to think how much at fault she was before her daughter, and she grew angry.

"Oh, now I really understand nothing! Nowadays everybody thinks to live after his own way; a mother isn't told a thing, and then you have..."

"Maman, I'll go to her."

"Do. Am I forbidding you?"

### III.

When she went into Kitty's little sanctum, a pretty, rosy little room, full of knickknacks in vieux saxe, as youthful and rosy and gay as Kitty herself had been only two months ago, Dolly recalled how they had together decorated the room the year before, with what gaiety and love. Her heart turned cold when she beheld Kitty sitting on the low chair nearest the door, her eyes fixed immovably on a corner of the rug. Kitty glanced at her sister, and the cold, rather austere expression of her face did not change.

"I'm going now, and shall entrench myself at home, and you won't be able to come to see me," said Darya Alexandrovna sitting down beside her. "I want to talk to you."

"What about?" Kitty asked swiftly, lifting her head in fright.

"What should it be, save what's grieving you?"

"I have no grief."

"Come, Kitty. Do you possibly think I cannot know? I know all. And, believe me, this is so insignificant... We've all been through it."

Kitty did not speak, and her face had a stern expression.

"He's not worth your suffering on his account," pursued Darya Alexandrovna, coming straight to the point.

"Yes because he has disdained me," said Kitty, in a jarring voice. "Don't say anything! Please, don't say anything!"

"But whoever told you that? No one has said that. I'm certain he was in love with you, and remained in love with you, but..."

"Oh, the most awful thing of all for me are these condolences!" cried out Kitty, in a sudden fit of anger. She turned round on her chair, turned red, and her fingers moved quickly, as she pinched the buckle of the belt she held, now with one hand, now with the other. Dolly knew this trick her sister had of grasping something in turn with each of her hands, when in excitement; she knew that, in a moment of excitement Kitty was capable of forgetting herself and saying a great deal too much and much that was unpleasant, and Dolly would have calmed her; but it was already too late.

"What what is it you want to make me feel, eh?" said Kitty quickly. "That I've been in love with a man who didn't even care to know me, and that I'm dying for love of him? And this is said to me by my own sister, who imagines that... that... that she's sympathizing with me!... I don't want these condolences and hypocrisies!"

"Kitty, you're unjust."

"Why do you torment me?"

"But I... On the contrary... I can see you're hurt...."

But Kitty in her heat did not hear her.

"I've nothing to despair over and be comforted about. I'm sufficiently proud never to allow myself to care for a man who does not love me."

"Why, I don't say anything of the kind... Only, tell me the truth," said Darya Alexandrovna, taking her by the hand, "tell me did Levin speak to you?..."

The mention of Levin seemed to deprive Kitty of the last vestige of self-control. She leaped up from her chair, and, flinging the buckle to the ground, gesticulating rapidly with her hands, she said:

"Why bring Levin in too? I can't understand what you want to torture me for? I've told you, and I repeat it I have some pride, and never, never would I do what you're doing going back to a man who's deceived you, who has come to love another woman. I can't understand this! You may but I can't do it!"

And, having said these words, she glanced at her sister, and seeing that Dolly sat silent, her head mournfully bowed, Kitty, instead of leaving the room, as she had intended, sat down near the door, and, hiding her face in her shawl, let her head drop.

The silence lasted for two minutes. Dolly's thoughts were of herself. That humiliation of which she was always conscious came back to her with special pain when her sister reminded her of it. She had not expected such cruelty from her sister, and was resentful. But suddenly she heard the rustle of a skirt, and, simultaneously, an outburst of smothered sobbing, and felt arms clasping her neck from below. Kitty was on her knees before her.

"Dolinka, I am so, so unhappy!" she whispered penitently.

And the endearing face, covered with tears, hid itself in Darya Alexandrovna's skirt.

It was as if tears were the indispensable oil without which the machinery of mutual communion could not run smoothly between the two sisters; the sisters, after their tears, discussed everything but that which engrossed them; but, even in talking of outside matters, they understood one another. Kitty knew that what she had uttered in anger about her husband's infidelity and her humiliating position had struck her poor sister to the very depths of her heart, but she also knew that the latter had forgiven her. Dolly for her part had comprehended all she had wanted to find out. She had become convinced that her surmises were correct; that Kitty's misery, her incurable misery, was due precisely to the fact that Levin had proposed to her and she had refused him, while Vronsky had deceived her, and that she stood ready to love Levin and to hate Vronsky. Kitty said no word of this; she spoke of nothing save her own spiritual state.

"I have nothing to grieve over," she said, calming down, "but you could understand that everything has become loathsome, hateful, coarse to me and I myself most of all. You can't imagine what loathsome thoughts I have about everything."

"Why, whatever loathsome thoughts can you have?" asked Dolly, smiling.

"Most, most loathsome and coarse: I couldn't tell you. This is not melancholy, nor boredom, but far worse. As if everything of good that I had were gone out of sight, while only that which was most loathsome were left. Well, how shall I put it to you?" she went on, seeing incomprehension in her sister's eyes. "Papa began saying something to me just now... It seems to me he thinks all I need is to marry. If mamma takes me to a ball it seems to me she takes me only to marry me off as fast as possible, and get me off her hands. I know this isn't so, but I can't drive away such thoughts. These suitors so called I can't bear the sight of them. It seems to me as if they're always taking stock of me. Formerly, to go anywhere in a ball dress was a downright joy to me; I used to

## Anna Karenina

admire myself; now I feel ashamed, in at ease. Well, take any example you like... This doctor... Now..."

Kitty hesitated; she wanted to say further that ever since this change had taken place in her, Stepan Arkadyevich had become unbearably repulsive to her, and that she could not see him without imagining the grossest and most hideous things.

"Well now, everything appears to me, in the coarsest, most loathsome aspect," she went on. "That is my ailment. Perhaps all this will pass..."

"Try not to think of such things..."

"I can't help it. I feel well only when I am with the children, at your house."

"What a pity you can't visit me!"

"Oh, yes, I'll come. I've had scarlatina, and I'll persuade maman to let me come."

Kitty insisted on having her way, and went to stay at her sister's and nursed the children all through the scarlatina for it really proved to be scarlatina. The two sisters brought all the six children successfully through it; Kitty's health, however, did not improve, and in Lent the Shcherbatskys went abroad.

## IV.

There is really only one circle of Petersburg upper society: everyone knows everyone else, even visits each other. But this great circle has subdivisions of its own. Anna Arkadyevna Karenina had friends and close ties in three different circles. One circle was her husband's set of civil servants and officials, consisting of his colleagues and subordinates, brought together in a most diversified and capricious manner, yet separated by social conditions. Anna could now recall only with difficulty the feeling of almost pious reverence which she had at first borne for these persons. Now she knew all of them, as people know one another in a provincial town; she knew their habits and weaknesses, and where the shoe pinched each one of them. She knew their attitudes toward one another and to the chief center; knew who backed whom, and how and wherewithal each one maintained his position, and who agreed or disagreed with whom; but this circle of political, masculine interests could not interest her, and, in spite of Countess Lidia Ivanovna's suggestions, she avoided it.

Another small circle, with which Anna was intimate, was the one by means of which Alexei Alexandrovich had made his career. The center of this circle was the Countess Lidia Ivanovna. This was a circle of elderly, homely, virtuous and pious women, and clever, learned and ambitious men. One of the clever people belonging to this small circle had called it "the conscience of Petersburg society." Alexei Alexandrovich appreciated this circle very much, and Anna, who knew so well how to get on with all, had in the early days of her life in Petersburg found friends even in this circle. But now, upon her return from Moscow, this set had become unbearable to her. It seemed to her that both she and all of them were dissimulating, and she experienced such boredom and lack of ease in their society that she tried to visit the Countess Lidia Ivanovna as infrequently as possible.

And, finally, the third circle with which Anna had ties was the really fashionable world the world of balls, of dinners, of sumptuous dresses; the world that hung on to the court with one hand, in order not to sink to the level of the demimonde, which the members of the fashionable world believed they despised yet the tastes of both were not only similar, but precisely the same. Her connection with this circle was maintained through Princess Betsy Tverskaia, her cousin's wife, who had an income of a hundred and twenty thousand roubles, and who had taken a great liking to Anna ever since she first came out, looking after her and drawing her into her own circle, poking fun at that of Countess Lidia Ivanovna.



## Anna Karenina

"When I'm old and shall have lost my looks, I'll be the same," Betsy used to say; "but for a young and pretty woman like you it's much too early to join that Old Ladies' Home."

Anna had at first avoided, as much as she could, Princess Tverskaia's world, because it necessitated expenditures above her means and, besides, at soul she preferred the first circle; but after her trip to Moscow, things fell out quite the other way. She avoided her moral friends, and went out into the fashionable world. There she would meet Vronsky, and experienced an agitating joy at such meetings. Especially often did she meet Vronsky at Betsy's, for Betsy was a Vronsky by birth, and his cousin. Vronsky went everywhere where he might meet Anna, and, at every chance he had, spoke to her of his love. She offered him no encouragement, yet every time she met him there was kindled in her soul that same feeling of animation which had come upon her that day in the railway carriage when she had seen him for the first time. She felt herself that her delight shone in her eyes and puckered her lips into a smile and she could not quench the expression of this delight.

At first Anna had sincerely believed that she was displeased with him for daring to pursue her; but not long after her return from Moscow, on arriving at a soiree where she had anticipated meeting him, yet not finding him there, she realized clearly, from the feeling of sadness which overcame her, that she had been deceiving herself, and that this pursuit was not merely not distasteful to her, but that it constituted all the interest of her life.

It was the second performance of a celebrated cantatrice, and all the fashionable world was in the theater. Vronsky, seeing his cousin from his seat in the front row, did not wait till the entr'acte, but went to her box.

"Why didn't you come to dinner?" she said to him. "I marvel at this clairvoyance of lovers," she added with a smile, so that no one but he could hear, "she wasn't there. But do come after the opera."

Vronsky looked inquiringly at her. She nodded. He thanked her by a smile, and sat down beside her.

"But how I remember your jeers!" continued Princess Betsy, who took special delight in following up the progress of this passion. "What's become of all that? You're caught, my dear fellow."

"That's my one desire to be caught," answered Vronsky, with his calm, good-natured smile. "If I complain at all, it's only that I'm not caught enough, if the truth were told. I begin to lose hope."

"Why, whatever hope can you expect?" said Betsy, offended on behalf of her friend. "Entendons nous...." But in her eyes flitted gleams of light, which proclaimed that she understood very well, even as much as he did, what hope he might entertain.

"None whatever," said Vronsky, laughing and showing his closely set teeth. "Excuse me," he added, taking the binoculars out of her hand, and proceeding to scrutinize, over her bare shoulder, the row of boxes opposite them. "I'm afraid I'm becoming ridiculous."

He was very well aware that he ran no risk of being ridiculous in the eyes of Betsy and all other fashionable people. He was very well aware that in the eyes of these people the role of the hapless lover of a girl, or in general, of any woman free to marry, might be ridiculous; but the role of a man pursuing a married woman, and, regardless of everything, staking his life on drawing her into adultery that role has something beautiful and majestic about it, and can never be ridiculous, and so it was with a proud and gay smile under his mustaches that he lowered the binoculars and looked at his cousin.

"But why didn't you come to dinner?" she said, admiring him.

"I must tell you about that. I was busy and with what, do you suppose? I'll give you a hundred guesses, a thousand... you'd never guess. I've been reconciling a husband with a man who'd insulted his wife. Yes, really!"

## Anna Karenina

"Well, did you reconcile them?"

"Almost."

"You really must tell me about it," she said, getting up. "Come to me in the next entr'acte."

"I can't; I'm going to the French theater."

"Leaving Nilsson?" Betsy queried in horror, though she could not herself have distinguished Nilsson from any chorus girl.

"What can I do? I've an appointment there, all because of my mission of peace."

"'Blessed are the peacemakers;' 'they shall be saved'," said Betsy, recalling something of that sort she had heard from somebody or other. "Very well, then, sit down, and tell me what it's all about."

And she resumed her seat.

### V.

"This is rather indiscreet, but it's so charming that one is awfully tempted to tell the story," said Vronsky, looking at her with laughing eyes. "I don't intend to mention any names."

"But I shall guess them so much the better."

"Listen, then: two festive young men were driving along..."

"Officers of your regiment, of course?"

"I didn't say they were officers just two young men who had been lunching."

"In other words, drinking."

"Possibly. They were driving on their way to dinner with a friend in the gayest of moods. And they catch sight of a pretty woman in a hired sleigh, who overtakes them, looks back at them, and so it seemed to them, at any rate nods to them and laughs. They, of course, follow her galloping at full speed. To their amazement, the fair one alights at the entrance of the very house to which they were going. The fair one darts upstairs to the top floor. All they got was a glimpse of rosebud lips under a short veil, and of exquisite little feet."

"You tell this with such feeling that it seems to me you yourself must have been one of the two."

"But what did you tell me just now?... Well, the young men enter their comrade's apartment he was giving a farewell dinner. There they certainly did take a drop too much, as is always the case at farewell dinners. And at dinner they inquire who lives at the top in that house. No one knows; only their host's valet, in answer to their inquiry whether any 'young ladies' are living on the top floor, answered that there were a great many of them. After dinner the two young men go into their host's study, and write a letter to the fair unknown. They composed a passionate epistle, really a declaration, and then carry the letter upstairs themselves, so as to explain whatever might prove not altogether clear in the letter."

"Why do you tell me such nasty things? And then?"

## Anna Karenina

"They ring. A maidservant opens the door, they hand her the letter, and assure her that they're both so enamored that they'll die on the spot at the door. The maid, stupefied, carries on the negotiations. Suddenly a gentleman appears with side whiskers like country sausages, he is as red as a lobster and, informing them that there is no one living in that flat except his wife, he sends them both packing."

"How do you know he had side whiskers like sausages, as you put it?"

"Ah, do but listen. Recently I went to make peace between them."

"Well, and what was the upshot?"

"That's the most interesting part. This couple turned out to be a most happy one a government clerk and his lady. The government clerk lodges a complaint, whereupon I become a mediator and what a mediator!... I assure you Talleyrand was a nobody compared to me."

"Just what was the difficulty?"

"Ah, do but listen.... We make fitting apologies: 'We are in despair; we entreat forgiveness for the unfortunate misunderstanding.' The government clerk with the country sausages begins to melt, and he, too, desires to express his sentiments, but no sooner does he begin to express them than he gets heated and says nasty things, and again I'm obliged to trot out all my diplomatic talents. 'I agree that their action was bad, but I beg of you to take into consideration the misunderstanding, and their youth; besides, the young men had just come from their lunch. You understand. Their repentance is heartfelt and they beg you to forgive their misbehavior.' The government clerk was softened once more. 'I consent, Count, and am ready to forgive but you must understand that my wife my wife! a respectable woman is subjected to annoyances, and insults, and impertinences by certain milksops, scou-...' Yet, you understand, the milksop is present, and it is up to me to make peace between them. Again I trot out all my diplomacy, and again, just as the matter is about to be concluded, our friend the government clerk gets heated and turns red while his country sausages bristle up, and I once more exert diplomatic finesse."

"Ah, you must hear this story!" said Betsy, laughing, to a lady who was entering the box. "He has made me laugh so much... Well, bonne chance!" she added, giving Vronsky the one finger free from holding her fan, and with a shrug of her shoulders letting down the bodice of her gown, that had worked up, so as to be fittingly and fully nude as she moved forward, toward the footlights, into the lights of the gas, and within the ken of all.

Vronsky drove to the French theater, where he really had to see the colonel of his regiment, who never missed a single performance there; he wanted to talk over his peacemaking, which had been occupying and amusing him for the last three days. Petritsky, whom he liked, was implicated in the affair, as well as another fine fellow and excellent comrade, who had lately joined the regiment the young Prince Kedrov. But, mainly, the interests of the regiment were involved as well.

Both culprits were in Vronsky's squadron. The colonel of the regiment had received a call from the government clerk, Venden, with a complaint against his officers, who had insulted his wife. His young wife, as Venden told the story he had been married half a year had been at church with her mother, and, suddenly feeling indisposed, due to her interesting condition, found that she could not remain standing and drove home in the first sleigh with the mettlesome coachman she came across. It was then that the officers set off in pursuit of her; she was alarmed, and, feeling still worse, ran home up the staircase. Venden himself, on returning from his office, had heard a ring at their bell and voices, had stepped out, and seeing the intoxicated officers with a letter, he had pushed them out. He was asking that the culprits be severely punished.

"You may say what you will," said the colonel to Vronsky, whom he had invited to come and see him. "Petritsky is becoming impossible. Not a week goes by without some scrape. This clerk chap won't let matters drop he'll

go on with the thing."

Vronsky saw all the thanklessness of the business, and that a duel was out of the question here; that everything must be done to soften this government clerk, and hush the matter up. The colonel had called in Vronsky precisely because he knew him to be an honorable and intelligent man, but, above all, one to whom the honor of the regiment was dear. They talked it over, and decided that Petritsky and Kedrov must go with Vronsky to this government clerk and apologize. The colonel and Vronsky were both fully aware that Vronsky's name and insignia of aide-de-camp were bound to go a long way toward softening the government clerk. And these two influences proved in fact not without effect; though the result of the mediation remained, as Vronsky had described, uncertain.

On reaching the French theater, Vronsky retired to the foyer with the colonel, and reported to him his success or lack of it. The colonel, thinking it all over, decided not to go on with the matter; but then, for his own delectation, proceeded to question Vronsky about the details of his interview and for a long while could not restrain his laughter as he listened to Vronsky's story of how the government clerk, after subsiding for a while, would suddenly flare up again, as he recalled the details, and how Vronsky, at the last half-word of conciliation, had skillfully maneuvered a retreat, shoving Petritsky out before him.

"It's a disgraceful scrape, but a killing one. Kedrov really can't fight this gentleman! So he was awfully wrought up?" he asked again, laughing. "But what do you think of Claire today? She's a wonder!" he went on, speaking of a new French actress. "No matter how often you see her, she's different each time. It's only the French who can do that."

## VI.

Princess Betsy drove home from the theater without waiting for the end of the last act. She had just time enough to go into her dressing room, sprinkle her long, pale face with powder, rub it off, set her dress to rights, and order tea in the big drawing room, when one after another carriages drove up to her huge house on the Bolshaia Morskaiia. Her guests dismounted at the wide entrance, and the stout porter, who used to read newspapers mornings behind the glass door, to the edification of the passers-by, noiselessly opened the immense door, letting the visitors pass by him into the house.

Almost at the same instant that the hostess, with freshly arranged coiffure and freshened face, entered at one door, her guests entered at the other, into the drawing room, a large room with dark walls, downy rugs and a brightly lighted table, gleaming with the light of candles, the whiteness of napery, the silver of the samovar and the tea service of transparent porcelain.

The hostess sat down at the samovar and took off her gloves. Chairs were set with the aid of footmen, moving almost imperceptibly about the room; the party settled itself, divided into two groups: one round the samovar near the hostess, the other at the opposite end of the drawing room, round the handsome wife of an ambassador, in black velvet, with sharply defined black eyebrows. In both groups conversation wavered, as it always does, for the first few minutes, broken up by meetings, salutations, offers of tea, and, as it were, seeking for some point in common.

"She's exceptionally fine as an actress; one can see she's studied Kaulbach," said a diplomatist in the circle of the ambassador's wife. "Did you notice how she fell down?..."

"Oh, please, don't let us talk about Nilsson! No one can possibly say anything new about her," said a fat, red-faced, flaxen-headed lady, without eyebrows and without chignon, wearing an old silk dress. This was Princess Miaghkaia, noted for her simplicity and the roughness of her manners, and nicknamed enfant terrible.

## Anna Karenina

Princess Miaghkaia was seated halfway between the two groups, and, listening to both, took part in the conversation first of one and then of the other. "Three people have used that very phrase about Kaulbach to me today, just as though they had conspired. And I don't know why that phrase should be so much to their liking."

The conversation was cut short by this observation, and again a new subject had to be thought of.

"Do tell us something amusing, yet not spiteful," said the ambassador's wife, a great proficient in the art of that elegant conversation called by the English small talk. She addressed the diplomatist, who was now at a loss just what to begin upon.

"That is said to be a difficult task only that which is spiteful is supposed to be amusing," he began with a smile. "However, I'll make the attempt. Give me a theme. it's all a matter of the theme. If the theme be but given, it's easy enough to embroider it. I often think that the celebrated conversationalists of the last century would find it difficult to talk cleverly now. Everything clever has become such a bore...."

"That has been said long ago," the ambassador's wife interrupted him, laughing.

The conversation had begun amiably, but just because it was too amiable, it came to a stop again. They had to have recourse to the sure, never-failing remedy malicious gossip.

"Don't you think there's something Louis Quinze about Tushkevich?" he said, glancing toward a handsome, fair-haired young man, standing at the table.

"Oh, yes! He's in the same style as the drawing room, and that's why it is he's so often here."

This conversation was kept up, since it depended on allusions to what could not be talked of in that room that is to say, of the relations of Tushkevich with their hostess.

Round the samovar and the hostess the conversation having, in the meanwhile, vacillated in precisely the same way between the three inevitable topics the latest piece of public news, the theater, and censuring the fellow creature had finally come to rest on the last topic that is, malicious gossip.

"Have you heard that even the Maltishcheva the mother, not the daughter has ordered a costume in diable rose color?"

"Impossible! No, that's just charming!"

"I wonder that with her sense for after all she's no fool she doesn't see how funny she is."

Every one had something to say in censure or ridicule of the hapless Maltishcheva, and the conversation crackled merrily, like a blazing bonfire.

The husband of Princess Betsy, a good-natured corpulent man, an ardent collector of engravings, hearing that his wife had visitors, had come into the drawing room before leaving for his club. Stepping noiselessly over the thick rugs, he approached Princess Miaghkaia.

"How did you like Nilsson?" he asked.

"Oh, how can you steal up on anyone like that! How you startled me!" she responded. "Please don't talk to me about the opera; you know nothing about music. I'd rather come down to your own level, and discuss with you your majolica and engravings. Come, now, what treasure have you been buying lately at the rag fair?"

## Anna Karenina

"Would you like me to show you? But you don't understand such things."

"Yes, show me. I've been learning about them at those what's their names?... those bankers... They have some splendid engravings. They showed them to us."

"Why, have you been at the Schutzburghs?" asked the hostess from behind the samovar.

"Yes, ma chere. They asked my husband and myself to dinner, and I was told that the sauce at that dinner cost a thousand roubles," Princess Miaghkaia said, speaking loudly, conscious that all were listening; "and very nasty sauce it was some green mess. We had to ask them, and I made a sauce for eighty-five kopecks, and everybody was very much pleased with it. I can't afford thousand-rouble sauces."

"She's unique!" said the lady of the house.

"Amazing!" somebody else added.

The effect produced by Princess Miaghkaia's speeches was always the same, and the secret of the effect she produced lay in the fact that though she spoke not always appropriately, as now, she said homely truths, not devoid of sense. In the society in which she lived such utterances had the same result as the most pungent wit. Princess Miaghkaia could never see why it had that result, but she knew it had, and took advantage of it.

Since everyone had been listening while Princess Miaghkaia spoke, and the conversation around the ambassador's wife had dropped, Princess Betsy tried to bring the whole party together, and she addressed the ambassador's wife.

"Really won't you have tea? Do come and join us."

"No, we're very comfortable here," the ambassador's wife responded with a smile, and went on with the interrupted conversation.

It was a most agreeable conversation. They were censuring the Karenins, husband and wife.

"Anna is quite changed since her stay in Moscow. There's something strange about her," said one of her feminine friends.

"The great change is that she has brought back with her the shadow of Alexei Vronsky," said the ambassador's wife.

"Well, what of it? There's a fable of Grimm's about a man without a shadow a man deprived of his shadow. As a punishment for something or other. I never could understand just how this was a punishment. Yet a woman must probably feel uncomfortable without a shadow."

"Yes, but women followed by a shadow usually come to a bad end," said Anna's friend.

"Bite your tongue!" said Princess Miaghkaia suddenly. "Karenina is a splendid woman. I don't like her husband but her I like very much."

"Why don't you like her husband? He's such a remarkable man," said the ambassador's wife. "My husband says there are few statesmen like him in Europe."

## Anna Karenina

"And my husband tells me just the same, but I don't believe it," said Princess Miaghkaia. "If our husbands didn't talk to us, we should see the facts as they are. Alexei Alexandrovich, to my thinking, is simply a fool. I say it in a whisper.... But doesn't it really make everything clear? Before, when I was told to consider him clever, I kept looking for his ability, and thought myself a fool for not seeing it; but directly I said, he's a fool, though only in a whisper, everything became clear isn't that so?"

"How spiteful you are today!"

"Not a bit. I'd no other way out of it. One of us two had to be the fool. And, as you know, one could never say that of oneself."

"No one is satisfied with his fortune, and everyone is satisfied with his wit," the diplomatist repeated the French saying.

"That's it that's just it," Princess Miaghkaia turned to him promptly. "But the point is that I won't abandon Anna to your mercies. She's such a dear, so charming. How can she help it if they're all in love with her, and follow her about like shadows?"

"Oh, I had no idea of censuring her," Anna's friend said in self-defense.

"If we have no shadows following us, it does not prove that we've any right to blame her."

And, having duly disposed of Anna's friend, the Princess Miaghkaia got up, and, together with the ambassador's wife, joined the group at the table, where the general conversation had to do with the king of Prussia.

"What were you gossiping so maliciously about?" asked Betsy.

"About the Karenins. The Princess gave us a character sketch of Alexei Alexandrovich," said the ambassador's wife with a smile, as she sat down at the table.

"Pity we didn't hear it!" said Princess Betsy, glancing toward the door. "Ah, here you are at last!" she said, turning with a smile to Vronsky who was entering.

Vronsky was not merely acquainted with all the persons whom he was meeting here; he saw them all every day; and so he came in with the quiet manner with which one enters a room full of people whom one had left only a short while ago.

"Where do I come from?" he repeated the question of the ambassador's wife. "Well, there's no help for it I must confess. From the opera bouffe. I do believe I've seen it a hundred times, and always with fresh enjoyment. It's exquisite! I know it's disgraceful, but I go to sleep at the opera, yet I sit out the opera bouffe to the last minute, and enjoy it. This evening..."

He mentioned a French actress, and was about to tell something about her; but the ambassador's wife, with playful trepidation, cut him short.

"Please, don't tell us about that horror."

"Very well, I won't especially as everyone knows those horrors."

"And we should all go to see them if it were accepted as the correct thing, like the opera," chimed in Princess Miaghkaia.

VII.

Steps were heard at the door, and Princess Betsy, knowing it was Madame Karenina, glanced at Vronsky. He was looking toward the door, and his face wore a strange new expression. Joyfully, intently, and at the same time timidly, he gazed at the approaching figure, and slowly he rose to his feet. Anna walked into the drawing room. Holding herself extremely erect, as always, looking straight before her, and moving with her swift, resolute and light step, that distinguished her walk from that of other society women, she crossed the few paces that separated her from her hostess, shook hands with her, smiled, and with the same smile looked around at Vronsky. Vronsky bowed low and pushed a chair up for her.

She acknowledged this only by a slight nod, flushed, and frowned. But immediately, while rapidly greeting her acquaintances, and shaking the hands proffered to her, she addressed Princess Betsy:

"I have been at Countess Lidia's, and meant to have come here earlier, but I stayed on. Sir John was there. A most interesting man."

"Oh, that's this missionary?"

"Yes; he told us about life in India, most interestingly."

The conversation, interrupted by her coming in, flickered up again like the light of a lamp being blown out.

"Sir John! Yes, Sir John. I've seen him. He speaks well. Vlassieva is altogether in love with him."

"And is it true that the younger Vlassieva is to marry Topov?"

"Yes they say it's quite settled."

"I wonder at the parents! They say it's a marriage of passion."

"Of passion? What antediluvian notions you have! Whoever talks of passion nowadays?" said the ambassador's wife.

"What would you do? This silly old fashion is still far from dead," said Vronsky.

"So much the worse for those who keep up the fashion. The only happy marriages I know are marriages of prudence."

"Yes, but then, how often the happiness of these prudent marriages is scattered like dust, precisely because that passion to which recognition has been denied appears on the scene," said Vronsky.

"But by marriages of prudence we mean those in which both parties have sown their wild oats already. That's like scarlatina one has to go through with it and get it over with."

"In that case we must learn how to vaccinate for love, like small-pox."

"I was in love in my young days with a church clerk," said the Princess Miaghkaia. "I don't know that it did me any good."

"No; I think all jokes aside that to know love, one must first make a fault, and then mend it," said Princess



Betsy.

"Even after marriage?" said the ambassador's wife playfully.

"It's never too late to mend," the diplomatist repeated the English proverb.

"Just so," Betsy agreed; "one must make a mistake and rectify it. What do you think about it?" She turned to Anna, who, with a barely perceptible resolute smile on her lips, was listening to the conversation.

"I think" said Anna, playing with the glove she had taken off, "I think... if there are as many minds as there are heads, then surely there must be as many kinds of love as there are hearts."

Vronsky was gazing at Anna, and with a heart sinking was waiting for what she would say. He sighed as after a danger escaped when she had uttered these words.

Anna suddenly turned to him.

"Oh, I have had a letter from Moscow. They write me that Kitty Shcherbatskaia's very ill."

"Really?" said Vronsky, knitting his brows.

Anna looked sternly at him.

"That doesn't interest you?"

"On the contrary, it does very much. What is it, exactly, that they write you, if may know?" he asked.

Anna got up and went to Betsy.

"Give me a cup of tea," she said, pausing behind her chair.

While Betsy was pouring out the tea, Vronsky walked up to Anna.

"What is it they write you?" he repeated.

"I often think men have no understanding of what is dishonorable, though they're forever talking of it," said Anna, without answering him. "I've wanted to tell you something for a long while," she added, and, moving a few steps away, she sat down at a corner table which held albums.

"I don't quite understand the significance of your words," he said, handing her the cup.

She glanced towards the sofa beside her, and he instantly sat down.

"Yes, I've wanted to tell you," she said, without looking at him. "Your action was wrong wrong, very wrong."

"Do you suppose I don't know that I've acted wrongly? But who was the cause of my doing so?"

"Why do you say that to me?" she said looking at him sternly.

"You know why," he answered, boldly and joyously, meeting her glance and without dropping his eyes.

## Anna Karenina

It was not he, but she, who became confused.

"That merely proves you have no heart," she said. But her eyes said that she knew he had a heart, and that was why she was afraid of him.

"What you spoke of just now was a mistake, and not love."

"Remember that I have forbidden you to utter that word, that detestable word," said Anna, with a shudder. But at once she felt that by that very word "forbidden" she had shown that she acknowledged certain rights over him, and by that very fact was encouraging him to speak of love. "I have long meant to tell you this," she went on, looking resolutely into his eyes, and all aflame from the burning flush on her cheeks. "I've come here purposely this evening, knowing I should meet you. I have come to tell you that this must end. I have never blushed before anyone, and you force me to feel guilty of something."

He looked at her and was struck by a new spiritual beauty in her face.

"What do you wish of me?" he said, simply and gravely.

"I want you to go to Moscow and ask for Kitty's forgiveness," she said.

"That is not your wish," he said.

He saw she was saying what she was forcing herself to say, not what she wanted to say.

"If you love me, as you say," she whispered, "you will do this, so that I may be at peace."

His face grew radiant.

"Don't you know that you're all my life to me? But I know no peace, and I can't give it to you; all of myself, and love yes. I can't think of you and myself apart. You and I are one to me. And I see no possibility before us of peace either for me or for you. I see a possibility of despair, of wretchedness.... Or else I see a possibility of happiness and what a happiness!... Can it be impossible?" he added, his lips barely moving yet she heard.

She strained every effort of her mind to say what ought to be said. But instead of that she let her eyes rest on him, full of love, and made no answer.

"It's come!" he thought in ecstasy. "When I was beginning to despair, and it seemed there would be no end it's come! She loves me! She owns it!"

"Then do this for me: never say such things to me, and let us be friends," she said in words; but her eyes spoke quite differently.

"Friends we shall never be that you know yourself. Whether we shall be the happiest or the most wretched of people that lies within your power."

She would have said something, but he interrupted her.

"For I ask but one thing: I ask for the right to hope, to suffer even as I am doing now. But if even that cannot be, command me to disappear, and I disappear. You shall not see me if my presence is painful to you."

"I don't want to drive you away."

## Anna Karenina

"Only don't change anything leave everything as it is," said he, in a shaky voice. "Here's your husband."

At that instant Alexei Alexandrovich did in fact walk into the room with his calm, ungainly gait.

Glancing at his wife and Vronsky, he went up to the lady of the house, and, sitting down for a cup of tea, began talking in his unhasty, always audible voice, in his habitual tone of banter, as if he were teasing someone.

"Your Rambouillet is in full conclave," he said looking round at all the party; "the graces and the muses."

But Princess Betsy could not endure that tone of his sneering, as she called it, using the English word, and like a clever hostess she at once brought him around to a serious conversation on the subject of universal conscription. Alexei Alexandrovich was immediately carried away by the subject, and began seriously defending the new imperial decree before Princess Betsy, who had attacked it.

Vronsky and Anna still sat at the little table.

"This is getting indecorous," whispered one lady, with an expressive glance at Madame Karenina, her husband and Vronsky.

"What did I tell you?" said Anna's friend.

But it was not only these ladies who watched them almost everyone in the room, even the Princess Miaghkaia and Betsy herself, looked several times in the direction of the two who had withdrawn from the general circle, as though they found it a hindrance. Alexei Alexandrovich was the only person who did not once look in their direction, and was not diverted from the interesting discussion he had entered upon.

Noticing the disagreeable impression that was being made on everyone, Princess Betsy slipped someone else into her place to listen to Alexei Alexandrovich, and walked over to Anna.

"I'm always amazed at the clearness and precision of your husband's language," she said. "The most transcendent ideas seem to be within my grasp when he's speaking."

"Oh, yes!" said Anna, radiant with a smile of happiness, and not understanding a word of what Betsy had said. She crossed over to the big table and took part in the general conversation.

Alexei Alexandrovich, after staying half an hour, walked up to his wife and suggested that they go home together. But she answered, without looking at him, that she was staying to supper. Alexei Alexandrovich bowed himself out.

The fat old Tatar, Madame Karenina's coachman, in a glistening leather coat, was with difficulty bridling the left of her pair of grays, chilled with the cold and rearing at the entrance. A footman stood by the carriage door he had opened. The hall porter stood holding open the great door of the house. Anna Arkadyevna, with her quick little hand, was unfastening the lace of her sleeve, caught in the hook of her fur cloak, and with bent head was listening rapturously to the words Vronsky murmured as he saw her down to her carriage.

"You've said nothing, of course, and I ask nothing," he was saying; "but you know that friendship is not what I want: that there's only one happiness in life for me that word you dislike so... yes, love!..."

"Love..." she repeated slowly, in an inner voice, and suddenly, at the very instant she unhooked the lace, she added, "I don't like the word precisely because it means too much to me, far more than you can understand," and she glanced into his face. "Good-by."

She gave him her hand, and with her rapid, springy step she passed by the porter and vanished into the carriage.

Her glance, the touch of her hand, had seared him. He kissed the palm of his hand where she had touched it, and went home, happy in the realization that he had got nearer to the attainment of his aims that evening than during the two last months.

## VIII.

Alexei Alexandrovich had seen nothing striking or improper in the fact that his wife was sitting with Vronsky at a table apart, in eager conversation with him about something. But he noticed that to the rest of the party this appeared as something striking and improper, and for that reason it seemed to him, too, to be improper. He made up his mind that he must speak of it to his wife.

On reaching home Alexei Alexandrovich went to his study, as he usually did, seated himself in his low chair, opened a book on the Papacy at the place he had marked by inserting the paper knife, read till one o'clock, just as he usually did. But from time to time he would rub his high forehead and shake his head, as though to drive away something. At his usual time he got up and made his toilet for the night. Anna Arkadyevna had not yet come in. With a book under his arm he went upstairs. But this evening, instead of his usual thoughts and meditations upon official details, his thoughts were absorbed by his wife and something disagreeable connected with her. Contrary to his usual habit, he did not get into bed, but fell to walking up and down the rooms with his hands clasped behind his back. He could not go to bed, feeling that it was absolutely needful for him first to think thoroughly over the situation that had just arisen.

When Alexei Alexandrovich had made up his mind that he must have a talk with his wife, it had seemed a very easy and simple matter. But now, when he began to think over the question that had just presented itself, it seemed to him very complicated and difficult.

Alexei Alexandrovich was not jealous. Jealousy, according to his notions, was an insult to one's wife, and one ought to have confidence in one's wife. Why one ought to have that confidence—that is to say, a complete conviction that his young wife would always love him—he did not ask himself. But he had never experienced such a lack of confidence, because he had confidence in her, and told himself that he ought to have it. Now, though his conviction that jealousy was a shameful feeling, and that one ought to feel confidence, had not broken down, he still felt that he was standing face to face with something illogical and fatuous, and did not know what ought to be done. Alexei Alexandrovich was standing face to face with life, with the possibility of his wife's loving someone other than himself, and this seemed to him very fatuous and incomprehensible, because it was of the very stuff of life. All his life Alexei Alexandrovich had lived and worked in official spheres, having to do merely with the reflections of life. And every time he had stumbled against life itself he had shrunk away from it. Now he experienced a feeling akin to that of a man who, while calmly crossing a precipice by a bridge, should suddenly discover that the bridge is broken, and that there is a chasm below. That chasm was life itself—the bridge, that artificial life in which Alexei Alexandrovich had lived. For the first time the question presented itself to him of the possibility of his wife's loving someone else, and he was horrified at it.

He did not undress, but walked up and down with his regular tread over the resounding parquet of the dining room, where one lamp was burning; over the carpet of the dark drawing room, in which the light was reflected merely on the big new portrait of himself hanging over the sofa; and across her boudoir, where two candles burned, lighting up the portraits of her parents and feminine friends, and the pretty knickknacks of her writing table, every one of which he knew so well. He walked across her boudoir to the bedroom door and turned back again.

At each turn in his walk, especially on the parquet of the well-lit dining room, he halted and said to himself,

"Yes, this I must decide and put a stop to; I must express my view of it and my decision." And he turned back again. "But just what shall I express? And what decision?" he would say to himself in the drawing room and found no answer. "But, after all," he asked himself before turning into the boudoir, "what has occurred? Nothing. She was talking a long while with him. But what of that? Surely women in society can talk to whom they please. And then, jealousy means debasing both her and myself," he soliloquized as he entered her boudoir; but this dictum, which had always had such weight with him before, had now no weight and no meaning whatsoever. And from the bedroom door he turned back again; but as he entered the dark drawing room some inner voice told him that it was not so, and that if others had noticed, it meant that there was something. And he said to himself again in the dining room: "Yes, I must decide and put a stop to it, and express my views...." And again at the turn in the drawing room he asked himself: "Decide how?" And again he asked inwardly: "What has occurred?" And answered: "Nothing," and recollected that jealousy was a feeling insulting to his wife; but again in the drawing room he was convinced that something had happened. His thoughts, like his body, were describing a complete circle, without alighting upon anything new. He noticed this, rubbed his forehead, and sat down in her boudoir.

There, looking at her table, with the malachite blotting case lying at the top, and an unfinished letter, his thoughts suddenly changed. He began to think of her, of what her thoughts and emotions must be. For the first time he pictured vividly to himself her personal life, her ideas, her desires, and the thought that she could and must have a separate life of her own seemed to him so appalling that he made haste to drive it away. It was the chasm which he was afraid to peep into. To put himself in thought and feeling in another person's place was a spiritual action foreign to Alexei Alexandrovich. He looked on this spiritual action as a harmful and dangerous abuse of the fancy.

"And the worst of it all," thought he, "is that just now, at the very moment when my great work is approaching completion" (he was thinking of the project he was bringing forward at the time), "when I stand in need of all my mental peace and all my energies just now this stupid worry has to come falling about my ears. But what's to be done? I'm not one of those men who submit to uneasiness and worry without having the force of character to face them."

"I must think this over, come to a decision, and put it out of my mind," he said aloud.

"The question of her feelings, of what has passed and may be passing in her soul that's not my affair; that's the affair of her conscience, and falls under the head of religion," he said to himself, feeling consolation in the sense that he had found to which division of regulating principles this new circumstance could be properly referred.

"And so," Alexei Alexandrovich said to himself, "questions as to her feelings, and so on, are questions for her conscience, with which I can have nothing to do. My duty is clearly defined. As the head of the family, I am a person bound in duty to guide her, and, consequently, in part the person responsible; I am bound to point out the danger I perceive, to warn her, even to use my authority. I ought to speak plainly to her."

And everything that he would say tonight to his wife took clear shape in Alexei Alexandrovich's head. Thinking over what he would say, he somewhat regretted that he should have to use his time and mental powers for domestic consumption, with so little to show for it, but, in spite of that, the form and consistency of the speech before him shaped itself as clearly and distinctly in his head as a ministerial report. "I must speak on, and express fully, the following points: first, an explanation of the value to be attached to public opinion and to decorum; secondly, an explanation of the religious significance of marriage; thirdly, if need be, a reference to the calamity possibly ensuing to our son; fourthly, a reference to the unhappiness likely to result to herself." And, interlacing his fingers, the palms downward, Alexei Alexandrovich stretched his hands, and the joints of the fingers cracked.

This gesture, this bad habit the joining of his hands cracking his fingers, always soothed him, and gave precision to his thoughts, so needful to him now. There was the sound of a carriage driving up to the front door. Alexei Alexandrovich halted in the middle of the room.

## Anna Karenina

A woman's step was heard mounting the stairs. Alexei Alexandrovich, ready for his speech, stood squeezing his crossed fingers, waiting for their crack to come again. One joint cracked.

Already, from the sound of light steps on the stairs, he was aware that she was close, and though he was satisfied with his speech, he felt frightened because of the explanation confronting him.

### IX.

Anna came in with her head bent, playing with the tassels of her hood. Her face was glowing with a vivid glow; but this glow was not one of joyousness it recalled the fearful glow of a conflagration in the midst of a dark night. On seeing her husband, Anna raised her head and smiled, as though she had just waked up.

"You're not in bed? What a miracle!" she said throwing off her hood and, without stopping, she went on into the dressing room. "It's late, Alexei Alexandrovich," she said, from behind the door.

"Anna, I must have a talk with you."

"With me?" she said, wonderingly. She came out from the door, and looked at him. "Why, what is it? What about?" she asked, sitting down. "Well, let's talk, if it's so necessary. But it would be better to go to sleep."

Anna was saying whatever came to her tongue, and marveled, hearing herself, at her own capacity for lying. How simple and natural were her words, and how likely that she was simply sleepy. She felt herself clad in an impenetrable armor of falsehood. She felt that some unseen force had come to her aid and was supporting her.

"Anna, I must warn you," he began.

"Warn me? she said. "Of what?"

She looked at him so simply, so brightly, that anyone who did not know her as her husband knew her could not have noticed anything unnatural, either in the sound or the sense of her words. But to him, knowing her, knowing that whenever he went to bed five minutes later than usual, she noticed it, and asked him the reason to him, knowing that every joy, every pleasure and pain that she felt she communicated to him at once to him it meant a great deal to see now that she did not care to notice his state of mind, that she did not care to say a word about herself. He saw that the inmost recesses of her soul, that had always hitherto lain open before him, were now closed against him. More than that, he saw from her tone that she was not even perturbed at that, but seemed to be saying straightforwardly to him: "Yes, it is closed now, which is as it should be, and will be so in future." Now he experienced a feeling such as a man might have who, returning home, finds his own house locked up. "But perhaps the key may yet be found," thought Alexei Alexandrovich.

"I want to warn you," he said in a low voice, "that through thoughtlessness and lack of caution you may cause yourself to be talked about in society. Your too animated conversation this evening with Count Vronsky" (he enunciated the name firmly and with quiet intervals) "attracted attention."

He talked and looked at her laughing eyes, which frightened him now with their impenetrable look, and, as he talked, he felt all the uselessness and futility of his words.

"You're always like that," she answered as though completely misapprehending him, and of all he had said only taking in the last phrase. "One time you don't like my being dull, and another time you don't like my being lively. I wasn't dull. Does that offend you?"

## Anna Karenina

Alexei Alexandrovich shivered, and bent his hands to make the joints crack.

"Oh, please, don't do that I dislike it so," she said.

"Anna, is this you?" said Alexei Alexandrovich quietly, making an effort over himself, and restraining the motion of his hands.

"But what is it all about?" she said, with such genuine and droll wonder. "What do you want of me?"

Alexei Alexandrovich paused, and rubbed his forehead and his eyes. He saw that instead of doing as he had intended that is to say, warning his wife against a mistake in the eyes of the world he had unconsciously become agitated over what was the affair of her conscience, and was struggling against some imaginary barrier.

"This is what I meant to say to you," he went on coldly and composedly, "and I beg you to hear me to the end. I consider jealousy, as you know, a humiliating and degrading feeling, and I shall never allow myself to be guided by it; but there are certain rules of decency which cannot be disregarded with impunity. This evening it was not I who observed it but, judging by the impression made on the company, everyone observed that your conduct and deportment were not altogether what one would desire."

"I positively don't understand," said Anna, shrugging her shoulders. "He doesn't care," she thought. "But other people noticed it and that's what upsets him." "You're not well, Alexei Alexandrovich," she added, and, getting up, was about to pass through the door; but he moved forward as though he would stop her.

His face was gloomy and forbidding, as Anna had never seen it before. She stopped, and bending her head back and to one side, began taking out her hairpins with her quick-darting hand.

"Well, I'm listening what does follow?" she said, calmly and ironically; "and, indeed, I am listening even with interest, for I should like to understand what it is all about."

She spoke, and marveled at the confident, calm and natural tone in which she spoke, and at the choice of the words she used.

"To enter into all the details of your feelings I have no right, and, besides, I regard that as useless and even harmful," began Alexei Alexandrovich. "Rummaging in our souls, we often bring up something that might have otherwise lain there unnoticed. Your feelings are an affair of your own conscience; but I am in duty bound to you, to myself and to God, to point out to you your duties. Our life has been joined, not by man, but by God. That union can only be severed by a crime, and a crime of that nature brings its own chastisement."

"I don't understand a word. And, oh dear! how sleepy I am, unluckily," she said, rapidly passing her hand through her hair, feeling for the remaining hairpins.

"Anna, for God's sake don't speak like that!" he said gently. "Perhaps I am mistaken, but believe me, that which I am saying I say as much for myself as for you. I am your husband, and I love you."

For an instant her face fell, and the mocking gleam in her eyes died away; but the phrase "I love" threw her into revolt again. She thought: "Love? Can he love? If he hadn't heard there was such a thing as love, he would never have used the word. He doesn't even know what love is."

"Alexei Alexandrovich, I really do not understand," she said. "Define what it is you consider..."

## Anna Karenina

"Pardon, let me say all I have to say. I love you. But I am not speaking of myself; the most important persons in this matter are our son and yourself. It may very well be, I repeat, that my words seem to you utterly unnecessary and out of place; it may be that they are called forth by my mistaken impression. In that case, I beg you to forgive me. But if you are conscious yourself of even the smallest foundation for them, then I beg you to think a little, and if your heart prompts you, to speak out to me..."

Alexei Alexandrovich was unconsciously saying something utterly unlike what he had prepared.

"I have nothing to say. And besides she said suddenly, with difficulty repressing a smile, "it's really time to be in bed."

Alexei Alexandrovich sighed, and, without saying more, went into the bedroom.

When she came into the bedroom, he was already in bed. His lips were sternly compressed, and his eyes looked away from her. Anna got into her bed, and lay expecting every minute that he would begin to speak to her again. She both feared his speaking and wished for it. But he was silent. She waited for a long while without moving, and forgot about him. She thought of that other; she pictured him, and felt how her heart was flooded with emotion and guilty delight at the thought of him. Suddenly she heard an even, tranquil snore. For the first instant Alexei Alexandrovich seemed, as it were, appalled at his own snoring, and ceased; but after a pause of one or two breaths, the snore sounded again, with a new tranquil rhythm.

"It's late, it's late," she whispered with a smile. A long while she lay, without moving, and with open eyes, whose brilliance she almost fancied she could herself see in the darkness.

### X.

From that time a new life began for Alexei Alexandrovich and for his wife. Nothing special happened. Anna went out into society, as she had always done, was particularly often at Princess Betsy's, and met Vronsky everywhere. Alexei Alexandrovich saw this, but was powerless to do anything. All his efforts to draw her into open discussion she confronted with a barrier which he could not penetrate, made up of a sort of amused perplexity. Outwardly everything was the same, but their inner relations were completely changed. Alexei Alexandrovich, a man of great power in the world of politics, felt himself helpless in this matter. Like an ox with head bent submissively, he waited the fall of the poleax which he felt was lifted over him. Every time he began to think about it, he felt that he must try once more; that by kindness, tenderness and persuasion there was still hope of saving her, of bringing her back to herself, and every day he was on the verge of talking to her. But every time he began he felt that the spirit of evil and deceit, which had taken possession of her, had possession of him too, and he talked to her in a tone quite unlike that which he had meant to use. Involuntarily he talked to her in his habitual tone of bantering at anyone who should say what he was saying. And in that tone it was impossible to say to her what the occasion demanded.

### XI.

That which to Vronsky had been for almost a whole year the one absorbing desire of his life, replacing all his old desires; that which to Anna had been an impossible, terrible, and, for that very reason, a more entrancing dream of happiness that desire had been fulfilled. He stood before her, pale, his lower jaw quivering, and besought her to be calm, without himself knowing how or why.

"Anna! Anna!" he said with a quivering voice, "Anna, for God's sake!..."



But the louder he spoke, the lower she cast down her once proud and gay, but now shame-stricken head, and she bowed down and sank from the sofa where she was sitting down on the floor, at his feet; she would have fallen on the carpet if he had not held her.

"My God!" Forgive me!" she said, sobbing, pressing his hands to her bosom.

She felt so sinful, so guilty, that nothing was left her but to humiliate herself and beg forgiveness, and as now there was no one in her life but him, to him, too, she addressed her prayer for forgiveness. Looking at him, she had a physical sense of her humiliation, and she could say nothing more. And he felt as a murderer must feel when he beholds the body he has robbed of life. That body, robbed by him of life, was their love, the first stage of their love. There was something awful and revolting in the memory of what had been bought at this fearful price of shame. Shame at her spiritual nakedness crushed her and infected him. But in spite of all the murderer's horror before the body of his victim, he must hack it to pieces, hide the body, must use what the murderer had gained by his murder.

And as the murderer, with fury, and, as it were, with passion, falls on the body, and drags it, and hacks at it so he covered her face and shoulders with kisses. She held his hand, and did not stir. Yes, these kisses that is what has been bought by this shame. Yes, and this one hand, which will always be mine the hand of my accomplice. She lifted up that hand and kissed it. He sank on his knees and tried to see her face; but she hid it, and said nothing. At last, as though making an effort over herself, she got up and pushed him away. Her face was still as beautiful, but it was only the more pitiful for that.

"All is over," she said; "I have nothing but you. Remember that."

"I can never forget what is my whole life. For one instant of this happiness..."

"Happiness!" she said with horror and loathing and her horror unconsciously infected him. "For God's sake, not a word, not a word more."

She rose quickly and moved away from him.

"Not a word more," she repeated, and with a look of chill despair, incomprehensible to him, she parted from him. She felt that at that moment she could not put into words the sense of shame, of rapture, and of horror at this stepping into a new life, and she did not want to speak of it, to vulgarize this feeling by inappropriate words. But later too, and the next day, and the day after, she still found no words in which she could express the complexity of those feelings; indeed, she could not even find thoughts in which she could clearly think out all that was in her soul.

She said to herself. "No, just now I can't think of it later on, when I am calmer." But this calm for thoughts never came; every time the thought rose of what she had done and what would happen to her, and what she ought to do, a horror came over her and she drove those thoughts away.

"Later, later," she said, "when I am calmer."

But in her dreams, when she had no control over her thoughts, her position presented itself to her in all its hideous nakedness. One dream haunted her almost every night. She dreamed that both were husbands at once, that both were lavishing caresses on her. Alexei Alexandrovich was weeping, kissing her hands, and saying, "How happy we are now!" And Alexei Vronsky was there too, and he, too, was her husband. And she was marveling that it had once seemed impossible to her, was explaining to them, laughing, that this was ever so much simpler, and that now both of them were happy and contented. But this dream weighed on her like a nightmare, and she would awake from it in terror.

## XII.

In the early days, after his return from Moscow, whenever Levin shuddered and grew red, remembering the disgrace of his rejection, he would say to himself: "This was just how I used to shudder and blush, thinking everything utterly lost, when I was flunked in physics and did not get promoted; and this is also how I thought myself utterly ruined after I had mismanaged that affair of my sister's with which I had been entrusted. And yet, now that the years have passed, I recall it and wonder that it could distress me so much. It will be the same thing with this trouble as well. Time will go by, and I shall not mind this either."

But three months had passed and he had not left off minding about it; and it was as painful for him to think of it now as it had been during those first days. He could not be at peace because, after dreaming so long of family life, and feeling himself so ripe for it, he was still not married, and was farther than ever from marriage. He was painfully conscious himself, as were all about him, that at his years it is not good that man should be alone. He remembered how before starting for Moscow he had once said to his cowherd Nicolai, a simplehearted peasant, to whom he liked to talk: "Well, Nicolai! I mean to get married," and how Nicolai had promptly answered, as of a matter on which there could be no possible doubt: "And high time too, Konstantin Dmitrich." But marriage had now become farther off than ever. The place was taken, and whenever he tried to imagine any of the girls he knew in that place, he felt that it was utterly impossible. Moreover, the recollection of the rejection and the part he had played in the affair tortured him with shame. However often he told himself that he was in no wise to blame in it, that recollection, like other similarly humiliating recollections, made him wince and blush. There had been in his past, as in every man's, actions, recognized by him as bad, for which his conscience ought to have tormented him; but the recollection of these evil actions was far from causing him as much suffering as these trivial but humiliating recollections. These wounds never healed. And with these recollections was now ranged his rejection and the sorry plight in which he must have appeared to others that evening. Yet time and labor were doing their work. Bitter recollections were more and more being covered up by the incidents inconspicuous ones, but important of his country life. Every week he thought less often of Kitty. He was impatiently looking forward to the news that she was married, or just going to be married, hoping that such news would, like having a tooth out, completely cure him.

Meanwhile spring came on, beautiful and kindly, without the delays and treacheries incident to spring one of those rare springs in which plants, beasts and man rejoice alike. This lovely spring roused Levin still more, and strengthened him in his resolution of renouncing all his past and building up his lonely life firmly and independently. Though many of the plans with which he had returned to the country had not been carried out, his most important resolution that of purity of life had nevertheless been kept by him. He was free from that shame which had usually harassed him after a fall; and he could look everyone straight in the face. In February he had received a letter from Marya Nikolaevna telling him that his brother Nikolai's health was getting worse, but that he would not take advice, and in consequence of this letter Levin went to Moscow to his brother's, and succeeded in persuading him to see a doctor and to go to a watering place abroad. He succeeded so well in persuading his brother, and in lending him money for the journey without irritating him, that he was satisfied with himself on that score. In addition to his farming, which called for special attention in spring, in addition to reading Levin had begun that winter a work on agriculture, the plan of which turned on taking into account the character of the laborer on the land as one of the unalterable data of the question, like the climate and the soil, and consequently deducing all the principles of scientific culture, not simply from the data of soil and climate, but from the data of soil, climate and a certain unalterable character of the laborer. Thus, in spite of his solitude, or in consequence of his solitude, life was exceedingly full, save that, on rare occasions, he suffered from an unsatisfied desire to communicate his stray ideas to someone besides Agathya Mikhailovna. With her indeed he not infrequently fell into discussions upon physics, the theory of agriculture, and, especially, philosophy: philosophy was Agathya Mikhailovna's favorite subject.

Spring was slow in unfolding. For the last few weeks of Lent it had been steadily fine and frosty weather. In the

daytime there was a thaw in the sun, but at night there were as many as seven degrees of frost. The snow was so packed and frozen that loads could be carried along anywhere, regardless of roads. Easter came in snow. Then all of a sudden, on Easter Monday, a warm wind sprang up, storm clouds swooped down, and for three days and three nights the warm, tempestuous rain fell in torrents. On Thursday the wind dropped, and a thick gray fog brooded over the land, as though screening the mysteries of the transformations that were being wrought in nature. Behind the fog there was the flowing of water, the cracking and floating of ice, the swift rush of turbid, foaming torrents; and on the following Monday, in the evening, the fog parted, the storm clouds split up into little curling crests of cloud, the sky cleared, and the real spring had come. In the morning the sun arose brilliant and quickly wore away the thin layer of ice that covered the water, and all the warm air was quivering with the steam that rose up from the quickened earth. The old grass looked greener, and the young grass thrust up its tiny blades; the buds of the guelder-rose and of the currant, and the sticky birch buds were swollen with sap, and an exploring bee was humming about the golden blossoms that studded the willow. Larks trilled unseen above the velvety green fields and the ice-covered stubble land; pewits wailed over the lowlands and marshes, flooded by the pools; cranes and wild geese flew high across the sky uttering their spring calls. The cattle, bald in patches where the new hair had not grown yet, lowed in the pastures; bowlegged lambs frisked round their bleating dams, who were shedding their fleece; nimble-footed children ran along the drying paths, covered with the prints of bare feet; there was a merry chatter of peasant women over their linen at the pond, and the ring of axes in the yard, where the peasants were repairing plows and harrows. The real spring had come.

### XIII.

Levin put on his big boots, and, for the first time, a cloth overcoat instead of his fur cloak, and went out to look after his farm, stepping over streams of water that flashed in the sunshine and dazzled his eyes, and stepping one minute on ice and the next into sticky mud.

Spring is the time of plans and projects. And, as he came out into the farmyard, Levin, like a tree in spring that knows not what form will be taken by the young shoots and twigs imprisoned in its swelling buds, hardly knew what undertakings he was going to launch upon now in the farmwork that was so dear to him. But he felt that he was full of the most splendid plans and projects. First of all he went to the cattle. The cows had been let out into their paddock, and their smooth sides were already glossy with their new, sleek, spring coats; they basked in the sunshine and lowed to go to the meadow. Levin gazed admiringly at the cows he knew so intimately to the minutest detail of their condition, and gave orders for them to be driven out into the meadow, and the calves to be let into the paddock. The herdsman ran gaily to get ready for the meadow. The cowherd girls, picking up their petticoats, ran splashing through the mud with bare legs, still white, not yet brown from the sun, waving brushwood in their hands, chasing the calves that frolicked in the mirth of spring.

After admiring the increase of that year, which were particularly fine the early calves were the size of a peasant's cow, and Pava's daughter, at three months old, was as big as a yearling Levin gave orders for a trough to be brought out and hay to be put in the racks. But it appeared that, since the paddock had not been used during the winter, the racks made in the autumn were broken. He sent for the carpenter, who, according to his orders, ought to have been at work at the threshing machine. But it appeared that the carpenter was repairing the harrows, which ought to have been repaired before Lent. This was very annoying to Levin. It was annoying to come upon that everlasting slovenliness in the farmwork against which he had been striving with all his might for so many years. The racks, as he ascertained, being not wanted in winter, had been carried to the cart horses' stable, and there broken, as they were of light construction, only meant for foddering calves. Moreover, it was apparent also that the harrows and all the agricultural implements, which he had directed to be looked over and repaired in the winter, for which very purpose he had hired three carpenters, had not been put into repair, and the harrows were being repaired when they ought to have been harrowing the field. Levin sent for his bailiff, but immediately went off himself to look for him. The bailiff, beaming all over, like everything that day, in a sheepskin bordered with astrakhan, came out of the barn, twisting a bit of straw in his hands.

"Why isn't the carpenter at the threshing machine?"

"Oh, I meant to tell you yesterday, the harrows want repairing. Here it's time they got to work in the fields."

"But what were they doing in the winter, then?"

"But what did you want the carpenter for?"

"Where are the racks for the calves' paddock?"

"I ordered them to be got ready. What would you have with those people!" said the bailiff, with a wave of his hand.

"It's not those people but this bailiff!" said Levin, getting angry. "Why, what do I keep you for?" he cried. But, bethinking himself that this would not help matters, he stopped short in the middle of a sentence, and merely sighed. "Well, what do you say? Can sowing begin?" he asked, after a pause.

"Behind Turkino, tomorrow or next day, they might begin."

"And the clover?"

"I've sent Vassilii and Mishka; they're sowing it. Only I don't know if they'll manage to get through; it's so slushy."

"How many dessiatinas?"

"Six."

"Why not sow all?" cried Levin.

That they were only sowing the clover on six dessiatinas, not in all the twenty, was still more annoying to him. Clover, as he knew, both from books and from his own experience, never did well except when it was sown as early as possible, almost in the snow. And yet Levin could never get this done.

"There's no one to send. What would you do with such people? Three haven't turned up. And there's Semion..."

"Well, you should have taken some men from the chaffcutter."

"And so I have, as it is."

"Where are the peasants, then?"

"Five are making compote" (which meant compost), "and four are shifting the oats for fear of being touched, Konstantin Dmitrich."

Levin knew very well that "touching" meant that his English seed oats were already spoiled. Again they had not done as he had ordered.

"Why, but I told you during Lent to put in pipes," he cried.

"Don't be put out; we shall get it all done in time."

## Anna Karenina

Levin made an angry gesture, and went into the granary to glance at the oats, and then to the stable. The oats were not yet spoiled. But the laborers were carrying the oats in spades when they might simply let them slide down into the lower granary; and arranging for this to be done, and taking two laborers from there for sowing clover, Levin got over the vexation his bailiff had caused him. Indeed, it was such a lovely day that one could not be angry.

"Ignat!" he called to the coachman, who, with his sleeves tucked up, was washing the carriage wheels, "saddle..."

"Which, sir?"

"Well, let it be Kolpik."

"Yes, sir."

While they were saddling his horse, Levin again called the bailiff, who was hanging about in sight, to make it up with him, and began talking to him about the spring operations before them, and his plans for the farming.

The wagons were to begin carting manure earlier, so as to get all done before the early mowing. And the plowing of the outlying land was to go on without a break, so as to let it lie black fallow and furrowed. And the moving to be all done by hired labor, not on half-profits.

The bailiff listened attentively, and obviously made an effort to approve of his employer's projects. But still he had that look Levin knew so well that always irritated him, a look of hopelessness and despondency. That look said: "That's all very well, but as God wills."

Nothing mortified Levin so much as that tone. But it was the tone common to all the bailiffs he had ever had. They had all taken that attitude to his plans, and so now he was not angered by it, but mortified, and felt all the more roused to struggle against this apparently elemental force continually ranged against him, for which he could find no other name than "as God wills."

"If we can manage it, Konstantin Dmitrich," said the bailiff.

"Why shouldn't you manage it?"

"We positively must have fifteen laborers more. And they don't turn up. There were some here today asking seventy roubles for the summer."

Levin was silent. Again he was brought face to face with that opposing force. He knew that however much they tried, they could not hire more than forty thirty-seven perhaps or thirty-eight laborers for a reasonable sum; some forty had been taken on, and there were no more. But still he could not help struggling against it.

"Send to Sury, to Chefirovka, if they don't come. We must look for them."

"I'll send, to be sure," said Vassilii Fiodorovich despondently. "But then there are the horses they're not good for much."

"We'll get some more. I know, of course," Levin added laughing, "you always want to do with as little and as poor a quality as possible; but this year I'm not going to let you have things your own way. I'll see to everything myself."

"Why, I don't think you take much rest as it is. It cheers us up to work under the master's eye...."

"So they're sowing clover behind the Birch Dale? I'll go and have a look at them," he said, mounting the little bay cob, Kolpik, who was led up by the coachman.

"You can't get across the stream, Konstantin Dmitrich," the coachman shouted.

"All right, I'll go by the forest."

And Levin rode through the slush of the farmyard to the gate and out into the open country, his good little horse, after his long inactivity, ambling easily, snorting over the pools, and asking, as it were, for guidance.

If Levin had felt happy before in the cattle pens and farmyard, he felt happier yet in the open country. Swaying rhythmically with the ambling paces of his good little cob, drinking in the warm yet fresh scent of the snow and the air, as he rode through his forest over the crumbling, wasted snow, still left in parts, and covered with dissolving tracks, he rejoiced over every tree, with the moss reviving on its bark and the buds swelling on its shoots. When he came out of the forest, in the immense plain before him, his winter fields stretched in an unbroken carpet of green, without one bare place or swamp, only spotted here and there in the hollows with patches of melting snow. He was not put out of temper even by the sight of the peasants' horse and colt trampling down his young grass (he told a peasant he met to drive them out), nor by the sarcastic and stupid reply of the peasant Ipat, whom he met on the way, and asked, "Well, Ipat, shall we soon be sowing?" "We must get the plowing done first, Konstantin Dmitrich," answered Ipat. The farther he rode, the happier he became, and plans for the land rose to his mind each better than the last: to plant all his fields with hedges along the southern borders, so that the snow should not lie under them; to divide them up into six fields of tillage and three for pasture and hay; to build a cattle yard at the further end of the estate, and to dig a pond and to construct movable pens for the cattle as a means of manuring the land. And then three hundred dessiatinas of wheat, one hundred of potatoes, and one hundred and fifty of clover, and not a dessiatina exhausted.

Absorbed in such dreams, carefully keeping his horse by the hedges so as not to trample his young winter fields, he rode up to the laborers who had been sent to sow clover. A telega with the seed in it was standing, not at the edge, but in the middle of the tillage, and the winter corn had been torn up by the wheels and trampled by the horse. Both the laborers were sitting in the hedge, probably smoking a pipe, turn and turn about. The earth in the telega, with which the seed was mixed, was not crushed to powder, but crusted together or adhering in clods. Seeing the master, the laborer, Vassilii, went toward the telega, while Mishka set to work sowing. This was not as it should be, but with the laborers Levin seldom lost his temper. When Vassilii came up, Levin told him to lead the horse to the hedge.

"Never mind, sir, it'll spring up again," responded Vassilii.

"Please don't argue," said Levin, "but do as you're told."

"Yes, sir," answered Vassilii, and he took the horse's head. "What a sowing, Konstantin Dmitrich!" he said ingratiatingly. "First-rate. Only it's a work to get about! A fellow drags thirty pounds of earth at every step."

"Why is it you have earth that's not sifted?" said Levin.

"Well, we crumble it up," answered Vassilii, taking up some seed and rolling the earth in his palms.

Vassilii was not to blame for their having fired up his telega with unsifted earth, but still it was annoying.

Levin had already, more than once, tried a way he knew for stifling his anger, and turning all that seemed dark right again, and he tried that way now. He watched how Mishka strode along, swinging the huge clods of earth that clung to each foot; and, getting off his horse, he took the sieve from Vassilii and started sowing himself.

"Where did you stop?"

Vassilii pointed to the mark with his foot, and Levin went forward as best he could, scattering the seed on the land. Walking was as difficult as on a bog, and by the time Levin had ended the row he was in a great heat, and, stopping, gave the sieve over to Vassilii.

"Well master, when summer's here, mind you don't scold me for this row," said Vassilii.

"Eh?" said Levin cheerily, already feeling the effect of his method.

"Why, you'll see in the summertime. It'll look different. Look you where I sowed last spring. How I did work at it I do my best, Konstantin Dmitrich, d'ye see, as I would for my own father. I don't like botchwork myself, nor would I let another man do it. What's good for the master is good for us too. It does one's heart good," said Vassilii, pointing, "to look over yonder."

"It's a lovely spring, Vassilii."

"Why, it's a spring such as even the old men don't remember the like of. I was up home; my father there has sown wheat too, three osminas of it. He was saying you couldn't tell it from rye."

"Have you been sowing wheat long?"

"Why, sir, it was you taught us, the year before last. You gave me two measures. We sold about one chetvert and sowed three osminas."

"Well, mind you crumble up the clods," said Levin, going toward his horse, "and keep an eye on Mishka. And if there's a good crop you shall have half a rouble for every dessiatina."

"Thank you, kindly. We are very well content, sir, with your treatment, as it is."

Levin got on his horse and rode toward the field where last year's clover was, and the one which was plowed ready for the spring corn.

The crop of clover coming up in the stubble was magnificent. It had revived already, and stood up vividly green through the broken stalks of last year's wheat. The horse sank in up to the pasterns, and he drew each hoof with a sucking sound out of the half-thawed ground. Over the plowland the riding was utterly impossible; the horse could only keep a foothold where there was ice, and in the thawing furrows he sank in deep at each step. The plowland was in splendid condition; in a couple of days it would be fit for harrowing and sowing. Everything was capital, everything was cheering. Levin rode back across the streams, hoping the water would have gone down. And he did in fact get across, and startled two ducks. "There must be woodcock here too," he thought, and just as he reached the turning homewards he met the forest keeper, who confirmed his theory about the woodcock.

Levin went home at a trot, so as to have time to eat his dinner and get his gun ready for the evening.

#### XIV.

As he rode up to the house in the happiest frame of mind, Levin heard the bell ring at the side of the principal entrance of the house.

"Yes, that's someone from the railway station," he thought, "just the time to be here from the Moscow train...."

## Anna Karenina

Who could it be? What if it's brother Nikolai? He did say: 'I may go to the waters, or I may come down to you.'" He felt dismayed and vexed for the first minute that his brother Nikolai's presence should come to his happy mood of spring. But he felt ashamed of the feeling, and at once he opened, as it were, the arms of his soul, and with a softened feeling of joy and expectation, he now hoped with all his heart that it was his brother. He spurred on his horse, and as he rode out from behind the acacias, he saw a hired troika from the railway station, and a gentleman in a fur coat. It was not his brother. "Oh, if it were only some pleasant person one could talk to a little!" he thought.

"Ah," cried Levin joyfully, flinging up both his hands. "Here's a delightful visitor! Ah, how glad I am to see you!" he shouted, recognizing Stepan Arkadyevich.

"I shall find out for certain whether she's married, or when she's going to be married," he thought.

And on that delicious spring day he felt that the thought of her did not hurt him at all.

"Didn't expect me, did you?" said Stepan Arkadyevich, getting out of the sleigh, splashed with mud on the bridge of his nose, on his cheek, and on his eyebrows, but radiant with health and good spirits. "I've come primarily to see you," he said, embracing and kissing him, "secondly, to have some stand shooting, and thirdly, to sell the forest at Ergushovo."

"Delightful! What a spring we're having! How ever did you get along in a sleigh?"

"In a wagon it would have been worse still, Konstantin Dmitrievich," answered the driver, who knew him.

"Well, I'm very, very glad to see you," said Levin, with a genuine smile of childlike delight.

Levin led his friend to the guest room, where Stepan Arkadyevich's things were also carried a bag, a gun in a case, a satchel for cigars. Leaving him there to wash and change his clothes, Levin went off to the countinghouse to speak about the plowing and the clover. Agathya Mikhailovna, always very anxious for the credit of the house, met him in the hall with inquiries about dinner.

"Do just as you like, only let it be as soon as possible," he said, and went to the bailiff.

When he came back, Stepan Arkadyevich, washed and combed, came out of his room with a beaming smile, and they went upstairs together.

"Well, I am glad I managed to get away to you! Now I shall understand what the mysterious business is that you are always absorbed in here. No, really, I envy you. What a house, how splendid it all is! So bright, so cheerful!" said Stepan Arkadyevich, forgetting that it was not always spring and fine weather as on this day. "And your old nurse is simply charming! A pretty maid in an apron might be even more agreeable, perhaps; but for your severe monastic style it does very well."

Stepan Arkadyevich imparted to him many interesting bits of news; especially interesting to Levin was the news that his brother, Sergei Ivanovich, was intending to spend the summer with him in the country.

Not one word did Stepan Arkadyevich say in reference to Kitty and the Shcherbatskys; he merely gave him greetings from his wife. Levin was grateful to him for his delicacy, and rejoiced exceedingly over his guest. As always happened with him during his solitude, a mass of ideas and feelings had been accumulating within him, which he could not communicate to those about him. And now he poured out upon Stepan Arkadyevich his poetic joy over the spring, and his failures and plans for the land, and his thoughts and criticisms on the books he had been reading, and the idea of his own book, the basis of which really was, though he was unaware of it himself, a



criticism of all the old books on agriculture. Stepan Arkadyevich, always charming, understanding everything at the slightest reference, was particularly charming on this visit, and Levin noticed in him a special tenderness, as it were, and a new tone of respect that flattered him.

The efforts of Agathya Mikhailovna and the cook to have the dinner particularly good, only ended in the two famished friends attacking the preliminary course, eating a great deal of bread and butter, salt goose and salted mushrooms, and in Levin's finally ordering the soup to be served without the accompaniment of little patties, with which the cook had particularly meant to impress their visitor. But though Stepan Arkadyevich was accustomed to very different dinners, he thought everything excellent: the herb brandy, and the bread, and the butter, and, above all, the salt goose and the mushrooms, and the nettle soup, and the chicken in white sauce, and the white Crimean wine everything was excellent and marvelous.

"Splendid, splendid!" he said, lighting a fat cigar after the roast. "I feel as if, coming to you, I had landed on a peaceful shore after the noise and jolting of a steamer. And so you maintain that the laborer himself is an element to be studied, and to regulate the choice of methods in agriculture. Of course, I'm an ignorant outsider; but I should fancy theory and its application will have its influence on the laborer too."

"Yes, but wait a bit. I'm not talking of political economy I'm talking of the science of agriculture. It ought to be like the natural sciences, and to observe given phenomena and the laborer in his economic, ethnographical..."

At that instant Agathya Mikhailovna came in with jam.

"Oh, Agathya Fiodorovna," said Stepan Arkadyevich, kissing the tips of his plump fingers, "what salt goose, what herb brandy!... What do you think, isn't it time to start, Kostia?" he added.

Levin looked out of the window at the sun sinking behind the bare treetops of the forest.

"Yes, it's time," he said. "Kouzma, get ready the wide droshky," and he ran downstairs.

Stepan Arkadyevich, going down, carefully took the canvas cover off his varnished gun case with his own hands, and opening it, began to get ready his expensive, new-fashioned gun. Kouzma, who already scented a big tip, never left Stepan Arkadyevich's side, and put on him both his stockings and boots, a task which Stepan Arkadyevich readily left to him.

"Kostia, give orders that if the merchant Riabinin comes I told him to come today he's to be shown in and asked to wait for me..."

"Why, do you mean to say you're selling the forest to Riabinin?"

"Yes. Do you know him?"

"To be sure I do. I have had to do business with him, 'positively and definitively.'"

Stepan Arkadyevich laughed. 'Positively and definitively' were the merchant's favorite words.

"Yes, it's wonderfully funny the way he talks. She knows where her master's going!" he added, patting Laska, who hung about Levin, whining and licking his hands, his boots, and his gun.

The droshky was already at the steps when they went out.

"I told them to bring the droshky round, though it's not far to go; or would you rather walk?"

## Anna Karenina

"No, we'd better drive," said Stepan Arkadyevich, getting into the droshky. He sat down, tucked the tiger-striped rug round him, and lighted a cigar. "How is it you don't smoke? A cigar is a sort of thing, not exactly a pleasure, but the crown and outward sign of pleasure. Come, this is life! How splendid it is! This is how I should like to live!"

"Why, who prevents you?" said Levin, smiling.

"No, you're a lucky man! You've got everything you like. You like horses and you have them; dogs you have them; shooting you have it; farming you have it."

"Perhaps because I rejoice in what I have, and don't fret for what I haven't," said Levin, thinking of Kitty.

Stepan Arkadyevich comprehended, looked at him, but said nothing.

Levin was grateful to Oblonsky, for noticing, with his never-failing tact, that he dreaded conversation about the Shcherbatskys, and so saying nothing about them. But now Levin was longing to find out about that which was tormenting him so, yet had not the courage to begin.

"Come, tell me how things are going with you," said Levin, bethinking himself that it was not good of him to think only of himself.

Stepan Arkadyevich's eyes sparkled merrily.

"You don't admit, I know, that one can be fond of new rolls when one has had one's ration of bread to your mind it's a crime; but I don't count life as life without love," he said, taking Levin's question in his own way. "What am I to do? I'm made that way. And really, one does so little harm to anyone, and gives oneself so much pleasure..."

"What! is there something new, then?" queried Levin.

"Yes, my boy, there is! There, do you see, you know the type of Ossian's women... women, such as one sees in dreams... Well, these women are sometimes to be met with in reality.... And these women are terrible. Woman, don't you know, is such a subject that no matter how much you study it, it's always perfectly new."

"Well, then, it would be better not to study it."

"No. Some mathematician has said that enjoyment lies in the search for truth, not in the finding of it."

Levin listened in silence, and, in spite of all the efforts he made, he could not in the least enter into the feelings of his friend and understand his sentiments and the charm of studying such women.

## XV.

The place fixed on for the stand shooting was not far above a stream in a little aspen copse. On reaching the copse, Levin got out of the droshky and led Oblonsky to a corner of a mossy, swampy glade, already quite free from snow. He went back himself to a double birch tree on the other side, and, leaning his gun on the fork of a dead lower branch, he took off his full overcoat, fastened his belt again, and worked his arms to see if they were free.

Gray old Laska, who had followed them, sat down warily opposite him and pricked up her ears. The sun was

## Anna Karenina

setting behind a thick forest, and in the glow of sunset the birch trees, dotted about in the aspen copse, stood out clearly with their hanging twigs, and their buds swollen almost to bursting.

From the thickest parts of the copse, where the snow still remained, came the faint sound of narrow winding streamlets of water running away. Tiny birds twittered, and now and then fluttered from tree to tree.

In the pauses of complete stillness there came the rustle of last year's leaves, stirred by the thawing of the earth and the growth of grasses.

"Imagine! One can hear and see the grass growing!" Levin said to himself, noticing a wet, slate-colored aspen leaf moving beside a blade of young grass. He stood, listened, and gazed sometimes down at the wet mossy ground, sometimes at Laska listening all alert, sometimes at the sea of bare treetops that stretched on the slope below him, sometimes at the darkening sky, covered with white streaks of cloud. A hawk flew high over a forest far away with a slow sweep of its wings; another flew with exactly the same motion in the same direction and vanished. The birds twittered more and more loudly and busily in the thicket. An owl hooted not far off, and Laska, starting, stepped cautiously a few steps forward, and, putting her head on one side, began to listen intently. Beyond the stream was heard the cuckoo. Twice she uttered her usual call, and then became hoarse, hurried, and broke down.

"Imagine! The cuckoo already!" said Stepan Arkadyevich, coming out from behind a bush.

"Yes, I hear it," answered Levin, reluctantly breaking the stillness with his voice, which sounded disagreeable to himself. "Now it's coming!"

Stepan Arkadyevich's figure again went behind the bush, and Levin saw nothing but the bright flash of a match, followed by the red glow and blue smoke of a cigarette.

Tchk! Tchk! came the snapping sound of Stepan Arkadyevich cocking his gun.

"What's that cry?" asked Oblonsky, drawing Levin's attention to a prolonged cry, as though a colt were whinnying in a high voice, in play.

"Oh, don't you know it? That's a buck hare. But enough talking! Listen here it comes!" almost shrieked Levin, cocking his gun.

They heard a shrill whistle in the distance, and in the exact time, so well known to the sportsman, two seconds later another, a third, and, after the third whistle, the hoarse, guttural cry could be heard.

Levin looked about him to right and to left, and there, just facing him against the dusky blue sky above the confused mass of tender shoots of the aspens, he saw the flying bird. It was flying straight toward him; the guttural cry, like the even tearing of some strong stuff, sounded close to his ear; the long beak and neck of the bird could be seen, and at the very instant when Levin was taking aim, behind the bush where Oblonsky stood, there was a flash of red lightning: the bird dropped like an arrow, and darted upward again. Again came the red flash and the sound of a blow, and, fluttering its wings as though trying to keep up in the air, the bird paused, stopped still an instant, and fell with a heavy splash to the slushy ground.

"Can I possibly have missed it?" shouted Stepan Arkadyevich, who could not see for the smoke.

"Here it is!" said Levin, pointing to Laska, who, with one ear pricked up, wagging the tip of her shaggy tail, was coming slowly back, as though she would prolong the pleasure, and seemingly smiling, was bringing the dead bird to her master. "Well, I'm glad you were successful," said Levin, who, at the same time, had a sense of envy

that he had not succeeded in shooting the woodcock.

"It was a bad shot from the right barrel," responded Stepan Arkadyevich, loading his gun. "Sh... Here it comes!"

The shrill whistles rapidly following one another were heard again. Two woodcocks, playing and chasing one another, and only whistling, not crying, flew straight at the very heads of the sportsmen. There was the report of four shots, and like swallows, the woodcocks turned swift somersaults in the air and vanished from sight.

The stand shooting was capital. Stepan Arkadyevich shot two more birds, and Levin two, of which one was not found. It began to get dark. Venus, bright and silvery, shone with her soft light low down in the west, behind the birch trees, and high up in the east twinkled the red fires of somber Arcturus. Over his head Levin made out the stars of the Great Bear and lost them again. The woodcocks had ceased flying; but Levin resolved to stay a little longer, till Venus, which he saw below a branch of birch, should be above it, and the stars of the Great Bear should be perfectly plain. Venus had risen above the branch, and the chariot of the Great Bear with its shaft was now all plainly visible against the dark blue sky, yet still he waited.

"Isn't it time to go home?" said Stepan Arkadyevich.

It was quite still now in the copse, and not a bird was stirring.

"Let's stay a little while," answered Levin.

"As you like."

They were standing now about fifteen paces from one another.

"Stiva!" said Levin unexpectedly; "how is it you don't tell me whether your sister-in-law's married yet, or when she's going to be?"

Levin felt so resolute and serene that no answer he fancied could affect him. But he had never dreamed of the answer which Stepan Arkadyevich made.

"She's never thought of being married, and isn't thinking of it; but she's very ill, and the doctors have sent her abroad. They're positively afraid she may not live."

"What!" cried Levin. "Very ill? What is wrong with her? How is she?..."

While they were speaking, Laska, with ears pricked up, was looking upward at the sky, and, reproachfully, at them.

"What a time they have chosen to gab," she was thinking. "There it comes.... Here it is yes, sure enough. They'll miss it..." thought Laska.

But at that very instant both suddenly heard a shrill whistle which, as it were, smote on their ears, and both suddenly seized their guns and two flashes gleamed, and two bangs sounded at the very same instant. The woodcock flying high above instantly folded its wings and fell into a thicket, bending down the delicate shoots.

"Splendid! Together!" cried Levin, and he ran with Laska into the thicket to look for the woodcock.

"Oh, yes, what was it that was unpleasant?" he recollected. "Yes, Kitty's ill... Well, it can't be helped; I'm very sorry," he thought.

"She's found it! Isn't she a clever girl?" he said, taking the warm bird from Laska's mouth and packing it into the almost full gamebag. "I've got it, Stiva!" he shouted.

## XVI.

On the way home Levin asked all the details of Kitty's illness and of the Shcherbatskys' plans, and though he would have been ashamed to admit it, he was pleased at what he heard. He was pleased that there was still hope, and still more pleased that she, who had made him suffer, should be suffering so much. But when Stepan Arkadyevich began to speak of the causes of Kitty's illness, and mentioned Vronsky's name, Levin cut him short.

"I have no right whatever to know family matters, and, to tell the truth, no interest in them either."

Stepan Arkadyevich smiled a barely perceptible smile, catching the instantaneous change he knew so well in Levin's face, which had become as gloomy as it had been bright a minute before.

"Have you quite settled about the forest with Riabinin?" asked Levin.

"Yes, it's all settled. The price is magnificent thirty-eight thousand. Eight straightaway, and the rest in six years. I've been bothering about it for ever so long. No one would give more."

"Then you've as good as given away your forest for nothing," said Levin gloomily.

"How do you mean for nothing?" said Stepan Arkadyevich with a good-humored smile, knowing that nothing would be right in Levin's eyes now.

"Because the forest is worth at least five hundred roubles the dessiatina," answered Levin.

"Oh, these farmers!" said Stepan Arkadyevich playfully. "Your tone of contempt for us poor townsfolk!... But when it comes to business, we are better at it than anyone. I assure you I have reckoned it all out," he said, "and the forest is fetching a very good price so much so that I'm afraid of this fellow's crying off, in fact. You know it's not 'timber forest,'" said Stepan Arkadyevich, hoping by this distinction to convince Levin completely of the unfairness of his doubts, "but for the most part firewood. And it won't run to more than thirty sazhenes of wood per dessiatina, and he's paying me at the rate of two hundred roubles the dessiatina."

Levin smiled contemptuously. "I know," he thought, "that fashion not only in him, but in all city people, who, after being twice in ten years in the country, pick up two or three phrases and use them in season and out of season, firmly persuaded that they know all about it. 'Timber, run to thirty sazhenes the dessiatina.' He says those words without understanding them himself."

"I wouldn't attempt to teach you what you write about in your office," said he, "and if need arose, I should come to you to ask about it. But you're so positive you know all the lore of the forest. It's difficult. Have you counted the trees?"

"How count the trees?" said Stepan Arkadyevich, laughing, still trying to draw his friend out of his ill temper. "Count sands of seas, and rays of stars, though could some higher power..."

"Oh, well, the higher power of Riabinin can. Not a single merchant ever buys a forest without counting the trees, unless they get it given them for nothing, as you're doing now. I know your forest. I go there every year shooting, and your forest's worth five hundred a dessiatina paid down, while he's giving you two hundred by installments. So that in fact you're making him a present of thirty thousand."

"Come, don't let your imagination run away with you," said Stepan Arkadyevich piteously. "Why was it none would give it, then?"

"Why, because he has an understanding with the merchants; he's bought them off. I've had to do with all of them; I know them. They're not merchants, you know; they're speculators. He wouldn't look at a bargain that gave him ten, fifteen per cent profit, but holds back to buy a rouble's worth for twenty kopecks."

"Well, enough of it! You're out of temper."

"Not in the least," said Levin gloomily, as they drove up to the house.

At the steps there stood a trap tightly covered with iron and leather, with a sleek horse tightly harnessed with broad collar straps. In the trap sat the chubby, tightly belted overseer who served Riabinin as coachman. Riabinin himself was already in the house, and met the friends in the hall. Riabinin was a tall, thinnish, middle-aged man, with mustache and a projecting clean-shaven chin, and prominent muddy-looking eyes. He was dressed in a long-skirted blue coat, with buttons below the waist at the back, and wore high boots wrinkled over the ankles and straight over the calf, with big galoshes drawn over them. He mopped his face with his handkerchief, and, wrapping himself in his coat, which sat extremely well as it was, he greeted them with a smile, holding out his hand to Stepan Arkadyevich, as though he wanted to catch something.

"So, here you are," said Stepan Arkadyevich, giving him his hand. "That's capital."

"I did not venture to disregard Your Excellency's commands, though the road was extremely bad. I positively covered the whole way at a walk, but I am here on time. Konstantin Dmitrich, my respects"; he turned to Levin, trying to seize his hand too. But Levin, scowling, made as though he did not notice his hand, and took out the woodcocks. "Your honors have been diverting yourselves with the chase? What kind of bird may it be, pray?" added Riabinin, looking contemptuously at the woodcocks: "a great delicacy, I suppose." And he shook his head disapprovingly, as though he had grave doubts whether this game were worth the candle.

"Would you like to go into my study?" Levin said in French to Stepan Arkadyevich, scowling morosely. "Go into my study; you can talk there."

"Quite so, wherever you please," said Riabinin with supercilious dignity, as though wishing to make it felt that others might be in difficulties as to how to behave, but that he could never be in any difficulty about anything.

On entering the study Riabinin looked about, as it was a habit of his, as though seeking a holy image, but, when he had found it, he did not cross himself. He scanned the bookcases and bookshelves, and with the same dubious air with which he had regarded the woodcocks, he smiled superciliously and shook his head disapprovingly, as though by no means willing to allow that this game, either, were worth the candle.

"Well, have you brought the money?" asked Oblonsky. "Sit down."

"Oh, don't trouble about the money. I've come to see you to talk it over."

"What is there to talk over? But do sit down."

"I don't mind if I do," said Riabinin, sitting down and leaning his elbows on the back of his armchair in a position of the intensest discomfort to himself. "You must knock it down a bit, Prince. It would be a sin otherwise. As for the money, it is ready definitively, to the last kopeck. As for money down, there'll be no hitch there."

## Anna Karenina

Levin, who had meanwhile been putting his gun away in the cupboard, was just going out of the door, but catching the merchant's words, he stopped.

"Why, you've got the forest for nothing as it is," he said. "He came to me too late, or I'd have fixed the price for him."

Riabinin got up, and in silence, with a smile, he looked up at Levin.

"Konstantin Dmitrievich is very close," he said with a smile, turning to Stepan Arkadyevich; "there's definitively no dealing with him. I was bargaining for some wheat of him, and a pretty price I offered too."

"Why should I give you what's mine for nothing? I didn't pick it up off the ground, nor did I steal it, either."

"Mercy on us! Nowadays there's positively no chance at all of stealing. With the definitively open courts, and everything done in style, nowadays there's no question of stealing. We are just talking things over like gentlemen. His Excellency's asking too much for the forest. I can't make both ends meet over it. I must ask for a little concession."

"But is the thing settled between you or isn't it? If it's settled, it's useless haggling; but if it isn't," said Levin, "I'll buy the forest."

The smile vanished at once from Riabinin's face. A hawklike, greedy, cruel expression was left upon it. With rapid, bony fingers he unbuttoned his coat, revealing a large shirt, bronze waistcoat buttons, and a watch chain, and quickly pulled out a fat old pocketbook.

"Here you are, the forest is mine," he said, crossing himself quickly, and holding out his hand. "Take the money; it's my forest. That's Riabinin's way of doing business; he doesn't haggle over every copper," he added, scowling and waving the pocketbook.

"I wouldn't be in a hurry if I were you," said Levin.

"Come, really," said Oblonsky in surprise, "I've given my word, you know."

Levin went out of the room, slamming the door. Riabinin looked toward the door and shook his head with a smile.

"It's all youthfulness definitively nothing but childishness. Why, I'm buying it, upon my honor, simply, believe me, for the glory of it, that Riabinin, and no one else, should have bought the copse of Oblonsky. And as to the profits, why, I must make what God gives. God's my witness. If you would kindly sign the title deed..."

Within an hour the merchant, carefully stroking his wrapper down, and hooking up his coat, with the agreement in his pocket, seated himself in his tightly covered trap, and drove homeward.

"Ugh, these gentlefolk!" he said to the overseer. "They are all made alike! they're a fine lot!"

"That's so," responded the overseer, handing him the reins and buttoning the leather apron. "But can I congratulate you on the purchase, Mikhail Ignatich?"

"Well, well..."

XVII.

Stepan Arkadyevich went upstairs with his pocket bulging with notes which the merchant had paid him for three months in advance. The business of the forest was over, the money in his pocket; their shooting had been excellent, and Stepan Arkadyevich was in the happiest frame of mind, and therefore felt especially anxious to dissipate the ill-humor that had come upon Levin. He wanted to finish the day at supper as pleasantly as it had been begun.

Levin certainly was out of humor, and, in spite of all his desire to be affectionate and cordial to his charming guest, he could not control his mood. The aftereffects of the intoxication of the news that Kitty was not married had gradually begun to work upon him.

Kitty was not married, and was ill, and ill from love for a man who had slighted her. This offense, as it were, rebounded upon him. Vronsky had slighted her, and she had slighted him, Levin. Consequently Vronsky had the right to despise Levin, and therefore he was his enemy. But all this Levin did not think of. He vaguely felt that there was something in it insulting to him, and he was not angry now at what had disturbed him, but he felt foul of everything that presented itself. The stupid sale of the forest, the fraud practised upon Oblonsky and concluded in his house, exasperated him.

"Well, finished?" he said, meeting Stepan Arkadyevich upstairs. "Would you like supper?"

"Well, I wouldn't say no to it. What an appetite I get in the country! Wonderful! Why didn't you offer Riabinin something?"

"Oh, damn him!"

"Still, how you do treat him!" said Oblonsky. "You didn't even shake hands with him. Why not shake hands with him?"

"Because I don't shake hands with a waiter, and a waiter's a hundred times better than he is."

"What a reactionist you are, really! What about the amalgamation of classes?" said Oblonsky.

"Anyone who likes it is welcome to it, but it sickens me."

"You're a downright reactionist, I see."

"Really. I have never considered what I am. I am Konstantin Levin, and nothing else."

"And Konstantin Levin very much out of temper," said Stepan Arkadyevich, smiling.

"Yes, I am out of temper, and do you know why? Because excuse me of your stupid sale...."

Stepan Arkadyevich frowned good-humoredly, like one who feels himself teased and attacked for no fault of his own.

"Come, enough about that!" he said. "When did anybody ever sell anything without being told immediately after the sale, 'It was worth much more'? But when one wants to sell, no one will give anything.... No, I see you've a grudge against that unlucky Riabinin."



"Maybe I have. And do you know why? You'll say again that I'm a reactionist, or some other terrible word; but all the same it does annoy and anger me to see on all sides the impoverishing of the nobility to which I belong, and, in spite of the amalgamation of classes, I'm glad to belong. And their impoverishment is not due to living in luxury that would be nothing; living in good style that's the proper thing for noblemen: it's only the nobles who know how to do it. Now, the peasants about us buy land, and I don't mind that. The gentleman does nothing, while the peasant works and supplants the idle man. That's as it should be. And I welcome the peasant. But I do mind seeing the process of impoverishment from a sort of I don't know what to call it innocence. Here a Polish lessee bought for half its value a magnificent estate from a lady who lives in Nice. And there a merchant leases land, worth ten roubles in rent the dessiatina, for one rouble. Here, for no kind of reason, you've made that cheat a present of thirty thousand roubles."

"Well, what should I have done? Counted every tree?"

"Of course, they must be counted. You didn't count them, but Riabinin did. Riabinin's children will have means of livelihood and education, while yours, like as not, won't!"

"Well, you must excuse me, but there's something mean in this counting. We have our business and they have theirs, and they must make their profit. Anyway, the thing's done, and there's an end of it. And here come some fried eggs, my favorite dish. And Agathya Mikhailovna will give us that marvelous herb brandy...."

Stepan Arkadyevich sat down at the table and began jollyng Agathya Mikhailovna, assuring her that it was long since he had tasted such a dinner and such a supper.

"Well, you praise it, at any rate," said Agathya Mikhailovna, "but Konstantin Dmitrievich, no matter what you give him even a crust of bread will just eat it and walk away."

Though Levin tried to control himself, he was gloomy and silent. He wanted to put one question to Stepan Arkadyevich, but he could not bring himself to the point, and could not find the words or the moment in which to put it. Stepan Arkadyevich had gone down to his room, undressed, again washed, and, attired in a nightshirt with goffered frills, had got into bed, but Levin still lingered in his room, talking of various trifling matters, and not daring to ask what he wanted to know.

"How wonderfully they make the soap," he said gazing at a piece of soap he was unwrapping, which Agathya Mikhailovna had placed in readiness for the guest, but a brand which Oblonsky did not use. "Just look why, it's a work of art."

"Yes, everything's brought to such a pitch of perfection nowadays," said Stepan Arkadyevich, with a moist and blissful yawn. "The theater, for instance, and the entertainments... A-a-a!" he yawned. "The electric light everywhere... A-a-a!"

"Yes, the electric light," said Levin. "Yes. Oh, and where's Vronsky now?" he asked suddenly, laying down the soap.

"Vronsky?" said Stepan Arkadyevich, checking his yawn; "he's in Peterburg. He left soon after you did, and hasn't been once in Moscow since. And, do you know, Kostia, I'll tell you the truth," he went on, leaning his elbow on the table, and, with his hand, propping up his handsome ruddy face, in which his humid, good-natured, sleepy eyes shone like stars. "It's your own fault. You took fright at the sight of your rival. But, as I told you at the time, I couldn't say which had the better chance. Why didn't you fight it out? I told you at the time that..." He yawned inwardly, without opening his mouth.

## Anna Karenina

"Does he know, or doesn't he, that I did propose?" Levin wondered gazing at him. "Yes, there's something humbugging, something diplomatic in his face." And, feeling he was blushing, he looked Stepan Arkadyevich straight in the face without speaking.

"If there was anything on her side at that time, it was nothing but a superficial attraction," pursued Oblonsky. "His being such a perfect aristocrat, you know, and his future position in society, had an influence not with her, but with her mother."

Levin scowled. The humiliation of his rejection stung him to the heart, as though it were a fresh wound he had only just received. But he was at home, and the walls of home are a support.

"Wait, wait," he began, interrupting Oblonsky. "You talk of his being an aristocrat. But allow me to ask what it consists of, that aristocracy of Vronsky or of anybody else, beside which I can be looked down upon? You consider Vronsky an aristocrat, but I don't. A man whose father crawled up from nothing at all by intrigue, and whose mother God knows whom she wasn't mixed up with... No, excuse me, but I consider myself aristocratic, and people like me, who can point back in the past to three or four honorable generations of their family, of the highest degree of breeding (talent and intellect, of course, are another matter), and have never curried favor with anyone, never depended on anyone for anything, like my father and my grandfather. And I know many such. You think it mean of me to count the trees in my forest, while you make Riabinin a present of thirty thousand; but you get from the government your liferent, and I don't know what, while I shall not, and so I prize what's come to me from my ancestors, or has been won by hard work... We are aristocrats, and not those who can only exist by favor of the powerful ones of this earth, and who can be bought for twenty kopecks."

"Well, but whom are you attacking? I agree with you," said Stepan Arkadyevich, sincerely and genially; though he was aware that in the class of those who could be bought for twenty kopecks Levin was reckoning him as well. Levin's animation gave him genuine pleasure. "Whom are you attacking? A good deal of what you say is not true about Vronsky, of course, but I won't talk about that. I tell you straight out, if I were you, I should go back with me to Moscow, and..."

"No; I don't know whether you know it or not, but I don't care. And I tell you I did propose, and was rejected, and Katerina Alexandrovna is nothing now to me but a painful and humiliating reminiscence."

"Why? What nonsense!"

"But we won't talk about it. Please forgive me, if I've been nasty," said Levin. Now that he had opened his heart, he became as he had been in the morning. "You're not angry with me, Stiva? Please don't be angry," he said, and, smiling, he took his hand.

"Of course not; not a bit nor is there any reason to be. I'm glad we've spoken openly. And, do you know, stand shooting in the morning is usually good why not go? I might go, without sleeping, straight from shooting to the station."

"Capital."

## XVIII.

Although all Vronsky's inner life was absorbed in his passion, his external life unalterably and inevitably followed along the old accustomed lines of his social and regimental ties and interests. The interests of his regiment took an important place in Vronsky's life, both because he was fond of the regiment, and still more because the regiment was fond of him. They were not only fond of Vronsky in his regiment, they respected him too, and were proud of

## Anna Karenina

him; proud that this man, with his immense wealth, his brilliant education and abilities, and the path open before him to every kind of success, distinction and ambition, had disregarded all that, and of all the interests of life had the interests of his regiment and his comrades nearest to his heart. Vronsky was aware of his comrades' view of him, and in addition to his liking for that sort of life, he felt bound to keep up that reputation.

It need not be said that he did not speak of his love to any of his comrades, nor did he betray his secret even in the wildest drinking bouts (though indeed he was never so drunk as to lose all control of himself). And he closed the mouths of any of his thoughtless comrades who attempted to allude to his liaison. But, in spite of that, his love was known to all the town; everyone guessed with more or less certainty at his relations with Madame Karenina. The majority of the younger men envied him for just what was the most irksome factor in his love the exalted position of Karenin, and the consequent transparency to society, of their liaison.

The greater number of the young women, who envied Anna and had long been weary of having her called righteous, rejoiced at the fulfillment of their predictions, and were only waiting for a decisive turn in public opinion to fall upon her with all the weight of their scorn. They were already making ready their handfuls of mud to cast at her when the right moment arrived. The greater number of the middle-aged people and certain great personages were displeased at the prospect of the impending scandal in society.

Vronsky's mother, on hearing of his liaison, was at first pleased by it, because nothing to her mind gave such a finishing touch to a brilliant young man as a liaison in the highest society; she was pleased, too, that Madame Karenina, who had so taken her fancy, and had talked so much of her son, was, after all, just like all the other pretty and decent women according to the Countess Vronskaia's ideas. But she had heard of late that her son had refused a position offered him of great importance to his career, simply in order to remain in the regiment, where could be constantly seeing Madame Karenina; she heard that great personages were displeased with him on this account, and she changed her opinion. She was vexed, too, that from all she could learn of this liaison it was not that brilliant, graceful, worldly liaison which she would have welcomed, but a sort of Werther's desperate passion, so she was told, which might well lead him into follies. She had not seen him since his abrupt departure from Moscow, and she sent her elder son to bid him to come to her.

This elder brother, too, was displeased with his younger brother. He did not distinguish what sort of love his might be, big or little, passionate or passionless, pure or impure (he kept a ballet girl himself, though he was the father of a family, so he was rather indulgent), but he knew that this love displeased those whom it was necessary to please, and therefore he did not approve of his brother's conduct.

Besides the service and society, Vronsky had another great interest horses; he was passionately fond of horses.

That year races and a steeplechase had been arranged for the officers. Vronsky had put his name down, bought a thoroughbred English mare, and in spite of his love, he was looking forward to the races with intense, though reserved, excitement....

These two passions did not interfere with one another. On the contrary, he needed occupation and distraction quite apart from his love, so as to recruit and rest himself from the violent emotions that agitated him.

## XIX.

On the day of the races at Krasnoe Selo, Vronsky had come earlier than usual to eat beefsteak in the common messroom of the regiment. He had no need to be strict with himself, as his weight was exactly the required one; but still he had to avoid gaining flesh, and so he eschewed farinaceous and sweet dishes. He sat with his coat unbuttoned over a white waistcoat, resting both elbows on the table, and, while waiting for the steak he had ordered, was looking over a French novel that lay open on his plate. He was only looking at the book to avoid

## Anna Karenina

conversation with the officers coming in and out; he was thinking.

He was thinking of Anna's promise to see him today after the races. But he had not seen her for three days, and as her husband had just returned from abroad, he did not know whether she would be able to meet him today or not, and he did not know how to find out. He had had his last interview with her at his cousin Betsy's summer villa. He visited the summer villa of the Karenins as rarely as possible. Now he wanted to go there, and he pondered the question of how to do it.

"Of course I shall say Betsy has sent me to ask whether she's coming to the races. Of course, I'll go," he decided, lifting his head from the book. And as he vividly pictured the happiness of seeing her, his face lighted up.

"Send to my house, and tell them to have out the carriage and three horses as quickly as they can," he said to the servant, who handed him the steak on a hot silver dish, and moving the dish up toward him, he began eating.

From the adjoining billiard room came the sound of balls clicking, of talk and laughter. Two officers appeared at the entrance door: one, a young fellow with a weak, delicate face, who had lately joined the regiment from the Corps of Pages; the other, a plump, elderly officer, with a bracelet on his wrist, and little eyes, lost in fat.

Vronsky glanced at them, frowned, and looking down at his book as though he had not noticed them, he proceeded to eat and read at the same time.

"What? Fortifying yourself for your work?" said the plump officer, sitting down beside him.

"As you see," responded Vronsky, knitting his brows, wiping his mouth, and without looking at the officer.

"So you're not afraid of getting fat?" said the latter, turning a chair round for the young officer.

"What?" said Vronsky angrily, making a wry face of disgust and showing his heavy teeth.

"You're not afraid of getting fat?"

"Waiter, sherry!" said Vronsky, without replying, and moving the book to the other side of him, he went on reading.

The plump officer took up the list of wines and turned to the young officer.

"You choose what we're to drink," he said, handing him the card, and looking at him.

"Rhine wine, please," said the young officer, stealing a timid glance at Vronsky, and trying to pull his scarcely visible mustache. Seeing that Vronsky did not turn round, the young officer got up.

"Let's go into the billiard room," he said.

The plump officer rose submissively, and they moved toward the door.

At that moment there walked into the room the tan and well-built Captain Iashvin. Nodding with an air of lofty contempt to the two officers, he went up to Vronsky.

"Ah! Here he is!" he cried, bringing his big hand down heavily on his epaulet. Vronsky looked round angrily, but his face lighted up immediately with his characteristic expression of calm and firm friendliness.

"That's it, Aliosha," said the captain, in his loud baritone. "Have a bite and drink one tiny glass."

"Oh, I'm not very hungry."

"There go the inseparables," Iashvin dropped, glancing sarcastically at the two officers who were at that instant leaving the room. And he bent his long legs, swathed in tight riding breeches, and sat down in the chair, too low for him, so that his knees were cramped up in a sharp angle. "Why didn't you turn up at Theater at Krasnoe Selo yesterday? Numerova wasn't at all bad. Where were you?"

"I was late at the Tverskys'," said Vronsky.

"Ah!" responded Iashvin.

Iashvin, a gambler and a rake, a man not merely without any principles, but of immoral principles Iashvin was Vronsky's greatest friend in the regiment. Vronsky liked him both for his exceptional physical strength, which he showed for the most part by being able to drink like a fish and to do without sleep without being in the slightest degree affected by it; and for his great strength of character, which he showed in his relations with his comrades and superior officers, commanding both fear and respect, and also at cards, when he would play for tens of thousands and, however much he might have drunk, always with such skill and decision that he was reckoned the best player in the English Club. Vronsky respected and liked Iashvin particularly because he felt Iashvin liked him, not for his name and his money, but for himself. And of all men he was the only one with whom Vronsky would have liked to speak of his love. He felt that Iashvin, in spite of his apparent contempt for every sort of feeling, was the only man who could, so he fancied, comprehend the intense passion which now filled his whole life. Moreover, he felt certain that Iashvin, as it was, took no delight in gossip and scandal, and interpreted his feeling rightly that is to say, knew and believed that this passion was not a joke, not a pastime, but something more serious and important.

Vronsky had never spoken to him of his passion, but he was aware that he knew all about it, and that he put the right interpretation on it, and he was glad to see this in his eyes.

"Ah! yes," he said, to the announcement that Vronsky had been at the Tverskys'; and, his black eyes shining, he plucked at his left mustache, and began twisting it into his mouth a bad habit he had.

"Well, and what did you do yesterday? Win anything?" asked Vronsky.

"Eight thousand. But three don't count; the chap will hardly pay up."

"Oh, then you can afford to lose over me," said Vronsky, laughing. (Iashvin had betted heavily on Vronsky in the races.)

"No chance of my losing. Makhotin's the only one who's a dangerous entrant."

And the conversation passed to forecasts of the coming race, the only thing Vronsky could think of just now.

"Come along, I've finished," said Vronsky, and getting up he went to the door. Iashvin got up too, stretching his long legs and his long back.

"It's too early for me to dine, but I must have a drink. I'll come along directly. Hi, wine!" he shouted, in his rich voice, that was so famous at drill, and set the windows shaking. "No, I don't need it!" he shouted again, immediately after. "You're going home, so I'll go with you."

And he walked out with Vronsky.

## XX.

Vronsky was staying in a roomy, clean, Finnish hut, divided into two by a partition. Petritsky lived with him in camp too. Petritsky was asleep when Vronsky and Iashvin came into the hut.

"Get up, don't go on sleeping," said Iashvin, going behind the partition and giving Petritsky, who was lying with ruffled hair and with his nose in the pillow, a prod on the shoulder.

Petrisky jumped up suddenly onto his knees and looked around.

"Your brother's been here," he said to Vronsky. "He waked me up, the devil take him, and said he'd look in again." And pulling up the rug he flung himself back on the pillow. "Oh do quit that, Iashvin!" he said, getting furious with Iashvin, who was pulling the rug off him. "Quit that!" He turned over and opened his eyes. "You'd better tell me what to drink; I've such a nasty taste in my mouth that..."

"Vodka's better than anything," boomed Iashvin. "Tereshchenko! Vodka for your master and cucumbers," he shouted, obviously taking pleasure in the sound of his own voice.

"Vodka, do you think? Eh?" queried Petritsky, blinking and rubbing his eyes. "And you'll drink something? All right then, we'll have a drink together! Vronsky, have a drink?" said Petritsky, getting up and wrapping the tiger-striped bedcover round him. He went to the door of the partition wall, raised his hands, and hummed in French: "There was a king in Thu-u-le." Vronsky, will you have a drink?"

"Go along," said Vronsky, putting on the coat his valet handed him.

"Where are you off to?" asked Iashvin. "Oh, here is your troika," he added, seeing the carriage drive up.

"To the stables, and I've got to see Briansky, too, about the horses," said Vronsky.

Vronsky had as a fact promised to call at Briansky's, some ten verstas from Peterhof, and to bring him money owing for some horses; and he hoped to have time to get that in too. But his comrades were at once aware that that was not the only place he was going.

Petrisky, still humming, winked and made a pout with his lips, as though he would say: "Oh, yes, we know your Briansky!"

"Mind you're not late!" was Iashvin's only comment; and, to change the conversation: "How's my roan? Is he doing all right?" he inquired, looking out of the window at the shaft horse, which he had sold to Vronsky.

"Stop!" cried Petritsky to Vronsky, just as he was going out. "Your brother left a letter and a note for you. Wait a bit; where are they?"

Vronsky stopped.

"Well, where are they?"

"Where are they? That's just the question!" said Petritsky solemnly, sliding his forefinger upward along his nose.

"Come, tell me; this is silly!" said Vronsky smiling.

"I haven't lighted the fire. They must be here somewhere."

"Come, enough fooling! Where is the letter?"

"No, I've forgotten, really. Or was it a dream? Wait a bit, wait a bit! But what's the use of getting in a rage? If you'd drunk four bottles per man yesterday as I did, you'd forget where you were at. Wait a bit, I'll remember!"

Petritsky went behind the partition and lay down on his bed.

"Wait a bit! This was how I was lying, and this was how he was standing. Yes yes yes... Here it is!" and Petritsky pulled a letter out from under the mattress, where he had hidden it.

Vronsky took the letter and his brother's note. It was the letter he was expecting from his mother, reproaching him for not having been to see her and the note was from his brother to say that he must have a little talk with him. Vronsky knew that it was all about the same thing. "What business is it of theirs!" thought Vronsky, and crumpling up the letters he thrust them between the buttons of his coat so as to read them carefully on the road. In the porch of the hut he was met by two officers; one of his regiment and one of another.

Vronsky's quarters were always a meeting place for all the officers.

"Where are you off to?"

"I must go to Peterhof."

"Has the mare come from Tsarskoe?"

"Yes, but I've not seen her yet."

"They say Makhotin's Gladiator's lame."

"Nonsense! However, are you going to race in this mud?" said the other.

"Here are my saviors!" cried Petritsky, seeing them come in. Before him stood the batman with vodka and pickled cucumbers on a tray. "Here's Iashvin, ordering me to drink a pick-me-up."

"Well, you did make it hot for us yesterday," said one of those who had come in; "you didn't let us get a wink of sleep all night."

"Oh, didn't we make a pretty finish!" said Petritsky. "Volkov climbed onto the roof and began telling us how sad he was. I said: 'Let's have music, the funeral march!' He fairly dropped asleep on the roof over the funeral march."

"Drink it up; you positively must drink the vodka, and then Seltzer water, and a lot of lemon," said Iashvin, standing over Petritsky like a mother making a child take medicine, "and then a little champagne just a wee bottle."

"Come, there's some sense in that. Stop a bit, Vronsky. We'll all have a drink."

"No; good-bye, all of you. I'm not going to drink today."

"Why, are you gaining weight? All right, then we must have it alone. Give us the Seltzer water and lemon."

"Vronsky!" shouted someone when he was already outside.

"Well?"

"You'd better get your hair cut, it'll weigh you down especially at the bald place."

Vronsky was in fact beginning, prematurely, to get a little bald. He laughed gaily, showing his heavy teeth, and pulling his cap over the thin place, went out and got into his carriage.

"To the stables!" he said, and was just pulling out the letters to read them through, but thought better of it, and put off reading them so as not to distract his attention before looking at the mare. "Later on!..."

## XXI.

The temporary stable, a wooden booth, had been put up close to the racecourse, and there his mare was to have been taken the previous day. He had not yet seen her there. During the last few days he had not ridden her out for exercise himself, but had put her in the charge of the trainer, and so now he absolutely did not know in what condition his mare had arrived yesterday or was in today. He had scarcely got out of his carriage when his stableboy (groom), recognizing the carriage some way off, called the trainer. A dry-looking Englishman, in high boots and a short jacket, clean-shaven, except for a tuft below his chin, came to meet him walking with the uncouth gait of a jockey, turning his elbows out and swaying from side to side.

"Well, how's Frou-Frou?" Vronsky asked in English.

"All right, sir," the Englishman's voice responded somewhere far down in his throat. "Better not go in," he added, touching his hat. "I've put a muzzle on her, and the mare's fidgety. Better not go in, it'll excite the mare."

"No, I'm going in. I want to look at her."

"Come along, then," said the Englishman, frowning, and speaking with his mouth shut, and, with swinging elbows, he went on in front with his disjointed gait.

They went into the little yard in front of the shed. The stableboy on duty, spruce and smart in his holiday attire, met them with a broom in his hand, and followed them. In the shed there were five horses in their separate stalls, and Vronsky knew that his chief rival, Makhotin's Gladiator, a very tall chestnut horse, had been brought there, and must be standing among them. Even more than his mare, Vronsky longed to see Gladiator, whom he had never seen, but Vronsky knew that by the etiquette of the racecourse it was not merely impossible for him to see the horse, but improper even to ask questions about him. Just as he was passing along the passage, the boy opened the door into the second horsebox on the left, and Vronsky caught a glimpse of a big chestnut horse with white legs. He knew that this was Gladiator, but, with the feeling of a man turning away from the sight of another man's open letter, he turned round and went into Frou-Frou's stall.

"The stall belonging to Ma-k... Mak... I never can say the name is here," said the Englishman over his shoulder, pointing his dirty-nailed thumb toward Gladiator's stall.

"Makhotin? Yes, he's my most serious rival," said Vronsky.

"If you were riding him," said the Englishman, "I'd bet on you."



"Frou–Frou's more nervous, while the other is more powerful," said Vronsky, smiling at the compliment to his riding.

"In a steeplechase it all depends on riding and on pluck," said the Englishman.

Of pluck that is, energy and courage Vronsky did not merely feel that he had enough; what was of far more importance, he was firmly convinced that no one in the world could have more of this pluck than he had.

"Don't you think I want more sweating down?"

"Oh, no," answered the Englishman. "Please, don't speak loud. The mare's fidgety," he added, nodding toward the horse box, before which they were standing, and from which came the sound of restless stamping in the straw.

He opened the door, and Vronsky went into the horse box, dimly lighted by one little window. In the horse box stood a dark bay mare, with a muzzle on, shifting her feet on the fresh straw. Looking round him in the twilight of the horse box, Vronsky unconsciously took in once more in a comprehensive glance all the points of his favorite mare. Frou–Frou was an animal of medium size, not altogether free from reproach, from a breeder's point of view. She was small–boned all over; though her chest was extremely prominent in front, it was narrow. Her hindquarters were a little drooping, and in her forelegs, and still more in her hind legs, there was a noticeable curvature. The muscles of both hind legs and forelegs were not very thick; but across her shoulders the mare was exceptionally broad, a peculiarity specially striking now that she was lean from training. The bones of her legs below the knees looked no thicker than a finger from in front, but were extraordinarily thick seen from the side. She looked altogether, except across the shoulders, apparently pinched in at the sides and pressed out in depth. But she had in the highest degree the quality that makes all defects forgotten: that quality was blood, the blood that tells, as the English expression has it. The muscles stood up sharply under the network of sinews, covered with the delicate, mobile skin, soft as satin, and they were hard as bone. Her clean–cut head, with prominent, bright, spirited eyes, broadened out at the open nostrils, that showed the red blood in the cartilage within. About all her figure, and especially her head, there was a certain expression of energy, and, at the same time, of softness. She was one of those creatures which seem devoid of speech only because the mechanism of their mouths does not allow of it.

To Vronsky, at any rate, it seemed that she understood all he felt at that moment as he looked at her.

Directly Vronsky went toward her, she drew in a deep breath, and, turning back her prominent eye in the white looked bloodshot, she started at the approaching figures from the opposite side, shaking her muzzle, and shifting lightly from one leg to the other.

"There, you see how fidgety she is," said the Englishman.

"Whoa, darling! Whoa!" said Vronsky, going up to the mare and speaking soothingly to her.

But the nearer he came, the more excited she grew. Only when he stood by her head she was suddenly quieter, while the muscles quivered under her soft, delicate coat. Vronsky patted her strong neck, straightened over her sharp withers a stray lock of her mane that had fallen on the other side, and moved his face near her dilated nostrils, transparent as a bat's wing. She drew a loud breath and snorted out through her tense nostrils, started, pricked up her sharp ear, and put out her strong, black lip toward Vronsky, as though she would nip hold of his sleeve. But remembering the muzzle, she shook it and again began restlessly stamping her shapely legs one after the other.

"Calm down, darling, calm down!" he said, patting her again over her hindquarters; and, with a glad sense that his mare was in the best possible condition, he went out of the horse box.

## Anna Karenina

The mare's excitement had infected Vronsky. He felt that his heart was throbbing, and that he, too, like the mare, longed to move, to bite; it was both fearful and delicious.

"Well, I rely on you, then," he said to the Englishman, "half-past six on the ground."

"All right," said the Englishman. "Oh, where are you going, my lord?" he asked suddenly, using the title my lord, which he scarcely ever used.

Vronsky in amazement raised his head, and stared, as he knew how to stare, not into the Englishman's eyes, but at his forehead, astounded at the impertinence of his question. But realizing that in asking this the Englishman had been looking at him not as an employer, but as a jockey, he answered:

"I've got to go to Briansky's; I shall be home within an hour."

"How often I'm asked that question today!" he said to himself, and he blushed, a thing which rarely happened to him. The Englishman looked gravely at him; and, as though he, too, knew where Vronsky was going, he added:

"The great thing is to keep quiet before a race," said he; "don't get out of temper, or upset about anything."

"All right," answered Vronsky, smiling; and, jumping into his carriage, he told the man to drive to Peterhof.

Before he had driven many paces away, the dark clouds that had been threatening rain all day broke, and there was a heavy downpour of rain.

"What a pity!" thought Vronsky, putting up the roof of the carriage. "It was muddy before, now it will be a perfect swamp." As he sat in solitude in the closed carriage, he took out his mother's letter and his brother's note, and read them through.

Yes, it was the same thing over and over again. Everyone his mother, his brother everyone thought fit to interfere in the affairs of his heart. This interference aroused in him a feeling of angry hatred a feeling he had rarely known before. "What business is it of theirs? Why does everybody feel called upon to concern himself about me? And why do they worry me so? Just because they see that this is something they can't understand. If it were a common, vulgar, worldly intrigue, they would have left me alone. They feel that this is something different, that this is not a mere pastime, that this woman is dearer to me than life. And this is incomprehensible, and that's why it annoys them. Whatever our destiny is or may be, we have made it ourselves, and we do not complain of it," he said, in the word we linking himself with Anna. "No, they must needs teach us how to live. They haven't an idea of what happiness is; they don't know that without our love there is for us neither happiness nor unhappiness no life at all," he thought.

He was angry with all of them for their interference just because he felt in his soul that they, all these people, were right. He felt that the love that bound him to Anna was not a momentary impulse, which would pass, as worldly intrigues do pass, leaving no other traces in the life of either save pleasant or unpleasant memories. He felt all the torture of his own position and hers, all the difficulty in store for them, conspicuous as they were in the eye of all the world in concealing their love, in lying and deceiving; and in lying, deceiving, feigning and continually thinking of others, when the passion that united them was so intense that they were both oblivious of everything else save their love.

He vividly recalled all the constantly recurring instances of inevitable necessity for lying and deceit, which were so against his natural bent. He recalled particularly vividly the shame he had more than once detected in her at this necessity for lying and deceit. And he experienced the strange feeling that had sometimes come upon him since his relations with Anna. This was a feeling of loathing for something whether for Alexei Alexandrovich, or for

himself, or for the whole world, he could not have said. But he always drove away this strange feeling. Now, too, he shook it off and continued the thread of his thoughts.

"Yes, she was unhappy before, but proud and at peace; and now she cannot be at peace and feel secure in her dignity, though she does not show it. Yes, we must put an end to it," he decided.

And for the first time the idea clearly presented itself that it was essential to put an end to this false position, and the sooner the better. "Abandon everything must we she and I and hide ourselves somewhere alone with our love," he said to himself.

## XXII.

The shower did not last long, and by the time Vronsky arrived, his shaft horse trotting at full speed, and dragging the off horses galloping through the mud with their reins hanging loose, the sun had peeped out again, the roofs of the summer villas and the old lime trees in the gardens on both sides of the high street sparkled with wet brilliance, and from the twigs came a pleasant drip, and, from the roofs, rushing streams of water. He thought no more of shower spoiling the racecourse, but was now rejoicing because thanks to the rain he would be sure to find her at home and alone, as he knew that Alexei Alexandrovich, who had lately returned from a watering place, had not moved from Petersburg.

Hoping to find her alone, Vronsky alighted, as he always did, to avoid attracting attention, before crossing the bridge, and walked to the house. He did not go up the steps to the street door, but went into the court.

"Has your master come?" he asked a gardener.

"No, sir. The mistress is at home. But will you please go to the front door; there are servants there," the gardener answered. "They'll open the door."

"No, I'll go in from the garden."

And feeling satisfied that she was alone, and wanting to take her by surprise, since he had not promised to be there today, and she would certainly not expect him to come before the races, he walked, holding his sword and stepping cautiously over the sandy path, bordered with flowers, to the terrace that looked out upon the garden. Vronsky forgot now all that he had thought on the way of the hardships and difficulties of his position. He thought of nothing but that he would see her directly, not in imagination, but living, all of her, as she was in reality. He was just going in, stepping on his whole foot so as not to make a noise, up the worn steps of the terrace, when he suddenly remembered what he always forgot, and what caused the most torturing side of his relations with her: her son, with his questioning, and, as he fancied, hostile eyes.

This boy was more often than anyone else a check upon their freedom. When he was present, both Vronsky and Anna did not merely avoid speaking of anything that they could not have repeated before everyone; they did not even allow themselves to refer by hints to anything the boy did not understand. They had made no agreement about this, it had been settled of itself. They would have felt it as wounding themselves to deceive the child. In his presence they talked like acquaintances. But, in spite of this caution, Vronsky often saw the child's intent, bewildered glance fixed upon him, and a strange shyness, uncertainty at one time there was friendliness, at another coldness and reserve, in the boy's manner to him, as though the child felt that between this man and his mother there existed some important bond, the significance of which he could not understand.

As a matter of fact the boy did feel that he could not understand this relation, and he tried painfully, yet was unable, to make clear to himself what feeling he ought to have for this man. With a child's keen instinct for every

manifestation of feeling he saw distinctly that his father, his governess, his nurse all not merely disliked Vronsky, but looked on him with horror and aversion, though they never said anything about him; while his mother looked on him as her greatest friend.

"What does it mean? Who is he? How ought I to love him? If I don't know, it's my fault; either I'm stupid or a naughty boy," thought the child. And this was what caused his dubious, inquiring, sometimes hostile expression, and the shyness and uncertainty which Vronsky found so irksome. This child's presence always and infallibly called up in Vronsky that strange feeling of inexplicable loathing which he had experienced of late. This child's presence called up both in Vronsky and in Anna a feeling akin to the feeling of a sailor who sees by the compass that the direction in which he is swiftly moving is far from the right one, but that to arrest his motion is not in his power, that every instant is carrying him farther and farther away, and that to admit to himself his deviation from the right direction is tantamount to admitting his certain ruin.

This child, with his innocent outlook upon life, was the compass that showed them the point at which they had departed from what they knew, yet did not want to know.

This time Seriozha was not at home, and she was completely alone. She was sitting on the terrace waiting for the return of her son, who had gone out for a stroll and had been caught in the rain. She had sent out a manservant and a maid to look for him, and was sitting here waiting for them. Dressed in a white gown, deeply embroidered, she was sitting in a corner of the terrace behind some flowers, and did not hear him. Bending her curly dark head, she pressed her forehead against a cool watering pot that stood on the parapet, and both her lovely hands, with the rings he knew so well, clasped the pot. The beauty of her whole figure, her head, her neck, her hands, struck Vronsky every time as something new and unexpected. He stood still, gazing at her in ecstasy. But, directly he would have made a step to come nearer to her, she was aware of his presence, pushed away the watering pot, and turned her flushed face toward him.

"What's the matter? Are you unwell," he said to her in French, going up to her. He would have run to her, but remembering that there might be outsiders, he looked round toward the balcony door, and reddened, as he always reddened, feeling that he had to be afraid and be on his guard.

"No, I'm quite well," she said, getting up and squeezing his outstretched hand tightly. "I did not expect... thee."

"My God! what cold hands!" he said.

"You startled me," she said. "I'm alone, and expecting Seriozha; he's out for a walk; they'll come from this direction."

But, in spite of her efforts to be calm, her lips were quivering.

"Forgive me for coming, but I couldn't pass the day without seeing you," he went on, speaking French, as he always did, to avoid using the stiff Russian plural form, so impossibly frigid between them, and the dangerously intimate singular.

"Forgive for what I'm so glad!"

"But you're ill or worried," he went on, without letting go her hands and bending over her. "What were you thinking of?"

"Always of the same thing," she said, with a smile.

## Anna Karenina

She spoke the truth. If ever at any moment she had been asked what she was thinking of, she could have answered truly: Of the same thing, of her happiness and her unhappiness. She was thinking, just when he came upon her, of this: Why was it, she wondered, that to others, to Betsy for instance (she knew of her secret connection with Tushkevich), all this was so easy, while to her it was such torture? Today this thought gained special poignancy from certain other considerations. She asked him about the races. He answered her questions, and, seeing that she was agitated, trying to calm her, he began telling her in the simplest tone the details of his preparations for the races.

"Shall I tell him, or not?" she thought, looking into his calm, affable eyes. "He is so happy, so absorbed in his races that he won't understand as he should; he won't understand all the significance of this event to us."

"But you haven't told me what you were thinking of when I came in," he said, interrupting his narrative; "pray, tell me!"

She did not answer, and, bending her head a little, she looked inquiringly at him from under her brows, her eyes shining under their long lashes. Her hand shook as it played with a leaf she had picked. He saw it, and his face expressed that utter subjection, that slavish devotion, which had done so much to win her.

"I see something has happened. Do you suppose I can be at peace, knowing you have a trouble I am not sharing? Tell me, for God's sake!" he repeated imploringly.

"Yes, I shan't be able to forgive him if he does not realize all the significance of it. Better not tell; why put him to the proof?" she thought, still staring at him in the same way, and feeling that her hand that held the leaf was trembling more and more.

"For God's sake!" he repeated, taking her hand.

"Shall I tell you?"

"Yes, yes, yes..."

"I am pregnant," she said, softly and slowly.

The leaf in her hand shook more violently, but she did not take her eyes off him, watching how he would take it. He turned pale, would have said something, but stopped; he dropped her hand, and his head sank on his breast. "Yes, he realizes all the significance of the fact," she thought, and gratefully she pressed his hand.

But she was mistaken in thinking he realized the significance of the news as she, a woman, realized it. On hearing it, he felt come upon him with tenfold intensity that strange feeling of loathing of someone. But, at the same time, he realized that the turning point he had been longing for had come now; that it was impossible to go on concealing things from her husband, and it was inevitable in one way or another that they should soon put an end to their unnatural position. But, besides that, her emotion physically affected him in the same way. He looked at her with a look of submissive tenderness, kissed her hand, got up, and, in silence, paced up and down the terrace.

"Yes," he said, going up to her resolutely. "Neither you nor I have looked on our relations as a passing amusement, and now our fate is sealed. It is absolutely necessary to put an end" he looked round as he spoke "to the deception in which we are living."

"Put an end? Put an end how, Alexei?" she said softly.

She was calmer now, and her face lighted up with a tender smile.

"Leave your husband and make our life one."

"It is one as it is," she answered, scarcely audibly.

"Yes, but completely, completely."

"But how, Alexei tell me how?" she said in melancholy mockery at the hopelessness of her own situation. "Is there any way out of such a situation? Am I not the wife of my husband?"

"There is a way out of every situation. We must take our stand," he said. "Anything's better than the situation in which you're living. Of course, I see how you torture yourself over everything the world, and your son, and your husband."

"Oh, not over my husband," she said, with a plain smile. "I don't know him, I don't think of him. He doesn't exist."

"You're not speaking sincerely. I know you. You worry about him too."

"Oh, he doesn't even know," she said, and suddenly a hot flush came over her face; her cheeks, her brow, her neck crimsoned, and tears of shame came into her eyes. "But let us not even talk of him."

### XXIII.

Vronsky had several times already, though not so resolutely as now, tried to bring her to consider her position, and every time he had been confronted by the same superficiality and frivolity with which she met his appeal now. It was as though there were something in this which she could not or would not face, as though directly she began to speak of this, she, the real Anna, retreated somehow into herself, and another strange and unaccountable woman came out, whom he did not love and whom he feared, and who was in opposition to him. But today he was resolved to have it out.

"Whether he knows or not," said Vronsky, in his usual calm and firm tone, "whether he knows or not, has nothing to do with us. We cannot... You cannot stay like this, especially now."

"What's to be done, according to you?" she asked with the same frivolous irony. She who had so feared he would take her condition too frivolously, was now vexed with him for deducing from it the necessity of taking some step.

"Tell him everything, and leave him."

"Very well, let us suppose I do that," she said. "Do you know what the result of that would be? I can tell you it all beforehand," and a wicked light gleamed in her eyes, that had been so tender a minute before. "'Eh, you love another man, and have entered into a criminal liaison with him?'" (Mimicking her husband, she threw an emphasis on the word "criminal," as Alexei Alexandrovich did.) "I warned you of the results in the religious, the civil, and the domestic aspects. You have not listened to me. Now I cannot let you disgrace my name" "and my son," she had meant to say, but about her son she could not jest "'disgrace my name, and' and more in the same style," she added. "In general terms, he'll say in his official manner, and with all distinctness and precision, that he cannot let me go, but will take all measures in his power to prevent scandal. And he will calmly and punctiliously act in accordance with his words. That's what will happen. He's not a man, but a machine and a spiteful machine when he's angry," she added, recalling Alexei Alexandrovich as she spoke, with all the peculiarities of his figure and manner of speaking, and reckoning against him every defect she could find in him, forgiving him nothing for the great wrong she herself was doing him.

## Anna Karenina

"But, Anna," said Vronsky, in a soft and persuasive voice, trying to soothe her, "we absolutely must tell him, at any rate, and then be guided by the line he takes."

"What run away?"

"And why not run away? I don't see how we can keep on like this. And not for my sake I see that you suffer."

"Yes, run away, and become your mistress," she said angrily.

"Anna," he said, with reproachful tenderness.

"Yes," she went on, "become your mistress, and complete the ruin of..."

Again she would have said "my son," but she could not utter that word.

Vronsky could not understand how she, with her strong and truthful nature, could endure this state of deceit, and not long to get out of it. But he did not suspect that the chief cause of it was the word son, which she could not utter. When she thought of her son, and his future attitude to his mother, who had abandoned his father, she felt such terror at what she had done that she no longer reasoned, but, being a woman, could only try to comfort herself with lying assurances and words so that everything should remain as it always had been, and that it was possible to forget the fearful question of how it would be with her son.

"I beg you, I entreat you," she said suddenly, taking his hand, and speaking in quite a different tone, sincere and tender, "never speak to me of that!"

"But, Anna..."

"Never. Leave it to me. I know all the baseness, all the horror of my position; but it's not so easy to decide as you think. Therefore leave it to me, and do what I say. Never speak to me of it. Do you promise me?... No, no, promise!..."

"I promise everything, but I can't be at peace, especially after what you have told me I can't be at peace, when you can't be at peace...."

"I?" she repeated. "Yes, I am worried sometimes; but that will pass, if you will never talk about this. When you talk about it it's only then it worries me."

"I don't understand," he said.

"I know," she interrupted him, "how hard it is for your truthful nature to lie, and I grieve for you. I often think, how could you ruin your whole life for me."

"I was just thinking the very same thing," he said; "how could you sacrifice everything for my sake? I can't forgive myself because you're unhappy."

"I unhappy?" she said, coming closer to him, and looking at him with an ecstatic smile of love. "I am like a hungry man who has been given food. He may be cold, and dressed in rags, and ashamed, but he is not unhappy. I unhappy? No, this is my happiness...."

She could hear the sound of her son's voice coming toward them, and, glancing swiftly round the terrace, she got up impulsively. Her eyes glowed with the fire he knew so well; with a rapid movement she raised her lovely

## Anna Karenina

hands, covered with rings, took his head, looked into his face with a protracted gaze, and, putting up her face with smiling, parted lips, swiftly kissed his mouth and both eyes, and thrust him away. She would have gone, but he held her back.

"When?" he murmured in a whisper, gazing in ecstasy at her.

"Tonight, at one o'clock," she whispered, and, with a heavy sigh, she walked with her light, swift step to meet her son.

Seriozha had been caught by the rain in the big garden, and he and his nurse had taken shelter in a bower.

"Well, au revoir," she said to Vronsky. "I must soon be getting ready for the races. Betsy promised to fetch me."

Vronsky, looking at his watch, hurriedly drove off.

### XXIV.

When Vronsky had looked at his watch on the Karenins' balcony, he had been so greatly agitated and lost in his thoughts that, although he saw the hands on the face of his watch, he could not take in what time it was. He came out onto the highroad and walked, picking his way carefully through the mud, to his carriage. He was so completely absorbed in his feeling for Anna, that he did not even think what o'clock it was, and whether he had time to go to Briansky's. He preserved, as often happens, only the external faculty of memory, that points out each step one has to take, one after the other. He went up to his coachman, who was dozing on the box in the shadow, already lengthening, of a thick lime tree; he admired the shifting clouds of midges circling over the hot horses, and, waking the coachman, he jumped into the carriage, and told him to drive to Briansky's. It was only after driving nearly seven verstas that he had sufficiently recovered himself to look at his watch, and realize that it was half past five, and that he was late.

There were several races set for that day: the Body Guards' race, then the officers' two-versta race, then the four-versta race, and then the race for which he was entered. He could still be in right time for his race, but if he went to Briansky's he could be only in full time, and he would arrive when the whole Court would be in their places. That would be a pity. But he had promised Briansky to come, and so he decided to drive on, telling the coachman not to spare the horses.

He reached Briansky's, spent five minutes there, and galloped back. This rapid drive calmed him. All that was painful in his relations with Anna, all the feeling of indefiniteness left by their conversation, had slipped out of his mind. He was thinking now with pleasure and excitement of the race, of his being in time after all, and now and then the thought of the happiness of this night's assignation flashed across his imagination like a dazzling light.

The excitement of the approaching race gained upon him more and more as he drove farther and farther into the atmosphere of the races, overtaking carriages driving up from the summer villas or out of Peterburg.

There was no longer anyone at home at his quarters; all were at the races, and his valet was looking out for him at the gate. While he was changing his clothes, his valet told him that the second race had begun already, that a lot of gentlemen had been to ask for him, and a boy had twice run up from the stables.

Dressing without hurry (he never hurried himself, and never lost his self-possession), Vronsky drove to the sheds. From the sheds he could see a perfect sea of carriages, and people on foot, soldiers surrounding the racecourse, and pavilions swarming with people. The second race was apparently going on, for just as he went into the sheds he heard a bell ringing. Going toward the stable, he met the white-legged chestnut, Makhotin's Gladiator, being



led to the racecourse in a blue and orange horsecloth, with what looked like huge ears edged with blue.

"Where's Cord?" he asked the stableboy.

"In the stable, putting on the saddle."

In the open horse box stood Frou-Frou, saddled ready. They were just going to lead her out.

"I'm not too late?"

"All right! All right!" said the Englishman; "don't upset yourself!"

Vronsky once more took in at one glance the beautiful lines of his favorite mare, who was quivering all over, and with an effort he tore himself from the sight of her, and went out of the stable. He went toward the pavilions at the most favorable moment for escaping attention. The two-versta race was just finishing, and all eyes were fixed on the cavalry guard in front and the light hussar behind, urging their horses on with a last effort close to the winning post. From the center and outside of the ring all were crowding to the winning post, and a group of soldiers and officers of the cavalry guards were shouting loudly their delight at the expected triumph of their officer and comrade. Vronsky moved into the middle of the crowd unnoticed, almost at the very moment when the bell rang at the finish of the race, and the tall, mud-spattered cavalry guard who came in first, leaning over the saddle, let go the reins of his panting gray stallion that looked dark with sweat.

The stallion, stiffening out his legs, with an effort stopped his rapid course, and the officer of the cavalry guards looked round him like a man waking up from a heavy sleep, and just managed to smile. A crowd of friends and outsiders pressed round him.

Vronsky intentionally avoided that select crowd of upper world, which was moving and talking with discreet freedom before the pavilions. He knew that Madame Karenina was there, and Betsy, and his brother's wife, and he purposely did not go near them for fear of something distracting his attention. But he was continually met and stopped by acquaintances, who told him about the previous races, and kept asking him why he was so late.

At the time when the racers had to go to the pavilion to receive the prizes, and all attention was directed to that point, Vronsky's elder brother, Alexandre, a colonel with the shoulder knot, came up to him. He was not tall, though as broadly built as Alexei, and handsomer and rosier than he; he had a red nose, and an open, tipsy face.

"Did you get my note?" he said. "There's never any finding you."

Alexandre Vronsky, in spite of his dissolute life, and particularly his drunken habits, for which he was notorious, was quite one of the Court circle.

Now, as he talked to his brother of a matter bound to be exceedingly disagreeable to him, knowing that the eyes of many people might be fixed upon him, he kept a smiling countenance, as though he were jesting with his brother about something of little moment.

"I got it, and I really can't make out what you are worrying yourself about," said Alexei.

"I'm worrying myself because the remark has just been made to me that you weren't here, and that you were seen in Peterhof on Monday."

"There are matters which only concern those directly interested in them, and the matter you are so worried about is of that nature..."

"Yes, but if so, one does not belong in the service, one does not..."

"I beg you not to meddle, and that is all."

Alexei Vronsky's frowning face turned pale, and his prominent lower jaw quivered, which happened rarely with him. Being a man of very warm heart, he was seldom angry; but when he was angry, and when his chin quivered, then, as Alexandre Vronsky knew, he was dangerous. Alexandre Vronsky smiled gaily.

"I only wanted to give you mother's letter. Answer it and don't worry about anything just before the race. Bonne chance," he added, smiling, and he moved away from him. But after him another friendly greeting brought Vronsky to a standstill.

"So you won't recognize your friends! How are you, mon cher?" said Stepan Arkadyevich, as conspicuously brilliant in the midst of all the Petersburg brilliance as he was in Moscow, his face rosy, and his whiskers sleek and glossy. "I came up yesterday, and I'm delighted because I shall see your triumph. When shall we meet?"

"Come tomorrow to the messroom," said Vronsky, and squeezing him by the sleeve of his greatcoat, with apologies, he moved away to the center of the racecourse, where the horses were being led for the great steeplechase.

The horses who had run in the last race were being led home, steaming and exhausted, by the stableboys, and one after another the fresh horses for the coming race made their appearance, for the most part English racers, wearing horsecloths and looking with their drawn-up bellies like strange, huge birds. On the right Frou-Frou was led in, lean and beautiful, lifting up her elastic, rather long pasterns, as though moved by springs. Not far from her they were taking the caparison off the lop-cared Gladiator. The strong, exquisite, perfectly correct lines of the stallion, with his superb hindquarters and excessively short pasterns almost over his hoofs, attracted Vronsky's attention in spite of himself. He would have gone up to his mare, but he was again detained by an acquaintance.

"Oh, there's Karenin!" said the acquaintance with whom he was chatting. "He's looking for his wife, and she's in the middle of the pavilion. Didn't you see her?"

"No, I didn't," answered Vronsky, and without even glancing round toward the pavilion where his friend was pointing out Madame Karenina, he went up to his mare.

Vronsky had not had time to look at the saddle, about which he had to give some direction, when the entrants were summoned to the pavilion to receive their numbers and places in the row at starting. Seventeen officers, looking serious and severe, many with pale faces, met together in the pavilion and drew the numbers. Vronsky drew number 7. The cry was heard: "Mount!"

Feeling that, with the others riding in the race, he was the center upon which all eyes were fastened, Vronsky walked up to his mare in that state of nervous tension in which he usually became dilatory and calm in his movements. Cord, in honor of the races, had put on his best clothes, a black coat buttoned up, a stiffly starched collar, which propped up his cheeks, a black bowler and Hessian boots. He was calm and dignified as ever, and was with his own hands holding Frou-Frou by both reins, standing straight in front of her. Frou-Frou was still trembling as though in a fever. Her eye, full of fire, glanced sideways at Vronsky. Vronsky slipped his finger under the saddle girth. The mare glanced aslant at him, drew up her lip, and twitched her ear. The Englishman puckered up his lips, intending to indicate a smile that anyone should verify his saddling.

"Get up; you won't feel so excited."

Vronsky looked round for the last time at his rivals. He knew that he would not see them during the race. Two were already riding forward to the point from which they were to start. Galtsin, a friend of Vronsky's and one of his more formidable rivals, was moving round a bay horse that would not let him mount. A little hussar of the life guards in tight riding breeches rode off at a gallop, crouched up like a cat over the porridge, in imitation of English jockeys. Prince Kuzovlev sat with a white face on his thoroughbred mare from the Grabovsky stud, while an English groom led her by the bridle. Vronsky and all his comrades knew Kuzovlev and his peculiarity of "weak nerves" and terrible vanity. They knew that he was afraid of everything afraid of riding a line horse. But now, just because it was terrible, because people broke their necks, and there was a doctor standing at each obstacle, and an ambulance with a cross on it, and a sister of mercy, he had made up his mind to take part in the race. Their eyes met, and Vronsky gave him a friendly and encouraging nod. Only one he did not see, his chief rival, Makhotin on Gladiator.

"Don't be in a hurry," said Cord to Vronsky, "and remember one thing: don't hold her in at the fences, and don't urge her on; let her go as she likes."

"All right, all right," said Vronsky, taking the reins.

"If you can, lead the race; but don't lose heart till the last minute, even if you're behind."

Before the mare had time to move, Vronsky stepped with an agile, vigorous movement into the steel-toothed stirrup, and lightly and firmly placed his compacted body on the creaking leather of the saddle. Getting his right foot in the stirrup, he with habitual moving smoothed the double reins between his fingers, and Cord let go. As though she did not know which foot to put first, Frou-Frou started, dragging at the reins with her long neck, and as though she were on springs, shaking her rider from side to side. Cord quickened his step, following him. The excited mare, trying to deceive her rider, pulled at the reins, first on one side and then the other, and Vronsky tried in vain with voice and hand to soothe her.

They were just reaching the dammed-up stream on their way to the starting point. Several of the riders were in front and several behind, when suddenly Vronsky heard the sound of a horse galloping in the behind him, and he was overtaken by Makhotin on his white-legged, lop-eared Gladiator. Makhotin smiled, showing his long teeth, but Vronsky looked at him angrily. He did not like him, and regarded him now as his most formidable rival. He was angry with him for galloping past and exciting his mare. Frou-Frou started into a gallop, her left foot forward, made two bounds, and fretting at the tightened reins, passed into a jolting trot, bumping her rider up and down. Cord, too, scowled, and followed Vronsky almost ambling.

## XXV.

There were seventeen officers in all riding in this race. The racecourse was a large four-versta ring in the form of an ellipse in front of the pavilion. On this course nine obstacles had been arranged: the stream, a big and solid barrier two arsheenes high, just before the pavilion, a dry ditch, a ditch full of water, a precipitous slope, an Irish barricade (one of the most difficult obstacles, consisting of a mound fenced with brushwood, beyond which was a ditch out of sight for the horses, so that the horse had to clear both obstacles or possibly be killed); then two more ditches filled with water, and one dry one; and the end of the race was just facing the pavilion. But the race began not in the ring, but a hundred arsheenes away from it, and in that part of the course was the first obstacle, a dammed-up stream, three arsheenes in breadth, which the racers could leap or wade through as they preferred.

Three times they were ranged ready to start, but each time some horse thrust itself out of line, and they had to begin again. The starter, Colonel Sestrin, was beginning to lose his temper, when at last, for the fourth time, he shouted "Away!" and the riders started.

Every eye, every opera glass, was turned on the brightly colored group of riders at the moment they were in line to start.

"They're off! They're starting!" was heard on all sides after the hush of expectation.

And little groups and solitary figures among the public began running from place to place to get a better view. In the very first minute the close group of horsemen spread out, and it could be seen that they were approaching the stream in twos and threes and one behind another. To the spectators it seemed as though they had all started simultaneously, but to the racers there were seconds of difference that had great value to them.

Frou-Frou, excited and overnervous, had lost the first moment, and several horses had started before her, but before reaching the stream, Vronsky, who was holding in the mare with all his force as she tugged at the bridle, easily overtook three, and there were left in front of him Makhotin's chestnut Gladiator, whose hindquarters were moving lightly and rhythmically up and down exactly in front of Vronsky, and, in front of all, the dainty mare Diana bearing the more dead than alive Kuzovlev.

For the first instant Vronsky was not master either of himself or his mare. Up to the first obstacle, the stream, he could not guide the motions of his mare.

Gladiator and Diana came up to it together and almost at the same instant; at a stroke they rose above the stream and flew across to the other side; Frou-Frou darted after them easily, as if flying; but at the very moment when Vronsky felt himself in the air, he suddenly saw almost under his mare's hoofs Kuzovlev, who was floundering with Diana on the further side of the stream. (Kuzovlev had let go the reins as he took the leap, and the mare had fallen together with him over her head.) Those details Vronsky learned later; at the moment all he saw was that just under him, where Frou-Frou must alight, Diana's legs or head might be in the way. But Frou-Frou drew up her legs and back in the very act of leaping, like a falling cat, and, clearing the other mare, alighted beyond her.

"Oh, you darling!" flashed through Vronsky's head.

After crossing the stream Vronsky had complete control of his mare, and began holding her in, intending to cross the great barrier behind Makhotin, and to try to overtake him in the clear ground of about two hundred sazhenes that followed it.

The great barrier stood just in front of the Imperial Pavilion. The Czar and the whole Court, and crowds of people, were all gazing at them at him, and at Makhotin, a length ahead of him, as they drew near the "devil," as the solid barrier was called. Vronsky was aware of those eyes fastened upon him from all sides, but he saw nothing except the ears and neck of his own mare, the ground racing to meet him, and the back and white legs of Gladiator beating time swiftly before him, and keeping always the same distance ahead. Gladiator rose, with no sound of knocking against anything. With a wave of his short tail he disappeared from Vronsky's sight.

"Bravo!" cried a voice.

At the same instant, under Vronsky's eyes, right before him flashed the palings of the barrier. Without the slightest change in her action his mare flew over it; the palings vanished, and he heard only a crash behind him. The mare, excited by Gladiator's keeping ahead, had risen too soon before the barrier, and grazed it with one of her hind hoofs. But her pace never changed, and Vronsky, feeling a spatter of mud in his face, realized that he was once more the same distance from Gladiator. Once more he perceived in front of him the same back and short tail, and again the same swiftly moving white legs that got no further away.

At the very moment when Vronsky thought that now was the time to overtake Makhotin, Frou-Frou herself, understanding his thoughts, without any incitement on his part, gained considerably, and began getting alongside

of Makhotin on the most favorable side, close to the inner rope. Makhotin would not let her pass that side. Vronsky had hardly formed the thought that he could perhaps pass on the outer side, when Frou-Frou shifted her pace and began overtaking him on the other side. Frou-Frou's shoulder, beginning by now to be dark with sweat, was even with Gladiator's back. For a few bounds they moved evenly. But before the obstacle they were approaching, Vronsky began working at the reins, anxious to avoid having to take the outer circle, and swiftly passed Makhotin just upon the declivity. He caught a glimpse of his mud-stained face as he flashed by. He even fancied that he smiled. Vronsky passed Makhotin, but he was immediately aware of him close upon him, and he never ceased hearing just behind him the even-thudding hoofs and the rapid and still quite fresh breathing of Gladiator.

The next two obstacles, the watercourse and the barrier, were easily crossed, but Vronsky began to hear the snorting and thud of Gladiator closer upon him. He urged on his mare, and to his delight felt that she easily quickened her pace, and the thud of Gladiator's hoofs was again heard at the same distance away.

Vronsky was at the head of the race, just as he wanted to be and as Cord had advised, and now he felt sure of being the winner. His excitement, his delight, and his tenderness for Frou-Frou grew keener and keener. He longed to look round, but he did not dare do this, and tried to be cool and not to urge on his mare, so as to keep the same reserve of force in her as he felt that Gladiator still kept. There remained only one obstacle, the most difficult; if he could cross it ahead of the others, he would come in first. He was flying toward the Irish barricade; Frou-Frou and he both together saw the barricade in the distance, and both the man and the mare had a moment's hesitation. He saw the uncertainty in the mare's ears and lifted the whip, but at the same time felt that his fears were groundless; the mare knew what was wanted. She quickened her pace and rose rhythmically, just as he had fancied she would, and as she left the ground gave herself up to the force of her rush, which carried her far beyond the ditch; and with the same rhythm, without effort, with the same leg forward, Frou-Frou fell back into her pace again.

"Bravo, Vronsky!" he heard shouts from a knot of men he knew they were his friends and his regiment comrades who were standing at the obstacle. He could not fail to recognize Iashvin's voice, though he did not see him.

"O my sweet!" he said inwardly to Frou-Frou, as he listened for what was happening behind. "He's cleared it!" he thought, catching the thud of Gladiator's hoofs behind him. There remained only the last ditch, filled with water and two arsheenes wide. Vronsky did not even look at it, but anxious to come in a long way ahead began sawing away at the reins, lifting the mare's head and letting it go in time with her paces. He felt that the mare was at her very last reserve of strength; not her neck and shoulders merely were wet, but the sweat was standing in drops on her mane, her head, her sharp ears, and her breath came in short, sharp gasps. But he knew that she had strength left more than enough for the remaining two hundred sazhenes. It was only from feeling himself nearer the ground and from the peculiar smoothness of his motion that Vronsky knew how greatly the mare had quickened her pace. She flew over the ditch as though not noticing it. She flew over it like a bird; but at the same instant Vronsky, to his horror, felt that failing to keep up with the mare's pace, he had, he did not know how, made an abominable, unpardonable move in recovering his seat in the saddle. All at once his position had shifted and he knew that something awful had happened. He could not yet make out what had happened, when the white legs of a chestnut horse flashed by close to him, and Makhotin passed at a swift gallop. Vronsky was touching the ground with one foot, and his mare was sinking on that foot. He just had time to free his leg when she fell on one side, gasping painfully, and, making vain efforts to rise with her delicate, soaking neck, she fluttered on the ground at his feet like a shot bird. The clumsy movement made by Vronsky had broken her back. But that he only knew much later. At that moment he knew only that Makhotin had flown swiftly by, while he stood staggering alone on the muddy, motionless ground, and Frou-Frou lay gasping before him, bending her head back and gazing at him with her exquisite eye. Still unable to realize what had happened, Vronsky tugged at his mare's reins. Again she struggled all over like a fish, and, her shoulders making the wings of the saddle crackle, she rose on her front legs; but unable to lift her back, she quivered all over and again fell on her side. With his face hideous with passion, pale,

his lower jaw trembling, Vronsky kicked her with his heel in the stomach and again fell to tugging at the rein. She did not stir, but thrusting her nose into the ground, she simply gazed at her master with her speaking eyes.

"A—a—a!" groaned Vronsky, clutching at his head. "Ah! what have I done!" he cried. "The race lost! And my fault! shameful, unpardonable! And the poor darling, ruined mare! Ah, what have I done!"

A crowd of men, a doctor and his assistant, the officers of his regiment, ran up to him. To his misery he felt that he was whole and unhurt. The mare had broken her back, and it was decided to shoot her. Vronsky could not answer questions, could not speak to anyone. He turned, and without picking up his fallen cap, walked away from the racecourse, unconscious of where he was going. He felt utterly wretched. For the first time in his life he knew the bitterest sort of misfortune, misfortune beyond remedy, and caused by his own fault.

Iashvin overtook him with his cap, and led him home, and half an hour later Vronsky had regained his self-possession. But the memory of that race remained for long in his heart, the cruelest and bitterest memory of his life.

## XXVI.

The external relations of Alexei Alexandrovich and his wife had remained unchanged. The sole difference lay in the fact that he was more busily occupied than ever. As in former years, at the beginning of the spring he had gone to a foreign watering place for the sake of his health, being deranged every year with his strenuous winter work. And just as always he returned in July and at once fell to his usual work with increased energy. Just as always, too, his wife had moved for the summer to a villa out of town, while he remained in Petersburg.

From the date of their conversation after the party at Princess Tverskaia's he had never spoken again to Anna of his suspicions and his jealousies, and that habitual tone of his of bantering mimicry was the most convenient tone possible for his present attitude to his wife. He was a little colder to his wife. He simply seemed to be slightly displeased with her for that first midnight conversation, which she had repelled. In his attitude to her there was a shade of vexation, but nothing more. "You would not be open with me," he seemed to say, mentally addressing her; "so much the worse for you. Now you may beg as you please, but I won't be open with you. So much the worse for you!" he said mentally, like a man who, after vainly attempting to extinguish a fire, should fly in a rage with his vain efforts and say, "Oh, very well then! You shall burn for this!"

This man, so subtle and astute in official life, did not realize all the insanity of such an attitude to his wife. He did not realize it, because it was too terrible to him to realize his actual position, and he shut down and locked and sealed up in his heart that secret place where lay hid his feelings toward his family—that is, his wife and son. He who had been such a considerate father, had from the end of that winter become peculiarly frigid to his son, and adopted to him just the same bantering tone as he used with his wife. "Aha, young man!" was the greeting with which he met him.

Alexei Alexandrovich asserted, and believed, that he had never in any previous year had so much official business as that year. But he was not aware that he sought work for himself that year, that this was one of the means for keeping shut that secret place where lay hid his feelings toward his wife and son, and his thoughts about them, which became more terrible the longer they lay there. If anyone had had the right to ask Alexei Alexandrovich what he thought of his wife's behavior, the mild and peaceable Alexei Alexandrovich would have made no answer, but he would have been greatly angered with any man who should question him on that subject. It was precisely for this reason that there came into Alexei Alexandrovich's face a look of haughtiness and severity whenever anyone inquired after his wife's health. Alexei Alexandrovich did not want to think at all about his wife's behavior and feelings, and he actually succeeded in not thinking about them at all.

Alexei Alexandrovich's permanent summer villa was in Peterhof, and the Countess Lidia Ivanovna used to spend the summer there, close to Anna, and constantly seeing her. That year Countess Lidia Ivanovna declined to settle in Peterhof, did not call once at Anna Arkadyevna's, and had hinted to Alexei Alexandrovich about the unsuitability of Anna's close intimacy with Betsy and Vronsky. Alexei Alexandrovich had sternly cut her short, roundly declaring his wife to be above suspicion, and from that time began to avoid Countess Lidia Ivanovna. He did not want to see, and did not see, that many people in society cast dubious glances on his wife; he did not want to understand, and did not understand, why his wife had so particularly insisted on staying at Tsarskoe, where Betsy was staying, and not far from the camp of Vronsky's regiment. He did not allow himself to think about it, and he did not think about it; but, all the same, though he never admitted it to himself, and had no proofs, nor even suspicious evidence, at the bottom of his heart he knew beyond all doubt that he was a deceived husband, and he was profoundly miserable about it.

How often during those eight years of happy life with his wife had Alexei Alexandrovich looked at other men's faithless wives and other deceived husbands and asked himself: "How can people descend to that? How is it they don't put an end to such a hideous situation?" But now, when the misfortune had come upon himself, he was so far from thinking of putting an end to the situation that he would not recognize it at all would not recognize it just because it was too awful, too unnatural.

Since his return from abroad Alexei Alexandrovich had been twice at their country villa. Once he dined there, another time he spent the evening there with a party of friends, but he had not once stayed the night there, as it had been his habit to do in previous years.

The day of the races had been a very busy day for Alexei Alexandrovich; but when sketching out the day in the morning he made up his mind to go immediately after his early dinner, to their summer villa to see his wife and from there to the races, which all the Court were to witness, and at which he was bound to be present. He was going to see his wife, because he had determined to see her once a week to keep up appearances. And besides, on that day, as it was the fifteenth, he had to give his wife some money for her expenses, according to their usual arrangement.

With his habitual control over his thoughts, though he thought all this about his wife, he did not let his thoughts stray further in regard to her.

That morning was a very full one for Alexei Alexandrovich. The evening before, Countess Lidia Ivanovna had sent him a pamphlet by a celebrated traveler in China, who was staying in Peterburg, and with it she enclosed a note begging him to see the traveler himself, as he was an extremely interesting person from various points of view, and likely to be useful. Alexei Alexandrovich had not had time to read the pamphlet through in the evening, and finished it in the morning. Then people began arriving with petitions, and then came the reports, interviews, appointments, dismissals, apportionment of rewards, pensions, payments, papers the workday round, as Alexei Alexandrovich called it, that always took up so much time. Then there was a private business of his own, a visit from the doctor, and from the steward who managed his property. The steward did not take up much time. He simply gave Alexei Alexandrovich the money he needed, together with a brief statement of the position of his affairs, which was not altogether satisfactory, as during that year, owing to increased expenses, more had been paid out than usual, and there was a deficit. But the doctor, a celebrated Peterburg doctor, who was an intimate acquaintance of Alexei Alexandrovich, had taken up a great deal of time. Alexei Alexandrovich had not expected him that day, and was surprised at his visit, and still more so when the doctor questioned him very carefully about his health, listened to his breathing, and tapped at his liver. Alexei Alexandrovich did not know that his friend Lidia Ivanovna, noticing that he was not as well as usual that year, had begged the doctor to go and examine him. "Do this for my sake," the Countess Lidia Ivanovna had said to him.

"I will do it for the sake of Russia, Countess," replied the doctor.

"A priceless man!" said the Countess Lidia Ivanovna.

The doctor was extremely dissatisfied with Alexei Alexandrovich. He found the liver considerably enlarged, and the digestive powers weakened, while the course of mineral waters had been quite without effect. He prescribed more physical exercise as far as possible, and as far as possible less mental strain, and above all no worry in other words, just what was as much out of Alexei Alexandrovich's power as abstaining from breathing. Then he withdrew, leaving in Alexei Alexandrovich an unpleasant sense that something was wrong with him, and that there was no chance of curing it.

As he was coming away, the doctor chanced to meet on the steps an acquaintance of his, Sludin, who was head clerk in Alexei Alexandrovich's office. They had been comrades at the university, and, though they rarely met, they thought highly of each other and were excellent friends, and hence there was no one to whom the doctor would have given his opinion of a patient so freely as to Sludin.

"How glad I am you've been seeing him!" said Sludin. "He's not well, and I fancy... Well, what do you think of him?"

"I'll tell you," said the doctor, beckoning over Sludin's head to his coachman to bring the carriage round. "It's just this," said the doctor, taking a finger of his kid glove in his white hands and pulling it, "if you don't strain the strings, and then try to break them, you'll find it a difficult job; but strain a string to its very utmost, and the mere weight of one finger on the strained string will snap it. And with his close assiduity, his conscientious devotion to his work, he's strained to the utmost; and there's some outside burden weighing on him, and that not a light one," concluded the doctor, raising his eyebrows significantly. "Will you be at the races?" he added, as he came down to his carriage. "Yes, yes, to be sure; it does waste a lot of time," the doctor responded vaguely to some reply of Sludin's he had not caught.

Directly after the doctor, who had taken up so much time, came the celebrated traveler, and Alexei Alexandrovich, by means of the pamphlet he had only just finished reading, and his previous acquaintance with the subject, impressed the traveler by the depth of his knowledge of the subject and the breadth and enlightenment of his view of it.

At the same time with the traveler there was announced a provincial marshal of nobility on a visit to Peterburg, with whom Alexei Alexandrovich had to have some conversation. After his departure, he had to finish the daily routine of business with his head clerk, and then he still had to drive round to call on a certain personage on a matter of grave and serious import. Alexei Alexandrovich hardly managed to be back by five o'clock, his dinner hour, and, after dining with his head clerk, he invited him to drive with him to his summer villa and to the races.

Though he did not acknowledge it to himself, Alexei Alexandrovich always tried nowadays to secure the presence of a third person in his interviews with his wife.

## XXVII.

Anna was upstairs, standing before the looking glass, and, with Annushka's assistance, pinning the last ribbon on her gown when she heard carriage wheels crunching the gravel at the entrance.

"It's too early for Betsy," she thought, and, glancing out of the window, she caught sight of the carriage and, protruded from it, the black hat of Alexei Alexandrovich, and the ears that she knew so well. "How unlucky! Can he be going to stay the night?" she wondered, and the thought of all that might come of such a chance struck her as so awful and terrible that, without dwelling on it for a moment, she went down to meet him with a bright and radiant face; and conscious of the presence of that spirit of falsehood and deceit in herself that she had come to



## Anna Karenina

know of late, she abandoned herself to that spirit and began talking, hardly knowing what she was saying.

"Ah, how lovely of you!" she said, giving her husband her hand, and with a smile greeting Sludin, who was like one of the family. "You're staying the night, I hope?" was the first word the spirit of falsehood prompted her to utter. "And now we'll go together. Only it's a pity I've promised Betsy. She's coming for me."

Alexei Alexandrovich knit his brows at Betsy's name.

"Oh, I'm not going to separate the inseparables," he said in his usual bantering tone. "I'm going with Mikhail Vassilyevich. Even the doctors order me to walk. I'll walk, and fancy myself at the springs again."

"There's no hurry," said Anna. "Would you like tea?"

She rang.

"Bring in tea, and tell Seriozha that Alexei Alexandrovich is here. Well, tell me, how have you been? Mikhail Vassilyevich, you've not been to see me before. Look how lovely it is out on the terrace," she said, turning first to one and then to the other.

She spoke very simply and naturally, but too much and too fast. She was the more aware of this from noticing in the inquisitive look which Mikhail Vassilyevich turned on her that he was, as it were, keeping watch on her.

Mikhail Vassilyevich promptly went out on the terrace.

She sat down beside her husband.

"You don't look quite well," she said.

"Yes," he said; "the doctor's been with me today and wasted an hour of my time. I feel that some one of our friends must have sent him: my health's so precious...."

"Come: what did he say?"

She questioned him about his health, and what he had been doing, and tried to persuade him to take a rest and come out to her.

All this she said brightly, rapidly, and with a peculiar brilliance in her eyes. But Alexei Alexandrovich did not now attach any special significance to this tone of hers. He heard only her words and gave them only the direct sense they bore. And he answered simply, though jestingly. There was nothing remarkable in all this conversation, but never after could Anna recall this brief scene without an agonizing pang of shame.

Seriozha came in, preceded by his governess. If Alexei Alexandrovich had allowed himself to observe he would have noticed the timid and bewildered eyes with which Seriozha glanced first at his father and then at his mother. But he would not see anything, and he did not see it.

"Ah, the young man! He's grown. Really, he's getting quite a man. How are you, young man?"

And he gave his hand to the scared child.

Seriozha had been shy of his father before, and now, ever since Alexei Alexandrovich had taken to calling him "young man," and since that insoluble question had occurred to him as to whether Vronsky were friend or foe, he

## Anna Karenina

avoided his father. He looked round toward his mother, as though seeking refuge. It was only with his mother that he was at ease. Meanwhile, Alexei Alexandrovich was holding his son by the shoulder, while he was speaking to the governess, and Seriozha was so miserably uncomfortable that Anna saw he was on the point of tears.

Anna, who had flushed a little the instant her son had come in, noticing that Seriozha was uncomfortable, got up hurriedly, took Alexei Alexandrovich's hand from her son's shoulder, and, kissing the boy, led him out onto the terrace, and quickly came back.

"It's time to start, though," said she, glancing at her watch. "How is it Betsy doesn't come?..."

"Yes," said Alexei Alexandrovich, and, getting up, he folded his hands and cracked his fingers. "I've come to bring you some money, too for nightingales, we know, can't live on fairy tales," he said. "You want it, I expect?"

"No, I don't... Yes, I do," she said, without looking at him, and crimsoning to the roots of her hair. "But you'll come back here after the races, I suppose?"

"Oh, yes!" answered Alexei Alexandrovich. "And here's the glory of Peterhof Princess Tverskaia," he added, looking out of the window at the English harnessed carriage, with the tiny seats placed extremely high. "What elegance! Charming! Well, let us be starting too, then."

Princess Tverskaia did not get out of her carriage, but her liveryman, in spatterdashes, a cape and black high hat, jumped off at the entrance.

"I'm going; good-bye!" said Anna, and, kissing her son, she went up to Alexei Alexandrovich and held out her hand to him. "It was ever so lovely of you to come."

Alexei Alexandrovich kissed her hand.

"Well, au revoir, then! You'll come back for some tea that'll be delightful!" she said, and went out, radiant and gay. But as soon as he was out of sight, she became aware of the spot on her hand that his lips had touched, and she shuddered with repulsion.

## XXVIII.

When Alexei Alexandrovich reached the racecourse Anna was already sitting in the pavilion beside Betsy, in that pavilion where the highest society had gathered. She caught sight of her husband in the distance. Two men, her husband and her lover, were the two centers of her existence, and, unaided by her external senses, she was aware of their proximity. She was aware of her husband approaching a long way off, and she could not help following him in the surging crowd in the midst of which he was moving. She watched his progress toward the pavilion, saw him now responding condescendingly to an ingratiating bow, now exchanging friendly, nonchalant greetings with his equals, now assiduously trying to catch the eye of some great one of this world, and taking off his big round hat that pressed down the tips of his ears. All these ways of his she knew, and all were hateful to her. "Nothing but ambition, nothing but desire to get on that's all there is in his soul," she thought; "as for his lofty ideals, love of culture, religion, they are only so many tools for getting on."

From his glances toward the ladies' pavilion (he was staring straight at her, but did not distinguish his wife in the sea of muslin, ribbons, feathers, parasols and flowers) she saw that he was looking for her, but she purposely avoided noticing him.

"Alexei Alexandrovich!" Princess Betsy called to him; "I'm sure you don't see your wife: here she is."

He smiled his chilly smile.

"There's so much splendor here that one's eyes are dazzled," he said, and he went into the pavilion. He smiled to his wife as a man should smile on meeting his wife after only just parting from her, and greeted the princess and other acquaintances, giving to each what was due—that is to say, jesting with the ladies and dealing out friendly greetings among the men. Below, near the pavilion, was standing an adjutant general of whom Alexei Alexandrovich had a high opinion, noted for his intelligence and culture. Alexei Alexandrovich entered into conversation with him.

There was an interval between the races, and so nothing hindered conversation. The adjutant general expressed his disapproval of races. Alexei Alexandrovich replied defending them. Anna heard his high, measured tones, without losing one word, and every word struck her as false, and stabbed her ears with pain.

When the four-versta steeplechase was beginning, she bent forward and gazed with fixed eyes at Vronsky as he went up to his horse and mounted, and at the same time she heard that loathsome, never-ceasing voice of her husband. She was in an agony of terror for Vronsky, but a still greater agony was the never-ceasing, as it seemed to her, stream of her husband's shrill voice with its familiar intonations.

"I'm a wicked woman, a lost woman," she thought; "but I don't like lying, I can't endure falsehood, while as for him [her husband], falsehood is the breath of life to him. He knows all about it, he sees it all; what does he care if he can talk so calmly? If he were to kill me, if he were to kill Vronsky, I might respect him. No, all he wants is falsehood and propriety," Anna said to herself, not considering exactly what it was she wanted of her husband, and how she would have liked to see him behave. She did not understand either that Alexei Alexandrovich's peculiar loquacity that day, so exasperating to her, was merely the expression of his inward distress and uneasiness. As a child that has been hurt hops about, putting all his muscles into movement to drown the pain, in the same way Alexei Alexandrovich needed mental exercise to drown the thoughts of his wife, that in her presence and in Vronsky's, and with the continual iteration of his name, would force themselves on his attention. And it is as natural for a child to hop about, as it was natural for him to talk well and cleverly. He was saying:

"Danger in the races to officers, to cavalrymen, is an essential element in the race. If England can point to the most brilliant feats of cavalry in military history, it is simply owing to the fact that she has historically developed this force both in beasts and in men. Sport has, in my opinion, a great value, and, as is always the case, we see nothing but what is most superficial."

"It's not superficial," said Princess Tverskaia. "One of the officers, they say, has broken two ribs."

Alexei Alexandrovich smiled his smile, which uncovered his teeth, but revealed nothing more.

"We'll admit, Princess, that that's not superficial," he said, "but internal. But that's not the point," and he turned again to the general with whom he talked seriously; "we mustn't forget that those who are taking part in the race are military men, who have chosen that career, and one must allow that every calling has its disagreeable side. It forms an integral part of the duties of an officer. Low sports, such as prize fighting or Spanish bullfights, are a sign of barbarity. But specialized trials of skill are a sign of development."

"No, I shan't come another time; it's too upsetting," said Princess Betsy. "Isn't it, Anna?"

"It is upsetting, but one can't tear oneself away," said another lady. "If I'd been a Roman woman I should never have missed a single circus."

## Anna Karenina

Anna said nothing, and, keeping her opera glass up, gazed always at the same spot.

At that moment a tall general walked through the pavilion. Breaking off what he was saying, Alexei Alexandrovich got up hurriedly, though with dignity, and bowed low to the general.

"You're not racing?" the officer asked, chaffing him.

"My race is a harder one," Alexei Alexandrovich responded deferentially.

And though the answer meant nothing, the general looked as though he had heard a witty remark from a witty man, and fully relished *la pointe de la sauce*.

"There are two aspects," Alexei Alexandrovich resumed: "those who take part and those who look on; and love for such spectacles is an unmistakable proof of a low degree of development in the spectator, I admit, but..."

"Any bets, Princess?" sounded Stepan Arkadyevich's voice from below, addressing Betsy. "Who's your favorite?"

"Anna and I are for Kuzovlev," replied Betsy.

"I'm for Vronsky. A pair of gloves?"

"Done!"

"But it is a pretty sight, isn't it?"

Alexei Alexandrovich paused while the others were talking near him, but he began again directly.

"I admit that manly sports do not..." he made an attempt to continue.

But at that moment the racers started, and all conversation ceased. Alexei Alexandrovich also fell silent, and everyone stood up and turned toward the stream. Alexei Alexandrovich took no interest in the race, and so he did not watch the racers, but fell listlessly to scanning the spectators with his weary eyes. His eyes rested upon Anna.

Her face was white and stern. She was obviously seeing nothing and no one but one man. Her hand had convulsively clutched her fan, and she held her breath. He looked at her and hastily turned away, scrutinizing other faces.

"But here's this lady too, and others very much moved as well; it's very natural," Alexei Alexandrovich told himself. He tried not to look at her, but unconsciously his eyes were drawn to her. He examined that face again, trying not to read what was so plainly written on it, and against his own will, with horror, read in it what he did not want to know.

The first fall Kuzovlev's, at the stream agitated everyone, but Alexei Alexandrovich saw distinctly on Anna's pale, triumphant face that the man she was watching had not fallen. When, after Makhotin and Vronsky had cleared the worst barrier, the next officer had been thrown straight on his head at it and fatally injured, and a shudder of horror passed over the whole public, Alexei Alexandrovich saw that Anna did not even notice it, and had some difficulty in realizing what they were saying around her. But more and more often, and with greater persistence, he watched her. Anna, wholly engrossed as she was with the sight of Vronsky racing, became aware of her husband's cold eyes fixed upon her from aside.

She glanced round for an instant, looked inquiringly at him, and with a slight frown turned away again.

## Anna Karenina

"Ah, I don't care!" she seemed to say to him, and she did not once glance at him again.

The race was an unlucky one, and of the seventeen officers who rode in it more than half had been thrown and hurt. Toward the end of the race everyone was in a state of agitation, which was intensified by the fact that the Czar was displeased.

### XXIX.

Everyone was loudly expressing disapprobation, everyone was repeating a phrase someone had uttered: "The lions and gladiators will be the next thing," and everyone was feeling horrified; so that when Vronsky fell to the ground, and Anna moaned aloud, there was nothing very much out of the way in it. But afterward a change came over Anna's face which really went beyond decorum. She utterly lost her head. She began fluttering like a caged bird, at one moment wanting to get up and move away, and at the next turning to Betsy.

"Let us go, let us go!" she said.

But Betsy did not hear her. She was bending down, talking to a general who had come up to her.

Alexei Alexandrovich went up to Anna and courteously offered her his arm.

"Let us go, if you like," he said in French, but Anna was listening to the general and did not notice her husband.

"He's broken his leg too, so they say," the general was saying. "This surpasses everything."

Without answering her husband, Anna lifted her opera glass and gazed toward the place where Vronsky had fallen; but it was so far off, and there was such a crowd of people about it, that she could make out nothing. She put down the opera glass, and would have moved away, but at that moment an officer galloped up and made some announcement to the Czar. Anna craned forward, listening.

"Stiva! Stiva!" she cried to her brother.

But her brother did not hear her. Again she would have moved away.

"Once more I offer you my arm if you want to be going," said Alexei Alexandrovich, reaching for her hand.

She drew back from him with aversion, and without looking at his face answered:

"No, no, leave me alone I'll stay."

She saw now that from the place of Vronsky's accident an officer was running across the course toward the pavilion. Betsy waved her handkerchief to him. The officer brought the news that the rider was not killed, but that the back of the horse had been broken.

On hearing this Anna sat down hurriedly, and hid her face in her fan. Alexei Alexandrovich saw that she was weeping, and could not control her tears, nor even the sobs that were shaking her bosom. Alexei Alexandrovich stood so as to screen her, giving her time to recover herself.

"For the third time I offer you my arm," he said to her after a short interval, turning to her. Anna gazed at him and did not know what to say. Princess Betsy came to her rescue.

## Anna Karenina

"No, Alexei Alexandrovich; I brought Anna and I promised to take her home," put in Betsy.

"Excuse me, Princess," he said smiling courteously, but looking her very firmly in the face, "but I see that Anna's not very well, and I wish her to come home with me."

Anna looked about her in a frightened way, got up submissively, and laid her hand on her husband's arm.

"I'll send to him and find out, and let you know," Betsy whispered to her.

As they left the pavilion, Alexei Alexandrovich, as always, talked to those he met, and Anna had, as always, to talk and answer; but she was utterly beside herself, and moved hanging on her husband's arm, as though in a dream.

"Is he killed or not? Is it true? Will he come or not? Shall I see him today?" she was thinking.

She took her seat in her husband's carriage in silence, and in silence drove out of the press of carriages. In spite of all he had seen, Alexei Alexandrovich still did not allow himself to consider his wife's real condition. He merely saw the outward symptoms. He saw that she was behaving unbecomingly, and considered it his duty to tell her so. But it was very difficult for him not to say more, to tell her nothing but that. He opened his mouth to tell her she had behaved unbecomingly, but he could not help saying something utterly different.

"What an inclination we all have, though, for these cruel spectacles!" he said. "I observe..."

"Eh? I don't understand," said Anna contemptuously.

He was offended, and at once began to say what he had meant to say.

"I am obliged to tell you..." he began.

"So now we are to have it out," she thought, and she felt frightened.

"I am obliged to tell you that your behavior has been unbecoming today," he said to her, in French.

"In what way has my behavior been unbecoming?" she said aloud, turning her head swiftly and looking him straight in the face, not with the bright expression that seemed covering something, but with a look of determination, under which she concealed with difficulty the dismay she was feeling.

"Be careful," he said, pointing to the open window opposite the coachman.

He got up and pulled up the window.

"What did you consider unbecoming?" she repeated.

"The despair you were unable to conceal at the accident to one of the riders."

He waited for her to retort, but she was silent, looking straight before her.

"I have already begged you so to conduct yourself in society that even malicious tongues can find nothing to say against you. There was a time when I spoke of your inward attitude, but I am not speaking of that now. Now I speak only of your external attitude. You have behaved improperly, and I would wish it not to occur again."

## Anna Karenina

She did not hear half of what he was saying; she felt panic-stricken before him, and was thinking whether it was true that Vronsky was not killed. Was it of him they were speaking when they said the rider was unhurt, but that the back of the horse had been broken? She merely smiled with a forced smile when he finished, and made no reply, because she had not heard what he said. Alexei Alexandrovich had begun to speak boldly, but as he realized plainly what he was speaking of, the dismay she was feeling infected him too. He saw the smile, and a strange misapprehension came over him.

"She is smiling at my suspicions. Yes, she will tell me directly what she told me before; that there is no foundation for my suspicions, that the whole thing is absurd."

At that moment, when the revelation of everything was hanging over him, there was nothing he expected so much as that she would answer mockingly, as before, that his suspicions were absurd and utterly groundless. So terrible to him was what he knew that now he was ready to believe anything. But the expression of her face, scared and gloomy, did not now promise even deception.

"Possibly I was mistaken," said he. "If so, I beg your pardon."

"No, you were not mistaken," she said slowly, looking desperately into his frigid face. "You were not mistaken. I was in despair, nor could I help being in despair. I am listening to you, but I am thinking of him. I love him, I am his mistress; I can't bear you; I'm afraid of you, and I hate you... You can do what you like to me."

And dropping back into the corner of the carriage, she broke into sobs, hiding her face in her hands. Alexei Alexandrovich did not stir, and kept looking straight before him. But his whole face suddenly bore the solemn rigidity of the dead, and his expression did not change during the whole time of the drive home. On reaching the house he turned his head to her, still with the same expression.

"Very well! But I expect a strict observance of the external forms of propriety till such time" his voice shook "as I may take measures to secure my honor, and communicate them to you."

He got out first and helped her to get out. Before the servants he pressed her hand, took his seat in the carriage, and drove back to Peterburg.

Immediately afterward a footman came from Princess Betsy and brought Anna a note.

"I sent to Alexei to find out how he is, and he writes me he is quite well and unhurt, but in despair."

"So he will be here," she thought. "What a good thing I told him all."

She glanced at her watch. She had still three hours to wait, and the memories of their last meeting set her blood in flame.

"My God, how light it is! It's dreadful, but I do love to see his face, and I do love this fantastic light.... My husband! Oh! yes... Well, thank God! everything's at an end with him."

**XXX.**

In the little German watering place to which the Shcherbatskys had betaken themselves, as in all places indeed where people are gathered together, the usual process, as it were, of the crystallization of society went on, assigning to each member of that society a definite and unalterable place. Just as the particle of water in frost, definitely and unalterably, takes the special form of the crystal of snow, so each new person that arrived at the

springs was at once placed in his or her peculiar place.

Furst Shcherbatsky, samt Gemahlin und Tochter, by the apartments they took, and from their name and from the friends they made, were immediately crystallized into a definite place marked out for them.

There was visiting the watering place that year a real German Furstin, in consequence of which the crystallizing process went on more vigorously than ever. Princess Shcherbatsky wished, above everything, to present her daughter to this German Princess, and the day after their arrival she duly performed this rite. Kitty made a low and graceful curtsy in the "very simple," that is to say, very elegant frock that had been ordered for her from Paris. The German Princess said, "I hope the roses will soon come back to this pretty little face," and for the Shcherbatsky certain definite lines of existence were at once laid down, from which there was no departing. The Shcherbatskys made the acquaintance too of the family of an English lady, and of a German Countess and her son, wounded in the last war, and of a learned Swede, and of M. Canut and his sister. Yet inevitably the Shcherbatskys were thrown most into the society of a Moscow lady, Marya Eugenyevna Rtishcheva and her daughter, whom Kitty disliked, because she had fallen ill, like herself, over a love affair; and a Moscow colonel, whom Kitty had known from childhood, and had always seen in uniform and epaulets, and who now, with his little eyes and his open neck and flowered cravat, was uncommonly ridiculous and tedious, because there was no getting rid of him. When all this was so firmly established, Kitty began to be very much bored, especially as the Prince went off to Carlsbad and she was left alone with her mother. She took no interest in the people she knew, feeling that nothing fresh would come of them. Her chief mental interest in the watering place consisted in watching and making theories about the people she did not know. It was characteristic of Kitty that she always imagined everything in people in the most favorable light possible, especially so in those she did not know. And now, as she made surmises as to who people were, what were their relations to one another, and what they were like, Kitty endowed them with the most marvelous and noble characters, and found confirmation in her observations.

Of these people the one that attracted her most was a Russian girl who had come to the watering place with an invalid Russian lady, Madame Stahl, as everyone called her. Madame Stahl belonged to the highest society, but she was so ill that she could not walk, and only on exceptionally fine days made her appearance at the springs in an invalid carriage. But it was not so much from ill-health as from pride so Princess Shcherbatskaia interpreted it that Madame Stahl had not made the acquaintance of anyone among the Russians there. The Russian girl looked after Madame Stahl, and besides that, she was, as Kitty observed, on friendly terms with all the invalids who were seriously ill and there were many of them at the springs and was solicitous over them in the most natural way. This Russian girl was not, as Kitty gathered, related to Madame Stahl, nor was she a paid attendant. Madame Stahl called her Varenka, and other people called her "Mademoiselle Varenka." Apart from the interest Kitty took in this girl's relations with Madame Stahl and with other unknown persons, Kitty, as often happened, felt an inexplicable attraction to Mademoiselle Varenka, and was aware when their eyes met that she too liked her.

Of Mademoiselle Varenka one would not say that she had passed her first youth, but she was, as it were, a creature without youth; she might have been taken for nineteen or for thirty. If her features were criticized separately, she was handsome rather than plain, in spite of the sickly hue of her face. Hers would have been a good figure, too, if it had not been for her extreme thinness and the size of her head, which was too large for her medium height. But she was not likely to be attractive to men. She was like a fine flower, already past its bloom and without fragrance, though the petals were still unwithered. Moreover, she would have been unattractive to men also from the lack of just what Kitty had too much of of the suppressed fire of vitality, and the consciousness of her own attractiveness.

She always seemed absorbed in work, beyond a doubt, and so it seemed as if she could take no interest in anything outside it. It was just this contrast with her own position that was for Kitty the great attraction of Mademoiselle Varenka. Kitty felt that in her, in her manner of life, she would find an example of what she was



## Anna Karenina

now so painfully seeking: interest in life, a dignity in life apart from the worldly relations of girls with men, which so revolted Kitty, and appeared to her now as a shameful exhibition of goods in search of a purchaser. The more attentively Kitty watched her unknown friend, the more convinced she was that this girl was the perfect creature she fancied her, and the more eagerly she wished to make her acquaintance.

The two girls used to meet several times a day, and every time they met Kitty's eyes said: "Who are you? What are you? Are you really the exquisite creature I imagine you to be? But for goodness' sake don't suppose," her eyes added, "that I would force my acquaintance on you I simply admire you and like you." "I like you too, and you're very, very sweet. And I should like you better still, if I had time," answered the eyes of the unknown girl. Kitty saw, indeed, that she was always busy. Either she was taking the children of a Russian family home from the springs, or fetching a shawl for a sick lady, and wrapping her up in it, or trying to interest an irritable invalid, or selecting and buying teacakes for someone.

Soon after the arrival of the Shcherbatskys there appeared in the morning crowd at the springs two persons who attracted universal and unfavorable attention. These were a tall man with a stooping figure and huge hands, in an old coat too short for him, with black, simple, and yet terrible eyes, and a pock-marked, kind-looking woman, very badly and tastelessly dressed. Recognizing these persons as Russians, Kitty had already in her imagination begun constructing a delightful and touching romance about them. But the Princess, having ascertained from the Kurliste that this was Nikolai Levin and Marya Nikolaevna, explained to Kitty what a bad man this Levin was, and all her fancies about these two people vanished. Not so much from what her mother told her, as from the fact that it was Konstantin's brother, this pair suddenly seemed to Kitty in the highest degree unpleasant. This Levin, with his continual twitching of his head, aroused in her now an irrepressible feeling of disgust.

It seemed to her that his big, terrible eyes, which persistently pursued her, expressed a feeling of hatred and contempt, and she tried to avoid meeting him.

### XXXI.

It was a foul day; it had been raining all the morning, and the invalids, with their parasols, had flocked into the arcades.

Kitty was walking there with her mother and the Moscow colonel, smart and jaunty in his European coat, bought ready-made at Frankfort. They were walking on one side of the arcade, trying to avoid Levin, who was walking on the other side. Varenka, in her dark dress, in a black hat with a turndown brim, was walking up and down the whole length of the arcade with a blind Frenchwoman, and, every time she met Kitty, they exchanged friendly glances.

"Mamma, couldn't I speak to her?" said Kitty, watching her unknown friend, and noticing that she was going up to the spring, and that they might come there together.

"Oh, if you want to so much, I'll find out about her first and make her acquaintance myself," answered her mother. "What do you see in her out of the way? A companion, most probably. If you like, I'll make acquaintance with Madame Stahl; I used to know her belle-soeur," added the Princess, lifting her head haughtily.

Kitty knew that the Princess was offended because Madame Stahl had apparently avoided making her acquaintance. Kitty did not insist.

"How wonderfully sweet she is!" she said, gazing at Varenka just as she handed a glass to the Frenchwoman. "Look how natural and sweet it all is."

## Anna Karenina

"It's so funny to see your engouements," said the Princess. "No, we'd better go back," she added, noticing Levin coming toward them with his companion and a German doctor, to whom he was talking very noisily and angrily.

They turned to go back, when suddenly they heard, not merely noisy talk, but actual shouting. Levin, stopping short, was shouting at the doctor, and the doctor, too, was excited. A crowd gathered about them. The Princess and Kitty beat a hasty retreat, while the colonel joined the crowd to find out what was up.

A few minutes later the colonel overtook them.

"What was it?" inquired the Princess.

"Scandalous and disgraceful!" answered the colonel. "The one thing to be dreaded is meeting Russians abroad. That tall gentleman was abusing the doctor, flinging all sorts of insults at him because he wasn't treating him quite as he liked, and he began waving his stick at him. It's simply scandalous!"

"Oh, how unpleasant!" said the Princess. "Well, and how did it end?"

"Luckily at that point that miss... the one in the mushroom hat... intervened. She is a Russian lady, I think," said the colonel.

"Mademoiselle Varenka?" Kitty asked joyously.

"Yes, yes. She came to the rescue before anyone else; she took the man by the arm and led him away."

"There, mamma," said Kitty, "yet you wonder why I'm enthusiastic about her."

The next day, as she watched her unknown friend, Kitty noticed that Mademoiselle Varenka was already on the same terms with Levin and his companion as with her other proteges. She went up to them, entered into conversation with them, and served as interpreter for the woman, who could not speak any foreign language.

Kitty began to entreat her mother still more urgently to let her make acquaintance with Varenka. And, disagreeable as it was to the Princess to seem to take the first step in wishing to make the acquaintance of Madame Stahl, who thought fit to give herself airs, she made inquiries about Varenka, and, having ascertained particulars about her tending to prove that there could be no harm, even if little good in the acquaintance, she herself approached Varenka and made acquaintance with her.

Choosing a time when her daughter had gone to the spring, while Varenka had stopped outside the baker's, the Princess approached her.

"Allow me to make your acquaintance," she said, with her dignified smile. "My daughter has lost her heart to you," she said. "Possibly you do not know me. I am..."

"That feeling is more than reciprocal, Princess," Varenka answered hurriedly.

"What a good deed you did yesterday to our poor compatriot!" said the Princess.

Varenka flushed a little.

"I don't remember. I don't think I did anything," she said.

"Why, you saved that Levin from disagreeable consequences."

## Anna Karenina

"Yes, sa compagne called me, and I tried to pacify him; he's very ill, and was dissatisfied with the doctor. I'm used to looking after such invalids."

"Yes, I've heard you live at Mentone with your aunt I think Madame Stahl: I used to know her belle-soeur."

"No, she's not my aunt. I call her maman, but I am not related to her; I was brought up by her," answered Varenka, flushing a little again.

This was so simply said, and so sweet was the truthful and candid expression of her face, that the Princess saw why Kitty had taken such a fancy to Varenka.

"Well, and what's this Levin going to do?" asked the Princess.

"He's going away," answered Varenka.

At that instant Kitty came up from the spring beaming with delight because her mother had become acquainted with her unknown friend.

"See, Kitty, your intense desire to make friends with Mademoiselle..."

"Varenka," Varenka put in smiling, "that's what everyone calls me."

Kitty blushed with pleasure, and slowly, without speaking, squeezed her new friend's hand, which did not respond to her pressure, but lay motionless in her hand. The hand did not respond to her pressure, but the face of Mademoiselle Varenka glowed with a soft, glad, though rather mournful, smile, that showed large but handsome teeth.

"I have long wished for this too," she said.

"But "But you are so busy..."

"Oh, no I'm not at all busy," answered Varenka, but at that moment she had to leave her new friends because two little Russian girls, children of an invalid, ran up to her.

"Varenka, mamma's calling!" they cried.

And Varenka went after them.

## XXXII.

The particulars which the Princess had learned in regard to Varenka's past and her relations with Madame Stahl were as follows:

Madame Stahl, of whom some people said that she had worried her husband out of his life, while others said it was he who had made her wretched by his immoral behavior, had always been a woman of weak health and enthusiastic temperament. When, after her separation from her husband, she gave birth to her only child, the child had died almost immediately, and the family of Madame Stahl, knowing her sensibility and fearing the news would kill her, had substituted another child, a baby born the same night and in the same house in Peterburg, the daughter of the chief cook of the Imperial Household. This was Varenka. Madame Stahl learned later on that Varenka was not her own child, but she went on bringing her up, especially as very soon afterward Varenka had

not a relation of her own living.

Madame Stahl had now been living without a break, more than ten years abroad, in the south, never leaving her couch. And some people said that Madame Stahl had made her social position as a philanthropic, highly religious woman; other people said she really was at heart the highly ethical being, living for nothing but the good of her fellow creatures, which she represented herself to be. No one knew what her faith was—Catholic, Protestant, or Orthodox. But one fact was indubitable—she was in amicable relations with the highest dignitaries of all the churches and sects.

Varenka lived with her all the while abroad, and everyone who knew Madame Stahl knew and liked Mademoiselle Varenka, as everyone called her.

Having learned all these facts, the Princess found nothing to object to in her daughter's intimacy with Varenka, more especially as Varenka's breeding and education were of the best—she spoke French and English extremely well—and, what was of the most weight, brought a message from Madame Stahl expressing her regret that she had been prevented by her ill-health from making the acquaintance of the Princess.

After getting to know Varenka, Kitty became more and more fascinated by her friend, and every day she discovered new virtues in her.

The Princess, hearing that Varenka had a good voice, asked her to come and sing to them in the evening.

"Kitty plays, and we have a piano; not a good one, it's true, but you will give us so much pleasure," said the Princess with her affected smile, which Kitty disliked particularly just then, because she noticed that Varenka had no inclination to sing. Varenka came, however, in the evening, and brought a roll of music with her. The Princess had invited Marya Eugenyevna and her daughter, and the colonel.

Varenka seemed quite unaffected by the presence of persons whom she did not know, and she went directly to the piano. She could not accompany herself, but she could sing music at sight very well. Kitty, who played well, accompanied her.

"You have an extraordinary talent," the Princess said to her after Varenka had sung the first song excellently.

Marya Eugenyevna and her daughter expressed their thanks and admiration.

"Look," said the colonel, looking out of the window, "what an audience has collected to listen to you."

There actually was a considerable crowd under the windows.

"I am very glad it gives you pleasure," Varenka answered simply.

Kitty looked with pride at her friend. She was enchanted by her talent, and her voice, and her face, but most of all by her manner, by Varenka's obviously thinking nothing of her singing and being quite unmoved by their praise. She seemed only to be asking: "Am I to sing again, or is that enough?"

"If it had been I," thought Kitty, "how proud I should have been! How delighted I should have been to see that crowd under the windows! But she's utterly unmoved by it. Her only motive is to avoid refusing and to please maman. What is there about her? What is it gives her the power to look down on everything, to be calm independently of everything? How I should like to know it, and to learn it from her!" thought Kitty, gazing into her serene face. The Princess asked Varenka to sing again, and Varenka sang another song, also smoothly, distinctly, and well, standing erect at the piano and beating time on it with her thin, dark-skinned hand.

## Anna Karenina

The next song in the book was an Italian one. Kitty played the opening bars, and looked round at Varenka.

"Let's skip that," said Varenka, flushing a little.

Kitty let her eyes rest on Varenka's face, with a look of dismay and inquiry.

"Very well, the next one," she said hurriedly, turning over the pages, and at once feeling that there was something connected with the song.

"No," answered Varenka with a smile, laying her hand on the music, "no, let's have that one." And she sang it just as quietly, as coolly, and as well as the others.

When she had finished, they all thanked her again, and went off to tea. Kitty and Varenka went out into the little garden that adjoined the house.

"Am I right, that you have some reminiscences connected with that song?" said Kitty. "Don't tell me," she added hastily, "only say if I'm right."

"No, why not? I'll tell you," said Varenka simply, and, without waiting for a reply, she went on: "Yes, it brings up memories, once painful ones. I cared for someone once, and I used to sing him that song."

Kitty with big, wide-open eyes gazed silently, sympathetically at Varenka.

"I cared for him, and he cared for me; but his mother was opposed, and he married another girl. He's living now not far from us, and I see him sometimes. You didn't think I had a love story, too," she said, and there was a faint gleam in her handsome face of that fire which Kitty felt must once have glowed all over her.

"I didn't think so? Why, if I were a man, I could never care for anyone else after knowing you. Only I can't understand how he could, to please his mother, forget you and make you unhappy; he had no heart."

"Oh, no, he's a very good man, and I'm not unhappy; quite the contrary I'm very happy. Well, we shan't be singing any more now," she added, turning toward the house.

"How good you are! How good you are!" cried Kitty, and stopping her, she kissed her. "If I could only be even a little like you!"

"Why should you be like anyone? You're lovely as you are," said Varenka, smiling her gentle, weary smile.

"No, I'm not lovely at all. Come, tell me... Stop a minute, let's sit down," said Kitty, making her sit down again beside her. "Tell me, isn't it humiliating to think that a man has disdained your love, that he hasn't cared for it?..."

"But he didn't disdain it; I believe he cared for me, but he was a dutiful son...."

"Yes, but if it hadn't been on account of his mother, if it had been his own doing?..." said Kitty, feeling she was giving away her secret, and that her face, burning with the flush of shame, had betrayed her already.

"In that case he would have done wrong, and I should not have regretted him," answered Varenka, evidently realizing that they were now talking not of her, but of Kitty.

"But the humiliation," said Kitty, "the humiliation one can never forget never!" she said, remembering her look at the last ball during the pause in the music.

## Anna Karenina

"Where is the humiliation? Why, you did nothing wrong?"

"Worse than wrong shameful."

Varenka shook her head and laid her hand on Kitty's.

"Why, what's shameful about it?" she said. "You didn't tell a man who didn't care for you, that you loved him, did you?"

"Of course not; I never said a word, but he knew it. No, no, there are looks, there are ways; I can't forget it, if I live a hundred years."

"Why so? I don't understand. The whole point is whether you love him now or not," said Varenka, who called everything by its name.

"I hate him; I can't forgive myself."

"Why, what for?"

"The shame, the humiliation!"

"Oh! if everyone were as sensitive as you are!" said Varenka. "There isn't a girl who hasn't been through the same. And it's all so unimportant."

"Why, what is important?" said Kitty, looking into her face with inquisitive wonder.

"Oh, there's so much that's important," said Varenka, smiling.

"Why, what?"

"Oh, so much that's more important," answered Varenka, not knowing what to say. But at that instant they heard the Princess's voice from the window. "Kitty, it's cold! Either get a shawl, or come indoors."

"It really is time to go in!" said Varenka, getting up. "I have to go on to Madame Berthe's; she asked me to."

Kitty held her by the hand, and with passionate curiosity and entreaty her eyes asked her: "What is it, what is this of such importance, that gives you such tranquility? You know, tell me!" But Varenka did not even know what Kitty's eyes were asking her. She merely thought that she had to go to see Madame Berthe too that evening, and to make haste home in time for maman's tea at twelve o'clock. She went indoors, collected her music, and saying good-by to everyone, was about to go.

"Allow me to see you home," said the colonel.

"Yes, how can you go alone at night like this?" chimed in the Princess. "Anyway, I'll send Parasha."

Kitty saw that Varenka could hardly restrain a smile at the idea that she needed an escort.

"No, I always go about alone and nothing ever happens to me," she said, taking her hat. And kissing Kitty once more, without saying what was important, she stepped out courageously with the music under her arm and vanished into the twilight of the summer night, bearing away with her her secret of what was important, and what gave her that calm and dignity so much to be envied.

## XXXIII.

Kitty made the acquaintance of Madame Stahl too, and this acquaintance, together with her friendship with Varenka, did not merely exercise a great influence on her—it also comforted her in her mental distress. She found this comfort through a completely new world being opened to her by means of this acquaintance, a world having nothing in common with her past; an exalted, noble world, from the height of which she could contemplate her past calmly. It was revealed to her that besides the instinctive life to which Kitty had given herself up hitherto there was a spiritual life. This life was disclosed in religion, but a religion having nothing in common with that one which Kitty had known from childhood, and which found expression in masses and evening services at the Widow's Home, where one might meet one's friends; and in learning by heart Slavonic texts with the priest. This was a lofty, mysterious religion connected with a whole series of noble thoughts and feelings, which one could not merely believe because one was told to believe, but which one could love.

Kitty found all this out not from words. Madame Stahl talked to Kitty as to a charming child that one regards with pleasure, as one regards the memory of one's youth, and only once she said in passing that in all human sorrows nothing gives comfort but love and faith, and that in the sight of Christ's compassion for us no sorrow is trifling—and immediately talked of other things. But in every gesture of Madame Stahl, in every word, in every heavenly—as Kitty called it—look; and, above all, in the whole story of her life, which she heard from Varenka, Kitty recognized that something "that was important," of which, till then, she had known nothing.

Yet, elevated as Madame Stahl's character was, touching as was her story, and exalted and moving as was her speech, Kitty could not help detecting in her some traits which perplexed her. She noticed that, when questioning her about her family, Madame Stahl had smiled contemptuously, which was not in accord with Christian meekness. Kitty noticed, too, that when she had found a Catholic priest with her, Madame Stahl had studiously kept her face in the shadow of the lamp shade and had smiled in a peculiar way. Trivial as these two observations were, they perplexed her, and she had her doubts as to Madame Stahl. But on the other hand Varenka, alone in the world, without friends or relations, with a melancholy disappointment in the past, desiring nothing, regretting nothing, was just that perfection of which Kitty dared hardly dream. In Varenka she realized that one has but to forget oneself and love others, and one will be calm, happy and good. And that was what Kitty longed to be. Seeing now clearly what was most important, Kitty was not satisfied with being enthusiastic over it; she at once gave herself up with her whole soul to the new life that was opening to her. From Varenka's accounts of the doings of Madame Stahl and other people whom she mentioned, Kitty had already constructed the plan of her own future life. She would, like Madame Stahl's niece, Aline, of whom Varenka had talked to her a great deal, seek out those who were in trouble, wherever she might be living, help them as far as she could, giving them the Gospel; she would read the Gospel to the sick, to the criminals, to the dying. The idea of reading the Gospel to criminals, as Aline did, particularly fascinated Kitty. But all these were secret dreams, of which Kitty did not talk either to her mother or to Varenka.

While awaiting the time for carrying out her plans on a large scale, however, Kitty, even then at the springs, where there were so many people ill and unhappy, readily found a chance for practicing her new principles in imitation of Varenka.

At first the Princess noticed nothing but that Kitty was much under the influence of her engouement, as she called it, for Madame Stahl, and still more for Varenka. She saw that Kitty did not merely imitate Varenka in her conduct, but unconsciously imitated her in her manner of walking, of talking, of blinking her eyes. But later on the Princess noticed that, apart from this adoration, some kind of serious spiritual change was taking place in her daughter.

The Princess saw that in the evenings Kitty read a French Testament that Madame Stahl had given her—a thing she had never done before; that she avoided society acquaintances and associated with the sick people who were

## Anna Karenina

under Varenka's protection, and especially one poor family, that of a sick painter, Petrov. Kitty was unmistakably proud of playing the part of a sister of mercy in that family. All this was well enough, and the Princess had nothing to say against it, especially as Petrov's wife was a perfectly respectable woman, and that the German Princess, noticing Kitty's devotion, praised her, calling her an angel of consolation. All this would have been very well, if there had been no exaggeration. But the Princess saw that her daughter was rushing into extremes, and so indeed she told her.

"Il ne faut jamais rien outrer," she said to her.

Her daughter made her no reply, but in her heart she thought that one could not talk about exaggeration where Christianity was concerned. What exaggeration could there be in the practice of a doctrine wherein one was bidden to turn the other cheek when one was smitten, and give one's shirt if one's coat were taken? But the Princess disliked this exaggeration, and disliked even more the fact that she felt her daughter did not care to show her all her heart. Kitty did in fact conceal her new views and feelings from her mother. She concealed them not because she did not respect or did not love her mother, but simply because she was her mother. She would have revealed them to anyone sooner than to her mother.

"How is it Anna Pavlovna's not been to see us for so long?" the Princess said one day, referring to Madame Petrov. "I've asked her, but she seems put out about something."

"No, I've not noticed it, maman," said Kitty, flushing hotly.

"Is it long since you've been to see them?"

"We intend making an excursion to the mountains tomorrow," answered Kitty.

"Well, you may go," answered the Princess, gazing at her daughter's embarrassed face and trying to guess the cause of her embarrassment.

That day Varenka came to dinner and told them that Anna Pavlovna had changed her mind and given up the excursion for the morrow. And the Princess noticed again that Kitty reddened.

"Kitty, haven't you had some misunderstanding with the Petrovs?" said the Princess, when they were left alone. "Why has she given up sending the children and coming to see us?"

Kitty answered that nothing had happened between them, and that she could not tell why Anna Pavlovna seemed displeased with her. Kitty answered perfectly truthfully. She did not know the reason Anna Pavlovna had changed toward her, but she guessed it. She guessed at something which she could not tell her mother, which she did not put into words to herself. It was one of those things which one knows but which one can never speak of even to oneself, so terrible and shameful would it be to be mistaken.

Again and again she went over in her memory all her relations with the family. She remembered the simple delight expressed on the round, good-natured face of Anna Pavlovna at their meetings; she remembered their secret confabulations about the invalid, their plots to draw him away from the work which was forbidden him, and to get him out of doors; the devotion of the youngest boy, who used to call her "my Kitty," and would not go to bed without her. How lovely it all was! "Then she recalled the thin, terribly thin figure of Petrov, with his long neck, in his brown coat, his scant, curly hair, his questioning blue eyes that were so terrible to Kitty at first, and his painful attempts to seem hearty and lively in her presence. She recalled the efforts she had made at first to overcome the repugnance she felt for him, as for all consumptive people, and the pains it had cost her to think of things to say to him. She recalled the timid, softened look with which he gazed at her, and the strange feeling of compassion and awkwardness, and later of a sense of her own goodness, which she had felt at it. How lovely it all



## Anna Karenina

was! But all that was at first. Now, a few days ago, everything was suddenly spoiled. Anna Pavlovna had met Kitty with affected cordiality, and had kept continual watch on her and on her husband.

Could that touching pleasure he showed when she came near be the cause of Anna Pavlovna's coolness?

"Yes," she mused, "there was something unnatural about Anna Pavlovna, and utterly unlike her good nature, when she said angrily the day before yesterday: 'There, he will keep waiting for you; he wouldn't drink his coffee without you, though he's grown so dreadfully weak.'"

"Yes, perhaps, too, she didn't like it when I gave him the rug. It was all so simple, but he took it so awkwardly, and was so long thanking me, that I felt awkward too. And then that portrait of me he did so well. And most of all that look of confusion and tenderness! Yes, yes, that's it!" Kitty repeated to herself with horror. "No, it can't be, it oughtn't to be! He's so much to be pitied!" she said to herself directly after.

This doubt poisoned the charm of her new life.

### XXXIV.

Before the end of the water cure, Prince Shcherbatsky, who had gone on from Carlsbad to Baden and Kissingen to Russian friends to get a breath of Russian atmosphere, as he said came back to his wife and daughter.

The views of the Prince and of the Princess on life abroad were completely opposed. The Princess thought everything delightful, and in spite of her established position in Russian society, she tried abroad to be like a European fashionable lady, which she was not for the simple reason that she was a typical Russian gentlewoman; and so she was affected, which did not altogether suit her. The Prince, on the contrary, thought everything foreign detestable, got sick of European life, kept to his Russian habits, and purposely tried to show himself abroad less European than he was in reality.

The Prince returned thinner, with the skin hanging in loose bags on his cheeks, but in the most cheerful frame of mind. His good humor was even greater when he saw Kitty completely recovered. The news of Kitty's friendship with Madame Stahl and Varenka, and the reports the Princess gave him of some kind of change she had noticed in Kitty, troubled the Prince and aroused his habitual feeling of jealousy of everything that drew his daughter away from him, and a dread that his daughter might have got out of the reach of his influence into regions inaccessible to him. But this unpleasant news was all drowned in the sea of kindness and good humor which was always within him, and more so than ever since his course of Carlsbad waters.

The day after his arrival the Prince, in his long overcoat, with his Russian wrinkles and baggy cheeks propped up by a starched collar, set off with his daughter to the spring in the greatest good humor.

It was a lovely morning: the tidy, cheerful houses with their little gardens, the sight of the red-faced, red-armed, beer-drinking German waitresses, working away merrily, and bright sun did one's heart good. But the nearer they got to the springs the oftener they met sick people; and their appearance seemed more pitiable than ever among the everyday conditions of prosperous German life. Kitty was no longer struck by this contrast. The bright sun, the brilliant green of the foliage, the strains of the music were for her the natural setting of all these familiar faces, with their changes to greater emaciation or to convalescence, for which she watched. But to the Prince the brightness and gaiety of the June morning, and the sound of the orchestra playing a gay waltz then in fashion, and above all, the appearance of the robust waitresses, seemed something unseemly and monstrous, in conjunction with these slowly moving cadavers gathered together from all parts of Europe.

In spite of his feeling of pride and, as it were, of the return of youth, when he walked with his favorite daughter on

## Anna Karenina

his arm, he felt awkward, and almost ashamed of his vigorous step and his sturdy, stout and fat limbs. He felt almost like a man not dressed in a crowd.

"Present, present me to your new friends," he said to his daughter, squeezing her hand with his elbow. "I like even your horrid Soden for making you so well again. Only it's melancholy, very melancholy here. Who's that?"

Kitty mentioned the names of all the people they met, of some with whom she was acquainted, and some with whom she was not. At the very entrance of the garden they met the blind lady, Madame Berthe, with her guide, and the Prince was delighted to see the old Frenchwoman's face light up when she heard Kitty's voice. She at once began talking to him with the exaggerated politeness of the French, applauding him for having such a delightful daughter, extolling Kitty to the skies before her face, and calling her a treasure, a pearl and a consoling angel.

"Well, she's the second angel, then," said the Prince, smiling. "She calls Mademoiselle Varenka angel number one."

"Oh! Mademoiselle Varenka she's a real angel, allez," Madame Berthe assented.

In the arcade they met Varenka herself. She was walking rapidly toward them, carrying an elegant red bag.

"Here is papa come," Kitty said to her.

Varenka made simply and naturally as she did everything a movement between a bow and curtsy, and immediately began talking to the Prince, without shyness, naturally, as she talked to everyone.

"Of course I know you; I know you very well," the Prince said to her with a smile, in which Kitty detected with joy that her father liked her friend. "Where are you off to in such haste?"

"Maman's here," she said, turning to Kitty. "She has not slept all night, and the doctor advised her to go out. I'm taking her her work."

"So that's angel number one?" said the Prince when Varenka had gone on.

Kitty saw that her father had meant to make fun of Varenka, but that he could not do it because he liked her.

"Come, so we shall see all your friends," he went on, "even Madame Stahl, if she deigns to recognize me."

"Why, did you know her, papa?" Kitty asked apprehensively, catching the gleam of irony that kindled in the Prince's eyes at the mention of Madame Stahl.

"I used to know her husband, and her too a little, before she'd joined the Pietists."

"What is a Pietist, papa?" asked Kitty, dismayed to find that what she prized so highly in Madame Stahl had a name.

"I don't quite know myself. I only know that she thanks God for everything, for every misfortune, and thanks God too that her husband died. And that's rather droll, as they didn't get on together. Who's that? What a piteous face!" he asked, noticing a sick man of medium height sitting on a bench, wearing a brown overcoat and white trousers that fell in strange folds about his long, fleshless legs. This man lifted his straw hat, showed his scanty curly hair and high forehead, painfully reddened by the pressure of the hat.

## Anna Karenina

"That's Petrov, an artist," answered Kitty blushing. "And that's his wife," she added, indicating Anna Pavlovna, who, as though on purpose, at the very instant they approached, walked away after a child that had run off along a path.

"Poor fellow! And what a fine face he has!" said the Prince. "Why don't you go up to him? He wanted to speak to you."

"Well, let us go, then," said Kitty, turning round resolutely. "How are you feeling today?" she asked Petrov.

Petrov got up, leaning on his stick, and looked shyly at the Prince.

"This is my daughter," said the Prince. "Let me introduce myself."

The painter bowed and smiled, showing his strangely dazzling white teeth.

"We expected you yesterday, Princess," he said to Kitty.

He staggered as he said this, and then repeated the motion, trying to make it seem as if it had been intentional.

"I meant to come, but Varenka said that Anna Pavlovna sent word you were not going."

"Not going!" said Petrov, blushing, and immediately beginning to cough, and his eyes sought his wife. "Aneta! Aneta!" he said loudly, and the swollen veins stood out like cords on his thin white neck.

Anna Pavlovna came up.

"So you sent word to the Princess that we weren't going!" he whispered to her angrily, losing his voice.

"Good morning, Princess," said Anna Pavlovna, with an assumed smile utterly unlike her former manner. "Very glad to make your acquaintance," she said to the Prince. "You've long been expected, Prince."

"Why did you send word to the Princess that we weren't going?" the artist whispered hoarsely again, still more angrily, obviously exasperated that his voice failed him so that he could not give his words the expression he would have liked to.

"Oh, mercy on us! I thought we weren't going," his wife answered crossly.

"What, when..." He coughed and waved his hand.

The Prince took off his hat and moved away with his daughter.

"Ah! ah!" he sighed deeply. "Oh, poor things!"

"Yes, papa," answered Kitty. "And you must know they've three children, no servant, and scarcely any means. He gets something from the Academy," she went on briskly, trying to drown the distress that queer change in Anna Pavlovna's manner toward her had aroused in her. "Oh, here's Madame Stahl," said Kitty, indicating an invalid carriage, where, propped on pillows, something in gray and blue was lying under a sunshade. This was Madame Stahl. Behind her stood the gloomy, robust German workman who pushed the carriage. Close by was standing a flaxen-headed Swedish Count, whom Kitty knew by name. Several invalids were lingering near the low carriage, staring at the lady as though she were some curiosity.

## Anna Karenina

The Prince walked up to her, and Kitty detected that disconcerting gleam of irony in his eyes. He walked up to Madame Stahl, and addressed her with extreme courtesy and charm in that excellent French which so few speak nowadays.

"I don't know if you remember me, but I must recall myself to thank you for your kindness to my daughter," he said taking off his hat and not putting it on again.

"Prince Alexandre Shcherbatsky," said Madame Stahl, lifting upon him her heavenly eyes, in which Kitty discerned a look of annoyance. "Delighted! I have taken a great fancy to your daughter."

"You are still in weak health?"

"Yes; I'm used to it," said Madame Stahl, and she introduced the Prince to the Swedish Count.

"You are scarcely changed at all," the Prince said to her. "It's ten or eleven years since I had the honor of seeing you."

"Yes; God sends the cross and sends the strength to bear it. Often one wonders what is the goal of this life?... The other side!" she said angrily to Varenka, who had rearranged the rug over her feet not to her satisfaction.

"To do good, probably," said the Prince with a twinkle in his eye.

"That is not for us to judge," said Madame Stahl, perceiving the shade of expression on the Prince's face. "So you will send me that book, dear Count? I'm very grateful to you," she said to the young Swede.

"Ah!" cried the Prince, catching sight of the Moscow colonel standing near, and with a bow to Madame Stahl he walked away with his daughter and the Moscow colonel, who joined them.

"That's our aristocracy, Prince!" the Moscow colonel said with ironical intention. He cherished a grudge against Madame Stahl for not making his acquaintance.

"She's the same as ever," replied the Prince.

"Did you know her before her illness, Prince that's to say, before she took to her bed?"

"Yes. She took to her bed before my eyes," said the Prince.

"They say it's ten years since she has stood on her feet."

"She doesn't stand up because her legs are too short. She has a very bad figure."

"Papa, it's not possible!" cried Kitty.

"That's what wicked tongues say, my darling. And your Varenka is to endure still," he added. "Oh, these invalid ladies!"

"Oh, no, papa!" Kitty objected warmly. "Varenka worships her. And then she does so much good! Ask anyone! Everyone knows her and Aline Stahl."

"Perhaps so," said the Prince, squeezing her hand with his elbow; "but it's better when one does good so that you may ask everyone and no one knows."

Kitty did not answer, not because she had nothing to say, but because she did not care to reveal her secret thoughts even to her father. But, strange to say, although she had made up her mind so firmly not to be influenced by her father's views, not to let him into her inmost sanctuary, she felt that the heavenly image of Madame Stahl, which she had carried for a whole month in her heart, had vanished, never to return, just as the fantastic figure made up of some clothes thrown down at random vanishes when one sees that it is only some fallen garment. All that was left was a woman with short legs, who lay down because she had a bad figure, and worried patient Varenka for not arranging her rug to her liking. And by no effort of her imagination could Kitty bring back the former Madame Stahl.

### XXXV.

The Prince communicated his good humor to his own family and his friends, and even to the German landlord in whose rooms the Shcherbatskys were staying.

On coming back with Kitty from the springs, the Prince, who had asked the colonel, and Marya Eugenyevna, and Varenka all to come and have coffee with them, gave orders for a table and chairs to be taken into the tiny garden under the chestnut tree, and lunch to be laid there. The landlord and the servants, too, grew brisker under the influence of his good spirits. They knew his openhandedness; and half an hour later the invalid doctor from Hamburg, who lived on the top floor, looked enviously out of his window at the merry party of healthy Russians assembled under the chestnut tree. In the trembling circles of shadow cast by the leaves, at a table covered with a white cloth, and set with coffeepot, bread, butter, cheese, and cold game, sat the Princess in a high cap with lilac ribbons, distributing cups and sandwiches. At the other end sat the Prince, eating heartily, and talking loudly and merrily. The Prince had spread out near him his purchases—carved boxes, and knickknacks, and paper knives of all sorts, of which he had bought a heap at every watering place, and bestowed them upon everyone, including Lieschen, the servant girl, and the landlord, with whom he jested in his comically bad German, assuring him that it was not the water had cured Kitty, but his splendid cookery—especially his plum soup. The Princess laughed at her husband for his Russian ways, but she was more lively and good-humored than she had been all the while she had been at the waters. The colonel smiled, as he always did, at the Prince's jokes, but as far as regards Europe, of which he believed himself to be making a careful study, he took the Princess's side. The goodhearted Marya Eugenyevna simply roared with laughter at everything absurd the Prince said, and his jokes made Varenka helpless with feeble but infectious laughter, which was something Kitty had never seen before.

Kitty was glad of all this, but she could not be lighthearted. She could not solve the problem her father had unconsciously set her by his good-humored view of her friends, and of the life that had so attracted her. To this doubt there was joined the change in her relations with the Petrovs, which had been so conspicuously and unpleasantly marked that morning. Everyone was good-humored, but Kitty could not feel good-humored, and this increased her distress. She felt a feeling such as she had known in childhood, when she had been shut in her room as a punishment, and had heard her sisters' merry laughter outside.

"Well, but what did you buy this mass of things for?" said the Princess, smiling, and handing her husband a cup of coffee.

"One goes for a walk, one looks in a shop, and they ask you to buy. 'Erlaucht, Excellenz, Durchlaucht?' Directly they say 'Durchlaucht,' I can't hold out—and ten thalers are gone."

"It's simply from boredom," said the Princess.

"Of course it is. Such boredom, my dear, that one doesn't know what to do with oneself."

"How can you be bored, Prince? There's so much that's interesting now in Germany," said Marya Eugenyevna.

## Anna Karenina

"But I know everything that's interesting: the plum soup I know and the pea sausages I know. I know everything."

"No, you may say what you like, Prince there's the interest of their institutions," said the colonel.

"But what is there interesting? They're all as beaming with joy as brass halfpence; they've conquered everybody. And why am I to be pleased at that? I haven't conquered anyone; only I have myself to take off my own boots, and, besides, to expose them before the door; in the morning, get up and dress at once, and go to the coffeeroom to drink bad tea! How different it is at home! You get up in no haste, you get cross, grumble a little and come round again. You've time to think things over, and no hurry."

"But time's money, you forget that," said the colonel.

"Time, indeed! Why, there are times one would give a month of for half a rouble, and times you wouldn't give half an hour of for any money. Isn't that so, Katenka? What is it? Why are you so depressed?"

"I'm not depressed."

"Where are you off to? Stay a little longer," he said to Varenka.

"I must be going home," said Varenka, getting up, and again she broke out laughing. When she had recovered, she said good-by, and went into the house to get her hat.

Kitty followed her. Even Varenka struck her as different. She was not inferior, but different from what she had fancied her before.

"Oh, dear! It's a long while since I've laughed so much!" said Varenka, gathering up her parasol and her handbag. "What a dear your father is!"

Kitty did not speak.

"When shall I see you again?" asked Varenka.

"Maman meant to go and see the Petrovs. Won't you be there?" said Kitty, to try Varenka.

"Yes," answered Varenka. "They're getting ready to go away, so I promised to help them pack."

"Well, I'll come too, then."

"No, why should you?"

"Why not? Why not? Why not?" said Kitty, opening her eyes wide, and clutching at Varenka's parasol, so as not to let her go. "No, wait a minute why not?"

"Oh, nothing; your father has come, and, besides, they will feel awkward at your helping."

"No, tell me why you don't want me to be often at the Petrovs? You don't want me to why not?"

"I didn't say that," said Varenka quietly.

"No, please tell me!"

"Tell you everything?" asked Varenka.

"Everything, everything!" Kitty assented.

"Well, there's really nothing of any consequence; only that Mikhail Alexeievich" (that was the artist's name) "had meant to leave earlier, and now he doesn't want to go away," said Varenka, smiling.

"Go on, go on!" Kitty urged impatiently, looking somberly at Varenka.

"Well, and for some reason Anna Pavlovna told him that he didn't want to go because you are here. Of course, that was nonsense; but there was a dispute over it over you. You know how irritable these sick people are."

Kitty, scowling more than ever, kept silent, and Varenka went on speaking alone, trying to soften or soothe her, and seeing a storm coming she did not know whether of tears or of words.

"So you'd better not go... You understand; you won't be offended?..."

"And it serves me right! And it serves me right!" Kitty cried quickly, snatching the parasol out of Varenka's hand, and avoiding looking at her friend's face.

Varenka felt inclined to smile, looking at her friend's childish fury, but she was afraid of wounding her.

"How does it serve you right? I don't understand," she said.

"It serves me right, because it was all sham; because it was all done on purpose, and not from the heart. What business had I to interfere with outsiders? And so it's come about that I'm the cause of a quarrel, and that I've done what nobody asked me to do. Because it was all a sham! A sham! A sham!..."

"A sham? With what object?" said Varenka gently.

"Oh, it's so idiotic! So hateful! There was no need whatever for me... Nothing but sham!" she said, opening and shutting the parasol.

"But with what object?"

"To seem better to people, to myself, to God; to deceive everyone. No! Now I won't descend to that. One could be bad; but anyway not a liar, not a cheat."

"But who is a cheat?" said Varenka reproachfully. "You speak as if..."

But Kitty was in one of her gusts of fury, and she would not let her finish.

"I don't talk about you not about you at all. You're perfection. Yes, yes, I know you're all perfection; but what am I to do if I'm bad? This would never have been if I weren't bad. So let me be what I am, but not to be a sham. What have I to do with Anna Pavlovna? Let them go their way, and me go mine. I can't be different.... And yet it's not that, it's not that."

"What is it?" asked Varenka in bewilderment.

"Everything. I can't act except from the heart, and you act from principle. I simply liked you, but you most likely only wanted to save me, to improve me."

## Anna Karenina

"You are unjust," said Varenka.

"But I'm not speaking of other people, I'm speaking of myself."

"Kitty," they heard her mother's voice, "come here, show papa your necklace."

Kitty, with a haughty air, without making peace with her friend, took the necklace in a little box from the table and went to her mother.

"What's the matter? Why are you so red?" her mother and father said to her with one voice.

"Nothing," she answered. "I'll be back directly," and she ran back.

"She's still here," she thought. "What am I to say to her? Oh, dear! What have I done, what have I said? Why was I rude to her? What am I to do? What am I to say to her?" thought Kitty, and she stopped in the doorway.

Varenka in her hat and with the parasol in her hands was sitting at a table examining the parasol spring which Kitty had broken. She lifted her head.

"Varenka, forgive me, do forgive me," whispered Kitty, going up to her. "I don't remember what I said. I..."

"I really didn't mean to hurt you," said Varenka, smiling.

Peace was made. But with her father's coming all the world in which she had been living was transformed for Kitty. She did not give up everything she had learned, but she became aware that she had deceived herself in supposing she could be what she wanted to be. Her eyes were, it seemed, opened; she felt all the difficulty of maintaining herself without hypocrisy and self-conceit on the pinnacle to which she had wished to mount. Moreover, she became aware of all the dreariness of the world of sorrow, of sick and dying people, in which she had been living. The efforts she had made to like it seemed to her intolerable, and she felt a longing to get back quickly into the fresh air, to Russia, to Ergushovo, where, as she knew from letters, her sister Dolly had already gone with her children.

But her affection for Varenka did not wane. Parting Kitty begged her to come to them in Russia.

"I'll come when you get married," said Varenka.

"I shall never marry."

"Well, then, I shall never come."

"Well, then, I shall be married simply for that. Mind now, remember your promise," said Kitty.

The doctor's prediction was fulfilled. Kitty returned home, to Russia, cured. She was not as gay and thoughtless as before, but she was serene. Her Moscow troubles had become a memory to her.

## PART THREE



I.

Sergei Ivanovich Koznishev wanted a rest from mental work, and instead of going abroad as he usually did, he came toward the end of May to stay in the country with his brother. In his judgment the best sort of life was a country life. He had come now to enjoy such a life at his brother's. Konstantin Levin was very glad to have him, especially as he did not expect his brother Nikolai that summer. But in spite of his affection and respect for Sergei Ivanovich, Konstantin Levin was uncomfortable with his brother in the country. It made him uncomfortable, and it even annoyed him, to see his brother's attitude to the country. To Konstantin Levin the country was the background of life that is of pleasures, endeavors, labor; to Sergei Ivanovich the country meant on one hand rest from work, on the other a valuable antidote to laxness an antidote which he took with satisfaction and a sense of its salutariness. To Konstantin Levin the country was good because it afforded a field for labor, of the usefulness of which there could be no doubt; to Sergei Ivanovich the country was particularly good, because there it was possible and fitting to do nothing. Moreover, Sergei Ivanovich's attitude toward "the people" rather piqued Konstantin. Sergei Ivanovich used to say that he knew and liked "the people," and he often talked to the peasants, which he knew how to do without affectation or condescension, and from every such conversation he would deduce general conclusions in favor of "the people" and in confirmation of his knowing them. Konstantin Levin did not like such an attitude toward "the people." To Konstantin "the people" was simply the chief partner in the common labor, and in spite of all the respect and the love, almost like that of kinship, he had for the peasant (sucked in probably, as he said himself, with the milk of his peasant nurse), Konstantin as a fellow worker with them, while sometimes enthusiastic over the vigor, gentleness, and justice of these men, was very often, when their common labors called for other qualities, exasperated with the peasant for his carelessness, slovenliness, drunkenness and lying. If he had been asked whether he liked or didn't like "the people," Konstantin Levin would have been absolutely at a loss what to reply. He liked and did not like "the people," just as he liked and did not like men in general. Of course, being a goodhearted man, he liked men more than he disliked them, and so too with "the people." But like or dislike "the people" as something peculiar he could not, not only because he lived with "the people," and all his interests were bound up with theirs, but also because he regarded himself as a part of "the people," did not see any peculiar qualities or failings distinguishing himself from "the people," and could not contrast himself with them. Moreover, although he had lived so long in the closest relations with the peasants, as farmer and arbitrator, and what was more, as adviser (the peasants trusted him, and for forty verstas round they would come to ask his advice), he had no definite views of "the people," and would have been as much at a loss to answer the question whether he knew "the people" as the question whether he liked them. For him to say he knew "the people" would have been the same as to say he knew men. He was continually watching and getting to know people of all sorts, and among them peasants, whom he regarded as good and interesting people, and he was continually observing new points in them, altering his former views of them and forming new ones.

With Sergei Ivanovich it was quite the contrary. Just as he liked and praised a country life in comparison with the life he did not like, so too he liked "the people" in contradistinction to the class of men he did not like, and so too he knew "the people" as something distinct from, and opposed to, men in general. In his methodical brain there were distinctly formulated certain aspects of peasant life, deduced partly from that life itself, but chiefly from contrast with other modes of life. He never changed his opinion of "the people" and his sympathetic attitude toward them.

In the discussions that arose between the brothers on their views of "the people," Sergei Ivanovich always got the better of his brother, precisely because Sergei Ivanovich had definite ideas about the peasant his character, his qualities, and his tastes; Konstantin Levin had no definite and unalterable idea on the subject, and so in their arguments Konstantin was readily convicted of contradicting himself.

In Sergei Ivanovich's eyes his younger brother was a capital fellow, with his heart in the right place (as he expressed it in French), but with a mind which, though fairly quick, was too much influenced by the impressions of the moment, and consequently filled with contradictions. With all the condescension of an elder brother he

sometimes explained to him the true import of things, but he derived little satisfaction from arguing with him because he got the better of him too easily.

Konstantin Levin regarded his brother as a man of immense intellect and culture, as generous in the highest sense of the word, and possessed of a special faculty for working for the public good. But in the depths of his heart, the older he became, and the more intimately he knew his brother, the more and more frequently the thought struck him that this faculty of working for the public good, of which he felt himself utterly devoid, was possibly not so much a quality as a lack of something not a lack of good, honest, noble desires and tastes, but a lack of vital force, of what is called heart, of that impulse which drives a man to choose some one out of the innumerable paths of life, and to care only for that one. The better he knew his brother, the more he noticed that Sergei Ivanovich, and many other people who worked for the public welfare, were not led by any impulse of the heart to care for the public good, but reasoned from intellectual considerations that it was a right thing to take an interest in public affairs, and consequently took an interest in them. Levin was confirmed in this conjecture by observing that his brother did not take questions affecting the public welfare or the question of the immortality of the soul a bit more to heart than he did chess problems, or the ingenious construction of a new machine.

Besides this, Konstantin Levin was not at his ease with his brother, because in the country, especially in summertime, Levin was continually busy with work on the land, and the long summer day was not long enough for him to get through all he had to do, while Sergei Ivanovich was merely taking a holiday. But though he was taking a holiday now that is to say, he was doing no writing he was so used to intellectual activity that he liked to put into concise and eloquent shape the ideas that occurred to him, and liked to have someone listen to him. His most usual and natural listener was his brother. And so, in spite of the friendliness and directness of their relations, Konstantin felt an awkwardness in leaving him alone. Sergei Ivanovich liked to stretch himself on the grass in the sun, and to lie so, basking and chatting lazily.

"You wouldn't believe," he would say to his brother, "what a pleasure this rural laziness is to me. Not an idea in one's brain as empty as a drum!"

But Konstantin Levin found it dull sitting and listening to him, especially when he knew that while he was away manure would be carted into fields not plowed ready for it, and heaped up God knows how; and the shares in the plows would not be screwed in, so that they would come off, and then his men would say the new plows were a silly invention, and there was nothing like the old wooden plow, and so on.

"Come, you've done enough trudging about in the heat," Sergei Ivanovich would say to him.

"No, I must just run round to the countinghouse for a minute," Levin would answer, and would run off to the fields.

## II.

Early in June Agathya Mikhailovna, the old nurse and housekeeper, in carrying to the cellar a jar of mushrooms she had just pickled, happened to slip, fall and sprain her wrist. The district doctor, a talkative young medico who had just finished his studies, came to see her. He examined the wrist, said it was not luxated, bandaged it, and being asked to dinner evidently was delighted at a chance of talking to the celebrated Sergei Ivanovich Koznishev, and to show his advanced views of things told him all the scandal of the district, complaining of the poor state into which the Zemstvo affairs had fallen. Sergei Ivanovich listened attentively, asked him questions, and, roused by a new listener, he talked fluently, uttered a few keen and weighty observations, respectfully appreciated by the young doctor, and was soon in that animated frame of mind his brother knew so well, which always, with him, followed a brilliant and animated conversation. After the departure of the doctor, he wanted to go with a fishing rod to the river. Sergei Ivanovich was fond of angling, and was, it seemed, proud of being able

to care for such a stupid occupation.

Konstantin Levin, whose presence was needed in the plowland and the meadows, had come to take his brother in the cabriolet.

It was that time of the year, the turning point of summer, when the crops of the present year are a certainty, when one begins to think of the sowing for next year, and the mowing is at hand; when the rye is all in ear, though its ears are still light, not yet full, and it waves in gray-green billows in the wind; when the green oats, with tufts of yellow grass scattered here and there among it, droop irregularly over the late-sown fields; when the early buckwheat is already out and hiding the ground; when the fallow lands, trodden hard as stone by the cattle, are half-plowed over, with paths left untouched by the plow; when the odor from the dry manure heaps carted into the fields mingles at sunset with the smell of meadowsweet, and on the low-lying lands the preserved meadows are a thick sea of grass waiting for the mowing, with blackened heaps of sorrel stalks among it.

It was the time when there comes a brief pause in the toil of the fields before the beginning of the labors of harvest every year recurring, every year claiming all the peasant's thews. The crop was a splendid one, and bright, hot summer days had set in with short, dewy nights.

The brothers had to drive through the woods to reach the meadows. Sergei Ivanovich was all the while admiring the beauty of the woods, which were a tangled mass of leaves, pointing out to his brother now an old lime tree on the point of flowering, dark on the shady side, and brightly spotted with yellow stipules, now the young shoots of this year's saplings brilliant with emerald. Konstantin Levin did not like talking and hearing about the beauty of nature. Words for him took away the beauty of what he saw. He assented to what his brother said, but could not help thinking of other things. When they came out of the woods, all his attention was engrossed by the view of the fallow land on the upland, in parts yellow with grass, in parts trampled and checkered with furrows, in parts dotted with ridges of manure, and in parts even plowed. A string of telegas was moving across it. Levin counted the telegas, and was pleased that all that were wanted had been brought, and at the sight of the meadows his thoughts passed to the mowing. He always felt something peculiar moving him to the quick at haymaking. On reaching the meadow Levin stopped the horse.

The morning dew was still lying on the thick undergrowth of the grass, and, that he might not get his feet wet, Sergei Ivanovich asked his brother to drive him in the cabriolet up to the willow tree from which the perch were caught. Sorry as Konstantin Levin was to crush down his mowing grass, he drove him into the meadow. The high grass softly turned about the wheels and the horse's legs, leaving its seeds clinging to the wet axles and spokes of the wheels.

His brother seated himself under a bush, arranging his tackle, while Levin led the horse away, tied him up and walked into the vast gray-green sea of grass unstirred by the wind. The silky grass with its ripe seeds came almost to his waist in the riverside spots.

Crossing the meadow, Konstantin Levin came out on the road, and met an old man with a swollen eye, carrying a swarming basket with bees.

"What? Taken a stray swarm, Fomich?" he asked.

"No, indeed, Konstantin Mitrich! All we can do to keep our own! This is the second new swarm that has flown away.... Luckily the lads caught them. They were plowing your field. They unyoked the horses and galloped after them."

"Well, what do you say, Fomich start mowing or wait a bit?"

## Anna Karenina

"Well, now! Our way's to wait till St. Peter's Day. But you always mow sooner. Well, to be sure, please God, the hay's good. There'll be plenty for the beasts."

"What do you think about the weather?"

"That's in God's hands. Maybe even the weather will favor us."

Levin walked up to his brother.

Sergei Ivanovich had caught nothing, but he was not bored, and seemed in the most cheerful frame of mind. Levin saw that, stimulated by his conversation with the doctor, he wanted to talk. Levin, on the other hand, would have liked to get home as soon as possible, to give orders about getting together the mowers for next day, and to set at rest his doubts about the mowing, which greatly absorbed him.

"Well, let's be going," he said.

"Why be in such a hurry? Let's stay a little. But how wet you are! Even though one catches nothing, it's fine. That's the best thing about every part of sport, that one has to do with nature. How exquisite this steely water is!" said Sergei Ivanovich. "These riverside banks always remind me of the riddle do you know it? 'The grass says to the river: we quiver and we quiver.'"

"I don't know the riddle," answered Levin cheerlessly.

### III.

"Do you know I've been thinking about you," said Sergei Ivanovich. "It's beyond everything what's being done in the district, according to what this doctor tells me. He's a very intelligent fellow. And as I've told you before, I tell you again: it's not right for you not to go to the meetings, and to keep out of the Zemstvo affairs entirely. If decent people won't go into it, of course it's bound to go all wrong. We pay the money, and it all goes in salaries, and there are no schools, nor district dressers, nor midwives, nor pharmacies nothing."

"Well, I did try, you know," Levin said gently and unwillingly. "I can't! And so there's no help for it."

"But why can't you? I must own I can't make it out. Indifference, incapacity I won't admit; surely it's not simply laziness?"

"None of those things. I've tried, and I see I can do nothing," said Levin.

He had hardly grasped what his brother was saying. Looking toward the plowland across the river, he made out something black, but he could not distinguish whether it was a horse or the bailiff on horseback.

"Why is it you can do nothing? You made an attempt and didn't succeed, as you think, and you give in. How can you have so little ambition?"

"Ambition!" said Levin, stung to the quick by his brother's words; "I don't understand. If they'd told me at college that other people understood the integral calculus, and I didn't, then ambition would have come in. But in this case one wants first to be convinced that one has certain abilities for this sort of business, and especially that all this business is of great importance."

"What! Do you mean to say it's not of importance?" said Sergei Ivanovich, stung to the quick in his turn by his

## Anna Karenina

brother's considering of no importance anything that interested him, and still more at his obviously paying little attention to what he was saying.

"I don't think it important; it does not take hold of me I can't help it," answered Levin, making out that what he saw was the bailiff, and that the bailiff seemed to be letting the peasants go off the plowed land. They were turning the plow over. "Can they have finished plowing?" he wondered.

"Come, really though," said the elder brother, with a frown on his handsome, clever face, "there's a limit to everything. It's very well to be original and genuine, and to dislike everything hypocritical I know all about that; but really, what you're saying either has no meaning, or it has a very wrong meaning. How can you think it a matter of no importance whether 'the people,' whom you love as you assert..."

"I never did assert it," thought Konstantin Levin.

"...die without help? The ignorant peasant women starve the children, and the people stagnate in darkness, and are helpless in the hands of every village clerk, while you have at your disposal a means of helping them, and don't help them because to your mind it's of no importance!"

And Sergei Ivanovich put before him the dilemma: Either you are so undeveloped that you can't see all that you can do, or you won't sacrifice your ease, your vanity, or whatever it is, to do it.

Konstantin Levin felt that there was no course open to him but to submit, or to confess to a lack of zeal for the public good. And this mortified him and hurt his feelings.

"It's both," he said resolutely; "I don't see that it is possible..."

"What! Is it impossible, if the money were properly laid out, to provide medical aid?"

"Impossible, as it seems to me.... For the four thousand square verstas of our district, what with our undersnow waters, and the storms, and the work in the fields, I don't see how it is possible to provide medical aid all over. And besides, I don't believe in medicine."

"Oh, well, that's unfair.... I can quote to you thousands of instances.... But the schools, at least?"

"Why have schools?"

"What do you mean? Can there be two opinions of the advantage of education? If it's a good thing for you, it's a good thing for everyone."

Konstantin Levin felt himself morally pinned against a wall, and so he became heated, and unconsciously blurted out the chief cause of his indifference to public business.

"Perhaps it may all be very good; but why should I worry myself about establishing dispensaries which I shall never make use of, and schools to which I shall never send my children, to which even the peasants don't want to send their children, and to which I've no very firm faith that they ought to send them?" said he.

Sergei Ivanovich was for a minute surprised at this unexpected view of the subject; but he promptly made a new plan of attack.

He was silent for a little, drew out a hook, threw it in again, and turned to his brother smiling.

"Come, now.... In the first place, the dispensary is needed. We ourselves sent for the district doctor for Agathya Mikhailovna."

"Oh, well, but I fancy her wrist will never be straight again."

"That remains to be proved.... Next, the peasant who can read and write is as a workman of more use and value to you."

"No; you can ask anyone you like," Konstantin Levin answered with decision, "the man that can read and write is much inferior as a workman. And mending the highroads is an impossibility; and as soon as they put up bridges they're stolen."

"Still, that's not the point," said Sergei Ivanovich, frowning. He disliked contradiction, and still more, arguments that were continually skipping from one thing to another, introducing new and disconnected points, so that there was no knowing to which to reply. "Let me say. Do you admit that education is a benefit for the people?"

"Yes, I admit it," said Levin without thinking, and he was conscious immediately that he had said what he did not think. He felt that if he admitted that, it would be proved that he had been talking meaningless rubbish. How it would be proved he could not tell, but he knew that this would inevitably be logically proved to him, and he awaited the proofs.

The argument turned out to be far simpler than Konstantin Levin had expected.

"If you admit that it is a benefit," said Sergei Ivanovich, "then, as an honest man, you cannot help caring about it and sympathizing with the movement, and so wishing to work for it."

"But I still do not admit this movement to be good," said Konstantin Levin, reddening.

"What! But you just said now..."

"That's to say, I don't admit it's being either good or possible."

"That you can't tell without making the trial."

"Well, supposing that is so," said Levin, though he did not suppose so at all, "supposing that is so, still I don't see, all the same, why I should worry myself about it."

"How so?"

"No; since we are talking, explain it to me from the philosophical point of view," said Levin.

"I can't see where philosophy comes in," said Sergei Ivanovich, in a tone, Levin fancied, as though he did not admit his brother's right to talk about philosophy. And that irritated Levin.

"I'll tell you, then," he said with heat, "I imagine the mainspring of all our actions is, after all, self-interest. Now in the Zemstvo institutions I, as a nobleman, see nothing that could conduce to my prosperity. The roads are not better and could not be better; my horses carry me well enough over bad ones. Doctors and dispensaries are of no use to me. A justice of the peace is of no use to me. I never appeal to him, and never shall appeal to him. The schools are of no good to me, but positively harmful, as I told you. For me the Zemstvo institutions simply mean the liability of paying eighteen kopecks for every dessiatina, of driving into the town, sleeping with bedbugs, and listening to all sorts of idiocy and blather, and self-interest offers me no inducement."

"Excuse me," Sergei Ivanovich interposed with a smile, "self-interest did not induce us to work for the emancipation of the serfs, yet we did work for it."

"No!" Konstantin Levin broke in with still greater heat; "the emancipation of the serfs was a different matter. There self-interest did come in. One longed to throw off that yoke that crushed us all the decent people among us. But to be a member of the Zemstvo and discuss how many street cleaners are needed, and how sewers shall be constructed in the town in which I don't live to serve on a jury and try a peasant who has stolen a flitch of bacon, and listen for six hours at a stretch to all sorts of jabber from the counsel for the defense and the prosecution, and the president cross-examining my old simpleton Alioshka: 'Do you admit, prisoner at the bar, the fact of the removal of the bacon' 'Eh?'"

Konstantin Levin had warmed to his subject, and began mimicking the president and the half-witted Alioshka: it seemed to him that it was all to the point.

But Sergei Ivanovich shrugged his shoulders.

"Well, what do you mean to say, then?"

"I simply mean to say that those rights that touch me... my interest, I shall always defend to the best of my ability; that when raids were made on us students, and the police read our letters, I was ready to defend those rights to the utmost, to defend my rights to education and freedom. I can understand compulsory military service, which affects my children, my brothers, and myself I am ready to deliberate on what concerns me; but deliberating on how to spend forty thousand roubles of Zemstvo's money, or judging the half-witted Alioshka that I don't understand, and I can't do it."

Konstantin Levin spoke as though the floodgates of his speech had burst open. Sergei Ivanovich smiled.

"But tomorrow it'll be your turn to be tried; would it have suited your tastes better to be tried in the old criminal court?"

"I'm not going to be tried. I shan't murder anybody, and I've no need of it. Well, I tell you what," he went on, flying off again to a subject quite beside the point, "our district self-government and all the rest of it it's just like the birch saplings we stick in the ground, as we would do it on Trinity Day, to look like a copse which has grown up of itself in Europe, and I can't gush over these birch saplings and believe in them."

Sergei Ivanovich merely shrugged his shoulders, as though to express his wonder how the birch saplings had come into their argument at that point, though he did really understand at once what his brother meant.

"Excuse me, but you know one really can't argue in that way," he observed.

But Konstantin Levin wanted to justify himself for the failing, of which he was conscious, of a lack of zeal for the public welfare, and he went on.

"I imagine," Konstantin said, "that no sort of activity is likely to be lasting if it is not founded on self-interest that's a universal principle, a philosophical principle," he said, repeating the word "philosophical" with determination, as though wishing to show that he had as much right as anyone else to talk of philosophy.

Sergei Ivanovich smiled. "He too has a philosophy of his own at the service of his natural tendencies," he thought.

"Come, you'd better let philosophy alone," he said. "The chief problem of the philosophy of all ages consists precisely in finding that indispensable connection which exists between individual and social interests. But that's

not to the point; what is to the point is a correction I must make in your comparison. The birches are not simply stuck in, but some are sown and some are planted, and one must deal carefully with them. It's only those peoples that have an intuitive sense of what's of importance and significance in their institutions, and know how to value them, who have a future before them it's only those peoples that one can truly call historical."

And Sergei Ivanovich carried the subject into the regions of philosophical history where Konstantin Levin could not follow him, and showed him all the incorrectness of his outlook.

"As for your dislike of it excuse my saying so that's simply our Russian sloth and old serfowners' ways, and I'm convinced that in you it's a temporary error and will pass."

Konstantin was silent. He felt himself vanquished on all sides, but he felt at the same time that what he wanted to say was unintelligible to his brother. Only he could not make up his mind whether it was unintelligible because he was not capable of expressing his meaning clearly, or because his brother would not or could not understand him. But he did not pursue the speculation, and, without replying, he fell to musing on a quite different and personal matter.

Sergei Ivanovich wound up the last line, unhitched the horse, and they drove off.

#### IV.

The personal matter that absorbed Levin during his conversation with his brother was this. Once, the year previous, he had gone to look at the mowing, and being made very angry by the bailiff he had had recourse to his favorite means for regaining his temper he had taken a scythe from a peasant and begun mowing.

He liked the work so much that he had several times tried his hand at mowing since. He had cut the whole of the meadow in front of his house, and this year, ever since the early spring, he had cherished a plan for mowing for whole days together with the peasants. Ever since his brother's arrival he had been in doubt as to whether to mow or not. He was loath to leave his brother alone all day long, and he was afraid his brother would laugh at him about it. But as he drove into the meadow, and recalled the sensations of mowing, he came near deciding that he would go mowing. After the irritating discussion with his brother, he pondered over this intention again.

"I must have physical exercise, or my temper'll certainly be ruined," he thought, and he determined he would go mowing, however awkward he might feel about it with his brother or the peasants.

Toward evening Konstantin Levin went to his countinghouse, gave directions as to the work to be done, and sent about the village to summon the mowers for the morrow, to cut the hay in Kalinov meadow, the largest and best of his grasslands.

"And send my scythe, please, to Tit, for him to set it, and bring it round tomorrow. I may do some mowing myself, too," he said, trying not to be embarrassed.

The bailiff smiled and said:

"Yes, sir."

At tea the same evening Levin said to his brother too.

"I fancy the fine weather will last," said he. "Tomorrow I shall start mowing."



## Anna Karenina

"I'm so fond of that form of field labor," said Sergei Ivanovich.

"I'm awfully fond of it. I sometimes mow myself with the peasants, and tomorrow I want to try mowing the whole day."

Sergei Ivanovich lifted his head, and looked with curiosity at his brother.

"How do you mean? Just like one of the peasants, all day long?"

"Yes, it's very pleasant," said Levin.

"It's splendid as exercise, only you'll hardly be able to stand it," said Sergei Ivanovich, without a shade of irony.

"I've tried it. It's hard work at first, but you get into it. I dare say I shall manage to keep it up...."

"Oh, so that's it! But tell me, how do the peasants look at it? I suppose they laugh in their sleeves at their master's being such a queer fish?"

"No, I don't think so; but it's so delightful, and at the same time such hard work, that one has no time to think about it."

"But how will you do about dining with them? To send you a bottle of Lafitte and roast turkey out there would be a little awkward."

"No, I'll simply come home at the time of their noonday rest."

Next morning Konstantin Levin got up earlier than usual, but he was detained giving directions on the farm, and when he reached the mowing grass the mowers were already at their second swath.

From the uplands he could get a view of the shaded cut part of the meadow below, with the grayish swaths and the black heaps of coats, taken off by the mowers at the place from which they had started cutting.

Gradually, as he rode toward the meadow, the peasants came into sight, some in coats, some in their shirts, mowing, one behind another in a long string, each swinging his scythe in his own way. He counted forty—two of them.

They were mowing slowly over the uneven, low-lying parts of the meadow, where there had been an old dam. Levin recognized some of his own men. Here was old Iermil in a very long white smock, bending forward to swing a scythe; there was a young fellow, Vaska, who had been a coachman of Levin's, taking every swath with a wide sweep. Here, too, was Tit, Levin's preceptor in the art of mowing, a thin little peasant. He went on ahead, and cut his wide swath without bending, as though playing with his scythe.

Levin got off his mare, and fastening her up by the roadside went to meet Tit, who took a second scythe out of a bush and gave it him.

"It's ready, sir; it's like a razor it cuts of itself," said Tit, taking off his cap with a smile and giving him the scythe.

Levin took the scythe, and began trying it. As they finished their swaths, the mowers, hot and good-humored, came out into the road one after another, and smirking, greeted the master. They all stared at him, but no one made any remark, till a tall old man, with a wrinkled, beardless face, wearing a short sheepskin jacket, came out

into the road and accosted him.

"Look'ee now, master, once take hold of the rope, there's no letting go!" he said, and Levin heard smothered laughter among the mowers.

"I'll try not to let it go," he said, taking his stand behind Tit, and waiting for the time to begin.

"Mind'ee," repeated the old man.

Tit made room, and Levin started behind him. The grass was short close to the road, and Levin, who had not done any mowing for a long while, and was disconcerted by the eyes fastened upon him, cut badly for the first moments, though he swung his scythe vigorously. Behind him he heard voices:

"It's not set right; handle's too high; see how he has to stoop to it," said one.

"Press more on the heel of the scythe," said another.

"Never mind, he'll get on all right," the old man resumed. "See, he's made a start.... You swing it too wide, you'll tire yourself out.... The master, sure, does his best for himself! But see the grass missed out! For such work us fellows would catch it!"

The grass became lusher, and Levin, listening without answering, followed Tit, trying to do the best he could. They moved a hundred paces. Tit kept moving on, without stopping, nor showing the slightest weariness, but Levin was already beginning to fear he would not be able to keep it up so tired was he.

He felt as he swung his scythe that he was at the very end of his strength, and was making up his mind to ask Tit to stop. But at that very moment Tit stopped of his own accord, and, stooping down, picked up some grass, rubbed his scythe, and began whetting it. Levin straightened himself, and drawing a deep breath looked round. Behind him came a peasant, and he too was evidently tired, for he stopped at once without waiting to mow up to Levin, and began whetting his scythe. Tit sharpened his scythe and Levin's, and they went on.

The next time it was just the same. Tit moved on with sweep after sweep of his scythe, without stopping or showing signs of weariness. Levin followed him, trying not to get left behind, and he found it harder and harder: the moment came when he felt he had no strength left, but at that very moment Tit stopped and whetted the scythes.

So they mowed the first row. And this long row seemed particularly hard work to Levin; but when the end was reached, and Tit, shouldering his scythe, began with deliberate stride returning on the tracks left by his heels in the cut grass, and Levin walked back in the same way over the space he had cut, in spite of the sweat that ran in streams over his face and fell in drops down his nose, and drenched his back as though he had been soaked in water, he felt very happy. What delighted him particularly was that now he knew he would be able to hold out.

His pleasure was only disturbed by his swath not being well cut. "I will swing less with my arm and more with my whole body," he thought, comparing Tit's swath, which looked as if it had been cut along a surveyor's cord, with his own scattered and irregularly lying grass.

The first swath, as Levin noticed, Tit had mowed especially quickly, probably wishing to put his master to the test, and the swath happened to be a long one. The next swaths were easier, but still Levin had to strain every nerve not to drop behind the peasants.

## Anna Karenina

He thought of nothing, wished for nothing, save not to be left behind the peasants, and to do his work as well as possible. He heard nothing save the swish of scythes, and saw before him Tit's upright figure mowing away, the crescent-shaped curve of the cut grass, the grass and flowers slowly and rhythmically falling before the blade of his scythe, and ahead of him the end of the swath, where would come the rest.

Suddenly, in the midst of his toil, without understanding what it was or whence it came, he felt a pleasant sensation of chill on his hot, moist shoulders. He glanced at the sky in the interval for whetting the scythes. A heavy, lowering storm cloud had blown up, and big raindrops were falling. Some of the peasants went to their coats and put them on; others just like Levin himself merely shrugged their shoulders, enjoying the pleasant coolness of it.

Another swath, and yet another swath followed long swaths and short swaths, with good grass and with poor grass. Levin lost all sense of time, and could not have told whether it were late or early now. A change began to come over his work, which gave him immense satisfaction. In the midst of his toil there were moments during which he forgot what he was doing, and it all came easy to him, and at those same moments his swath was almost as smooth and well cut as Tit's. But as soon as he recollected what he was doing, and began trying to do better, he was at once conscious of all the difficulty of his task, and the swath was badly mown.

On finishing yet another swath he would have gone back to the top of the meadow again to begin the next, but Tit stopped, and going up to the old man said something in a low voice to him. They both looked at the sun. "What are they talking about, and why doesn't he go back?" thought Levin, without guessing that the peasants had been mowing no less than four hours without stopping, and that it was time for their lunch.

"Lunch, sir," said the old man.

"Is it really time? Lunch it is, then."

Levin gave his scythe to Tit, and, together with the peasants, who were crossing the long stretch of mown grass, slightly sprinkled with rain, to get their bread from the heap of coats, he went toward his horse. Only then did he suddenly awake to the fact that he had been wrong about the weather and that the rain was drenching his hay.

"The hay will be spoiled," he said.

"Not a bit of it, sir; mow in the rain, and you'll rake in fine weather!" said the old man.

Levin untied his horse and rode home to his coffee.

Sergei Ivanovich was just getting up. When he had drunk his coffee, Levin rode back again to the mowing before Sergei Ivanovich had had time to dress and come down to the dining room.

## V.

After lunch Levin was not in the same place in the string of mowers as before, but stood between the old man who had accosted him jocosely, and now invited him to be his neighbor, and a young peasant, who had only been married in the autumn, and who was mowing this summer for the first time.

The old man, holding himself erect, moved in front, with his feet turned out, taking long, regular strides, and with a precise and regular action which seemed to cost him no more effort than swinging one's arms in walking, as though it were in play, he laid down the high, even swath of grass. It was as though it were not he but the sharp scythe of itself swishing through the juicy grass.

Behind Levin came the lad Mishka. His comely, youthful face, with a twist of fresh grass bound round his hair, was all working with effort; but whenever anyone looked at him he smiled. He would clearly have died sooner than own it was hard work for him.

Levin kept between them. In the very heat of the day the mowing did not seem such hard work to him. The perspiration with which he was drenched cooled him, while the sun, that burned his back, his head, and his arms, bare to the elbow, gave a vigor and dogged energy to his labor; and more and more often now came those moments of unconsciousness, when it was possible not to think of what one was doing. The scythe cut of itself. These were happy moments. Still more delightful were the moments when they reached the stream where the swaths ended, and the old man rubbed his scythe with the wet, thick grass, rinsed its blade in the fresh water of the stream, ladled out a little in a whetstone case, and offered Levin a drink.

"What do you say to my kvass, eh? Good, eh?" he would say, winking.

And truly Levin had never drunk any liquor as good as this warm water with green bits floating in it, and a taste of rust from the tin whetstone case. And immediately after this came the delicious, slow saunter, with his hand on the scythe, during which he could wipe away the streaming sweat, take deep breaths of air, and look about at the long string of mowers, and at what was happening around in the forest and the field.

The longer Levin mowed, the oftener he felt the moments of unconsciousness in which it seemed that it was not his hands which swung the scythe, but that the scythe was moving together with itself a body full of life and consciousness of its own; and as though by magic, without thinking of it, the work turned out regular and well-finished of itself. These were the most blissful moments.

It was only hard work when he had to break off the motion, which had become unconscious, and to think; when he had to mow round a hummock or an unweeded tuft of sorrel. The old man did this easily. When a hummock came he changed his action, and at one time with the heel, and at another with the tip of his scythe, clipped the hummock round both sides with short strokes. And while he did this he kept looking about and watching what came into his view: at one moment he picked a wild berry and ate it or offered it to Levin, then he flung away a twig with the blade of the scythe, then he looked at a quail's nest, from which the bird flew just under the scythe, or caught a snake that crossed his path, and lifting it on the scythe as though on a fork showed it to Levin and threw it away.

For both Levin and the young peasant behind him, such changes of position were difficult. Both of them, repeating over and over again the same strained movement, were in a perfect frenzy of toil, and were incapable of shifting their position and at the same time watching what was before them.

Levin did not notice how time was passing. If he had been asked how long he had been working he would have said half an hour yet it was getting on to dinnertime. As they were walking back over the cut grass, the old man called Levin's attention to the little girls and boys who were coming from different directions, hardly visible through the long grass, and along the road toward the mowers, carrying sacks of bread that stretched their little arms, and lugging small pitchers of kvass, stopped up with rags.

"Look'ee at the little doodlebugs crawling!" he said, pointing to them, and he shaded his eyes with his hand to look at the sun.

They mowed two more swaths; the old man stopped.

"Come, master, dinnertime!" he said decidedly. And on reaching the stream the mowers moved off across the swaths toward their pile of coats, where the children who had brought their dinners were sitting waiting for them. The peasants gathered those who came from afar under their telegas, those who lived near under a willow bush,

covered with grass.

Levin sat down by them; he felt disinclined to go away.

All constraint with the master had disappeared long ago. The peasants got ready for dinner. Some washed, the young lads bathed in the stream, others made a place comfortable for a rest, untied their sacks of bread, and uncovered the pitchers of kvass. The old man crumbled up some bread in a cup, stirred it with the handle of a spoon, poured water on it from his whetstone case, broke up some more bread, and having seasoned it with salt, he turned to the east to say his prayer.

"Come, master, taste my sop," said he, kneeling down before the cup.

The sop was so good that Levin gave up the idea of going home for dinner. He ate with the old man, and talked to him about his family affairs, taking the keenest interest in them, and told him about his own affairs and all the circumstances that could be of interest to the old man. He felt much nearer to him than to his brother, and could not help smiling at the affection he felt for this man. When the old man got up again, said his prayer, and lay down under a bush, putting some grass under his head for a pillow, Levin did the same, and, in spite of the clinging flies that were so persistent in the sunshine, and the midges that tickled his hot face and body, he fell asleep at once and only waked when the sun had passed to the other side of the bush and reached him. The old man had been awake a long while, and was sitting up whetting the scythes of the younger lads.

Levin looked about him and hardly recognized the place, everything was so changed. The immense stretch of meadow had been mown and was sparkling with a peculiar fresh brilliance, with its lines of already sweet-smelling grass in the slanting rays of the evening sun. And the bushes about the river, mowed around, and the river itself, not visible before, now gleaming, like steel in its bends, and the moving, ascending peasants, and the sharp wall of grass of the unmown part of the meadow, and the hawks hovering over the stripped meadow—all was perfectly new. Raising himself, Levin began considering how much had been cut and how much more could still be done that day.

The work done was exceptionally great for forty-two men. They had cut the whole of the big meadow, which had, in the years of corvee, taken thirty scythes two days to mow. Only the corners remained to do, where the swaths were short. But Levin felt a longing to get as much mowing done that day as possible, and was vexed with the sun sinking so quickly in the sky. He felt no weariness; all he wanted was to get his work done more and more quickly, and as much of it as possible.

"Could we cut the Mashkin Upland too? what do you think?" he said to the old man.

"As God wills—the sun's not high. A little vodka for the lads?"

At the afternoon rest, when they were sitting down again, and those who smoked had lighted their pipes, the old man told the men that "the Mashkin Upland's to be cut—there'll be vodka."

"Why not cut it? Come on, Tit! We'll look sharp! We can eat at night. Come on!" voices cried out, and eating up their bread, the mowers went back to work.

"Come, lads, keep it up!" said Tit, and ran on ahead almost at a trot.

"Get along, get along!" said the old man, hurrying after him and easily overtaking him, "I'll mow thee down, look out!"

And young and old mowed away, as though they were racing with one another. But however fast they worked, they did not spoil the grass, and the swaths were laid just as neatly and exactly. The little piece left uncut in the corner was mown in five minutes. The last of the mowers were just ending their swaths while the foremost snatched up their coats onto their shoulders, and crossed the road toward the Mashkin Upland.

The sun was already sinking among the trees when they went with their jingling whetstone cases into the wooded ravine of the Mashkin Upland. The grass was up to their waists in the middle of the hollow, lush, tender, and feathery, spotted here and there among the trees with wild heartsease.

After a brief consultation whether to take the swaths lengthwise or diagonally Prokhor Iermilin, also a doughty mower, a huge, black-haired peasant, went on ahead. He went up to the top, turned back again and started mowing, and they all proceeded to form in line behind him, going downhill through the hollow and uphill right up to the edge of the forest. The sun sank behind the forest. The dew was falling by now; the mowers were in the sun only on the hillside, but below, where a mist was rising, and on the opposite side, they mowed into the fresh, dewy shade. The work went rapidly.

The spicily fragrant grass cut with a succulent sound, was at once laid in high swaths. The mowers from all sides, brought closer together in the short swath, kept urging one another on to the sound of jingling whetstone cases, and clanging scythes, and the hiss of the whetstones sharpening them, and good-humored shouts.

Levin still kept between the young peasant and the old man. The old man, who had put on his short sheepskin jacket, was just as good-humored, jocose, and free in his movements. Among the trees they were continually cutting with their scythes the so-called "birch mushrooms," swollen fat in the succulent grass. But the old man bent down every time he came across a mushroom, picked it up and put it in his bosom. "Another present for my old woman," he would say as he did so.

Easy as it was to mow the wet, lush grass, it was hard work going up and down the steep sides of the ravine. But this did not trouble the old man. Swinging his scythe just as ever, and moving his feet in their big, plaited bast sandals, with firm short steps, he climbed slowly up the steep place, and though his breeches hanging out below his smock, and his whole frame, trembled with effort, he did not miss one blade of grass or one mushroom on his way, and kept making jokes with the peasants and Levin. Levin walked after him and often thought he must fall, as he climbed with a scythe up a steep hillock, where it would have been hard work to clamber even without the scythe. But he climbed up and did what he had to do. He felt as though some external force were moving him.

## VI.

The Mashkin Upland was mown, the last swaths finished, the peasants had put on their coats and were gaily trudging home. Levin got on his horse, and, parting regretfully from the peasants, rode homeward. On the hillside he looked back; he could not see them in the mist that had risen from the valley; he could only hear their rough, good-humored voices, their laughter, and the sound of clanking scythes.

Sergei Ivanovich had long ago finished dinner, and was drinking iced lemonade in his own room, looking through the reviews and papers which he had just received by post, when Levin rushed into the room, talking merrily, with his wet and matted hair sticking to his forehead, and his back and chest grimed and moist.

"We mowed the whole meadow! Oh, it is fine, wonderful! And how have you been getting on?" said Levin, completely forgetting the disagreeable conversation of the previous day.

"Dear me! What you look like!" said Sergei Ivanovich, for the first moment looking round with some dissatisfaction. "And the door do shut the door!" he cried. "You must have let in a dozen at least."

## Anna Karenina

Sergei Ivanovich could not endure flies, and in his own room he never opened the window except at night, and carefully kept the door shut.

"Not one, on my honor. But if I have, I'll catch them. You wouldn't believe what a pleasure mowing is! How have you spent the day?"

"Very well. But have you really been mowing the whole day? I expect you're as hungry as a wolf. Kouzma has got everything ready for you."

"No, I don't feel hungry even. I had something to eat there. But I'll go and wash."

"Yes, go along, go along, and I'll come to you directly," said Sergei Ivanovich, shaking his head as he looked at his brother. "Go along, make haste," he added smiling, and, gathering up his books, he prepared to go too. He, too, felt suddenly good-humored and disinclined to leave his brother's side. "But what did you do while it was raining?"

"Rain? Why, there was scarcely a drop. I'll come directly. So you had a good day too? That's first-rate." And Levin went off to change his clothes.

Five minutes later the brothers met in the dining room. Although it seemed to Levin that he was not hungry, and he sat down to dinner simply so as not to hurt Kouzma's feelings, yet when he began to eat the dinner struck him as extraordinarily good. Sergei Ivanovich watched him with a smile.

"Oh, by the way, there's a letter for you," said he. "Kouzma, bring it from below, please. And mind you shut the doors."

The letter was from Oblonsky. Levin read it aloud. Oblonsky wrote to him from Peterburg: "I have had a letter from Dolly; she's at Ergushovo, and everything seems going wrong there. Do ride over and see her, please; help her with advice; you know all about it. She will be so glad to see you. She's quite alone, poor thing. My mother-in-law and all of them are still abroad."

"That's capital! I will certainly ride over to her," said Levin. "Or we'll go together. She's such a good woman, isn't she?"

"They're not far from here, then?"

"Thirty verstas. Or perhaps forty. But a capital road. It will be a capital drive."

"I shall be delighted," said Sergei Ivanovich, still smiling.

The sight of his younger brother's appearance had immediately put him in a good humor.

"Well, you have an appetite!" he said, looking at his dark-red, sunburned face and neck bent over the plate.

"Splendid! You can't imagine what an effective remedy it is for every sort of foolishness. I want to enrich medicine with a new word: Arbeitskur."

"Well, but you don't need it, I should fancy."

"No but for all sorts of nervous invalids."

## Anna Karenina

"Yes, it ought to be tried. I had meant to come to the mowing to look at you, but it was so unbearably hot that I got no further than the forest. I sat there a little, and went on by the forest to the village, met your old nurse, and sounded her as to the peasant's view of you. As far as I can make out, they don't approve of this. She said: 'It's not a gentleman's work.' Altogether, I fancy that in the people's ideas there are very clear and definite notions of certain, as they call it, 'gentlemanly' lines of action. And they don't sanction the gentlefolk's moving outside bounds clearly laid down in their ideas."

"Maybe so; but anyway, it's a pleasure such as I have never known in my life. And there's no harm in it, you know. Is there?" answered Levin. "I can't help it if they don't like it. Though I do believe it's all right. Eh?"

"Altogether," pursued Sergei Ivanovich, "you're satisfied with your day?"

"Quite satisfied. We cut the whole meadow. And I made friends with such a splendid old man there! You can't fancy how delightful he was!"

"Well, so you're satisfied with your day. And so am I. First, I solved two chess problems, and one a very pretty one a pawn opening. I'll show it to you. And then I thought over our conversation of yesterday."

"Eh! Our conversation of yesterday?" said Levin, blissfully dropping his eyelids and drawing deep breaths after finishing his dinner, and absolutely incapable of recalling what their conversation of yesterday had been about.

"I think you are partly right. Our difference of opinion amounts to this: that you make the mainspring self-interest, while I contend that interest in the common weal is bound to exist in every man of a certain degree of advancement. Possibly you are right too that action founded on material interest would be more desirable. You are altogether, as the French say, too prime-sautiere a nature; you must have intense, energetic action, or nothing."

Levin listened to his brother and did not understand a single word, and did not want to understand. He was only afraid his brother might ask him some question which would make it evident he had not heard.

"So that's what I think it is, my dear boy," said Sergei Ivanovich, touching him on the shoulder.

"Yes, of course. But, do you know? I won't stand up for my view," answered Levin, with a guilty, childlike smile. "Whatever was it I was disputing about?" he wondered. "Of course, I'm right, and he's right, and it's all first-rate. Only I must go round to the countinghouse and see to things." He got up, stretching and smiling.

Sergei Ivanovich smiled too.

"If you want to go out, let's go together," he said, disinclined to be parted from his brother, who seemed positively breathing out freshness and energy. "Come, we'll go to the countinghouse, if you have to go there."

"Oh, heavens!" shouted Levin, so loudly that Sergei Ivanovich was quite frightened.

"What, what is the matter?"

"How's Agathya Mikhailovna's hand?" said Levin, slapping himself on the head. "I'd positively forgotten her."

"It's much better."

"Well, anyway, I'll run down to her. Before you've time to get your hat on, I'll be back."



And he ran downstairs, clattering with his heels like a spring rattle.

## VII.

Stepan Arkadyevich had gone to Petersburg to perform the most natural and essential official duty so familiar to everyone in the government service, though incomprehensible to outsiders that duty but for which one could hardly be in government service: of reminding the ministry of his existence; and having, for the due performance of this rite, taken all the available cash from home, was gaily and agreeably spending his days at the races and in the summer villas. Meanwhile Dolly and the children had moved into the country, to cut down expenses as much as possible. She had gone to Ergushovo, the estate that had been her dowry, and the one where in spring the forest had been sold. It was nearly fifty verstas from Levin's Pokrovskoe.

The big old house at Ergushovo had been pulled down long ago, and the old Prince had had the wing done up and added to. Twenty years before, when Dolly was a child, the wing had been roomy and comfortable, though, like all wings, it stood sideways to the entrance avenue, and to the south. But by now this wing was old and dilapidated. When Stepan Arkadyevich had gone down in the spring to sell the forest, Dolly had begged him to look over the house and order what repairs might be needed. Stepan Arkadyevich, like an unfaithful husbands indeed, was very solicitous for his wife's comfort, and he had himself looked over the house, and given instructions about everything that he considered necessary. What he considered necessary was to cover all the furniture with new cretonne, to put up curtains, to weed the garden, to make a little bridge on the pond, and to plant flowers. But he forgot many other essential matters, the want of which greatly distressed Darya Alexandrovna later on.

In spite of Stepan Arkadyevich's efforts to be an attentive father and husband, he never could keep in his mind that he had a wife and children. He had bachelor tastes, and it was in accordance with them that he shaped his life. On his return to Moscow he informed his wife with pride that everything was ready, that the house would be a pretty toy, and that he most certainly advised her to go. His wife's staying away in the country was very agreeable to Stepan Arkadyevich from every point of view: it did the children good, it decreased expenses, and it left him more at liberty. Darya Alexandrovna regarded staying in the country for the summer as essential for the children, especially for the little girl, who had not succeeded in regaining her strength after the scarlatina, and also as a means of escaping the petty humiliations, the little bills owing to the wood merchant, the fishmonger, the shoemaker, which made her miserable. Besides this, she was pleased to go away to the country because she was dreaming of getting her sister Kitty to stay with her there. Kitty was to be back from abroad in the middle of the summer, and bathing had been prescribed for her. Kitty wrote that no prospect was so alluring as to spend the summer with Dolly at Ergushovo, full of childhood associations for both of them.

The first days of her existence in the country were very hard for Dolly. She used to stay in the country as a child, and the impression she had retained of it was that the country was a refuge from all the unpleasantness of the town, that life there, though not luxurious Dolly could easily make up her mind to that was cheap and comfortable; that there was plenty of everything, everything was cheap, everything could be got, and children were happy. But now, coming to the country as the head of a family, she perceived that it was all utterly unlike what she had fancied.

The day after their arrival there was a heavy fall of rain and in the night the water came through in the corridor and in the nursery, so that the beds had to be carried into the drawing room. There was no kitchenmaid to be found; of the nine cows, it appeared from the words of the cowherd woman that some were about to calve, others had just calved, others were old, and others again hard-uddered; there was neither butter nor milk enough even for the children. There were no eggs. They could get no fowls; old, purplish, stringy roosters were all they had for roasting and boiling. Impossible to get women to scrub the floors all were potato hoeing. Driving was out of the question, because one of the horses was restive, and bolted in the shafts. There was no place where they could

bathe; the whole of the riverbank was trampled by the cattle and open to the road; even walks were impossible, for the cattle strayed into the garden through a gap in the hedge, and there was one terrible bull, who bellowed, and therefore might be expected to gore somebody. There were no proper cupboards for their clothes; what cupboards there were either would not close at all, or flew open whenever anyone passed by them. There were no pots and kettles; there was no boiler in the washhouse, nor even an ironing board in the maids' room.

Finding instead of peace and rest all these, from her point of view, fearful calamities, Darya Alexandrovna was at first in despair. She exerted herself to the utmost, felt the hopelessness of the position, and was every instant suppressing the tears that started into her eyes. The bailiff, a retired quartermaster, whom Stepan Arkadyevich had taken a fancy to and had appointed bailiff on account of his handsome and respectful appearance as a hall porter, showed no sympathy for Darya Alexandrovna's woes. He would say respectfully, "Nothing can be done, the peasants are such a wretched lot," and did nothing to help her.

The position seemed hopeless. But in the Oblonskys' household, as in all families indeed, there was one inconspicuous but most valuable and useful person Matriona Philimonovna. She soothed her mistress, assured her that everything would come round (it was her expression, and Matvei had borrowed it from her), and without fuss or hurry proceeded to set to work herself.

She had immediately made friends with the bailiff's wife, and on the very first day she drank tea with her and the bailiff under the acacias, and reviewed all the circumstances of the position. Very soon Matriona Philimonovna had established her club, so to say, under the acacias, and there it was, in this club, consisting of the bailiff's wife, the village elder, and the countinghouse clerk, that the difficulties of existence were gradually smoothed away, and in a week's time everything actually had come round. The roof was mended, a kitchenmaid was found a crony of the village elder's hens were bought, the cows began giving milk, the garden hedge was stopped up with stakes, the carpenter made a mangle, hooks were put in the cupboards, and they ceased to fly open spontaneously and an ironing board covered with army cloth was placed across from the arm of a chair to the chest of drawers, and there was a smell of flatirons in the maids' room.

"Just see, now, and you were quite in despair," said Matriona Philimonovna, pointing to the ironing board.

They even rigged up a bathing shed of straw hurdles. Lily began to bathe, and Darya Alexandrovna began to realize, if only in part, her expectations, if not of a peaceful, at least of a comfortable, life in the country. Peaceful with six children Darya Alexandrovna could not be. One would fall ill, another might easily become so, a third would be without something necessary, a fourth would show symptoms of a bad disposition, and so on. Rare indeed were the brief periods of peace. But these cares and anxieties were for Darya Alexandrovna the sole happiness possible. Had it not been for them, she would have been left alone to brood over her husband who did not love her. And besides, hard though it was for the mother to bear the dread of illness, the illnesses themselves, and the grief of seeing signs of evil propensities in her children the children themselves were even now repaying her in small joys for her pains. Those joys were so small that they passed unnoticed, like gold in sand, and at bad moments she could see nothing but the pain, nothing but sand; but there were good moments too when she saw nothing but the joy, nothing but gold.

Now, in the solitude of the country, she began to be more and more frequently aware of those joys. Often, looking at them, she would make every possible effort to persuade herself that she was mistaken, that she as a mother was partial to her children. All the same, she could not help saying to herself that she had charming children, all six of them in different ways, but a set of children such as is not often to be met with and she was happy in them, and proud of them.

## VIII.

Toward the end of May, when everything had been more or less satisfactorily arranged, she received her husband's answer to her complaints of the disorganized state of things in the country. He wrote begging her forgiveness for not having thought of everything before, and promised to come down at the first chance. This chance did not present itself, and till the beginning of June Darya Alexandrovna stayed alone in the country.

On the Sunday in St. Peter's week Darya Alexandrovna drove to mass to have all her children take the sacrament. Darya Alexandrovna in her intimate, philosophical talks with her sister, her mother, and her friends very often astonished them by the freedom of her views in regard to religion. She had a strange religion, all her own, of the transmigration of souls, in which she had firm faith, troubling herself little about the dogmas of the Church. But in her family she was strict in carrying out all that was required by the Church and not merely in order to set an example, but with all her heart. The fact that the children had not been at the sacrament for nearly a year worried her extremely, and with the full approval and sympathy of Matriona Philimonovna she decided that this should take place now, in the summer.

For several days before Darya Alexandrovna was busily deliberating on how to dress all the children. Frocks were made, or altered and washed, seams and flounces were let out, buttons were sewn on and ribbons got ready. One dress, Tania's, which the English governess had undertaken, cost Darya Alexandrovna much loss of temper. The English governess in altering it had made the seams in the wrong place, had taken up the sleeves too much, and altogether spoiled the dress. It was so narrow on Tania's shoulders that it was quite painful to look at her. But Matriona Philimonovna had the happy thought of putting in gussets, and adding a little shoulder-cape. The dress was set right, but there was nearly a quarrel with the English governess. In the morning, however, all was happily arranged, and about nine o'clock the time at which they had asked the priest to wait for them for the mass the children in their new dresses stood with beaming faces on the step before the carriage, waiting for their mother.

In the carriage, instead of the restive Raven, they had harnessed, thanks to the representations of Matriona Philimonovna, the bailiff's horse, Brownie, and Darya Alexandrovna, delayed by anxiety over her own attire, came out and got in, dressed in a white muslin gown.

Darya Alexandrovna had done her hair, and dressed with care and excitement. In the old days she had dressed for her own sake, to look pretty and be admired; later on, as she got older, dress became more and more distasteful to her; she saw that she was losing her good looks. But now she began to feel pleasure and interest in dress again. Now she did not dress for her own sake, nor for the sake of her own beauty, but simply that, as the mother of those exquisite creatures, she might not spoil the general effect. And looking at herself for the last time in the looking glass she was satisfied with herself. She looked well. Not as well as she wished to look in the old days, at a ball, but well for the object she now had in view.

In the church there was no one but the peasants, the servants, and their womenfolk. But Darya Alexandrovna saw, or fancied she saw, the sensation produced by her children and herself. The children were not only beautiful to look at in their smart little dresses, but they were charming in the way they behaved. Aliosha, it is true, did not stand quite correctly; he kept turning round, trying to look at his little jacket from behind; but all the same he was wonderfully sweet. Tania behaved like a grown-up person, and looked after the little ones. And the smallest, Lily, was bewitching in her naive astonishment at everything, and it was difficult not to smile when, after taking the sacrament, she said in English, "Please, some more."

On the way home the children felt that something solemn had happened, and were very sedate.

Everything went happily at home too; but at lunch Grisha began whistling, and, what was worse, was disobedient to the English governess, and was forbidden to have any tart. Darya Alexandrovna would not have let things go as

far as the punishment on such a day had she been present; but she had to support the English governess's authority, and she upheld her decision that Grisha should have no tart. This rather spoiled the general good humor.

Grisha cried, declaring that Nikolinka had whistled too, yet was not punished, and that he wasn't crying for the tart he didn't care but at being unjustly treated. This was really too tragic, and Darya Alexandrovna made up her mind to persuade the English governess to forgive Grisha, and she went to speak to her. But on her way, as she passed the drawing room, she beheld a scene, filling her heart with such pleasure that the tears came into her eyes, and she forgave the delinquent herself.

The culprit was sitting at the window in the corner of the drawing room; beside him was standing Tania with a plate. On the pretext of wanting to give some dinner to her dolls, she had asked the governess's permission to take her share of tart to the nursery, and had taken it instead to her brother. While still weeping over the injustice of his punishment, he was eating the tart, and kept saying through his sobs, "Eat yourself; let's eat it together... together."

Tania had at first been under the influence of her pity for Grisha, then of a sense of her noble action, and tears were standing in her eyes too; but she did not refuse, and ate her share.

On catching sight of their mother they were dismayed, but, looking into her face, they saw they were not doing wrong. They burst out laughing, and, with their mouths full of tart, they began wiping their smiling lips with their hands, and smearing their radiant faces all over with tears and jam.

"Mercy! Your new white frock Tania! Grisha!" said their mother, trying to save the frock, but with tears in her eyes, smiling a blissful, rapturous smile.

The new frocks were taken off, and orders were given for the little girls to have their blouses put on, and the boys their old jackets, and the wide droshky to be harnessed with Brownie, to the bailiff's annoyance, again in the shafts to drive out for mushroom picking and bathing. A roar of delighted shrieks arose in the nursery, and never ceased till they had set off for the bathing place.

They gathered a whole basketful of mushrooms; even Lily found a birch mushroom. It had always happened before that Miss Hoole found them and pointed them out to her; but this time she found a big one quite by herself, and there was a general scream of delight; "Lily has found a mushroom!"

Then they reached the river, put the horses under the birch trees, and went to the bathing place. The coachman, Terentii, hitched the horses, who kept whisking away the horseflies, to a tree, and, treading down the grass, lay down in the shade of a birch and smoked his shag, while the never-ceasing shrieks of delight of the children floated across to him from the bathing place.

Though it was hard work to look after all the children and restrain their pranks, though it was difficult, too, to keep one's head and not mix up all the stockings, little breeches, and shoes for the different legs, and to undo and to do up again all the tapes and buttons, Darya Alexandrovna, who had always liked bathing herself, and believed it to be very good for the children, enjoyed nothing so much as bathing with all the children. To go over all those fat little legs, pulling on their stockings, to take in her arms and dip those little naked bodies, and to hear their screams of delight and alarm, to see the breathless faces with wide-open, scared, and happy eyes of all her splashing cherubs, was a great pleasure to her.

When half the children had been dressed, some peasant women in holiday dress, out picking herbs, came up to the bathing shed and stopped shyly. Matriona Philimonovna called one of them and handed her a sheet and a shirt that had dropped into the water for her to dry them, and Darya Alexandrovna began to talk to the women. At first they laughed behind their hands and did not understand her questions, but soon they grew bolder and began to talk, winning Darya Alexandrovna's heart at once by the genuine admiration of the children that they showed.

## Anna Karenina

"My, what a beauty! As white as sugar," said one, admiring Tanechka, and shaking her head, "but thin...."

"Yes, she has been ill."

"Look, they've been bathing him too," said another, pointing to the breast baby.

"No; he's only three months old," answered Darya Alexandrovna with pride.

"You see!"

"And have you any children?"

"I've had four; I've two living a boy and a girl. I weaned her last carnival."

"How old is she?"

"Why, more than one year old."

"Why did you nurse her so long?"

"It's our custom; for three fasts...."

And the conversation became most interesting to Darya Alexandrovna. What sort of time did she have? What was the matter with the boy? Where was her husband? Did it often happen?

Darya Alexandrovna felt disinclined to leave the peasant women, so interesting to her was their conversation, so completely identical were all their interests. What pleased her most of all was that she saw clearly what all the women admired more than anything was her having so many children, and such fine ones. The peasant women even made Darya Alexandrovna laugh, and offended the English governess, because she was the cause of the laughter she did not understand. One of the younger women kept staring at the Englishwoman, who was dressing after all the rest, and when she put on her third petticoat she could not refrain from the remark, "My, she keeps putting on and putting on, and she'll never have done!" she said, and they all went off into peals of laughter.

## IX.

On the drive home, as Darya Alexandrovna, with all her children round her, their heads still wet from their baths, and a kerchief tied over her own head, was getting near the house, the coachman said: "There's some gentleman coming: the master of Pokrovskoe, I do believe."

Darya Alexandrovna peeped out in front, and was delighted when she recognized in the gray hat and gray coat the familiar figure of Levin walking to meet them. She was glad to see him at any time, but at this moment she was specially glad he should see her in all her glory. No one was better able to appreciate her grandeur than Levin.

Seeing her, he found himself face to face with one of the pictures of his daydream of family life.

"You're like a hen with your brood, Darya Alexandrovna."

"Ah, how glad I am to see you!" she said, holding out her hand to him.

"Glad to see me but you didn't let me know. My brother's staying with me. I got a note from Stiva that you were

here."

"From Stiva?" Darya Alexandrovna asked with surprise.

"Yes; he writes that you are here, and that he thinks you might allow me to be of use to you," said Levin, and as he said it he became suddenly embarrassed, and, stopping abruptly, he walked on in silence by the droshky, snapping off the buds of the lime trees and nibbling them. He was embarrassed through a sense that Darya Alexandrovna would be annoyed by receiving from an outsider help that should by rights have come from her own husband. Darya Alexandrovna certainly did not like this little way of Stepan Arkadyevich's of foisting his domestic duties on others. And she was at once aware that Levin was aware of this. It was just for this fineness of perception, for this delicacy, that Darya Alexandrovna liked Levin.

"I know, of course," said Levin, "that this simply means that you would like to see me, and I'm exceedingly glad. Though I can fancy that, used to town housekeeping as you are, you must feel you are in the wilds here, and if there's anything wanted, I'm altogether at your disposal."

"Oh, no!" said Dolly. "At first things were rather uncomfortable, but now we've settled everything capitally thanks to my old nurse," she said, indicating Matriona Philimonovna, who, seeing that they were speaking of her, smiled brightly and cordially to Levin. She knew him, and knew that he would be a good match for her young lady, and was very keen to see the matter settled.

"Won't you get in, sir, we'll make room on this side!" she said to him.

"No, I'll walk. Children, who'd like to race the horses with me?"

The children knew Levin very little, and could not remember when they had seen him, but they experienced in regard to him none of that strange feeling of shyness and hostility which children so often experience toward hypocritical, grown-up people, and for which they are so often and miserably punished. Hypocrisy in anything whatever may deceive the cleverest and most penetrating man, but the least wide-awake of children recognizes it, and is revolted by it, however ingeniously it may be disguised. Whatever faults Levin had, there was not a trace of hypocrisy in him, and so the children showed him the same friendliness that they saw in their mother's face. On his invitation, the two elder ones at once jumped out to him and ran with him as simply as they would have done with their nurse, or Miss Hoole, or their mother. Lily, too, began begging to go to him, and her mother handed her over to him; he sat her on his shoulder and ran along with her.

"Don't be afraid, don't be afraid, Darya Alexandrovna!" he said, smiling good-humoredly to the mother; "there's no chance of my hurting or dropping her."

And, looking at his strong, agile, assiduously careful and extremely strained movements, the mother felt her mind at rest, and smiled gaily and approvingly as she watched him.

Here, in the country, with children, and with Darya Alexandrovna, with whom he was in sympathy, Levin was in a mood not infrequent with him, of childlike lightheartedness that she particularly liked in him. As he ran with the children, he taught them gymnastic feats, set Miss Hoole laughing with his queer English accent, and talked to Darya Alexandrovna of his pursuits in the country.

After dinner, Darya Alexandrovna, sitting alone with him on the balcony, began to speak of Kitty.

"You know, Kitty's coming here, and is going to spend the summer with me."

## Anna Karenina

"Really," he said, flushing; and at once, to change the conversation, he said: "Then I'll send you two cows, shall I? If you insist on a bill you shall pay me five roubles a month if you aren't ashamed."

"No, thank you. We can manage very well now."

"Oh, well, then, I'll have a look at your cows, and if you'll allow me, I'll give directions about their food. Everything depends on their food."

And Levin, to turn the conversation, explained to Darya Alexandrovna the theory of cowkeeping, based on the principle that the cow is simply a machine for the transformation of food into milk, and so on.

He talked of this, and passionately longed to hear more of Kitty, and, at the same time, was afraid of hearing it. He dreaded the breaking up of the inward peace he had gained with such effort.

"Yes, but still all this has to be looked after, and who is there to look after it?" Darya Alexandrovna responded reluctantly.

She had by now got her household matters so satisfactorily arranged, thanks to Matriona Philimonovna, that she was disinclined to make any change in them; besides, she had no faith in Levin's knowledge of farming. General principles, as to the cow being a machine for the production of milk, she looked on with suspicion. It seemed to her that such principles could only be a hindrance in farm management. It all seemed to her a far simpler matter: all that was needed, as Matriona Philimonovna had explained, was to give Brindle and Whitebreast more food and drink, and not to let the cook carry all the kitchen slops to the laundrymaid's cow. That was clear. But general propositions as to feeding on meal and on grass were doubtful and obscure. And, what was most important, she wanted to talk about Kitty.

## X.

"Kitty writes to me that there's nothing she longs for so much as quiet and solitude," Dolly said after the silence that had followed.

"And how is she better?" Levin asked in agitation.

"Thank God, she's quite well again. I never believed her lungs were affected."

"Oh, I'm very glad!" said Levin, and Dolly fancied she saw something touching, helpless, in his face as he said this and looked silently into her face.

"Let me ask you, Konstantin Dmitrievich," said Darya Alexandrovna, smiling her kindly and rather mocking smile, "why are you angry with Kitty?"

"I? I'm not angry with her," said Levin.

"Yes, you are. Why was it you did not come to see us or them when you were in Moscow?"

"Darya Alexandrovna," he said, blushing up to the roots of his hair, "I wonder really that with your kind heart you don't feel this. How it is you feel no pity for me, if nothing else, when you know..."

"What do I know?"

## Anna Karenina

"You know that I proposed and was refused," said Levin, and all the tenderness he had been feeling for Kitty a minute before was replaced by a feeling of anger for the slight he had suffered.

"What makes you suppose I know?"

"Because everybody knows it...."

"That's just where you are mistaken; I did not know it, though I had guessed it was so."

"Well, now you know it."

"All I knew was that something had happened that made her dreadfully miserable, and that she begged me never to speak of it. And if she would not tell me, she would certainly not speak of it to anyone else. But what did pass between you? Tell me."

"I have told you."

"When was it?"

"When I was at their house the last time."

"Do you know," said Darya Alexandrovna, "I am awfully, awfully sorry for her. You suffer only from pride...."

"Perhaps so," said Levin, "but..."

She interrupted him.

"But she, poor girl... I am awfully, awfully sorry for her. Now I see it all."

"Well, Darya Alexandrovna, you must excuse me," he said, getting up. "Good-by, Darya Alexandrovna, till we meet again."

"No, wait a minute," she said, clutching him by the sleeve. "Wait a minute, sit down."

"Please, please, don't let us talk of this," he said, sitting down, and at the same time feeling rise up and stir within his heart a hope he had believed to be buried.

"If I did not like you," she said, and tears came into her eyes; "if I did not know you, as I do know you..."

The feeling that had seemed dead revived more and more, rose up and took possession of Levin's heart.

"Yes, I understand it all now," said Darya Alexandrovna. "You can't understand it; for you men, who are free and make your own choice, it's always clear whom you love. But a girl's in a position of suspense, with all a woman's or maiden's modesty, a girl who sees you men from afar, who takes everything on trust a girl may have, and often has, such a feeling that she cannot tell what to say."

"Yes, if the heart does not speak...."

"No, the heart does speak; but just consider: you men have views about a girl, you come to the house, you make friends, you criticize, you wait to see if you have found what you love, and then, when you are sure you love her, you propose..."



"Well, that's not quite it."

"Anyway you propose, when your love is ripe, or when the balance has completely turned between the two you are choosing from. But a girl is not asked. She is expected to make her choice, and yet she cannot choose she can only answer 'yes' or 'no.'"

"Yes, to choose between me and Vronsky," thought Levin, and the dead thing that had come to life within him died again, and only weighed on his heart and set it aching.

"Darya Alexandrovna," he said, "that's how one chooses a new dress, or some purchase or other not love. The choice has been made, and so much the better.... And there can be no repetition."

"Ah, pride, pride!" said Darya Alexandrovna, as though despising him for the baseness of this feeling in comparison with that other feeling which only women know. "At the time when you proposed to Kitty she was just in a position in which she could not answer. She was in doubt. Doubt between you and Vronsky. Him she was seeing every day, and you she had not seen for a long while. Supposing she had been older... I, for instance, in her place, could have felt no doubt. I always disliked him, and my dislike proved to be justified."

Levin recalled Kitty's answer. She had said: "No, that cannot be...."

"Darya Alexandrovna," he said dryly, "I appreciate your confidence in me; I believe you are making a mistake. But whether I am right or wrong, that pride you so despise makes any thought of Katerina Alexandrovna out of the question for me; you understand utterly out of the question."

"I will only say one thing more: you know that I am speaking of my sister, whom I love as I love my own children. I don't say she cared for you; all I meant to say is that her refusal at that moment proves nothing."

"I don't know!" said Levin, jumping up. "you only knew how you are hurting me. It's just as if a child of yours were dead, and they were to say to you: He would have been like this and like that, and he might have lived, and how happy you would have been in him. But he's dead, dead, dead!..."

"How absurd you are!" said Darya Alexandrovna, looking with mournful tenderness at Levin's excitement. "Yes, I see it all more and more clearly," she went on musingly. "So you won't come to see us, then, when Kitty's here?"

"No, I shan't come. Of course I won't avoid meeting Katerina Alexandrovna; but, as far as I can, I will try to save her the annoyance of my presence."

"You are very, very absurd," repeated Darya Alexandrovna, looking with tenderness into his face. "Very well then, let it be as though we had not spoken of this. What have you come for, Tania?" she said in French to the little girl who had come in.

"Where's my spade, mamma?"

"I speak French, and you must too."

The little girl tried to say it in French, but could not remember the French for spade; the mother prompted her, and then told her in French where to look for the spade. And this made a disagreeable impression on Levin.

Everything in Darya Alexandrovna's house and children struck him now as by no means so charming as a little while before.

## Anna Karenina

"And why does she talk French with the children?" he thought. "How unnatural and false it is! And the children feel it so: Learning French and unlearning sincerity," he thought to himself, unaware that Darya Alexandrovna had thought all that over twenty times already, and yet, even at the cost of some loss of sincerity, believed it necessary to teach her children French in that way.

"But why are you going? Do stay a little."

Levin stayed to tea; but his good humor had vanished, and he felt ill at ease.

After tea he went out into the hall to order his horses to be put in, and, when he came back, he found Darya Alexandrovna greatly disturbed, with a troubled face, and tears in her eyes. While Levin had been outside, an incident had occurred which had all at once shattered all the happiness she had been feeling that day, and her pride in her children. Grisha and Tania had been fighting over a ball. Darya Alexandrovna, hearing a scream in the nursery, ran in and saw a terrible sight. Tania was pulling Grisha's hair, while he, with a face hideous with rage, was beating her with his fists wherever he could get at her. Something snapped in Darya Alexandrovna's heart when she saw this. It was as if darkness had swooped down upon her life; she felt that these children of hers, that she was so proud of, were not merely most ordinary, but positively bad, ill-bred children, with coarse, brutal propensities wicked children.

She could not talk or think of anything else, and she could not help speaking to Levin of her misery.

Levin saw she was unhappy and tried to comfort her, saying that it showed nothing bad, that all children fight; but, even as he said it, he was thinking in his heart: "No, I won't be artificial and talk French with my children; but my children won't be like that. All one has to do is not spoil children, not to distort their nature, and they'll be delightful. No, my children won't be like that."

He said good-by and drove away, and she did not try to detain him.

## XI.

In the middle of July the elder of the village on Levin's sister's estate, about twenty verstas from Pokrovskoe, came to Levin to report about the hay, and how things were going there. The chief source of income on his sister's estate was from the water meadows. In former years the hay had been bought by the peasants for twenty roubles the dessiatina. When Levin took over the management of the estate, he thought on examining the grasslands that they were worth more, and he fixed the price at twenty-five roubles the dessiatina. The peasants would not give that price, and, as Levin suspected, kept off other purchasers. Then Levin had driven over himself, and arranged to have the grass cut, partly by hired labor, partly at a payment of a certain proportion of the crop. The peasants of this village put every hindrance they could in the way of this new arrangement, but it was carried out, and the first year the meadows had yielded a profit almost double. Two years ago and the previous year the peasants had maintained the same opposition to the arrangement, and the hay had been cut on the same system. This year the peasants were doing all the mowing for a third of the hay crop, and the village elder had come now to announce that the hay had been cut, and that, fearing rain, he had invited the countinghouse clerk over, had divided the crop in his presence, and had raked together eleven stacks as the owner's share. From the vague answers to his question how much hay had been cut on the principal meadow, from the hurry of the village elder who had made the division, without asking leave, from the whole tone of the peasant, Levin perceived that there was something wrong in the division of the hay, and made up his mind to drive over himself to look into the matter.

Arriving by dinnertime at the village, and leaving his horse at the cottage of an old friend of his, the husband of his brother's wet nurse, Levin went to see the old man in his beehouse, wanting to find out from him the truth about the hay. Parmenich, a talkative, comely old man, gave Levin a very warm welcome, showed him all he was

doing, told him everything about his bees and the swarms of that year; but gave vague and unwilling answers to Levin's inquiries about the mowing. This confirmed Levin still more in his suspicions. He went to the hayfields and examined the stacks. The haystacks could not possibly contain fifty wagonloads each, and to convict the peasants Levin ordered the wagons that had carried the hay to be brought up directly, to lift one stack, and carry it into the barn. There turned out to be only thirty-two loads in the stack. In spite of the village elder's assertions about the compressibility of hay, and its having settled down in the stacks, and his swearing that everything had been done in fear of God, Levin stuck to his point that the hay had been divided without his orders, and that, therefore, he would not accept that hay as fifty loads to a stack. After a prolonged dispute the matter was decided by the peasants taking, as their share, these eleven stacks, reckoning them as fifty loads each, and apportioning the owner's share anew. The arguments and the division of the haycocks lasted the whole afternoon. When the last of the hay had been divided, Levin, entrusting the superintendence of the rest to the countinghouse clerk, sat down on a haycock marked off by a stake of willow, and looked admiringly at the meadow swarming with peasants.

In front of him, in the bend of the river beyond the little marsh, moved a bright-colored line of peasant women, merrily chattering with their ringing voices, and the scattered hay was being rapidly formed into gray winding rows over the pale green aftermath. After the women came the men with pitchforks, and from the gray rows there were growing up broad, high, soft haycocks. To the left telegas were rumbling over the meadow that had been already cleared, and one after another the haycocks vanished, flung up in huge forkfuls, and in their place there were rising heavy cartloads of fragrant hay hanging over the horses' hindquarters.

"What weather for haying! What hay it'll be!" said an old man, squatting down beside Levin. "It's tea, not hay It's like scattering grain to the ducks, the way they pick it up!" he added, pointing to the growing haycocks. "Since dinnertime they've carried a good half of it."

"The last load, eh?" he shouted to a young peasant, who drove by, standing in the front of an empty telega box, shaking the reins of hemp.

"The last, dad!" the lad shouted back, pulling in the horse, and, smiling, he looked round at a bright, rosy-cheeked peasant girl who sat in the telega box, smiling too, and drove on.

"Who's that? Your son?" asked Levin.

"My dear youngest," said the old man with a tender smile.

"What a fine fellow!"

"The lad's all right."

"Married already?"

"Yes, it's two years last St. Philip's day."

"Any children?"

"Children, indeed! Why, for over a year he was innocent as a babe himself, and bashful too," answered the old man. "What hay this is! It's tea indeed!" he repeated, wishing to change the subject.

Levin looked more attentively at Vanka Parmenov and his wife. They were loading a haycock onto the wagon not far from him. Ivan Parmenov was standing on the wagon, taking, laying in place, and stamping down the huge bundles of hay, which his pretty young wife deftly handed up to him, at first in armfuls, and then on the pitchfork. The young wife worked easily, merrily, and deftly. The close-packed hay did not once break away by her fork.

First she tedded it, stuck the fork into it, then with a rapid, supple movement leaned the whole weight of her body on it, and at once with a bend of her back under the red belt she drew herself up, and arching her full bosom under the long white apron, with a deft turn swung the fork in her arms, and flung the bundle of hay high onto the wagon. Ivan, obviously doing his best to save her every minute of unnecessary labor, made haste, opening wide his arms to clutch the bundle and lay it in the wagon. As she raked together what was left of the hay, the young wife shook off the bits of hay that had fallen on her neck, and, arranging the red kerchief that was gone backward baring her white brow, not browned by the sun, she crept under the wagon to tie up the load. Ivan directed her how to fasten the cord to the crosspiece, and at something she said he laughed aloud. In the expressions of both faces was to be seen vigorous, young, freshly awakened love.

## XII.

The load was tied on. Ivan jumped down and took the quiet, sleek horse by the bridle. The young wife flung the rake up on the load; with a bold step, swinging her arms, she went to join the women, who were forming a ring for the haymakers' dance. Ivan drove off to the road and fell into line with the other loaded wagons. The peasant women, with their rakes on their shoulders, gay with bright flowers, and chattering with ringing, merry voices, walked behind the hay wagon. One wild untrained female voice broke into a song, and sang it alone through a verse, and then the same verse was unanimously taken up and repeated by half a hundred strong healthy voices, of all sorts, coarse and fine.

The women, all singing, began to come close to Levin, and he felt as though a storm were swooping down upon him with a thunder of merriment. The storm swooped down, enveloped him and the haycock on which he was lying, and the other haycocks, and wagonloads, and the whole meadow and distant fields all seemed to be shaking and singing to the measures of this wild merry song, with its shouts and whistles and clapping. Levin felt envious of this health and mirthfulness; he longed to take part in the expression of this joy of life. But he could do nothing, and had to lie and look on and listen. When the peasants, with their singing, had vanished out of sight and hearing, a weary feeling of despondency at his own isolation, his physical inactivity, his alienation from this world, came over Levin.

Some of the very peasants who had been most active in wrangling with him over the hay, some whom he had treated with contumely, and who had tried to cheat him those very peasants had greeted him good-humoredly, and evidently had not, were incapable of having, any feeling of rancor against him, any regret, any recollection even of having tried to deceive him. All that was drowned in a sea of merry common labor. God gave the day, God gave the strength. And the day and the strength were consecrated to labor, and that labor was its own reward. For whom the labor? What would be its fruits? These were idle considerations beside the point.

Often Levin had admired this life, often he had a sense of envy of the men who led this life; but today, for the first time, especially under the influence of what he had seen in the attitude of Ivan Parmenov to his young wife, the idea presented itself definitely to his mind that it was in his power to exchange the dreary, artificial, idle, and individualistic life he was leading for this laborious, pure, and generally delightful life.

The old man who had been sitting beside him had long ago gone home; the people had all gone their different ways. Those who lived near had gone home, while those who came from afar were gathered into a group for supper, and to spend the night in the meadow. Levin, unobserved by the peasants, still lay on the haycock, and still looked on, and listened, and mused. The peasants who remained for the night in the meadow scarcely slept all the short summer night. At first there was the sound of merry talk and general laughing over the supper, then singing again, and laughter.

All the long day of toil had left no trace in them save lightness of heart. Before the early dawn all was hushed. Nothing was to be heard but the night sounds of the frogs that never ceased in the marsh, and the horses snorting

in the mist that rose over the meadow before morning. Rousing himself, Levin got up from the haycock, and, looking at the stars, he saw that the night was over.

"Well, what am I going to do? How am I to set about it?" he said to himself, trying to express to himself all the thoughts and feelings he had passed through in this brief night. All the thoughts and feelings he had passed through fell into three separate trains of thought. One was the renunciation of his old life, of his utterly useless education. This renunciation gave him satisfaction, and was easy and simple. Another series of thoughts and mental images related to the life he longed to live now. The simplicity, the purity, the sanity of this life he felt clearly, and he was convinced he would find in it its content, its peace, and its dignity, of the lack of which he was so miserably conscious. But a third series of ideas turned upon the question of how to effect this transition from the old life to the new. And there nothing took clear shape for him. "A wife. Work and the necessity of work. Leave Pokrovskoe? Buy land? Become a member of a peasant community? Marry a peasant girl? How am I to set about it?" he asked himself again, and could not find an answer. "I haven't slept all night, though, and I can't think it out clearly," he said to himself. "I'll work it out later. One thing's certain this night has decided my fate. All my old dreams of home life were absurd, not the real thing," he told himself. "It's all ever so much simpler and better...."

"How beautiful!" he thought, looking at the strange, as it were, mother-of-pearl shell of white fleecy cloudlets resting right over his head in the middle of the sky. "How exquisite it all is in this exquisite night! And when was there time for that cloud shell to form? Just now I looked at the sky, and there was nothing in it only two white streaks. Yes, and so imperceptibly, too, my views of life changed!"

He went out of the meadow and walked along the highroad toward the village. A slight wind arose, and the sky looked gray and sullen. The gloomy moment had come that usually precedes the dawn, the full triumph of light over darkness.

Shrinking from the cold, Levin walked rapidly, looking at the ground. "What's that? Someone coming," he thought, catching the tinkle of bells, and lifting his head. Forty paces from him a carriage and four with the luggage on its top was driving toward him along the grassy highroad on which he was walking. The shaft horses were tilted against the shafts by the ruts, but the dexterous driver sitting on the box held the shaft over the ruts, so that the wheels ran on the smooth part of the road.

This was all Levin noticed, and without wondering who it could be, he gazed absently at the coach.

In the coach was an old lady dozing in one corner, and at the window, evidently only just awake, sat a young girl holding in both hands the ribbons of a white cap. With a face full of light and thought, full of a subtle, complex inner life, that was remote from Levin, she was gazing from the window at the glow of the sunrise.

At the very instant when this apparition was vanishing, the truthful eyes glanced at him. She recognized him, and her face lighted up with wondering delight.

He could not be mistaken. There were no other eyes like those in all the world. There was only one creature in the world that could concentrate for him all the brightness and meaning of life. It was she. It was Kitty. He comprehended that she was driving to Ergushovo from the railway station. And everything that had been stirring Levin during this sleepless night, all the resolutions he had made, all vanished at once. He recalled with horror his dreams of marrying a peasant girl. There only, in this carriage that had crossed over to the other side of the road, and was rapidly disappearing there only could he find the solution of the riddle of his life, which had weighed so agonizingly upon him of late.

She did not look out again. The sound of the carriage springs was no longer audible, the bells could scarcely be heard. The barking of dogs showed the carriage had reached the village, and all that was left was the empty fields

all round, the village in front, and he himself isolated and apart from it all, wandering lonely along the deserted highroad.

He glanced at the sky, expecting to find there the cloud shell he had been admiring and taking as the symbol of the ideas and feelings of that night. There was nothing in the sky in the least like a shell. There, in the remote heights above, a mysterious change had been accomplished. There was no trace of a shell, and there was stretched over fully half the sky an even cover of tiny, and ever tinier, cloudlets. The sky had grown blue and bright; and with the same softness, but with the same remoteness, it met his questioning gaze.

"No," he said to himself, "however good that life of simplicity and toil may be, I cannot go back to it. I love her."

### XIII.

None but those who were most intimate with Alexei Alexandrovich knew that, while on the surface the coldest and most rational of men, he had one weakness quite opposed to the general trend of his character. Alexei Alexandrovich could not hear or see a child or woman crying without being moved. The sight of tears threw him into a state of nervous agitation, and he utterly lost all power of reflection. The head clerk of his board and the secretary were aware of this, and used to warn women who came with petitions on no account to give way to tears, if they did not want to ruin their chances. "He will get angry, and will not listen to you," they used to say. And, as a fact, in such cases the emotional disturbance set up in Alexei Alexandrovich by the sight of tears found expression in hasty anger. "I can do nothing. Kindly leave the room!" he would usually shout in such cases.

When, returning from the races, Anna had informed him of her relations with Vronsky, and immediately afterward had burst into tears, hiding her face in her hands, Alexei Alexandrovich, for all the fury aroused in him against her, was aware at the same time of a rush of that emotional disturbance always produced in him by tears. Conscious of it, and conscious that any expression of his feelings at that minute would be out of keeping with the situation, he tried to suppress every manifestation of life in himself, and so neither stirred nor looked at her. This was what had caused that strange expression of deathlike rigidity in his face which had so impressed Anna.

When they reached the house he helped her to get out of the carriage, and, making an effort to master himself, took leave of her with his usual urbanity, and uttered that phrase that bound him to nothing; he said that tomorrow he would let her know his decision.

His wife's words, confirming his worst suspicions, had sent a cruel pang to the heart of Alexei Alexandrovich. That pang was intensified by the strange feeling of physical pity for her engendered by her tears. But when he was all alone in the carriage Alexei Alexandrovich, to his surprise and delight, felt complete relief both from this pity and from the doubts and agonies of jealousy.

He experienced the sensations of a man who has had a tooth out after suffering long from toothache. After a fearful agony and a sense of something huge, bigger than the head itself, being torn out of his jaw, the sufferer, hardly able to believe in his own good luck, feels all at once that what has so long envenomed his existence and enchained his attention, exists no longer, and that he can live and think again, and take an interest in other things besides his tooth. This feeling Alexei Alexandrovich was experiencing. The agony had been strange and terrible, but now it was over; he felt that he could live again and think of something other than his wife.

"No honor, no heart, no religion; a corrupt woman. I always knew it and always saw it, though I tried to deceive myself to spare her," he said to himself. And it actually seemed to him that he always had seen it: he recalled incidents of their past life, in which he had never seen anything wrong before now these incidents proved clearly that she had always been a corrupt woman. "I made a mistake in linking my life to hers; but there was nothing wrong in my mistake, and so I cannot be unhappy. It's not I who am to blame," he told himself, "but she.

But I have nothing to do with her. She does not exist for me."

All that would befall her and her son, toward whom his sentiments were as much changed as toward her, ceased to interest him. The only thing that interested him now was the question in what way he could best, with most propriety and comfort for himself, and so with most justice, shake clear the mud with which she had spattered him in her fall, and then proceed along his path of active, honorable, and useful existence.

"I cannot be made unhappy by the fact that a contemptible woman has committed a crime. I have only to find the best way out of the difficult position in which she has placed me. And I shall find it," he said to himself, frowning more and more. "I'm neither the first nor the last." And to say nothing of historical instances dating from Menelaus, recently revived in the memory of all by La Belle Helene, a whole list of contemporary examples of husbands with unfaithful wives in the highest society rose before Alexei Alexandrovich's imagination. "Daryalov, Poltavsky, Prince Karibanov, Count Paskudin, Dram... Yes, even Dram... such an honest, capable fellow... Semionov, Chagin, Sigonin," Alexei Alexandrovich remembered. "Admitting that a certain quite irrational ridicule falls to the lot of these men, yet I never saw anything but a misfortune in it, and always felt sympathy for it," Alexei Alexandrovich said to himself, though indeed this was not the fact, and he had never felt sympathy for misfortunes of that kind, but the more often he had heard of instances of unfaithful wives betraying their husbands, the more highly he had thought of himself. "It is a misfortune which may befall anyone. And this misfortune has befallen me. The only thing to be done is to make the best of the situation." And he began passing in review the methods of proceeding of men who had been in the same position that he was in.

"Daryalov fought a duel...."

The duel had particularly fascinated the thoughts of Alexei Alexandrovich in his youth, just because he was physically a fainthearted man, and was himself well aware of the fact. Alexei Alexandrovich could not without horror contemplate the idea of a pistol aimed at himself, and never made use of any weapon in his life. This horror had in his youth set him often pondering on dueling, and picturing himself in a position in which he would have to expose his life to danger. Having attained success and an established position in the world, he had long ago forgotten this feeling; but the habitual bent of feeling reasserted itself, and dread of his own cowardice proved even now so strong that Alexei Alexandrovich spent a long while thinking over the question of dueling in all its aspects, and hugging the idea of a duel, though he was fully aware beforehand that he would never under any circumstances fight one.

"There's no doubt our society is still so barbarous (it's not the same in England) that very many" and among these were those whose opinion Alexei Alexandrovich particularly valued "look favorably on the duel; but what result is attained by it? Suppose I call him out," Alexei Alexandrovich went on to himself, and vividly picturing the night he would spend after the challenge, and the pistol aimed at him, he shuddered, and knew that he never would do it "suppose I call him out. Suppose I am taught," he went on musing, "I am placed, I press the trigger," he said to himself, closing his eyes, "and it turns out I have killed him," Alexei Alexandrovich said to himself, and he shook his head as though to dispel such silly ideas. "What sense is there in murdering a man in order to define one's relation to a guilty wife and son? I should still have to decide what I ought to do with her. But what is more probable, and what would doubtlessly occur I should be killed or wounded. I, the innocent person, should be the victim killed or wounded. It's even more senseless. But, apart from that, a challenge to fight would be an act hardly honest on my side. Don't I know beforehand that my friends would never allow me to fight a duel would never allow the life of a statesman, needed by Russia, to be exposed to danger? What would come of it? It would come of it that, knowing beforehand that the matter would never come to real danger, it would amount to my simply trying to gain a certain sham reputation by such a challenge. That would be dishonest, that would be false, that would be deceiving myself and others. A duel is quite impossible, and no one expects it of me. My aim is simply to safeguard my reputation, which is essential for the uninterrupted pursuit of my public duties." Official duties, which had always been of great consequence in Alexei Alexandrovich's eyes, seemed of special importance to his mind at this moment.

Considering and rejecting the duel, Alexei Alexandrovich turned to divorce another solution selected by several of the husbands he remembered. Passing in mental review all the instances he knew of divorces (there were plenty of them in the very highest society with which he was very familiar), Alexei Alexandrovich could not find a single example in which the object of divorce was that which he had in view. In all these instances the husband had practically ceded or sold his unfaithful wife, and the very party who, being in fault, had not the right to contract a marriage, had formed counterfeit, pseudo-matrimonial ties with a new husband. In his own case, Alexei Alexandrovich saw that a legal divorce, that is to say, one in which only the guilty wife would be repudiated, was impossible of attainment. He saw that the complex conditions of the life they led made the coarse proofs of his wife's guilt, required by the law, out of the question; he saw that a certain refinement in that life would not admit of such proofs being brought forward, even if he had them, and that to bring forward such proofs would damage him in the public estimation more than it would her.

An attempt at divorce could lead to nothing but a public scandal, which would be a perfect godsend to his enemies for calumny and attacks on his high position in society. His chief object, to define the position with the least amount of disturbance possible, would not be attained by divorce either. Moreover, in the event of divorce, or even of an attempt to obtain a divorce, it was obvious that the wife broke off all relations with the husband and threw in her lot with the lover. And, in spite of the complete, as he supposed, contempt and indifference he now felt for his wife, at the bottom of his heart Alexei Alexandrovich still had one feeling left in regard to her a disinclination to see her free to throw in her lot with Vronsky, so that her crime would be to her advantage. The mere notion of this so exasperated Alexei Alexandrovich, that directly it rose to his mind he groaned with inward agony, and got up and changed his place in the carriage, and for a long while after he sat with scowling brows, wrapping his numbed and bony legs in the fleecy rug.

"Apart from formal divorce, one might still do as Karibonov, Paskudin, and that good fellow Dram did that is, separate from one's wife," he went on thinking, when he had regained his composure. But this step too presented the same drawback of public scandal as a divorce, and, what was more, a separation, quite as much as a regular divorce, flung his wife into the arms of Vronsky. "No, it's out of the question, out of the question!" he said aloud, twisting his rug about him again. "I cannot be unhappy, but neither she nor he ought to be happy."

The feeling of jealousy, which had tortured him during the period of uncertainty, had passed away at the instant when, with agony, the tooth had been extracted by his wife's words. But that feeling had been replaced by another the desire, not merely that she should not triumph, but that she should get due punishment for her crime. He did not acknowledge this feeling, but at the bottom of his heart he longed for her to suffer for having destroyed his peace of mind, and having dishonored him. And once again going over the conditions inseparable from a duel, a divorce, a separation, and once again rejecting them, Alexei Alexandrovich felt convinced that there was only one solution to keep her with him, concealing what had happened from the world, and using every measure in his power to break off the intrigue, and still more though this he did not admit to himself to punish her. "I must communicate to her my decision; that, thinking over the terrible position in which she has placed her family, all other solutions will be worse for both sides than an external status quo, and that such I agree to retain, on the strict condition of obedience on her part to my wishes that is to say, cessation of all intercourse with her lover." When this decision had been finally adopted, another weighty consideration occurred to Alexei Alexandrovich in support of it. "By such a course only shall I be acting in accordance with the dictates of religion," he told himself. "In adopting this course, I am not casting off a guilty wife, but giving her a chance of amendment; and, indeed, difficult as the task will be to me, I shall devote part of my energies to her reformation and salvation." Though Alexei Alexandrovich was perfectly aware that he could not exert any moral influence over his wife, that such an attempt at reformation could lead to nothing but falsity; though in passing through these difficult moments he had not once thought of seeking guidance in religion; yet now, when his conclusion corresponded, as it seemed to him, with the requirements of religion, this religious sanction to his decision gave him complete satisfaction, and to some extent restored his peace of mind. He was pleased to think that, even in such an important crisis in life, no one would be able to say that he had not acted in accordance with the principles of that religion whose banner he had always held aloft amid the general coolness and indifference. As he



## Anna Karenina

pondered over subsequent developments, Alexei Alexandrovich did not see, indeed, why his relations with his wife should not remain practically the same as before. No doubt, she could never regain his esteem, but there was not, and there could not be, any sort of reason why his existence should be troubled, and why he should suffer because she was a bad and faithless wife. "Yes, time will pass time, which arranges all things; and the old relations will be reestablished," Alexei Alexandrovich told himself; so far reestablished, that is, that I shall not be sensible of a break in the continuity of my life. She is bound to be unhappy, but I am not to blame, and so I cannot be unhappy."

### XIV.

As he neared Peterburg, Alexei Alexandrovich not only adhered entirely to his decision, but was even composing in his head the letter he would write to his wife. Going into the hall Alexei Alexandrovich glanced at the letters and papers brought from his Ministry and directed that they should be brought to him in his study.

"The horses can be taken out, and I will see no one," he said in answer to the porter, with a certain pleasure, indicative of his agreeable frame of mind, emphasizing the words, "see no one."

In his study Alexei Alexandrovich walked up and down twice, and stopped at an immense writing table, on which six candles had already been lighted by the valet who had preceded him. He cracked his knuckles, and sat down, sorting out his writing appurtenances. Putting his elbows on the table, he bent his head on one side, thought a minute, and began to write, without pausing for a second. He wrote without using any form of address to her, and wrote in French, making use of the plural "vous," which has not the same note of coldness as the corresponding Russian form.

"At our last conversation, I notified you of my intention of communicating to you my decision in regard to the subject of that conversation. Having carefully considered everything, I am writing now with the object of fulfilling that promise. My decision is as follows. Whatever your conduct may have been, I do not consider myself justified in breaking the ties in which we are bound by a Higher Power. The family cannot be broken up by a whim, a caprice, or even by the sin of one of the partners in the marriage, and our life must go on as it has done in the past. This is essential for me, for you, and for our son. I am fully persuaded that you have repented, and do repent, of what has called forth the present letter, and that you will co-operate with me in eradicating the cause of our estrangement, and forgetting the past. In the contrary event, you can conjecture what awaits you and your son. All this I hope to discuss more in detail in a personal interview. As the season is drawing to a close, I would beg you to return to Peterburg as quickly as possible not later than Tuesday. All necessary preparations shall be made for your arrival here. I beg you to note that I attach particular significance to compliance with this request.

"A. Karenin

"P.S. I enclose the money which may be needed for your expenses."

He read the letter through and felt pleased with it, and especially because he had remembered to enclose money: there was not a harsh word, not a reproach in it, nor was there undue indulgence. Most of all, it was a golden bridge for a return. Folding the letter and smoothing it with a massive ivory knife, and putting it in an envelope with the money, he rang the bell with the gratification it always afforded him to use the well-arranged appointments of his writing table.

"Give this to a messenger to be delivered to Anna Arkadyevna tomorrow, at the summer villa," he said, getting up.

"Certainly, Your Excellency; is tea to be served in the study?"

Alexei Alexandrovich ordered tea to be brought to the study, and playing with the massive paper knife, he moved to his easy chair, near which there had been placed ready for him a lamp and the French work on les tables Eugubines that he had begun. Over the easy chair there hung in a gold frame an oval portrait of Anna, a fine painting by a celebrated artist. Alexei Alexandrovich glanced at it. The unfathomable eyes gazed ironically and insolently at him, as they did that night of their last explanation. Insufferably insolent and challenging was the effect in Alexei Alexandrovich's eyes of the black lace about the head, admirably touched in by the painter, the black hair and handsome white hand the fourth finger of which was covered with rings. After looking at the portrait for a minute, Alexei Alexandrovich shuddered so that his lips quivered and produced "brrr," and turned away. He made haste to sit down in his easy chair and opened the book. He tried to read, but he could not revive the very vivid interest he had felt before in Eugubine inscriptions. He looked at the book and thought of something else. He thought not of his wife, but of a complication that had arisen in his official life, which at the time constituted the chief interest of it. He felt that he had penetrated more deeply than ever before into this intricate affair, and that he had originated a leading idea he could say it without self-flattery calculated to clear up the whole business, to strengthen him in his official career, to discomfit his enemies, and thereby to be of the greatest benefit to the State. Directly the servant had set the tea and left the room, Alexei Alexandrovich got up and went to the writing table. Moving into the middle of the table a portfolio of current papers, with a scarcely perceptible smile of self-satisfaction, he took a pencil from a rack and plunged into the perusal of a complex report relating to the present complication. The complication was of this nature: Alexei Alexandrovich's characteristic quality as a politician, that special individual qualification that every rising functionary possesses, the qualification that with his unflagging ambition, his reserve, his honesty, and his self-confidence had made his career, was his contempt for red tape, his cutting down of correspondence, his direct contact, wherever possible, with the living fact, and his economy. It happened that the famous Commission of the 2nd of June had set on foot an inquiry into the irrigation of lands in the Zairaisky province, which fell under Alexei Alexandrovich's department, and was a glaring example of fruitless expenditure and paper reforms. Alexei Alexandrovich was aware of the truth of this. The irrigation of these lands in the Zairaisky province had been initiated by the predecessor of Alexei Alexandrovich's predecessor. And vast sums of money had actually been spent, and were still being spent, on this business, and utterly unproductively, and the whole business could obviously lead to nothing whatever. Alexei Alexandrovich had perceived this at once on entering office, and would have liked to lay hands on the business. But at first, when he did not yet feel secure in his position, he knew it would affect too many interests, and would be imprudent; later on he had been engrossed in other questions, and had simply forgotten this case. It went of itself, like all such cases, by the mere force of inertia. (Many people gained their livelihood by this business, especially one highly conscientious and musical family: all the daughters played on stringed instruments, and Alexei Alexandrovich knew the family and had stood godfather to one of the elder daughters.) The raising of this question by a hostile Ministry was in Alexei Alexandrovich's opinion a dishonorable proceeding, seeing that in every Ministry there were things similar and worse, which no one inquired into, for well-known reasons of official etiquette. However, now that the gauntlet had been thrown down to him, he had boldly picked it up and demanded the appointment of a special commission to investigate and verify the working of the Commission of Irrigation of the lands in the Zairaisky province; but in compensation he gave no quarter to the enemy either. He demanded also the appointment of another special commission to inquire into the question of the Native Tribes Organization. The question of the Native Tribes had been brought up incidentally in the Committee of the 2nd of June, and had been pressed forward actively by Alexei Alexandrovich, as one admitting of no delay on account of the deplorable condition of the native tribes. In the Committee this question had been a ground of contention between several Ministries. The Ministry hostile to Alexei Alexandrovich proved that the condition of the native tribes was exceedingly flourishing, that the proposed reconstruction might be the ruin of their prosperity, and that if there were anything wrong, it arose mainly from the failure on the part of Alexei Alexandrovich's Ministry to carry out the measures prescribed by law. Now Alexei Alexandrovich intended to demand: First, that a new commission should be formed which should be empowered to investigate the condition of the native tribes on the spot; secondly, if it should appear that the condition of the native tribes actually was such as it appeared to be from the official data in the hands of the Committee, that another new scientific commission should be appointed to investigate the deplorable condition of the native tribes from the (a) political, (b) administrative, (c) economic, (d) ethnographical, (e) material, and (f)

religious points of view; thirdly, that evidence should be required from the rival Ministry of the measures that had been taken during the last ten years by that Ministry for averting the disastrous conditions in which the native tribes were now placed; and, fourthly and finally, that that Ministry be asked to explain why it had, as appeared from the reports submitted before the Committee, under Nos. 17,015 and 18,308, dated December 5, 1863, and June 7, 1864 respectively, acted in direct contravention of the intention of the basic and organic law, T... Statute 18, and the note to Statute 36. A flush of eagerness suffused the face of Alexei Alexandrovich as he rapidly wrote out a synopsis of these ideas for his own benefit. Having filled a sheet of paper, he got up, rang, and sent a note to the head clerk to look up certain necessary facts for him. Getting up and walking about the room, he glanced again at the portrait, frowned, and smiled contemptuously. After reading a little more of the book on Eugubine inscriptions, and renewing his interest in it, Alexei Alexandrovich went to bed at eleven o'clock, and recollecting as he lay in bed the incident with his wife, he saw it now in by no means so gloomy a light.

## XV.

Though Anna had obstinately and with exasperation contradicted Vronsky when he told her their position was impossible, and persuaded her to lay open everything to her husband at the bottom of her heart she regarded her own position as false and dishonorable, and she longed with her whole soul to change it. On the way home from the races she had told her husband the truth in a moment of excitement, and in spite of the agony she had suffered in doing so, she was glad of it. After her husband had left her, she told herself that she was glad, that now everything was made clear, and at least there would be no more lying and deception. It seemed to her beyond doubt that her position was now made clear forever. It might be bad, this new position, but it would be clear; there would be no indefiniteness or falsehood about it. The pain she had caused herself and her husband in uttering those words would be rewarded now by everything being made clear, she thought. That evening she saw Vronsky, but she did not tell him of what had passed between her and her husband, though, to make the position clear, it was necessary to tell him.

When she woke up next morning the first thing that rose to her mind was what she had said to her husband, and those words seemed to her so awful that she could not conceive now how she could have brought herself to utter those strange, coarse words, and could not imagine what would come of it. But the words were spoken, and Alexei Alexandrovich had gone away without saying anything. "I saw Vronsky and did not tell him. At the very instant he was going away I would have turned him back and told him, but I changed my mind, because it was strange that I had not told him the first minute. Why was it I wanted to tell him and didn't?" And in answer to this question a burning blush of shame spread over her face. She knew what had kept her from it, she knew that she had been ashamed. Her position, which had seemed to her simplified the night before, suddenly struck her now as not only not simple, but as absolutely hopeless. She felt terrified at the disgrace, of which she had not even thought before. Directly she thought of what her husband would do, the most terrible ideas came to her mind. She had a vision of being turned out of the house, of her shame being proclaimed to all the world. She asked herself where she should go when she was turned out of the house, and she could not find an answer.

When she thought of Vronsky, it seemed to her that he did not love her, that he was already beginning to be tired of her, that she could not offer herself to him, and she felt bitter against him for it. It seemed to her that the words that she had spoken to her husband, and had continually repeated in her imagination, she had said to everyone, and everyone had heard them. She could not bring herself to look those of her own household in the face. She could not bring herself to call her maid, and still less go downstairs and see her son and his governess.

The maid, who had been listening at her door for a long while, came into her room of her own accord. Anna glanced inquiringly into her face, and blushed with a scared look. The maid begged her pardon for coming in, saying that she had fancied the bell rang. She brought her clothes and a note. The note was from Betsy. Betsy reminded her that Liza Merkalova and Baroness Stoltz were coming to play croquet with her that morning with their adorers, Kaluzhsky and old Stremov. "Come, if only as a study in characters. I shall expect you," she

finished.

Anna read the note and heaved a deep sigh.

"Nothing I need nothing," she said to Annushka, who was rearranging the bottles and brushes on the dressing table. "You may go. I'll dress at once and come down. I need nothing, nothing."

Annushka went out, but Anna did not begin dressing, and sat in the same position, her head and hands hanging listlessly, and every now and then she shivered all over, was apparently about to make some gesture, utter some word, and sank back into lifelessness again. She repeated continually, "My God! my God!" But neither "God" nor "my" had any meaning to her. The idea of seeking help in her difficulty in religion was as remote from her as seeking help from Alexei Alexandrovich himself, although she had never had doubts of the faith in which she had been brought up. She knew that the support of religion was possible only upon condition of renouncing what made up for her the whole meaning of life. She was not simply miserable, she began to feel alarm at the new spiritual condition, never experienced before, in which she found herself. She felt as though everything were beginning to be double in her soul, just as objects sometimes appear double to overtired eyes. She hardly knew at times what it was she feared, and what she hoped for. Whether she feared or desired what had happened, or what was going to happen, and exactly what she longed for, she could not have said.

"Ah, what am I doing!" she said to herself, feeling a sudden thrill of pain in both sides of her head. When she came to herself, she saw that she was holding her hair in both hands, each side of her temples, and she was pressing them. She jumped up, and began walking about.

"The coffee is ready, and mademoiselle and Seriozha are waiting," said Annushka, coming back again and finding Anna in the same position.

"Seriozha? What about Seriozha?" Anna asked, with sudden eagerness, recollecting her son's existence for the first time that morning.

"He's been naughty, I think," answered Annushka with a smile.

"In what way?"

"Some peaches were lying on the table in the corner room. I think he ate one of them on the sly."

The recollection of her son suddenly roused Anna from the helpless condition in which she found herself. She recalled the partly sincere, though greatly exaggerated, role of the mother living for her child, which she had taken up of late years, and she felt with joy that in the plight in which she found herself she had a dominion independent of any position she would be placed in by her relations to her husband or to Vronsky. This dominion was her son. In whatever position she might be placed, she could not abandon her son. Her husband might put her to shame and turn her out, Vronsky might grow cold to her and go on living his own life apart (she thought of him again with bitterness and reproach); she could not leave her son. She had an aim in life. And she must act; act to secure the position of her son, so that he might not be taken from her. Quickly indeed, as quickly as possible, she must take action before he was taken from her. She must take her son and go away. Here was the one thing she had to do now. She must be calm, and get out of this insufferable position. The thought of immediate action binding her to her son, of going away somewhere with him, gave her this calming.

She dressed quickly, went downstairs, and with resolute steps walked into the drawing room, where she found, as usual, waiting for her, the coffee, Seriozha, and his governess. Seriozha, all in white, with his back and head bent, was standing at a table under a looking glass, and with an expression of intense concentration which she knew well, and in which he resembled his father, he was doing something to the flowers he carried.

## Anna Karenina

The governess had a particularly severe expression. Seriozha screamed shrilly, as he often did, "Ah, mamma!" and stopped, hesitating whether to go to greet his mother and put down the flowers, or to finish making the wreath and go with the flowers.

The governess, after saying good morning, began a long and detailed account of Seriozha's naughtiness, but Anna did not hear her; she was considering whether she would take her with her or not. "No, I won't take her," she decided. "I'll go alone with my son."

"Yes, it's very wrong," said Anna, and taking her son by the shoulder she looked at him, not severely, but with a timid glance that bewildered and delighted the boy, and she kissed him. "Leave him to me," she said to the astonished governess, and without letting go of her son, she sat down at the table, where coffee was set ready for her.

"Mamma! I... I didn't..." he said, trying to make out from her expression what was in store for him in regard to the peaches.

"Seriozha," she said, as soon as the governess had left the room, "that was wrong, but you'll never do it again, will you?... You love me?"

She felt that the tears were coming into her eyes. "Can I help loving him?" she said to herself, looking deeply into his scared and at the same time delighted eyes. "And can he ever join his father in punishing me? Is it possible he will not feel for me?" Tears were already flowing down her face, and to hide them she got up abruptly and almost ran out on the terrace.

After the thundershowers of the last few days, cold, bright weather had set in. The air was cold in the bright sun that filtered through the freshly washed leaves.

She shivered, both from the cold and from the inward horror which had clutched her with fresh force in the open air.

"Run along, run along to Mariette," she said to Seriozha, who had followed her out, and she began walking up and down on the straw matting of the terrace. "Can it be that they won't forgive me, won't understand how it all could not have been otherwise?" she said to herself.

Standing still, and looking at the tops of the aspen trees waving in the wind, with their freshly washed, brightly shining leaves in the cold sunshine, she knew that they would not forgive her, that everyone and everything would be merciless to her now as was that sky, that green. And again she felt that everything was doubling in her soul. "I mustn't, mustn't think," she said to herself. "I must get ready. To go where? When? Whom to take with me? Yes to Moscow, by the evening train. Annushka and Seriozha, and only the most necessary things. But first I must write to them both." She went quickly indoors into her boudoir, sat down at the table, and wrote to her husband:

"After what has happened I cannot remain any longer in your house. I am going away, and taking my son with me. I don't know the law; and so I don't know with which of the parents the son should remain; but I take him with me because I cannot live without him. Be generous, leave him to me."

Up to this point she wrote rapidly and naturally, but the appeal to his generosity, a quality she did not recognize in him, and the necessity of winding up the letter with something touching, pulled her up.

"Of my fault and my remorse I cannot speak, because..."

## Anna Karenina

She stopped again, finding no connection in her ideas. "No," she said to herself, "there's no need of anything," and tearing up the letter, she wrote it again, leaving out the allusion to generosity, and sealed it up.

Another letter had to be written to Vronsky. "I have told my husband," she wrote, and she sat a long while unable to write more. It was so coarse, so unfeminine. "And what more am I to write him?" she said to herself. Again a flush of shame spread over her face; she recalled his composure, and a feeling of anger against him impelled her to tear the sheet with the phrase she had written into tiny bits. "No need of anything," she said to herself, and closing her blotting case she went upstairs, told the governess and the servants that she was going that day to Moscow, and at once set to work to pack up her things.

## XVI.

All the rooms of the summer villa were full of porters, gardeners, and footmen, going to and fro carrying out things. Cupboards and chests were open; twice they had to run to a store for cord; pieces of newspaper were cluttering the floor. Two trunks, some bags and strapped-up plaids had been carried down into the hall. The carriage and two hired cabs were waiting at the steps. Anna, forgetting her inward agitation in the work of packing, was standing at a table in her boudoir, packing her traveling bag, when Annushka called her attention to the clatter of some carriage driving up. Anna looked out of the window and saw Alexei Alexandrovich's messenger on the steps, ringing at the front doorbell.

"Run and find out what it is," she said, and, with a calm sense of being prepared for anything, she sat down in a low chair, folding her hands on her knees. A footman brought in a thick packet directed in Alexei Alexandrovich's hand.

"The messenger has orders to wait for an answer," he said.

"Very well," she said, and as soon as he had left the room she tore open the letter with trembling fingers. A packet of unfolded banknotes done up with a band fell out of it. She extricated the letter and began reading it from the end. "Preparations shall be made for your arrival here... I attach particular significance to compliance...." she read. She ran through it backward, read it all through, and once more read the letter all through again, from the beginning. When she had finished, she felt that she was cold all over, and that a fearful calamity, such as she had not expected, had burst upon her.

In the morning she had regretted that she had spoken to her husband, and wished for nothing so much as that those words might be unspoken. And here this letter regarded them as unspoken, and gave her what she had wanted. But now this letter seemed to her more awful than anything she had been able to conceive.

"He's right!" she said. "Of course, he's always right; he's a Christian, he's generous! Yes, vile, base creature! And no one understands it except me, and no one ever will; and I can't explain it. They say he's so religious, so high-principled, so upright, so clever; but they don't see what I've seen. They don't know how he has crushed my life for eight years, crushed everything that was living in me—he has not once even thought that I'm a live woman who must have love. They don't know how at every step he's humiliated me, and been just as pleased with himself. Haven't I striven—striven with all my strength—to find something to give meaning to my life? Haven't I struggled to love him, to love my son when I could not love my husband? But the time came when I knew that I couldn't cheat myself any longer, that I was alive, that I was not to blame, that God has made me so that I must love and live. And now what does he do? If he'd killed me, if he'd killed him, I could have borne anything, I could have forgiven anything; but, no, he..."

"How was it I didn't guess what he would do? He's doing just what's natural to his mean character. He'll keep himself in the right, while he'll drive me, in my ruin, still lower, still to worse ruin..."

"You can conjecture what awaits you and your son," she recalled a part of his letter. "That's a threat to take away my child, and most likely according to their stupid law he can. But I know very well why he says it. He doesn't believe even in my love for my child, or he despises it (just as he always used to ridicule it). He despises that feeling in me, but he knows that I won't abandon my child, that I can't abandon my child, that there could be no life for me without my child, even with him whom I love; but that if I abandoned my child and ran away from him, I should be acting like the most infamous, basest of women. He knows that, and knows that I am incapable of doing that."

"Our life must go on as it has done in the past," she recalled another sentence in his letter. "That life was miserable enough in the old days; it has been awful of late. What will it be now? And he knows all that; he knows that I can't repent breathing, repent loving; he knows that it can lead to nothing but lying and deceit; but he wants to go on torturing me. I know him; I know that he's at home and is happy in deceit, like a fish swimming in the water. No, I won't give him that happiness. I'll break through the spider's web of lies in which he wants to catch me, come what may. Anything's better than lying and deceit."

"But how? My God! my God! Was ever a woman so miserable as I am?..."

"No; I will break through it, I will break through it!" she cried, jumping up and keeping back her tears. And she went to the writing table to write him another letter. But at the bottom of her heart she felt that she was not strong enough to break through anything, that she was not strong enough to get out of her old position, however false and dishonorable it might be.

She sat down at the writing table, but instead of writing she clasped her hands on the table, and, laying her head on them, burst into tears, with sobs and heaving breast, like a child crying. She was weeping because her dream of her position being made clear and definite had been annihilated forever. She knew beforehand that everything would go on in the old way, and far worse, indeed, than in the old way. She felt that her position in the world she enjoyed, and which had seemed to her of so little consequence in the morning, was now precious to her, that she would not have the strength to exchange it for the shameful position of a woman who has abandoned husband and child to join her lover; that however much she might struggle, she could not be stronger than herself. She would never know freedom in love, but would remain forever a guilty wife, with the menace of detection hanging over her at every instant; deceiving her husband for the sake of a shameful connection with a man living apart and away from her, whose life she could never share. She knew that this was how it would be, and at the same time it was so awful that she could not even conceive what it would end in. And she cried without restraint, as children cry when they are punished.

The sound of a footman's steps forced her to rouse herself, and, hiding her face from him, she pretended to be writing.

"The messenger asks if there's any answer," the footman informed her.

"Any answer? Yes," said Anna. "Let him wait. I'll ring."

"What can I write?" she thought. "What can I decide upon alone? What do I know? What do I want? What is there I care for?" Again she felt that her soul was beginning to double. She was terrified again at this feeling, and clutched at the first pretext for doing something which might divert her thoughts from herself. "I ought to see Alexei" (so she called Vronsky in her thoughts); "no one but he can tell me what I ought to do. I'll go to Betsy's, perhaps I shall see him there," she said to herself, completely forgetting that, when she had told him the day before that she was not going to Princess Tverskaia's he had said that in that case he should not go either. She went up to the table, wrote to her husband: "I have received your letter. A."; and, ringing the bell, gave it to the footman.

## Anna Karenina

"We are not going," she said to Annushka, as she came in.

"Not going at all?"

"No; don't unpack till tomorrow, and let the carriage wait. I'm going to the Princess."

"Which dress am I to get ready?"

### XVII.

The croquet party to which the Princess Tverskaia had invited Anna was to consist of two ladies and their adorers. These two ladies were the chief representatives of a select new Peterburg circle, nicknamed, in imitation of some imitation, *les sept merveilles du monde*. These ladies belonged to a circle which, though of the highest society, was utterly hostile to that in which Anna moved. Moreover, old Stremov, one of the most influential people in Peterburg, and the admirer of Liza Merkalova, was Alexei Alexandrovich's enemy in the political world. From all these considerations Anna had not meant to go, and the hints in Princess Tverskaia's note referred to her refusal. But now Anna was eager to go, in the hope of seeing Vronsky.

Anna arrived at Princess Tverskaia's earlier than the other guests.

At the very moment of her entry, Vronsky's footman, with his side whiskers combed out, and looking like a Kammerjunker, went in too. He stopped at the door, and, taking off his cap, let her pass. Anna recognized him, and only then recalled that Vronsky had told her the day before that he would not come. Most likely he was sending a note to say so.

As she took off her outer garment in the hall, she heard the footman say, rolling his r's even like a Kammerjunker: "From the Count for the Princess," as he handed over the note.

She longed to question him as to where his master was. She longed to turn back and send him a letter to come and see her, or to go herself to see him. But none of the three courses was possible. Already she heard bells ringing ahead of her to announce her arrival, and Princess Tverskaia's footman was standing at the open door waiting for her to pass into the inner rooms.

"The Princess is in the garden; she will be informed immediately. Would you be pleased to walk into the garden?" announced another footman in another room.

The position of uncertainty, of indecision, was still the same as at home—worse, in fact, since it was impossible to take any step, impossible to see Vronsky, and she had to remain here among outsiders, in company so uncongenial to her present mood. But she was wearing a dress that she knew suited her. She was not alone; all around was that luxurious setting of idleness that she was used to, and she felt less wretched than at home. She was not forced to think what she had to do. Everything would be done of itself. On meeting Betsy coming toward her in a white gown that struck her by its elegance, Anna smiled to her just as she always did. Princess Tverskaia was walking with Tushkevich and a young lady, a relation, who, to the great joy of her parents in the provinces, was spending the summer with the fashionable Princess.

There was probably something unusual about Anna, for Betsy noticed it at once.

"I slept badly," answered Anna, looking intently at the footman who came to meet them, and, as she supposed, brought Vronsky's note.



## Anna Karenina

"How glad I am you've come!" said Betsy. "I'm tired, and was just longing to have some tea before they come. You might go," she turned to Tushkevich, "with Masha, and try the croquet ground over there, where they've been clipping it. We shall have time to talk a little over tea, we'll have a cozy chat, eh?" she said in English to Anna, with a smile, pressing the hand which held a parasol.

"Yes, especially as I can't stay very long with you. I'm forced to go on to old Madame Vrede. I've been promising to go for a century," said Anna, to whom lying, alien as it was to her nature, had become not merely simple and natural in society, but a positive source of satisfaction. Why she said this, which she had not thought of a second before, she could not have explained. She had said it simply from the reflection that as Vronsky would not be here, she had better secure her own freedom, and try to see him somehow. But why she had spoken of old Hoffraulein Vrede, whom she had to go and see, as she had to see many other people, she could not have explained; and yet, as it afterward turned out, had she cudged her brains for the most cunning subterfuge to meet Vronsky, she could have thought of nothing better.

"No. I'm not going to let you go for anything," answered Betsy, looking intently into Anna's face. "Really, if I were not fond of you, I should feel offended. One would think you were afraid my society would compromise you. Tea in the small dining room, please," she said, half closing her eyes, as she always did when addressing the footman.

Taking the note from him, she read it.

"Alexei is playing us false," she said in French; "he writes that he can't come," she added, in a tone as simple and natural as though it could never enter her head that Vronsky could mean anything more to Anna than a game of croquet. Anna knew that Betsy knew everything, but, hearing how she spoke of Vronsky before her, she almost felt persuaded for a minute that she knew nothing.

"Ah!" said Anna indifferently, as though not greatly interested in the matter; and she went on, smiling: "How can you or your friends compromise anyone?"

This playing with words, this hiding of a secret, had a great fascination for Anna, as, indeed, it has for all women. And it was not the necessity of concealment, not the purpose for which the concealment was contrived, but the process of concealment itself which attracted her.

"I can't be more catholic than the Pope," she said. "Stremov and Liza Merkalova why, they're the cream of the cream of society. Besides, they're received everywhere, and I" she laid special stress on the I "have never been strict and intolerant. It's simply that I haven't the time."

"No; you don't care, perhaps, to meet Stremov? Let him and Alexei Alexandrovich tilt at each other in the Committee that's no affair of ours. But, in society, he's the most amiable man I know, and an ardent croquet player. You shall see. And, in spite of his absurd position as Liza's lovesick swain at his age, you ought to see how he carries off the absurd position. He's very nice. Don't you know Sappho Stoltz? Oh, that's a new type quite new!"

Betsy went on with all this chatter, yet, at the same time, from her good-humored, shrewd glance, Anna felt that she partly guessed her plight, and was hatching something for her benefit. They were in the little boudoir.

"I must write to Alexei, though," and Betsy sat down to the table, scribbled a few lines, and put the note in an envelope. "I'm telling him to come to dinner. I've one lady extra to dinner with me, and no man to take her in. Look what I've said will that persuade him? Excuse me, I must leave you for a minute. Would you seal it up, please, and send it off? she said from the door; "I have to give some directions."

## Anna Karenina

Without a moment's hesitation, Anna sat down to the table with Betsy's letter, and, without reading it, wrote below: "It's essential for me to see you. Come to the Vrede garden. I shall be there at six o'clock." She sealed it up, and, Betsy coming back, in her presence handed the note for transmittal.

At tea, which was brought them on a little tea table in the cool little drawing room, a cozy chat promised by Princess Tverskaia before the arrival of her visitors really did come off between the two women. They criticized the people they were expecting, and the conversation fell upon Liza Merkalova.

"She's very sweet, and I always liked her," said Anna.

"You ought to like her. She raves about you. Yesterday she came up to me after the races and was in despair at not finding you. She says you're a real heroine of romance, and that if she were a man she would do all sorts of mad things for your sake. Stremov says she does that as it is."

"But do tell me, please I never could make it out," said Anna, after being silent for some time, speaking in a tone that showed she was not asking an idle question, but that what she was asking was of greater importance to her than it should have been, "do tell me, please: what are her relations with Prince Kaluzhsky Mishka, as he's called? I've met them so little. What does it mean?"

Betsy smiled with her eyes, and looked intently at Anna.

"It's a new mode," she said. "They've all adopted that mode. They've flung their caps over the windmills. But there are ways and ways of flinging them."

"Yes, but precisely what are her relations with Kaluzhsky?"

Betsy broke into unexpectedly mirthful and irrepressible laughter, a thing which rarely happened with her.

"You're encroaching on Princess Miaghkaia's special domain now. That's the question of an enfant terrible," and Betsy obviously tried to restrain herself, but could not, and went off into peals of that infectious laughter peculiar to people who do not laugh often. "You'd better ask them," she brought out, between tears of laughter.

"No; you laugh," said Anna, laughing too, in spite of herself, "but I never could understand it. I can't understand the husband's role in it."

"The husband? Liza Merkalova's husband carries her shawl, and is always ready to be of use. But no one cares to inquire about what is really going on. You know, in decent society one doesn't talk or think even of certain details of the toilet. That's how it is in this case."

"Will you be at Madame Rolandaky's fete?" asked Anna, to change the conversation.

"I don't think so," answered Betsy, and, without looking at her friend, she began filling the little transparent cups with fragrant tea. Putting a cup before Anna, she took out a thin cigarette, and, fitting it into a silver holder, she lighted it. "It's like this, you see: I'm in a fortunate position," she began, quite serious now, as she took up her cup. "I understand you, and I understand Liza. Liza now is one of those naive natures that, like children, don't know what's good and what's bad. Anyway, she didn't comprehend it when she was very young. And now she's aware that the lack of comprehension suits her. Now, perhaps, she doesn't know on purpose," said Betsy, with a subtle smile. "But, anyway, it suits her. The very same thing, don't you see, may be looked at tragically, and turned into misery, or it may be looked at simply, and even humorously. Possibly you are inclined to look at things too tragically."

## Anna Karenina

"How I should like to know other people just as I know myself!" said Anna, seriously and dreamily. "Am I worse than other people, or better? I think I'm worse."

"Enfant terrible, enfant terrible!" repeated Betsy. "But here they are."

### XVIII.

They heard the sound of steps and a man's voice, then a woman's voice and laughter, and immediately thereafter there walked in the expected guests: Sappho Stoltz, and a young man beaming with excess of health, the so-called Vaska. It was evident that ample supplies of beefsteak, truffles, and Burgundy were profitable for his health. Vaska bowed to the two ladies, and glanced at them, but only for one second. He walked after Sappho into the drawing room, and followed her about as though he were chained to her, keeping his sparkling eyes fixed on her as though he wanted to eat her. Sappho Stoltz was a blonde beauty with black eyes. She walked with smart little steps in high-heeled shoes, and shook hands with the ladies vigorously, like a man.

Anna had never met this new star of fashion, and was struck by her beauty, the exaggerated extreme to which her dress was carried, and the boldness of her manners. On her head there was such an echafaudage of soft, golden hair her own and false mixed that her head was equal in size to the elegantly rounded bust, of which so much was exposed in front. The impulsive abruptness of her movements was such that at every step the lines of her knees and the upper part of her legs were distinctly marked under her dress, and the question involuntarily rose in one's mind where in the undulating, piled-up mountain of material at the back the real body of the woman, so small and slender, so naked in front, and so hidden behind and below, really came to an end.

Betsy made haste to introduce her to Anna.

"Only fancy, we all but ran over two soldiers," she began telling them at once, using her eyes, smiling and twitching away her train, which she at first threw too much to one side. "I drove here with Vaska... Ah, to be sure, you don't know each other." And, mentioning his surname, she introduced the young man, and, reddening, broke into a ringing laugh at her mistake that is, at her having called him Vaska before a stranger. Vaska bowed once more to Anna, but he said nothing to her. He addressed Sappho: "You've lost your bet. We got here first. Pay up," said he, smiling.

Sappho laughed still more festively.

"Not just now," said she.

"It's all one, I'll have it later."

"Very well, very well. Oh, yes," she turned suddenly to Princess Betsy: "I am a nice person... I positively forgot it.... I've brought you a visitor. And here he comes."

The unexpected young visitor, whom Sappho had brought with her, and whom she had forgotten, was, however, a personage of such consequence that, in spite of his youth, both the ladies rose on his entrance.

He was a new admirer of Sappho's. Like Vaska, he now dogged her footsteps.

Soon after Prince Kaluzhsky arrived, and Liza Merkalova with Stremov. Liza Merkalova was a thin brunette, with an Oriental, languid type of face, and charming as everyone used to say ineffable eyes. The tone of her dark dress (Anna immediately observed and appreciated the fact) was in perfect harmony with her style of beauty. Liza was as soft and loose as Sappho was tight and shackled.

## Anna Karenina

But to Anna's taste Liza was far more attractive. Betsy had said to Anna that she had adopted the pose of an unsophisticated child, but when Anna saw her she felt this was not the truth. She really was unsophisticated, spoiled, yet a sweet and irresponsible woman. It is true that her tone was the same as Sappho's; that, like Sappho, she had two men, one young and one old, tacked on to her, and devouring her with their eyes. But there was something in her higher than her surroundings. There was in her the glow of the real diamond among paste. This glow shone out in her charming, truly ineffable eyes. The weary, and at the same time passionate, glance of those eyes, encircled by dark rings, impressed one by its perfect sincerity. Everyone looking into those eyes fancied he knew her wholly, and, knowing her, could not but love her. At the sight of Anna, her whole face lighted up at once with a smile of delight.

"Ah, how glad I am to see you!" she said, going up to her. "Yesterday, at the races, I wanted just to get to you, but you'd gone away. I did so want to see you, especially yesterday. Wasn't it awful?" she said, looking at Anna with eyes that seemed to lay bare all her soul.

"Yes; I had no idea it would be so thrilling," said Anna, blushing.

The company got up at this moment to go into the garden.

"I'm not going," said Liza, smiling and settling herself close to Anna. "You won't go either, will you? Who wants to play croquet?"

"Oh, I like it," said Anna.

"There, how do you manage never to be bored by things? One has but to look at you, to be joyful. You're alive, but I'm bored."

"How can you be bored? Why, you live among the merriest people in Peterburg," said Anna.

"Possibly the people who are not of our set are even more bored; but we are not amused ourselves. I certainly am not, but awfully, awfully bored."

Sappho, smoking a cigarette, went off into the garden with the two young men. Betsy and Stremov remained at the tea table.

"You bored?" said Betsy. "Sappho says they enjoyed themselves tremendously at your house last night."

"Ah, how dreary it all was!" said Liza Merkalova. "We all drove back to my place after the races. And always the same people, always the same. Always the same thing. We lounged about on sofas all the evening. What's enjoyable about that? No; do tell me how you manage never to be bored?" she said, addressing Anna again. "One has but to look at you and one sees a woman who may be happy or unhappy, but who isn't bored. Tell me how do you do it?"

"I do nothing," answered Anna, blushing at these searching questions.

"That's the best way," Stremov put in.

Stremov was a man of fifty, partly gray, but still vigorous in appearance, very ugly, but with a characteristic and intelligent face. Liza Merkalova was his wife's niece, and he spent all his leisure hours with her. On meeting Anna Karenina, since he was Alexei Alexandrovich's enemy in the government, he tried, like a shrewd man and a man of the world, to be particularly cordial with her, the wife of his enemy.

## Anna Karenina

"Nothing," he put in with a subtle smile, "that's the very best way. I told you long ago," he said, turning to Liza Merkalova, "that, in order not to be bored, you mustn't think you're going to be bored. Just as you mustn't be afraid of not being able to fall asleep, if you're afraid of sleeplessness. That's precisely what Anna Arkadyevna has just said."

"I should be very glad if I had said it, for it's not only clever but true," said Anna, smiling.

"No, do tell me why it is one can't go to sleep, and one can't help being bored?"

"To sleep well one should work, and to enjoy oneself one should also work."

"What am I to work for when my work is of no use to anybody? And I can't, and won't, knowingly make a pretense at it."

"You're incorrigible," said Stremov, without looking at her, and he spoke again to Anna.

As he rarely met Anna, he could say nothing but banalities to her, but he said those banalities, when was she returning to Peterburg, and how fond Countess Lidia Ivanovna was of her with an expression which suggested that he longed with his whole soul to please her, and show his regard for her and even more than that.

Tushkevich came in, announcing that the party were awaiting the other players to begin croquet.

"No, don't go away, please don't," pleaded Liza Merkalova, hearing that Anna was going. Stremov joined in her entreaties.

"It's too violent a transition," he said, "to go from such company to old Madame Vrede. And, besides, you will only give her a chance for talking scandal, while here you will arouse other feelings, of the finest and directly opposed to scandal," he said to her.

Anna pondered for an instant in uncertainty. This shrewd man's flattering words, the naive, childlike affection shown her by Liza Merkalova, and all the worldly atmosphere she was used to it was all so easy, while that which was in store for her was so difficult, that she was for a minute in uncertainty: should she remain, should she put off a little longer the painful moment of explanation? But, remembering what was in store for her when she would be alone at home, if she did not come to some decision; remembering that gesture terrible even in memory when she had clutched her hair in both hands, she said good-by and went away.

## XIX.

In spite of Vronsky's apparently frivolous life in society, he was a man who hated disorder. In early youth, in the Corps of Pages, he had experienced the humiliation of a refusal, when he had tried, being in difficulties, to borrow money, and since then he had never once put himself in the same position again.

In order to keep his affairs in some sort of order, he was wont, about five times a year (more or less frequently, according to circumstances), to shut himself up alone and put all his affairs into definite shape. This he would call his day of washing up or faire la lessive.

On waking up late in the morning after the races, Vronsky put on a white linen coat, and, without shaving or taking his bath, he distributed about the table money, bills, and letters, and set to work. Petritsky, who knew he was ill-tempered on such occasions, on waking up and seeing his comrade at the writing table, quietly dressed and went out without getting in his way.

Every man who knows to the minutest details all the complexity of the conditions surrounding him, cannot help imagining that the complexity of these conditions, and the difficulty of making them clear, is something exceptional and personal, peculiar to himself, and never supposes that others are surrounded by just as complicated an array of personal affairs as he is. So indeed it seemed to Vronsky. And not without inward pride, and not without reason, he thought that any other man would long ago have been in difficulties, and would have been forced to some dishonorable course, if he had found himself in such a difficult position. But Vronsky felt that now especially it was essential for him to clear up and define his position if he were to avoid getting into difficulties.

What Vronsky attacked first, as being the easiest, was his pecuniary position. Writing out on note paper in his minute handwriting all that he owed, he added up the amount and found that his debts amounted to seventeen thousand and some odd hundreds, which he left out for the sake of clearness. Reckoning up his cash and the balance in his bankbook, he found that he had left one thousand eight hundred roubles, and nothing coming in before the New Year. Reckoning over again his list of debts, Vronsky copied it, dividing it into three classes. In the first class he put the debts which he would have to pay at once, or for which he must in any case have the money ready so that on demand for payment there would not be a moment's delay in paying. Such debts amounted to about four thousand: one thousand five hundred for a horse, and two thousand five hundred as surety for a young comrade, Venevsky, who had lost that sum to a cardsharper in Vronsky's presence. Vronsky had wanted to pay the money at the time (he had that amount then), but Venevsky and Iashvin had insisted that they would pay and not Vronsky, who had not played. So far, so good; but Vronsky knew that in this dirty business, though his only share in it was undertaking by word of mouth to be surety for Venevsky, it was absolutely necessary for him to have the two thousand five hundred roubles, so as to be able to fling it at the cheat, and have no more words with him. And so, for this first and most important division, he must have four thousand roubles. The second class—eight thousand roubles—consisted of less important debts. These were principally accounts owing in connection with his race horses, to the purveyor of oats and hay, the Englishman, the saddler, and so on. He would have to pay some two thousand roubles on these debts too, in order to be quite free from anxiety. The last class of debts—to shops, to hotels, to his tailor—were such as need not be considered. So that he needed at least six thousand roubles, and he only had one thousand eight hundred for current expenses. For a man with one hundred thousand roubles of revenue, which was what everyone fixed as Vronsky's income, such debts, one would suppose, could hardly be embarrassing; but the fact was that he was far from having one hundred thousand. His father's immense property, which alone yielded a yearly income of two hundred thousand, was left undivided between the brothers. At the time when the elder brother, with a mass of debts, had married Princess Varia Chirkova, the daughter of a Dekabrist without any fortune whatever, Alexei had given up to his elder brother almost the whole income from his father's estate, reserving for himself only twenty-five thousand a year from it. Alexei had said at the time to his brother that the sum would be sufficient for him until he married, which he would probably never do. And his brother, who was in command of one of the most expensive regiments, and was only just married, could not decline the gift. His mother, who had her own separate property, had allowed Alexei every year twenty thousand in addition to the twenty-five thousand he had reserved, and Alexei had spent it all. Of late his mother, incensed with him on account of his love affair and his leaving Moscow, had given up sending him the money. And, in consequence of this, Vronsky, who had been in the habit of living on the scale of forty-five thousand a year, having only received twenty thousand that year, now found himself in difficulties. To get out of these difficulties, he could not apply to his mother for money. Her last letter, which he had received the day before, had particularly exasperated him by the hints it contained that she was quite ready to help him to succeed in the world and in the army, but not to lead a life which scandalized all good society. His mother's attempt to buy him stung him to the quick and made him feel colder than ever toward her. But he could not draw back from the generous word when it was once uttered, even though he felt now, vaguely foreseeing certain eventualities in his liaison with Madame Karenina, that his generous word had been spoken thoughtlessly, and that, even though he were not married, he might need all the hundred thousand of income. But it was impossible to draw back. He had only to recall his brother's wife, to remember how that sweet, delightful Varia sought, at every convenient opportunity, to remind him that she remembered his generosity and appreciated it, to grasp the impossibility of taking back his gift. It was as impossible as beating a woman, or stealing, or lying. One thing

only could and ought to be done, and Vronsky determined upon it without an instant's hesitation: to borrow money from a moneylender, ten thousand roubles, a proceeding which presented no difficulty; to cut down his expenses generally, and to sell his race horses. Resolving on this, he promptly wrote a note to Rolandaky, who had more than once sent to him with offers to buy horses from him. Then he sent for the Englishman and the moneylender, and divided what money he had according to the accounts he intended to pay. Having finished this business, he wrote a cold and cutting answer to his mother. Then he took out of his notebook three notes of Anna's, read them again, burned them, and, remembering their conversation on the previous day, he sank into deep thought.

## XX.

Vronsky's life was particularly happy in that he had a code of principles, which defined with unfailing certitude what he ought and what he ought not to do. This code of principles covered only a very small circle of contingencies, but then the principles were never doubtful, and Vronsky, as he never went outside that circle, had never had a moment's hesitation about doing what he ought to do. These principles laid down as invariable rules: that one must pay a cardsharp, but need not pay a tailor; that one must never tell a lie to a man, but one may to a woman; that one must never cheat anyone, but one may a husband; that one must never pardon an insult, but one may give one and so on. These principles were possibly not reasonable and not good, but they were of unfailing certainty, and, so long as he adhered to them, Vronsky felt that his heart was at peace and he could hold his head up. But of late, in regard to his relations with Anna, Vronsky had begun to feel that his code of principles did not fully cover all possible contingencies, and to foresee in the future difficulties and perplexities for which he could find no guiding clue.

His present relation to Anna and to her husband was to his mind clear and simple. It was clearly and precisely defined in the code of principles by which he was guided.

She was an honorable woman who had bestowed her love upon him, and he loved her, and therefore she was in his eyes a woman who had a right to the same respect, or even more, than a lawful wife. He would have had his hand chopped off before he would have allowed himself by a word, by a hint, to humiliate her, or even to fall short of the fullest respect a woman could look for.

His attitude toward society, too, was clear. Everyone might know, might suspect it, but no one might dare to speak of it. If any did speak, he was ready to force all who might do so to be silent and to respect the nonexistent honor of the woman he loved.

His attitude to the husband was the clearest of all. From the moment that Anna loved Vronsky, he had regarded his own right over her as the one thing unassailable. Her husband was simply a superfluous and tiresome person. No doubt he was in a pitiable position, but how could that be helped? The one thing the husband had a right to was to demand satisfaction with a weapon in his hand, and Vronsky was prepared for this at any minute.

But of late new inner relations had arisen between her and him, which frightened Vronsky by their indefiniteness. Only the day before she had told him that she was with child. And he felt that this fact, and what she expected of him, called for something not fully defined in that code of principles by which he had hitherto steered his course in life. And he had been indeed caught unawares, and, at the first moment when she spoke to him of her position, his heart had prompted him to beg her to leave her husband. He had said that, but now, thinking things over he saw clearly that it would be better to manage avoiding that; and at the same time, as he told himself this, he was afraid whether such an avoidance were not wrong.

"If I told her to leave her husband, it would mean uniting her life with mine; am I prepared for that? How can I take her away now, when I have no money? Supposing I could arrange... But how can I take her away while I'm

in the service? If I say it, I ought to be prepared to do it; that is, I ought to have the money and to retire from the army."

And he grew thoughtful. The question whether to retire from the service or not brought him to the other, and perhaps the chief though hidden, interest of his life, of which none knew but he.

Ambition was the old dream of his youth and childhood, a dream which he did not confess even to himself, though it was so strong that now this passion was even doing battle with his love. His first steps in the world and in the service had been successful, but two years before he had made a great mistake. Anxious to show his independence, and for the sake of advancement, he had refused a post that had been offered him, hoping that this refusal would heighten his value; but it turned out that he had been too bold, and he was passed over. And having, whether he liked or not, taken up for himself the position of an independent man, he carried it off with great tact and good sense, behaving as though he bore no grudge against anyone, nor regarding himself as injured in any way, and caring for nothing but to be left alone since he was enjoying himself. In reality he had ceased to enjoy himself as long ago as the year before, when he had gone to Moscow. He felt that this independent attitude of a man who might have done anything, but cared to do nothing, was already beginning to pall, that many people were beginning to fancy that he was not really capable of anything but being a straightforward, good-natured fellow. His connection with Madame Karenina, by creating so much sensation and attracting general attention, had given him a fresh distinction, which had soothed his gnawing worm of ambition for a while; but a week ago that worm had been roused up again with fresh force. The friend of his childhood, a man of the same set, of the same coterie, his comrade in the Corps of Pages, Serpukhovskoy, who had left school with him, and had been his rival in class, in gymnastics, in their scrapes and their dreams of glory, had come back a few days before from Central Asia, where he had gained two steps up in rank, and an order rarely bestowed upon generals so young.

As soon as he arrived in Petersburg, people began to talk about him as a newly risen star of the first magnitude. A schoolfellow of Vronsky's and of the same age, he was a general and was expecting a command which might have influence on the course of political events; while Vronsky, though he was independent and brilliant, and beloved by a charming woman, was simply a cavalry captain who was readily allowed to be as independent as ever he liked. "Of course, I don't envy Serpukhovskoy and never could envy him; but his advancement shows me that one has only to watch one's opportunity, and the career of a man like me may be very rapidly made. Three years ago he was in just the same position as I am. If I retire, I burn my ships. If I remain in the army, I lose nothing. She said herself she did not wish to change her position. And with her love I cannot feel envious of Serpukhovskoy." And, slowly twirling his mustaches, he got up from the table and walked about the room. His eyes shone particularly brightly, and he felt in that firm, calm, and happy frame of mind which always came after he had thoroughly faced his position. Everything was straight and clear, just as after former days of striking balances. He shaved, took a cold bath, dressed, and went out.

## XXI.

"I've come to fetch you. Your lessive lasted a good time today," said Petritsky. "Well, is it over?"

"It's over," answered Vronsky, smiling with his eyes only, and twirling the tips of his mustaches as circumspectly as though after the perfect order into which his affairs had been brought any overbold or rapid movement might disturb it.

"You're always just as if you'd come out of a bath after it," said Petritsky. "I've come from Gritzka" (that was what they called the colonel); "you're expected there."

Vronsky, without answering, looked at his comrade, thinking of something else.



## Anna Karenina

"Yes; is that music at his place?" he said, listening to the familiar bass sounds of trumpets, of polkas and waltzes, floating across to him. "What's the fete?"

"Serpukhovskoy's come."

"Aha!" said Vronsky. "Why, I didn't know."

The smile in his eyes gleamed more brightly than ever.

Having once made up his mind that he was happy in his love, that he sacrificed his ambition to it at any rate, having taken up this role Vronsky was incapable of feeling either envious of Serpukhovskoy, or vexed at him for not having come to him first upon coming to the regiment. Serpukhovskoy was a good friend, and he was delighted he had come.

"Ah, I'm very glad!"

The colonel, Demin, had taken a large country house. The whole party was on the wide lower balcony. In the courtyard the first objects that met Vronsky's eyes were a band of singers in short white linen jackets, standing near a barrel of vodka, and the robust, good-humored figure of the colonel surrounded by officers. He had gone out as far as the first step of the balcony and was loudly shouting to drown out the band playing an Offenbach quadrille, waving his arms and giving some orders to a few soldiers standing on one side. A group of soldiers, a quartermaster, and several subalterns came up to the balcony with Vronsky. The colonel returned to the table, went out again on the steps with a tumbler in his hand, and proposed the toast, "To the health of our former comrade, the gallant general, Prince Serpukhovskoy. Hurrah!"

The colonel was followed by Serpukhovskoy, who came out on the steps smiling, with a glass in his hand.

"You always get younger, Bondarenko," he said to the rosy-cheeked, smart-looking sergeant standing just before him, still youngish-looking though doing his second term of service.

It was three years since Vronsky had seen Serpukhovskoy. He looked more robust, had let his whiskers grow, but was still the same graceful creature, whose face and figure were even more striking from their fineness and nobility than their beauty. The only change Vronsky detected in him was that subdued, continual beaming which settles on the faces of men who are successful and are sure of the recognition of their success by everyone. Vronsky knew that radiant air, and immediately observed it in Serpukhovskoy.

As Serpukhovskoy came down the steps he saw Vronsky. A smile of pleasure lighted up his face. He tossed his head upward and waved the glass in his hand, greeting Vronsky, and showing him by the gesture that he could not come to him before kissing the sergeant who stood craning forward his lips ready to be kissed.

"Here he is!" shouted the colonel. "Iashvin told me you were in one of your gloomy tempers."

Serpukhovskoy kissed the moist, fresh lips of the brave sergeant, and, wiping his mouth with his handkerchief, walked up to Vronsky.

"How glad I am!" he said, squeezing his hand and drawing him to one side.

"You look after him," the colonel shouted to Iashvin, pointing to Vronsky; and he went down below to the soldiers.

"Why weren't you at the races yesterday? I expected to see you there," said Vronsky, scrutinizing Serpukhovskoy.

## Anna Karenina

"I did go, but late. I beg your pardon," he added, and turned to the adjutant: "Please have this distributed from me, each man as much as it comes to."

And he hurriedly took three notes for a hundred roubles each from his pocketbook, and blushed.

"Vronsky! Have a bite or a drink?" asked Iashvin. "Hi, something for the Count to eat! There drink that."

The spree at the colonel's lasted a long while.

There was a great deal of drinking. They swung Serpukhovskoy and tossed him in the air. Then they did the same to the colonel. Then, to the accompaniment of the band, the colonel himself danced with Petritsky. Then the colonel, who began to show signs of weakening, sat down on a bench in the courtyard and began demonstrating to Iashvin the superiority of Russia over Prussia, especially in cavalry attack, and there was a lull in the revelry for a moment. Serpukhovskoy went into the house to the bathroom to wash his hands and found Vronsky there. Vronsky was sousing his head with water. He had taken off his coat and put his red hairy neck under the tap, and was rubbing it and his head with his hands. When he had finished, Vronsky sat down by Serpukhovskoy. They both sat down in the bathroom on a lounge, and a conversation began which was very interesting to both of them.

"I've always been hearing about you through my wife," said Serpukhovskoy. "I'm glad you've been seeing her pretty often."

"She's friendly with Varia, and they're the only women in Peterburg I care about seeing," answered Vronsky, smiling. He smiled because he foresaw the topic the conversation would turn to, and he was glad of it.

"The only ones?" Serpukhovskoy queried, smiling.

"Yes; and I heard news of you, but not only through your wife," said Vronsky, checking Serpukhovskoy's hint by assuming a stern expression. "I was greatly delighted to hear of your success, but not a bit surprised. I expected even more."

Serpukhovskoy smiled. Such an opinion of him was obviously agreeable to him, and he did not think it necessary to conceal it.

"Well, I, on the contrary, expected less. I'll own up frankly. But I'm glad, very glad. I'm ambitious that's my weakness, and I confess to it."

"Perhaps you wouldn't confess to it if you hadn't been successful," said Vronsky.

"I don't suppose so," said Serpukhovskoy, smiling again. "I won't say life wouldn't be worth living without it, but it would be dull. Of course I may be mistaken, but I fancy I have a certain capacity for the line I've chosen, and that if there is to be power of any sort in my hands, it will be better than in the hands of a good many people I know," said Serpukhovskoy, with beaming consciousness of success; "and so the nearer I get to it, the better pleased I am."

"Perhaps that is true for you, but not for everyone. I used to think so too, but now I see and think life worth living not only for that."

"There it comes! there it comes!" said Serpukhovskoy laughing. "Ever since I heard about you, about your refusal, I began... Of course, I approved of what you did. But there are ways of doing everything. And I think your action was good in itself, but you didn't do it in quite the way you should have done."

"What's done can't be undone, and you know I never go back on what I've done. And, besides, I'm very well off."

"Very well off for the time. But you're not satisfied with that. I wouldn't say this to your brother. He's a charming child, like our host here. There he goes!" he added, listening to the roar of a "hurrah!" "and he's happy; that does not satisfy you."

"I didn't say it did."

"Yes, but that's not the only thing. Such men as you are wanted."

"By whom?"

"By whom? By society, by Russia. Russia needs men, she needs a party, or else everything goes and will go to the dogs."

"How do you mean? Bertenev's party against the Russian communists?"

"No," said Serpukhovskoy, frowning with vexation at being suspected of such an absurdity. "Tout ca est une blague. That has always been, and always will be. There are no communists. But intriguing people have to invent a noxious, dangerous party. It's an old trick. No, what's wanted is a powerful party of independent men, like you and me."

"But why so?" Vronsky mentioned a few men who were in power. "Why aren't they independent men?"

"Simply because they have not, or have not had from birth, an independent fortune, they've not had a name, they weren't born close to the sun as we were. They can be bought either by money or by favor. And they have to find a support for themselves in inventing a trend. And they bring forward some notion, some trend that they don't believe in, that does harm; and the whole policy is really only a means to a house at the expense of the crown and so much income. Cela n'est pas plus fin que ca, when you get a peep at their cards. I may be inferior to them, more stupid perhaps, though I don't see why I should be inferior to them. But you and I have one important, certain advantage over them, in being more difficult to buy. And such men are more needed than ever."

Vronsky listened attentively, but he was not so much interested by the meaning of the words as by the attitude of Serpukhovskoy, who was already contemplating a struggle with the existing powers, and already had his likes and dislikes in that world, while his own interest in his service did not go beyond the interests of his squadron. Vronsky felt, too, how powerful Serpukhovskoy might become through his unmistakable faculty for thinking things out and for taking things in, through his intelligence and gift of eloquence, so rarely met with in the world in which he moved. And, ashamed as he was of the feeling, he felt envious.

"Still I haven't the one thing of paramount importance for that," he answered; "I haven't the desire for power. I had it once, but it's gone."

"Excuse me, that's not true," said Serpukhovskoy smiling.

"Yes, it's true, it's true now to be truthful!" Vronsky added.

"Yes, it's true now, that's another thing; but that now won't last forever."

"Perhaps," answered Vronsky.

## Anna Karenina

"You say perhaps," Serpukhovskoy went on, as though guessing his thoughts, "but I say for certain. And that's what I wanted to see you for. Your action was just what it should have been. I see that, but you ought not to persevere in it. I only ask you to give me *carte blanche*. I'm not going to offer you my protection.... Though, indeed, why shouldn't I protect you? you've protected me often enough! I should hope our friendship rises above all that sort of thing. Yes," he said, smiling to him as tenderly as a woman, "give me *carte blanche*, retire from the regiment, and I'll get you in imperceptibly."

"But you must understand that I want nothing," said Vronsky, "except to leave things just as they were."

Serpukhovskoy got up and stood facing him.

"You said, leave things just as they were. I understand what that means. But listen: we're the same age, you've known a greater number of women perhaps than I have." Serpukhovskoy's smile and gestures told Vronsky that he mustn't be afraid, that he would be tender and careful in touching the sore place. "But I'm married, and believe me, in getting to know one's wife thoroughly, if one loves her, as someone has said, one gets to know all women better than if one knew thousands of them."

"We're coming directly!" Vronsky shouted to an officer, who looked into the room and called them to the colonel.

Vronsky was longing now to hear Serpukhovskoy to the end, and know what he would say to him.

"And here's my opinion for you. Women are the chief stumbling block in a man's career. It's hard to love a woman and do anything. There's only one way of having love conveniently without its being a hindrance—that's marriage. Now, how am I to tell you what I mean?" said Serpukhovskoy, who liked similes. "Wait, wait a minute! Yes, just as you can only carry a *fardeau* yet do something with your hands when the *fardeau* is tied on your back—and that's marriage. And that's what I felt when I was married. My hands were suddenly set free. But if you drag that *fardeau* about with you without marriage, your hands will always be so full that you can do nothing. Look at Mazankov, at Krupov. They've ruined their careers for the sake of women."

"What women!" said Vronsky, recalling the Frenchwoman and the actress with whom the two men he had mentioned were connected.

"The firmer the woman's footing in society, the worse it is. That's much the same as not merely carrying the *fardeau* in your arms, but tearing it away from someone else."

"You have never loved," Vronsky said softly, looking straight before him and thinking of Anna.

"Perhaps. But you remember what I've said to you. And another thing—women are all more materialistic than men. We make something immense out of love, but they are always *terre-a-terre*."

"Directly, directly!" he cried to a footman who came in. But the footman had not come to call them again, as he supposed. The footman brought Vronsky a note.

"A man brought it from Princess Tverskaia."

Vronsky opened the letter, and flushed crimson.

"My head's begun to ache; I'm going home," he said to Serpukhovskoy.

"Oh, good—by then. You give me *carte blanche*!"

"We'll talk about it later on; I'll look you up in Petersburg."

## XXII.

It was six o'clock already, and so, in order to be there quickly, and at the same time not to drive with his own horses, known to everyone, Vronsky got into Iashvin's hackney coach and told the coachman to drive as quickly as possible. It was a roomy, old-fashioned coach, with seats for four. He sat in one corner, stretched his legs out on the front seat, and sank into deep thought.

A vague sense of the clearness to which his affairs had been brought, a vague recollection of the friendliness and flattery of Serpukhovskoy, who had considered him a man who was needed, and, most of all, the anticipation of the meeting before him all blended into a general, joyous sense of life. This feeling was so strong that he could not help smiling. He dropped his legs, crossed one leg over the other knee, and, taking it in his hand, felt the springy muscle of the calf, where it had been grazed the day before by his fall, and, leaning back he drew several deep breaths.

"I'm happy, very happy!" he said to himself. He had often before had this sense of physical joy in his own body, but he had never felt so fond of himself, of his own body, as at that moment. He enjoyed the slight ache in his strong leg, he enjoyed the muscular sensation of movement in his chest as he breathed. The bright, cold August day, which had made Anna feel so hopeless, seemed to him keenly stimulating, and refreshed his face and neck that still tingled from the cold water. The scent of brilliantine on his mustaches struck him as particularly pleasant in the fresh air. Everything he saw from the carriage window, everything in that cold pure air, in the pale light of the sunset, was as fresh, and gay, and strong as he was himself: the roofs of the houses shining in the rays of the setting sun, the sharp outlines of fences and angles of buildings, the figures of passers-by and carriages that met him now and then, the motionless green of the trees and grass, the fields with evenly drawn furrows of potatoes, and the slanting shadows that fell from the houses, and trees, and bushes, and even from the rows of potatoes everything was bright like a pretty landscape freshly painted and varnished.

"Get on, get on!" he said to the driver, putting his head out of the window, and pulling a three-rouble note out of his pocket he handed it to the man as he looked round. The driver's hand fumbled with something at the lamp, the whip cracked, and the coach rolled rapidly along the smooth highroad.

"I want nothing, nothing but this happiness," he thought, staring at the bone button of the bell in the space between the windows, and picturing to himself Anna just as he had seen her last time. "And as I go on, I love her more and more. Here's the garden of the Vrede's crown villa. Whereabouts will she be? Where? How? Why did she fix on this place to meet me, and why does she write in Betsy's letter?" he thought, now for the first time wondering at it. But there was now no time for wonder. He called to the driver to stop before reaching the avenue, and opening the door, jumped out of the carriage as it was moving, and went up the avenue that led to the house. There was no one in the avenue; but, looking round to the right, he caught sight of her. Her face was hidden by a veil, but he drank in with glad eyes the special movement in walking, peculiar to her alone, the slope of her shoulders, and the setting of her head, and at once a sort of electric shock ran all over him. With fresh force he felt conscious of himself, from the springy movements of his legs to the movements of his lungs as he breathed, and something set his lips twitching.

Joining him, she pressed his hand tightly.

"You're not angry because I sent for you? I absolutely had to see you," she said; and the serious and set line of her lips, which he saw under the veil, transformed his mood at once.

"I angry? But how have you come where?"

"Never mind," she said, laying her hand on his arm, "come along, I must talk to you."

He saw that something had happened, and that the interview would not be a joyous one. In her presence he had no will of his own: without knowing the grounds of her distress, he already felt the same distress unconsciously passing over him.

"What is it? What?" he asked her, squeezing her hand with his elbow, and trying to read her thoughts in her face.

She walked on a few steps in silence, gathering up her courage; then suddenly she stopped.

"I did not tell you yesterday," she began, breathing quickly and painfully, "that coming home with Alexei Alexandrovich I told him everything... told him I could not be his wife, that... and told him everything."

He heard her, unconsciously bending his whole figure down to her as though hoping in this way to soften the hardness of her position for her. But directly she had said this he suddenly drew himself up, and a proud and hard expression came over his face.

"Yes, yes, that's better, a thousand times better! I know how painful it was," he said. But she was not listening to his words she was reading his thoughts from the expression of his face. She could not guess that that arose from the first idea that presented itself to Vronsky that a duel was now inevitable. The idea of a duel had never crossed her mind, and so she put a different interpretation on this passing expression of hardness.

When she got her husband's letter, she knew then at the bottom of her heart that everything would go on in the old way, that she would not have the strength of will to forego her position, to abandon her son, and to join her lover. The morning spent at Princess Tverskaia's had confirmed her still more in this. But this interview was still of the utmost gravity for her. She hoped that this interview would transform her position, and save her. If on hearing this news he were to say to her resolutely, passionately, without an instant's wavering: "Throw up everything and come with me! she would give up her son and go away with him. But this news had not produced on him the effect she had expected; he simply seemed resentful of some affront.

"It was not in the least painful for me. It happened of itself," she said irritably, "and see..." She pulled her husband's letter out of her glove.

"I understand, I understand," he interrupted her, taking the letter, but not reading it, and trying to soothe her. "The one thing I longed for, the one thing I prayed for, was to cut short this position, so as to devote my life to your happiness."

"Why do you tell me that?" she said. "Do you suppose I can doubt it? If I doubted..."

"Who's that coming?" said Vronsky suddenly, pointing to two ladies walking toward them. "Perhaps they know us!" and he hurriedly turned off, drawing her after him into a side path.

"Oh, I don't care!" she said. Her lips were quivering. And he fancied that her eyes looked with strange fury at him from under her veil. "I tell you that's not the point I can't doubt that; but see what he writes me. Read it." She stood still again.

Again, just as at the first moment of hearing of her rupture with her husband, Vronsky, on reading the letter, was unconsciously carried away by the natural sensation aroused in him by his own relation to the injured husband. Now, while he held his letter in his hands, he could not help picturing the challenge, which he would most likely find at home today or tomorrow, and the duel itself, in which, with the same cold and haughty expression that his face was assuming at this moment, he would await the injured husband's shot, after having himself fired into the

## Anna Karenina

air. And at that instant there flashed across his mind the thought of what Serpukhovskoy had just said to him, and what he had himself been thinking in the morning that it was better not to bind himself; and he knew that he could not tell her this thought.

Having read the letter, he raised his eyes to her, and there was no firmness in them. She saw at once that he had been thinking about it before by himself. She knew that whatever he might say to her, he would not say all he thought. And she knew that her last hope had failed her. This was not what she had been looking for.

"You see the sort of man he is," she said, with a shaking voice; "he..."

"Forgive me, but I rejoice at it," Vronsky interrupted. "For God's sake, let me finish!" he added, his eyes imploring her to give him time to explain his words. "I rejoice, because things cannot, cannot possibly remain as he supposes."

"Why can't they?" Anna said, restraining her tears, and obviously attaching no sort of consequence to what he said. She felt that her fate was sealed.

Vronsky meant that after the duel inevitable, he thought things could not go on as before, but he said something different.

"It can't go on. I hope that now you will leave him. I hope" he was confused, and reddened "that you will let me arrange and plan our life. Tomorrow..." he was beginning.

She did not let him go on.

"But my child!" she shrieked. "You see what he writes! I should have to leave him, and I can't and won't do that."

"But, for God's sake, which is better? To leave your child, or keep up this degrading situation?"

"To whom is it degrading?"

"To all, and most of all to you."

"You say degrading... Don't say that. These words have no meaning for me," she said in a shaking voice. She did not want him now to say what was untrue. She had nothing left her but his love, and she wanted to love him.

"Don't you understand that from the day I loved you everything has changed for me? For me there is one thing, and one thing only your love. If that's mine, I feel so exalted, so strong, that nothing can be degrading to me. I am proud of my position, because... proud of being... proud..." She could not say what she was proud of. Tears of shame and despair choked her utterance. She stood still and sobbed.

He felt, too, something swelling in his throat and twitching in his nose, and for the first time in his life he felt on the point of weeping. He could not have said exactly what it was touched him so; he felt sorry for her, and he felt he could not help her, and with that he knew that he was to blame for her wretchedness, and that he had done something wrong.

"Isn't a divorce possible?" he said feebly. She shook her head, without answering. "Couldn't you take your son, and still leave him?"

"Yes; but it all depends on him. Now I must go to him," she said shortly. Her presentiment that all would again go on in the old way had not deceived her.

"On Tuesday I shall be in Peterburg, and everything can be settled."

"Yes," she said. "But don't let us talk any more of it."

Anna's carriage, which she had sent away, and ordered to come back to the little gate of the Vrede garden, drove up. Anna said good-bye to Vronsky, and drove home.

### XXIII.

On Monday there was the usual session of the Commission of the 2nd of June. Alexei Alexandrovich walked into the hall where the session was held, greeted the members and the president, as usual, and sat down in his place, putting his hand on the papers laid ready before him. Among those papers lay the necessary evidence and a rough outline of the speech he intended to make. But he did not really need these documents. He remembered every point, and did not think it necessary to go over in his memory what he would say. He knew that when the time came, and when he saw his enemy facing him, and studiously endeavoring to assume an expression of indifference, his speech would flow of itself better than he could prepare it now. He felt that the import of his speech was of such magnitude that every word of it would have weight. Meantime, as he listened to the usual report, he had the most innocent and inoffensive air. No one, looking at his white hands, with their swollen veins and long fingers, so softly stroking the edges of the white paper that lay before him, and at the air of weariness with which his head drooped on one side, would have suspected that in a few minutes a torrent of words would flow from his lips that would arouse a fearful storm, set the members shouting and attacking one another, and force the president to call for order. When the report was over, Alexei Alexandrovich announced in his subdued, delicate voice that he had several points to bring before the meeting in regard to the organization of the native tribes. All attention was turned upon him. Alexei Alexandrovich cleared his throat, and, without looking at his opponent, but selecting, as he always did while he was delivering his speeches, the first person sitting opposite him, an inoffensive little old man, who never had an opinion of any sort in the Commission, began to expound his views. When he reached the point about the basic and organic law, his opponent jumped up and began to protest. Stremov, who was also a member of the Commission, and was also stung to the quick, began defending himself, and an altogether stormy session followed; but Alexei Alexandrovich triumphed, and his motion was carried, three new commissions were appointed, and the next day, in a certain Peterburg circle, nothing else was talked of but this session. Alexei Alexandrovich's success had been even greater than he had anticipated.

Next morning, Tuesday, Alexei Alexandrovich, on awaking, recollected with pleasure his triumph of the previous day, and he could not help smiling, though he tried to appear indifferent, when the head clerk, anxious to flatter him, informed him of the rumors that had reached him concerning what had happened in the Commission.

Absorbed in business with the head clerk, Alexei Alexandrovich had completely forgotten that it was Tuesday, the day fixed by him for the return of Anna Arkadyevna, and he was surprised and received a shock of annoyance when a servant came in to inform him of her arrival.

Anna had arrived in Peterburg early in the morning; the carriage had been sent to meet her in accordance with her telegram, and so Alexei Alexandrovich might have known of her arrival. But, when she arrived, he did not meet her. She was told that he had not yet gone out, but was busy with the head clerk. She sent word to her husband that she had come, went to her own room, and occupied herself in sorting out her things, expecting he would come to her. But an hour passed; he did not come. She went into the dining room on the pretext of giving some directions, and spoke loudly on purpose, expecting him to come out there; but he did not come, though she heard him go to the door of his study as he parted from the head clerk. She knew that he should before long go out to his office as usual, and she wanted to see him before that, so that their attitude to one another might be defined.

She walked across the drawing room and went resolutely to him. When she went into his study he was in official



uniform, obviously ready to go out, sitting at a little table on which he rested his elbows, looking dejectedly before him. She saw him before he saw her, and she knew that he was thinking of her.

On seeing her, he would have risen, but changed his mind, then his face flushed hotly a thing Anna had never seen before, and he got up quickly and went to meet her, looking not at her eyes, but above them, at her forehead and hair. He went up to her, took her by the hand, and asked her to sit down.

"I am very glad you have come," he said, sitting down beside her, and, obviously wishing to say something, he stuttered. Several times he attempted to speak, but stopped. In spite of the fact, that in preparing herself for meeting him, she had schooled herself to despise and accuse him, she did not know what to say to him, and she felt pity for him. And so the silence lasted rather long: "Is Seriozha quite well?" he said, and, without waiting for an answer, he added: "I shan't be dining at home today, and I must go out directly."

"I had thought of going to Moscow," she said.

"No, you did quite, quite right to come," he said, and was silent again.

Seeing that he was powerless to begin the conversation, she began herself.

"Alexei Alexandrovich," she said, looking at him and without dropping her eyes under his persistent gaze at her hair, "I'm a guilty woman, I'm a bad woman, yet I am the same as I was, as I told you then, and I have come to tell you that I can change nothing."

"I haven't asked you about that," he said, all at once, resolutely and with hatred looking her straight in the face; "that was as I had supposed." Under the influence of anger he apparently regained complete possession of all his faculties. "But as I told you then, and have written to you," he said in a thin, shrill voice, "I repeat now, that I am not bound to know this. I ignore it. Not all wives are so kind as you, to be in such a hurry to communicate such agreeable news to their husbands." He laid special emphasis on the word "agreeable." "I shall ignore it so long as the world knows nothing of it, so long as my name is not disgraced. And so I simply inform you that our relations must be just as they have always been, and that only in the event of your compromising yourself I shall be obliged to take steps to secure my honor."

"But our relations cannot be the same as always," Anna began in a timid voice, looking at him with dismay.

When she saw once more those composed gestures, heard that shrill, childlike and sarcastic voice, her aversion for him extinguished her pity for him, and she felt only afraid; but at all costs she wanted to make clear her position.

"I cannot be your wife while I..." she began.

He laughed a cold and malignant laugh.

"The manner of life you have chosen is reflected, I suppose, in your ideas. I have so much of both respect and contempt I respect your past and despise your present that I was far from the interpretation you put on my words."

Anna sighed and bowed her head.

"Though indeed I fail to comprehend how, with the independence you show," he went on, getting hot, "announcing your infidelity to your husband and seeing nothing reprehensible in it, apparently, you can see anything reprehensible in performing a wife's duties in relation to your husband."

"Alexei Alexandrovich! What is it you want of me?"

"I want never to meet that man here, and I want you to conduct yourself so that neither society, nor the servants, could possibly reproach you.... I want you not to see him. That's not much, I think. And in return you will enjoy all the privileges of a faithful wife without fulfilling her duties. That's all I have to say to you. Now it's time for me to go. I'm not dining at home." He got up and moved toward the door.

Anna got up too. Bowing in silence, he let her pass before him.

## XXIV.

The night spent by Levin on the haycock did not pass without an effect upon him. The way in which he had been managing his land revolted him and lost all attraction for him. In spite of the magnificent harvest, never had there been (or, at least, it had never seemed so to him) so many hindrances and so many quarrels between him and the peasants as that year, and the origin of these failures and this hostility was now perfectly comprehensible to him. The delight he had experienced in the work itself, and the consequent greater intimacy with the peasants, the envy he felt of them, of their life, the desire to adopt that life, which had been to him that night not a dream but an intention, the execution of which he had thought out in detail all this had so transformed his view of the farming of the land as he had managed it, that he could not take his former interest in it, and could not help seeing that unpleasant relation between him and the workpeople which was the foundation of it all. The herd of improved cows such as Pava, the whole land plowed over and enriched, the nine level fields surrounded with willow fences, the ninety dessiatinas heavily manured, drill plows, and all the rest of it it was all splendid, if only the work had been done by himself, or by himself and his comrades, by people in sympathy with him. But he saw clearly now (his work on a book of agriculture, in which the chief element in husbandry was to have been the laborer, greatly assisted him in this) that the sort of farming he was carrying on was nothing but a cruel and stubborn struggle between him and the laborers, in which there was on one side his side a continual intense effort to change everything to a pattern he considered better; on the other side, the natural order of things. And in this struggle he saw that, with immense expenditure of force on his side, and with no effort or even intention on the other side, the sole attainment was that the work did not go to the liking of either side, and that splendid tools, splendid cattle and land were spoiled with no good to anyone. Worst of all, the energy expended on this work was not merely wasted. He could not help feeling now, since the meaning of his system had become clear to him, that the aim of his energy was a most unworthy one. In reality, what was the struggle about? He was struggling for every groat (and he could not help it, for he had only to relax his efforts, and he would not have had the money to pay his laborers' wages), while they were only struggling to be able to do their work easily and agreeably that is to say, as they were used to doing it. It was for his interests that every laborer should work as hard as possible, and that while doing so he should keep his wits about him, so as to try not to break the winnowing machines, the horse rakes, the threshing machines, that he should attend to what he was doing. What the laborer wanted was to work as pleasantly as possible, with rests, and, above all, carelessly and heedlessly, without thinking. That summer Levin saw this at every step. He sent the men to mow some clover for hay, picking out the worst patches where the clover was overgrown with grass and weeds and of no use for seed; again and again they mowed his best dessiatinas of seed clover, justifying themselves by the pretext that the bailiff had told them to, and trying to pacify him with the assurance that it would make splendid hay; but he knew that it was because those dessiatinas were so much easier to mow. He sent out a hay machine for pitching the hay it was broken at the first row because it was dull work for a peasant to sit on the seat in front with the great wings waving above him. And he was told: "Don't trouble sure, the womenfolks will pitch it quick enough." The plows were practically useless, because it never occurred to the laborer to raise the colter when he turned the plow, and in forcing it round, he tortured the horse and spoiled the ground and then begged Levin not to mind it. The horses were allowed to stray into the wheat because not a single laborer wanted to be night watchman, and, in spite of orders to the contrary, the laborers insisted on taking turns for night duty about the horses; and when Vanka, after working all day long, fell asleep, he would say, very penitent for his fault: "Do what you will to me."

Three of the best heifers were allowed to overeat themselves to death, by letting them into the clover aftermath without care as to drenching them, and nothing would make the men believe that they had been blown out by the clover, but they told Levin, by way of consolation, that one of his neighbors had lost a hundred and twelve head of cattle in three days. All this happened, not because anyone felt ill will to Levin or to his farming; on the contrary, he knew that they liked him, thinking him a simple gentleman (their highest praise); but it happened simply because all they wanted was to work merrily and carelessly, and his interests were not only remote and incomprehensible to them, but fatally opposed to their most just claims. Long before, Levin had felt dissatisfaction with his own position in regard to the land. He saw that his boat leaked, but he did not look for the leak, perhaps purposely deceiving himself. But now he could deceive himself no longer. The farming of the land, as he was managing it, had become not merely unattractive but revolting to him, and he could take no further interest in it.

To this now was joined the presence, only thirty versts off, of Kitty Shcherbatskaia, whom he longed to see and could not. Darya Alexandrovna Oblonskaia had invited him, when he was over there, to come; to come with the object of renewing his proposal to her sister, who would, so she gave him to understand, accept it now. Levin himself had felt on seeing Kitty Shcherbatskaia that he had never ceased to love her; but he could not go over to the Oblonskys', knowing she was there. The fact that he had proposed to her, and that she had refused him, had placed an insuperable barrier between her and him. "I can't ask her to be my wife merely because she can't be the wife of the man she wanted to marry," he said to himself. The thought of this made him cold and hostile to her. "I should not be able to speak to her without a feeling of reproach; I could not look at her without resentment; and she will only hate me all the more, as she's bound to. And besides, how can I now, after what Darya Alexandrovna told me, go to see them? Can I help showing that I know what she told me? And I shall come to forgive her magnanimously, and take pity on her! And go through a performance before her of forgiving, and deigning to bestow my love on her!... Why did Darya Alexandrovna tell me that? I might have seen her by chance then everything would have happened of itself; but, as it is, it's out of the question out of the question!"

Darya Alexandrovna sent him a letter, asking him for a sidesaddle for Kitty's use. "I'm told you have a sidesaddle," she wrote to him; "I hope you will bring it over yourself."

This was more than he could stand. How could a woman of any intelligence, of any delicacy, put her sister in such a humiliating position! He wrote ten notes, and tore them all up, and then sent the saddle without any reply. To write that he would come was impossible, because he could not come; to write that he could not come because something prevented him, or that he would be away, would be still worse. He sent the saddle without any answer; and with a sense of having done something shameful, he handed over all the now revolting business of the estate to his bailiff, and set off next day to a remote district to see his friend Sviiashsky, who had splendid marshes for double snipes in his neighborhood, and had lately written, asking him to keep a long-standing promise to visit him. The snipe marsh, in the Surovsky district, had long tempted Levin, but he had continually put off this visit on account of his work on the estate. Now he was glad to get away from the neighborhood of the Shcherbatskys, and still more from his farmwork, especially on a shooting expedition, which always served as the best consolation in trouble.

## XXV.

In the Surovsky district there was neither railway nor mail coach, and Levin drove there with his own horses in his tarantass.

He stopped halfway at a well-to-do peasant's to feed his horses. A bald, well-preserved old man, with a broad, red beard, grizzled on his cheeks, opened the gate, squeezing against the gatepost to let the troika pass. Directing the coachman to a place under the shed in the big, clean, tidy new yard, with charred, wooden plows in it, the old man asked Levin to come into the room. A cleanly dressed young housewife, with clogs on her bare feet, was

## Anna Karenina

scrubbing the floor in the new outer room. She was frightened by the dog that ran in after Levin, and uttered a shriek, but began laughing at her own fright at once when she was told the dog would not hurt her. Pointing out to Levin with her bare arm the door into the room, she bent down again, hiding her handsome face, and went on scrubbing.

"Would you like a samovar?" she asked.

"Yes, please."

The room was a big one, with a tile stove, and a partition dividing it into two. Under the icons stood a table painted in patterns, a bench and two chairs. Near the entrance was a dresser full of crockery. The shutters were closed, there were few flies, and it was so clean that Levin was anxious that Laska, who had been running along the road and bathing in puddles, should not muddy the floor, and ordered her to a place in the corner by the door. After looking round the room, Levin went out in the back yard. The comely young housewife in clogs, swinging the empty pails on the yoke, ran on before him to the well for water.

"Look sharp, my girl!" the old man shouted after her, good-humoredly, and he walked up to Levin. "Well, sir, are you going to Nikolai Ivanovich Sviiazhsky? He comes to us too," he began chatting, leaning his elbows on the railing of the steps. In the middle of the old man's account of his acquaintance with Sviiazhsky, the gates creaked again, and laborers came into the yard from the fields, with wooden plows and harrows. The horses harnessed to the plows and harrows were sleek and fat. The laborers were obviously of the household: two were young men in cotton-print shirts and caps, the two others were hired laborers in homespun shirts, one an old man, the other a young fellow.

Moving off from the steps, the old man went up to the horses and began unharnessing them.

"What have they been plowing?" asked Levin.

"Plowing up the potatoes. We rent a bit of land too. Fedot, don't let out the gelding, but take it to the trough, and we'll put another in harness."

"Oh, father, about the plowshares I ordered has he brought them along?" asked the big, robust fellow, obviously the old man's son.

"There... in the sledge," answered the old man, rolling up the reins he had taken off, and flinging them on the ground. "You can put them right, while they have dinner."

The comely young housewife came into the outer room with the full pails dragging at her shoulders. More women came on the scene from somewhere, young and handsome, middle-aged, old and ugly, with children and without children.

The samovar was beginning to sing; the laborers and the family, having disposed of the horses, came in to dinner. Levin, getting his provisions out of his carriage, invited the old man to take tea with him.

"Well, I have had some today already," said the old man, obviously accepting the invitation with pleasure. "Well, be it so, for company."

Over their tea Levin heard all about the old man's farming. Ten years before the old man had rented a hundred and twenty dessiatinas from the lady who owned them, and a year ago he had bought them and rented another three hundred from a neighboring landowner. A small part of the land the worst part he let out for rent, while some forty dessiatinas of arable land he cultivated himself, with his family and two hired laborers. The old man

complained that things were going badly. But Levin saw that he simply did so from a feeling of propriety, and that his farm was in a flourishing condition. If it had been unsuccessful he would not have bought land at a hundred and five roubles the dessiatina, he would not have married off his three sons and a nephew, he would not have rebuilt twice after fires, and each time on a larger scale. In spite of the old man's complaints, it was evident that he was proud, and justly proud, of his prosperity, proud of his sons, his nephew, his sons' wives, his horses, and his cows, and especially of the fact that he was keeping all this farming going. From his conversation with the old man, Levin realized he was not averse to new methods either. He had planted a great many potatoes, and his potatoes, as Levin had seen driving past, were already past flowering and beginning to ripen, whereas Levin's were only just coming into flower. He plowed the ground for his potatoes with a modern plow borrowed from a neighboring landowner. He sowed wheat. The trifling fact that, thinning out his rye, the old man used the rye he thinned out for his horses, struck Levin especially. How many times had Levin seen this splendid fodder wasted, and tried to get it saved; but always it had turned out to be impossible. This peasant had done so, and he could not say enough in praise of it as food for the beasts.

"What have the wenches to do? They carry it out in bundles to the roadside, and the cart brings it away."

"Well, we landowners can't manage well with our laborers," said Levin, handing him a glass of tea.

"Thanks," said the old man, and he took the glass, but refused sugar, pointing to a bit he had left. "There's no getting along with them," said he. "They're simple waste. Look at Sviiazhsky, for instance. We know what the land's like first-rate; yet there's not much of a crop to boast of. It's not looked after enough that's all it is!"

"But you work your land with hired laborers?"

"We're all peasants together. We go into everything ourselves. If a man's no use, he can go, and we can manage by ourselves."

"Father Finogen wants some tar," said the young woman in the clogs, coming in.

"Yes, yes, that's how it is, sir!" said the old man, getting up, and, crossing himself lingeringly, he thanked Levin and went out.

When Levin went in the kitchen to call his coachman he saw the whole family of men at dinner. The women were standing up waiting on them. The young, robust son was telling something funny, with his mouth full of buckwheat porridge, and they were all laughing the woman in the clogs, who was pouring cabbage soup into a bowl, laughing most merrily of all.

Very probably the comely face of the young woman in the clogs had a good deal to do with the impression of well-being this peasant household made upon Levin, but the impression was so strong that Levin could never get rid of it. And all the way from the old peasant's to Sviiazhsky's he kept recalling this peasant farm as though there were something in this impression demanding his special attention.

## XXVI.

Sviiazhsky was the marshal of his district. He was five years older than Levin, and had long been married. His sister-in-law, a young girl Levin liked very much, lived in his house; and Levin knew that Sviiazhsky and his wife would have greatly liked to marry the girl to him. He knew this with certainty, as so-called eligible young men always know it, though he could never have brought himself to speak of it to anyone; and he also knew that, although he wanted to get married, and although by every token this very attractive girl would make an excellent wife, he could no more have married her, even if he had not been in love with Kitty Shcherbatskaia, than he could

have flown up to the sky. And this knowledge poisoned the pleasure he had hoped to find in the visit to Sviiazhsky.

On getting Sviiazhsky's letter with the invitation for shooting, Levin had immediately thought of this; but, in spite of it, he had made up his mind that Sviiazhsky's having such views for him was simply his own groundless supposition, and so he would go, notwithstanding. Besides, at the bottom of his heart, he had a desire to try himself, to put himself to the test in regard to this girl. The Sviiazhskys' home life was exceedingly pleasant, and Sviiazhsky himself, the best type of Zemstvo man that Levin knew, was very interesting to him.

Sviiazhsky was one of those people, always a source of wonder to Levin, whose convictions, very logical though never original, go one way by themselves, while their life, exceedingly definite and firm in its course, goes its way quite apart and almost always in direct contradiction to their convictions. Sviiazhsky was an extremely advanced man. He despised the nobility, and believed the mass of the nobility to be secretly in favor of serfdom, and only concealing their views out of cowardice. He regarded Russia as a ruined country, rather after the style of Turkey, and the government of Russia as so bad that he never permitted himself to criticize its doings seriously, and yet he was a functionary of that government, and a model marshal of nobility, and when he drove about he always wore his cap with the cockade and red band. He considered human life only tolerable abroad, and went abroad to stay at every opportunity, and at the same time he carried on a complex and improved system of agriculture in Russia, and with extreme interest followed everything and knew everything that was being done in Russia. He considered the Russian peasant as occupying a stage of development intermediate between the ape and the man, and at the same time in the days of Zemstvo election no one was readier to shake hands with the peasants and listen to their opinion. He believed neither in God nor the devil, but was much concerned about the question of the improvement of the clergy and the maintenance of their revenues, and took special trouble to keep up the church in his village.

On the woman question he was on the side of the extreme advocates of complete liberty for women, and especially their right to labor. But he lived with his wife on such terms that their affectionate, childless home life was the admiration of everyone, and arranged his wife's life so that she did nothing and could do nothing but share her husband's preoccupations in spending their time as happily and as agreeably as possible.

If it had not been a characteristic of Levin to put the most favorable interpretation on people, Sviiazhsky's character would have presented no doubt or difficulty to him: he would have said to himself, "a fool or a knave," and everything would have seemed clear. But he could not say a fool, because Sviiazhsky was unmistakably clever, and, moreover, a highly cultivated man, who was exceptionally modest over his culture. There was not a subject he knew nothing of. But he did not display his knowledge except when he was compelled to do so. Still less could Levin say that he was a knave, as Sviiazhsky was unmistakably an honest, goodhearted, sensible man, who worked good-humoredly, keenly, and perseveringly at his work, which was held in high honor by everyone about him, and certainly he had never consciously done, and was indeed incapable of doing, anything base.

Levin tried to understand him, and could not understand him, and looked at him and his life as at a living enigma.

Levin and he were very friendly, and so Levin used to venture to sound Sviiazhsky, to try to get at the very foundation of his view of life; but it was always in vain. Every time Levin tried to penetrate beyond the outer chambers of Sviiazhsky's mind, which were hospitably open to all, he noticed that Sviiazhsky was slightly disconcerted; faint signs of alarm were visible in his eyes, as though he were afraid Levin would understand him, and he would give him a kindly, good-humored rebuff.

Just now, since his disenchantment with farming, Levin was particularly glad to stay with Sviiazhsky. Apart from the fact that the sight of this happy and affectionate couple, so pleased with themselves and everyone else, and their well-ordered home, had always a cheering effect on Levin, he felt a longing, now that he was so dissatisfied with his own life, to get at that secret in Sviiazhsky which gave him such clarity, definiteness, and good courage

in life. Moreover, Levin knew that at Sviiazhsky's he would meet the landowners of the neighborhood, and it was particularly interesting for him just now to hear and take part in those rural conversations concerning crops, laborers' wages, and so on, which, Levin was aware, are conventionally regarded as something very low, but which seemed to him just now to constitute the one subject of importance. "It was not, perhaps, of importance in the days of serfdom, and it may not be of importance in England. In both cases the conditions of agriculture are firmly established; but among us now, when everything has been turned topsy-turvy, and is only just taking shape, the question what form these conditions will take is the one question of importance in Russia," thought Levin.

The shooting turned out to be poorer than Levin expected. The marsh was dry and there were no snipe at all. He walked about the whole day and only brought back three birds, but to make up for that he brought back, as he always did from shooting, an excellent appetite, excellent spirits, and that keen, intellectual mood which with him always accompanied violent physical exertion. And while out shooting, when he seemed to be thinking of nothing at all, the old man and his family would time and again come to mind, and the impression of them seemed to claim not merely his attention, but the solution of some question connected with them.

In the evening, at tea, two landowners who had come about some business connected with a wardship were of the party, and the interesting conversation Levin had been looking forward to sprang up.

Levin was sitting beside his hostess at the tea table, and was obliged to keep up a conversation with her and her sister, who was sitting opposite him. Madame Sviiazhsky was a round-faced, fair-haired, rather short woman, all smiles and dimples. Levin tried through her to get at a solution of the weighty enigma her husband presented to his mind; but he had not complete freedom of ideas, because he was in an agony of embarrassment. This agony of embarrassment was due to the fact that the sister-in-law was sitting opposite to him, in a dress, specially put on, as he fancied, for his benefit, cut particularly open, in the shape of a trapeze, at her white bosom. This quadrangular opening, in spite of the bosom's being very white, or just because it was very white, deprived Levin of the full use of his faculties. He imagined, probably mistakenly, that this low-necked bodice had been made on his account, and felt that he had no right to look at it, and tried not to look at it; but he felt that he was to blame for the very fact of the low-necked bodice having been made. It seemed to Levin that he had imposed upon someone, that he ought to explain something, but that to explain it was impossible, and for that reason he was continually blushing, was ill at ease and awkward. His awkwardness infected the pretty sister-in-law too. But their hostess appeared not to observe this, and kept purposely drawing her into the conversation.

"You say," she said, pursuing the subject that had been started, "that my husband cannot be interested in what's Russian. It's quite the contrary; he is in cheerful spirits abroad, but never in such as he is here. Here he feels in his proper place. He has so much to do, and he has the faculty of interesting himself in everything. Oh, you've not been to see our school, have you?"

"I've seen it.... The little house covered with ivy, isn't it?"

"Yes; that's Nastia's work," she said, indicating her sister.

"You teach in it yourself?" asked Levin, trying to look above the open neck, but feeling that no matter where he looked in that direction he should see it.

"Yes; I used to teach in it myself, and do teach still, but we have a first-rate schoolmistress now. And we've started gymnastic exercises."

"No, thank you, I won't have any more tea," said Levin, and conscious of doing a rude thing, but incapable of continuing the conversation, he got up, blushing. "I hear a very interesting conversation," he added, and walked to the other end of the table, where Sviiazhsky was sitting with the two gentlemen of the neighborhood. Sviiazhsky

was sitting sideways, with one elbow on the table, and a cup in one hand, while with the other hand he gathered up his beard, held it to his nose and let it drop again, as though he were smelling it. His brilliant black eyes were looking directly at the excited country gentleman with gray mustaches, and apparently he derived amusement from his remarks. The gentleman was complaining of the peasants. It was evident to Levin that Sviiazhsky knew the answer to this gentleman's complaints, which would at once demolish his whole contention, but that in his position he could not give utterance to this answer, and listened, not without pleasure, to the landowner's comic talk.

The gentleman with the gray mustaches was obviously an inveterate adherent of serfdom and a devoted agriculturist, who had lived all his life in the country. Levin saw proofs of this in his dress, in his old-fashioned threadbare coat, obviously not his everyday attire, in his shrewd, deep-set eyes, in his coherent Russian, in the imperious tone that had become habitual from long use, and in the resolute gestures of his large, beautiful sunburned hands, with a single old wedding ring on his fourth finger.

## XXVII.

"If I'd only the heart to throw up what's been set going... such a lot of trouble wasted... I'd turn my back on the whole business, sell out, go off like Nikolai Ivanovich... to hear La Belle Helene," said the landowner, a pleasant smile lighting up his shrewd old face.

"But, you see, you don't throw it up," said Nikolai Ivanovich Sviiazhsky, "so there must be something gained."

"The only gain is that I live in my own house, neither bought nor hired. Besides, one keeps hoping the people will learn sense. Though, instead of that, believe it or not, there is such drunkenness, such immorality!... They keep making partition of their bits of land; there isn't a horse or a cow. The peasant's dying of hunger, but just go and take him on as a laborer he'll do his best to do you a mischief, and then bring you up before the justice of the peace."

"But then, you make complaints to the justice too," said Sviiazhsky.

"I lodge complaints? Not for anything in the world There's so much talk springs up that one is sorry ever to have complained. At the works, for instance, they pocketed the advance money and made off. What did the justice do? Why, acquitted them. Nothing keeps them in order but their own communal court and their village elder. He'll flog them in the good old style! But for that there'd be nothing for it but to give it all up and run away."

Obviously the landowner was chaffing Sviiazhsky, who, far from resenting it, was apparently amused by it.

"But, you see, we manage our land without such extreme measures," said he, smiling: "Levin, and I, and this gentleman."

He indicated the other landowner.

"Yes, the thing's done at Mikhail Petrovich's, but ask him how it's done. Do you call that a rational system?" said the landowner, obviously rather proud of the word "rational".

"My system's very simple," said Mikhail Petrovich, "thank God. All my management rests on getting the money ready for the autumn taxes.... The peasants come to me, 'Father, master, help us!' Well, the peasants are all one's neighbors; one feels for them. So one advances them a third, but one says: 'Remember, lads, I have helped you, and you must help me when I need it whether it's the sowing of the oats, or the hay cutting, or the harvest'; and well, one agrees, so much for each taxpayer though there are dishonest ones among them too, it's true."



Levin, who had long been familiar with these patriarchal methods, exchanged glances with Sviiazhsky and interrupted Mikhail Petrovich, turning again to the gentleman with the gray mustaches.

"Well, what do you think?" he asked. "What system is one to adopt nowadays?"

"Why, manage like Mikhail Petrovich, or let the land for half the crop or for rent to the peasants; one can do that only that's just how the general prosperity of the country is being ruined. Where the land with serf labor and good management gave a yield of nine to one, on the metayage system it yields three to one. Russia has been ruined by the emancipation!"

Sviiazhsky looked with smiling eyes at Levin, and even made a faint gesture of irony to him; but Levin did not think the landowner's words absurd; he understood them better than he did Sviiazhsky. A great deal more of what the landowner said to show in what way Russia was ruined by the emancipation struck him indeed as very true, new to him, and quite incontestable. The landowner unmistakably spoke his own individual thought a thing that rarely happens and a thought to which he had been brought not by a desire of finding some exercise for an idle brain, but a thought which had grown up out of the conditions of his life, which he had brooded over in the solitude of his village, and had considered in every aspect.

"The point is, don't you see, that progress of every sort is only made by the use of authority," he said, evidently wishing to show he was not without culture. "Take the reforms of Peter, of Catherine, of Alexander. Take European history. And progress in agriculture more than anything else the potato, for instance, that was introduced among us by force. The wooden plow, too, wasn't always used. It was introduced in the days of appanaged princes, perhaps, but it was probably brought in by force. Now, in our own day, we landowners in the serf times used various improvements in our husbandry: drying machines and threshing machines, and carting manure, and all the modern implements all these we brought into use by our authority, and the peasants opposed it at first, and ended by imitating us. Now, by the abolition of serfdom, we have been deprived of our authority; and so our husbandry, where it had been raised to a high level, is bound to sink to the most savage, primitive condition. That's how I see it."

"But why so? If it's rational, you'll be able to keep up the same system with hired labor," said Sviiazhsky.

"We've no power over them. With whom am I going to work the system, allow me to ask?"

"There it is the labor force the chief element in agriculture," thought Levin.

"With laborers."

"The laborers won't work well, and won't work with good implements. Our laborer can do nothing but get drunk, like a swine, and then ruin everything you give him. He spoils the horses by watering unseasonably, he cuts good harness, barter the tires of the wheels for drink, drops bits of iron into the threshing machine, so as to break it. He loathes the sight of anything that's not after his fashion. And that's how the whole level of husbandry has fallen. Lands gone out of cultivation, overgrown with weeds, or divided among the peasants, and where millions of chetverts were raised you get a hundred thousand; the wealth of the country has decreased. If the same thing had been done, but with consideration for..."

And he proceeded to unfold his own scheme of emancipation by means of which these drawbacks might have been avoided.

This did not interest Levin, but, when he had finished, Levin went back to his first position, and, addressing Sviiazhsky, and trying to draw him into expressing his serious opinion, said:

"It's perfectly true that the standard of culture is falling, and that with our present relations to the peasants there is no possibility of farming on a rational system to yield a profit," said he.

"I don't believe it," Sviiazhsky replied quite seriously; "all I see is that we don't know how to cultivate the land, and that our system of agriculture in the serf days was by no means too high, but too low. We have no machines, no good stock, no efficient supervision; we don't even know how to keep accounts. Ask any landowner; he won't be able to tell you which crop's profitable, and which isn't."

"Italian bookkeeping," said the landowner ironically. "You may keep your books as you like, but if they spoil everything for you, there won't be any profit."

"Why do they spoil things? A poor threshing machine, or your Russian presser, they will break, but my steam press they don't break. A wretched Russian nag they'll ruin, but keep good percherons or the Russian wagon horses they won't ruin them. And so it is all round. We must raise our farming to a higher level."

"Oh, if one only had the means to do it, Nikolai Ivanovich! It's all very well for you; but for me, with a son to keep at the university, lads to be educated at the high school how am I going to buy these percherons?"

"Well, that's what the banks are for."

"To get whatever I have left sold by auction? No, thank you."

"I don't agree that it's necessary or possible to raise the level of agriculture still higher," said Levin. "I devote myself to it, and I have means, but I can do nothing. As to the banks, I don't know to whom they're any good. For my part, anyway, whatever I've spent money on in the way of husbandry has been a loss: stock a loss, machinery a loss."

"That's true enough," the gentleman with the gray mustaches chimed in, even laughing with satisfaction.

"And I'm not the only one," pursued Levin. "I mix with all the neighboring landowners, who are cultivating their land on a rational system; they all, with rare exceptions, are doing so at a loss. Come, tell us how does your land do does it pay?" said Levin, and at once in Sviiazhsky's eyes he detected that fleeting expression of alarm which he had noticed whenever he had tried to penetrate beyond the outer chambers of Sviiazhsky's mind.

Moreover, this question on Levin's part was not quite in good faith. Madame Sviiazhsky had just told him at tea that they had that summer invited a German expert accountant from Moscow, who for a consideration of five hundred roubles had investigated the management of their property, and found that it was costing them a loss of three thousand odd roubles. She did not remember the precise sum, but it appeared that the German had worked it out to the fraction of a kopeck.

The landowner smiled at the mention of the profits of Sviiazhsky's farming, obviously aware how much gain his neighbor and marshal was likely to be making.

"Possibly it does not pay," answered Sviiazhsky. "That merely proves that either I'm a bad manager, or that I've sunk my capital for the increase of my rents."

"Oh, rent!" Levin cried with horror. "Rent there may be in Europe, where land has been improved by the labor put into it; but with us all the land is deteriorating from the labor put into it in other words, they're working it out; so there's no question of rent."

"How no rent? It's a law."

"Then we're outside the law; rent explains nothing for us, but simply muddles us. No, tell me how there can be a theory of rent?..."

"Will you have some curded milk? Masha, pass us some curded milk or raspberries." He turned to his wife. "The raspberries are lasting extraordinarily late this year."

And in the happiest frame of mind Sviiashsky got up and walked off, apparently supposing the conversation to have ended at the very point when to Levin it seemed that it was only just beginning.

Having lost his antagonist, Levin continued the conversation with the landowner, trying to prove to him that all the difficulty arises from the fact that we don't find out the peculiarities and habits of our laborer; but the landowner, like all men who think independently and in isolation, was slow in taking in any other person's thought, and particularly partial to his own. He stuck to it that the Russian peasant is a swine and likes swinishness, and that to get him out of his swinishness one must have authority, and there is none; one must have the stick, and we have become so liberal that we have all of a sudden replaced the stick, that served us for a thousand years, with lawyers and model prisons, where the worthless, stinking peasant is fed on good soup and has a fixed allowance of cubic feet of air.

"What makes you think," said Levin, trying to get back to the question, "that it's impossible to find some relation to the laborer in which the labor would become productive?"

"That never could be so with the Russian people; we've no authority," answered the landowner.

"How can new conditions be found?" said Sviiashsky. Having eaten some curded milk and lighted a cigarette, he came back to the discussion. "All possible relations to the labor force have been defined and studied," he said. "The relic of barbarism, the primitive commune with a guarantee for all, will disappear of itself; serfdom has been abolished there remains nothing but free labor, and its forms are fixed and ready made, and must be adopted. Permanent hands, day laborers, farmers you can't get out of those forms."

"But Europe is dissatisfied with these forms."

"Dissatisfied, and seeking new ones. And will find them, in all probability."

"That's just what I meant," answered Levin. "Why shouldn't we seek them for ourselves?"

"Because it would be just like inventing afresh the means for constructing railways. They are ready, invented."

"But if they don't suit us, if they're stupid?" said Levin.

And again he detected the expression of alarm in the eyes of Sviiashsky.

"Oh, yes; we'll bury the world under our caps! We've found the secret Europe was seeking for! I've heard all that; but, excuse me, do you know all that's been done in Europe on the question of the organization of labor?"

"No, very little."

"That question is now absorbing the best minds in Europe. The Schulze-Delitsch movement.... And then, all this enormous literature of the labor question, the most liberal Lassalle movement.... The Mulhausen experiment? That's a fact by now, as you're probably aware."

"I have some idea of it, but very vague."

## Anna Karenina

"No, you only say that; no doubt you know all about it as well as I do. I'm no professor of sociology, of course, but it interested me, and really, if it interests you, you ought to study it."

"But what conclusion have they come to?"

"Excuse me..."

The two neighbors had risen, and Sviiazhsky, once more checking Levin in his inconvenient habit of peeping into what was beyond the outer chambers of his mind, went to see his guests out.

### XXVIII.

Levin was insufferably bored that evening with the ladies; he was stirred as he had never been before by the idea that the dissatisfaction he was feeling with his system of managing his land was not an exceptional case, but the general condition of things in Russia; that the evolving of some relation of the laborers to the soil which they would work, as with the peasant he had met halfway to the Sviiazhskys', was not a dream, but a problem which must be solved. And it seemed to him that the problem could be solved, and that he ought to try to solve it.

After saying good night to the ladies, and promising to stay the whole of the next day, so as to make an expedition on horseback with them to see an interesting gap in the crown forest, Levin went, before going to bed, into his host's study to get the books on the labor question that Sviiazhsky had offered him. Sviiazhsky's study was a huge room, by bookcases and with two tables in it — one a massive writing table, standing in the middle of the room, and the other a round table, covered with recent numbers of reviews and journals in different languages, ranged like the rays of a star round a lamp. On the writing table was a stand of drawers marked with gold labels, and full of papers of various sorts.

Sviiazhsky took out the books, and sat down in a rocking chair.

"What are you looking at there?" he said to Levin, who was standing at the round table looking through the reviews. "Oh, yes, there's a very interesting article here," said Sviiazhsky, pointing to the review Levin was holding in his hand. "It appears," he went on, with eager interest, "that Friedrich was not, after all, the person chiefly responsible for the partition of Poland. It is proved..."

And, with his characteristic clearness, he summed up those new, very important, and interesting revelations. Although Levin was engrossed at the moment by his ideas about the problem of the land, he wondered, as he heard Sviiazhsky: "What is there inside of him? And why, why is he interested in the partition of Poland?" When Sviiazhsky had finished, Levin could not help asking: "Well, and what then?" But there was nothing to follow. It was simply interesting that such and such had been "proved." But Sviiazhsky did not explain, and saw no need of explaining, why it was interesting to him.

"Yes, but I was very much interested by your irritable neighbor," said Levin, sighing. "He's a clever fellow, and said a lot that was true."

"Oh, get along with you! An inveterate supporter of serfdom at heart, like all of them!" said Sviiazhsky.

"Whose marshal you are."

"Yes, only I marshal them in the other direction," said Sviiazhsky, laughing.

"I'll tell you what interests me very much," said Levin. "He's right that our system, that is to say, of rational

farming, doesn't answer; that the only thing that answers is the moneylender system, like that meek-looking gentleman's, or else the very simplest. Whose fault is it?"

"Our own, of course. Besides, it's not true that it doesn't answer. It answers with Vassilchikov."

"A factory..."

"But I really don't know what it is you are surprised at. The people are at such a low stage of material and moral development, that obviously they're bound to oppose everything that's necessary to them. In Europe, a rational system answers because the people are educated; it follows that we must educate the people that's all."

"But how are we to educate the people?"

"To educate the people three things are needed: schools, and schools, and schools."

"But you said yourself the people are at such a low stage of material development: what help are schools for that?"

"Do you know, you remind me of the story of the advice given to the sick man. You should try purgative medicine. Taken it: worse. Try leeches. Tried them: worse. Well, then, there's nothing left but to pray to God. Tried it: worse. That's just how it is with us. I say political economy; you say worse. I say socialism worse. Education worse."

"But how do schools help matters?"

"They give the peasant fresh wants."

"Well, that's a thing I've never understood," Levin replied with heat. "In what way are schools going to help the people to improve their material position? You say schools, education, will give them fresh wants. So much the worse, since they won't be capable of satisfying them. And in what way a knowledge of addition and subtraction and the catechism is going to improve their material condition, I never could make out. The day before yesterday I met a peasant woman in the evening with a little baby, and asked her where she was going. She said she was going to the wisewoman; her boy had screaming fits, so she was taking him to be doctored. I asked, 'Why, how does the wisewoman cure screaming fits?' 'She puts the child on the hen roost and repeats some charm....'"

"Well, you're saying it yourself! What's wanted to prevent her taking her child to the hen roost to cure it of screaming fits is just..." Sviiazhsky said, smiling good-humoredly.

"Oh, no!" said Levin with annoyance; "that method of doctoring I merely meant as a simile for doctoring the people with schools. The people are poor and ignorant that we see as surely as the peasant woman sees the baby has fits because it screams. But in what way this trouble of poverty and ignorance is to be cured by schools is as incomprehensible as how the hen roost affects the screaming. What has to be cured is what makes him poor."

"Well, in that, at least, you're in agreement with Spencer, whom you dislike so much. He says, too, that education may be the consequence of greater prosperity and comfort, of more frequent washing, as he says, but not of being able to read and write...."

"Well, then, I'm very glad or the contrary, very sorry that I'm in agreement with Spencer; only I've known it a long while. Schools can do no good; what will do good is an economic organization in which the people will become richer, will have more leisure and then there will be schools."

"Still, all over Europe now schools are obligatory."

"And how far do you agree with Spencer yourself about it?" asked Levin.

But there was a gleam of alarm in Sviiazhsky's eyes, and he said smiling:

"No; that screaming story is positively capital! Did you really hear it yourself?"

Levin saw that he was not to discover the connection between this man's life and his thoughts. Obviously he did not care in the least what his reasoning led him to; all he wanted was the process of reasoning. And he did not like it when the process of reasoning brought him into a blind alley. That was the only thing he disliked, and avoided by changing the conversation to something agreeable and amusing.

All the impressions of the day, beginning with the impression made by the old peasant, which served, as it were, as the thorough bass of all the conceptions and ideas of the day, threw Levin into violent excitement. This dear good Sviiazhsky, keeping a stock of ideas simply for public purposes, and obviously having some other principles hidden from Levin, while with the crowd, whose name is legion, he guided public opinion by ideas he did not share; that irascible country gentleman, perfectly correct in the conclusions that he had been worried into by life, but wrong in his exasperation against a whole class, and that the best class in Russia; his own dissatisfaction with the work he had been doing, and the vague hope of finding a remedy for all this all was blended in a sense of inward turmoil, and the anticipation of some solution near at hand.

Left alone in the room assigned him, lying on a spring mattress, that yielded unexpectedly at every movement of his arm or his leg, Levin did not fall asleep for a long while. Not one conversation with Sviiazhsky, though he had said a great deal that was clever, had interested Levin; but the conclusions of the irascible landowner required consideration. Levin could not help recalling every word he had said, and in imagination amending his own replies.

"Yes, I ought to have said to him: You say that our husbandry does not answer because the peasant hates improvements, and that they must be forced on him by authority. If no system of husbandry answered at all without these improvements, you would be quite right. But the only system that does answer is when the laborer is working in accordance with his habits, just as on the old peasant's land halfway here. Your and our general dissatisfaction with the system shows that either we are to blame or the laborers. We have gone our way the European way a long while, without asking ourselves about the qualities of our labor force. Let us try to look upon the labor force not as an abstract force but as the Russian mouzhik with his instincts, and let us arrange our system of agriculture in accordance with that. Imagine, I ought to have said to him, that you have the same system as the old peasant has, that you have found means of making your laborers take an interest in the success of the work, and have found the happy mean in the way of improvements which they will admit, and you will, without exhausting the soil, get twice or three times the yield you got before. Divide it in halves, give half as the share of labor, the surplus left you will be greater, and labor's share will be greater too. And to do this one must lower the standard of husbandry and interest the laborers in its success. How to do this? that's a matter of detail; but undoubtedly it can be done."

This idea threw Levin into a great excitement. He did not sleep half the night, thinking over in detail the putting of his idea into practice. He had not intended to go away next day, but he now determined to go home early in the morning. Besides, the sister-in-law with her low-necked bodice aroused in him a feeling akin to shame and remorse for some utterly base action. Most important of all he must get back without delay: he would have to make haste to put his new project to the peasants before the sowing of the winter wheat, so that the sowing might be undertaken on a new basis. He had made up his mind to revolutionize his whole system.

XXIX.

The carrying out of Levin's plan presented many difficulties; but he struggled on, doing his utmost, and attained a result which, though not what he desired, was enough to enable him, without self-deception, to believe that the attempt was worth the trouble. One of the chief difficulties was that the process of cultivating the land was in full swing, that it was impossible to stop everything and begin it all again from the beginning, and the machine had to be mended while in motion.

When on the evening of his arrival home he informed the bailiff of his plans, the latter with visible pleasure agreed with what he said, so long as he was pointing out that all that had been done up to that time was stupid and useless. The bailiff said that he had said so a long while ago, but no heed had been paid him. But as for the proposal made by Levin to take a part as shareholder with his laborers in each agricultural undertaking at this the bailiff simply expressed a profound despondency, and offered no definite opinion, but began immediately talking of the urgent necessity of carrying the remaining sheaves of rye the next day, and of sending the men out for the second plowing, so that Levin felt that this was not the time for discussing it.

On beginning to talk to the peasants about it, and making a proposition to cede them the land on new terms, he came into collision with the same great difficulty that they were so much absorbed by the current work of the day that they had not time to consider the advantages and disadvantages of the proposed scheme.

The simplehearted Ivan, the cowherd, seemed to grasp Levin's proposal fully that he should with his family take a share of the profits of the cattle yard and he was in complete sympathy with the plan. But when Levin hinted at the future advantages, Ivan's face expressed alarm and regret that he could not hear all he had to say, and he made haste to find himself some task that would admit of no delay: he either snatched up the fork to pitch the hay out of the pens, or ran to get water or to clear out the manure.

Another difficulty lay in the invincible disbelief of the peasants that a landowner's object could be anything else than a desire to squeeze all he could out of them. They were firmly convinced that his real aim (whatever he might say to them) would always be in what he did not say to them. And they themselves, in giving their opinion, said a great deal but never said what was their real object. Moreover (Levin felt that the irascible landowner had been right) the peasants made their first and unalterable condition of any agreement whatsoever that they should not be forced to any new methods of tillage of any kind, nor to use new implements. They agreed that the modern plow plowed better, that the scarifier did the work more quickly, but they found thousands of reasons that made it out of the question for them to use either of them; and though he had accepted the conviction that he would have to lower the standard of cultivation, he felt sorry to give up improved methods, the advantages of which were so obvious. But in spite of all these difficulties he got his way, and by autumn the system was working, or at least so it seemed to him.

At first Levin had thought of giving up the whole farming of the land just as it was to the peasants, the laborers, and the bailiff, on new conditions of partnership; but he was very soon convinced that this was impossible, and determined to divide it up. The cattle yard, the garden, hayfields, and arable land, divided into several parts, had to be made into separate lots. The simplehearted cowherd, Ivan, who, Levin fancied, understood the matter better than any of them, collecting together a gang of workers to help him, principally of his own family, became a partner in the cattle yard. A distant part of the estate, a tract of wasteland that had lain fallow for eight years, was with the help of the clever carpenter, Fiodor Rezunov, taken by six families of peasants on new conditions of partnership and the peasant Shuraev took the management of all the vegetable gardens on the same terms. The remainder of the land was still worked on the old system, but these three items were the first step to a new organization of the whole, and they completely engrossed Levin.

It is true that in the cattle yard things went no better than before, and Ivan strenuously opposed warm housing for

the cows and butter made of fresh cream, affirming that cows require less food if kept cold, and that butter is more profitable made from sour cream, and he asked for wages just as under the old system, and took not the slightest interest in the fact that the money he received was not wages but an advance out of his future share in the profits.

It is true that Fiodor Rezunov's company did not plow over the ground twice before sowing, as had been agreed, justifying themselves on the plea that the time was too short. It is true that the peasants of the same company, though they had agreed to work the land on new conditions, always spoke of the land, not as held in partnership, but as rented for half the crop, and more than once the peasants and Rezunov himself said to Levin: "If you would take a rent for the land, it would save you trouble, and we should be more free." Moreover, the same peasants kept putting off, on various excuses, the building of a cattle yard and threshing barn on the land as agreed upon, and delayed doing it till the winter.

It is true that Shuraev would have liked to let out the kitchen gardens he had undertaken in small lots to the peasants. He evidently quite misunderstood, and apparently intentionally misunderstood, the conditions upon which the land had been given to him.

Often, too, talking to the peasants and explaining to them all the advantages of the plan, Levin felt that the peasants heard nothing but the sound of his voice, and were firmly resolved, whatever he might say, not to let themselves be taken in. He felt this especially when he talked to the cleverest of the peasants, Rezunov, and detected that gleam in Rezunov's eyes which showed so plainly both ironical amusement at Levin, and the firm conviction that, if anyone were to be taken in, it would not be he, Rezunov.

But in spite of all this Levin thought the system worked, and that by keeping accounts strictly, and insisting on his own way, he would prove to them in the future the advantages of the arrangement, and then the system would go of itself.

These matters, together with the management of the land still left on his hands, and the indoor work over his book, so engrossed Levin the whole summer that he scarcely ever went out shooting. At the end of August he heard that the Oblonskys had gone away to Moscow from their servant, who brought back the sidesaddle. He felt that in not answering Darya Alexandrovna's letter he had by his rudeness, of which he could not think without a flush of shame, burned his ships, and that he would never go to see them again. He had been just as rude with the Sviiashskys, leaving them without saying good-by. But he would never go to see them again either. He did not care about that now. The business of reorganizing the farming of his land absorbed him as completely as though there would never be anything else in his life. He read the books lent him by Sviiashsky, and ordering from Moscow what he had not had, he read both the economic and socialistic books on the subject, but, as he had anticipated, found nothing bearing on the scheme he had undertaken. In the books on political economy in Mill, for instance whom he studied first with great ardor, hoping every minute to find an answer to the questions that were engrossing him, he found laws deduced from the condition of land culture in Europe; but he did not see why these laws, which did not apply in Russia, must be general. He saw just the same thing in the socialistic books: either they were the beautiful but impracticable fantasies which had fascinated him when he was a student, or they were attempts at improving, at rectifying the economic position in which Europe was placed, with which the system of land tenure in Russia had nothing in common. Political economy told him that the laws by which the wealth of Europe had been developed, and was developing, were universal and unvarying. Socialism told him that development along these lines leads to ruin. And neither of them gave an answer, or even a hint, in reply to the question as to what he, Levin, and all the Russian peasants and landowners, were to do with their millions of hands and millions of dessiatinas, to make them as productive as possible for the common weal.

Having once taken the subject up, he read conscientiously everything bearing on it, and intended in the autumn to go abroad to study land systems on the spot, in order that he might not on this question be confronted with what so often met him on various subjects. Often, just as he was beginning to understand the idea in the mind of anyone he was talking to, and was beginning to explain his own, he would suddenly be told: "But Kauffmann, but Jones,



but Dubois, but Michelli? You haven't read them: do read, they've thrashed that question out thoroughly."

He saw now distinctly that Kauffmann and Michelli had nothing to tell him. He knew what he wanted. He saw that Russia had splendid land, splendid laborers, and that in certain cases, as at the peasant's on the way to Sviazhsky's, the produce raised by the laborers and the land is great in the majority of cases when capital is applied in the European way the produce is small, and that this simply arises from the fact that the laborers want to work and work well only in their own peculiar way, and that this antagonism is not incidental but invariable, and has its roots in the national spirit. He thought that the Russian people whose task it was to colonize and cultivate vast tracts of unoccupied land, consciously adhered, till all their land was occupied, to the methods suitable to their purpose, and that their methods were by no means so bad as was generally supposed. And he wanted to prove this theoretically in his book and practically on his land.

### XXX.

At the end of September the timber had been carted for building the cattle yard on the land that had been allotted to the association of peasants, and the butter from the cows was sold and the profits divided. In Practice the system worked capitally, or, at least, so it seemed to Levin. In order to work out the whole subject theoretically and to complete his book, which, in Levin's daydreams, was not merely to effect a revolution in political economy, but to annihilate that science entirely and to lay the foundation of a new science of the relation of the people to the soil, all that was left to do was to make a tour abroad, and to study on the spot all that had been done in the same direction, and to collect conclusive evidence that all that had been done there was not what was wanted. Levin was only waiting for the delivery of his wheat to receive the money for it and go abroad. But the rains began preventing the harvesting of the corn and potatoes left in the fields, and putting a stop to all work, even to the delivery of the wheat. The mud was impassable along the roads; two mills were carried away by the spate, and the weather got worse and worse.

On the 30th of September the sun came out in the morning, and, hoping for fine weather, Levin began making final preparations for his journey. He gave orders for the wheat to be delivered, sent the bailiff to the merchant to get the money owing him, and went out himself to give some final directions on the estate before setting off.

Having finished all his business, soaked through with the streams of water which kept running into his leather coat and down his neck and his boot tops, but in the keenest and most confident temper, Levin turned homeward in the evening. The weather had become worse than ever toward evening; the hail lashed the drenched mare so cruelly that she went along sideways, shaking her head and ears; but Levin was all right under his hood, and he looked cheerfully about him at the muddy streams running under the wheels, at the drops hanging on every bare twig, at the whiteness of the patch of unmelted hailstones on the planks of the bridge, at the thick layer of still succulent, fleshy leaves that lay heaped up about the stripped elm tree. In spite of the gloominess of nature around him, he felt peculiarly eager. The talks he had been having with the peasants in the farther village had shown that they were beginning to get used to their new position. The innkeeper, an old man, to whose inn he had gone to get dry evidently approved of Levin's plan, and of his own accord proposed to enter the partnership for purchasing of cattle.

"I have only to go on stubbornly toward my aim, and I shall attain my end," thought Levin; "and it's something to work and take trouble for. This is not a matter of myself individually, the question of the public welfare comes into it. The whole system of agriculture, the chief element in the condition of the people, must be completely transformed. Instead of poverty general prosperity and content; instead of hostility harmony and unity of interests. In short, a bloodless revolution, but a revolution of the greatest magnitude, beginning in the little circle of our district, then the province, then Russia, and the whole world. Because a just idea cannot but be fruitful. Yes, it's an aim worth working for. And the fact that it is I, Kostia Levin, who went to a ball in a black tie, and was refused by the Shcherbatsky girl, and who is intrinsically such a pitiful, worthless creature to himself that

proves nothing; I feel sure Franklin felt just as worthless, and he too had no faith in himself, thinking of himself as a whole. That means nothing. And he too, most likely, had an Agathya Mikhailovna to whom he confided his secrets."

Musing on such thoughts Levin reached home in the darkness.

The bailiff, who had been to the merchant, had come back and brought part of the money for the wheat. An agreement had been made with the old innkeeper, and on the road the bailiff had learned that everywhere the corn was still standing in the fields, so that his one hundred and sixty shocks that had not been carried were nothing in comparison with the losses of others.

After dinner Levin was sitting, as he usually did, in an easy chair with a book, and as he read he went on thinking of the journey before him in connection with his book. Today all the significance of his book rose before him with special distinctness, and whole periods ranged themselves in his mind in illustration of his theories. "I must write that down," he thought. "That ought to form a brief introduction, which I thought unnecessary before." He got up to go to his writing table, and Laska, lying at his feet, got up too, stretching and looking at him as though to inquire where to go. But he had not time to write it down, for the overseers had come for receiving orders, and Levin went out into the hall to meet them.

After giving orders, that is to say, directions about the labors of the next day, and seeing all the peasants who had business with him, Levin went back to his study and sat down to work. Laska lay under the table; Agathya Mikhailovna settled herself in her place with her stocking.

After writing for a little while, Levin suddenly thought with exceptional vividness of Kitty, her refusal, and their last meeting. He got up and began walking about the room.

"What's the use of being downhearted?" said Agathya Mikhailovna. "Come, why do you stay on at home? You ought to go to some warm springs, especially now that you're ready for the journey."

"Well, I am going away the day after tomorrow, Agathya Mikhailovna; I must finish my work."

"There, there, your work, you say! As if you hadn't done enough for the peasants! Why, as 'tis, they're saying, 'Your master will be getting some honor from the Czar for it.' Indeed, 'tis a strange thing: why need you worry about the peasants?"

"I'm not worrying about them; I'm doing it for my own good."

Agathya Mikhailovna knew every detail of Levin's plans for his land. Levin often put his views before her in all their complexity, and not uncommonly he argued with her and did not agree with her comments. But on this occasion she entirely misinterpreted what he had said.

"Of one's soul's salvation we all know and must think before all else," she said with a sigh. "Parfion Denissich now, for all he was no scholar, died a death whose like may God grant to every one of us," she said, referring to a servant who had died recently. "Took the sacrament and all."

"That's not what I mean," said he. "I mean that I'm acting for my own advantage. It's all the better for me if the peasants do their work better."

"Well, whatever you do, if he's a lazy good-for-naught, everything'll be at sixes and sevens. If he has a conscience, he'll work, and if not, there's no doing anything."

"Oh, come, you say yourself Ivan has begun looking after the cattle better."

"All I say is," answered Agathya Mikhailovna, evidently not speaking at random, but in strict sequence of ideas, "that you ought to get married that's what I say."

Agathya Mikhailovna's allusion to the very subject he had only just been thinking about hurt and stung him. Levin scowled, and without answering her, he sat down again to his work, repeating to himself all that he had been thinking of the real significance of that work. Only at intervals he listened in the stillness to the click of Agathya Mikhailovna's needles, and, recollecting what he did not want to remember, he would frown again.

At nine o'clock they heard the bell and the faint vibration of a carriage over the mud.

"Well, here's visitors come to us, and you won't be dull," said Agathya Mikhailovna, getting up and going to the door. But Levin overtook her. His work was not going well now, and he was glad of a visitor, whoever it might be.

### XXXI.

Running halfway down the staircase, Levin caught a sound he knew, a familiar cough in the hall. But he heard it indistinctly through the sound of his own footsteps, and hoped he was mistaken. Then he caught sight of a long, bony, familiar figure, and now it seemed there was no possibility of mistake; and yet he still went on hoping that this tall man taking off his fur cloak and coughing was not his brother Nikolai.

Levin loved his brother, but being with him was always a torture. Just now, when Levin, under the influence of the thoughts that had come to him, and Agathya Mikhailovna's hint, was in a troubled and uncertain humor, this meeting with his brother which he had to face seemed particularly difficult. Instead of a lively, healthy visitor, some outsider who would, he hoped, cheer him up in his uncertain humor, he had to see his brother, who knew him through and through, who would call forth all the thoughts nearest his heart, would force him to show himself fully. And that he was not disposed to do.

Angry with himself for so base a feeling, Levin ran into the hall; as soon as he had seen his brother close, this feeling of selfish disappointment vanished instantly and was replaced by pity. Terrible as his brother Nikolai had been before in his emaciation and sickliness, now he looked still more emaciated, still more wasted. He was a skeleton covered by skin.

He stood in the hall, jerking his long thin neck, and pulling the scarf off it, and smiled a strange and pitiful smile. When he saw that smile, submissive and humble, Levin felt something clutching at his throat.

"You see, I've come to you," said Nikolai in a thick voice, never for one second taking his eyes off his brother's face. "I've been meaning to a long while, but I've been constantly unwell. Now I'm ever so much better," he said, rubbing his beard with his big thin hands.

"Yes, yes!" answered Levin. And he felt still more frightened when, kissing him, he felt with his lips the dryness of his brother's skin and saw close to him his big eyes, full of a strange light.

A few weeks before, Konstantin Levin had written to his brother that through the sale of the small part of the property that had remained undivided, there was a sum of about two thousand roubles to come to him as his share.

Nikolai said that he had come now to take his money and, what was more important, to stay a while in the old nest, to get in touch with the earth, so as to renew his strength like the heroes of old for the work that lay before

him. In spite of his exaggerated stoop, and the emaciation that was so striking from his height, his movements were as rapid and abrupt as ever. Levin led him into his study.

His brother dressed with particular care a thing he never used to do combed his scanty, lank hair, and, smiling, went upstairs.

He was in the most affectionate and good-humored mood, just as Levin often remembered him in childhood. He even referred to Sergei Ivanovich without rancor. When he saw Agathya Mikhailovna, he joked with her and asked after the old servants. The news of the death of Parfion Denissich made a painful impression on him. A look of fear crossed his face, but he regained his serenity immediately.

"Of course he was quite old," he said, and changed the subject. "Well, I'll spend a month or two with you, and then I'm off to Moscow. Do you know, Miaghkov has promised me a place there, and I'm going into the service. Now I'm going to arrange my life quite differently," he went on. "You know I got rid of that woman."

"Marya Nikolaevna? Why, what for?"

"Oh, she was a horrid woman! She caused me all sorts of annoyances." But he did not say what the annoyances were. He could not say that he had driven off Marya Nikolaevna because the tea was weak, and, above all, because she would look after him as though he were an invalid. "Besides, I want to turn over a new leaf completely now. I've done silly things, of course, like everyone else, but money's the last consideration; I don't regret it. So long as there's health and my health, thank God, is quite restored."

Levin listened and racked his brains, but could think of nothing to say. Nikolai probably felt the same; he began questioning his brother about his affairs; and Levin was glad to talk about himself, because then he could speak without hypocrisy. He told his brother of his plans and his doings.

His brother listened, but evidently he was not interested.

These two men were so akin, so near each other, that the slightest gesture, the tone of voice, told both more than could be said in words.

Both of them now had only one thought the illness of Nikolai and the nearness of his death which stifled all else. But neither of them dared speak of it, and so, whatever they said without uttering the one thought that filled their minds was all falsehood. Never had Levin been so glad when the evening was over and it was time to go to bed. Never with any outside person, never on any official visit, had he been so unnatural and false as he was that evening. And the consciousness of this unnaturalness, and the remorse he felt at it, made him even more unnatural. He wanted to weep over his dying, dearly loved brother, and he had to listen and keep on talking of how he meant to live.

As the house was damp, and only the one bedroom had been kept heated, Levin put his brother to sleep in his own bedroom, behind a partition.

His brother got into bed, and whether he slept or did not sleep, tossed about like a sick man, coughed, and when he could not get his throat clear, mumbled something. Sometimes when his breathing was painful, he said, "Oh, my God!" Sometimes when he was choking he muttered angrily, "Ah, the devil!" Levin could not sleep for a long while, hearing him. His thoughts were of the most various kinds, but the end of all his thoughts was the same death.

Death, the inevitable end of all, for the first time presented itself to him with irresistible force. And death, which was here in this loved brother, groaning half-asleep and from habit calling without distinction on God and the

devil, was not so remote as it had hitherto seemed to him. It was in himself, too, that he felt this. If not today, tomorrow; if not tomorrow, in thirty years wasn't it all the same? And what was this inevitable death he did not know, had never thought about it, and, what was more, had not the power, had not the courage to think about it.

"I work, I want to do something, but I had forgotten it must all end; I had forgotten death."

He sat on his bed in the darkness, crouched up, hugging his knees, and, holding his breath from the strain of thought, he pondered. But the more intensely he thought, the clearer it became to him that it was indubitably so, that, in reality, looking upon life, he had forgotten one little fact that death will come, and all ends; that nothing was even worth beginning, and that there was no helping it anyway. Yes, it was awful, but it was so.

"But I am alive still. What's to be done now what's to be done?" he asked in despair. He lighted a candle, got up cautiously, went to the looking glass, and began looking at his face and hair. Yes, there were gray hairs about his temples. He opened his mouth. His back teeth were beginning to decay. He bared his muscular arms. Yes, there was strength in them. But Nikolenka, who lay there breathing with what was left of his lungs, had had a strong, healthy body too. And suddenly he recalled how they used to go to bed together as children, and how they only waited till Fiodor Bogdanich was out of the room to fling pillows at each other and laugh, laugh irrepressibly, so that even their awe of Fiodor Bogdanich could not check the effervescing, overbrimming sense of life and happiness. "And now that warped, hollow chest... And I, not knowing what will become of me, or wherefore...."

"K—ha! K—ha! Damnation! Why do you keep fidgeting why don't you go to sleep?" his brother's voice called to him.

"Oh, I don't know; I'm not sleepy."

"I have had a good sleep, I'm not in a sweat now. Just see, feel my shirt there's no sweat, is there?"

Levin felt it, withdrew behind the partition, and put out the candle, but for a long while he could not sleep. The question how to live had hardly begun to grow a little clearer to him, when a new, insolvable question presented itself death.

"Why, he's dying yes, he'll die in the spring; and how is one to help him? What can I say to him? What do I know about it? I'd even forgotten the very fact of it."

## XXXII.

Levin had long before made the observation that when one is uncomfortable with people from their being excessively amenable and meek, one is apt very soon after to find things intolerable from their pretensions and irritability. He felt that this was how it would be with his brother. And his brother Nikolai's gentleness did not, in fact, last out for long. The very next morning he began to be irritable, and seemed doing his best to find fault with his brother, attacking him on his tenderest points.

Levin felt himself to blame, and could not set things right. He felt that if they had both not kept up appearances, but had spoken, as it is called, from the heart that is to say, had said only just what they were thinking and feeling they would simply have looked into each other's faces, and Konstantin could only have said: "You're dying, you're dying," and Nikolai could only have answered: "I know I'm dying, but I'm afraid, I'm afraid, I'm afraid!" And they could have said nothing more, if they had said only what was in their hearts. But life like that was impossible, and so Konstantin tried to do what he had been trying to do all his life, and never could learn to do, though, as far as he could observe, many people knew so well how to do it, and without it there was no living

## Anna Karenina

at all. He tried to say what he was not thinking, but he felt continually that it had a ring of falsehood, that his brother detected him in it, and was exasperated at it.

The third day Nikolai induced his brother to explain his plan to him again, and began not merely attacking it, but intentionally confounding it with communism.

"You've simply borrowed an idea that's not your own, but you've distorted it, and are trying to apply it where it's not applicable."

"But I tell you there's nothing in common. They deny the justice of property, of capital, of inheritance, while I do not deny this chief stimulus." (Levin felt disgusted himself at using such expressions, but ever since he had been engrossed by his work, he had unconsciously come more and more frequently to use non-Russian words.) "All I want is to regulate labor."

"Which means, you've borrowed an idea, stripped it of all that gave it its force, and want to make believe that it's something new," said Nikolai, angrily tugging at his necktie.

"But my idea has nothing in common..."

"The other, at any rate," said Nikolai Levin, with an ironical smile, his eyes flashing malignantly, "has the charm of what's one to call it? geometrical symmetry, of clearness, of definiteness. It may be a Utopia. If one once allows the possibility of making all the past a tabula rasa no property, no family then labor would organize itself. But you have nothing..."

"Why do you mix things up? I've never been a communist."

"But I have, and I consider it's premature, but rational, and it has a future, just like Christianity in its first ages."

"All that I maintain is that the labor force ought to be investigated from the point of view of natural science; that is to say, it ought to be studied, its qualities ascertained..."

"But that's an utter waste of time. That force finds a certain form of activity of itself, according to the stage of its development. There have been slaves first, everywhere; then metayers; and we have the metayage system, rent, and day laborers. What are you trying to find?"

Levin suddenly lost his temper at these words, because at the bottom of his heart he was afraid that it was true true that he was trying to hold the balance even between communism and the familiar forms, and that this was hardly possible.

"I am trying to find means of working productively for myself and for the laborers. I want to organize..." he answered hotly.

"You don't want to organize anything; it's simply the same as you've been all your life you want to be original, to pose as not simply exploiting the peasants, but with some idea in view."

"Oh, all right, that's what you think and let me alone!" answered Levin, feeling the muscles of his left cheek twitching uncontrollably.

"You've never had, and never have, convictions; all you want is to please your vanity."

"Oh, very well; let me alone then!"

## Anna Karenina

"And I will let you alone! And it's high time I did, and go to the devil with you! And I'm very sorry I ever came!"

In spite of all Levin's efforts to soothe his brother afterward, Nikolai would listen to nothing he said, declaring that it was better to part, and Konstantin saw that it was simply a case of life being unbearable to him.

Nikolai was just getting ready to go, when Konstantin went in to him again and begged him, rather unnaturally, to forgive him if he had hurt his feelings in any way.

"Ah, generosity!" said Nikolai, and he smiled. "If you want to be right, I can give you that satisfaction. You're in the right; but I'm going all the same."

It was only just at parting that Nikolai kissed him, and said, looking with sudden strangeness and seriousness at his brother:

"Anyway, don't remember evil against me, Kostia!" and his voice quavered.

These were the only words that had been spoken sincerely between them. Levin knew that those words meant, "You see, and you know, that I'm in a bad way, and maybe we shall never see each other again." Levin knew this, and the tears gushed from his eyes. He kissed his brother once more, but he could not speak, and knew not what to say.

Two days after his brother's departure, Levin too set off for his foreign tour. Happening to meet Shcherbatsky, Kitty's cousin, in the railway train, Levin greatly astonished him by his depression.

"What's the matter with you?" Shcherbatsky asked him.

"Oh, nothing; there's not much happiness in life."

"Not much? You come with me to Paris instead of to Mulhouse. You shall see how to be happy."

"No, I've done with it all. It's time I was dead."

"Well, that's a good one!" said Shcherbatsky, laughing, "why, I'm only just getting ready to begin."

"Yes, I thought the same not long ago, but now I know I shall soon be dead."

Levin said what he had genuinely been thinking of late. He saw nothing but death, or an approach to death in everything. But his cherished scheme only engrossed him the more. Life had to be got through somehow, till death did come. Darkness had fallen upon everything for him; but just because of this darkness he felt that the one guiding clue in the darkness was his work, and he clutched it, and clung to it with all his strength.

## PART FOUR

### I.

The Karenins, husband and wife, continued living in the same house, met every day, but were complete strangers to one another. Alexei Alexandrovich made it a rule to see his wife every day, so that the servants might have no grounds for suppositions, but avoided dining at home. Vronsky was never at Alexei Alexandrovich's house, but Anna saw him away from home, and her husband was aware of it.

## Anna Karenina

The position was one of torture for all three; and not one of them would have been equal to enduring this position for a single day, had it not been for the expectation that it would change, that it was merely a temporary painful difficulty which would pass over. Alexei Alexandrovich hoped that this passion would pass, as everything does pass, that everyone would forget about it, and his name would remain unsullied. Anna, on whom the position depended, and for whom it was more poignant than for any other, endured it because she not merely hoped, but firmly believed, that it would all very soon be settled and come right. She had not the least idea what would settle the situation, but she firmly believed that something would now very soon turn up. Vronsky unaccountably followed her lead, hoping too that something, independent of him, would be sure to clear up all difficulties.

In the middle of the winter Vronsky spent a very tiresome week. A foreign Prince, who had come on a visit to Petersburg, was put under his charge, and he had to show him the sights worth seeing. Vronsky was of distinguished appearance; he possessed, moreover, the art of behaving with respectful dignity, and was used to having to do with such grand personages that was how he came to be put in charge of the Prince. But he felt his duties to be very irksome. The Prince was anxious to miss nothing about which he would be asked at home: Had he seen this and that in Russia? And on his own account he was anxious to enjoy to the utmost all Russian forms of amusement. Vronsky was obliged to be his guide in satisfying both these inclinations. The mornings they spent driving to look at places of interest: the evenings they passed enjoying the national amusements. The prince enjoyed a health exceptional even among Princes. By gymnastics and careful attention to his person he had brought himself to such a point that in spite of his excesses in pleasure he looked as fresh as a big, glossy, green Dutch cucumber. The Prince had traveled a great deal, and considered one of the chief advantages of modern facilities of communication the accessibility of the pleasures of all nations. He had been in Spain, and there had indulged in serenades, and had made friends with a Spanish girl who played the mandolin. In Switzerland he had killed chamois. In England he had galloped in a red coat over hedges and killed two hundred pheasants on a bet. In Turkey he had got into a harem; in India he had traveled on an elephant; and now, in Russia, he wished to taste all the peculiarly Russian forms of pleasure.

Vronsky, who was, as it were, chief master of the ceremonies to him, was at great pains to distribute all the Russian amusements suggested by various persons to the Prince. They had race horses, and Russian pancakes and bear hunts, and troikas, and gypsy choruses, and drinking orgies, with the Russian accompaniment of broken crockery. And the Prince, with surprising ease, fell in with the Russian spirit; he smashed trays full of crockery, sat with a gypsy girl on his knee, and seemed to be asking: What more? Or does the whole Russian spirit consist in just this?

In reality, of all the Russian entertainments the Prince liked best French actresses, a ballet dancer, and white-seal champagne. Vronsky was used to Princes, but, either because he had himself changed of late, or that he was in too close proximity to the Prince, that week seemed fearfully wearisome to him. The whole of that week he experienced unceasingly a sensation such as a man might have who has been put in charge of a dangerous madman, who is afraid of the madman, and, at the same time, from being with him, fears for his own reason. Vronsky was continually conscious of the necessity of never for a second relaxing the tone of stern official respectfulness, so that he might not himself be insulted. The Prince's manner of treating the very people who, to Vronsky's surprise, were ready to descend to any depths to provide him with Russian amusements, was contemptuous. His criticisms of Russian women, whom he wished to study, more than once made Vronsky crimson with indignation. The chief reason why the Prince was so particularly disagreeable to Vronsky was that he could not help seeing himself in him. And what he saw in this mirror did not gratify his self-esteem. He was a very stupid and a very self-satisfied and a very healthy and a very well-washed man, and nothing else. He was a gentleman, it was true, and Vronsky could not deny it. He was equable and not cringing with his superiors, was free and ingratiating in his behavior with his equals, and was contemptuously indulgent with his inferiors. Vronsky was himself the same, and regarded it as a great merit to be so. But to this Prince he was an inferior, and his contemptuous and indulgent attitude to him revolted him.

"Brainless beef! Can I be like that?" he reflected.



Be that as it might, when, on the seventh day, he parted from the Prince, who was starting for Moscow, and received his thanks, he was happy to be rid of his uncomfortable position and the unpleasant reflection of himself. He said good-by to him at the station, on their return from a bear hunt, at which they had had a display of Russian derring-do kept up all night.

## II.

When he got home, Vronsky found there a note from Anna. She wrote: "I am ill and unhappy. I cannot come out, yet cannot go on longer without seeing you. Come in this evening. Alexei Alexandrovich goes to the Council at seven and will be there till ten." After a minute's reflection on the strangeness of her bidding him come straight to her, in spite of her husband's insisting on her not receiving him, he decided to go.

Vronsky had that winter got his promotion, was now a colonel, had left the regiment, and was living alone. After having some lunch, he lay down on the sofa immediately, and in five minutes memories of the hideous scenes he had witnessed during the last few days were jumbled and joined to a mental image of Anna and of the peasant, one of the encompassing people, who had played an important part in the bear hunt, and Vronsky fell asleep. He waked up in the dark, trembling with horror, and made haste to light a candle. "What was it? What? What was the dreadful thing I dreamed? Yes, yes; the peasant bear hunter, I think; a little dirty man with a disheveled beard was stooping down doing something, and all of a sudden he began saying some strange words in French. Yes, there was nothing else in the dream," he said to himself. "But why was it so awful?" He vividly recalled the peasant again and those incomprehensible French words the peasant had uttered, and a chill of horror ran down his spine.

"What nonsense!" thought Vronsky, and glanced at his watch.

It was half-past eight already. He rang up his servant, dressed in haste, and went out on the steps, completely forgetting the dream and only worried at being late. As he drove up to the Karenins' entrance he looked at his watch and saw it was ten minutes to nine. A high, narrow carriage with a pair of grays was standing at the entrance. He recognized Anna's carriage. "She is coming to me," thought Vronsky, "and better she should. I don't like going into that house. But no matter; I can't hide myself," he thought, and with that manner peculiar to him from childhood, as of a man who has nothing to be ashamed of, Vronsky got out of his sleigh and went to the door. The door opened, and the hall porter with a rug on his arm called the carriage. Vronsky, though he did not usually notice details, noticed at this moment the amazed expression with which the porter glanced at him. In the very doorway Vronsky almost ran up against Alexei Alexandrovich. The gas jet threw its full light on the bloodless, sunken face under the black hat, and on the white cravat, brilliant against the beaver of the coat. Karenin's fixed, dull eyes were fastened upon Vronsky's face. Vronsky bowed, and Alexei Alexandrovich, chewing his lips, lifted his hand to his hat and went on. Vronsky saw him get into the carriage without looking back, receive the rug and the opera glasses through the window, and disappear. Vronsky went into the hall. His brows were scowling, and his eyes gleamed with a proud and angry light in them.

"What a situation!" he thought. "If he would fight, would stand up for his honor, I could act, could express my feelings; but this weakness or baseness... He puts me in the position of playing false, which I never meant and never mean to do."

Vronsky's ideas had changed since the day of his conversation with Anna in the Vrede garden. Unconsciously yielding to the weakness of Anna who had surrendered herself up to him utterly, and simply looked to him to decide her fate, ready to submit to anything he had long ceased to think that their liaison might end as he had thought then. His ambitious plans had retreated into the background again, and feeling that he had got out of that circle of activity in which everything was definite, he had given himself up entirely to his passion, and that passion was binding him more and more closely to her.

## Anna Karenina

He was still in the hall when he caught the sound of her retreating footsteps. He realized she had been expecting him, had listened for him, and was now going back to the drawing room.

"No," she cried, on seeing him, and at the first sound of her voice the tears came into her eyes. "No; if things are to go on like this, the end will come much, much too soon."

"What is it, dear one?"

"What? I've been waiting in agony for an hour, two hours... No, I won't... I can't quarrel with you. Of course you couldn't come. No, I won't."

She laid her two hands on his shoulders, and looked a long while at him with a profound, passionate, and, at the same time, searching look. She was studying his face to make up for the time she had not seen him. She was, every time she saw him, making the picture of him in her imagination (incomparably superior, impossible in reality) fit with him as he really was.

### III.

"You met him?" she asked, when they had sat down at the table in the lamplight. "You're punished, you see, for being late."

"Yes; but how was it? Wasn't he to be at the Council?"

"He had been and come back, and was going out somewhere again. But that doesn't matter. Don't talk about it. Where have you been? With the Prince still?"

She knew every detail of his existence. He was going to say that he had been up all night and had dropped asleep, but looking at her thrilled and rapturous face, he was ashamed. And he said he had had to report on the Prince's departure.

"But it's over now? He is gone?"

"Thank God it's over! You wouldn't believe how insufferable it's been for me."

"Why so? Isn't it the life all of you all young men always lead?" she said, knitting her brows; and, taking up the crochet work that was lying on the table, she began drawing the hook out of it, without looking at Vronsky.

"I gave that life up long ago," said he, wondering at the change in her face, and trying to divine its meaning. "And I confess," he said, with a smile, showing his thick, white teeth, "this week I've been, as it were, looking at myself in a glass, seeing that life, and I didn't like it."

She held the work in her hands, but did not crochet, and looked at him with strange, shining, and hostile eyes.

"This morning Liza came to see me they're not afraid to call on me, in spite of the Countess Lidia Ivanovna," she put in "and she told me about your Athenian evening. How loathsome!"

"I was just going to say..."

She interrupted him.

"It was that Therese you used to know?"

"I was just saying..."

"How disgusting you are, you men! How is it you can't understand that a woman can never forget that," she said, getting more and more angry, and so letting him see the cause of her irritation, "especially a woman who cannot know your life? What do I know? What have I ever known?" she said. "Only what you tell me. And how do I know whether you tell me the truth?..."

"Anna, you hurt me. Don't you trust me? Haven't I told you that I haven't a thought I wouldn't lay bare to you?"

"Yes, yes," she said, evidently trying to suppress her jealous thoughts. "But if only you knew how wretched I am! I believe you, I believe you.... What were you saying?"

But he could not at once recall what he had been going to say. These fits of jealousy, which of late had been more and more frequent with her, horrified him, and however much he tried to disguise the fact, made him feel cold to her, although he knew the cause of her jealousy was her love for him. How often he had told himself that her love was happiness; and now she loved him as a woman can love when love has outweighed for her all the good things of life and he was much further from happiness than when he had followed her from Moscow. Then he had thought himself unhappy, but happiness was before him; now he felt that the best happiness was already left behind. She was utterly unlike what she had been when he first saw her. Both morally and physically she had changed for the worse. She had broadened out all over, and in her face at the time when she was speaking of the actress there was an evil expression of hatred that distorted it. He looked at her as a man looks at a faded flower he has gathered, with difficulty recognizing in it the beauty for which he picked and ruined it. And in spite of this he felt that then, when his love was stronger, he could, if he had greatly wished it, have torn that love out of his heart; but now when, as at this moment it seemed to him he felt no love for her, he knew that his bond with her could not be broken.

"Well, well, what was it you were going to say about the Prince? I have driven away the fiend, I have," she added. The fiend was the name they had given her jealousy. "What did you begin to tell me about the Prince? Why did you find it so tiresome?"

"Oh, it was intolerable!" he said, trying to pick up the thread of his interrupted thought. "He does not improve on closer acquaintance. If you want him defined, here he is: a prime, well-fed animal, such as takes medals at the cattle shows, and nothing more," he said, with a tone of vexation that interested her.

"No; how so?" she replied. "He's seen a great deal, anyway; he's cultured?"

"It's an utterly different culture their culture. He's cultivated, one sees, simply to be able to despise culture, as they despise everything but animal pleasures."

"But don't you all care for these animal pleasures?" she said, and again he noticed a dark look in her eyes that avoided him.

"How is it you're defending him?" he said, smiling.

"I'm not defending him, it's nothing to me; but I imagine, if you had not cared for those pleasures yourself, you might have got out of them. But it affords you satisfaction to gaze at Therese in the attire of Eve..."

"Again again the devil," Vronsky said, taking the hand she had laid on the table and kissing it.

## Anna Karenina

"Yes; but I can't help it. You don't know what I have suffered waiting for you. I believe I'm not jealous. I'm not jealous: I believe you when you're here, near me; but when you're away somewhere leading your life alone, so incomprehensible to me..."

She turned away from him, pulled the hook at last out of the crochet work, and rapidly with the help of her forefinger, began working loop after loop of the wool that was dazzlingly white in the lamplight, while the slender wrist moved swiftly, nervously in its embroidered cuff.

"How was it, then? Where did you meet Alexei Alexandrovich?" Her voice sounded in an unnatural and jarring tone.

"We ran against each other in the doorway."

"And he bowed to you like this?"

She drew a long face, and half-closing her eyes, quickly transformed her expression, folded her hands, and Vronsky suddenly saw in her beautiful face the very expression with which Alexei Alexandrovich had bowed to him. He smiled, while she laughed gaily, with that sweet, deep laugh, which was one of her greatest charms.

"I don't understand him in the least," said Vronsky. "If after your avowal to him at your summer villa he had broken with you, if he had challenged me... But this I can't understand. How can he put up with such a position? He feels it, that's evident."

"He?" she said sneeringly. "He's perfectly satisfied."

"What are we all miserable for, when everything might be so well?"

"Except for him. Don't I know him the falsity in which he's utterly steeped?... Could one, with any feeling, live as he is living with me? He understands nothing, and feels nothing. Could a man of any feeling live in the same house with his unfaithful wife? Could he talk to her, call her 'my dear'?"

And again she could not help mimicking him: "Anna, ma chere; Anna, dear!"

"He's not a man, not a human being he's a mannikin! No one knows him; but I know him. Oh, if I'd been in his place, I'd long ago have killed, have torn to pieces a wife like me. I wouldn't have said, 'Anna, ma chere'! He's not a man, he's a ministerial machine. He doesn't understand that I'm your wife, that he's outside, that he's superfluous.... Don't let's talk of him!..."

"You're unfair, very unfair, dearest," said Vronsky, trying to soothe her. "But never mind, don't let's talk of him. Tell me what you've been doing. What is the matter? Why are you unwell, and what did the doctor say?"

She looked at him with mocking amusement. Evidently she had hit on other absurd and grotesque aspects in her husband and was awaiting the moment to give expression to them.

But he went on:

"I imagine that it's not illness, but your condition. When will it be?"

The ironical light died away in her eyes, but a different smile, a consciousness of something, he did not know what, and of quiet melancholy, came over her face.

## Anna Karenina

"Soon, soon. You say that our position is miserable, that we must put an end to it. If you knew how terrible it is to me what I would give to be able to love you freely and unafraid! I should not torture myself and torture you with my jealousy.... And it will come soon, but not as we expect."

And at the thought of how it would come, she seemed so pitiable to herself that tears came into her eyes, and she could not go on. She laid on his sleeve her hand, shining with its whiteness and its rings in the lamplight.

"It won't come as we suppose. I didn't mean to say this to you, but you've made me. Soon, soon, all will be over, and we shall all, all be at peace, and suffer no more."

"I don't understand," he said, understanding her.

"You asked when? Soon. And I shan't live through it. Don't interrupt me!" and she made haste to speak. "I know it; I know for certain. I shall die; and I'm very glad I shall die, and release myself and you."

Tears dropped from her eyes; he bent down over her hand and began kissing it, trying to hide his emotion, which, he knew, had no sort of grounds, though he could not control it.

"Yes, it's better so," she said, tightly gripping his hand. "That's the only way the only way left us."

He had recovered himself, and lifted his head.

"How absurd! What absurd nonsense you are talking!"

"No, it's the truth."

"What what's the truth?"

"That I shall die. I have had a dream."

"A dream?" repeated Vronsky, and instantly he recalled the peasant of his dream.

"Yes, a dream," she said. "It's a long while since I dreamed it. I dreamed that I ran into my bedroom, that I had to get something there, to find out something; you know how it is in dreams," she said, her eyes wide with horror; "and in the bedroom, in the corner, stood something."

"Oh, what nonsense! How can you believe..."

But she would not let him interrupt her. What she was saying was too important to her.

"And the something turned round, and I saw it was a peasant with a disheveled beard a little man, and dreadful. I wanted to run away, but he bent down over a sack, and was fumbling there with his hands..."

She showed how he had moved his hands. There was terror in her face. And Vronsky, remembering his dream, felt the same terror filling his soul.

"He was fumbling and kept talking quickly, quickly in French, and, you know, he burred: *Il faut le battre, le fer, le broyer, le pétrir....* And in my horror I tried to wake up, and woke up... but woke up in the dream. And I began asking myself what it meant. And Kornei said to me: 'In childbirth you'll die, ma'am, you'll die....' And I woke up."

"What nonsense, what nonsense!" said Vronsky; but he felt himself that there was no conviction in his voice.

"But don't let's talk of it. Ring the bell, I'll have tea. And stay a little, now; it's not long I shall..."

But all at once she stopped. The expression of her face instantaneously changed. Horror and excitement were suddenly replaced by a look of soft, solemn, blissful attention. He could not comprehend the meaning of the change. She was listening to the stirring of the new life within her.

#### IV.

Alexei Alexandrovich, after meeting Vronsky on his own steps, drove, as he had intended, to the Italian opera. He sat through two acts there, and saw everyone he wanted to see. On returning home, he carefully scrutinized the hatstand, and noticing that there was not a military overcoat there, he went, as usual, to his own room. But, contrary to his usual habit, he did not go to bed; he walked up and down his study till three o'clock in the morning. The feeling of furious anger with his wife, who would not observe the proprieties and keep to the one stipulation he had laid on her not to receive her lover in her own house gave him no peace. She had not complied with his request, and he was bound to punish her and carry out his threat obtain a divorce and take away his son. He knew all the difficulties connected with this course, but he had said he would do it, and now he must carry out his threat. Countess Lidia Ivanovna had hinted that this was the best way out of his position, and of late the obtaining of divorces had been brought to such a pitch of perfection that Alexei Alexandrovich saw a possibility of overcoming the formal difficulties. Misfortunes never come singly, and the affairs of the reorganization of the native tribes, and of the irrigation of the lands of the Zarsky province, had brought such official worries upon Alexei Alexandrovich that he had been of late in a continual state of extreme irritability.

He did not sleep the whole night, and his fury growing in a sort of vast, arithmetical progression, reached its highest limits in the morning. He dressed in haste, and, as though carrying his cup full of wrath, and fearing to spill any over, fearing to lose with his wrath the energy necessary for the interview with his wife, he went into her room directly he heard she was up.

Anna, who had thought she knew her husband so well, was amazed at his appearance when he went in to her. His brow was lowering and his eyes stared darkly before him, avoiding her eyes; his mouth was tightly and contemptuously shut. In his walk, in his gestures, in the sound of his voice there was a determination and firmness such as his wife had never seen in him. He went into her room, and, without greeting her, walked straight up to her writing table, and, taking her keys, opened a drawer.

"What do you want?" she cried.

"Your lover's letters," he said.

"They're not here," she said, shutting the drawer; but from that action he saw he had guessed right, and roughly pushing away her hand, he quickly snatched a portfolio in which he knew she used to put her most important papers. She tried to pull the portfolio away, but he pushed her back.

"Sit down! I have to speak to you," he said, putting the portfolio under his arm, and squeezing it so tightly with his elbow that his shoulder stood up.

Amazed and intimidated, she gazed at him in silence.

"I told you that I would not allow you to receive your lover in this house."

"I had to see him to..."

She stopped, not finding a reason.

"I do not enter into the details of why a woman wants to see her lover."

"I meant, I only..." she said, flushing hotly. This coarseness of his angered her, and gave her courage. "Surely you must feel how easy it is for you to insult me?" she said.

"An honest man and an honest woman may be insulted, but to tell a thief he's a thief is simply la constatation d'un fait."

"This cruelty is something new I did not know in you."

"You call it cruelty for a husband to give his wife liberty, giving her the honorable protection of his name, simply on the condition of observing the proprieties: is that cruelty?"

"It's worse than cruel it's base, if you want to know!" Anna cried, in a rush of hatred, and, getting up, she was about to leave the room.

"No!" he shrieked in his shrill voice, which pitched a note even higher than usual, and his big hands clutching her by the arm so violently that red marks were left from the bracelet he was squeezing, he forcibly made her sit down in her place. "Base! If you care to use that word, what is base is to forsake husband and child for a lover, while you eat your husband's bread!"

She bowed her head. She did not say what she had said the evening before to her lover, that he was her husband, and her husband was superfluous; she did not even think of that. She felt all the justice of his words, and only said softly:

"You cannot describe my position as worse than I feel it to be myself; but what are you saying all this for?"

"What am I saying it for? What for?" he went on, as angrily. "So that you may know that, since you have not carried out my wishes in regard to observing outward decorum, I will take measures to put an end to this state of things."

"Soon, very soon, it will end, anyway," she said; and again, at the thought of death near at hand and now desired, tears came into her eyes.

"It will end sooner than you and your lover have planned! If you must have the satisfaction of animal passion..."

"Alexei Alexandrovich! I won't say it's not generous, but it's not like a gentleman to strike anyone who's down."

"Yes, you only think of yourself! But the sufferings of a man who was your husband have no interest for you. You don't care that his whole life is ruined, that he is seff... seff..."

Alexei Alexandrovich was speaking so quickly that he began to stammer, and was utterly unable to articulate the word "suffering". In the end he pronounced it "saffering". She wanted to laugh, and was immediately ashamed that anything could amuse her at such a moment. And for the first time, for an instant, she felt for him, put herself in his place, and was sorry for him. But what could she say or do? Her head sank, and she sat silent. He too was silent for some time, and then began speaking in a frigid, less shrill voice, emphasizing random words that had no special significance.

I came to tell you..." he said.

She glanced at him. "No; it was my fancy," she thought, recalling the expression of his face when he stumbled over the word "suffering." "No; can a man with those dull eyes, with that self-satisfied complacency, feel anything?"

"I cannot change anything," she whispered.

"I have come to tell you that I am going tomorrow to Moscow, and shall not return again to this house, and you will receive notice of what I decide through the lawyer into whose hands I shall entrust the task of getting a divorce. My son is going to my sister's," said Alexei Alexandrovich, with an effort recalling what he had meant to say about his son.

"You take Seriozha to hurt me," she said, looking at him from under her brows. "You do not love him.... Leave me Seriozha!"

"Yes, I have lost even my affection for my son, because he is associated with the repulsion I feel for you. But still I shall take him. Good-by!"

And he was going away, but now she detained him.

"Alexei Alexandrovich, leave me Seriozha!" she whispered once more. "I have nothing else to say. Leave Seriozha till my... I shall soon be confined; leave him!"

Alexei Alexandrovich flared up, and, snatching his hand from her, he went out of the room without a word.

## V.

The waiting room of the celebrated Petersburg lawyer was full when Alexei Alexandrovich entered it. Three ladies—an old lady, a young lady, and a merchant's wife, and three gentlemen—one a German banker with a ring on his finger, the second a merchant with a beard, and the third a wrathful-looking government clerk in official uniform, with a cross on his neck—had obviously been waiting a long while already. Two clerks were writing at tables with scratching pens. The appurtenances of the writing tables, about which Alexei Alexandrovich was himself very fastidious, were exceptionally good. He could not help observing this. One of the clerks, without getting up, turned fretfully to Alexei Alexandrovich, half-closing his eyes.

"What is it you wish?"

"My business has to do with the lawyer."

"He is engaged," the clerk responded severely, and he pointed with his pen at the persons waiting, and went on writing.

"Can't he spare time to see me?" said Alexei Alexandrovich.

"He has no time free; he is always busy. Kindly wait your turn."

"Then I must trouble you to give him my card," Alexei Alexandrovich said with dignity, seeing the impossibility of preserving his incognito.



## Anna Karenina

The clerk took the card and, obviously not approving of what he read on it, went to the door.

Alexei Alexandrovich was in principle in favor of the publicity of legal proceedings, though for some higher official considerations he disliked the application of the principle in Russia, and disapproved of it, as far as he could disapprove of anything instituted by authority of the Emperor. His whole life had been spent in administrative work, and consequently, when he did not approve of anything, his disapproval was softened by the recognition of the inevitability of mistakes and the possibility of reform in every department. In the new public law courts he disliked the restrictions laid on the lawyers conducting cases. But till then he had had nothing to do with the law courts, and so had disapproved of their publicity simply in theory; now his disapprobation was strengthened by the unpleasant impression made on him in the lawyer's waiting room.

"He will be out right away," said the clerk; and two minutes later there did actually appear in the doorway the large figure of an old student of jurisprudence who had been consulting with the lawyer, and the lawyer himself.

The lawyer was a little, squat, bald man, with a dark, reddish beard, light-colored long eyebrows, and beetling brow. He was attired as though for a wedding, from his cravat to his double watch chain and patent-leather shoes. His face was clever and rustic, but his dress was dandified and in bad taste.

"Pray walk in," said the lawyer, addressing Alexei Alexandrovich; and, gloomily ushering Karenin in before him, he closed the door. "Won't you sit down?" He indicated an armchair at a writing table covered with papers. He sat down himself, and, rubbing his little hands with short fingers covered with white hairs, he bent his head on one side. But as soon as he was settled in this position a moth flew over the table. The lawyer, with a swiftness that could never have been expected of him, opened his hands, caught the moth, and resumed his former attitude.

"Before beginning to speak of my business," said Alexei Alexandrovich, following the lawyer's movements with wondering eyes, "I ought to observe that the matter about which I have to speak to you is to be a secret."

The lawyer's drooping reddish mustaches were stirred by a scarcely perceptible smile.

"I should not be a lawyer if I could not keep the secrets confided to me. But if you would like proof..."

Alexei Alexandrovich glanced at his face, and saw that the shrewd, gray eyes were laughing, and seemed to know all about it already.

"You know my name?" Alexei Alexandrovich resumed.

"I know you and the good" again he caught a moth "work you are doing, like every Russian," said the lawyer, bowing.

Alexei Alexandrovich sighed, plucking up his courage. But, having once made up his mind, he went on in his shrill voice, without timidity or hesitation, accentuating a word here and there.

"I have the misfortune," Alexei Alexandrovich began, "to be a deceived husband, and I desire to break off all relations with my wife by legal means that is, to be divorced; but do this so that my son may not remain with his mother."

The lawyer's gray eyes tried not to laugh, but they were dancing with irrepressible glee, and Alexei Alexandrovich saw that it was not simply the delight of a man who has just got a profitable job: there was triumph and joy, there was a gleam like the malignant gleam he had seen in his wife's eyes.

"You desire my assistance in securing a divorce?"

## Anna Karenina

"Yes, precisely; but I ought to warn you that I may be wasting your time and attention. I have come simply to consult you as a preliminary step. I want a divorce, but the form which it may take is of great consequence to me. It is very possible that if that form does not correspond with my requirements I may give up a legal action."

"Oh, that's always the case," said the lawyer, "and that's always for you to decide."

He let his eyes rest on Alexei Alexandrovich's feet, feeling that he might offend his client by the sight of his irrepressible amusement. He looked at a moth that flew before his nose, and moved his hand, but did not catch it from regard for Alexei Alexandrovich's situation.

"Though in their general features our laws on this subject are known to me," pursued Alexei Alexandrovich, "I should be glad to have an idea of the forms in which such things are done, in practice."

"You would be glad," the lawyer, without lifting his eyes, responded, adopting, with a certain satisfaction, the tone of his client's remarks, "for me to lay before you all the methods by which you could secure what you desire?"

And on receiving an assenting nod from Alexei Alexandrovich, he went on, stealing a glance now and then at Alexei Alexandrovich's face, which was growing red in patches.

"Divorce by our laws," he said, with a slight shade of disapprobation of our laws, "is possible, as you are aware, in the following cases... To wait!" he called to a clerk who put his head in at the door, but he got up all the same, said a few words to him, and sat down again. "In the following cases: physical defect in the married parties, desertion without communication for five years," he said, crooking a short finger covered with hair, "adultery" (this word he pronounced with obvious satisfaction), "subdivided as follows" (he continued to crook his fat fingers, though the cases and their subdivisions could obviously not be classified together): "physical defect of the husband or of the wife, adultery of the husband or of the wife." As by now all his fingers were used up, he straightened them and went on: "This is the theoretical view; but I imagine you have done me the honor to apply to me in order to learn its application in practice. And therefore, guided by precedents, I must inform you that in practice cases of divorce may all be reduced to the following there's no physical defect, I may assume, nor desertion?..."

Alexei Alexandrovich bowed his head in assent.

"They may be reduced to the following: adultery of one of the married parties, and the detection in the fact of the guilty party by mutual agreement, and, failing such agreement, accidental detection. It must be admitted that the latter case is rarely met with in practice," said the lawyer, and stealing a glance at Alexei Alexandrovich he paused, as a man selling pistols, after enlarging on the advantages of each weapon, might await his customer's choice. But Alexei Alexandrovich said nothing, and therefore the lawyer went on: "The most usual and simple, the sensible course, I consider, is adultery by mutual consent. I should not permit myself to express it so, speaking with a man of no education," he said, "but I imagine that to you this is comprehensible."

Alexei Alexandrovich was, however, so perturbed that he did not immediately comprehend all the reasonableness of adultery by mutual consent, and his eyes expressed this uncertainty; but the lawyer promptly came to his assistance.

"People cannot go on living together here you have a fact. And if both are agreed about it, the details and formalities become a matter of no importance. And at the same time this is the simplest and most certain method."

Alexei Alexandrovich understood fully now. But he had religious scruples, which hindered the execution of such a plan.

"That is out of the question in the present case," he said. "Only one alternative is possible: involuntary detection, supported by letters which I have."

At the mention of letters the lawyer pursed up his lips, and gave utterance to a thin little compassionate and contemptuous sound.

"Kindly consider," he began, "cases of that kind are, as you are aware, under ecclesiastical jurisdiction; the reverend fathers are fond of going into the minutest details in cases of that kind," he said, with a smile which betrayed his sympathy with the taste of the reverend fathers. "Letters may, of course, be a partial confirmation; but detection in the act there must be of the most direct kind that is, by eyewitnesses. In fact, if you do me the honor to trust me with your confidence, you will do well to leave me the choice of the measures to be employed. If one wants the result, one must allow the means."

"If it is so..." Alexei Alexandrovich began, suddenly turning white; but at that moment the lawyer rose and again went to the door to speak to the intruding clerk.

"Tell her we don't haggle over fees!" he said, and returned to Alexei Alexandrovich.

On his way back he caught, unobserved, another moth. "Nice state my rep curtains will be in by the summer!" he thought, frowning.

"And so you were saying?..." he said.

"I will communicate my decision to you by letter," said Alexei Alexandrovich, getting up, and he clutched at the table. After standing a moment in silence, he said: "From your words I may consequently conclude that a divorce may be obtained? I would ask you to let me know what your terms are."

"It may be obtained if you give me complete liberty of action," said the lawyer, without answering his question. "When can I count on receiving word from you?" he asked moving toward the door, his eyes and his patent-leather shoes shining.

"In a week's time. You will be kind enough to communicate to me your answer as to whether you will undertake to conduct the case, and on what terms."

"Very good, sir."

The lawyer bowed respectfully, let his client out of the door, and, left alone, gave himself up to his sense of amusement. He felt so mirthful that, contrary to his rule, he made a reduction in his terms to the haggling lady, and gave up catching moths, finally deciding that next winter he must have the furniture covered with velvet, like Sigonin's.

## VI.

Alexei Alexandrovich had gained a brilliant victory at the sitting of the Commission of the 17th of August, but in the sequel this victory cut the ground from under his feet. The new commission for the inquiry into the condition of the native tribes on every aspect had been formed and despatched to its destination with an unusual speed and energy, inspired by Alexei Alexandrovich. Within three months a report was presented. The condition of the native tribes was investigated in its political, administrative, economic, ethnographic, material, and religious aspects. To all these questions there were answers admirably stated, and answers admitting no shade of doubt, since they were not a product of human thought, always liable to error, but were all the product of official activity.

The answers were all based on official data furnished by governors and bishops, and founded on the reports of district magistrates and ecclesiastical superintendents, founded in their turn on the reports of local authorities and parish priests; and so all of these answers were unhesitating and certain. All such questions as, for instance, the cause of crop failures, why certain tribes adhered to their ancient beliefs, and so on questions which, but for the convenient intervention of the official machine, are not, and cannot be solved for ages received full, unhesitating solution. And this solution was in favor of Alexei Alexandrovich's contention. But Stremov, who had felt stung to the quick at the last sitting, had, on the reception of the commission's report, resorted to tactics which Alexei Alexandrovich had not anticipated. Stremov, carrying with him several other members, went over to Alexei Alexandrovich's side, and, not contenting himself with warmly defending the measure proposed by Karenin, proposed other measures, still more extreme, in the same direction. These measures, still stronger than Alexei Alexandrovich's fundamental idea, were passed by the commission, and then the aim of Stremov's tactics became apparent. Carried to an extreme, the measures seemed at once to be so absurd that the highest authorities, and public opinion, and intellectual ladies, and the newspapers, all at the same time fell foul of them, expressing their indignation both with the measures and their nominal father, Alexei Alexandrovich. Stremov drew back, affecting to have blindly followed Karenin, and to be astounded and distressed at what had been done. This meant the defeat of Alexei Alexandrovich. But in spite of failing health, in spite of his domestic griefs, he did not give in. There was a split in the Commission. Some members, with Stremov at their head, justified their mistake on the ground that they had put faith in the commission of revision, instituted by Alexei Alexandrovich, and maintained that the report of the commission was rubbish, and simply so much wastepaper. Alexei Alexandrovich, with a following of those who saw the danger of so revolutionary an attitude to official documents, persisted in upholding the statements obtained by the revising commission. In consequence of this, in the higher spheres, and even in society, all was chaos, and although everyone was interested, no one could tell whether the native tribes really were becoming impoverished and ruined, or whether they were in a flourishing condition. The position of Alexei Alexandrovich, owing to this, and partly owing to the contempt lavished on him for his wife's infidelity, became very precarious. And in this position he took an important resolution. To the astonishment of the Commission, he announced that he should ask permission to go himself to investigate the question on the spot. And having obtained permission, Alexei Alexandrovich prepared to set off to these remote provinces.

Alexei Alexandrovich's departure created a great stir, the more so as just before he started he officially returned the posting fares allowed him for twelve horses to drive to his destination.

"I think it very noble," Betsy said about this to the Princess Miaghkaia. "Why take money for posting horses when everyone knows that there are railways everywhere now?"

But Princess Miaghkaia did not agree, and the Princess Tverskaia's opinion annoyed her indeed.

"It's all very well for you to talk," said she, "when you have I don't know how many millions; but I am very glad when my husband goes on a revising tour in the summer. It's very good for him and pleasant traveling about, and it's a settled arrangement for me to keep a carriage and hired coach on the money."

On his way to the remote provinces Alexei Alexandrovich stopped for three days at Moscow.

The day after his arrival he went to call on the governor general. At the crossroads by Gazetny Lane, where there are always crowds of carriages and hired sleighs, Alexei Alexandrovich suddenly heard his name called out in such a loud and cheerful voice that he could not help looking round. At the corner of the pavement, in a short, stylish overcoat and a low-crowned fashionable hat, jauntily askew, with a smile that showed a gleam of white teeth and red lips, stood Stepan Arkadyevich, radiant, young, and beaming. He called him vigorously and urgently, and insisted on his stopping. He had one arm on the window of a carriage that was stopping at the corner, and out of the window were thrust the heads of a lady in a velvet hat, and two children. Stepan Arkadyevich was smiling and beckoning to his brother-in-law. The lady smiled a kindly smile too, and she too waved her hand to Alexei Alexandrovich. It was Dolly with her children.

## Anna Karenina

Alexei Alexandrovich did not want to see anyone in Moscow, and least of all his wife's brother. He raised his hat and would have driven on, but Stepan Arkadyevich told his coachman to stop, and ran across the snow to him.

"Well, what a shame not to have let us know! Been here long? I was at Dussot's yesterday and saw 'Karenin' on the visitors' list, but it never entered my head that it was you," said Stepan Arkadyevich, sticking his head in at the window of the carriage, "or I should have looked you up. I am glad to see you!" he said, knocking one foot against the other to shake the snow off. "What a shame you did not let us know!" he repeated.

"I had no time; I am very busy," Alexei Alexandrovich responded dryly.

"Come to my wife she does so want to see you."

Alexei Alexandrovich unfolded the rug in which his frozen feet were wrapped, and getting out of his carriage made his way over the snow to Darya Alexandrovna.

"Why, Alexei Alexandrovich, what are you cutting us like this for?" said Dolly smiling.

"I was very busy. Delighted to see you!" he said in a tone clearly indicating that he was annoyed by it. "How are you?"

"Tell me, how is my darling Anna?"

Alexei Alexandrovich mumbled something and would have gone on. But Stepan Arkadyevich stopped him.

"I tell you what we'll do tomorrow. Dolly, ask him to dinner. We'll ask Koznishev and Pestsov, so as to entertain him with our Moscow intellectuals."

"Yes, please, do come," said Dolly; "we will expect you at five or six o'clock, if you like. How is my darling Anna? How long..."

"She is quite well," Alexei Alexandrovich mumbled, frowning. "Delighted!" and he moved away toward his carriage.

"You will come?" Dolly called after him.

Alexei Alexandrovich said something which Dolly could not catch in the noise of the moving carriages.

"I shall come round tomorrow!" Stepan Arkadyevich shouted to him.

Alexei Alexandrovich got into his carriage, and buried himself in it so as neither to see nor to be seen.

"Queer fish!" said Stepan Arkadyevich to his wife, and, glancing at his watch, he made a motion of his hand before his face, indicating a caress to his wife and children, and walked jauntily along the pavement.

"Stiva! Stiva!" Dolly called, reddening.

He turned round.

"I must get coats, you know, for Grisha and Tania. Give me the money."

"Never mind; you tell them I'll pay the bill!" and he vanished, nodding genially to an acquaintance who drove by.

## VII.

The next day was Sunday. Stepan Arkadyevich went to the Grand Theater to a rehearsal of the ballet, and gave Masha Chibisova, a pretty dancing girl who had been engaged through his protection, the coral necklace he had promised her the evening before, and, behind the scenes, in the dim daylight of the theater, managed to kiss her pretty little face, radiant over the present. Besides the gift of the necklace he wanted to arrange a meeting with her after the ballet. After explaining that he could not come at the beginning of the ballet, he promised he would come for the last act and take her to supper. From the theater Stepan Arkadyevich drove to Okhotny Riad, selected himself the fish and asparagus for dinner, and by twelve o'clock was at Dussot's, where he had to see three people, luckily all staying at the same hotel: Levin, who had recently come back from abroad and was staying there; the new head of his board who had just been promoted to that position, and had come on a tour of revision to Moscow; and his brother-in-law, Karenin, whom he must see, so as to be sure of bringing him to dinner.

Stepan Arkadyevich liked dining, but still better he liked to give a dinner, small, but very choice, both as regards the food and drink and as regards the selection of guests. He particularly liked the program of that day's dinner. There would be fresh perch, asparagus, and *la piece de resistance* first-rate, but quite plain, roast beef, and wines to suit: so much for the eating and drinking. Kitty and Levin would be of the party, and, so that this might not be obtrusively evident, there would be a girl cousin too, and young Shcherbatsky, and *la piece de resistance* among the guests Sergei Koznishev and Alexei Alexandrovich. Sergei Ivanovich was a Moscow man, and a philosopher; Alexei Alexandrovich a Peterburg man, and a practical politician. He was asking, too, the well-known eccentric enthusiast, Pestsov, a liberal, a great talker, a musician, a historian, and the most delightfully youthful person of fifty, who would be a sauce or garnish for Koznishev and Karenin. He would provoke them and set them off against one another.

The second installment for the forest had been received from the merchant and was not yet exhausted; Dolly had been very amiable and good-humored of late, and the idea of the dinner pleased Stepan Arkadyevich from every point of view. He was in the most lighthearted mood. There were two circumstances a little unpleasant, but these two circumstances were drowned in the sea of good-humored gaiety which flooded the soul of Stepan Arkadyevich. These two circumstances were: first, that on meeting Alexei Alexandrovich the day before in the street Stiva had noticed that the latter was cold and reserved with him, and putting together the expression of Alexei Alexandrovich's face, and the fact that he had not come to see them, or let them know of his arrival, with the rumors he had heard about Anna and Vronsky, Stepan Arkadyevich guessed that something was wrong between the husband and wife.

That was one disagreeable thing. The other slightly disagreeable fact was that the new head of his board, like all new heads, already had the reputation of a terrible person, who got up at six o'clock in the morning, worked like a horse, and insisted on his subordinates working in the same way. Moreover, this new head had the further reputation of being a bear in his manners, and was, according to all reports, a man of a class in all respects the opposite of that to which his predecessor had belonged, and to which Stepan Arkadyevich had hitherto belonged himself. On the previous day Stepan Arkadyevich had appeared at the office in a uniform, and the new chief had been very affable and had talked to him as to an acquaintance. Consequently Stepan Arkadyevich deemed it his duty to call upon him in his nonofficial dress. The thought that the new chief might not give him a warm reception was the other unpleasant thing. But Stepan Arkadyevich instinctively felt that everything would come round all right. "They're all human, all men, like us poor sinners; why be nasty and quarrelsome?" he thought as he went into the hotel.

"Good day, Vassilii," he said, walking into the corridor with his hat cocked on one side, and addressing a footman he knew; "why, you've let your whiskers grow! Levin number seven, eh? Take me up, please. And find out whether Count Anyhkin" (this was the new head) "is receiving."

## Anna Karenina

"Yes, sir," Vassilii responded, smiling. "You've not been to see us for a long while."

"I was here yesterday, but at the other entrance. Is this number seven?"

Levin was standing with a peasant from Tver in the middle of the room, measuring a fresh bearskin, when Stepan Arkadyevich came in.

"What! You killed him?" cried Stepan Arkadyevich. "Well done! A she-bear? How are you, Arkhip!"

He shook hands with the peasant and sat down on a chair, without taking off his coat and hat.

"Come, take off your coat and stay a little," said Levin, taking his hat.

"No, I haven't time; I've only looked in for just a second," answered Stepan Arkadyevich. He threw open his fur coat, but afterward did take it off, and sat on for a whole hour, talking to Levin about hunting and the most intimate subjects. "Come, tell me, please, what you did abroad. Where have you been?" said Stepan Arkadyevich, when the peasant had gone.

"Oh, I stayed in Germany, in Prussia, in France, and in England not in the capitals, but in the manufacturing towns and saw a great deal that was new to me. And I'm glad I went."

"Yes, I knew your idea of the solution of the labor question."

"Not a bit: in Russia there can be no labor question. In Russia the question is that of the relation of the working people to the land; though the question exists there too but there it's a matter of repairing what's been ruined, while with us..."

Stepan Arkadyevich listened attentively to Levin.

"Yes, yes!" he said. "It's very possible you're right. But I'm glad you're in good spirits, and are hunting bears, and working, and interested. Shcherbatsky told me another story he met you: that you were in such a depressed state, talking of nothing but death..."

"Well, what of it? I've not given up thinking of death," said Levin. "It's true that it's high time I was dead; and that all this is nonsense. It's the truth I'm telling you. I do value my idea and my work awfully; but really, do consider this: all this world of ours is nothing but a speck of mildew, which has grown up on a tiny planet. And yet we think that something great is possible to us ideas, work! Grains of sand that's all they are."

"But all that's as old as the hills, my boy!"

"It is old; but, do you know, when you grasp this fully, then somehow everything becomes of no consequence. When you understand that you will die tomorrow, if not today, and nothing will be left, then everything is so unimportant! And I consider my idea very important, but it turns out really to be just as unimportant, even if it were carried out, as outwitting that she-bear. So one goes on living, amusing oneself with hunting, with work anything, so as not to think of death!"

Stepan Arkadyevich smiled a subtle and affectionate smile as he listened to Levin.

"Well, of course! Here you've come round to my point. Do you remember you attacked me for seeking enjoyment in life?"

## Anna Karenina

'Don't be, O moralist, severe...'

"No; all the same, what's fine in life is..." Levin hesitated. "Oh! I don't know. All I know is that we shall soon be dead."

"Why so soon?"

"And I know there's less charm in life, when one thinks of death but there's more peace."

"On the contrary, the finish is always the best. But I must be going," said Stepan Arkadyevich, getting up for the tenth time.

"Oh, no, stay a bit!" said Levin, detaining him. "Now, when shall we see each other again? I'm going tomorrow."

"I'm a fine fellow! Why, that's just what I came for! You simply must come to dinner with us today. Your brother's coming, and Karenin, my brother-in-law."

"You don't mean to say he's here?" said Levin, and he wanted to inquire about Kitty. He had heard at the beginning of the winter that she was at Peterburg with her sister, the wife of the diplomat, and he did not know whether she had come back or not; but he changed his mind and did not ask. "Whether she's coming or not, I don't care," he said to himself.

"So you'll come?"

"Of course."

"At five o'clock, then, and wear a frock coat."

And Stepan Arkadyevich got up and went down below to the new head of his department. Instinct had not misled Stepan Arkadyevich. The terrible new head turned out to be an extremely amenable person, and Stepan Arkadyevich lunched with him and stayed on, so that it was past three o'clock before he got to Alexei Alexandrovich.

## VIII.

Alexei Alexandrovich, on coming back from church service, had spent the whole morning indoors. He had two pieces of business before him that morning; first, to receive and send on a deputation from the native tribes which was on its way to Peterburg, and which was now at Moscow; secondly, to write the promised letter to the lawyer. The deputation, though it had been summoned at Alexei Alexandrovich's instigation, was not without its discomfiting and even dangerous aspect, and he was glad he had found it in Moscow. The members of this deputation had not the slightest conception of their duty and the part they were to play. They naively believed that it was their business to lay before the Commission their needs and the actual condition of things, and to ask assistance of the government, and utterly failed to grasp that some of their statements and requests supported the contention of the enemy's side, and so spoiled the whole business. Alexei Alexandrovich was busily engaged with them for a long while, drew up a program for them from which they were not to depart, and on dismissing them wrote a letter to Peterburg for the guidance of the deputation. He had his chief support in this affair in the Countess Lidia Ivanovna. She was a specialist in the matter of deputations, and no one knew better than she how to puff, and put them in the way they should go. Having completed this task, Alexei Alexandrovich wrote the letter to the lawyer. Without the slightest hesitation he gave him permission to act as he might judge best. In the letter he enclosed three of Vronsky's notes to Anna, which were in the portfolio he had taken away.



## Anna Karenina

Since Alexei Alexandrovich had left home with the intention of not returning to his family again, and since he had been at the lawyer's and had spoken, though only to one man, of his intention, since, moreover, he had translated the matter from the world of real life to the world of ink and paper, he had grown more and more used to his own intention, and by now distinctly perceived the feasibility of its execution.

He was sealing the envelope to the lawyer, when he heard the loud tones of Stepan Arkadyevich's voice. Stepan Arkadyevich was disputing with Alexei Alexandrovich's servant, and insisting on being announced.

"No matter," thought Alexei Alexandrovich, "so much the better. I will inform him at once of my position in regard to his sister, and explain why it is I can't dine with him."

"Come in!" he said aloud, collecting his papers, and putting them under the blotting pad.

"There, you see, you're talking nonsense, and he is at home!" responded Stepan Arkadyevich's voice, addressing the servant, who had refused to let him in, and, taking off his coat as he went, Oblonsky walked into the room. "Well, I'm awfully glad I've found you! So I hope..." Stepan Arkadyevich began cheerfully.

"I cannot come," Alexei Alexandrovich said coldly, standing and not asking his visitor to sit down.

Alexei Alexandrovich had thought to pass at once into those frigid relations in which he ought to stand with the brother of a wife against whom he was beginning a suit for divorce. But he had not taken into account the ocean of kindness brimming over in the heart of Stepan Arkadyevich.

Stepan Arkadyevich opened wide his clear, shining eyes.

"Why can't you? What do you mean?" he asked in perplexity, speaking in French. "Oh, but it's a promise. And we're all counting on you."

"I want to tell you that I can't dine at your house, because the terms of relationship which have existed between us must cease."

"How? How do you mean? For what reason?" said Stepan Arkadyevich with a smile.

"Because I am beginning an action for divorce against your sister, my wife. I ought to have..."

But, before Alexei Alexandrovich had time to finish his sentence, Stepan Arkadyevich was behaving not at all as he had expected. Stepan Arkadyevich groaned and sank into an armchair.

"No, Alexei Alexandrovich! What are you saying?" cried Oblonsky, and his suffering was apparent in his face.

"It is so."

"Excuse me, I can't, I can't believe it!"

Alexei Alexandrovich sat down, feeling that his words had not had the effect he anticipated, and that it would be unavoidable for him to explain his position, and that, whatever explanations he might make, his relations with his brother-in-law would remain unchanged.

"Yes, I am brought to the painful necessity of seeking a divorce," he said.

## Anna Karenina

"I will say one thing, Alexei Alexandrovich. I know you for an excellent, upright man; I know Anna excuse me, I can't change my opinion of her for a good, an excellent woman; and so you must excuse me if I cannot believe it. There is some misunderstanding," said he.

"Oh, if it were merely a misunderstanding!..."

"Pardon, I understand," interposed Stepan Arkadyevich. "But of course... One thing: you must not act in haste. You must not, you must not act in haste!"

"I am not acting in haste," Alexei Alexandrovich said coldly, "but one cannot ask advice of anyone in such a matter. I have quite made up my mind."

"This is awful!" said Stepan Arkadyevich. "I would do one thing, Alexei Alexandrovich. I beseech you do it!" he said. "No action has yet been taken, if I understand rightly. Before you take advice, see my wife, talk to her. She loves Anna like a sister, she loves you, and she's a wonderful woman. For God's sake, talk to her! Do me that favor, I beseech you!"

Alexei Alexandrovich pondered, and Stepan Arkadyevich looked at him sympathetically, without interrupting his silence.

"You will go to see her?"

"I don't know. That was just why I have not been to see you. I imagine our relations must change."

"Why so? I don't see that. Allow me to believe that, apart from our connection, you have for me, at least in part, the same friendly feeling I have always had for you... and sincere esteem," said Stepan Arkadyevich, pressing his hand. "Even if your worst suppositions were correct, I don't and never would take on myself to judge either side, and I see no reason why our relations should be affected. But now, do this, come and see my wife."

"Well, we look at the matter differently," said Alexei Alexandrovich coldly. "However, we won't discuss it."

"No; why shouldn't you come today to dine, anyway? My wife's expecting you. Please, do come. And, above all, talk it over with her. She's a wonderful woman. For God's sake, on my knees, I implore you!"

"If you so much wish it, I will come," said Alexei Alexandrovich, sighing.

And, anxious to change the conversation, he inquired about what interested them both the new head of Stepan Arkadyevich's board, a man not yet old, who had suddenly been promoted to so high a position.

Alexei Alexandrovich had previously felt no liking for Count Anyhkin, and had always differed from him in his opinions. But now, from a feeling readily comprehensible to officials that hatred felt by one who has suffered a defeat in the service for one who has received a promotion he could not endure him.

"Well, have you seen him?" said Alexei Alexandrovich with a malignant smile.

"Of course; he was at our sitting yesterday. He seems to know his work capitally, and to be very energetic."

"Yes, but what is his energy directed to?" said Alexei Alexandrovich. "Is he aiming at doing anything, or simply doing again what's been done? It's the great misfortune of our government this paper administration, of which he's a worthy representative."

"Really, I don't know what fault one could find with him. His policy I don't know, but one thing is certain he's a very fine fellow," answered Stepan Arkadyevich. "I've just been seeing him, and he's really a fine fellow. We lunched together, and I taught him how to make you know that drink wine and oranges. It's so cooling. And it's a wonder he didn't know it. He liked it awfully. No, really, he's a fine fellow."

Stepan Arkadyevich glanced at his watch.

"Why, good heavens, it's four already, and I've still to go to Dolgovushin's! So please come round to dinner. You can't imagine how you will grieve my wife and me if you don't."

The way in which Alexei Alexandrovich saw his brother-in-law out was very different from the manner in which he had met him.

"I've promised, and I'll come," he answered wearily.

"Believe me, I appreciate it, and I hope you won't regret it," answered Stepan Arkadyevich, smiling.

And, putting on his coat as he went, he patted the footman on the head with his coat sleeve, chuckled, and went out.

"At five o'clock, and wear your frock coat, please," he shouted once more, returning at the door.

## IX.

It was past five, and several guests had already arrived, before the host himself got home. He went in together with Sergei Ivanovich Koznishev and with Pestsov, both of whom had reached the street door at the same moment. These were the two leading representatives of the Moscow intellectuals, as Oblonsky had called them. Both were men respected for their character and their intelligence. They respected each other, but were in complete and hopeless disagreement upon almost every subject, not because they belonged to opposite parties, but precisely because they were of the same party (their enemies refused to see any distinction between their views); but, in that party, each had his own special shade of opinion. And since no difference is less easily overcome than the difference of opinion about semiabstract questions, they never agreed on any opinion, and, indeed, had long been accustomed to jeer without anger at each other's incorrigible aberrations.

They were just going in at the door, talking of the weather, when Stepan Arkadyevich overtook them. In the drawing room there were already sitting Prince Alexander Dmitrievich Shcherbatsky, young Shcherbatsky, Turovtsin, Kitty, and Karenin.

Stepan Arkadyevich saw immediately that things were not going well in the drawing room without him. Darya Alexandrovna, in her best gray silk gown, obviously worried about the children who were to have their dinner by themselves in the nursery, and by her husband's absence, was not equal to the task of making the party mix without him. All were sitting like so many priests' daughters on a visit (so the old Prince expressed it), obviously wondering why they were there, and pumping up remarks simply to avoid being silent. Turovtsin goodhearted man felt unmistakably like a fish out of water, and the smile with which his thick lips greeted Stepan Arkadyevich said, as plainly as words: "Well, old boy, you have popped me down in a learned set! A drinking party, and the Chateau des Fleurs, would be more in my line!" The old Prince sat in silence, his bright little eyes watching Karenin with a sidelong look; and Stepan Arkadyevich saw that he had already formed a sharp remark to sum up that politician of whom guests had been invited to partake, as though he were a sturgeon. Kitty was looking at the door, calling up all her energies to keep her from blushing at the entrance of Konstantin Levin. Young Shcherbatsky, who had not been introduced to Karenin, was trying to look as though he were not in the

least embarrassed by it. Karenin himself had followed the Petersburg. etiquette for a dinner with ladies present and was wearing evening dress and a white tie. Stepan Arkadyevich saw by his face that he had come simply to keep his promise, and was performing a disagreeable duty in being present at this gathering. He was indeed the person chiefly responsible for the chill benumbing all the guests before Stepan Arkadyevich came in.

On entering the drawing room Stepan Arkadyevich apologized, explaining that he had been detained by that Prince who was always the scapegoat for all his absences and unpunctualities, and in one moment he had made all the guests acquainted with each other, and, bringing together Alexei Alexandrovich and Sergei Koznishev, had started them on a discussion of the Russification of Poland, into which they immediately plunged with Pestsov. Slapping Turovtsin on the shoulder, he whispered something comic in his ear, and set him down by his wife and the old Prince. Then he told Kitty she was looking very pretty that evening, and presented Shcherbatsky to Karenin. In a moment he had so kneaded together the social dough that the drawing room became very lively, and there was a merry buzz of voices. Konstantin Levin was the only person who had not arrived. But this was so much the better, as, going into the dining room, Stepan Arkadyevich found to his horror that the port and sherry had been procured from Depre, and not from Leve, and, directing that the coachman should be sent off as speedily as possible to Leve's he started back to the drawing room.

In the dining room he was met by Konstantin Levin.

"I'm not late?"

"You can never help being late!" said Stepan Arkadyevich, taking his arm.

"Have you a lot of people? Who's here?" asked Levin, unable to help blushing, as he knocked the snow off his cap with his glove.

"All our own set. Kitty's here. Come along, I'll introduce you to Karenin."

Stepan Arkadyevich, for all his liberal views, was well aware that to meet Karenin was sure to be felt a flattering distinction, and so treated his best friends to this honor. But at that instant Konstantin Levin was not in a condition to feel all the gratification of making such an acquaintance. He had not seen Kitty since that memorable evening when he met Vronsky not counting, that is, the moment when he had had a glimpse of her on the highroad. He had known at the bottom of his heart that he would see her here today. But, to keep his thoughts free, he had tried to persuade himself that he did not know it. Now when he heard that she was here, he was suddenly conscious of such delight, and at the same time of such dread, that his breath failed him and he could not utter what he wanted to say.

"What is she like, what is she like? As she used to be, or as she was in the carriage? What if Darya Alexandrovna told the truth? Why shouldn't it be the truth?" he thought.

"Oh, please, introduce me to Karenin," he brought out with an effort, and with a desperately determined step he walked into the drawing room and beheld her.

She was not the same as she used to be, nor was she as she had been in the carriage; she was quite different.

She was scared, shy, shamefaced, and because of all this, still more charming. She saw him the very instant he walked into the room. She had been expecting him. She was delighted, and so confused at her own delight that there was a moment, the moment when he went up to her sister and glanced again at her, when she, and he, and Dolly, who saw it all, thought she would break down and begin to cry. She crimsoned, turned white, crimsoned again, and grew faint, waiting with quivering lips for him to come to her. He went up to her, bowed, and held out his hand without speaking. Except for the slight quiver of her lips and the moisture in her eyes, making them

brighter, her smile was almost calm as she said:

"How long it is since we've seen each other!" and, with desperate determination, with her cold hand squeezed his.

"You've not seen me, but I've seen you," said Levin, with a radiant smile of happiness. "I saw you when you were driving from the railway station to Ergushovo."

"When?" she asked, wondering.

"You were driving to Ergushovo," said Levin, feeling as if he would sob with the rapture that was flooding his heart. "And how dared I associate a thought of anything not innocent with this touching creature? And, yes, I do believe what Darya Alexandrovna told me is true," he thought.

Stepan Arkadyevich took him by the arm and led him away to Karenin.

"Let me introduce you." He mentioned their names.

"Very glad to meet you again," said Alexei Alexandrovich coldly, shaking hands with Levin.

"You are acquainted?" Stepan Arkadyevich asked in surprise.

"We spent three hours together in the train," said Levin smiling, "but got out, just as in a masquerade, quite mystified at least I was."

"Oh, so that's it! Come along, please," said Stepan Arkadyevich, pointing in the direction of the dining room.

The men went into the dining room and went up to the table for hors d'oeuvres, laid with six sorts of vodka and as many kinds of cheese, some with little silver spades and some without, caviar, herrings, preserves of various kinds, and plates with slices of French bread.

The men stood round the strong-smelling spirits and salt delicacies, and the discussion of the Russification of Poland between Koznishev, Karenin and Pestsov, died down in anticipation of dinner.

Sergei Ivanovich was unequaled in his skill in winding up the most heated and serious argument by some unexpected pinch of Attic salt that changed the disposition of his opponent. He did this now.

Alexei Alexandrovich had been maintaining that the Russification of Poland could only be accomplished as a result of greater principles, which ought to be introduced by the Russian government.

Pestsov insisted that one country can absorb another only when it is the more densely populated.

Koznishev admitted both points, but with limitations. As they were going out of the drawing room to conclude the argument, Koznishev said smiling:

"So, then, for the Russification of our foreign populations there is but one method to bring up as many children as one can. My brother and I are terribly at fault, I see. You married men especially you, Stepan Arkadyevich are the real patriots: what number have you reached?" he said, smiling genially at their host and holding out a tiny wineglass to him.

Everyone laughed, and Stepan Arkadyevich with particular good humor.

"Oh, yes, that's the best method!" he said, munching cheese and filling the wineglass with a special sort of vodka. The conversation dropped at the jest.

"This cheese is not bad. Shall I give you some?" said the master of the house. "Why, have you been going in for gymnastics again?" he asked Levin, pinching his muscle with his left hand. Levin smiled, bent his arm, and under Stepan Arkadyevich's fingers the muscles swelled up like a sound cheese, hard as a knob of iron, through the fine cloth of the coat.

"What biceps! A perfect Samson!"

"I imagine great strength is needed for hunting bears," observed Alexei Alexandrovich, who had the mistiest notions about the chase. He cut off and spread with cheese a wafer of bread fine as a spiderweb.

Levin smiled.

"Not at all. Quite the contrary a child can kill a bear," he said, with a slight bow moving aside for the ladies, who were approaching the hors d'oeuvres table.

"You have killed a bear, I've been told!" said Kitty, trying assiduously to catch with her fork a perverse mushroom that would slip away, and shaking the lace over her white arm. "Are there bears on your place?" she added, turning her charming little head to him and smiling.

There was apparently nothing extraordinary in what she said, but what unutterable meaning there was for him in every sound, in every turn of her lips, her eyes, her hand as she said it! There was entreaty for forgiveness, and trust in him, and tenderness soft, timid tenderness and promise, and hope, and love for him, which he could not but believe in, and which suffocated him with happiness.

"No, we've been hunting in the Tver province. It was coming back from there that I met your beau-frere in the train, or your beau-frere's brother-in-law," he said with a smile. "It was an amusing meeting."

And he began telling with droll good humor how, after not sleeping all night, he had, wearing a fur-lined, full-skirted coat, got into Alexei Alexandrovich's compartment.

"The conductor, forgetting the proverb, would have chucked me out on account of my attire; but thereupon I began expressing my feelings in elevated language, and... you, too," he said, addressing Karenin and forgetting his name, "at first would have ejected me on the ground of my coat, but afterward you took my part, for which I am extremely grateful."

"The rights of passengers generally to choose their seats are too ill-defined," said Alexei Alexandrovich, rubbing the tips of his fingers on his handkerchief.

"I saw you were in uncertainty about me," said Levin, smiling good-naturedly, "but I made haste to plunge into intellectual conversation to smooth over the defects of my attire."

Sergei Ivanovich, while he kept a conversation with their hostess, had one ear for his brother, and he glanced askance at him. "What is the matter with him today? Why such a conquering hero?" he thought. He did not know that Levin was feeling as though he had grown wings. Levin knew she was listening to his words and that she was glad to listen to him. And this was the only thing that interested him. Not in that room only, but in the whole world, there existed for him only himself, with enormously increased importance and dignity in his own eyes, and she. He felt himself on a pinnacle that made him giddy, and far away down below were all those kind, excellent Karenins, Oblonskys, and all the world.

Quite without attracting notice, without glancing at them, as though there were no other places left, Stepan Arkadyevich put Levin and Kitty side by side.

"Oh, you may as well sit there," he said to Levin.

The dinner was as choice as the china, of which Stepan Arkadyevich was a connoisseur. The soupe Marie-Louise was a splendid success; the tiny patties eaten with it melted in the mouth and were irreproachable. The two footmen and Matvei, in white cravats, did their duty with the dishes and wines unobtrusively, quietly, and dexterously. On the material side the dinner was a success; it was no less so on the immaterial. The conversation, at times general and at times between individuals, never paused, and toward the end the company was so lively that the men rose from the table without stopping speaking, and even Alexei Alexandrovich became lively.

## X.

Pestsov liked threshing an argument out to the end, and was not satisfied with Sergei Ivanovich's words, especially as he felt the injustice of his view.

"I did not mean," he said over the soup, addressing Alexei Alexandrovich, "mere density of population alone, but in conjunction with fundamental ideas, and not by means of principles."

"It seems to me," Alexei Alexandrovich said languidly, and with no haste, "that that's the same thing. In my opinion, influence over another people is only possible to the people which has the higher development, which..."

"But that's just the question," Pestsov broke in in his bass. He was always in a hurry to speak, and seemed always to put his whole soul into whatever he was saying; "of what are we to make higher development consist? The English, the French, the Germans which is at the highest stage of development? Which of them will nationalize the other? We see the Rhine provinces have been turned French, yet the Germans are not at a lower stage!" he shouted. "There is another law at work there!"

"I fancy that the greater influence is always on the side of true civilization," said Alexei Alexandrovich, slightly lifting his eyebrows.

"But what are we to lay down as the outward signs of true civilization?" said Pestsov.

"I imagine such signs are generally very well known," said Alexei Alexandrovich.

"But are they fully known?" Sergei Ivanovich put in with a subtle smile. "It is the accepted view now that real culture must be purely classical; but we see most intense disputes on each side of the question, and there is no denying that the opposite camp has strong points in its favor."

"You are for the classics, Sergei Ivanovich. Will you take red wine?" said Stepan Arkadyevich.

"I am not expressing my own opinion of either form of culture," Sergei Ivanovich said, holding out his glass with a smile of condescension, as to a child. "I only say that both sides have strong arguments to support them," he went on, addressing Alexei Alexandrovich. "My sympathies are classical from education, but in this discussion I am personally unable to arrive at a conclusion. I see no distinct grounds for classical studies being given a pre-eminence over scientific studies."

"The natural sciences have just as great an educational value," put in Pestsov. "Take astronomy, take botany, or zoology, with its system of general principles."

"I cannot quite agree with that," responded Alexei Alexandrovich. "It seems to me that one must admit that the very process of studying the forms of language has a peculiarly favorable influence on intellectual development. Moreover, it cannot be denied that the influence of the classical authors is in the highest degree moral, while, unfortunately, with the study of the natural sciences are associated the false and noxious doctrines which are the curse of our day."

Sergei Ivanovich would have said something, but Pestsov interrupted him in his rich bass. He began warmly contesting the justice of this view. Sergei Ivanovich waited serenely to speak, obviously with a convincing reply ready.

"But," said Sergei Ivanovich, smiling subtly, and addressing Karenin, "one must allow that to weigh all the advantages and disadvantages of classical and scientific studies is a difficult task, and the question which form of education was to be preferred would not have been so quickly and conclusively decided if there had not been in favor of classical education, as you expressed it just now, its moral dissonance and antinihilist influence."

"Undoubtedly."

"If it had not been for the distinctive property of antinihilistic influence on the side of classical studies, we should have considered the subject more, have weighed the arguments on both sides," said Sergei Ivanovich with a subtle smile, "we should have given elbowroom to both tendencies. But now we know that these little pills of classical learning possess the medicinal property of antinihilism, and we boldly prescribe them to our patients.... But what if they had no such medicinal property?" he added his pinch of Attic salt.

At Sergei Ivanovich's little pills everyone laughed; Turovtsin in especial roared loudly and jovially, glad at last to have found something to laugh at all he ever looked for in listening to conversation.

Stepan Arkadyevich had not made a mistake in inviting Pestsov. With Pestsov intellectual conversation never flagged for an instant. Directly Sergei Ivanovich had concluded the conversation with his jest, Pestsov promptly started a new one.

"I can't agree even," said he, "that the government had that aim. The government obviously is guided by abstract considerations, and remains indifferent to the influence its measures may exercise. The education of women, for instance, would naturally be regarded as likely to be harmful, but the government opens schools and universities for women."

And the conversation at once passed to the new subject of the education of women.

Alexei Alexandrovich expressed the idea that the education of women is apt to be confounded with the emancipation of women, and that it is only so that it can be considered dangerous.

"I consider, on the contrary, that the two questions are inseparably connected together," said Pestsov; "it is a vicious circle. Woman is deprived of rights from lack of education, and the lack of education results from the absence of rights. We must not forget that the subjection of women is so complete, and dates from such distant ages, that we are often unwilling to recognize the gulf that separates them from us," said he.

"You mentioned rights," said Sergei Ivanovich, waiting till Pestsov had finished, "meaning the right of sitting on juries, of voting, of presiding at councils, the right of entering the civil service, of sitting in parliament...."

"Undoubtedly."



## Anna Karenina

"But if women, as a rare exception, can occupy such positions, it seems to me you are wrong in using the expression 'rights'. It would be more correct to say duties. Every man will agree that in doing the duty of a jurymen, a witness, a telegraph clerk, we feel we are performing duties. And, therefore, it would be correct to say that women are seeking duties, and quite legitimately. And one can but sympathize with this desire to assist in the general labor of man."

"Quite so," Alexei Alexandrovich assented. "The question, I imagine, is simply whether they are fitted for such duties."

"They will most likely be perfectly fitted," said Stepan Arkadyevich, "when education has become general among them. We see this..."

"How about the proverb?" said the Prince, who had a long while been intent on the conversation, his mocking little eyes twinkling. "I can say it before my daughters: her hair is long, but her wit is short...."

"Just what they thought of the Negroes before their emancipation!" said Pestsov angrily.

"What seems strange to me is that women should seek fresh duties," said Sergei Ivanovich, "while we see, unhappily, that men usually try to avoid them."

"Duties are bound up with rights power, money, honor; those are what women are seeking," said Pestsov.

"Just as though I should seek the right to be a wet nurse, and feel injured because women are paid for the work, while no one will take me," said the old Prince.

Turovtsin exploded in a loud roar of laughter, and Sergei Ivanovich regretted that he had not made this comparison. Even Alexei Alexandrovich smiled.

"Yes, but a man can't nurse a baby," said Pestsov, "while a woman..."

"No, there was an Englishman who did suckle his baby on board ship," said the old Prince, feeling this freedom in conversation permissible before his own daughters.

"There are as many such Englishmen as there would be women officials," said Sergei Ivanovich.

"Yes, but what is a girl to do who has no family?" put in Stepan Arkadyevich, thinking of Masha Chibisova, whom he had had in his mind all along, in sympathizing with Pestsov and supporting him.

"If the story of such a girl were thoroughly sifted, you would find she had abandoned a family her own or a sister's, where she might have found a woman's duties," Darya Alexandrovna broke in unexpectedly, in a tone of exasperation, probably suspecting what sort of girl Stepan Arkadyevich had in mind.

"But we take our stand on principle, on the ideal," replied Pestsov in his sonorous bass. "Woman desires to have the right to be independent, educated. She is oppressed, humiliated by the consciousness of her disabilities."

"And I'm oppressed and humiliated that they won't engage me at the Foundling Asylum," the old Prince said again, to the huge delight of Turovtsin, who in his mirth dropped his asparagus with the thick end in the sauce.

XI.

Everyone took part in the conversation except Kitty and Levin. At first, when they were talking of the influence that one people has on another, there rose to Levin's mind what he had to say on the subject. But these ideas, once of such importance in his eyes, seemed to come into his brain as in a dream, and had now not the slightest interest for him. It even struck him as strange that they should be so eager to talk of what was of no use to anyone. Kitty, too, one would have supposed, should have been interested in what they were saying of the rights and education of women. How often she had mused on the subject, thinking of her friend abroad, Varenka, of her painful state of dependence; how often she had wondered about herself as to what would become of her if she did not marry, and how often she had argued with her sister about it! But now it did not interest her at all. She and Levin had a conversation of their own, yet not a conversation, but a sort of mysterious communication, which brought them every moment nearer, and stirred in both a sense of glad terror before the unknown into which they were entering.

At first Levin, in answer to Kitty's question how he could have seen her last year in the carriage, told her that he had been coming home from the mowing along the highroad and had met her.

"It was very, very early in the morning. You were probably only just awake. Your maman was asleep in her corner. It was an exquisite morning. I was walking along wondering who it could be in the four-in-hand. It was a splendid set of four horses with bells, and in a second you flashed by, and I saw you at the window you were sitting, like this; holding the strings of your cap in both hands, and in awfully deep thought about something," he said, smiling. "How I should like to know what you were thinking about then! Something important?"

"Wasn't I dreadfully untidy?" she wondered, but seeing the smile of ecstasy these reminiscences called up, she felt that the impression she had made had been very good. She blushed and laughed with delight:

"Really I don't remember."

"How nicely Turovtsin laughs!" said Levin, admiring his humid eyes and heaving chest.

"Have you known him long?" asked Kitty.

"Oh, everyone knows him!"

"And I see you think he's a horrid man?"

"Not horrid, but there's nothing in him."

"Oh, you're wrong! And you must give up thinking so directly!" said Kitty. "I used to have a very poor opinion of him too, but he's an awfully fine and wonderfully goodhearted man. He has a heart of gold."

"How could you find out what sort of heart he has?"

"We are great friends. I know him very well. Last winter, soon after... you came to see us," she said, with a guilty and at the same time a confiding smile, "all Dolly's children had scarlatina, and he happened to come to see her. And only fancy," she said in a whisper, "he felt so sorry for her that he stayed and began to help her look after the children. Yes, and for three weeks he stopped with them, and looked after the children like a nurse."

"I am telling Konstantin Dmitrievich about Turovtsin and the scarlatina," she said, bending over to her sister.

"Yes, it was wonderful, noble!" said Dolly, glancing toward Turovtsin, who had become aware they were talking

of him, and smiling gently to him. Levin glanced once more at Turovtsin, and wondered how it was he had not realized all this man's goodness before.

"I'm sorry, I'm sorry, and I'll never think ill of people again!" he said gaily, genuinely expressing what he felt at the moment.

## XII.

Connected with the conversation that had sprung up on the rights of women there were certain questions as to the inequality of rights in marriage, improper to discuss before the ladies. Pestsov had several times during dinner touched upon these questions, but Sergei Ivanovich and Stepan Arkadyevich carefully drew him off them.

When they rose from the table and the ladies had gone out, Pestsov did not follow them, but, addressing Alexei Alexandrovich, began to expound the chief ground of inequality. The inequality in marriage, in his opinion, lay in the fact that the infidelity of the wife and infidelity of the husband are punished unequally, both by the law and by public opinion.

Stepan Arkadyevich went hurriedly up to Alexei Alexandrovich and offered him a cigar.

"No, I don't smoke," Alexei Alexandrovich answered calmly, and, as though purposely wishing to show that he was not afraid of the subject, he turned to Pestsov with a chilly smile.

"I imagine that such a view has a foundation in the very nature of things," he said, and would have gone on to the drawing room. But at this point Turovtsin broke suddenly and unexpectedly into the conversation, addressing Alexei Alexandrovich.

"You heard, perhaps, about Priachnikov?" said Turovtsin, warmed up by the champagne he had drunk, and long waiting for an opportunity to break the silence that had weighed on him. "Vassia Priachnikov," he said, with a good-natured smile on his moist, red lips, addressing himself principally to the most important guest, Alexei Alexandrovich, "they told me today he fought a duel with Kvitsky at Tver, and has killed him."

Just as it always seems that one bruises oneself on a sore place, so Stepan Arkadyevich felt now that the conversation would by ill luck fall at any moment on Alexei Alexandrovich's sore spot. He would again have got his brother-in-law away, but Alexei Alexandrovich himself inquired, with curiosity:

"What did Priachnikov fight about?"

"His wife. Acted like a man, he did! Called him out and shot him!"

"Ah!" said Alexei Alexandrovich indifferently, and, lifting his eyebrows, he went into the drawing room.

"How glad I am you have come," Dolly said with a frightened smile, meeting him in the outer drawing room. "I must talk to you. Let's sit here."

Alexei Alexandrovich, with the same expression of indifference, due to his lifted eyebrows, sat down beside Darya Alexandrovna, and smiled affectedly.

"It's fortunate," said he, "especially as I meant to ask you to excuse me, and to be taking leave. I have to start tomorrow."

## Anna Karenina

Darya Alexandrovna was firmly convinced of Anna's innocence, and she felt herself growing pale and her lips quivering with anger at this frigid, unfeeling man, who was so calmly intending to ruin her innocent friend.

"Alexei Alexandrovich," she said, with desperate resolution looking him in the face, "I asked you about Anna; you made me no answer. How is she?"

"She is, I believe, quite well, Darya Alexandrovna," replied Alexei Alexandrovich, without looking at her.

"Alexei Alexandrovich, forgive me, I have no right... But I love Anna as a sister, and esteem her; I beg, I beseech you to tell me what is wrong between you? What fault do you find with her?"

Alexei Alexandrovich frowned, and, almost closing his eyes, dropped his head.

"I presume that your husband has told you the grounds on which I consider it necessary to change my attitude to Anna Arkadyevna?" he said, without looking her in the face, but eying with displeasure Shcherbatsky, who was walking across the drawing room.

"I don't believe it, I don't believe it I can't believe it!" Dolly said, clasping her bony hands before her with a vigorous gesture. She rose quickly and laid her hand on Alexei Alexandrovich's sleeve. "We shall be disturbed here. Come this way, please."

Dolly's agitation had an effect on Alexei Alexandrovich. He got up and submissively followed her to the schoolroom. They sat down at a table covered with an oilcloth cut in slits by penknives.

"I don't I don't believe it!" Dolly said, trying to catch his glance, still avoiding her.

"One cannot disbelieve facts, Darya Alexandrovna," said he, with an emphasis on the word facts.

"But what has she done?" said Darya Alexandrovna. "What, precisely, has she done?"

"She has forsaken her duty, and deceived her husband. That's what she has done," said he.

"No, no, it can't be! No, for God's sake, you are mistaken," said Dolly, putting her hands to her temples and closing her eyes.

Alexei Alexandrovich smiled coldly, with his lips alone, meaning to signify to her and himself the firmness of his conviction; but this warm defense, though it could not shake him, reopened his wound. He began to speak with greater heat.

"It is extremely difficult to be mistaken when a wife herself informs her husband of the fact informs him that eight years of her life, and a son, are all a mistake, and that she wants to begin life anew," he said angrily, with a snort.

"Anna and sin I cannot connect them, I cannot believe it!"

"Darya Alexandrovna," he said, now looking straight into Dolly's kindly, troubled face, and feeling that his tongue was being loosened in spite of himself, "I would give a great deal for doubt to be still possible. When I doubted, I was miserable, but it was better than now. When I doubted, I had hope; but now there is no hope, and still I doubt everything. I am in such doubt of everything that I even hate my son, and sometimes do not believe he is my son. I am very unhappy."

## Anna Karenina

He had no need to say that. Darya Alexandrovna had seen that as soon as he glanced into her face; and she felt sorry for him, and her faith in the innocence of her friend began to waver.

"Oh, this is awful, awful! But can it be true that you are resolved on a divorce?"

"I am resolved on extreme measures. There is nothing else for me to do."

"Nothing else to do, nothing else to do..." she replied, with tears in her eyes. "Oh no, don't say there's nothing else to do!" she said.

"What is horrible in a misfortune of this kind is that one cannot, as in any other in loss, in death bear one's trouble in peace, but that one must act," said he, as though guessing her thought. "One must get out of the humiliating position in which one is placed; one can't live a *trois*."

"I understand, I quite understand that," said Dolly, and her head sank. She was silent for a little, thinking of herself, of her own grief in her family, and all at once, with an impulsive movement, she raised her head and clasped her hands with an imploring gesture. "But wait a little! You are a Christian. Think of her! What will become of her, if you cast her off?"

"I have thought, Darya Alexandrovna I have thought a great deal," said Alexei Alexandrovich. His face turned red in patches, and his dim eyes looked straight before him. Darya Alexandrovna at that moment pitied him with all her heart. "That indeed was what I did when she herself made known to me my humiliation; I left everything as of old. I gave her a chance to reform, I tried to save her. And with what result? She would not regard the least request that she should observe decorum," he said, getting heated. "One may save anyone who does not want to be ruined; but if the whole nature is so corrupt, so depraved, that ruin itself seems to her salvation, what's to be done?"

"Anything, only not divorce!" answered Darya Alexandrovna.

"But what is anything?"

"No, it is awful! She will be no one's wife; she will be lost!"

"What can I do?" said Alexei Alexandrovich, raising his shoulders and his eyebrows. The recollection of his wife's last act had so incensed him that he had become frigid, as at the beginning of the conversation. "I am very grateful for your sympathy, but I must be going," he said, getting up.

"No, wait a minute. You must not ruin her. Wait a little; I will tell you about myself. I was married, and my husband deceived me; in anger and jealousy I would have thrown up everything, I would myself... But I came to myself again; and who did it? Anna saved me. And here I am living on. The children are growing up, my husband has come back to his family, and feels his fault, is growing purer, better, and I live on... I have forgiven it, and you ought to forgive!"

Alexei Alexandrovich heard her, but her words had no effect on him now. All the hatred of that day when he had resolved on a divorce had sprung up again in his soul. He shook himself, and said in a shrill loud voice:

"Forgive I cannot, and do not wish to, and I regard it as wrong. I have done everything for this woman, and she has trodden it all in the mud to which she is kin. I am not a spiteful man, I have never hated anyone, but I hate her with my whole soul, and I cannot even forgive her, because I hate her too much for all the wrong she has done me!" he said, with tears of hatred in his voice.

## Anna Karenina

"Love those that hate you..." Darya Alexandrovna whispered, timorously.

Alexei Alexandrovich smiled contemptuously. That he knew long ago, but it could not be applied to his case.

"Love those that hate you, but to love those one hates is impossible. Forgive me for having troubled you. Everyone has enough to bear in his own grief!" And, regaining his self-possession, Alexei Alexandrovich quietly took leave and went away.

### XIII.

When they rose from the table, Levin would have liked to follow Kitty into the drawing room; but he was afraid she might dislike this, as too obviously paying her attention. He remained in the little ring of men, taking part in the general conversation, and, without looking at Kitty, he was aware of her movements, her looks, and the place where she was in the drawing room.

He did at once, and without the smallest effort, keep the promise he had made her always to think well of all men, and to like everyone always. The conversation fell on the village commune, in which Pestsov saw a sort of special principle, called by him the choral principle. Levin did not agree with Pestsov, nor with his brother, who had a special attitude of his own, both admitting yet not admitting the significance of the Russian commune. But he talked to them, simply trying to reconcile and soften their differences. He was not in the least interested in what he said himself, and even less so in what they said; all he wanted was that they and everyone should be happy and contented. He knew now the one thing of importance; and that one thing was at first there, in the drawing room, and then began moving across, and came to a standstill at the door. Without turning round he felt her eyes fixed on him, and her smile, and he could not help turning round. She was standing in the doorway with Shcherbatsky, looking at Levin.

"I thought you were going toward the piano," said he, going up to her. "That's something I miss in the country music."

"No; we only came to fetch you, and I thank you," she said, rewarding him with a smile that was like a gift, "for coming. What do they want to argue for? No one ever convinces anyone, you know."

"Yes; that's true," said Levin; "it generally happens that one argues warmly simply because one can't make out what one's opponent wants to prove."

Levin had often noticed in discussions between the most intelligent people that after enormous efforts, and an enormous expenditure of logical subtleties and words, the disputants finally arrived at the realization that what they had so long been struggling to prove to one another had long ago, from the beginning of the argument, been known to both, but that they liked different things, and would not define what they liked for fear of its being attacked. He had often had the experience of suddenly grasping in a discussion what it was his opponent liked and at once liking it too, and immediately he found himself agreeing, and then all arguments fell away as useless. Sometimes, too, he had experienced the opposite, expressing at last what he liked himself, which he was devising arguments to defend, and, chancing to express it well and genuinely, he had found his opponent at once agreeing and ceasing to dispute his position. He tried to say this.

She knit her brow, trying to understand. But directly he began to illustrate his meaning, she understood at once.

"I know: one must find out what he is arguing for, what is precious to him, then one can..."

She had completely guessed and expressed his badly expressed idea. Levin smiled joyfully; he was struck by this

## Anna Karenina

transition from the confused, verbose discussion with Pestsov and his brother to this laconic, clear, almost wordless communication of the most complex ideas.

Shcherbatsky moved away from them, and Kitty, going up to a card table, sat down, and, taking up the chalk, began drawing diverging circles over the new green cloth.

They began again on the subject that had been started at dinner—the liberty and occupations of women. Levin was of the opinion of Darya Alexandrovna that a girl who did not marry should find a woman's duties in a family. He supported this view by the fact that no family can get on without women to help; that in every family, poor or rich, there are and must be nurses, either relations or hired.

"No," said Kitty, blushing, but looking at him all the more bravely with her truthful eyes; "a girl may be so circumstanced that she cannot live in the family without humiliation, while she herself..."

At the hint he understood her.

"Oh, yes," he said. "Yes, yes, yes—you're right; you're right!"

And he saw all that Pestsov had been maintaining at dinner about the liberty of woman, simply from getting a glimpse of the terror of an old maid's existence and its humiliation in Kitty's heart; and loving her, he felt that terror and humiliation, and at once gave up his arguments.

A silence followed. She was still drawing with the chalk on the table. Her eyes were shining with a soft light. Under the influence of her mood he felt in all his being a continually growing tension of happiness.

"Ah! I've scribbled all over the table!" she said, and, laying down the chalk, she made a movement as though to get up.

"What! Shall I be left alone—without her?" he thought with horror, and he took the chalk. "Wait a minute," he said, sitting down to the table. "I've long wanted to ask you one thing."

He looked straight into her caressing, though frightened eyes.

"Please, ask it."

"Here," he said; and he wrote the initial letters, w, y, t, m: i, c, n, b, d, t, m, n, o, t. These letters meant, "When you told me: it could never be, did that mean never, or then?" There seemed no likelihood that she could make out this complicated sentence; but he looked at her as though his life depended on her understanding the words.

She glanced at him seriously, then leaned her puckered brow on her hands and began to read. Once or twice she stole a look at him, as though asking him, "Is it what I think it is?"

"I understand," she said, flushing.

"What is this word?" he said, pointing to the n that stood for never.

"It means never," she said; "but that's not true!"

He quickly rubbed out what he had written, gave her the chalk, and stood up. She wrote, t, i, c, n, a, d.

## Anna Karenina

Dolly was completely comforted in the depression caused by her conversation with Alexei Alexandrovich when she caught sight of the two figures: Kitty with the chalk in her hand, with a shy and happy smile looking upward at Levin, and his handsome figure bending over the table with glowing eyes fastened one minute on the table and the next on her. He was suddenly radiant: he had understood. It meant, "Then I could not answer differently."

He glanced at her questioningly, timidly.

"Only then?"

"Yes," her smile answered.

"And n... And now?" he asked.

"Well, read this. I'll tell you what I should like should like so much!" She wrote the initial letters, i, y, c, f, a, f, w, h. This meant, "If you could forget and forgive what happened."

He snatched the chalk with nervous, trembling fingers, and breaking it, wrote the initial letters of the following phrase, "I have nothing to forget and to forgive; I have never ceased to love you."

She glanced at him with a smile that did not waver.

"I understand," she said in a whisper.

He sat down and wrote a long phrase. She understood it all, and without asking him, "Is it this?" took the chalk and at once answered.

For a long while he could not understand what she had written, and often looked into her eyes. He was stupefied with happiness. He could not supply the words she had meant; but in her charming eyes, beaming with happiness, he saw all he needed to know. And he wrote three letters. But he had hardly finished writing when she read them over her arm, and herself finished and wrote the answer, "Yes."

"You're playing secretaire?" said the old Prince. "But we must really be getting along if you want to be in time at the theater."

Levin got up and escorted Kitty to the door.

In their conversation everything had been said; it had been said that she loved him, and that she would tell her father and mother that he would come tomorrow morning.

## XIV.

When Kitty had gone and Levin was left alone, he felt such uneasiness without her and such an impatient longing to get as quickly as possible to tomorrow morning, when he would see her again and be plighted to her forever, that he felt afraid, as though of death, of those fourteen hours that he had to get through without her. It was essential for him to be with someone to talk to, so as not to be left alone; to deceive time. Stepan Arkadyevich would have been the companion most congenial to him, but he was going out, he said, to a soiree in reality to the ballet. Levin only had time to tell him he was happy, and that he loved him, and would never, never forget what he had done for him. The eyes and the smile of Stepan Arkadyevich showed Levin that he comprehended that feeling fittingly.



## Anna Karenina

"Oh, so it's not time to die yet?" said Stepan Arkadyevich, pressing Levin's hand with emotion.

"N—n—no!" said Levin.

Darya Alexandrovna too, as she said good-bye to him, gave him a sort of congratulation, saying, "How glad I am you have met Kitty again! One must value old friends." Levin did not like these words of Darya Alexandrovna's. She could not understand how lofty and beyond her it all was, and she ought not to have dared to allude to it. Levin said good-bye to them, but, not to be left alone, he attached himself to his brother.

"Where are you going?"

"I'm going to a meeting."

"Well, I'll come with you. May I?"

"What for? Yes, come along," said Sergei Ivanovich, smiling. "What is the matter with you today?"

"With me? Happiness is the matter with me!" said Levin, letting down the window of the carriage they were driving in. "You don't mind? It's so stifling. Happiness is all that's the matter with me! Why is it you have never married?"

Sergei Ivanovich smiled.

"I am very glad she seems a lovely gi..." Sergei Ivanovich was beginning.

"Don't say it! Don't say it!" shouted Levin, clutching at the collar of his fur coat with both hands, and muffling him up in it. "She's a lovely girl" were such simple, humble words, so out of harmony with his feeling.

Sergei Ivanovich laughed outright a merry laugh, which was rare with him.

"Well, anyway, I may say that I'm very glad of it."

"That you may do tomorrow, tomorrow and say no more! Nothing, nothing silence," said Levin, and muffling him once more in his fur coat, he added: "I do like you so! Well, is it possible for me to be present at the meeting?"

"Of course it is."

"What is your discussion about today?" asked Levin, never ceasing smiling.

They arrived at the meeting. Levin heard the secretary hesitatingly read the minutes which he obviously did not himself understand; but Levin saw from this secretary's face what a good, fine, kindhearted person he was. This was evident from his confusion and embarrassment in reading the minutes. Then the discussion began. They were disputing about the reckoning off of certain sums and the laying of certain pipes, and Sergei Ivanovich was very cutting to two members, and said something at great length with an air of triumph; and another member, scribbling something on a bit of paper, began timidly at first, but afterward answered him very viciously and delightfully. And then Sviiashsky (he was there also) said something too, very handsomely and nobly. Levin listened to them, and saw clearly that this reckoning off of sums and these pipes were not anything real, and that they were not at all angry, but were all the finest, kindest people, and everything was as happy and charming as possible among them. They did no harm to anyone, and were all enjoying it. What struck Levin was that he could see through them all today, and from little, almost imperceptible signs knew the soul of each, and saw distinctly

that they were all good at heart. And they were all extremely fond of Levin in particular that day. This was evident from the way they spoke to him, from the friendly, affectionate way even those whom he did not know looked at him.

"Well, are you contented with it?" Sergei Ivanovich asked him.

"Very much. I never supposed it was so interesting, nice, capital!"

Sviiazhsky went up to Levin and invited him to come round to tea with him. Levin was utterly at a loss to comprehend or recall what it was he had disliked in Sviiazhsky, what he had failed to find in him. He was a clever and wonderfully goodhearted man.

"Most delighted," he said, and asked after his wife and sister-in-law. And from a queer association of ideas, because in his imagination the idea of Sviiazhsky's sister-in-law was connected with marriage, it occurred to him that there was no one to whom he could more suitably speak of his happiness, than to Sviiazhsky's wife and sister-in-law, and he was very glad to go to see them.

Sviiazhsky questioned him about his improvements on his estate, presupposing, as he always did, that there was no possibility of doing anything not done already in Europe, and now this did not in the least annoy Levin. On the contrary, he felt that Sviiazhsky was right, that the whole business was of little value, and he saw the wonderful suavity and consideration with which Sviiazhsky avoided fully expressing his correct view. The ladies of the Sviiazhsky household were particularly delightful. It seemed to Levin that they knew all about it already, and sympathized with him, saying nothing merely out of delicacy. He stayed with them one hour, two, three, talking of all sorts of subjects, but implied in it the only thing that filled his heart, and did not observe that he was boring them dreadfully, and that it was long past their bedtime. Sviiazhsky went with him into the hall, yawning and wondering at the strange humor his friend was in. It was past one o'clock. Levin went back to his hotel, and was dismayed at the thought that all alone now with his impatience he had ten hours still left to get through. The servant, whose turn it was to be up all night, lighted his candles, and would have gone away, but Levin stopped him. This servant, Iegor, whom Levin had not noticed before, struck him as a very intelligent, excellent, and, above all, a goodhearted man.

"Well, Iegor, it's hard work not sleeping, isn't it?"

"What's to be done! It's part of our work, you see. In a gentleman's house it's easier; but then here one makes more."

It appeared that Iegor had a family three boys and a daughter, a seamstress, whom he wanted to marry to a cashier in a saddler's shop.

Levin, on hearing this, informed Iegor that, in his opinion, in marriage the great thing was love, and that with love one would always be happy, for happiness rests only on oneself.

Iegor listened attentively, and obviously quite took in Levin's idea, but by way of assent to it he enunciated, greatly to Levin's surprise, the observation that when he had lived with good masters he had always been satisfied with his masters, and now was perfectly satisfied with his employer, though he was a Frenchman.

"Wonderfully goodhearted fellow!" thought Levin.

"Well, but you yourself, Iegor, when you got married, did you love your wife?"

"Ay! And why not?" responded Iegor.

And Levin saw that Iegor too was in an excited state and intending to express all his most heartfelt emotions.

"My life, too, has been a wonderful one. From a child up..." he was beginning with flashing eyes, apparently catching Levin's enthusiasm, just as people catch yawning.

But at that moment a ring was heard. Iegor departed, and Levin was left alone. He had eaten scarcely anything at dinner, had refused tea and supper at Sviiazhsky's, but he was incapable of thinking of supper. He had not slept the previous night, but was incapable of thinking of sleep either. His room was cold, but he was oppressed by heat. He opened both the movable panes in his windows and sat down on the table opposite the open panes. Over the snow-covered roofs could be seen a decorated cross, with chains, and above it the rising triangle of Auriga, with the yellowish light of Capella. He gazed at the cross, then at the star, drank in the fresh freezing air that flowed evenly into the room, and followed as though in a dream the images and memories that rose in his imagination. At four o'clock he heard steps in the passage and peeped out of the door. It was the gambler Miaskin, whom he knew, coming from the club. He walked gloomily, frowning and coughing. "Poor, unlucky fellow!" thought Levin, and tears came into his eyes from love and pity for this man. He would have talked with him, and tried to comfort him, but remembering that he had nothing but his shirt on, he changed his mind and sat down again at the open pane to bathe in the cold air and gaze at the exquisite lines of the cross, silent, but full of meaning for him, and the mounting lurid yellow star. At six o'clock there was a noise of people polishing the floors, and church bells ringing to some divine service, and Levin felt that he was beginning to get frozen. He closed the pane, washed, dressed, and went out into the street.

## XV.

The streets were still empty. Levin went to the house of the Shcherbatskys. The visitors' doors were closed and everything was asleep. He walked back, went into his room again, and asked for coffee. The day servant, not Iegor this time, brought it to him. Levin would have entered into conversation with him, but a bell rang for the servant, and he went out. Levin tried to drink coffee and take a bite of a roll, but his mouth was quite at a loss what to do with the roll. Levin, rejecting the roll, put on his coat and went out again for a walk. It was nine o'clock when he reached the Shcherbatskys' steps the second time. In the house they were only just up, and the cook came out to go marketing. He had to get through at least two hours more.

All that night and morning Levin lived perfectly unconsciously, and felt perfectly lifted out of the conditions of material life. He had eaten nothing for a whole day, he had not slept for two nights, had spent several hours undressed in the frozen air, and felt not only fresher and stronger than ever, but felt utterly independent of his body; he moved without muscular effort, and felt as if he could do anything. He was convinced he could fly upward or lift the corner of the house, if need be. He spent the remainder of the time in the street, incessantly looking at his watch and gazing about him.

And what he saw then, he never saw again after. Especially the children going to school, the blue-gray doves fluttering down from the roofs to the pavement, and the little loaves covered with flour, set out by an unseen hand, touched him. Those loaves, those doves, and those two boys were not of this earth. It all happened at the same time: a boy ran toward a dove and glanced smiling at Levin; the dove, with a whirl of her wings, darted away, flashing in the sun, amid grains of snow that quivered in the air, while from a little window there came a smell of fresh-baked bread, and the loaves were set out. All of this together was so extraordinarily resplendent that Levin laughed and cried with delight. Going a long way round by Gazetny Lane and Kislovka, he went back again to the hotel, and, putting his watch before him, sat down to wait for twelve o'clock. In the next room they were talking about some sort of machines, and swindling, and coughing their morning coughs. They did not realize that the hand was near twelve. The hand reached it. Levin went out on the steps. The sleigh drivers clearly knew all about it. They crowded round Levin with happy faces, quarreling among themselves, and offering their services. Trying not to offend the other sleigh drivers, and promising to drive with them too, Levin took one and told him to drive

to the Shcherbatskys'. The sleigh driver was splendid in a white shirt collar, sticking out over his overcoat and into his strong, full-blooded red neck. The sleigh was high and comfortable, and altogether such a one as Levin never drove in after, and the horse was a good one, and tried to gallop yet didn't seem to move. The driver knew the Shcherbatskys' house, and drew up at the entrance, squaring his arms and saying a "Whoa!" especially indicative of respect for his fare. The Shcherbatskys' hall porter certainly knew all about it. This was evident from the smile in his eyes and the way he said:

"Well, it's a long while since you've been to see us, Konstantin Dmitrievich!"

Not only did he know all about it, but he was unmistakably delighted and making efforts to conceal his joy. Looking into his kindly old eyes, Levin realized even something new in his happiness.

"Are they up?"

"Pray walk in! Leave it here," said he, smiling, as Levin would have come back to take his hat. That meant something.

"To whom shall I announce your honor?" asked the footman.

The footman, though a young man, and one of the new school of footmen a dandy was a very kindhearted, good fellow, and he too knew all about it.

"The Princess... the Prince... the young Princess..." said Levin.

The first person he saw was Mademoiselle Linon. She walked across the room, and her ringlets and her face were beaming. He had barely spoken to her, when suddenly he heard the rustle of a skirt at the door, and Mademoiselle Linon vanished from Levin's eyes, and a joyful terror came over him at the nearness of his happiness. Mademoiselle Linon was in great haste, and, leaving him, went out at the other door. Directly she had gone out, swift, swift light steps sounded on the parquet, and his bliss, his life, his own self what was best in himself, what he had so long sought and longed for was quickly, so quickly approaching him. She did not walk, but seemed, by some unseen force, to float toward him.

He saw nothing but her clear, truthful eyes, frightened by the same bliss of love that flooded his heart. Those eyes were shining nearer and nearer, blinding him with their light of love. She stopped close to him, touching him. Her hands rose and dropped on his shoulders.

She had done all she could she had run up to him and given herself up entirely, shy and happy. He put his arms round her, and pressed his lips to her mouth, which sought his kiss.

She too had not slept all night, and had been expecting him all the morning.

Her mother and father had consented without demur, and were happy in her happiness. She had been waiting for him. She wanted to be the first to tell him her happiness and his. She had got ready to see him alone, and had been delighted at the idea, and had been shy and ashamed, and did not know herself what she was to do. She had heard his steps and voice, and had waited at the door for Mademoiselle Linon to go. Mademoiselle Linon had gone away. Without thinking, without asking herself how and what, she had gone up to him, and did as she was doing.

"Let us go to mamma!" she said, taking him by the hand. For a long while he could say nothing, not so much because he was afraid of desecrating the loftiness of his emotion by a word, as that every time he tried to say something, instead of words he felt that tears of happiness were welling up. He took her hand and kissed it.

## Anna Karenina

"Can it be true?" he said at last in a choked voice. "I can't believe you love me, dear!"

She smiled at that "dear," and at the timidity with which he glanced at her.

"Yes!" she said significantly, deliberately. "I am so happy!"

Without letting go his hand, she went into the drawing room. The Princess, seeing them, breathed quickly, and immediately began to cry, and then immediately began to laugh, and, with a vigorous step Levin had not expected, ran up to him, and hugging his head, kissed him, wetting his cheeks with her tears.

"So it is all settled! I am glad. Love her. I am glad... Kitty!"

"You've not been long settling things," said the old Prince, trying to seem unmoved; but Levin noticed that his eyes were wet when he turned to him. "I've long always wished for this!" said the Prince, taking Levin by the arm and drawing him toward himself. "Even when this little featherhead fancied..."

"Papa!" shrieked Kitty, and shut his mouth with her hands.

"Well, I won't!" he said. "I'm very, very... plea... Oh, what a fool I am...."

He embraced Kitty, kissed her face, her hand, her face again, and made the sign of the cross over her.

And there came over Levin a new feeling of love for this man, the old Prince, till then so little known to him, when he saw how slowly and tenderly Kitty kissed his muscular hand.

## XVI.

The Princess was sitting in her armchair, silent and smiling; the Prince sat down beside her. Kitty stood by her father's chair, still holding his hand. All were silent.

The Princess was the first to put everything into words, and to translate all thoughts and feelings into practical questions. And all felt equally strange and painful for the first minute.

"When is it to be? We must have the benediction and announcement. And when's the wedding to be? What do you think, Alexandre?"

"Here he is," said the old Prince, pointing to Levin "he's the principal person in the matter."

"When?" said Levin blushing. "Tomorrow. If you ask me, I should say, the benediction today, and the wedding tomorrow."

"Come, mon cher, that's nonsense!"

"Well, in a week."

"He's quite mad."

"No, why so?"

"Well, upon my word!" said the mother, smiling, delighted at this haste. "How about the trousseau?"

## Anna Karenina

"Will there really be a trousseau and all that?" Levin thought with horror. "But can the trousseau and the benediction and all that can it spoil my happiness? Nothing can spoil it!" He glanced at Kitty and noticed that she was not in the least, not in the very least, disturbed by the idea of the trousseau. "Then it must be all right," he thought.

"Oh, I know nothing about it; I only said what I should like," he said apologetically.

"We'll talk it over, then. The benediction and announcement can take place now. That's very well."

The Princess went up to her husband, kissed him, and would have gone away, but he held her back, embraced her, and tenderly, as a young lover, kissed her several times, smiling. The old people were obviously muddled for a moment, and did not quite know whether it was they who were in love again or their daughter. When the Prince and the Princess had gone, Levin went up to his betrothed and took her hand. He was self-possessed now and could speak, and he had a great deal he wanted to tell her. But he did not say at all what he had to say.

"How I knew it would be so! I never hoped for it; and yet in my heart I was always sure," he said. "I believe that it was ordained."

"And I?" she said. "Even when..." She stopped and went on again, looking at him resolutely with her truthful eyes, "Even when I thrust my happiness from me. I always loved you only, but I was carried away. I ought to tell you... Can you forgive it?"

"Perhaps it was for the best. You will have to forgive me so much. I ought to tell you..."

This was one of the things he had meant to speak about. He had resolved from the first to tell her two things that he was not chaste as she was, and that he was not a believer. It was agonizing, but he considered he ought to tell her both these facts.

"No, not now, later!" he said.

"Very well, later, but you must certainly tell me. I'm not afraid of anything. I want to know everything. Now it is settled."

He added:

"Settled that you'll take me whatever I may be you won't give me up? Yes?"

"Yes, yes."

Their conversation was interrupted by Mademoiselle Linon, who with an affected but tender smile came to congratulate her favorite pupil. Before she had gone, the servants came in with their congratulations. Then relations arrived, and there began that state of blissful absurdity from which Levin did not emerge till the day after his wedding. Levin was in a continual state of awkwardness and discomfort, but the intensity of his happiness went on increasing all the while. He felt continually that a great deal was being expected of him what, he did not know; and he did everything he was told, and it all gave him happiness. He had thought his engagement would have nothing about it like others, that the ordinary conditions of engaged couples would spoil his special happiness; but it ended in his doing exactly as other people did, and his happiness being only increased thereby and becoming more and more special, more and more unlike anything that had ever happened.

"Now we shall have sweetmeats to eat," said Mademoiselle Linon and Levin drove off to buy sweetmeats.

## Anna Karenina

"Well, I'm very glad," said Sviiashsky. "I advise you to get the bouquets from Fomin's."

"Oh, are they wanted?" And he drove to Fomin's.

His brother recommended lending money to him, as he would have so many expenses, presents to give...

"Oh, are presents wanted?" And he galloped to Foulde's.

And at the confectioner's, and at Fomin's, and at Foulde's he saw that he was expected; that they were pleased to see him, and prided themselves on his happiness, just as everyone did whom he had to do with during those days. What was extraordinary was that everyone not only liked him, but even people previously unsympathetic, cold, and callous, were enthusiastic over him, gave way to him in everything, treated his feelings with tenderness and delicacy, and shared his conviction that he was the happiest man in the world because his betrothed was beyond perfection. Kitty too felt the same thing. When Countess Nordstone ventured to hint that she had hoped for something better, Kitty was so angry and proved so conclusively that nothing in the world could be better than Levin, that Countess Nordstone had to admit it, and in Kitty's presence never met Levin without a smile of ecstatic admiration.

The confession he had promised was the one painful incident of this time. He consulted the old Prince, and with his sanction gave Kitty his diary, in which there was written the confession that tortured him. He had written this diary at the time with a view to his future wife. Two things caused him anguish: his lack of purity and his lack of faith. His confession of unbelief passed unnoticed. She was religious, had never doubted the truths of religion, but his external unbelief did not affect her in the least. Through love she knew all his soul, and in his soul she saw what she wanted, and that such a state of soul should be called unbelieving was to her a matter of no account. The other confession set her weeping bitterly.

Levin, not without an inner struggle, handed her his diary. He knew that between him and her there could not be, and should not be, any secrets, and so he had decided that so it must be. But he had not realized what an effect it would have on her, he had not put himself in her place. It was only when the same evening he came to their house before the theater, went into her room, and saw her tearstained, pitiful, sweet face, miserable with the suffering he had caused and nothing could undo, that he felt the abyss that separated his shameful past from her dovelike purity, and was appalled at what he had done.

"Take them, take these dreadful books!" she said, pushing away the notebooks lying before her on the table. "Why did you give them me? No, it was better anyway," she added, touched by his despairing face. "But it's awful, awful!"

His head sank, and he was silent. He could say nothing.

"You can't forgive me," he whispered.

"Yes, I forgive you; but it's horrible!"

But his happiness was so immense that this confession did not shatter it, it only added another shade to it. She forgave him; but from that time, more than ever, he considered himself unworthy of her, morally bowed down lower than ever before her, and prized more highly than ever his undeserved happiness.

## XVII.

Unconsciously going over in his memory the conversations that had taken place during and after dinner, Alexei

Alexandrovich returned to his solitary room. Darya Alexandrovna's words about forgiveness had aroused in him nothing but annoyance. The applicability or nonapplicability of the Christian precept to his own case was too difficult a question to be discussed lightly, and this question had long ago been answered by Alexei Alexandrovich in the negative. Of all that had been said, what stuck most in his memory was the phrase of stupid, good-natured Turovtsin: "Acted like a man, he did! Called him out and shot him!" Everyone had apparently shared this feeling, though from politeness they had not expressed it.

"But the matter is settled; it's useless thinking about it," Alexei Alexandrovich told himself. And thinking of nothing but the journey before him, and the revision work he had to do, he went into his room and asked the porter who escorted him where his man was; the porter said that the man had just gone out. Alexei Alexandrovich ordered tea to be sent him, sat down to the table, and, taking the schedule, began considering the route of his journey.

"Two telegrams," said his valet, coming into the room. "I beg your pardon, Your Excellency; I'd just stepped out this very minute."

Alexei Alexandrovich took the telegrams and opened them. The first telegram was the announcement of Stremov's appointment to the very post Karenin had coveted. Alexei Alexandrovich flung the telegram down, and, flushing, got up and began to pace up and down the room. "Quos vult perdere dementat," he said, meaning by quos the persons responsible for this appointment. He was not so much annoyed at not receiving the post, as at having been so conspicuously passed over; but it was incomprehensible, amazing to him that they did not see that the wordy phrasemonger Stremov was the last man fit for it. How could they fail to see they were ruining themselves, lowering their prestige by this appointment?

"Something else in the same line," he said to himself bitterly, opening the second telegram. The telegram was from his wife. Her name, written in blue pencil, "Anna," was the first thing that caught his eye. "I am dying; I beg, I implore you to come. I shall die easier with your forgiveness," he read. He smiled contemptuously, and flung down the telegram. That this was a trick and a fraud, of that he thought for the first minute there could be no doubt.

"There is no deceit she would stick at. She was near her confinement. Perhaps it is the confinement. But what can be their aim? To legitimize the child, to compromise me, and prevent a divorce," he thought. "But something was said in it: I am dying..." He read the telegram again, and suddenly the plain meaning of what was said in it struck him. "And if it is true?" he said to himself. "If it is true that in the moment of agony and nearness to death she is genuinely penitent, and I, taking it for a trick, refuse to go? That would not only be cruel, and everyone would blame me, but it would be stupid on my part."

"Piotr, call a coach; I am going to Peterburg," he said to his servant.

Alexei Alexandrovich decided that he would go to Peterburg and see his wife. If her illness was a trick, he would say nothing and go away again. If she were really in danger, and wished to see him before her death, he would forgive her if he found her alive, and pay her the last duties if he came too late.

All the way he thought no more of what he ought to do.

With a sense of weariness and uncleanness from the night spent in the train, in the early fog of Peterburg, Alexei Alexandrovich drove through the deserted Nevsky Prospect, and stared straight before him, without thinking of what was awaiting him. He could not think about it, because in picturing what would happen, he could not drive away the reflection that her death would at once remove all the difficulty of his position. Bakers, closed shops, night cabmen, street sweepers sweeping the pavements flashed past his eyes, and he watched it all, trying to smother the thought of what was awaiting him, and what he dared not hope for, and yet was hoping for. He drove



## Anna Karenina

up to the steps. A hackney sleigh, and a coach with its coachman asleep, stood at the entrance. As he went into the entry, Alexei Alexandrovich seemed to get out his resolution from the remotest corner of his brain, and mastered it thoroughly. Its meaning ran: "If it's a trick, then calm contempt and departure. If truth, do what is seemly."

The porter opened the door before Alexei Alexandrovich rang. The porter, Kapitonich, looked queer in an old coat, without a tie, and in slippers.

"How is your mistress?"

"She was confined yesterday, successfully."

Alexei Alexandrovich stopped short and turned white. He felt distinctly now how intensely he had longed for her death.

"And how is she?"

Kornei in his morning apron ran downstairs.

"Very ill," he answered. "There was a consultation yesterday, and the doctor's here now."

"Take my things," said Alexei Alexandrovich, and, feeling some relief at the news that there was still hope of her death, he went into the hall.

On the hatstand there was a military overcoat. Alexei Alexandrovich noticed it and asked:

"Who is here?"

"The doctor, the midwife, and Count Vronsky."

Alexei Alexandrovich went into the inner rooms.

In the drawing room there was no one; at the sound of his steps the midwife came out of Anna's boudoir, in a cap with lilac ribbons.

She went up to Alexei Alexandrovich, and with the familiarity given by the approach of death took him by the arm and drew him toward the bedroom.

"Thank God you've come! She keeps on talking about you, and nothing but you," she said.

"Make haste with the ice!" the doctor's peremptory voice came from the bedroom.

Alexei Alexandrovich went into the boudoir. At her table, sitting sideways in a low chair, was Vronsky, his face hidden in his hands, weeping. He jumped up at the doctor's voice, took his hands from his face, and saw Alexei Alexandrovich. Seeing the husband, he was so overwhelmed that he sat down again, drawing his head into his shoulders, as if he wanted to disappear; but he made an effort over himself, got up and said:

"She is dying. The doctors say there is no hope. I am entirely in your power, only let me be here... though I am at your disposal. I..."

Alexei Alexandrovich, seeing Vronsky's tears, felt a rush of that nervous emotion always produced in him by the sight of other people's sufferings, and, turning away his face, he moved hurriedly to the door, without hearing the

rest of the words. From the bedroom came the sound of Anna's voice saying something. Her voice was lively, animated, with exceedingly distinct intonations. Alexei Alexandrovich went into the bedroom, and walked up to the bed. She was lying with her face turned toward him. Her cheeks were flushed crimson, her eyes glittered, her little white hands thrust out from the cuffs of her dressing gown were playing with the quilt, twisting it about. It seemed as though she were not only well and blooming, but in the happiest frame of mind. She was talking rapidly, musically, and with exceptionally correct articulation and expressive intonation.

"Because Alexei I am speaking of Alexei Alexandrovich (what a strange and awful thing that both are Alexeis, isn't it?) Alexei would not refuse me. I should forget, he would forgive... But why doesn't he come? He's so good, he doesn't know himself how good he is. Ah, my God, what pangs! Give me some water, quick! Oh, that will be bad for her my little girl! Oh, very well then, give her to a nurse. Yes, I agree, it's better in fact. He'll be coming; it will hurt him to see her. Give her to the nurse."

"Anna Arkadyevna, he has come. Here he is!" said the midwife, trying to attract her attention to Alexei Alexandrovich.

"Oh, what nonsense!" Anna went on, not seeing her husband. "No, give her to me; give me my little one! He has not come yet. You say he won't forgive me, because you don't know him. No one knows him. I'm the only one, and it was hard for me even. I ought to know his eyes Seriozha has just such eyes and I can't bear to see them because of it. Has Seriozha had his dinner? I know everyone will forget to do it. He would not forget. Seriozha must be moved into the corner room, and Mariette must be asked to sleep with him."

All of a sudden she shrank back, and was silent; and in terror, as though expecting a blow, as though to defend herself, she raised her hands to her face. She had seen her husband.

"No, no!" she began. "I am not afraid of him; I am afraid of death. Alexei, come here. I am in a hurry, because I've no time, I haven't long left to live; the fever will begin directly and I shall understand nothing more. Now I understand, I understand it all I see it all!"

Alexei Alexandrovich's wrinkled face wore an expression of suffering; he took her by the hand and tried to say something, but he could not utter it; his lower lip quivered, but he still went on struggling with his emotion, and only now and then glanced at her. And each time he glanced at her, he saw her eyes gazing at him with such passionate and exultant tenderness as he had never yet seen in them.

"Wait a minute, you don't know... Stay a little, stay!..." She stopped, as though collecting her ideas. "Yes," she began, "yes, yes, yes! This is what I wanted to say. Don't be surprised at me. I'm still the same... But there is another woman in me I'm afraid of her: she loved that man, and I tried to hate you, and could not forget about her that used to be. That woman isn't myself. Now I'm my real self. I'm dying now, I know I shall die ask him. Even now I feel see here, the weights on my feet, on my hands, on my fingers. My fingers see how huge they are! But this will soon be all over... Only one thing I want: forgive me, forgive me quite. I'm terrible, but my nurse would tell me the holy martyr what was her name? She was worse. And I'll go to Rome; there's a wilderness, and there I shall be no trouble to anyone, only I'll take Seriozha and the little one.... No, you can't forgive me! I know, it can't be forgiven! No, no, go away, you're too good!" She held his hand in one burning hand, while she pushed him away with the other.

The nervous agitation of Alexei Alexandrovich kept increasing, and had by now reached such a point that he ceased to struggle with it. He suddenly felt that what he had regarded as nervous agitation was on the contrary a blissful spiritual condition that gave him all at once a new happiness he had never known. He did not think that the Christian law, which he had been all his life trying to follow, enjoined on him to forgive and love his enemies; but a joyous feeling of love and forgiveness for his enemies filled his heart. He knelt down, and laying his head in the curve of her arm, which burned him as with fire through the sleeve, he sobbed like a little child. She put her

## Anna Karenina

arm around his head, which was beginning to grow bald, moved toward him, and with defiant pride lifted up her eyes.

"That is he. I knew him! Now, good-bye, everyone, good-bye!... They've come again; why don't they go away?... Oh, take these fur coats off me!"

The doctor unloosed her hands, carefully laying her on the pillow, and covered her up to the shoulders. She lay back submissively, and looked before her with beaming eyes.

"Remember one thing, that I needed nothing but forgiveness, and I want nothing more.... Why doesn't he come?" she said, turning to the door, toward Vronsky. "Do come, do come! Give him your hand."

Vronsky came to the side of the bed, and seeing Anna, again hid his face in his hands.

"Uncover your face look at him! He's a saint," she said. "Oh! uncover your face, do uncover it!" she said angrily. "Alexei Alexandrovich, do uncover his face! I want to see him."

Alexei Alexandrovich took Vronsky's hands and drew them away from his face, which was awful with the expression of agony and shame upon it.

"Give him your hand. Forgive him."

Alexei Alexandrovich gave him his hand, not attempting to restrain the tears that streamed from his eyes.

"Thank God, thank God!" she said, "now everything is ready. Only to stretch my legs a little. There, that's capital. How badly these flowers are done not a bit like a violet," she said, pointing to the hangings. "My God, my God! when will it end? Give me some morphine. Doctor, give me some morphine! Oh, my God, my God!"

And she tossed about on the bed.

The doctors said that it was puerperal fever, and that ninety-nine chances in a hundred it would end in death. The whole day long there was fever, delirium, and unconsciousness. At midnight the patient lay without consciousness, and almost without pulse.

The end was expected every minute.

Vronsky had gone home, but in the morning he came to inquire, and Alexei Alexandrovich, meeting him in the hall, said: "Better stay, she might ask for you," and himself led him to his wife's boudoir. Toward morning there was a return again of excitement, rapid thought and talk, and again it ended in unconsciousness. On the third day it was the same thing, and the doctors said there was hope. That day Alexei Alexandrovich went into the boudoir where Vronsky was sitting, and, closing the door, sat down opposite him.

"Alexei Alexandrovich," said Vronsky, feeling that a statement of the situation was coming, "I can't speak, I can't understand. Spare me! However hard it is for you, believe me, it is more terrible for me."

He would have risen; but Alexei Alexandrovich took him by the hand and said:

"I beg you to hear me out; it is necessary. I must explain my feelings, the feelings that have guided me, and will guide me, so that you may not be in error regarding me. You know I had resolved on a divorce, and had even begun to take proceedings. I won't conceal from you that in beginning this I was in uncertainty, I was in misery; I will confess that I was pursued by a desire to revenge myself on you and on her. When I got the telegram, I came

## Anna Karenina

here with the same feelings; I will say more I longed for her death. But..." He paused, pondering whether to disclose or not to disclose his feelings. "But I saw her and forgave her. And the happiness of forgiveness has revealed to me my duty. I forgive completely. I would offer the other cheek, I would give my cloak if my coat be taken. I pray to God only not to take from me the bliss of forgiveness!"

Tears stood in his eyes, and the luminous, serene look in them impressed Vronsky.

"This is my position: you can trample me in the mud, make me the laughingstock of the world I will not abandon her, and I will never utter a word of reproach to you," Alexei Alexandrovich went on. "My duty is clearly marked for me; I ought to be with her, and I will be. If she wishes to see you, I will let you know, but now I suppose it would be better for you to go away."

He got up, and sobs cut short his words. Vronsky too was getting up, and in a stooping, not yet erect posture, looked up at him from under his brows. He did not understand Alexei Alexandrovich's feeling, but he felt that it was something higher, and even unattainable for him with his view of life.

### XVIII.

After the conversation with Alexei Alexandrovich, Vronsky went out on the steps of the Karenins' house and stood still, with difficulty remembering where he was, and where he ought to walk or drive. He felt disgraced, humiliated, guilty, and deprived of all possibility of washing away his humiliation. He felt thrust out of the beaten track along which he had so proudly and lightly walked till then. All the habits and rules of his life that had seemed so firm, had turned out suddenly false and inapplicable. The betrayed husband, who had figured till that time as a pitiful creature, an incidental and somewhat ludicrous obstacle to his happiness, had suddenly been summoned by her herself, elevated to an awe-inspiring pinnacle, and on the pinnacle that husband had shown himself not malignant, not false, not ludicrous but kind and straightforward and grand. Vronsky could not but feel this, and the roles were suddenly reversed. Vronsky felt the other's elevation and his own abasement, the other's truth and his own falsehood. He felt that the husband was magnanimous even in his sorrow, while he had been base and petty in his deceit. But this sense of his own humiliation before the man he had unjustly despised made up only a small part of his misery. He felt unutterably wretched now, for his passion for Anna, which had seemed to him of late to be growing cooler, now that he knew he had lost her forever, was stronger than ever it had been. He had seen all of her in her illness, had come to know her very soul, and it seemed to him that he had never loved her till then. And now, when he had learned to know her, to love her as she should be loved, he had been humiliated before her, and had lost her forever, leaving with her nothing of himself but a shameful memory. Most terrible of all had been his ludicrous, shameful position when Alexei Alexandrovich had pulled his hands away from his humiliated face. He stood on the steps of the Karenins' house like one distraught, and did not know what to do.

"A hack, sir?" asked the porter.

"Yes a hack."

On getting home, after three sleepless nights, Vronsky, without undressing, lay prone on the sofa, clasping his hands and laying his head on them. His head was heavy. Images, memories, and ideas of the strangest description followed one another with extraordinary rapidity and vividness. First it was the medicine he had poured out for the patient and spilled out of the spoon; then the midwife's white hands; then the queer posture of Alexei Alexandrovich on the floor beside the bed.

"To sleep! To forget!" he said to himself with the serene confidence of a healthy man that if he is tired and sleepy, he will go to sleep at once. And the same instant his head did begin to feel drowsy and he began to drop off into

forgetfulness. The waves of the sea of unconsciousness had begun to meet over his head, when all at once it seemed as though a violent shock of electricity had passed over him. He started so that he leaped up on the springs of the sofa, and leaning on his arms got on his knees in a fright. His eyes were wide open as though he had never been asleep. The heaviness in his head and the flabbiness in his limbs that he had felt a minute before had suddenly gone.

"You may trample me in the mud," he heard Alexei Alexandrovich's words and saw him standing before him, and saw Anna's face with its burning flush and glittering eyes, gazing with love and tenderness not at him but at Alexei Alexandrovich; he saw his own, as he fancied, foolish and ludicrous figure when Alexei Alexandrovich had taken his hands away from his face. He stretched out his legs again and flung himself on the sofa in the same position and shut his eyes.

"To sleep! To sleep!" he repeated to himself. But with his eyes shut he saw more distinctly than ever Anna's face as it had been on the memorable evening before the races.

"This cannot, and will not be, and she wants to wipe it out of her memory. But I cannot live without it. How can we be reconciled? How can we be reconciled?" he said aloud, and unconsciously began to repeat these words. This repetition of words checked the rising of fresh images and memories, which he felt were thronging in his brain. But repeating words did not check his imagination for long. Again, in extraordinarily rapid succession, his best moments rose before his mind, and then his recent humiliation. "Take away his hands," Anna's voice was saying. He takes away his hands and feels the shame-struck and idiotic expression of his face.

He was still lying down, trying to sleep, though he felt there was not the smallest hope of it, and kept repeating stray words from some chain of thought, trying by this to check the rising flood of fresh images. He listened, and heard words repeated in a strange, mad whisper: "You did not appreciate it, did not make enough of it. You did not appreciate it, did not make enough of it."

"What's this? Am I going out of my mind?" he said to himself "Perhaps. What makes men go out of their minds what makes men shoot themselves?" he answered himself, and, opening his eyes, he saw with wonder an embroidered cushion beside him, worked by Varia, his brother's wife. He touched the tassel of the cushion, and tried to think of Varia, of when he had seen her last. But to think of anything extraneous was an agonizing effort. "No, I must sleep!" He moved the cushion up, and pressed his head into it, but he had to make an effort to keep his eyes shut. He jumped up and sat down. "That's all over for me," he said to himself. "I must think what to do. What is left?" His mind rapidly ran through his life apart from his love of Anna.

"Ambition? Serpukhovskoy? Society? The Court?" He could not come to a pause anywhere. All of it had had meaning before, but now there was no reality in it. He got up from the sofa, took off his coat, undid his belt, and, uncovering his hairy chest to breathe more freely, walked up and down the room. "This is how people go mad," he repeated, "and how they shoot themselves... to escape humiliation," he added slowly.

He went to the door and closed it, and then with fixed eyes and clenched teeth he went up to the table, took a revolver, looked it about, turned it to a loaded barrel, and sank into thought. For two minutes, his head bent forward with an expression of an intense effort of thought, he stood with the revolver in his hand, motionless, thinking. "Of course," he said to himself, as though a logical, continuous, and clear chain of reasoning had brought him to an indubitable conclusion. In reality this "of course," so convincing to him, was simply the result of repeating exactly the same circle of memories and images through which he had already passed ten times during the last hour. There were the same memories of happiness lost forever, the same conception of the senselessness of everything to come in life, the same consciousness of humiliation. There was the same sequence of these images and emotions too.

"Of course," he repeated, when for the third time his thought passed again round the same spellbound circle of memories and images, and, putting the revolver to the left side of his chest, and twitching vigorously with his whole hand, as though squeezing it in his fist, he pulled the trigger. He did not hear the sound of the shot, but a violent blow on his chest knocked him down. He tried to clutch at the edge of the table, dropped the revolver, staggered, and sat down on the ground, looking about him in astonishment. He did not recognize his room, as he looked up from the ground at the bent legs of the table, at the wastepaper basket, and the tigerskin rug. The hurried, creaking steps of his servant coming through the drawing room brought him to his senses. He made an effort at thought, and was aware that he was on the floor; and seeing blood on the tigerskin rug and on his arm, he knew he had shot himself.

"Idiotic! Missed!" he said, fumbling after the revolver. The revolver was close beside him he was groping farther off. Still groping for it, he stretched out to the other side, and not being strong enough to keep his balance, fell over, streaming with blood.

The elegant, whiskered manservant, who used to be continually complaining to his acquaintances of the delicacy of his nerves, was so panic-stricken on seeing his master lying on the floor that he left him losing blood while he ran for assistance. An hour later Varia, his brother's wife, had arrived, and with the assistance of three doctors, whom she had sent for in all directions, and who all appeared at the same moment, she got the wounded man to bed, and remained to nurse him.

## XIX.

The mistake made by Alexei Alexandrovich, when preparing to see his wife, in having overlooked the possibility that her repentance might be sincere, and that he might forgive her, and she might not die this mistake was two months after his return from Moscow brought home to him in all its significance. But the mistake made by him had arisen not simply from his having overlooked that contingency, but also from the fact that, until the day of his interview with his dying wife, he had not known his own heart. At his sick wife's bedside he had for the first time in his life given way to that feeling of sympathetic suffering always roused in him by the sufferings of others, and hitherto looked on by him with shame as a harmful weakness. And pity for her, and remorse for having desired her death, and, most of all, the joy of forgiveness, made him at once conscious, not simply of the relief of his own sufferings, but of a spiritual peace he had never experienced before. He suddenly felt that the very thing that was the source of his sufferings had become the source of his spiritual joy; that what had seemed insolvable while he was judging, blaming, and hating, had become clear and simple when he forgave and loved.

He forgave his wife and pitied her for her sufferings and her remorse. He forgave Vronsky, and pitied him, especially after reports reached him of his despairing action. He felt more for his son than before. And he blamed himself now for having taken too little interest in him. But for the little newborn baby he felt a quite peculiar sentiment, not of pity only, but of tenderness. At first, from a feeling of compassion alone, he had been interested in the delicate little creature, who was not his child, and who was neglected during her mother's illness, and would certainly have died if he had not troubled about her; and he did not himself observe how fond he became of her. He would go into the nursery several times a day, and sit there for a long while, so that the nurse and wet nurses, who were at first afraid of him, got quite used to his presence. Sometimes, for half an hour at a stretch, he would sit silently gazing at the saffron-red, downy, wrinkled face of the sleeping baby, watching the movements of the frowning brows, and the plump little hands with clenched fingers, that rubbed the little eyes and bridge of the nose with the back of their palms. At such moments particularly Alexei Alexandrovich had a sense of perfect peace and inward harmony, and saw nothing extraordinary in his position, nothing that ought to be changed.

But, as time went on, he saw more and more distinctly that however natural the position now seemed to him, he would not long be allowed to remain in it. He felt that besides the blessed spiritual force controlling his soul, there was another, a brutal force, as powerful, or more powerful, which controlled his life, and that this force would not

## Anna Karenina

allow him that humble peace he longed for. He felt that everyone was looking at him with inquiring wonder, that he was not understood, and that something was expected of him. Above all, he felt the instability and unnaturalness of his relations with his wife.

When the softening effect of the near approach of death had passed away, Alexei Alexandrovich began to notice that Anna was afraid of him, ill at ease with him, and could not look him straight in the face. She seemed to be wanting, yet not daring, to tell him something; and, as though foreseeing that their present relations could not continue, she seemed to be expecting something from him.

Toward the end of February Anna's baby daughter, who had also been named Anna, happened to fall ill. Alexei Alexandrovich was in the nursery in the morning, and leaving orders for the doctor to be sent for, he went to his office. On finishing his work, he returned home at four. Going into the hall he saw a handsome footman, in a gallooned livery and a bear-fur cape, holding a white fur cloak.

"Who is here?" asked Alexei Alexandrovich.

"Princess Elizaveta Fiodorovna Tverskaia," the footman answered, and it seemed to Alexei Alexandrovich that the fellow grinned.

During all this difficult time Alexei Alexandrovich had noticed that his worldly acquaintances, especially women, took a peculiar interest in him and his wife. He observed all these acquaintances with difficulty concealing their mirth at something the same mirth that he had perceived in the lawyer's eyes, and, just now, in the eyes of this footman. Everyone seemed, somehow, hugely delighted, as though just come from a wedding. When they met him, they inquired with ill-disguised enjoyment after his wife's health.

The presence of Princess Tverskaia was unpleasant to Alexei Alexandrovich from the memories associated with her, and also because he disliked her, and he went straight to the nursery. In the day nursery Seriozha, leaning on the table with his legs on a chair, was drawing and chatting away merrily. The English governess, who had during Anna's illness replaced the French one, was sitting near the boy, knitting mignardise. She hurriedly got up, curtsied, and pulled Seriozha.

Alexei Alexandrovich stroked his son's hair, answered the governess's inquiries about his wife, and asked what the doctor had said of the baby.

"The doctor said it was nothing serious, and he ordered a bath, sir."

"But she is still in pain," said Alexei Alexandrovich, listening to the baby's screaming in the next room.

"I think it's the wet nurse, sir," the Englishwoman said firmly.

"What makes you think so?" he asked, stopping short.

"It's just as it was at Countess Paul's, sir. They gave the baby medicine, and it turned out that the baby was simply hungry: the wet nurse had no milk, sir."

Alexei Alexandrovich pondered, and after standing still a few seconds he went in at the other door. The baby was lying with its head thrown back, stiffening itself in the nurse's arms, and would not take the plump breast offered it; and it never ceased screaming in spite of the double hushing of the wet nurse and the other nurse, who was bending over her.

"Still no better?" said Alexei Alexandrovich.

## Anna Karenina

"She's very restless," answered the nurse in a whisper.

"Miss Edwards says that perhaps the wet nurse has no milk," he said.

"I think so too, Alexei Alexandrovich."

"Then why didn't you say so?"

"Who's one to say it to? Anna Arkadyevna is still ill..." said the nurse discontentedly.

The nurse was an old servant of the family. And in her simple words there seemed to Alexei Alexandrovich an allusion to his position.

The baby screamed louder than ever, struggling and choking. The nurse, with a gesture of despair, went to it, took it from the wet nurse's arms, and began walking up and down, rocking it.

"You must ask the doctor to examine the wet nurse," said Alexei Alexandrovich.

The smartly dressed and healthy-looking nurse, frightened at the idea of losing her place, muttered something to herself, and, covering her bosom, smiled contemptuously at the idea of doubts being cast on her abundance of milk. In that smile, too, Alexei Alexandrovich saw a sneer at his position.

"Luckless child," said the nurse, hushing the baby, and still walking up and down with it.

Alexei Alexandrovich sat down, and with a despondent and suffering face watched the nurse walking to and fro.

When the child at last was still, and had been put in a deep bed, and the nurse, after smoothing the little pillow, had left her, Alexei Alexandrovich got up, and, walking awkwardly on tiptoe, approached the baby. For a minute he was still, and with the same despondent face gazed at the baby; but all at once a smile that moved his hair and the skin of his forehead, came out on his face, and he went as softly out of the room.

In the dining room he rang the bell, and told the servant who came in to send again for the doctor. He felt vexed with his wife for not being anxious about this charming baby, and in this vexed humor he had no wish to go to her; he had no wish, either, to see Princess Betsy. But his wife might wonder why he did not go to her as usual; and so, overcoming his disinclination, he went toward her bedroom. As he walked over the soft rug toward the door, he could not help overhearing a conversation he did not want to hear.

"If he hadn't been going away, I could have understood your refusal and his too. But your husband ought to be above that," Betsy was saying.

"It's not for my husband it's for myself I don't wish it. Don't say that!" answered Anna's excited voice.

"Yes, but you must care to say good-bye to a man who has shot himself on your account...."

"That's just why I don't want to."

With a dismayed and guilty expression, Alexei Alexandrovich stopped and would have gone back unobserved. But reflecting that this would be undignified, he turned back again, and, clearing his throat, he approached the bedroom. The voices were silent, and he went in.



## Anna Karenina

Anna, in a gray dressing gown, with a crop of short clustering black curls on her round head, was sitting on a settee. The animation died out of her face, as it always did, at the sight of her husband; she dropped her head and looked round uneasily at Betsy. Betsy, dressed in the height of the latest fashion, in a hat that towered over her head like a shade on a lamp, in a dove-colored dress with crude oblique stripes, slanting one way on the bodice and the other way on the skirt, was sitting beside Anna, her tall flat figure held erect. Bowing her head, she greeted Alexei Alexandrovich with an ironical smile.

"Ah!" she said, as though surprised. "I'm very glad you're at home. You never put in an appearance anywhere, and I haven't seen you ever since Anna has been ill. I have heard all about it your anxiety. Yes, you're a wonderful husband!" she said, with a significant and affable air, as though she were bestowing an order of magnanimity on him for his conduct toward his wife.

Alexei Alexandrovich bowed frigidly, and, kissing his wife's hand, asked how she was.

"Better, I think," she said, avoiding his eyes.

"But you've rather a feverish complexion," he said, laying stress on the word "feverish."

"We've been talking too much," said Betsy. "I feel it's selfishness on my part, and I am going away."

She got up, but Anna, suddenly flushing, quickly caught at her hand.

"No, wait a minute, please. I must tell you... no, I mean you," she turned to Alexei Alexandrovich, and her neck and brow were suffused with crimson. "I won't and can't keep anything secret from you," she said.

Alexei Alexandrovich cracked his fingers and bowed his head.

"Betsy's been telling me that Count Vronsky wants to come here to say good-bye before his departure for Tashkend." She did not look at her husband, and was evidently in haste to have everything out, however hard it might be for her. "I told her I could not receive him."

"You said, my dear, that it would depend on Alexei Alexandrovich," Betsy corrected her.

"Oh, no, I can't receive him; and what object would there be in..." She stopped suddenly, and glanced inquiringly at her husband (he did not look at her). "In short, I don't wish it..."

Alexei Alexandrovich advanced and would have taken her hand.

Her first impulse was to jerk back her hand from the damp hand with big swollen veins that sought hers, but with an obvious effort to control herself she pressed his hand.

"I am very grateful to you for your confidence, but..." he said, feeling with confusion and annoyance that what he could decide easily and clearly by himself, he could not discuss before Princess Tverskaia, who to him stood for the incarnation of that brute force which would inevitably control him in the life he led in the eyes of the world, and hinder him from giving way to his feeling of love and forgiveness. He stopped short, looking at Princess Tverskaia.

"Well, good-bye, my darling," said Betsy, getting up. She kissed Anna, and went out. Alexei Alexandrovich escorted her out.

## Anna Karenina

"Alexei Alexandrovich! I know you are a truly magnanimous man," said Betsy, stopping in the little drawing room, and with special warmth shaking hands with him once more. "I am an outsider, but I love her so, and respect you, that I venture to advise. Receive him. Alexei Vronsky is the soul of honor, and he is going away to Tashkend."

"Thank you, Princess, for your sympathy and advice. But the question of whether my wife can or cannot see anyone she must decide herself."

He said this from habit, lifting his brows with dignity, and reflected immediately that whatever his words might be, there could be no dignity in his position. And he saw this by the suppressed, malicious, and ironical smile with which Betsy glanced at him after this phrase.

## XX.

Alexei Alexandrovich took leave of Betsy in the drawing room, and went to his wife. She was lying down, but hearing his steps she sat up hastily in her former attitude, and looked in a scared way at him. He saw she had been crying.

"I am very grateful for your confidence in me." He repeated gently in Russian the phrase he had said in Betsy's presence in French, and sat down beside her. When he spoke to her in Russian, using the Russian "thou" of intimacy and affection, it was insufferably irritating to Anna. "And I am very grateful for your decision. I, too, imagine that since he is going away, there is no sort of necessity for Count Vronsky to come here. However, if..."

"But I've said so already, so why repeat it?" Anna suddenly interrupted him, with an irritation she could not succeed in repressing. "No sort of necessity," she thought, "for a man to come and say good-bye to the woman he loves, for whom he was ready to ruin himself, and has ruined himself, and who cannot live without him. No sort of necessity!" She compressed her lips, and dropped her burning eyes to his hands with their swollen veins. They were slowly rubbing each other. "Let us never speak of it," she added more calmly.

"I have left this question to you to decide, and I am very glad to see..." Alexei Alexandrovich was beginning.

"That my wish coincides with your own," she finished quickly, exasperated at his talking so slowly while she knew beforehand all he would say.

"Yes," he assented; "and Princess Tverskaia's interference in the most difficult private affairs is utterly uncalled for. She especially..."

"I don't believe a word of what's said about her," said Anna quickly. "I know she really cares for me."

Alexei Alexandrovich sighed and said nothing. She played nervously with the tassel of her dressing gown, glancing at him with that torturing sensation of physical repulsion for which she blamed herself, though she could not control it. Her only desire now was to be rid of his repelling presence.

"I have just sent for the doctor," said Alexei Alexandrovich.

"I am very well; what do I want the doctor for?"

"No the little one cries, and they say the wet nurse hasn't enough milk."

"Why didn't you let me nurse her, when I begged to? Anyway" (Alexei Alexandrovich knew what was meant by

that "anyway"), "she's a baby, and they're killing her." She rang the bell and ordered the baby to be brought her. "I begged to nurse her, I wasn't allowed to, and now I'm blamed for it."

"I don't blame..."

"Yes, you do blame me! My God! Why didn't I die!" And she broke into sobs. "Forgive me, I'm nervous, I'm unjust," she said, controlling herself, "but do go away..."

"No, it can't go on like this," Alexei Alexandrovich said to himself resolutely as he left his wife's room.

Never had the impossibility of his position in the world's eyes, and his wife's hatred of him, and, above all, the might of that mysterious brutal force that guided his life against his spiritual inclinations and exacted conformity with its decrees and a change in his present attitude to his wife never had it been presented to him with such distinctness as on that day. He saw clearly that all the world and Anna expected something of him, but what exactly he could not make out. He felt that this was rousing in his soul a feeling of anger destructive of his peace of mind, and of all the good of his achievement. He believed that for Anna herself it would be better to break off all relations with Vronsky; but if they all thought this out of the question, he was even ready to allow these relations to be renewed, so long as the children were not disgraced, and he was not deprived of them nor forced to change his position. Bad as this might be, it was at any rate better than a rupture, which would put her in a hopeless and shameful position, and deprive him of everything he cared for. But he felt helpless; he knew beforehand that everyone was against him, and that he would not be allowed to do what seemed to him now so natural and right, but would be forced to do what was wrong, though to them it seemed the proper thing.

## XXI.

Before Betsy had time to walk out of the drawing room, she was met in the doorway by Stepan Arkadyevich, who had just come from Ieliseev's, where a consignment of fresh oysters had been received.

"Ah! Princess! What a delightful meeting!" he began. "I've been to see you."

"A meeting for one minute, for I'm going," said Betsy, smiling and putting on her glove.

"Don't put on your glove yet, Princess; let me kiss your hand. There's nothing I'm so thankful to the revival of the old fashions for as kissing the hand." He kissed Betsy's hand. "When shall we see each other?"

"You don't deserve it," answered Betsy, smiling.

"Oh, yes, I deserve a great deal, for I've become a most serious person. I not only manage my own domestic affairs, but other people's too," he said, with a significant expression.

"Oh, I'm so glad!" answered Betsy, at once understanding that he was speaking of Anna. And, going back into the drawing room, they stood in a corner. "He's killing her," said Betsy in a whisper full of meaning. "It's impossible, impossible..."

"I'm so glad you think so," said Stepan Arkadyevich, shaking his head with a serious and sympathetically distressed expression, "that's what I've come to Peterburg for."

"The whole town's talking of it," she said. "It's an impossible situation. She pines and pines away. He doesn't understand that she's one of those women who can't trifle with their feelings. One of two things: either let him take her away, act with energy, or give her a divorce. This is stifling her."

## Anna Karenina

"Yes, yes... just so..." Oblonsky said, sighing.

"That's what I've come for. At least not solely for that... I've been made a Kammerherr; of course, one has to give thanks. But the chief thing was having to settle this."

"Well, God help you!" said Betsy.

After accompanying Betsy to the outside hall, once more kissing her hand above the glove, at the point where the pulse beats, and murmuring to her such unseemly nonsense that she did not know whether to laugh or to be angry, Stepan Arkadyevich went to his sister. He found her in tears.

Although he happened to be bubbling over with good spirits, Stepan Arkadyevich immediately and quite naturally fell into the sympathetic, poetically emotional tone which harmonized with her mood. He asked her how she was, and how she had spent the morning.

"Very, very miserably. Today, and this morning, and all past days, and all the days to come," she said.

"I think you're giving way to pessimism. You must rouse yourself, you must look life in the face. I know it's hard, but..."

"I have heard it said that women love men even for their vices," Anna began suddenly, "but I hate him for his virtues. I can't live with him. Do you understand? The sight of him has a physical effect in me I am beside myself from it. I can't, I can't live with him. What am I to do? I have been unhappy, and used to think one couldn't be unhappier, but the awful state of things I am going through now I could never have conceived. Would you believe it, that, knowing he's a good man, a splendid man, that I'm not worth his little finger, I still hate him. I hate him for his generosity. And there's nothing left for me but..."

She would have said "death," but Stepan Arkadyevich would not let her finish.

"You are ill and overwrought," he said; "believe me, you're exaggerating dreadfully. There's nothing so terrible in it."

And Stepan Arkadyevich smiled. No one else in Stepan Arkadyevich's place, having to do with such despair, would have ventured to smile (the smile would have seemed brutal); but in his smile there was so much of sweetness and almost feminine tenderness that his smile did not wound, but softened and soothed. His gentle, soothing words and smiles were as soothing and softening as almond oil. And Anna soon felt this.

"No, Stiva," she said, "I'm lost, lost! Worse than lost! I can't say yet that all is over; on the contrary, I feel that it's not over. I'm an overstrained cord that must snap. But it's not ended yet... And it will have a fearful end."

"No matter, we must let the cord be loosened, little by little. There's no position from which there is no way of escape."

"I have thought, and thought. Only one..."

Again he knew from her terrified eyes that this one way of escape in her thought was death, and he would not let her say it.

"Not at all," he said. "Listen to me. You can't see your own position as I can. Let me tell you candidly my opinion." Again he smiled discreetly his almond-oil smile. "I'll begin from the beginning. You married a man twenty years older than yourself. You married him without love and not knowing what love was. It was a mistake,

let's admit."

"A fearful mistake!" said Anna.

"But, I repeat, it's an accomplished fact. Then you had, let us say, the misfortune to love a man not your husband. That was a misfortune; but that, too, is an accomplished fact. And your husband knew it and forgave it." He stopped at each sentence, waiting for her to object, but she made no answer. "That's that. Now the question is: Can you go on living with your husband? Do you wish it? Does he wish it?"

"I know nothing, nothing."

"But you said yourself that you can't endure him."

"No, I didn't say so. I deny it. I don't know anything, I don't understand anything."

"Yes, but let..."

"You can't understand. I feel I'm lying head downward in a sort of pit, but I ought not to save myself. And I can't..."

"Never mind, we'll slip something under you and pull you out. I understand you: I understand that you can't take it on yourself to express your wishes, your feelings."

"There's nothing, nothing I wish... except for it to be all over."

"But he sees this and knows it. And do you suppose it weighs on him any less than on you? You're wretched, he's wretched, and what good can come of it? While divorce would solve the whole difficulty." With some effort Stepan Arkadyevich brought out his central idea, and looked significantly at her.

She said nothing, and shook her cropped head in dissent. But from the look in her face, that suddenly brightened into its former beauty, he saw that if she did not desire this, it was simply because it seemed to her an unattainable happiness.

"I'm awfully sorry for you both! And how happy I should be if I could arrange things!" said Stepan Arkadyevich, smiling more boldly. "Don't speak, don't say a word! God grant only that I may speak as I feel. I'm going to him."

Anna looked at him with dreamy, shining eyes, and said nothing.

## XXII.

Stepan Arkadyevich, with the same somewhat solemn expression with which he used to take his presidential chair at his board, walked into Alexei Alexandrovich's room. Alexei Alexandrovich was walking about his room with his hands behind his back, thinking of just what Stepan Arkadyevich had been discussing with his wife.

"I'm not interrupting you?" said Stepan Arkadyevich, on the sight of his brother-in-law becoming suddenly aware of a sense of embarrassment unusual with him. To conceal this embarrassment he took out a newly purchased cigarette case that opened in a new way, and, sniffing the leather, took a cigarette out of it.

"No. Do you want anything?" Alexei Alexandrovich said reluctantly.

"Yes, I wished... I wanted... Yes, I wanted to talk to you," said Stepan Arkadyevich, with surprise aware of an unaccustomed timidity.

This feeling was so unexpected and so strange that he did not believe it was the voice of conscience telling him that what he meant to do was wrong. Stepan Arkadyevich made an effort and struggled with the timidity that had come over him.

"I hope you believe in my love for my sister and my sincere affection and respect for you," he said, reddening.

Alexei Alexandrovich stood still and said nothing, but his face struck Stepan Arkadyevich by its expression of an unresisting sacrifice.

"I intended... I wanted to have a little talk with you about my sister and your mutual position," he said, still struggling with an unaccustomed constraint.

Alexei Alexandrovich smiled mournfully, looked at his brother-in-law, and, without answering, went up to the table, took from it an unfinished letter, and handed it to his brother-in-law.

"I think unceasingly of the same thing. And here is what I had begun writing, thinking I could say it better by letter, and that my presence irritates her," he said, as he gave him the letter.

Stepan Arkadyevich took the letter, looked with incredulous surprise at the lusterless eyes fixed so immovably on him, and began to read:

"I see that my presence is irksome to you. Painful as it is to me to believe it, I see that it is so, and cannot be otherwise. I don't blame you, and God is my witness that on seeing you at the time of your illness I resolved with my whole heart to forget all that had passed between us, and to begin a new life. I do not regret, and shall never regret, what I have done; but I have desired one thing your good, the good of your soul and now I see I have not attained that. Tell me yourself what will give you true happiness and peace to your soul. I put myself entirely in your hands, and trust to your feeling of what is right."

Stepan Arkadyevich handed back the letter, and, with the same surprise, continued looking at his brother-in-law, not knowing what to say. This silence was so awkward for both of them that Stepan Arkadyevich's lips began twitching nervously, while he still gazed without speaking at Karenin's face.

"That's what I wanted to say to her," said Alexei Alexandrovich, turning away.

"Yes, yes..." said Stepan Arkadyevich, not able to answer for the tears that were choking him. "Yes, yes, I understand you," he brought out at last.

"I want to know what she would like," said Alexei Alexandrovich.

"I am afraid she does not understand her own position. She is not a judge," said Stepan Arkadyevich, recovering himself. "She is crushed, simply crushed by your generosity. If she were to read this letter, she would be incapable of saying anything she would only hang her head lower than ever."

"Yes, but what's to be done in that case? How explain... how find out her wishes?"

"If you will allow me to give my opinion, I think that it lies with you to point out directly the steps you consider necessary to end the situation."

"So you consider it must be ended?" Alexei Alexandrovich interrupted him. "But how?" he added, with a gesture of his hands before his eyes, not usual with him. "I see no possible way out of it."

"There is some way of getting out of every situation," said Stepan Arkadyevich, standing up and becoming more cheerful. "There was a time when you thought of breaking off... If you are convinced now that you cannot make each other happy..."

"Happiness may be variously understood. But suppose that I agree to everything, that I want nothing: what way is there of getting out of our situation?"

"If you care to know my opinion," said Stepan Arkadyevich, with the same smile of softening, almond-oil tenderness with which he had been talking to Anna. His kindly smile was so winning that Alexei Alexandrovich, feeling his own weakness and unconsciously swayed by it, was ready to believe what Stepan Arkadyevich was saying. "She will never speak out about it. But one thing is possible, one thing she might desire," he went on; "that is the cessation of your relations, and all memories associated with them. To my thinking, in your situation the essential thing is the formation of a new attitude to one another. And that can only rest on a basis of freedom on both sides."

"Divorce," Alexei Alexandrovich interrupted, in a tone of aversion.

"Yes, I imagine that divorce... Yes, divorce," Stepan Arkadyevich repeated, reddening. "That is from every point of view the most rational course for married people who find themselves in the situation you are in. What can be done if married people find that life is impossible for them together? That may always happen."

Alexei Alexandrovich sighed heavily and closed his eyes.

"There's only one point to be considered: is either of the parties desirous of forming new ties? If not, it is very simple," said Stepan Arkadyevich, feeling more and more free from constraint.

Alexei Alexandrovich, scowling with emotion, muttered something to himself, and made no answer. All that seemed so simple to Stepan Arkadyevich, Alexei Alexandrovich had thought over thousands of times. And, so far from being simple, it all seemed to him utterly impossible: divorce, the details of which he knew by this time, seemed to him now out of the question, because the sense of his own dignity and respect for religion forbade his taking upon himself a fictitious charge of adultery, and still more, suffering his wife, pardoned and beloved by him, to be caught in the fact and put to public shame. Divorce appeared to him impossible also on other, still more weighty grounds.

What would become of his son in case of a divorce? To leave him with his mother was out of the question. The divorced mother would have her own illegitimate family, in which his status as a stepson, and his education, would be probably bad. Keep him with him? He knew that would be an act of vengeance on his part, and that he did not desire. But, apart from this, what more than all made divorce seem impossible to Alexei Alexandrovich was that, by consenting to a divorce, he would be completely ruining Anna. The saying of Darya Alexandrovna at Moscow, that in deciding on a divorce he was thinking of himself, and not considering that by this he would be ruining her irrevocably, had sunk into his heart. And connecting this saying with his forgiveness of her, with his devotion to the children, he understood it now in his own way. To consent to a divorce, to give her her freedom, meant in his thoughts to take from himself the last tie that bound him to life the children whom he loved; and to take from her the last prop that kept her on the path of right, to thrust her down to her ruin. If she were divorced, he knew she would join her life to Vronsky's, and their tie would be an illegitimate and criminal one, since a wife, by the interpretation of the ecclesiastical law, could not marry while her husband was living. "She will join him, and in a year or two he will throw her over, or she will form a new tie," thought Alexei Alexandrovich. "And I, by agreeing to an unlawful divorce, shall be to blame for her ruin." He had thought it all over hundreds of times, and

## Anna Karenina

was convinced that a divorce was not at all simple, as Stepan Arkadyevich had said, but was utterly impossible. He did not believe a single word Stepan Arkadyevich said to him; to every word he had a thousand objections to make, but he listened to him, feeling that his words were the expression of that mighty brutal force which controlled his life, and to which he would have to submit.

"The only question is on what terms you agree to give her a divorce. She does not want anything, does not dare ask you for anything she leaves it all to your magnanimity."

"My God, my God! What for?" thought Alexei Alexandrovich, remembering the details of divorce proceedings in which the husband took the blame on himself, and with just the same gesture with which Vronsky had done it, he hid his face in his hands in shame.

"You are troubled, I understand that. But if you think it over..."

"And unto him that smiteth thee on the one cheek offer also the other; and him that taketh away thy cloak forbid not to take thy coat also," thought Alexei Alexandrovich.

"Yes, yes!" he cried in a shrill voice. "I will take the disgrace on myself, I will give up even my son, but... But wouldn't it be better to let it alone? Still, you may do as you like...."

And, turning away so that his brother-in-law could not see him, he sat down on a chair at the window. There was bitterness, there was shame in his heart, but with bitterness and shame he felt joy and emotion at the height of his own meekness.

Stepan Arkadyevich was touched. He was silent for a space.

"Alexei Alexandrovich, believe me, she appreciates your magnanimity," he said. "But it seems it was the will of God," he added, and as he said it felt how foolish a remark it was, and with difficulty repressed a smile at his own foolishness.

Alexei Alexandrovich would have made some reply, but tears stopped him.

"This is an unhappy fatality, and one must accept it as such. I accept the calamity as an accomplished fact, and am doing my best to help both her and you," said Stepan Arkadyevich.

When he went out of his brother-in-law's room he was touched, but that did not prevent him from being glad he had successfully brought the matter to a conclusion, for he felt certain Alexei Alexandrovich would not go back on his words. To this satisfaction was added the fact that an idea had just struck him for a conundrum turning on his successful achievement when the affair was over he would put it to his wife and most intimate friends. He tried this conundrum in two or three different ways. "But I'll work it out better than that," he said to himself with a smile.

## XXIII.

Vronsky's wound had been a dangerous one, though it did not touch the heart, and for several days he hovered between life and death. The first time he was able to speak, Varia, his brother's wife, was alone in the room.

"Varia," he said, looking sternly at her, "I shot myself by accident. And please never speak of it, and tell everyone so. Or else it's too ridiculous."



## Anna Karenina

Without answering his words, Varia bent over him, and with a delighted smile gazed into his face. His eyes were clear, not feverish; but their expression was stern.

"Thank God!" she said. "You're not in pain?"

"A little here," he pointed to his breast.

"Then let me change your bandages."

In silence, stiffening his broad jaws, he looked at her while she bandaged him up. When she had finished he said:

"I'm not delirious. Please manage that there may be no talk of my having shot myself on purpose."

"No one says so. Only I hope you won't shoot yourself by accident any more," she said, with a questioning smile.

"I think I won't, but it would have been better..."

And he smiled gloomily.

In spite of these words and this smile, which so frightened Varia, when the inflammation was over and he began to recover, he felt that he was completely free from one part of his misery. By his action he had, as it were, washed away the shame and humiliation he had felt before. He could now think calmly of Alexei Alexandrovich. He recognized all his magnanimity, but he did not now feel himself humiliated by it. Besides, he got back again into the beaten track of his life. He saw the possibility of looking men in the face again without shame, and he could live in accordance with his own habits. One thing he could not pluck out of his heart, though he never ceased struggling with it the regret, amounting to despair, at having lost her forever. That, having expiated his sin against the husband, he was now bound to renounce her, and never in future to stand between her with her repentance and her husband, he had firmly decided in his heart; but he could not tear out of his heart his regret at the loss of her love; he could not erase from his memory those moments of happiness which he had known with her and had so little prized at the time, and which haunted him with all their charm.

Serpukhovskoy had planned his appointment at Tashkend, and Vronsky agreed to the proposal without the slightest hesitation. But the nearer the time of departure came, the bitterer was the sacrifice he was making to what he thought his duty.

His wound had healed, and he was driving about making preparations for his departure for Tashkend.

"To see her once, and then to bury myself, to die," he thought, and, as he was paying farewell visits, he uttered this thought to Betsy. Charged with this commission, Betsy had gone to Anna, and brought him back a negative reply.

"So much the better," thought Vronsky, when he received the news. "It was a weakness which would have shattered what strength I have left."

Next day Betsy herself came to him in the morning, and announced that she had heard through Oblonsky, as a positive fact, that Alexei Alexandrovich had agreed to a divorce, and that therefore Vronsky could see Anna.

Without even troubling himself to see Betsy out of his flat, forgetting all his resolutions, without asking when he could see her or where her husband was, Vronsky drove straight to the Karenins'. He ran up the stairs, seeing no one and nothing, and with a rapid step, almost breaking into a run, he went into her room. And without considering, without noticing whether there was anyone in the room or not, he flung his arms round her, and

began to cover with kisses her face, her hands, her neck.

Anna had been preparing herself for this meeting, had thought what she would say to him, but she did not succeed in saying anything; his passion mastered her. She tried to calm him, to calm herself, but it was too late. His feeling infected her. Her lips trembled so that for a long while she could say nothing.

"Yes, you have conquered me, and I am yours," she said at last, pressing his hands to her bosom.

"So it had to be," he said. "So long as we live, it must be so. I know it now."

"That's true," she said, getting whiter and whiter, and embracing his head. "Still, there is something terrible in it after all that has happened."

"It will all pass, it will all pass; we shall be so happy. Our love, if it only could be stronger, will be strengthened by there being something terrible in it," he said, lifting his head and showing his strong teeth in a smile.

And she could not but respond with a smile not to his words, but to the love in his eyes. She took his hand and stroked her chilled cheeks and cropped head with it.

"I don't know you with this short hair. You've grown so pretty. A boy. But how pale you are!"

"Yes, I'm very weak," she said, smiling. And her lips began trembling again.

"We'll go to Italy; you will get strong," he said.

"Can it be possible we could be like husband and wife, alone, our own family?" she said, looking close into his eyes.

"It only seems strange to me that it can ever have been otherwise."

"Stiva says that he has agreed to everything, but I can't accept his magnanimity," she said, looking dreamily past Vronsky's face. "I don't want a divorce; it's all the same to me now. Only I don't know what he will decide about Seriozha."

He could not conceive how at this moment of their meeting she could remember and think of her son, of divorce. What did it all matter?

"Don't speak of that, don't think of it," he said, turning her hand in his, and trying to draw her attention to him; but still she did not look at him.

"Oh, why didn't I die! It would have been better," she said, and, without sobbing, tears flowed down both her cheeks; but she tried to smile, so as not to wound him.

To decline the flattering and dangerous appointment at Tashkend would have been, Vronsky had till then considered, disgraceful and impossible. But now, without an instant's consideration, he declined it, and observing dissatisfaction in the upper quarters at this step, he immediately retired from the army.

A month later Alexei Alexandrovich was left alone with his son in his house at Petersburg, while Anna had gone abroad with Vronsky, without having obtained a divorce, and having absolutely declined all idea of one.

## PART FIVE

### I.

Princess Shcherbatskaia considered that it was out of the question for the wedding to take place before Lent, just five weeks off, since not half the trousseau could possibly be ready by that time. But she could not but agree with Levin that to fix it for after Lent would be putting it off too late, as an old aunt of Prince Shcherbatsky's was seriously ill and might die, and then the mourning would delay the wedding still longer. And therefore, deciding to divide the trousseau into two parts—a larger and a smaller trousseau—the Princess consented to have the wedding before Lent. She determined that she would get the smaller part of the trousseau all ready now, and the larger part should be sent on later, and she was much vexed with Levin because he was incapable of giving her a serious answer to the question whether he agreed to this arrangement or not. The arrangement was the more suitable as, immediately after the wedding, the newly married couple were to go to the country, where the belongings of the larger trousseau would not be wanted.

Levin still continued in the same delirious condition, in which it seemed to him that he and his happiness constituted the chief and sole aim of all existence, and that he need not now think or care about anything, that everything was being done and would be done for him by others. He had not even plans and aims for the future, he left its arrangement to others, knowing that everything would be delightful. His brother, Sergei Ivanovich, and Stepan Arkadyevich, and the Princess, guided him in doing what he had to do. All he did was to agree entirely with everything suggested to him. His brother raised money for him, the Princess advised him to leave Moscow after the wedding. Stepan Arkadyevich advised him to go abroad. He agreed to everything. "Do what you choose, if it amuses you, I'm happy, and my happiness can be no greater and no less because of anything you do," he thought. When he told Kitty of Stepan Arkadyevich's advice that they should go abroad, he was much surprised that she did not agree to this, and had some definite requirements of her own in regard to their future. She knew Levin had work he loved in the country. She did not, as he saw, understand this work—she did not even care to understand it. But that did not prevent her from regarding it as a matter of great importance. And therefore she knew their home would be in the country, and she wanted to go not abroad where she was not going to live, but to the place where their home would be. This definitely expressed purpose astonished Levin. But since he did not care either way, he immediately asked Stepan Arkadyevich, as though it were his duty, to go down to the country and to arrange everything there to the best of his ability, with that taste of which he had so much.

"But, I say," Stepan Arkadyevich said to him one day after he had come back from the country, where he had got everything ready for the young people's arrival, "have you a certificate of having been at confession?"

"No. But what of it?"

"You can't be married without it."

"My, my, my!" cried Levin. "Why, I believe it's nine years since I've taken the sacrament! I never thought of it."

"You're a pretty fellow!" said Stepan Arkadyevich laughing, "and you call me a Nihilist! But this won't do, you know. You must take the sacrament."

"When? There are four days left now."

Stepan Arkadyevich arranged this also, and Levin had to prepare himself for the sacrament. To Levin, as to any unbeliever who respects the beliefs of others, it was exceedingly disagreeable to be present at and to take part in church ceremonies. At this moment, in his present softened state of feeling, sensitive to everything, this inevitable act of hypocrisy was not merely painful to Levin, it seemed to him utterly impossible. Now, in the heyday of his

highest glory, his fullest flower, he would have to be a liar or a blasphemer. He felt incapable of being either. But though he repeatedly plied Stepan Arkadyevich with questions as to the possibility of obtaining a certificate without actually communicating, Stepan Arkadyevich maintained that it was out of the question.

"Besides, what is it to you two days? And he's an awfully fine, clever old fellow. He'll pull the tooth out for you so gently you won't notice it."

Standing at the first mass, Levin attempted to revive in himself his youthful recollections of the intense religious emotion he had passed through between the ages of sixteen and seventeen. But he was at once convinced that it was utterly impossible to him. He attempted to look at it all as an empty custom, having no sort of meaning, like the custom of paying calls; but he felt that he could not do that either. Levin found himself, like the majority of his contemporaries, in the vaguest position in regard to religion. Believe he could not, and at the same time he had no firm conviction that it was all wrong. And consequently, not being able to believe in the significance of what he was doing, nor to regard it with indifference as an empty formality, during the whole period of preparing for the sacrament he was conscious of a feeling of discomfort and shame at doing what he did not himself understand, and what, as an inner voice told him, was therefore false and wrong.

During the service he would first listen to the prayers, trying to attach some meaning to them not discordant with his own views; then feeling that he could not understand and must condemn them, he tried not to listen to them, but to attend to the thoughts, observations, and memories which floated through his brain with extreme vividness during this idle time of standing in church.

He had stood through the mass, the evening service, and the midnight service, and the next day he got up earlier than usual, and, without having tea, went at eight o'clock in the morning to the church for the morning service and the confession.

There was no one in church but a beggar soldier, two old women, and the churchmen. A young deacon, whose long back showed in two distinct halves through his thin undercassock, met him, and, at once going to a little table at the wall, read the exhortations. During the reading, especially at the frequent and rapid repetition of the same words, "Lord, have mercy on us!" which sounded like "mercynuslor!" Levin felt that his thought was shut and sealed up, and that it must not be touched or stirred now, or else confusion would be the result; and so standing behind the deacon he went on thinking of his own affairs, neither listening nor examining what was said. "It's wonderful what expression there is in her hand," he thought, remembering how they had been sitting the day before at a corner table. They had nothing to talk about, as was almost always the case at this time, and laying her hand on the table she kept opening and shutting it, and laughed herself as she watched her action. He remembered how he had kissed her hand and then had examined the lines on the pink palm. "Another 'mercynuslor!'" thought Levin, crossing himself, bowing, and looking at the supple spring of the deacon's back bowing before him. "She took my hand then and examined the lines. 'You've got a splendid hand,' she said." And he looked at his own hand and the short hand of the deacon. "Yes, now it will soon be over," he thought. "No, it seems to be starting up again," he thought, listening to the prayers. "No, it's just ending: there he is bowing down to the ground. That's always at the end."

The deacon's hand in a plush cuff unobtrusively accepted a three-ruble note, and the deacon said he would put Levin's name down in the register, and, his new boots creaking jauntily over the flagstones of the empty church, he went to the altar. A moment later he peeped out thence and beckoned to Levin. Thought, till then locked up, began to stir in Levin's head, but he made haste to drive it away. "It will come right somehow," he thought, and went toward the ambo. He went up the steps, and turning to the right, saw the priest. The priest, a little ancient with a scanty grizzled beard and weary, good-natured eyes, was standing at the lectern, turning over the pages of a missal. With a slight bow to Levin he began immediately reading prayers in an accustomed voice. When he had finished them he bowed down to the ground and turned, facing Levin.

## Anna Karenina

"Christ is present here unseen, receiving your confession," he said, pointing to the crucifix. "Do you believe in all the doctrines of the Holy Apostolic Church?" the priest went on, turning his eyes away from Levin's face and folding his hands under his stole.

"I have doubted I doubt everything," said Levin in a voice that jarred on himself, and he ceased speaking.

The priest waited a few seconds to see if he would not say more, and closing his eyes he said quickly, with a broad, Vladimirsky accent:

"Doubt is natural to the weakness of mankind, but we must pray that God in His mercy will strengthen us. What are your special sins?" he added, without the slightest interval, as though anxious not to waste time.

"My chief sin is doubt. I have doubts of everything, and for the most part I am in doubt."

"Doubt is natural to the weakness of mankind," the priest repeated the same words. "What do you doubt about principally?"

"I doubt everything. I sometimes even have doubts of the existence of God," Levin could not help saying, and he was horrified at the impropriety of what he was saying. But Levin's words did not, it seemed, make much impression on the priest.

"What sort of doubt can there be of the existence of God?" he said hurriedly, with a barely perceptible smile.

Levin did not speak.

"What doubt can you have of the Creator when you behold His creation?" the priest went on in the rapid customary recitative. "Who has decked the heavenly firmament with its lights? Who has clothed the earth in its beauty? How explain it without the Creator?" he said, looking inquiringly at Levin.

Levin felt that it would be improper to enter upon a metaphysical discussion with the priest, and so he said in reply merely what was a direct answer to the question.

"I don't know," he said.

"You don't know! Then how can you doubt that God created all?" the priest said, with good-humored perplexity.

"I don't understand it at all," said Levin, blushing, and feeling that his words were stupid, and that they could not be anything but stupid in such a position.

"Pray to God and beseech Him. Even the holy fathers had doubts, and prayed to God to strengthen their faith. The devil has great power, and we must resist him. Pray to God, beseech Him. Pray to God," he repeated hurriedly.

The priest paused for some time, as though meditating.

"You, I hear, are about to marry the daughter of my parishioner and son in the spirit, Prince Shcherbatsky?" he resumed, with a smile. "An excellent young lady."

"Yes," answered Levin, blushing for the priest. "What does he want to ask me about this at confession for?" he thought.

And, as though answering his thought, the priest said to him:

"You are about to enter into holy matrimony, and God may bless you with offspring. Are you? Well, what sort of bringing-up can you give your babes if you do not overcome the temptation of the devil, enticing you to infidelity?" he said, with gentle reproachfulness. "If you love your child as a good father, you will not desire only wealth, luxury, honor for your infant; you will be anxious for his salvation, his spiritual enlightenment with the light of truth. Eh? What answer will you make him when the innocent babe asks you: 'Papa! Who made all that enchants me in this world the earth, the waters, the sun, the flowers, the grass?' Can you say to him: 'I don't know?' You cannot but know, since the Lord God in His infinite mercy has revealed it to us. Or your child will ask you: 'What awaits me in the life beyond the grave?' What will you say to him when you know nothing? How will you answer him? Will you leave him to the allurements of the world and the devil? That's not right," he said, and he stopped, putting his head on one side and looking at Levin with his kindly, gentle eyes.

Levin made no answer this time, not because he did not want to enter upon a discussion with the priest, but because no one had ever asked him such questions and when his babes did ask him those questions, it would be time enough to think about answering them.

"You are entering upon a time of life," pursued the priest, "when you must choose your path and keep to it. Pray to God that He may in His mercy aid you and have mercy on you!" he concluded. "Our Lord and God, Jesus Christ, in the abundance and riches of His loving-kindness, forgives this child..." and, finishing the prayer of absolution, the priest blessed him and dismissed him.

On getting home that day, Levin had a delightful sense of relief at the awkward position being over and having been got through without his having to tell a lie. Apart from this, there remained a vague memory that what the kind, fine old fellow had said had not been at all as stupid as he had fancied at first, and that there was something in it that must be cleared up.

"Of course, not now," thought Levin, "but at some later day." Levin felt more than ever now that there was something not clear and not clean in his soul, and that, in regard to religion, he was in the same position which he perceived so clearly and disliked in others, and for which he blamed his friend Sviiazhsky.

Levin spent that evening with his betrothed at Dolly's, and was in very high spirits. To explain to Stepan Arkadyevich the state of excitement in which he found himself, he said that he was happy, like a dog being trained to jump through a hoop, who, having at last caught the idea, and done what was required of him, whines and wags its tail, and jumps up to the table and the window sills in its delight.

## II.

On the day of the wedding, according to the Russian custom (the Princess and Darya Alexandrovna insisted on strictly keeping all the customs), Levin did not see his betrothed, and dined at his hotel with three bachelor friends, casually brought together at his rooms. These were Sergei Ivanovich, Katavassov, a university friend, now professor of natural science, whom Levin had met in the street and insisted on taking home with him, and Chirikov, his best man, a Moscow justice of the peace, Levin's companion in his bear hunts. The dinner was a very merry one: Sergei Ivanovich was in his happiest mood, and was much amused by Katavassov's originality. Katavassov, feeling his originality was appreciated and understood, made the most of it. Chirikov always gave a lively and good-humored support to conversation of any sort.

"See, now," said Katavassov, drawling his words from a habit acquired in the lecture room, "what a capable fellow was our friend Konstantin Dmitrievich. I'm speaking of absent company he doesn't exist for us now. At the time he left the university he was fond of science, took an interest in humanity; now one-half of his abilities is devoted to deceiving himself, and the other to justifying the deceit."

## Anna Karenina

"A more determined enemy of matrimony than you I never saw," said Sergei Ivanovich.

"Oh, no, I'm not an enemy of matrimony. I'm in favor of division of labor. People who can do nothing else ought to rear people, while the rest work for their happiness and enlightenment. That's how I look at it. To muddle up two trades there are too many amateurs; I'm not one of their number."

"How happy I shall be when I hear that you're in love!" said Levin. "Please invite me to the wedding."

"I'm in love now."

"Yes, with a cuttlefish! You know," Levin turned to his brother, "Mikhail Semionovich is writing a work on the digestive organs of the..."

"Now, make a muddle of it! It doesn't matter what about. And the fact is, I certainly do love cuttlefish."

"But that's no hindrance to your loving your wife."

"The cuttlefish is no hindrance. The wife is the hindrance."

"Why so?"

"Oh, you'll see! You care about farming, hunting well, you'll see!..."

"Arkhip was here today; he said there were no end of elk in Prudnoe, and two bears," said Chirikov.

"Well, you must go and get them without me."

"Ah, that's the truth," said Sergei Ivanovich. "And you may say good-bye to bear hunting for the future your wife won't allow it!"

Levin smiled. The picture of his wife not letting him go was so pleasant that he was ready to renounce forever the delights of looking upon bears.

"Still, it's a pity they should get those two bears without you. Do you remember last time at Khapilovo? And now it would be a delightful hunt!" said Chirikov.

Levin had not the heart to disillusion him of the notion that there could be something delightful apart from her, and so said nothing.

"There's some sense in this custom of saying good-bye to bachelor life," said Sergei Ivanovich. "However happy you may be, you must regret your freedom."

"And confess there is a feeling that you want to jump out of the window, like Gogol's bridegroom?"

"Of course there is, but he won't confess," said Katavassov, and he broke into loud laughter.

"Oh, well, the window's open.... Let's start off this instant to Tver! There's a big she-bear; one can go right up to the lair. Seriously, let's go by the five o'clock! And here let them do what they like," said Chirikov smiling.

"Well, now, on my honor," said Levin smiling, "I can't find in my heart that feeling of regret for my freedom."

## Anna Karenina

"Yes, there's such a chaos in your heart just now that you can't find anything there," said Katavassov. "Wait a bit, when you set it to rights a little, you'll find it!"

"No; if so, I should have felt a little, apart from my feeling" (he could not say "love" before them) "and happiness, a certain regret at losing my freedom.... On the contrary, I am glad at the very loss of my freedom."

"Awful! It's a hopeless case!" said Katavassov. "Well, let's drink to his recovery, or wish that a hundredth part of his dreams may be realized and that would be happiness such as never has been seen on earth!"

Soon after dinner the guests went away to dress in time for the wedding.

When he was left alone, and recalled the conversation of these bachelor friends, Levin asked himself: Had he in his heart that regret for his freedom of which they had spoken? He smiled at the question. "Freedom! What is freedom for? Happiness is only in loving and wishing her wishes, thinking her thoughts; that is to say, not freedom at all that's happiness!"

"But do I know her thoughts, her wishes, her feelings?" some voice suddenly whispered to him. The smile died away from his face, and he grew thoughtful. And suddenly a strange feeling came upon him. There came over him a dread and doubt doubt of everything.

"What if she does not love me? What if she's marrying me simply to be married? What if she doesn't see herself what she's doing?" he asked himself. "She may come to her senses, and only when she is being married realize that she does not and cannot love me." And strange, most evil thoughts of her began to come to him. He was jealous of Vronsky, as he had been a year ago, as though the evening he had seen her with Vronsky had been yesterday. He suspected she had not told him everything.

He jumped up quickly. "No, this can't go on!" he said to himself in despair. "I'll go to her; I'll ask her; I'll say for the last time: We are free, and hadn't we better stay so? Anything's better than endless misery, disgrace, unfaithfulness!" With despair in his heart and bitter anger against all men, against himself, against her, he went out of the hotel and drove to her house.

He found her in one of the rear rooms. She was sitting on a chest and making some arrangements with her maid, sorting over heaps of dresses of different colors, spread on the backs of chairs and on the floor.

"Ah!" she cried, seeing him, and beaming with delight. "Kostia! Konstantin Dmitrievich!" (These latter days she used these names almost alternately.) "I didn't expect you! I'm going through my girlish wardrobe to see what's for whom...."

"Oh! That's very lovely!" he said gloomily, looking at the maid.

"You can go, Duniasha, I'll call you presently," said Kitty. "Kostia, what's the matter?" she asked, definitely adopting this familiar name as soon as the maid had gone out. She noticed his strange face, agitated and gloomy, and a panic came over her.

"Kitty! I'm in torture. I can't be in torture alone," he said with despair in his voice, standing before her and looking imploringly into her eyes. He saw already from her loving, truthful face, that nothing could come of what he had meant to say, but yet he wanted her to reassure him herself. "I've come to say that there's still time. This can all be stopped and set right."

"What? I don't understand. What is the matter?"



## Anna Karenina

"What I have said a thousand times over, and can't help thinking... that I'm not worthy of you. You couldn't consent to marry me. Think a little. You've made a mistake. Think it over thoroughly. You can't love me... if... Better say so," he said, without looking at her. "I shall be wretched. Let people say what they like; anything's better than misery.... Far better now while there's still time...."

"I don't understand," she answered, panic-stricken; "you mean you want to give it up... that you don't want it?"

"Yes if you don't love me."

"You're out of your mind!" she cried, turning crimson with vexation. But his face was so piteous that she restrained her vexation, and flinging some clothes off an armchair, she sat down beside him. "What are you thinking? Tell me all."

"I am thinking you can't love me. What can you love me for?"

"My God! What can I do?..." she said, and burst into tears.

"Oh! What have I done?" he cried, and kneeling before her, he fell to kissing her hands.

When the old Princess came into the room five minutes later, she found them completely reconciled. Kitty had not simply assured him that she loved him, but had gone so far in answer to his question, what she loved him for as to explain what for. She told him that she loved him because she understood him completely, because she knew what he would like, and because everything he liked was good. And this seemed to him perfectly clear. When the Princess came to them, they were sitting side by side on the chest, sorting the dresses and disputing over Kitty's wanting to give Duniasha the brown dress she had been wearing when Levin proposed to her, while he insisted that that dress must never be given away, but that Duniasha should have the blue one.

"How is it you don't see? She's a brunette, and it won't suit her.... I've worked it all out."

Hearing why he had come, the Princess was half-humorously, half-seriously angry with him, and sent him home to dress and not to hinder Kitty's hairdressing, as Charles the coiffeur was just coming.

"As it is, she's been eating nothing lately and is losing her looks, and then you must come and upset her with your nonsense," she said to him. "Get along with you, my dear!"

Levin, guilty and shamefaced, but pacified, went back to his hotel. His brother, Darya Alexandrovna, and Stepan Arkadyevich, all in full dress, were waiting for him to bless him with an icon. There was no time to lose. Darya Alexandrovna had to drive home again to fetch her curled and pomaded son, who was to carry the icon in the bride's carriage. Then a carriage had to be sent for the best man, and another, that would take Sergei Ivanovich away, would have to be sent back.... Altogether there were a great many most complicated matters to be considered and arranged. One thing was unmistakable that there must be no delay, as it was already half-past six.

Nothing special happened at the ceremony of benediction with the icon. Stepan Arkadyevich stood in a comically solemn pose beside his wife, took the icon, and, telling Levin to bow down to the ground, he blessed him with his kindly, ironical smile, and kissed him three times; Darya Alexandrovna did the same, and immediately was in a hurry to get off, and again plunged into the intricate question of the due order of the various carriages.

"Come, I'll tell you how we'll manage: you drive in our carriage to fetch him, and Sergei Ivanovich, if he'll be so good, will drive there and then send his carriage."

"Of course; I shall be delighted."

"We'll come on directly with him. Are your things sent off?" asked Stepan Arkadyevich.

"Yes," answered Levin, and he told Kouzma to lay out his clothes for him to dress.

### III.

A crowd of people, principally women, was thronging round the church lighted up for the wedding. Those who had not succeeded in getting into the main entrance were crowding about the windows, pushing, wrangling, and peeping through the gratings.

More than twenty carriages had already been drawn up in ranks along the street by the police. A police officer, regardless of the frost, stood at the entrance, gorgeous in his uniform. More carriages were continually driving up, and ladies wearing flowers and carrying their trains, and men taking off their kepis or black hats, kept walking into the church. Inside the church both lustres were already lighted, and all the candles before the icons. The golden nimbus on the red ground of the ikonostasis, and the gilt relief on the icons and the silver of the lustres and candlesticks, and the floor—flags, and the rugs, and the banners above in the choir, and the steps of the ambo, and the old blackened books, and the cassocks and surplices all were flooded with light. On the right side of the warm church, in the crowd of evening dresses and white ties, of uniforms, and of silk, velvet, satin, hair and flowers, of bare shoulders and arms and long gloves, there was discreet but lively conversation that echoed strangely in the high cupola. Every time there was heard the creak of the opened door the conversation in the crowd died away, and everybody looked round expecting to see the bride and bridegroom come in. But the door had opened more than ten times, and each time it was either a belated guest or guests, who joined the circle of the invited on the right, or some spectator, who had eluded or softened the police officer, and went to join the crowd of outsiders on the left. Both the guests and the outside public had by now passed through all the phases of anticipation.

At first they imagined that the bride and bridegroom would arrive immediately, and attached no importance at all to their being late. Then they began to look more and more often toward the door, and to talk of whether anything could have happened. Then the long delay began to be positively discomforting, and relations and guests tried to look as if they were not thinking of the bridegroom at all, but were engrossed in conversation.

The protodeacon, as though to remind them of the value of his time, coughed impatiently, making the windowpanes rattle in their frames. In the choir the bored choristers could be heard trying their voices and blowing their noses. The priest was continually sending first the church clerk and then the deacon to find out whether the bridegroom had not come, more and more often he went himself, in a lilac vestment and an embroidered sash, to the side door, expecting to see the bridegroom. At last one of the ladies, glancing at her watch, said, "It really is strange, though!" and all the guests became uneasy and began loudly expressing their wonder and dissatisfaction. One of the bridegroom's best men went to find out what had happened. Kitty meanwhile had long ago been quite ready, and, in her white dress and long veil and wreath of orange blossoms, was standing in the drawing room of the Shcherbatskys' house with her sister, Madame Lvova, who was her bridal mother. She was looking out of the window, and had been for over half an hour anxiously expecting to hear from her best man that her bridegroom was at the church.

Levin meanwhile, in his trousers, but without his coat and waistcoat, was walking to and fro in his room at the hotel, continually putting his head out of door and looking up and down the corridor. But in the corridor there was no sign of the person he was looking for and he came back in despair, and waving his hands addressed Stepan Arkadyevich, who was smoking serenely.

## Anna Karenina

"Was ever a man in such a fearful fool's position?" he said.

"Yes, it is stupid," Stepan Arkadyevich assented, smiling soothingly. "But don't worry, it'll be brought directly."

"No, what is to be done!" said Levin, with smothered fury. "And these fool open waistcoats! Out of the question!" he said, looking at the crumpled front of his shirt. "And what if the things have been taken on to the railway station!" he roared in desperation.

"Then you must put on mine."

"I ought to have done so long ago, if at all."

"It's not well to look ridiculous.... Wait a bit! It will come round."

The point was that when Levin asked for his evening suit, Kouzma, his old servant, had brought him the coat, waistcoat, and everything that was wanted.

"But the shirt!" cried Levin.

"You've got a shirt on," Kouzma answered, with a placid smile.

Kouzma had not thought of leaving out a clean shirt, and on receiving instructions to pack up everything and send it round to the Shcherbatskys' house, from which the young people were to set out the same evening, he had done so, packing everything but the dress suit. The shirt worn since the morning was crumpled and out of the question with the fashionable open waistcoat. It was a long way to send to the Shcherbatskys'. They sent out to buy a shirt. The servant came back; everything was shut up it was Sunday. They sent to Stepan Arkadyevich's and brought a shirt it was impossibly wide and short. They sent finally to the Shcherbatskys' to unpack the things. The bridegroom was expected at the church while he was pacing up and down his room like a wild beast in a cage, peeping out into the corridor, and with horror and despair recalling what absurd things he had said to Kitty and what she might be thinking now.

At last the guilty Kouzma flew panting into the room with the shirt.

"Only just in time. They were just lifting it into the van," said Kouzma.

Three minutes later Levin ran full speed into the corridor, without looking at his watch for fear of aggravating his sufferings.

"You won't help matters like that," said Stepan Arkadyevich with a smile, hurrying with more deliberation after him. "It will come round, it will come round I tell you."

## IV.

"They've come!" "Here he is!" "Which one?" "Rather young, eh?" "Why, my dear soul, she looks more dead than alive!" were the comments in the crowd, when Levin, meeting his bride in the entrance, walked with her into the church.

Stepan Arkadyevich told his wife the cause of the delay, and the guests were whispering it with smiles to one another. Levin saw nothing and no one; he did not take his eyes off his bride.

## Anna Karenina

Everyone said she had lost her looks dreadfully of late, and was not nearly as pretty on her wedding day as usual; but Levin did not think so. He looked at her hair done up high, with the long white veil and white flowers and the high, scalloped de Medici collar, that in such a maidenly fashion hid her long neck at the sides and only showed it in front, and her strikingly slender figure, and it seemed to him that she looked better than ever not because these flowers, this veil, this gown from Paris added anything to her beauty; but because, in spite of the elaborate sumptuousness of her attire, the expression of her sweet face, of her eyes, of her lips was still her own characteristic expression of guileless truthfulness.

"I was beginning to think you meant to run away," she said, and smiled to him.

What happened to me is so stupid I'm ashamed to speak of it!" he said, reddening, and he was obliged to turn to Sergei Ivanovich, who came up to him.

"This is a pretty story of yours about the shirt!" said Sergei Ivanovich, shaking his head and smiling.

"Yes, yes!" answered Levin, without an idea of what they were talking about.

"Now, Kostia, you have to decide," said Stepan Arkadyevich with an air of mock dismay, "a weighty question. You are at this moment just in the humor to appreciate all its gravity. They ask me, are they to light the candles that have been lighted before or candles that have never been lighted? It's a matter of ten roubles," he added, relaxing his lips into a smile. "I have decided, but I was afraid you might not agree."

Levin saw it was a joke, but he could not smile.

"Well, how's it to be then unused or used candles? that is the question."

"Yes, yes, unused ones."

"Oh, I'm very glad. The question's decided!" said Stepan Arkadyevich, smiling. "How silly men become, though, in this situation," he said to Chirikov, when Levin, after looking absently at him, had moved back to his bride.

"Kitty, mind you're the first to step on the carpet," said Countess Nordstone, coming up. "You're a fine person!" she said to Levin.

"Aren't you frightened, eh?" said Marya Dmitrievna, an old aunt.

"Are you cold? You're pale. Stop a minute, stoop down," said Kitty's sister, Madame Lvova, and with her plump, pretty hands she smilingly set straight the flowers on her head.

Dolly came up, tried to say something, but could not speak, cried, and then laughed naturally.

Kitty looked at all of them with the same absent eyes as Levin.

Meanwhile the officiating clergy had got into their vestments, and the priest and deacon came out to the lectern, which stood in the porch of the church. The priest turned to Levin saying something. Levin did not hear what the priest said.

"Take the bride's hand and lead her up," the best man said to Levin.

It was a long while before Levin could make out what was expected of him. For a long time they tried to set him right and made him begin again because he kept taking Kitty by the wrong arm or with the wrong arm till he

understood at last that what he had to do was, without changing his position, to take her right hand in his right hand. When at last he had taken the bride's hand in the correct way, the priest walked a few paces in front of them and stopped at the lectern. The crowd of friends and relations moved after them, with a buzz of talk and a rustle of trains. Someone stooped down and straightened out the bride's train. The church became so still that the drops of wax could be heard falling from the candles.

The little old priest in his calotte, with his long silvery-gray locks of hair parted behind his ears, was fumbling with something at the lectern, putting out his little old hands from under the heavy silver vestment with the gold cross on the back of it.

Stepan Arkadyevich approached him cautiously, whispered something, and, giving a wink at Levin, walked back again.

The priest lighted two candles, wreathed with flowers, and holding them sideways so that the wax dropped slowly from them he turned, facing the bridal pair. The priest was the same old man who had confessed Levin. He looked with weary and melancholy eyes at the bride and bridegroom, sighed, and, putting his right hand out from under his vestment, blessed the bridegroom with it, and also, with a shade of solicitous tenderness, laid his crossed fingers on the bowed head of Kitty. Then he gave them the candles, and, taking the censer, moved slowly away from them.

"Can it be true?" thought Levin, and he looked round at his bride. Looking down at her he saw her face in profile, and from the scarcely perceptible quiver of her lips and eyelashes he knew she was aware of his eyes upon her. She did not look round, but the high scalloped collar, that reached her little pink ear, trembled faintly. He saw that a sigh was held back in her throat, and the little hand in the long glove shook as it held the candle.

All the fuss of the shirt, of being late, all the talk of friends and relations, their annoyance, his ludicrous position—all suddenly passed away and he was filled with joy and dread.

The handsome, stately protodeacon wearing a silver robe, and his curly locks standing out at each side of his head, stepped smartly forward, and lifting his stole on two fingers, stood opposite the priest.

"Blessed be the name of the Lord," the solemn syllables rang out slowly one after another, setting the air quivering with waves of sound.

"Blessed is the name of our God, from the beginning, as now, and forever and aye," the little old priest answered in a submissive, piping voice, still fingering something at the lectern. And the full chorus of the unseen choir rose up, filling the whole church, from the windows to the vaulted roof, with broad waves of melody. It grew stronger, rested for an instant, and slowly died away.

They prayed, as they always do, for peace from on high and for salvation, for the Holy Synod, and for the Czar; they prayed, too, for the servants of God, Konstantin and Ekaterina, now plighting their troth.

"Vouchsafe to them love made perfect, peace, and help, O Lord, we beseech Thee," the whole church seemed to breathe with the voice of the protodeacon.

Levin heard the words, and they impressed him. "How did they guess that it is help, just help that one wants?" he thought, recalling all his fears and doubts of late. "What do I know? what can I do in this fearful business," he thought, "without help? Yes, it is help I want now."

When the deacon had finished the liturgical prayer, the priest turned to the bridal pair with his book: "Eternal God, who joinest together in love them that were separate," he read in a gentle, piping voice, "who hast ordained

the union of holy wedlock that cannot be set asunder, Thou who didst bless Isaac and Rebecca and their descendants, according to Thy Holy Covenant, bless Thou Thy servants, Konstantin and Ekaterina, leading them in the path of all good works. For gracious and merciful art Thou, our Lord, and glory be to Thee, the Father, the Son, and the Holy Ghost, now and forever and aye." "Amen!" the unseen choir sent rolling again through the air.

"Joinest together in love them that were separate.' What deep meaning in those words, and how they correspond with what one feels at this moment," thought Levin. "Is she feeling the same as I?"

And, looking round, he met her eyes. And from their expression he concluded that she was understanding it just as he was. But this was a mistake; she almost completely missed the meaning of the words of the service; she had not heard them, in fact. She could not listen to them and take them in, so strong was the one feeling that filled her breast and grew stronger and stronger. That feeling was joy at the completion of the process that for the last month and a half had been going on in her soul, and had during those six weeks been a joy and a torture to her. On the day when in the drawing room of the house in the Arbat street she had gone up to him in her brown dress, and had given herself to him without a word on that day, at that hour, there took place in her heart a complete severance from all her old life, and a quite different, new, utterly strange life had begun for her, while the old life was actually going on as before. Those six weeks had for her been a time of the utmost bliss and the utmost misery. All her life, all her desires and hopes were concentrated on this one man, still uncomprehended by her, to whom she was bound by a feeling of alternate attraction and repulsion, even less comprehended than the man himself, and all the while she was going on living in the outward conditions of her old life. Living the old life, she was horrified at herself, at her utter insurmountable callousness to all her own past, to things, to habits, to the people she had loved, who loved her to her mother, who was wounded by her indifference, to her kind, tender father, till then dearer than all the world. At one moment she was horrified at this indifference, at another she rejoiced at what had brought her to this indifference. She could not frame a thought, nor a wish, apart from life with this man; but this new life was not yet, and she could not even picture it clearly to herself. There was only anticipation, the dread and joy of the new and the unknown. And now behold anticipation and uncertainty and remorse at the abandonment of the old life all this was ending, and the new was beginning. This new life could not but have terrors for her by its obscurity; but, terrible or not, the change had been wrought six weeks before in her soul, and this was merely the final sanction of what had long been completed in her heart.

Turning again to the lectern, the priest with some difficulty took Kitty's little ring, and, asking Levin for his hand, put it on the first joint of his finger. "The servant of God, Konstantin, plights his troth to the servant of God, Ekaterina." And putting his big ring on Kitty's touchingly weak, pink tiny finger, the priest said the same thing.

And the bridal pair tried several times to understand what they had to do, and each time made some mistake and were corrected by the priest in a whisper. At last, having duly performed the ceremony, having made with the rings the sign of the cross over them, the priest handed Kitty the big ring, and Levin the little one. Again they were puzzled, and passed the rings from hand to hand, still without doing what was expected.

Dolly, Chirikov, and Stepan Arkadyevich stepped forward to set them right. There was an interval of hesitation, whispering, and smiles; but the expression of solemn emotion on the faces of the betrothed pair did not change: on the contrary, in their perplexity over their hands they looked more grave and deeply moved than before, and the smile with which Stepan Arkadyevich whispered to them that now they would each put on their own ring died away on his lips. He had a feeling that any smile would jar on them.

"Thou who didst from the beginning create male and female," the priest read after the exchange of rings, "from Thee woman was given to man to be a helpmeet to him, and for the procreation of children. O Lord, our God, who hast poured down the blessings of Thy Truth according to Thy Holy Covenant upon Thy chosen servants, our fathers, from generation to generation, bless Thy servants Konstantin and Ekaterina, and make their troth fast in faith, and union of hearts, and in truth, and in love...."

## Anna Karenina

Levin felt more and more that all his ideas of marriage, all his dreams of how he would order his life, were mere childishness, and that it was something he had not understood hitherto, and now understood less than ever, though it was being performed upon him. The lump in his throat rose higher and higher; tears that would not be checked came into his eyes.

### V.

In the church there was all Moscow, all the friends and relations; and during the ceremony of plighting troth, in the brilliantly lighted church, there was an incessant flow of discreetly subdued talk in the circle of gaily dressed women and girls, and men in white ties, evening dress, and uniform. The talk was principally kept up by the men, while the women were absorbed in watching every detail of the ceremony, which always touches them so much.

In the little group nearest the bride were her two sisters: Dolly, and the younger one, the self-possessed beauty, Madame Lvova, who had just arrived from abroad.

"Why is it Marie's in lilac? It's as bad as black at a wedding," said Madame Korsunskaja.

"With her complexion, it's her one salvation," responded Madame Drubetskaia. "I wonder why they had the wedding in the evening? It's like shop people...."

"So much prettier. I was married in the evening too...." answered Madame Korsunskaja, and she sighed, remembering how charming she had been that day, and how absurdly in love her husband was, and how different it all was now.

"They say if anyone is best man more than ten times, he'll never be married. I wanted to be one for the tenth time, but the post was taken," said Count Siniavin to the pretty Princess Charskaia, who had designs on him.

Princess Charskaia only answered with a smile. She looked at Kitty, thinking how and when she would stand with Count Siniavin in Kitty's place, and how she would remind him then of his joke today.

Shcherbatsky told the old Hoffraulein, Madame Nikoleva, that he meant to put the crown on Kitty's chignon for luck.

"She ought not to have worn a chignon," answered Madame Nikoleva, who had long ago made up her mind that if the elderly widower she was angling for married her, the wedding should be of the simplest. "I don't like such faste."

Sergei Ivanovich was talking to Darya Dmitrievna, jestingly assuring her that the custom of going away after the wedding was becoming common because newly married people always felt a little ashamed of themselves.

"Your brother may feel proud of himself. She's a marvel of sweetness. I believe you're envious."

"Oh, I've got over that, Darya Dmitrievna," he answered, and a melancholy and serious expression suddenly came over his face.

Stepan Arkadyevich was telling his sister-in-law his joke about divorce.

"The wreath wants setting straight," she answered, without listening to him.

"What a pity she's lost her looks so," Countess Nordstone said to Madame Lvova. "Still, he's not worth her little

finger, is he?"

"Oh, I like him so not because he's my future beau-frere," answered Madame Lvova. "And how well he's behaving! It's so difficult, too, to look well in such a position, not to be ridiculous. And he's not ridiculous, and not affected; one can see he's moved."

"You expected it, I suppose?"

"Almost. She always cared for him."

"Well, we shall see which of them will step on the rug first. I warned Kitty."

"It will make no difference," said Madame Lvova, "we're all obedient wives; it's in our family."

"Oh, I stepped on the rug before Vassilii on purpose. And you, Dolly?"

Dolly stood beside them; she heard them, but she did not answer. She was deeply moved. The tears stood in her eyes, and she could not have spoken without crying. She was rejoicing over Kitty and Levin; going back in thought to her own wedding, she glanced at the radiant figure of Stepan Arkadyevich, forgot all the present, and remembered only her own innocent love. She recalled not herself only, but all her women friends and acquaintances. She thought of them on the one day of their triumph, when they had stood like Kitty under the wedding crown, with love and hope and dread in their hearts, renouncing the past, and stepping forward into the mysterious future. Among the brides that came back to her memory, she thought too of her darling Anna, of whose proposed divorce she had just been hearing. And she had stood just as innocent, in orange blossoms and bridal veil. And now? "It's terribly strange," she said to herself.

It was not merely the sisters, the women friends, and the female relations of the bride, who were following every detail of the ceremony. Women who were quite strangers, mere spectators, were watching it excitedly, holding their breath, in fear of losing a single movement or expression of the bride and bridegroom, and angrily not answering, often not hearing, the remarks of the callous men, who kept making joking or irrelevant observations.

"Why has she been crying? Is she being married against her will?"

"Against her will to a fine fellow like that? A Prince, isn't he?"

"Is that her sister in the white satin? Just listen how the deacon booms out, 'and obey!'"

"Are the choristers from the church of the Miracle?"

"No from the Synodal school."

"I'm told he's going to take her home to his country place at once. I asked the footman. Awfully rich, they say. That's why she's being married to him."

"No they're a well-matched pair."

"I say, Marya Vassilyevna, you claimed those flyaway crinolines were not being worn. Just look at her in the puce dress an ambassador's wife, they say she is see, how her skirt bounces!... So and so!"

"What a pretty dear the bride is like a lamb decked with flowers! Well, say what you will, we women feel for our sister."



Such were the comments in the crowd of gazing women who had succeeded in slipping in at the church doors.

## VI.

When the ceremony of plighting troth was over, the sacristan spread before the lectern in the middle of the church a piece of pink silken stuff, the choir sang a complicated and elaborate psalm, in which the bass and tenor sang responses to one another, and the priest, turning round, pointed the bridal pair to the pink silk rug. Though both had often heard a great deal about the saying that the one who steps first on the rug will be the head of the house, neither Levin nor Kitty were capable of recollecting it, as they took the few steps toward it. They did not hear the loud remarks and disputes that followed, some maintaining he had stepped on it first, and others that both had stepped on it together.

After the customary questions, whether they desired to enter upon matrimony, and whether they were pledged to anyone else, and their answers, which sounded strange to themselves, a new ceremony began. Kitty listened to the words of the prayer, trying to make out their meaning, but she could not. The feeling of triumph and radiant happiness flooded her soul more and more as the ceremony went on, and deprived her of all power of attention.

They prayed: "Endow them with continence and fruitfulness, and vouchsafe that their hearts may rejoice looking upon their sons and daughters." They alluded to God's creation of a wife from Adam's rib, "and for this cause a man shall leave father and mother, and cleave unto his wife, and they two shall be one flesh," and that "this is a great mystery;" they prayed that God would make them fruitful and bless them, like Isaac and Rebecca, Joseph, Moses and Zipporah, and that they might look upon their children's children. "That's all splendid," thought Kitty, catching the words, "all that's just as it should be," and a smile of happiness, unconsciously reflected in everyone who looked at her, beamed on her radiant face.

"Put it on completely!" voices were heard urging when, after the priest had put on their wedding crowns, and Shcherbatsky, his hand shaking in its three-button glove, was holding the crown high above her head.

"Put it on!" she whispered smiling.

Levin looked round at her, and was struck by the joyful radiance on her face, and unconsciously her feeling infected him. He too, like her, felt joyous and happy.

They enjoyed hearing the Epistle read, and the roll of the protodeacon's voice at the last verse, awaited with such impatience by the outside public. They enjoyed drinking out of the shallow cup of warm red wine and water, and they were still more pleased when the priest, flinging back his stole and taking both their hands in his, led them round the lectern to the accompaniment of bass voices chanting: "Isaiah rejoice!" Shcherbatsky and Chirikov, supporting the crowns and stumbling over the bride's train, smiling too and seeming delighted at something, were at one moment left behind, at the next treading on the bridal pair as the priest came to a halt. The spark of joy kindled in Kitty seemed to have infected everyone in the church. It seemed to Levin that the priest and the deacon too wanted to smile, just as he did.

Taking the crowns off their heads the priest read the last prayer and congratulated the young couple. Levin looked at Kitty, and he had never before seen her look as she did. She was charming with the new radiance of happiness in her face. Levin longed to say something to her, but he did not know whether it was all over. The priest got him out of his difficulty. He smiled his kindly smile and said gently, "Kiss your wife and you kiss your husband," and took the candles out of their hands.

Levin kissed her smiling lips with timid care, gave her his arm, and, with a new strange sense of closeness, walked out of the church. He did not believe, he could not believe, that it was true. It was only when their

wondering and timid eyes met that he believed in it, because he felt that they were one.

After supper, the same night, the young people left for the country.

## VII.

Vronsky and Anna had been traveling for three months together in Europe. They had visited Venice, Rome and Naples, and had just arrived at a small Italian town where they meant to stay some time.

A handsome headwaiter, with thick pomaded hair parted from the neck upward, wearing an evening coat, a broad white cambric shirt front, and a bunch of watch charms dangling above his small bay window, stood with his hands in his pockets, looking contemptuously from under his eyelids, while he gave some frigid reply to a gentleman who had stopped still. Catching the sound of footsteps coming from the other side of the entry toward the staircase, the headwaiter turned round, and, seeing the Russian Count, who had taken their best rooms, he took his hands out of his pockets deferentially, and with a bow informed him that a courier had come, and that the business about the palazzo had been arranged. The steward was prepared to sign the agreement.

"Ah! I'm glad to hear it," said Vronsky. "Is Madame at home or not?"

"Madame has been out for a walk but has returned now," answered the waiter.

Vronsky took off his soft, wide-brimmed hat and passed his handkerchief over his heated brow and hair, which had grown half over his ears, and was brushed back covering the bald patch on his head. And, glancing casually at the gentleman, who still stood there gazing intently at him, he would have gone on.

"This gentleman is a Russian, and was inquiring after you," said the headwaiter.

With mingled feelings of annoyance at never being able to get away from acquaintances anywhere, and longing to find some sort of diversion from the monotony of his life, Vronsky looked once more at the gentleman, who had retreated and stood still again, and at the same moment a light came into the eyes of both.

"Golenishchev!"

"Vronsky!"

It really was Golenishchev, a comrade of Vronsky's in the Corps of Pages. In the Corps Golenishchev had belonged to the liberal party; he left the Corps without entering the army, and had never taken office under the government. Vronsky and he had gone completely different ways on leaving the Corps, and had only met once since.

At that meeting Vronsky perceived that Golenishchev had taken up a sort of lofty intellectually liberal line, and was consequently disposed to look down upon Vronsky's interests and calling in life. Hence Vronsky had met him with the chilling and haughty manner he so well knew how to assume, the meaning of which was: "You may like or dislike my ways of life, that's a matter of the most perfect indifference to me; you will have to treat me with respect if you want to know me." Golenishchev had been contemptuously indifferent to the tone taken by Vronsky. That meeting might have been expected to estrange them still more. But now they beamed and exclaimed with delight on recognizing one another. Vronsky would never have expected to be so pleased to see Golenishchev, but probably he was not himself aware how bored he was. He forgot the disagreeable impression of their last meeting, and with a face of frank delight held out his hand to his old comrade. The same expression of delight replaced the look of uneasiness on Golenishchev's face.

## Anna Karenina

"How glad I am to meet you!" said Vronsky, showing his strong white teeth in a friendly smile.

"I heard the name Vronsky, but I didn't know which one. I'm very, very glad!"

"Let's go in. Come, tell me what you're doing."

"I've been living here for two years. I'm working."

"Ah!" said Vronsky, with sympathy. "Let's go in."

And with the habit common among Russians, instead of saying in Russian what he wanted to keep from the servants, he began to speak in French.

"Do you know Madame Karenina? We are traveling together. I am going to see her now," he said in French, carefully scrutinizing Golenishchev's face.

"Ah, I did not know" (though he did know), Golenishchev answered carelessly. "Have you been here long?" he added.

"Three days," Vronsky answered, once more scrutinizing his friend's face intently.

"Yes, he's a decent fellow, and will look at the thing properly," Vronsky said to himself, catching the significance of Golenishchev's face and the change of subject. "I can introduce him to Anna he looks at it properly."

During the three months that Vronsky had spent abroad with Anna, he had always on meeting new people asked himself how the new person would look at his relations with Anna, and for the most part, in men, he had met with the "proper" way of looking at it. But if he had been asked, and those who looked at it "properly" had been asked exactly how they did look at it, both he and they would have been greatly puzzled to answer.

In reality, those who in Vronsky's opinion had the "proper" view had no sort of view at all, but behaved in general as well-bred persons do behave in regard to all the complex and insoluble problems with which life is encompassed on all sides; they behaved with propriety, avoiding allusions and unpleasant questions. They assumed an air of fully comprehending the import and force of the situation, of accepting and even approving of it, but of considering it superfluous and uncalled-for to put all this into words.

Vronsky at once divined that Golenishchev was of this class, and therefore was doubly pleased to see him. And, in fact, Golenishchev's manner to Madame Karenina, when he was taken to call on her, was all that Vronsky could have desired. Obviously without the slightest effort he steered clear of all subjects which might lead to embarrassment.

He had never met Anna before, and was struck by her beauty, and, still more, by the naturalness with which she accepted her position. She blushed when Vronsky brought in Golenishchev, and he was extremely charmed by this childish blush overspreading her candid and handsome face. But what he liked particularly was the way in which at once, as though on purpose, so that there might be no misunderstanding with an outsider, she called Vronsky simply Alexei, and said they were moving into a house they had just taken what was here called a palazzo. Golenishchev liked this direct and simple attitude to her own position. Looking at Anna's manner of simplehearted, spirited gaiety, and knowing Alexei Alexandrovich and Vronsky, Golenishchev fancied that he understood her perfectly. He fancied that he understood what she was utterly unable to understand: how it was that, having made her husband wretched, having abandoned him and her son and lost her good name, she yet felt full of spirits, gaiety, and happiness.

"It's in the guidebook," said Golenishchev, referring to the palazzo Vronsky had taken. "There's a first-rate Tintoretto there. One of his latest period."

"I tell you what: it's a lovely day, let's go and have another look at it," said Vronsky, addressing Anna.

"I shall be very glad to; I'll go and put on my hat. Would you say it's hot?" she said, stopping short in the doorway and looking inquiringly at Vronsky. And again a vivid flush overspread her face.

Vronsky saw from her eyes that she did not know on what terms he cared to be with Golenishchev, and so was afraid of not behaving as he would wish.

He bestowed a long, tender look at her.

"No, not very," he said.

And it seemed to her that she understood everything most of all, that he was pleased with her; and, smiling to him, she walked with her rapid step out of the door.

The friends glanced at one another, and a look of hesitation came into both faces, as though Golenishchev, unmistakably admiring her, would have liked to say something about her, and could not find the right thing to say, while Vronsky desired and dreaded his doing so.

"Well then," Vronsky began, to start a conversation of some sort, "so you're settled here? You're still at the same work, then?" he went on, recalling that he had been told Golenishchev was writing something.

"Yes, I'm writing the second part of the Two Elements," said Golenishchev, coloring with pleasure at the question "that is, to be exact, I am not writing it yet; I am preparing, collecting materials. It will be of far wider scope, and will touch on almost all questions. We in Russia refuse to see that we are the heirs of Byzantium," and he launched into a long and heated explanation of his views.

Vronsky at the first moment felt embarrassed at not even knowing of the first part of the Two Elements, of which the author spoke as something well known. But as Golenishchev began to lay down his opinions and Vronsky was able to follow them even without knowing the Two Elements, he listened to him with some interest, for Golenishchev spoke well. But Vronsky was startled and annoyed by the nervous irascibility with which Golenishchev talked of the subject that engrossed him. As he went on talking, his eyes glittered more and more angrily; he was more and more hurried in his replies to imaginary opponents, and his face grew more and more excited and worried. Remembering Golenishchev, a thin, lively, good-natured and well-bred boy, always at the head of the class, Vronsky could not make out the reason for his irritability, and he did not like it. What he particularly disliked was that Golenishchev, a man belonging to a good set, should put himself on a level with some scribbling fellows with whom he was irritated and angry. Was it worth it? Vronsky disliked it, yet he felt that Golenishchev was unhappy, and was sorry for him. Unhappiness, almost mental derangement, was visible on his mobile, rather handsome face, as, without even noticing Anna's coming in, he went on hurriedly and hotly expressing his views.

When Anna came in in her hat and cape, her lovely hand rapidly swinging her parasol, and stood beside him, it was with a feeling of relief that Vronsky broke away from the plaintive eyes of Golenishchev which fastened persistently upon him, and with a fresh rush of love looked at his charming companion, full of life and happiness. Golenishchev recovered himself with an effort, and at first was dejected and gloomy, but Anna, disposed as she was at that time to feel friendly with everyone, soon revived his spirits by her direct and lively manner. After trying various subjects of conversation, she got him upon painting, of which he talked very well, and she listened to him attentively. They walked to the house they had taken and looked over it.

## Anna Karenina

"I am very glad of one thing," said Anna to Golenishchev when they were on their way back, "Alexei will have a capital atelier. You must certainly take that room," she said to Vronsky in Russian, using the affectionately familiar form, as though she saw that Golenishchev would become intimate with them in their isolation, and that there was no need of reserve before him.

"Do you paint?" said Golenishchev turning round quickly to Vronsky.

"Yes, I used to study long ago, and now I have begun to do a little," said Vronsky, reddening.

"He has great talent," said Anna with a delighted smile. "I'm no judge, of course. But good judges have said the same."

### VIII.

Anna, in that first period of her emancipation and rapid return to health, felt herself unpardonably happy and full of the joy of life. The thought of her husband's unhappiness did not poison her happiness. On one side that memory was too awful to be thought of. On the other side her husband's unhappiness had given her too much happiness to be regretted. The memory of all that had happened after her illness: her reconciliation with her husband, the rupture, the news of Vronsky's wound, his visit, the preparations for divorce, the departure from her husband's house, the parting from her son—all that seemed to her like a delirious dream, from which she had waked up abroad, alone with Vronsky. The thought of the harm caused to her husband aroused in her a feeling like repulsion, and akin to what a drowning man might feel who has shaken off another man clinging to him. That man did drown. It was an evil action, of course, but it was the sole means of escape, and better not to brood over these fearful facts.

One consolatory reflection upon her conduct had occurred to her at the first moment of the final rupture, and when now she recalled all the past, she remembered that one reflection. "I have inevitably made that man wretched," she thought; "but I don't want to profit by his misery. I, too, am suffering, and shall suffer; I am losing what I prized above everything—I am losing my good name and my son. I have done wrong, and so I don't want happiness, I don't want a divorce, and shall suffer from my shame and the separation from my child." But, however sincerely Anna had meant to suffer, she was not suffering. Shame there was none. With the tact of which both had such a large share, they had succeeded in avoiding Russian ladies abroad, and so had never placed themselves in a false position, and everywhere they had met people who pretended that they perfectly understood their position, far better indeed than they did themselves. Separation from the son she loved—even that did not cause her anguish in these early days. The baby girl—his child—was so sweet, and had so won Anna's heart, since she was all that was left her, that Anna rarely thought of her son.

The desire for life, waxing stronger with recovered health, was so intense, and the conditions of life were so new and pleasant, that Anna felt unpardonably happy. The more she got to know Vronsky, the more she loved him. She loved him for himself, and for his love for her. Her complete ownership of him was a continual joy to her. His presence was always sweet to her. All the traits of his character, which she learned to know better and better, were unutterably dear to her. His appearance, changed by his civilian dress, was as fascinating to her as though she were some young girl in love. In everything he said, thought, and did, she saw something particularly noble and elevated. Her adoration of him alarmed her indeed; she sought and could not find in him anything not fine. She dared not show him her sense of her own insignificance beside him. It seemed to her that, knowing this, he might sooner cease to love her; and she dreaded nothing now so much as losing his love, though she had no grounds for fearing it. But she could not help being grateful to him for his attitude to her, and showing that she appreciated it. He, who had in her opinion such a marked aptitude for a political career, in which he would have been certain to play a leading part—he had sacrificed his ambition for her sake, and never betrayed the slightest regret. He was more lovingly respectful to her than ever, and the constant care that she should not feel the awkwardness of her

position never deserted him for a single instant. He, so manly a man, never opposed her, had indeed, with her, no will of his own, and was anxious, it seemed, for nothing but to anticipate her wishes. And she could not but appreciate this, even though the very intensity of his solicitude for her, the atmosphere of care with which he surrounded her, sometimes weighed upon her.

Vronsky, meanwhile, in spite of the complete realization of what he had so long desired, was not perfectly happy. He soon felt that the realization of his desires gave him no more than a grain of sand out of the mountain of happiness he had expected. It showed him the mistake men make in picturing to themselves happiness as the realization of their desires. For a time after joining his life to hers, and putting on civilian dress, he had felt all the delight of freedom in general, of which he had known nothing before, and of freedom in his love and he was content, but not for long. He was soon aware that there was springing up in his heart a desire for desires longing. Without conscious intention he began to clutch at every passing caprice, taking it for a desire and an object. Sixteen hours of the day must be occupied in some way, since they were living abroad in complete freedom, outside the conditions of social life which filled up time in Petersburg. As for the amusements of bachelor existence, which had provided Vronsky with entertainment on previous tours abroad, they could not be thought of, since the sole attempt of the sort had led to a sudden attack of depression in Anna, quite out of proportion with the cause a late supper with bachelor friends. Relations with the society of the place foreign and Russian were equally out of the question, owing to the irregularity of their position. The inspection of objects of interest, apart from the fact that everything had been seen already, had not for Vronsky, a Russian and a sensible man, the inexplicable significance Englishmen are able to attach to that pursuit.

And, just as the hungry animal eagerly clutches every object it can get, hoping to find nourishment in it, Vronsky quite unconsciously clutched first at politics, then at new books, and then at pictures.

As he had, ever since he was a child, a taste for painting, and as, not knowing what to spend his money on, he had begun collecting engravings, he came to a stop at painting, began to take interest in it, and concentrated upon it the unoccupied fund of desires which demanded satisfaction.

As he had a capacity for understanding art, and for true and tasteful imitation in the art of painting, he supposed himself to have the real thing essential for an artist, and after hesitating for some time which style of painting to select religious, historical, realistic, or genre painting he set to work to paint. He appreciated all kinds, and could have felt inspired by any one of them; but he had no conception of the possibility of knowing nothing at all of any school of painting, and of being inspired directly by what is within the soul, without caring whether what is painted will belong to any recognized school. Since he knew nothing of this, and drew his inspiration, not directly from life, but indirectly from life embodied in art, his inspiration came very quickly and easily, and as quickly and easily came his success in painting something very similar to the sort of painting he was trying to imitate.

More than any other style he liked the French graceful and effective and in that style he began to paint Anna's portrait in Italian costume, and the portrait seemed to him, and to everyone who saw it, extremely successful.

## IX.

The old neglected palazzo, with its lofty plastic plafonds and frescoes on the walls, with its floors of mosaic, with its heavy yellow stuff curtains on the windows, with its vases on pedestals, and its open fireplaces, its carved doors and gloomy reception rooms hung with pictures this palazzo did much, by its very appearance after they had moved into it, to confirm in Vronsky the agreeable illusion that he was not so much a Russian country gentleman, a retired officer of the life guards, as an enlightened amateur and patron of the arts, himself a modest artist who had renounced the world, his connections, and his ambition for the sake of the woman he loved.

The pose chosen by Vronsky with their removal into the palazzo was completely successful, and having, through

## Anna Karenina

Golenishchev, made the acquaintance of a few interesting people, for a time he was satisfied. He painted studies from nature under the guidance of an Italian professor of painting, and studied medieval Italian life. Medieval Italian life so fascinated Vronsky that even his hat, and a plaid flung over his shoulder, were worn in the medieval style, which, indeed, was extremely becoming to him.

"Here we live, and know nothing of what's going on," Vronsky said to Golenishchev, when the latter came to see him one morning. "Have you seen Mikhailov's picture?" he said, handing him a Russian gazette he had received that morning, and pointing to an article on a Russian artist, living in the very same town, and just finishing a picture which had long been talked about, and had been bought beforehand. The article reproached the government and the academy for letting so remarkable an artist be left without encouragement and support.

"I've seen it," answered Golenishchev. "Of course, he's not without talent, but it's all in a wrong direction. It's all the Ivanov–Strauss–Renan attitude to Christ and to religious painting."

"What is the subject of the picture?" asked Anna.

"Christ before Pilate. Christ is represented as a Jew with all the realism of the new school."

And the question of the subject of the picture having brought him to one of his favorite theories, Golenishchev launched forth into a disquisition on it.

"I can't understand how they can fall into such a gross mistake. Christ always has His definite embodiment in the art of the great masters. And therefore, if they want to depict, not God, but a revolutionist or a sage, let them take from history a Socrates, a Franklin, a Charlotte Corday, but not Christ. They take the very figure which cannot be taken for their art, and then..."

"And is it true that this Mikhailov is in such poverty?" asked Vronsky, thinking that, as a Russian Maecenas, it was his duty to assist the artist regardless of whether the picture were good or bad.

"Hardly. He's a remarkable portrait painter. Have you ever seen his portrait of Madame Vassilkova? But I believe he doesn't care about painting any more portraits, and so, likely as not, he may be in want. I maintain that..."

"Couldn't we ask him to paint a portrait of Anna Arkadyevna?" said Vronsky.

"Why mine?" said Anna. "After yours I don't want another portrait. Better have one of Annie" (so she called her baby girl). "Here she is," she added, looking out of the window at the handsome Italian nurse, who was carrying the child out into the garden, and immediately glancing, unperceived, at Vronsky. The handsome nurse, from whom Vronsky was painting a head for his picture, was the one hidden grief in Anna's life. He painted with her as his model, admired her beauty and medievalism, and Anna dared not confess to herself that she was afraid of becoming jealous of this nurse, and was for that reason particularly gracious and condescending both to her and her little son.

Vronsky, too, glanced out of the window and into Anna's eyes, and, turning at once to Golenishchev, he said:

"Do you know this Mikhailov?"

"I have met him. But he's a queer fish, and quite without breeding. You know, one of those savage new people one is forever coming across nowadays; one of those freethinkers, you know, who are reared d'emblee in theories of atheism, negation, and materialism. In former days," said Golenishchev, not observing, or not willing to observe, that both Anna and Vronsky wanted to speak, "in former days the freethinker was a man who had been brought up in ideas of religion, law, and morality, and only through conflict and struggle came to free thought; but

now there has sprung up a new type of native freethinker who grows up without even having heard of principles of morality or of religion, of the existence of authorities, who grows up directly in ideas of negation in everything, that is to say, a savage. Well, he's of that class. He's the son, it appears, of some Moscow butler, and has never had any sort of bringing-up. When he got into the academy and made his reputation he tried, as he's no fool, to educate himself. And he turned to what seemed to him the very source of culture the magazines. In old times, you see, a man who wanted to educate himself a Frenchman, for instance would have set to work to study all the classics: theologians and tragedians and historians and philosophers, and, you see, all the intellectual work that came in his way. But in our day he goes straight for the literature of negation, very quickly assimilates all the extracts of the science of negation, and he's all set. And that's not all twenty years ago he would have found in that literature traces of conflict with authorities, with the creeds of the ages; he would have perceived from this conflict that there was something else; but now he comes at once upon a literature in which the old creeds do not even furnish matter for discussion, but it is stated baldly that there is nothing else; just evolution, natural selection, the struggle for existence and that's all. In my article I've..."

"I tell you what," said Anna, who had for a long while been exchanging wary glances with Vronsky, and knew that he was not in the least interested in the education of this artist, but was simply absorbed by the idea of assisting him, and ordering a portrait of him; "I tell you what," she said, resolutely interrupting Golenishchev, who was still talking away, "let's go and see him!"

Golenishchev recovered his self-possession and readily agreed. But, as the artist lived in a remote ward of the town, it was decided to take a carriage.

An hour later Anna, with Golenishchev by her side and Vronsky on the front seat of the carriage, facing them, drove up to an ugly new house in a remote ward. On learning from the porter's wife, who came out to them, that Mikhailov saw visitors at his studio, but that at that moment he was in his lodging only a couple of steps off, they sent her to him with their cards, asking permission to see his pictures.

## X.

The artist Mikhailov was, as always, at work when the cards of Count Vronsky and Golenishchev were brought to him. In the morning he had been working in his studio at his big picture. On getting home he flew into a rage with his wife for not having managed to put off the landlady, who had been asking for money.

"I've said it to you twenty times, don't enter into details. You're fool enough at all times, and when you start explaining things in Italian you're a triple fool," he said after a long dispute.

"Don't let it run so long; it's not my fault. If I had the money..."

"Leave me in peace, for God's sake!" Mikhailov shrieked, with tears in his voice, and, stopping his ears, he went off into his working room, on the other side of a partition wall, and closed the door after him. "There's no sense in her!" he said to himself, sat down to the table, and, opening a portfolio, he set to work at once with peculiar fervor at a sketch he had begun.

Never did he work with such fervor and success as when things went ill with him, and especially when he quarreled with his wife. "Oh! damn them all!" he thought as he went on working. He was making a sketch for the figure of a man in a violent rage. A sketch had been made before, but he was dissatisfied with it. "No, that one was better.... Where is it?" He went back to his wife, and, scowling and not looking at her, asked his eldest little girl: Where was that piece of paper he had given them? The paper with the discarded sketch on it was found, but it was dirty, and spotted with candle grease. Still, he took the sketch, laid it on his table, and, moving a little away, screwing up his eyes, he fell to gazing at it. All at once he smiled and gesticulated gleefully.



"That's it! That's it!" he said, and, at once picking up the pencil, he began drawing rapidly. The spot of tallow had given the man a new pose.

He had sketched this new pose, when all at once he recalled the face of a shopkeeper of whom he had bought cigars, a vigorous face with a prominent chin, and he sketched this very face, this chin, on to the figure of the man. He laughed aloud with delight. The figure from a lifeless imagined thing had become living, and such that it could never be changed. That figure lived, and was clearly and unmistakably defined. The sketch might be corrected in accordance with the requirements of the figure; the legs, indeed, could and must be put differently, and the position of the left hand must be quite altered; the hair, too, might be thrown back. But in making these corrections he was not altering the figure but simply getting rid of what concealed the figure. He was, as it were, stripping off the veils which hindered it from being distinctly seen; each new feature only brought out the whole figure in all its force and vigor, as it had suddenly come to him from the spot of tallow. He was carefully finishing the figure when the cards were brought him.

"Coming, coming!"

He went in to his wife.

"Come, Sasha, don't be cross!" he said, smiling timidly and affectionately at her. "You were to blame. I was to blame. I'll make it all right." And, having made peace with his wife, he put on an olive-green overcoat with a velvet collar and a hat, and went toward his studio. The successful figure he had already forgotten. Now he was delighted and excited at the visit of these people of consequence, Russians, who had come in their carriage.

Of his picture, the one that stood now on his easel, he had at the bottom of his heart one conviction that no one had ever painted a picture like it. He did not believe that this picture was better than all the pictures of Raphael, but he knew that what he tried to convey in that picture no one ever had conveyed. This he knew positively, and had known a long while, ever since he had begun to paint it. But other people's criticisms, whatever they might be, had yet immense consequence in his eyes, and they agitated him to the depths of his soul. Any remark, the most insignificant, which showed that the critic saw even the tiniest part of what he himself saw in the picture, agitated him to the depths of his soul. He always attributed to his judges a more profound comprehension than he had himself, and always expected from them something he did not himself see in the picture. And often in their criticisms he fancied that he found this.

He walked rapidly to the door of his studio, and in spite of his excitement he was struck by the soft light on Anna's figure as she stood in the shade of the entrance listening to Golenishchev, who was eagerly telling her something, while she evidently wanted to look round at the artist. He was himself unconscious how, as he approached them, he seized on this impression and absorbed it, as he had the chin of the shopkeeper who had sold him the cigars, and put it away somewhere to be brought out when he wanted it. The visitors, not agreeably impressed beforehand by Golenishchev's account of the artist, were still less so by his personal appearance. Thickset and of middle height, with nimble movements, with his brown hat, olive-green coat and narrow trousers though wide trousers had been a long while in fashion most of all, with the ordinariness of his broad face, and the combined expression of timidity and anxiety to keep up his dignity, Mikhailov made an unpleasant impression.

"Please step in," he said, trying to look indifferent, and going into the passage he took a key out of his pocket and opened the door.

## XI.

On entering the studio, Mikhailov once more scanned his visitors and noted down in his imagination Vronsky's

expression too, and especially his jaws. Although his artistic sense was unceasingly at work collecting materials, although he felt a continually increasing excitement as the moment of criticizing his work drew nearer, he rapidly and subtly formed, from imperceptible signs, a mental image of these three persons. That fellow (Golenishchev) was a Russian living here. Mikhailov did not remember his surname nor where he had met him, nor what he had said to him. He only remembered his face as he remembered all the faces he had ever seen; but he remembered, too, that it was one of the faces laid by in his memory in the immense class of the falsely consequential and poor in expression. The abundant hair and very open forehead gave an appearance of consequence to the face, which had only one expression a petty, childish, peevish expression, concentrated just above the bridge of the narrow nose. Vronsky and Madame Karenina must be, Mikhailov supposed, distinguished and wealthy Russians, knowing nothing about art, like all those wealthy Russians, but posing as amateurs and connoisseurs. "Most likely they've already looked at all the antiques, and now they're making the round of the studios of the new people the German humbug, and the cracked Pre-Raphaelite English fellow and have only come to me to make the point of view complete," he thought. He was well acquainted with the way dilettanti have (the cleverer they were the worse he found them) of looking at the works of contemporary artists with the sole object of being in a position to say that art is lost, and the more one sees of the new men the more one sees how inimitable the works of the great old masters have remained. He expected all this; he saw it all in their faces, he saw it in the careless indifference with which they talked among themselves, stared at the lay figures and busts, and walked about in leisurely fashion, waiting for him to uncover his picture. But in spite of this, while he was turning over his studies, pulling up the blinds and taking off the sheet, he was in intense excitement, especially as, in spite of his conviction that all distinguished and wealthy Russians were certain to be beasts and fools, he liked Vronsky, and still more Anna.

"Here, if you please," he said, moving on one side with his nimble gait and pointing to his picture, "it's the exhortation by Pilate. Matthew, chapter 27," he said, feeling his lips were beginning to tremble with emotion. He moved away and stood behind them.

For the few seconds during which the visitors were gazing at the picture in silence, Mikhailov too gazed at it with the indifferent eye of an outsider. For those few seconds he was sure in anticipation that a higher, juster criticism would be uttered by them, by those very visitors whom he had been despising so a moment before. He forgot all he had thought about his picture before, during the three years he had been painting it; he forgot all its qualities, which had been absolutely certain to him he saw the picture with their indifferent, new, outside eyes, and saw nothing good in it. He saw in the foreground Pilate's irritated face and the serene face of Christ, and in the background the figures of Pilate's retinue and the face of John watching what was happening. Every face that, with such exertion, such blunders and corrections had grown up within him with its special character, every face that had given him such torments and such raptures, and all these faces so many times transposed for the sake of the harmony of the whole, all the shades of color and tones that he had attained with such labor all of this together seemed to him now, looking at it with their eyes, the merest vulgarity, something that had been done a thousand times over. The face dearest to him, the face of Christ, the center of the picture, which had given him such ecstasy as it unfolded itself to him, was utterly lost to him when he glanced at the picture with their eyes. He saw a well-painted (no, not even that he distinctly saw now a mass of defects) repetition of those endless Christs of Titian, Raphael, Rubens, and the same soldiers and Pilate. It was all common, poor, and stale, and badly painted weak and motley. They would be justified in repeating hypocritically courteous speeches in the presence of the painter, and pitying him and laughing at him when they were alone again.

The silence (though it lasted no more than a minute) became too intolerable to him. To break it, and to show he was not agitated, he made an effort and addressed Golenishchev.

"I think I've had the pleasure of meeting you," he said, looking uneasily first at Anna, then at Vronsky, in fear of losing any shade of their expression.

"To be sure! We met at Rossi's; do you remember, at that soiree when that Italian lady recited the new Rachel?" Golenishchev answered easily, removing his eyes without the slightest regret from the picture and turning to the artist.

Noticing, however, that Mikhailov was expecting a criticism of the picture, he said:

"Your picture has got on a great deal since I saw it last time; and what strikes me particularly now, as it did then, is the figure of Pilate. One so knows the man: a good-natured, capital fellow, but an official through and through, who knows not what he doth. But I fancy..."

All of Mikhailov's mobile face beamed at once; his eyes sparkled. He tried to say something, but he could not speak for excitement, and pretended to be coughing. Low as was his opinion of Golenishchev's capacity for understanding art, trifling as was the true remark upon the fidelity of the expression of Pilate as an official, and offensive as might have seemed the utterance of so unimportant an observation while nothing was said of more serious points, Mikhailov was in an ecstasy of delight at this observation. He had himself thought about Pilate's figure just what Golenishchev had said. The fact that this reflection was but one of millions of reflections, which, as Mikhailov knew for certain, would be true, did not diminish for him the significance of Golenishchev's remark. His heart warmed to Golenishchev for this remark, and from a state of depression he suddenly passed to ecstasy. At once the whole of his picture lived before him in all the indescribable complexity of everything living. Mikhailov again tried to say that that was how he understood Pilate, but his lips quivered intractably, and he could not pronounce the words. Vronsky and Anna too said something in that subdued voice which (partly to avoid hurting the artist's feelings and partly to avoid giving loud utterance to something silly so easily done when talking of art) people use at exhibitions of pictures. Mikhailov fancied that the picture had made an impression on them too. He went up to them.

"How marvelous Christ's expression is!" said Anna. Of all she saw she liked that expression most of all, and she felt that it was the center of the picture, and so praise of it would be pleasant to the artist. "One can see that He is pitying Pilate."

This again was one of the million true reflections that could be found in his picture and in the figure of Christ. She said that He was pitying Pilate. In Christ's expression there ought to be indeed an expression of pity, since there is an expression of love, of unearthly peace, of preparedness for death, and a sense of the vanity of words. Of course, there is the expression of an official in Pilate, and of pity in Christ, considering that one is the incarnation of the fleshly, and the other of the spiritual, life. All this and much more flashed into Mikhailov's thoughts. And his face beamed with delight again.

"Yes, and how that figure is done what atmosphere! One can walk round it," said Golenishchev, unmistakably betraying by this remark that he did not approve of the meaning and idea of the figure.

"Yes, there's a wonderful mastery!" said Vronsky. "How those figures in the background stand out! There you have technique," he said, addressing Golenishchev, alluding to a conversation between them about Vronsky's despair of attaining this technique.

"Yes, yes, marvelous!" Golenishchev and Anna assented.

In spite of the excited condition in which he was, the sentence about technique had sent a pang to Mikhailov's heart, and looking angrily at Vronsky he suddenly scowled. He had often heard this word "technique," and was utterly unable to understand what was meant by it. He knew that by this term was meant a mechanical dexterity for painting or drawing, entirely apart from its subject. He had noticed often that even in actual praise technique was opposed to essential quality, as though one could paint well something that was bad. He knew that a great deal of attention and care was necessary in taking off the veils, to avoid injuring the creation itself, and to take off

all the veils; but there was no art of painting no technique of any sort about it. If to a little child or to his cook were revealed what he saw, either would have been able to peel the veils off what was seen. And the most experienced and adroit painter could not by mere mechanical faculty paint anything if the lines of the subject were not revealed to him first. Besides, he saw that if it came to talking about technique, it was impossible to praise him for it. In all he had painted he saw faults that hurt his eyes, coming from want of care in taking off the veils faults he could not correct now without spoiling the whole. And in almost all the figures and faces he saw, too, remnants of the veils not perfectly removed that spoiled the picture.

"One thing might be said, if you will allow me to make the remark..." observed Golenishchev.

"Oh, I shall be delighted, I beg of you to do so," said Mikhailov with a forced smile.

"That is, you make Him the man-god, and not the God-man. But I know that was what you meant to do."

"I cannot paint a Christ that is not in my heart," said Mikhailov morosely.

"Yes; but in that case, if you will allow me to say what I think... Your picture is so fine that my observation cannot detract from it, and, besides, it is only my personal opinion. With you it is different. Your very motive is different. But let us take Ivanov. I imagine that if Christ is brought down to the level of an historical character, it would have been better for Ivanov to select some other historical subject, fresh, untouched."

"But if this is the greatest subject presented to art?"

"If one looked one would find others. But the point is that art cannot suffer doubt and discussion. And before the picture of Ivanov the question arises for the believer and the unbeliever alike, 'Is it God, or is it not God?' and the unity of the impression is destroyed."

"Why so? I think that, for educated people," said Mikhailov, "the question cannot exist."

Golenishchev did not agree with this, and confounded Mikhailov by his support of his first idea of the unity of the impression being essential to art.

Mikhailov was greatly perturbed, but he could say nothing in defense of his own idea.

## XII.

Anna and Vronsky had long been exchanging glances, regretting their friend's flow of cleverness. At last Vronsky, without waiting for the artist, walked away to another small picture.

"Oh, how exquisite! What a lovely thing! A gem! How exquisite!" they cried with one voice.

"What is it they're so pleased with?" thought Mikhailov. He had positively forgotten that picture he had painted three years ago. He had forgotten all the agonies and the ecstasies he had lived through with that picture when, for several months, it had been the one thought haunting him day and night. He had forgotten, as he always forgot, the pictures he had finished. He did not even like to look at it, and had only brought it out because he was expecting an Englishman who wanted to buy it.

"Oh, that's only an old study," he said.

"How fine!" said Golenishchev, he too, with unmistakable sincerity, falling under the spell of the picture.

## Anna Karenina

Two boys were angling in the shade of a willow tree. The elder had just dropped in the hook, and was carefully pulling the float from behind a bush, entirely absorbed in what he was doing. The other, a little younger, was lying in the grass leaning on his elbows, with his tangled, flaxen head in his hands, staring at the water with his dreamy blue eyes. What was he thinking of?

The enthusiasm over this picture stirred some of the old feeling for it in Mikhailov, but he feared and disliked this waste of feeling for things past, and so, even though this praise was grateful to him, he tried to draw his visitors away to a third picture.

But Vronsky asked whether the picture was for sale? To Mikhailov at that moment, excited by visitors, it was extremely distasteful to speak of money matters.

"It is put up there to be sold," he answered, scowling gloomily.

When the visitors had gone, Mikhailov sat down opposite the picture of Pilate and Christ, and in his mind went over what had been said, and what, though not said, had been implied by those visitors. And, strange to say, what had had such weight with him, while they were there and while he mentally put himself at their point of view, suddenly lost all importance for him. He began to look at his picture with all his own full, artist's vision, and was soon in that mood of conviction of the perfectibility, and so of the significance, of his picture a conviction essential to the intensest fervor, excluding all other interests in which alone he could work.

Christ's foreshortened leg was not right, though. He took his palette and began to work. As he corrected the leg he looked continually at the figure of John in the background, which his visitors had not even noticed, but which he knew was beyond perfection. When he had finished the leg he wanted to touch that figure, but he felt too much excited for that. He was equally unable to work when he was cold and when he was too much affected and saw everything too clearly. There was only one stage in the transition from coldness to inspiration, at which work was possible. Today he was too much agitated. He would have covered the picture, but he stopped, holding the cloth in his hand, and, smiling blissfully, gazed a long while at the figure of John. At last, tearing himself away with evident regret, he dropped the cloth, and, exhausted but happy, went home.

Vronsky, Anna, and Golenishchev, on their way home, were particularly lively and cheerful. They talked of Mikhailov and his pictures. The word talent, by which they meant an inborn, almost physical, aptitude apart from brain and heart, and in which they tried to find an expression for all the artist had gained from life, recurred particularly often in their talk, as though it were necessary for them to sum up what they had no conception of, though they wanted to talk of it. They said that there was no denying his talent, but that his talent could not develop for want of education the common defect of our Russian artists. But the picture of the boys had imprinted itself on their memories, and they were continually coming back to it. "What an exquisite thing! How he has succeeded in it, and how simply! He doesn't even comprehend how good it is. Yes, I mustn't let it slip; I must buy it," said Vronsky.

### XIII.

Mikhailov sold Vronsky his picture, and agreed to paint a portrait of Anna. On the day fixed he came and began the work.

From the fifth sitting the portrait impressed everyone, especially Vronsky, not only by its resemblance, but by its characteristic beauty. It was strange how Mikhailov could have discovered precisely the beauty characteristic of her. "One needs to know and love her as I have loved her to discover the very sweetest expression of her soul," Vronsky thought, though it was only from this portrait that he had himself learned this sweetest expression of her soul. But the expression was so true that he, and others too, fancied they had long known it.

"I have been struggling on for ever so long without doing anything," he said of his own portrait of her, "and he just looked and painted it. That's where technique comes in."

"That will come," was the consoling reassurance given him by Golenishchev, in whose view Vronsky had both talent, and, what was most important, education, giving him an exalted outlook on art. Golenishchev's faith in Vronsky's talent was propped up by his own need of Vronsky's sympathy and approval for his own essays and ideas, and he felt that the praise and support must be mutual.

In another man's house, and especially in Vronsky's palazzo, Mikhailov was quite a different man from what he was in his studio. He behaved with hostile deference, as though he were afraid of coming closer to people he did not respect. He called Vronsky "Your Excellency," and, notwithstanding Anna's and Vronsky's invitations, he would never stay to dinner, nor come except for the sittings. Anna was even more friendly to him than to other people, and was very grateful for her portrait. Vronsky was more than courteous with him, and was obviously interested to know the artist's opinion of his picture. Golenishchev never let slip an opportunity of instilling sound ideas about art into Mikhailov. But Mikhailov remained equally chilly to all of these people. Anna was aware from his eyes that he liked to look at her, but he avoided conversation with her. Vronsky's talk about his painting he met with stubborn silence, and he was as stubbornly silent when he was shown Vronsky's picture. He was unmistakably bored by Golenishchev's conversation, and he did not attempt to oppose him.

Altogether Mikhailov, with his reserved and disagreeable, and, apparently, hostile attitude, was quite disliked by them as they got to know him better; and they were glad when the sittings were over, and they were left with a magnificent portrait in their possession, and he gave up coming.

Golenishchev was the first to give expression to an idea that had occurred to all of them which was that Mikhailov was simply envious of Vronsky.

"Not envious, let us say, since he has talent; but it annoys him that a wealthy man of the highest society, and a Count, too (you know these fellows detest all that), can, without any particular trouble, do as well, if not better, than he who has devoted all his life to it. And, more than all, it's a question of education, which he lacks."

Vronsky defended Mikhailov, but at the bottom of his heart he believed this, because in his view a man of a different, lower world would be sure to be envious.

Anna's portrait the same subject painted from nature both by him and by Mikhailov ought to have shown Vronsky the difference between him and Mikhailov; but he did not see it. Only after Mikhailov's portrait was painted did he leave off painting his own portrait of Anna, deciding that it was no longer needed. His picture of medieval life he went on with. And he himself, and Golenishchev, and, still more, Anna, thought it very good, because it was far more like the celebrated pictures they knew than Mikhailov's picture.

Mikhailov meanwhile, although Anna's portrait greatly fascinated him, was even more glad than they were when the sittings were over, and he had no longer to listen to Golenishchev's disquisitions upon art, and could forget about Vronsky's painting. He knew that Vronsky could not be prevented from amusing himself with painting; he knew that he and all dilettanti had a perfect right to paint what they liked, but it was distasteful to him. A man could not be prevented from making himself a big wax doll, and kissing it. But if the man were to come with the doll and sit before a man in love, and begin caressing his doll as the lover caressed the woman he loved, it would be distasteful to the lover. Just such a distasteful sensation was what Mikhailov felt at the sight of Vronsky's painting: he felt it both ludicrous and irritating, both pitiable and offensive.

Vronsky's interest in painting and the Middle Ages did not last long. He had enough taste for painting to be unable to finish his picture. The picture came to a standstill. He was vaguely aware that its defects, inconspicuous at first, would be glaring if he were to go on with it. The same experience befell him as Golenishchev, who felt that he

had nothing to say, and continually deceived himself with the theory that his idea was not yet mature, that he was working it out and collecting material. This exasperated and tortured Golenishchev, but Vronsky was incapable of deceiving and torturing himself, and even more incapable of exasperation. With his characteristic decision, without explanation or apology, he simply ceased work at painting.

But, without this occupation, the life of Vronsky and of Anna, who wondered at his loss of interest in it, struck them as intolerably tedious in an Italian town; the palazzo suddenly seemed so obtrusively old and dirty, the spots on the curtains, the cracks in the floors, the broken plaster on the cornices, became so disagreeably obvious, and the everlasting sameness of Golenishchev, and the Italian professor, and the German traveler, became so wearisome, that they had to make some change. They resolved to go to Russia, to the country. In Peterburg Vronsky intended to arrange a partition of the land with his brother, while Anna meant to see her son. The summer they intended to spend on Vronsky's great family estate.

#### XIV.

Levin had been married two months. He was happy, but not at all in the way he had expected to be. At every step he found disenchantment in his former dreams, and new, unexpected enchantment. He was happy; but on entering upon family life he saw at every step that it was utterly different from what he had imagined. At every step he experienced what a man would experience who, after admiring the smooth, happy course of a little boat on a lake, should get himself into that little boat. He saw that it was not all sitting still, and floating smoothly; that one had to think too, not for an instant forgetting where one was floating; and that there was water under one, and that one must row; and that his unaccustomed hands would be sore; and that it was only easy to look at; but that doing it, though very delightful was very difficult.

As a bachelor, when he had watched other people's married life, had seen the petty cares, the squabbles, the jealousy, he had only smiled contemptuously in his heart. In his future married life there could be, he was convinced, nothing of that sort; even the external forms, indeed, he fancied, must be utterly unlike the life of others in everything. And all of a sudden, instead of his life with his wife being made on an individual pattern, it was, on the contrary, entirely made up of the pettiest details, which he had so despised before, but which now, by no will of his own, had gained an extraordinary and indisputable importance. And Levin saw that the organization of all these details was by no means so easy as he had fancied before. Although Levin believed himself to have the most exact conceptions of domestic life, unconsciously, like all men, he pictured domestic life only as enjoyment of love, with nothing to hinder and no petty cares to distract. He ought, as he conceived the position, to do his work, and to find repose from it in the happiness of love. She ought to be beloved, and nothing more. But, like all men, he forgot that she too would want work. And he was surprised that she, his poetic, exquisite Kitty, could not merely in the first weeks, but even in the first days of their married life, think, remember, and busy herself about tablecloths, and furniture, about mattresses for visitors, about a tray, about the cook, and the dinner, and so on. While they were still engaged, he had been struck by the definiteness with which she had declined the tour abroad and decided to go into the country, as though she knew of something she wanted, and could still think of something outside her love. This had jarred upon him then, and now her trivial cares and anxieties jarred upon him several times. But he saw that this was essential for her. And, loving her as he did, though he did not understand the reason for them, and jeered at these domestic pursuits, he could not help admiring them. He jeered at the way in which she arranged the furniture they had brought from Moscow; rearranged their rooms; hung up curtains; prepared rooms for visitors, and for Dolly; saw after an abode for her new maid; ordered dinner of the old cook; came into collision with Agathya Mikhailovna, taking from her the charge of the stores. He saw how the old cook smiled, admiring her, and listening to her inexperienced, impossible orders; how mournfully and tenderly Agathya Mikhailovna shook her head over the young mistress's new arrangements in the pantry. He saw that Kitty was extraordinarily sweet when, laughing and crying, she came to tell him that her maid, Masha, was used to looking upon her as her young lady, and so no one obeyed her. It seemed to him sweet, but strange, and he thought it would have been better without this.

He did not know how great a sense of change she was experiencing; she, who at home had sometimes wanted some pickled cabbage, or sweets, without the possibility of getting either, now could order what she liked, buy pounds of sweets, spend as much money as she liked, and order any cakes she pleased.

She was dreaming with delight now of Dolly's coming to them with her children, especially because she would order for the children their favorite cakes, and Dolly would appreciate all her new housekeeping. She did not know herself why and wherefore, but the arranging of her house had an irresistible attraction for her. Instinctively feeling the approach of spring, and knowing that there would be days of rough weather too, she built her nest as best she could, and was in haste at the same time to build and to learn how to do it.

This care for domestic details in Kitty, so opposed to Levin's ideal of exalted happiness, was at first one of the disenchantments; and this sweet care of her household, the aim of which he did not understand, but could not help loving, was one of the new enchantments.

Another disenchantment and enchantment consisted of their quarrels. Levin could never have conceived that between him and his wife any relations could arise other than tender, respectful and loving, and all at once, in the very early days, they quarreled, so that she said he did not care for her, that he cared for no one but himself, burst into tears, and waved her hands.

This first quarrel arose from Levin's having gone out to a new grange and having been away half an hour too long, because he had tried to get home by a short cut and had lost his way. He drove home thinking of nothing but her, of her love, of his own happiness, and, the nearer he drew to home, the warmer was his tenderness for her. He ran into the room with the same feeling, with an even stronger feeling, than he had had when he reached the Shcherbatskys' house to propose. And suddenly he was met by a lowering expression he had never seen in her. He would have kissed her, she pushed him away.

"What is it?"

"You've been enjoying yourself..." she began, trying to be calm and spiteful.

But as soon as she opened her mouth, she burst into a stream of reproach, of senseless jealousy, of all that had been torturing her during that half-hour which she had spent sitting motionless at the window. It was only then, for the first time, that he clearly understood what he had not understood when he led her out of the church after the wedding. He felt now that he was not simply close to her, but that he did not know where he ended and she began. He felt this from the agonizing sensation of division that he experienced at that instant. He was offended for the first instant, but the very same second he felt that he could not be offended by her, that she was himself. He felt for the first moment as a man feels when, having suddenly received a violent blow from behind, he turns round, angry and eager to avenge himself, to look for his antagonist, and finds that it is he himself who has accidentally struck himself, that there is no one to be angry with, and that he must put up with and try to soothe the pain.

Never afterward did he feel it with such intensity, but this first time he could not for a long while get over it. His natural feeling urged him to defend himself, to prove to her she was wrong; but to prove her wrong would mean irritating her still more and making the rupture greater that was the cause of all his suffering. One habitual feeling impelled him to get rid of the blame and to pass it on her; another feeling, even stronger, impelled him as quickly as possible to smooth over the rupture without letting it grow greater. To remain under such undeserved reproach was wretched, but to make her suffer by justifying himself was worse still. Like a man half-awake in an agony of pain, he wanted to tear out, to fling away the seat of pain, and, coming to his senses, he felt that the seat of pain was himself. He could do nothing but try to help the seat of pain bear it, and this he tried to do.



They made peace. She, recognizing that she was wrong, though she did not say so, became tenderer to him, and they experienced new, redoubled happiness in their love. But that did not prevent such quarrels from happening again, and exceedingly often too, on the most unexpected and trivial grounds. These quarrels frequently arose from the fact that they did not yet know what was of importance to each, and that all this early period they were both often in a bad temper. When one was in a good temper, and the other in a bad temper, the peace was not broken; but when both happened to be in an ill-humor, quarrels sprang up from such incomprehensibly trifling causes that they could never remember afterward what they had quarreled about. It is true that when they were both in a good temper their enjoyment of life was redoubled. But still this first period of their married life was a difficult time for them.

During all this early period they had a peculiarly vivid sense of tension, as it were, a tugging in opposite directions of the chain by which they were bound. Altogether their honeymoon that is to say, the month after their wedding from which, through tradition, Levin had expected so much, was not merely not a time of sweetness, but remained in the memories of both as the bitterest and most humiliating period in their lives. They both alike tried in later life to blot out from their memories all the monstrous, shameful incidents of that morbid period, when both were rarely in a normal frame of mind, when both were rarely quite themselves.

It was only in the third month of their married life, after their return from Moscow, where they had been staying for a month, that their life began to go more smoothly.

## XV.

They had just come back from Moscow, and were glad to be alone. He was sitting at the writing table in his study, writing. She, wearing the dark lilac dress she had worn during the first days of their married life, and put on again today a dress particularly remembered and loved by him was sitting on the sofa, the same old-fashioned leather sofa which had always stood in the study in Levin's father's and grandfather's days. She was sewing at broderie anglaise. He thought and wrote, never losing the happy consciousness of her presence. His work, both on the land and on the book, in which the principles of the new land system were to be laid down, had not been abandoned; but just as formerly his work and ideas had seemed to him petty and trivial in comparison with the darkness that overspread all life, now they seemed as unimportant and petty in comparison with the life that lay before him suffused with the brilliant light of happiness. He went on with his work, but he felt now that the center of gravity of his attention had passed to something else, and that consequently he looked at his work quite differently and more clearly. Formerly this work had been for him an escape from life. Formerly he had felt that without this work his life would be too gloomy. Now this work was necessary for him so that life might not be too uniformly bright. Taking up his manuscript, reading through what he had written, he found with pleasure that the work was worth his working at. Many of his old ideas seemed to him superfluous and extreme, but many blanks became distinct to him when he reviewed the whole thing in his memory. He was writing now a new chapter on the causes of the present disadvantageous condition of agriculture in Russia. He maintained that the poverty of Russia arises not merely from the anomalous distribution of landed property and from misdirected reforms, but that what had contributed of late years to this result was a civilization from without, abnormally grafted upon Russia especially facilities of communication such as railways, leading to centralization in towns, the development of luxury, and the consequent development of manufactures, credit, and its accompaniment of speculation all to the detriment of agriculture. It seemed to him that in a normal development of wealth in a state all these phenomena would arise only when a considerable amount of labor had been put into agriculture, when it had come under regular, or at least definite, conditions; that the wealth of a country ought to increase proportionally, and especially in such a way that other sources of wealth should not outstrip agriculture; that in harmony with a certain stage of agriculture there should be means of communication corresponding to it, and that in our unsettled condition of the land, railways, called into being by political and not by economic needs, were premature, and, instead of promoting agriculture, as was expected of them, they were competing with agriculture and promoting the development of manufactures and credit, and so arresting its progress; and that just as the

## Anna Karenina

one-sided and premature development of one organ in an animal would hinder its general development, so in the general development of wealth in Russia, credit, facilities of communication, manufacturing activity, indubitably necessary in Europe, where they had arisen in their proper time, had with us only done harm, by throwing into the background the chief question, next in turn, of the organization of agriculture.

While he was at his writing, she was thinking how unnaturally cordial her husband had been to young Prince Charsky, who had, with great want of tact, flirted with her the day before they left Moscow. "He's jealous," she thought. "My God! How sweet and silly he is! He's jealous of me! If he only knew that all others are no more to me than Piotr the cook!" she thought, looking at his head and red neck with a feeling of possession strange to herself. "Though it's a pity to take him from his work (but he has plenty of time!), I must look at his face; will he feel I'm looking at him? I wish he'd turn round.... I'll will him to!" and she opened her eyes wide, as though to intensify the influence of her gaze.

"Yes, they draw away all the sap and give a false resplendence," he muttered, stopped writing, and, feeling that she was looking at him and smiling, he looked round.

"Well?" he queried, smiling, and getting up.

"He looked round," she thought.

"It's nothing; I wanted you to look round," she said, watching him, and trying to guess whether he was vexed at being interrupted or not.

"How happy we are alone together! I am, that is," he said, going up to her with a radiant smile of happiness.

"I'm just as happy. I'll never go anywhere, especially not to Moscow."

"And what were you thinking about?"

"I? I was thinking... No, no, go on writing; don't break off," she said, pursing up her lips, "and I must cut out these little holes now, do you see?"

She took up her scissors and began cutting them out.

"No; tell me what was it?" he said, sitting down beside her and watching the circular motion of the tiny scissors.

"Oh! what was I thinking about? I was thinking about Moscow, about the nape of your neck."

"Why should I, of all people, have such happiness! It's unnatural. Too good," he said kissing her hand.

"I feel quite the opposite; the better things are, the more natural it seems to me."

"And you've got a little curl loose," he said, carefully turning her head round. "A little curl, oh yes. No, no, we are busy at our work!"

Work did not progress further, and they darted apart from one another like culprits when Kouzma came in to announce that tea was ready.

"Have they come from town?" Levin asked Kouzma.

"They've just come; they're unpacking the things."

"Come quickly," she said to him as she went out of the study, "or else I shall read the letters without you."

Left alone, after putting his manuscripts together in the new portfolio bought by her, he washed his hands at the new washstand with the new elegant fittings, which had all made their appearance with her. Levin smiled at his own thoughts, and shook his head disapprovingly at those thoughts; a feeling akin to remorse fretted him. There was something shameful, effeminate, Capuan, as he called it to himself, in his present mode of life. "It's not right to go on like this," he thought. "It'll soon be three months, and I'm doing next to nothing. Today, almost for the first time, I set to work seriously and what happened? I did nothing but begin and throw it aside. I have almost given up even my ordinary pursuits. I scarcely walk or drive about at all to look after things on my land. Either I am loath to leave her, or I see she's dull alone. And I used to think that, before marriage, life was nothing much, somehow didn't count, but that after marriage life began in earnest. And here almost three months have passed, and I have spent my time so idly and unprofitably. No, this won't do; I must begin. Of course, it's not her fault. She's not to blame in any way. I ought to be firmer myself, to maintain my masculine independence of action; or else I shall get into such ways, and she'll get used to them too.... Of course she's not to blame," he told himself.

But it is hard for anyone who is dissatisfied not to blame someone else, and especially the person nearest of all to one, for the basis of one's dissatisfaction. And it vaguely came into Levin's mind that she herself was not to blame (she could not be to blame for anything), but what was to blame was her education, too superficial and frivolous. ("That fool Charsky: I know she wanted to stop him, but didn't know how to.") "Yes, apart from her interest in the house (that she has), apart from dress and broderie anglaise, she has no serious interests. No interest in my work, in the estate, in the peasants, nor in music, though she's rather good at it, nor in reading. She does nothing, and is perfectly satisfied." Levin, in his heart, censured this, and did not as yet understand that she was preparing for that period of activity which was to come for her when she would at once be the wife of her husband and mistress of the house, and would bear, and nurse, and bring up children. He knew not that she was instinctively aware of this, and preparing herself for this time of terrible toil, did not reproach herself for the moments of carelessness and happiness in her love, which she was enjoying now, while gaily building her nest for the future.

## XVI.

When Levin went upstairs, his wife was sitting near the new silver samovar and the new tea service, and, having settled old Agathya Mikhailovna at a little table with a full cup of tea, was reading a letter from Dolly, with whom they were in continual and frequent correspondence.

"You see, your lady's settled me here, told me to sit a bit with her," said Agathya Mikhailovna, smiling amicably at Kitty.

In these words of Agathya Mikhailovna Levin read the final act of the drama which had been enacted of late between her and Kitty. He saw that, in spite of Agathya Mikhailovna's feelings being hurt by a new mistress taking the reins of government out of her hands, Kitty had yet conquered her and made her love her.

"Here, I opened your letter too," said Kitty, handing him an illiterate letter. "It's from that woman, I think your brother's..." she said. "I did not read it through. This is from my people and from Dolly. Fancy! Dolly took Tania and Grisha to a children's ball at the Sarmatskys': Tania was a French marquise."

But Levin did not hear her. Flushing, he took the letter from Marya Nikolaevna, his brother's former mistress, and began to read it. This was the second letter he had received from Marya Nikolaevna. In the first letter, Marya Nikolaevna wrote that his brother had sent her packing for no fault of hers, and, with touching simplicity, added that though she was in want again, she asked for nothing, and wished for nothing, but was only tormented by the thought that Nikolai Dmitrievich would come to grief without her, owing to the weak state of his health, and begged his brother to look after him. Now she wrote quite differently. She had found Nikolai Dmitrievich, had

## Anna Karenina

again made it up with him in Moscow, and had moved with him to a provincial town, where he had received a post in the government service. But, she wrote, he had quarreled with the head official, and was on his way back to Moscow, only he had been taken so ill on the road that it was doubtful if he would ever leave his bed again. "It's always of you he has talked, and, besides he has no more money left."

"Read this; Dolly writes about you," Kitty was beginning, with a smile; but she stopped suddenly, noticing the changed expression on her husband's face. "What is it? What's the matter?"

"She writes to me that Nikolai, my brother, is at death's door. I shall go to him."

Kitty's face changed at once. Thoughts of Tania as a marquise, of Dolly, all had vanished.

"When are you going?" she said.

"Tomorrow."

"And I will go with you may I?" she said.

"Kitty! What are you thinking of?" he said reproachfully.

"What am I thinking of?" offended that he should seem to take her suggestion unwillingly and with vexation.

"Why shouldn't I go? I shan't be in your way. I..."

"I'm going because my brother is dying," said Levin. "Why should you..."

"Why? For the same reason as you."

"And, at a moment of such gravity for me, she only thinks of her being dull by herself," thought Levin. And this subterfuge in a matter of such gravity infuriated him.

"It's out of the question," he said sternly.

Agathya Mikhailovna, seeing that it was coming to a quarrel, gently put down her cup and withdrew. Kitty did not even notice her. The tone in which her husband had said the last words offended her, especially because he evidently did not believe what she had said.

"I tell you, that if you go, I shall come with you; I shall certainly come," she said hastily and wrathfully. "Why out of the question? Why do you say it's out of the question?"

"Because it'll be going God knows where, by all sorts of roads and to all sorts of hotels.... You would be a hindrance to me," said Levin, trying to be cool.

"Not at all. I don't want anything. Where you can go, I can..."

"Well, for one thing then, because this woman's there whom you can't meet."

"I don't know and don't care to know who's there and what. I know that my husband's brother is dying, and my husband is going to him, and I go with my husband so that..."

"Kitty! Don't get angry. But just think a little: this is a matter of such importance that I can't bear to think that you should bring in a feeling of weakness, of dislike to being left alone. Come, you'll be dull alone, so go and stay at Moscow a little."

"There, you always ascribe base, vile motives to me," she said with tears of wrath and wounded pride. "I didn't mean anything it wasn't weakness, it wasn't anything.... I feel that it's my duty to be with my husband when he's in trouble, but you try on purpose to hurt me, you try on purpose not to understand...."

"No; this is awful! To be such a slave!" cried Levin, getting up, and unable to restrain his vexation any longer. But at the same second he felt that he was beating himself.

"Then why did you marry? You could have been free. Why did you, if you regret it?" she said, getting up and running away into the drawing room.

When he went to her, she was sobbing.

He began to speak, trying to find words not to dissuade but simply to soothe her. But she did not heed him, and would not agree to anything. He bent down to her and took her hand, which resisted him. He kissed her hand, kissed her hair, kissed her hand again still she was silent. But when he took her face in both his hands, and said "Kitty!" she suddenly collected herself, still shed some tears, and they were reconciled.

It was decided that they should go together the next day. Levin told his wife that he believed she wanted to go simply in order to be of use, agreed that Marya Nikolaevna's being with his brother did not make her going improper, but he set off dissatisfied, at the bottom of his heart, both with her and with himself. He was dissatisfied with her for being unable to make up her mind to let him go when it was necessary (and how strange it was for him to think that he, so lately hardly daring to believe in such happiness as the possibility of her loving him now was unhappy because she loved him too much!), and he was dissatisfied with himself for not showing more strength of will. Even greater was the feeling of disagreement at the bottom of his heart as to her not needing to consider the woman who was with his brother, and he thought with horror of all the contingencies they might meet with. The mere idea of his wife, his Kitty, being in the same room with a common wench, set him shuddering with horror and loathing.

## XVII.

The hotel of the provincial town where Nikolai Levin was lying ill was one of those provincial hotels which are constructed on the newest model of modern improvements, with the best intentions of cleanliness, comfort, and even elegance, but, owing to the public that patronizes them, are with astounding rapidity transformed into filthy taverns with a pretension of modern improvement and made by the very pretension worse than the old-fashioned, honestly filthy hotels. This hotel had already reached that stage, and the soldier in a filthy uniform smoking in the entry, supposed to stand for a hall porter, and the cast-iron, perforated, somber and disagreeable staircase, and the free and easy waiter in a filthy dress coat, and the common dining room with a dusty bouquet of wax flowers adorning the table, and filth, dust and disorder everywhere, and, at the same time, the sort of modern, up-to-date, self-complacent, railway uneasiness of this hotel, aroused a most painful feeling in Levin after their fresh young life, especially because the impression of falsity made by the hotel was so out of keeping with what awaited them.

As is invariably the case, after they had been asked at what price they wanted rooms, it appeared that there was not one decent room for them; one decent room had been taken by the inspector of railroads, another by a lawyer from Moscow, a third by Princess Astafieva just arrived from the country. There remained only one filthy room, next to which they promised that another should be empty by the evening. Feeling angry with his wife because what he had expected had come to pass that at the moment of arrival, when his heart throbbed with emotion and

anxiety to know how his brother was getting on, he should have to be seeing after her, instead of rushing straight to his brother. Levin conducted her to the room assigned them.

"Go, do go!" she said, looking at him with timid and guilty eyes.

He went out of the door without a word, and at once stumbled over Marya Nikolaevna, who had heard of his arrival and had not dared to go in to see him. She was just the same as when he had seen her in Moscow; the same woolen gown, and bare arms and neck, and the same good-naturedly stupid, pock-marked face, only a little plumper.

"Well, how is he? How is he?"

"Very bad. He can't get up. He has been expecting you all this while. He... Are you... with your wife?"

Levin did not for the first moment understand what confused her, but she immediately enlightened him.

"I'll go away. I'll go down to the kitchen," she brought out. "Nikolai Dmitrievich will be delighted. He heard about it, and knows her, and remembers her abroad."

Levin realized that she meant his wife, and did not know what answer to make.

"Come along, come along to him!" he said.

But, as soon as he moved, the door of his room opened and Kitty peeped out. Levin crimsoned both from shame and anger at his wife, who had put herself and him in such a difficult position; but Marya Nikolaevna crimsoned still more. She positively shrank together and flushed to the point of tears, and, clutching the ends of her shawl in both hands, twisted them in her red fingers without knowing what to say and what to do.

For the first instant Levin saw an expression of eager curiosity in the eyes with which Kitty looked at this incomprehensible to her, awful woman; but it lasted only a single instant.

"Well! How is he?" she turned to her husband and then to her.

"But one can't go on talking in the passage like this!" Levin said, looking angrily at a gentleman who walked jauntily at that instant across the corridor, as though about his affairs.

"Well then, come in," said Kitty, turning to Marya Nikolaevna, who had recovered herself but, noticing her husband's face of dismay "or go on; go, and then come for me," she said, and went back into the room. Levin went to his brother's room.

He had not in the least expected what he saw and felt in his brother's room. He had expected to find him in the same state of self-deception which he had heard was so frequent with the consumptive, and which had struck him so much during his brother's visit in the autumn. He had expected to find the physical signs of the approach of death more marked greater weakness, greater emaciation, but still almost the same condition of things. He had expected himself to feel the same distress at the loss of the brother he loved and the same horror in face of death as he had felt then, only in a greater degree. And he had prepared himself for this; but he found something utterly different.

In a little dirty room with the painted panels of its walls filthy with spittle; with conversation audible from the next room through the thin partition, in a stifling atmosphere saturated with impurities, on a bedstead moved away from the wall, there lay, covered with a quilt, a body. One arm of this body was above the quilt, and the wrist,

huge as a rake handle, was attached, inconceivably it seemed, to the thin, long bobbin smooth from the beginning to the middle. The head lay sideways on the pillow. Levin could see the scanty locks wet with sweat on the temples and the tensed, seemingly transparent forehead.

"It cannot be that that fearful body was my brother Nikolai?" thought Levin. But he went closer, saw the face, and doubt became impossible. In spite of the terrible change in the face, Levin had only to glance at those eager eyes at his approach, only to catch the faint movement of the mouth under the sticky mustache, to realize the terrible truth that this dead body was his living brother.

The glittering eyes looked sternly and reproachfully at the brother as he drew near. And immediately this glance established a living relationship between living men. Levin immediately felt the reproach in the eyes fixed on him, and felt remorse at his own happiness.

When Konstantin took him by the hand, Nikolai smiled. The smile was faint, scarcely perceptible, and in spite of the smile the stern expression of the eyes was unchanged.

"You did not expect to find me like this," he articulated with effort.

"Yes... no," said Levin, hesitating over his words. "How was it you didn't let me know before that is, at the time of my wedding? I made inquiries in all directions."

He had to talk so as not to be silent, and he did not know what to say, especially as his brother made no reply, and simply stared without dropping his eyes, and apparently penetrated to the inner meaning of each word. Levin told his brother that his wife had come with him. Nikolai expressed pleasure, but said he was afraid of frightening her by his condition. A silence followed. Suddenly Nikolai stirred, and began to say something. Levin expected something of peculiar gravity and importance from the expression of his face, but Nikolai began speaking of his health. He found fault with the doctor, regretting he had not a celebrated Moscow doctor. Levin saw that he still had hopes.

Seizing the first moment of silence, Levin got up, anxious to escape, if only for an instant, from his agonizing emotion, and said that he would go and fetch his wife.

"Very well, and I'll tell Masha to tidy up here. It's dirty and stinking here, I expect. Masha! Clear up the room," the sick man said with effort. "And when you've cleared up, you go away," he added, looking inquiringly at his brother.

Levin made no answer. Going out into the corridor, he stopped short. He had said he would fetch his wife, but now, taking stock of the emotion he was feeling, he decided that, on the contrary, he would try to persuade her not to go in to the sick man. "Why should she suffer as I am suffering?" he thought.

"Well, how is he?" Kitty asked with a frightened face.

"Oh, it's awful, it's awful! What did you come for?" said Levin.

Kitty was silent for a few seconds, looking timidly and ruefully at her husband; then she went up and took him by the elbow with both hands.

"Kostia! Take me to him; it will be easier for us to bear it together. Only take me, take me to him, please, and go away," she said. "You must understand that for me to see you, and not to see him, is far more painful. There I might be a help to you and to him. Please, let me!" she besought her husband, as though the happiness of her life depended on it.

Levin was obliged to agree, and, regaining his composure, and completely forgetting about Marya Nikolaevna by now, he went again in to his brother with Kitty.

Stepping lightly, and continually glancing at her husband, showing him a valorous and sympathetic face, Kitty went into the sickroom, and, turning without haste, noiselessly closed the door. With inaudible steps she went quickly to the sick man's bedside, and going up so that he would not have to turn his head, she immediately clasped in her fresh young hand the skeleton of his huge hand, pressed it, and began speaking with that soft eagerness, sympathetic and inoffensive, which is peculiar merely to women.

"We have met, though we were not acquainted, at Soden," she said. "You never thought I was to be your sister."

"You would not have recognized me?" he said, with a smile which had become radiant at her entrance.

"Yes, I should. What a good thing you let us know! Not a day has passed that Kostia has not mentioned you, and been anxious."

But the sick man's interest did not last long.

Before she had finished speaking, there had come back into his face the stern, reproachful expression of the dying man's envy of the living.

"I am afraid you are not quite comfortable here," she said, turning away from his fixed stare, and looking about the room. "We must ask about another room," she said to her husband, "so that we might be nearer."

## XVIII.

Levin could not look calmly at his brother; he could not himself be natural and calm in his presence. When he went in to the sick man, his eyes and his attention were unconsciously dimmed, and he did not see and did not distinguish the details of his brother's position. He smelt the awful odor, saw the dirt, disorder, and miserable condition, and heard the groans, and felt that nothing could be done to help. It never entered his head to analyze the details of the sick man's situation, to consider how that body was lying under the quilt, how those emaciated legs and thighs and spine were lying huddled up, and whether they could not be made more comfortable, whether anything could not be done to make things, if not better, at least not so bad. It made his blood run cold when he began to think of all these details. He was absolutely convinced that nothing could be done to prolong his brother's life or to relieve his suffering. But a consciousness of Levin's regarding all aid as out of the question was felt by the sick man, and exasperated him. And this made it still more painful for Levin. To be in the sickroom was agony to him, not to be there was still worse. And he was continually, on various pretexts, going out of the room, and coming in again, because he was unable to remain alone.

But Kitty thought, and felt, and acted quite differently. On seeing the sick man she pitied him. And pity in her womanly heart did not arouse at all that feeling of horror and loathing that it aroused in her husband, but a desire to act, to find out all the details of his state, and to remedy them. And since she had not the slightest doubt that it was her duty to help him, she had no doubt either that it was possible, and immediately set to work. The very details, the mere thought of which reduced her husband to terror, immediately engaged her attention. She sent for the doctor, sent to the chemist's, set the maid who had come with her and Marya Nikolaevna to sweep and dust and scrub; she herself washed up something, washed out something else, laid something under the quilt. Something was by her direction brought into the sickroom, something else was carried out. She herself went several times to her room, regardless of the men she met in the corridor, got out and brought in sheets, pillowcases, towels, and shirts.



The waiter, who was busy with a party of engineers dining in the dining hall, came several times with an irate countenance in answer to her summons, and could not avoid carrying out her orders, as she gave them with such gracious insistence that there was no evading her. Levin did not approve of all this; he did not believe it would be of any good to the patient. Above all, he was afraid the patient would be angry at it. But the sick man, though he seemed to be indifferent about it, was not angry, but only abashed and on the whole seemed interested in what she was doing with him. Coming back from the doctor to whom Kitty had sent him, Levin, on opening the door, came upon the sick man at the instant when, by Kitty's direction, they were changing his linen. The long white ridge of his spine, with the huge, prominent shoulder blades and jutting ribs and vertebrae, was bare, and Marya Nikolaevna and the waiter were struggling with the sleeve of the nightshirt, and could not get the long, limp arm into it. Kitty, hurriedly closing the door after Levin, did not look in that direction, but the sick man groaned, and she moved rapidly toward him.

"Come, a little quicker," she said.

"Oh, don't you come," said the sick man angrily. "I'll do it myself...."

"What did you say?" queried Marya Nikolaevna.

But Kitty heard and saw he was ashamed and uncomfortable at being naked before her.

"I'm not looking, I'm not looking!" she said, putting the arm in. "Marya Nikolaevna, you come this side you do it," she added.

"Please, run over for me, there's a little bottle in my small bag," she said, turning to her husband, "you know, in the side pocket; bring it, please, and meanwhile they'll finish clearing up here."

Returning with the bottle, Levin found the sick man settled comfortably and everything about him completely changed. The heavy smell was replaced by the smell of aromatic vinegar, which Kitty with pouting lips and puffed-out, rosy cheeks was squirting through a small tube. There was no dust visible anywhere; a rug was laid by the bedside. On the table stood medicine bottles and decanters tidily arranged, and the linen needed was folded up there, and Kitty's broderie anglaise. On the other table by the patient's bed there were candles, and drink, and powders. The sick man himself, washed and combed, lay in clean sheets on high raised pillows, in a clean nightshirt with a white collar about his astoundingly thin neck, and, with a new expression of hope, was looking fixedly at Kitty.

The doctor brought by Levin, and found by him at the club, was not the one who had been attending Nikolai Levin, and whom he disliked. The new doctor took up a stethoscope and sounded the patient, shook his head, prescribed medicine, and with extreme minuteness explained first how to take the medicine and then what diet was to be adhered to. He advised eggs, raw or hardly cooked, and Seltzer water, with new milk at a certain temperature. When the doctor had gone away the sick man said something to his brother, of which Levin could distinguish only the last words: "Your Katia." By the expression with which he gazed at her, Levin saw that he was praising her. He beckoned to him Katia, as he called her.

"I'm much better already," he said. "Why, with you I should have got well long ago. How fine everything is!" He took her hand and drew it toward his lips, but, as though afraid she would dislike it, he changed his mind, let it go, and only stroked it. Kitty took his hand in both of hers and squeezed it.

"Now turn me over on the left side and go to bed," he said.

No one could make out what he said but Kitty; she alone understood. She understood because she was all the while mentally keeping watch on what he needed.

"On the other side," she said to her husband, "he always sleeps on that side. Turn him over it's so disagreeable calling the servants. I'm not strong enough. Can you?" she said to Marya Nikolaevna.

"I'm afraid...." answered Marya Nikolaevna.

Terrible as it was to Levin to put his arms round that terrible body, to take hold, under the quilt, of that of which he preferred to know nothing, under his wife's influence he made his resolute face that she knew so well, and, putting his arms into the bed took hold of the body, but in spite of his own strength, he was struck by the strange heaviness of those powerless limbs. While he was turning him over, conscious of the huge emaciated arm about his neck, Kitty swiftly and noiselessly turned the pillow, beat it up, and settled in it the sick man's head, smoothing back his hair, which was sticking again to his moist brow.

The sick man kept his brother's hand in his own. Levin felt that he meant to do something with his hand and was pulling it somewhere. Levin yielded with a sinking heart: yes, he drew it to his mouth and kissed it. Levin, shaking with sobs and unable to articulate a word, went out of the room.

## XIX.

"Thou hast hid these things from the wise and prudent, and hast revealed them unto babes." So Levin thought about his wife as he talked to her that evening.

Levin thought of the text, not because he considered himself "wise and prudent." He did not consider himself wise and prudent, but he could not help knowing that he had more intellect than his wife and Agathya Mikhailovna, and he could not help knowing that when he thought of death, he thought with all the force of his intellect. He knew too that the brains of many great men, whose thoughts he had read, had brooded over death and yet knew not a hundredth part of what his wife and Agathya Mikhailovna knew about it. Different as those two women were, Agathya Mikhailovna and Katia, as his brother Nikolai had called her, and as Levin particularly liked to call her now, they were quite alike in this. Both knew, without a shade of doubt, what sort of thing life was, and what was death, and though neither of them could have answered, and would not even have understood the questions that presented themselves to Levin, both had no doubt of the significance of this event, and were precisely alike in their way of looking at it, which they shared with millions of people. The proof that they knew for a certainty the nature of death lay in the fact that they knew without a second of hesitation how to deal with the dying, and were not frightened by them. Levin, and other men like him, though they could have said a great deal about death, obviously did not know this since they were afraid of death, and were absolutely at a loss what to do when people were dying. If Levin had been alone now with his brother Nikolai, he would have looked at him with terror, and with still greater terror waited, and would not have known what else to do.

More than that, he did not know what to say, how to look, how to move. To talk of outside things seemed to him shocking, impossible; to talk of death and depressing subjects also impossible. To be silent was also impossible. "If I look at him he will think I am studying him, I am afraid of him; if I don't look at him, he'll think I'm thinking of other things. If I walk on tiptoe, he will be vexed; to tread firmly, I'm ashamed." Kitty evidently did not think of herself, and had no time to think about herself: she was thinking about him because she knew something, and all went well. She even told him about herself and about her wedding, and smiled and sympathized with him, and petted him, and talked of cases of recovery, and all went well; therefore, she must know. The proof that her behavior and Agathya Mikhailovna's was not instinctive, animal, irrational, lay in that apart from the physical treatment, the relief of suffering, both Agathya Mikhailovna and Kitty required for the dying man something else more important than the physical treatment, and something which had nothing in common with physical conditions. Agathya Mikhailovna, speaking of a man recently dead, had said: "Well, thank God, he took the sacrament and received Extreme Unction; God grant each one of us such a death." Katia, in just the same way, besides all her care about linen, bedsores, drink, found time the very first day to persuade the sick man of the

necessity of taking the sacrament and receiving Extreme Unction.

On getting back from the sickroom to their own two rooms for the night, Levin sat with hanging head, not knowing what to do. To say nothing of supper, of preparing for bed, of considering what they were going to do, he could not even talk to his wife; he was ashamed to. Kitty, on the contrary, was more active than usual. She was even livelier than usual. She ordered supper to be brought, herself unpacked their things, and herself helped to make the beds, and did not even forget to sprinkle them with Persian insecticide. She showed that alertness, that swiftness of reflection which comes out in men before a battle, in conflict, in the dangerous and decisive moments of life those moments when a man shows once and for all his value, and that all his past has not been wasted but has been a preparation for these moments.

Everything went rapidly in her hands, and before it was twelve o'clock all their things were arranged tidily and orderly in such a way that the hotel rooms seemed like home, like her rooms: the beds were made, brushes, combs, looking glasses were put out, table napkins were spread.

Levin felt that it was unpardonable to eat, to sleep, to talk even now, and it seemed to him that every movement he made was unseemly. She arranged the brushes, but she did it all so that there was nothing shocking in it.

They could neither of them eat, however, and for a long while they could not sleep, and did not even go to bed.

"I am very glad I persuaded him to receive Extreme Unction tomorrow," she said, sitting in her dressing jacket before her folding looking glass, combing her soft, fragrant hair with a small-toothed comb. "I have never seen it, but I know, mamma has told me, there are prayers said for recovery."

"Do you suppose he can possibly recover?" said Levin, watching a slender tress at the back of her round little head that was continually hidden when she passed the comb through the front.

"I asked the doctor; he said he couldn't live more than three days. But can they be sure? I'm very glad, anyway, that I persuaded him," she said, looking askance at her husband through her hair. "Anything is possible," she added with that peculiar, rather sly expression that was always in her face when she spoke of religion.

Since their conversation about religion during their engagement neither of them had ever started a discussion of the subject, but she performed all the ceremonies of going to church, saying her prayers, and so on, always with the unvarying conviction that this ought to be so. In spite of his assertion to the contrary, she was firmly persuaded that he was as much a Christian as she, and indeed a far better one; and all that he said about it was simply one of his absurd masculine freaks, just as he would say about her broderie anglaise that good people patch holes but that she cut them out on purpose, and so on.

"Yes, you see this woman, Marya Nikolaevna, did not know how to manage all this," said Levin. "And... I must own I'm very, very glad you came. You are such purity that..." He took her hand and did not kiss it (to kiss her hand in such closeness to death seemed to him improper); he merely squeezed it with a penitent air, looking at her brightening eyes.

"It would have been miserable for you to be alone," she said, and lifting her hands which hid her cheeks, flushing with pleasure, twisted her coil of hair on the nape of her neck and pinned it there. "No," she went on, "she did not know how.... Luckily, I learned lot at Soden."

"Surely there are no people there so ill?"

"Worse."

## Anna Karenina

"What's so awful to me is that I can't but see him as he was when he was young. You would not believe how charming he was as a youth, but I did not understand him then."

"I can quite, quite believe it. How I feel that we might have been friends!" she said; and, distressed at what she had said, she looked round at her husband, and tears came into her eyes.

"Yes, might have been," he said mournfully. "He's just one of those people of whom they say that they are not for this world."

"But we have many days before us; we must go to bed," said Kitty, glancing at her tiny watch.

## XX.

### DEATH.

The next day the sick man received the sacrament and Extreme Unction. During the ceremony Nikolai Levin prayed fervently. His great eyes fastened on the holy icon that was set out on a card table covered with a colored napkin, expressed such passionate prayer and hope that it was awful to Levin to see it. Levin knew that this passionate prayer and hope would only make him feel more bitterly the parting from the life he so loved. Levin knew his brother and the workings of his intellect: he knew that his unbelief came not from life being easier for him without faith, but had grown up because, step by step, the contemporary scientific interpretation of natural phenomena crushed out the possibility of faith; and so he knew that his present return was not a legitimate one, brought about by way of the same working of his intellect, but simply a temporary, interested return to faith in a desperate hope of recovery. Levin knew too that Kitty had strengthened his hope by accounts of the marvelous recoveries she had heard of. Levin knew all this; and it was agonizingly painful to him to behold the supplicating, hopeful eyes and the emaciated wrist, lifted with difficulty, making the sign of the cross on the tense brow, and the prominent shoulders and hollow, gasping chest, which one could not feel consistent with the life the sick man was praying for. During the sacrament Levin offered prayers, and did what he, an unbeliever, had done a thousand times. He said, addressing God: "If Thou dost exist, make this man recover" (of course this same thing has been repeated many times), "and Thou wilt save him and me."

After Extreme Unction the sick man became suddenly much better. He did not cough once in the course of an hour, smiled, kissed Kitty's hand, thanking her with tears, and said he was comfortable, free from pain, and that he felt strong and had an appetite. He even raised himself when his soup was brought, and asked for a cutlet as well. Hopelessly ill as he was, obvious as it was at the first glance that he could not recover, Levin and Kitty were for that hour both in the same state of excitement, happy, though fearful of being mistaken.

"Is he better?" "Yes, much." "It's wonderful." "There's nothing wonderful in it." "Anyway, he's better," they said in a whisper, smiling to one another.

This self-deception was not of long duration. The sick man fell into a quiet sleep, but he was waked up half an hour later by his cough. And all at once every hope vanished in those about him and in himself. The reality of his suffering crushed all hopes in Levin and Kitty, and in the sick man himself, leaving no doubt, no memory even of past hopes.

Without referring to what he had believed in half an hour before, as though ashamed even to recall it, he asked for iodine to inhale in a bottle covered with perforated paper. Levin gave him the bottle, and the same look of passionate hope with which he had taken the sacrament was now fastened on his brother, demanding from him the confirmation of the doctor's words that inhaling iodine worked wonders.

## Anna Karenina

"Isn't Katia here?" he gasped, looking round while Levin reluctantly assented to the doctor's words. "No then I can say it.... It was for her sake I went through that farce. She's so sweet; but you and I can't deceive ourselves. This is what I believe in," he said, and, squeezing the bottle in his bony hand, he began breathing over it.

At eight o'clock in the evening Levin and his wife were drinking tea in their room, when Marya Nikolaevna ran in to them breathlessly. She was pale, and her lips were quivering. "He is dying!" she whispered. "I'm afraid he will die right away."

Both of them ran to him. He was sitting raised up, with one elbow on the bed, his long back bent, and his head hanging low.

"How do you feel?" Levin asked in a whisper, after a silence.

"I feel I'm setting off," Nikolai said with difficulty, but with extreme distinctness, deliberately squeezing the words out of himself. He did not raise his head, but simply turned his eyes upward, without their reaching his brother's face. "Katia, go away!" he added.

Levin jumped up, and with a peremptory whisper made her go out.

"I'm setting off," he said again.

"Why do you think so?" said Levin, so as to say something.

"Because I'm setting off," he repeated, as though he had a liking for the phrase. "It's the end."

Marya Nikolaevna went up to him.

"You had better lie down; you'd be easier," she said.

"I shall lie down soon enough," he pronounced slowly, "when I'm dead," he said sarcastically, wrathfully. "Well, you can put me down if you like."

Levin laid his brother on his back, sat down beside him, and gazed at his face, holding his breath. The dying man lay with closed eyes, but the muscles twitched from time to time on his forehead, as with one thinking deeply and intensely. Levin involuntarily thought with him of what it was that was happening to him now, but in spite of all his mental efforts to keep him company, he saw by the expression of that calm, stern face, and by the playing muscle above his brow, that for the dying man there was growing clearer and clearer all that was still as dark as ever for Levin.

"Yes, yes, so," the dying man articulated slowly at intervals. "Wait a little." He was silent again. "Right!" he pronounced all at once reassuringly, as though all were solved for him. "O Lord!" he murmured, and sighed deeply.

Marya Nikolaevna felt his feet. "They're getting cold," she whispered.

For a long while, a very long while, it seemed to Levin, the sick man lay motionless. But he was still alive, and from time to time he sighed. Levin by now was exhausted from mental strain. He felt that with no mental effort could he understand what it was that was right. He felt that he could not follow the dying man's thinking. He could not even think of the problem of death itself, but, with no will of his own, thoughts kept coming to him of what he had to do next—closing the dead man's eyes, dressing him, ordering the coffin. And, strange to say, he felt utterly cold, and was not conscious of sorrow nor of loss, less still of pity for his brother. If he had any feeling

for his brother at that moment, it was rather envy for the knowledge the dying man had now, which he could not have.

A long time more he sat over him so, continually expecting the end. But the end did not come. The door opened and Kitty appeared. Levin got up to stop her. But at the moment he was getting up, he caught the sound of the dying man stirring.

"Don't go away," said Nikolai and held out his hand. Levin gave him his, and angrily waved to his wife to go away.

With the dying man's hand in his hand, he sat for half an hour, an hour, another hour. He did not think of death at all now. He wondered what Kitty was doing; who lived in the next room; whether the doctor lived in a house of his own. He longed for food and for sleep. He cautiously drew away his hand and felt the feet. The feet were cold, but the sick man was still breathing. Levin tried once more to move away on tiptoe, but the sick man stirred again and said: "Don't go."

The dawn came; the sick man's condition was unchanged. Levin stealthily withdrew his hand, and, without looking at the dying man, went off to his own room and went to sleep. When he woke up, instead of news of his brother's death which he expected, he learned that the sick man had returned to his earlier condition. He had begun sitting up again, coughing, had begun eating again, talking again, and again had ceased to talk of death, again had begun to express hope of his recovery, and had become more irritable and gloomier than ever. No one, neither his brother nor Kitty, could soothe him. He was angry with everyone, and said nasty things to everyone, reproached everyone for his sufferings, and insisted that they should get him a celebrated doctor from Moscow. To all inquiries made of him as to how he felt, he made the same answer with an expression of vindictive reproachfulness: "I'm suffering horribly, intolerably!" The sick man was suffering more and more, especially from bedsores, which it was impossible now to remedy, and grew more and more angry with everyone about him, blaming them for everything, and especially for not having brought him a doctor from Moscow. Kitty tried in every possible way to relieve him, to soothe him; but it was all in vain, and Levin saw that she herself was exhausted both physically and morally, though she would not admit it. The sense of death, which had been evoked in all by his taking leave of life on the night when he had sent for his brother, was broken up. Everyone knew that he must inevitably die soon, that he was half-dead already. Everyone wished for nothing but that he should die as soon as possible, and everyone, concealing this, gave him medicines, tried to find remedies and doctors, and deceived him, and themselves, and one another. All this was falsehood, disgusting, irreverent deceit. And owing to the bent of his character, and because he loved the dying man more than anyone else did, Levin was most painfully conscious of this deceit.

Levin, who had long been possessed by the idea of reconciling his brothers, at least in face of death, had written to his brother, Sergei Ivanovich, and having received an answer from him, he read this letter to the sick man. Sergei Ivanovich wrote that he could not come himself, and in touching terms he begged his brother's forgiveness.

The sick man said nothing.

"What am I to write to him?" said Levin. "I hope you are not angry with him?"

"No, not in the least!" Nikolai answered, vexed at the question. "Tell him to send me a doctor."

Three more days of agony followed; the sick man was still in the same condition. The sense of longing for his death was felt by everyone now who saw him: by the waiters, and the hotelkeeper, and all the people staying in the hotel, and the doctor, and Marya Nikolaevna, and Levin, and Kitty. The sick man alone did not express this feeling, but on the contrary was furious at their not getting him doctors, and went on taking medicine and talking of life. Only at rare moments, when the opium gave him an instant's relief from his never-ceasing pain, he would

sometimes, half-asleep, utter what was ever more intense in his heart than in all the others: "Oh, if it were only the end!" or, "When will it be over?"

His sufferings, steadily growing more intense, did their work and prepared him for death. There was no position in which he was not in pain, there was not a minute in which he was unconscious of it, not a limb, not a part of his body that did not ache and cause him agony. Even the memories, the impressions, the thoughts of this body awakened in him now the same aversion as the body itself. The sight of other people, their remarks, his own reminiscences everything was for him a source of agony. Those about him felt this, and instinctively did not allow themselves to move freely, to talk, to express their wishes before him. All his life was merged in the one feeling of suffering and desire to be rid of it.

There was evidently coming over him that revulsion which would make him look upon death as the goal of his desires, as happiness. Hitherto each individual desire, aroused by suffering or privation, such as hunger, fatigue, thirst, had been satisfied by some bodily function giving pleasure. But now no physical craving or suffering received relief, and the effort to relieve them only caused fresh suffering. And so all desires were merged in one the desire to be rid of all his sufferings and their source, the body. But he had no words to express this desire of deliverance, and so he did not speak of it, and from habit asked for the satisfaction of desires which could not now be satisfied. "Turn me over on the other side," he would say, and immediately after he would ask to be turned back again as before. "Give me some broth. Take away the broth. Talk of something: why are you silent?" And directly they began to talk he would close his eyes, and would show weariness, indifference, and loathing.

On the tenth day from their arrival in the town, Kitty was unwell. She suffered from headache and sickness, and she could not get up all the morning.

The doctor opined that the indisposition arose from fatigue and excitement, and prescribed rest.

After dinner, however, Kitty got up and went as with her work to the sick man. He looked at her sternly when she came in, and smiled contemptuously when she said she had been unwell. That day he was continually blowing his nose, and groaning piteously.

"How do you feel?" she asked him.

"Worse," he articulated with difficulty. "In pain!"

"In pain, where?"

"Everywhere."

"It will be over today, you will see," said Marya Nikolaevna. Though it was said in a whisper, the sick man, whose hearing Levin had noticed was very keen, must have heard. Levin said "Hush!" to her, and looked round at the sick man. Nikolai had heard; but these words produced no effect on him. His eyes had still the same intense, reproachful look.

"Why do you think so?" Levin asked her, when she had followed him into the corridor.

"He has begun picking at himself," said Marya Nikolaevna.

"How do you mean?"

"Like this," she said, tugging at the folds of her woolen skirt. Levin noticed, indeed, that all that day the patient pulled at himself, as it were, trying to snatch something away.

Marya Nikolaevna's prediction came true. Toward night the sick man was not able to lift his hands, and could only gaze before him with the same intensely concentrated expression in his eyes. Even when his brother or Kitty bent over him, so that he could see them, he looked just the same. Kitty sent for the priest to read the prayer for the dying.

While the priest was reading it, the dying man did not show any sign of life; his eyes were closed. Levin, Kitty and Marya Nikolaevna stood at the bedside. The priest had not quite finished reading the prayer when the dying man stretched, sighed, and opened his eyes. The priest, on finishing the prayer, put the cross to the cold forehead, then slowly returned it to the stand, and, after standing in silence for two minutes more, he touched the huge, bloodless hand that was turning cold.

"He is gone," said the priest, and would have moved away; but suddenly there was a faint stir in the mustaches of the dead man, that seemed glued together, and quite distinctly in the hush they heard from the bottom of the chest the sharply defined sounds:

"Not quite.... Soon."

And a minute later the face brightened, a smile came out under the mustaches, and the women who had gathered round began carefully laying out the corpse.

The sight of his brother, and the nearness of death, revived in Levin that sense of horror in the face of the insolvable enigma, together with the nearness and inevitability of death, that had come upon him that autumn evening when his brother had come to him. This feeling was now even stronger than before; even less than before did he feel capable of apprehending the meaning of death, and its inevitability rose up before him more terrible than ever. But now, thanks to his wife's presence, that feeling did not reduce him to despair. In spite of death, he felt the need of life and love. He felt that love saved him from despair, and that his love, under the menace of despair, had become still stronger and purer.

The one mystery of death, still unsolved, had scarcely passed before his eyes, when another mystery had arisen, as insoluble, urging him to love and to life.

The doctor confirmed his former suppositions in regard to Kitty. Her indisposition consisted of pregnancy.

## XXI.

From the moment when Alexei Alexandrovich understood from his interviews with Betsy and with Stepan Arkadyevich that all that was expected of him was to leave his wife in peace, without burdening her with his presence, and that his wife herself desired this, he felt so distraught that he could come to no decision by himself; he did not know himself what he wanted now, and, putting himself in the hands of those who were so pleased to interest themselves in his affairs, he met everything with unqualified assent. It was only when Anna had left his house, and the English governess sent to ask him whether she should dine with him or separately, that for the first time he clearly comprehended his position, and was appalled by it.

Most difficult of all in this position was the fact that he could not in any way connect and reconcile his past with the present. It was not the past when he had lived happily with his wife that troubled him. The transition from that past to a knowledge of his wife's unfaithfulness he had already lived through miserably; that state had been painful, but he could understand it. If his wife had then, on declaring to him her unfaithfulness, left him, he would



have been wounded, unhappy, but he would not have been in the hopeless position incomprehensible to himself in which he felt himself now. He could not now reconcile his immediate past, his tenderness, his love for his sick wife, and for the other man's child with what was now the case with the fact that, seemingly in return for all this, he now found himself alone, put to shame, a laughingstock, needed by no one, and despised by everyone.

For the first two days after his wife's departure Alexei Alexandrovich received petitioners and his head clerk, drove to the committee, and went down to dinner in the dining room as usual. Without giving himself a reason for what he was doing, he strained every nerve of his being for those two days, simply to preserve an appearance of composure, and even of indifference. Answering inquiries about the disposition of Anna Arkadyevna's rooms and belongings, he had exercised immense self-control to appear like a man in whose eyes what had occurred was not unforeseen nor out of the ordinary course of events, and he attained his aim: no one could have detected in him any signs of despair. But on the second day after her departure, when Kornei gave him a bill from a fashionable draper's shop, which Anna had forgotten to pay, and announced that the shopman was waiting, Alexei Alexandrovich told him to show the man up.

"Excuse me, Your Excellency, for venturing to trouble you. But if you direct us to apply to Her Excellency, would you graciously oblige us with her address?"

Alexei Alexandrovich pondered, as it seemed to the shopman, and all at once, turning round, he sat down to the table. Burying his head in his hands, he sat for a long while in that position, made several attempts to speak, and stopped short.

Kornei, perceiving his master's emotion, asked the shopman to call another time. Left alone, Alexei Alexandrovich realized that he had not the strength to keep up the role of firmness and composure any longer. He gave orders for the carriage that was awaiting him to be taken back, and for no one to be admitted, and he did not go down to dinner.

He felt that he could not endure the weight of universal contempt and exasperation, which he had distinctly seen in the faces of the shopman and of Kornei and of everyone, without exception, whom he had met during these two days. He felt that he could not turn aside from himself the hatred of men, because that hatred did not come from his being bad (in that case he could have tried to be better), but from his being shamefully and repulsively unhappy. He knew that for this, for the very fact that his heart was torn with grief, they would be merciless to him. He felt that men would crush him as dogs strangle a mangled dog, yelping with pain. He knew that his sole means of security against people was to hide his wounds from them, and instinctively he tried to do this for two days, but now he felt incapable of keeping up the unequal struggle.

His despair was even intensified by the consciousness that he was utterly alone in his sorrow. In all Peterburg there was not a human being to whom he could express what he was feeling, who would feel for him, not as a high official, not as a member of society, but simply as a suffering man; indeed, he had not such a one in the whole world.

Alexei Alexandrovich grew up an orphan. There were two brothers. They did not remember their father, and their mother died when Alexei Alexandrovich was ten years old. The property was a small one. Their uncle, Karenin, a government official of high standing, at one time a favorite of the late Czar, had brought them up.

On completing his high school and university courses with medals, Alexei Alexandrovich had, with his uncle's aid, immediately started in a prominent position in the service, and from that time forward he had devoted himself exclusively to political ambition. In the high school and the university, and afterward in the service, Alexei Alexandrovich had never formed a close friendship with anyone. His brother had been the person nearest to his heart, but he had a post in the Ministry of Foreign Affairs, and was always abroad, where he had died shortly after

Alexei Alexandrovich's marriage.

While he was governor of a province, Anna's aunt, a wealthy provincial lady, had brought him middle-aged as he was, though young for a governor together with her niece, and had succeeded in putting him in such a position that he had either to declare himself or to leave town. Alexei Alexandrovich hesitated a great while. There were at the time as many reasons for the step as against it, and there was no overbalancing consideration to outweigh his invariable rule of abstaining when in doubt. But Anna's aunt had through a common acquaintance insinuated that he had already compromised the girl, and that he was in honor bound to propose to her. He proposed, and concentrated on his betrothed and his wife all the feeling of which he was capable.

The attachment he felt to Anna precluded in his heart every need of intimate relations with others. And now, among all his acquaintances, he had not one friend. He had plenty of so-called connections, but no friendships. Alexei Alexandrovich had plenty of people whom he could invite to dinner, to whose sympathy he could appeal in any public affair he was concerned about, whose interest he could reckon upon for anyone he wished to help, with whom he could candidly discuss other people's business and affairs of state. But his relations with these people were confined to one clearly defined channel, and had a certain routine from which it was impossible to depart. There was one man, a comrade of his at the university, with whom he had become friendly later, and with whom he could have spoken of a personal sorrow; but this friend had a post in the Department of Education in a remote part of Russia. Of the people in Petersburg the most intimate and most likely were his head clerk and his doctor.

Mikhail Vassilievich Sludin, the head clerk, was a straightforward, intelligent, goodhearted and conscientious man, and Alexei Alexandrovich was aware of his personal good will. But their five years of official work together seemed to have put a barrier between them that cut off warmer relations.

After signing the papers brought him, Alexei Alexandrovich had sat for a long while in silence, glancing at Mikhail Vassilievich, and several times he attempted to speak, but could not. He had already prepared the phrase: "You have heard of my trouble?" But he ended by saying as usual: "So you'll get this ready for me?" and with that dismissed him.

The other person was the doctor, who had also a kindly feeling for him; but there had long existed a silent understanding between them that both were weighed down by work, and always in a hurry.

Of his women friends, foremost among them Countess Lidia Ivanovna, Alexei Alexandrovich never thought. All women, simply as women, were terrible and distasteful to him.

## XXII.

Alexei Alexandrovich had forgotten the Countess Lidia Ivanovna but she had not forgotten him. At the bitterest moment of his lonely despair she came to him, and, without waiting to be announced, walked straight into his study. She found him as he was sitting with his head in both hands.

"F'ai force la consigne," she said, walking in with rapid steps and breathing hard with excitement and rapid exertion. "I have heard all! Alexei Alexandrovich! Dear friend!" she went on, warmly squeezing his hand in both of hers and gazing with her fine pensive eyes into his.

Alexei Alexandrovich, frowning, got up, and, disengaging his hand, moved a chair up for her.

"Won't you sit down, Countess? I'm seeing no one because I'm unwell, Countess," he said, and his lips twitched.

## Anna Karenina

"Dear friend!" repeated Countess Lidia Ivanovna, never taking her eyes off his, and suddenly her eyebrows rose at the inner corners, describing a triangle on her forehead, her ugly yellow face becoming still uglier, but Alexei Alexandrovich felt that she was sorry for him and was preparing to cry. And he too was softened; he snatched her plump hand and proceeded to kiss it.

"Dear friend!" she said in a voice breaking with emotion. "You ought not to give way to grief. Your sorrow is a great one, but you ought to find consolation."

"I am crushed, I am annihilated, I am no longer a man!" said Alexei Alexandrovich, letting go her hand, but still gazing into her brimming eyes. "My position is so awful because I can find nowhere, I cannot find within me, strength to support me."

"You will find support; seek it not in me, though I beseech you to believe in my friendship," she said, with a sigh. "Our support is love, that love that He has vouchsafed us. His burden is light," she said, with the look of ecstasy Alexei Alexandrovich knew so well. "He will be your support and your succor."

Although there was in these words a flavor of that sentimental emotion at her own lofty feelings, and that new mystical fervor which had lately gained ground in Petersburg, and which seemed to Alexei Alexandrovich disproportionate, still it was pleasant to him to hear this now.

"I am weak. I am crushed. I foresaw nothing, and now I understand nothing."

"Dear friend!" repeated Lidia Ivanovna.

"It's not the loss of what I no longer have; it's not that!" pursued Alexei Alexandrovich. "I do not grieve for that. But I cannot help feeling ashamed before other people for the position I am placed in. It is wrong, but I can't help it I can't help it."

"It was not you who performed that noble act of forgiveness, at which I was moved to ecstasy, and everyone else too, but He, working within your heart," said Countess Lidia Ivanovna, raising her eyes rapturously, "and so you cannot be ashamed of your act."

Alexei Alexandrovich knit his brows, and, crooking his hands, he cracked his fingers.

"One must know all the details," he said in his high voice. "A man's strength has its limits, Countess, and I have reached my limits. The whole day I have had to be making arrangements, arrangements about household matters arising" (he emphasized the word arising) "from my new, solitary position. The servants, the governess, the accounts.... These pinpricks have stabbed me to the heart, and I have not the strength to bear it. At dinner... yesterday, I was almost getting up from the dinner table. I could not bear the way my son looked at me. He did not ask me the meaning of it all, but he wanted to ask, and I could not bear the look in his eyes. He was afraid to look at me, but that is not all..." Alexei Alexandrovich would have referred to the bill that had been brought him, but his voice shook, and he stopped. That bill on blue paper, for a hat and ribbons, he could not recall without a rush of self-pity.

"I understand, dear friend," said Lidia Ivanovna. "I understand it all. Succor and comfort you will find not in me, though I have come only to aid you, if I can. If I could take from off you all these petty, humiliating cares... I understand that a woman's word, a woman's superintendence, is needed. You will intrust it to me?"

Silently and gratefully Alexei Alexandrovich squeezed her hand.

"Together we will take care of Seriozha. Practical affairs are not my strong point. But I will set to work. I will be your housekeeper. Don't thank me. I do it not from myself..."

"I cannot help thanking you."

"But, dear friend, do not give way to the feeling of which you spoke being ashamed of what is the Christian's highest glory: he who humbles himself shall be exalted. And you cannot thank me. You must thank Him, and pray to Him for succor. In Him alone we find peace, consolation, salvation, and love," she said, and turning her eyes heavenward, she began praying, as Alexei Alexandrovich gathered from her silence.

Alexei Alexandrovich listened to her now, and those expressions which had seemed to him, if not distasteful, at least exaggerated, now seemed to him natural and consolatory. Alexei Alexandrovich had disliked this new enthusiastic fervor. He was a believer, who was interested in religion primarily in its political aspect, and the new doctrine which ventured upon several new interpretations, just because it paved the way to discussion and analysis, was in principle disagreeable to him. He had hitherto taken up a cold and even antagonistic attitude to this new doctrine, and with Countess Lidia Ivanovna, who had been carried away by it, he had never argued, but by silence had assiduously parried her attempts to provoke him into argument. Now for the first time he heard her words with pleasure, and did not inwardly oppose them.

"I am very, very grateful to you, both for your deeds and for your words," he said, when she had finished praying.

Countess Lidia Ivanovna once more squeezed both of her friend's hands.

"Now I will enter upon my duties," she said with a smile after a pause, as she wiped away the traces of tears. "I am going to Seriozha. Only in the last extremity shall I apply to you." And she got up and went out.

Countess Lidia Ivanovna went into Seriozha's part of the house, and, dropping tears on the scared child's cheeks, she told him that his father was a saint and his mother was dead.

Countess Lidia Ivanovna kept her promise. She did actually take upon herself the care of the organization and management of Alexei Alexandrovich's household. But she had not overstated the case when saying that practical affairs were not her strong point. All her arrangements had to be modified because they could not be carried out, and they were modified by Kornei, Alexei Alexandrovich's valet, who, though no one was aware of the fact, now managed Karenin's household, and quietly and discreetly reported to his master, while the latter was dressing, all it was necessary for him to know. But Lidia Ivanovna's help was none the less real; she gave Alexei Alexandrovich moral support in the consciousness of her love and respect for him, and still more (as it was soothing to her to believe) by having almost turned him to Christianity that is, from an indifferent and apathetic believer she had turned him into an ardent and steadfast adherent of the new interpretation of Christian doctrine, which had been gaining ground of late in Peterburg. It was easy for Alexei Alexandrovich to believe in this teaching. Alexei Alexandrovich, like Lidia Ivanovna indeed, and others who shared their views, was completely devoid of profundity of imagination, that spiritual faculty in virtue of which the ideas evoked by the imagination become so actual that they must needs be in harmony with other ideas, and with reality itself. He saw nothing impossible and absurd in the idea that death, though existing for unbelievers, did not exist for him, and that, as he was possessed of the most perfect faith, of the measure of which he was himself the judge, there was therefore no sin in his soul, and he was experiencing complete salvation here on earth.

It is true that the erroneousness and shallowness of this conception of his faith was dimly perceptible to Alexei Alexandrovich, and he knew that when, without the slightest idea that his forgiveness was the action of a higher power, he had surrendered directly to the feeling of forgiveness, he had felt more happiness than now, when he was thinking every instant that Christ was in his heart, and that in signing official papers he was doing His will. But for Alexei Alexandrovich it was a necessity to think in that way; it was such a necessity for him in his

humiliation to have some elevated standpoint, however imaginary, from which, looked down upon by all, he could look down on others, that he clung, as to his one salvation, to his delusion of salvation.

### XXIII.

The Countess Lidia Ivanovna had, as a very young and enthusiastic girl, been married to a wealthy man of high rank, a very good-natured, jovial, and extremely dissipated rake. One month after marriage her husband abandoned her, and her enthusiastic protestations of affection he met with an irony and even hostility which people, knowing the Count's good heart, and seeing no defects in the enthusiastic Lidia, were at a loss to explain. Though they were divorced and lived apart, yet whenever the husband met the wife, he invariably behaved to her with the same malignant irony, the cause of which was incomprehensible.

Countess Lidia Ivanovna had long given up being in love with her husband, but from that time she had never given up being in love with someone. She was in love with several people at once, both men and women; she had been in love with almost everyone who had been particularly distinguished in any way. She was in love with all the new princes and princesses who married into the Imperial family; she had been in love with one archbishop, one vicar, and one parish priest; she had been in love with one journalist, three Slavophiles, with Komissarov, with one minister, one doctor, one English missionary, and Karenin. All these passions, constantly waning or growing more ardent, did not prevent her from keeping up the most extended and complicated relations with the Court and fashionable society. But from the time that, after Karenin's trouble, she had taken him under special protection, from the time that she had set to work in Karenin's household looking after his welfare, she felt that all her other attachments were not the real thing, and that she was now genuinely in love, and with no one but Karenin. The feeling she now experienced for him seemed to her stronger than any of her former feelings. Analyzing her feeling, and comparing it with former passions, she distinctly perceived that she would not have been in love with Komissarov if he had not saved the life of the Czar; that she would not have been in love with Ristich-Kudzhitsky if there had been no Slavonic question; but that she loved Karenin for himself, for his lofty, uncomprehended soul, for the sweet to her high notes of his voice, for his drawling intonation, his weary eyes, his character, and his soft white hands with their swollen veins. She was not simply overjoyed at meeting him, but she sought in his face signs of the impression she was making on him. She tried to please him, not by her words only, but in her whole person. For his sake it was that she now lavished more care on her dress than before. She caught herself in reveries on what might have been, if she had not been married and he had been free. She blushed with emotion when he came into the room, she could not repress a smile of rapture when he said anything amiable to her.

For several days now Countess Lidia Ivanovna had been in a state of intense excitement. She had learned that Anna and Vronsky were in Petersburg. Alexei Alexandrovich must be saved from seeing her, he must be saved even from the torturing knowledge that that awful woman was in the same town with him, and that he might meet her any minute.

Lidia Ivanovna made inquiries through her friends as to what those shocking people, as she called Anna and Vronsky, intended doing, and she endeavored so to guide every movement of her friend during those days that he might not come across them. The young adjutant, a friend of Vronsky, through whom she obtained her information, and who hoped through Countess Lidia Ivanovna to obtain a concession, told her that they had finished their business and were going away next day. Lidia Ivanovna had already begun to calm down, when the next morning a note was brought her, the handwriting of which she recognized with horror. It was the handwriting of Anna Karenina. The envelope was of paper as thick as bast; on the oblong yellow paper there was a huge monogram, and the letter smelt of agreeable scent.

"Who brought it?"

"A commissionaire from the hotel."

It was some time before Countess Lidia Ivanovna could sit down to read the letter. Her excitement brought on an attack of asthma, to which she was subject. When she had recovered her composure, she read the following letter in French:

"Madame la Comtesse The Christian feelings with which your heart is filled give me the, I feel, unpardonable boldness to write to you. I am miserable at being separated from my son. I entreat permission to see him once before my departure. Forgive me for recalling myself to your memory. I apply to you and not to Alexei Alexandrovich, simply because I do not wish to cause that generous man to suffer in remembering me. Knowing your friendship for him, I know you will understand me. Could you send Seriozha to me, or should I come to the house at some fixed hour, or will you let me know when and where I could see him away from home? I do not anticipate a refusal, knowing the magnanimity of him with whom it rests. You cannot conceive the craving I have to see him, and so cannot conceive the gratitude your help will arouse in me.

"Anna "

Everything in this letter exasperated Countess Lidia Ivanovna: its contents, and the allusion to magnanimity, and especially its free and easy as she considered tone.

"Say that there is no answer," said Countess Lidia Ivanovna, and immediately opening her blotting book, she wrote to Alexei Alexandrovich that she hoped to see him at one o'clock at the levee.

"I must talk with you of a grave and painful subject. There we will arrange where to meet. Best of all at my house, where I will order tea as you like it. Urgent. He lays the cross, but He gives the strength to bear it," she added, so as to give him some slight preparation.

Countess Lidia Ivanovna usually wrote some two or three letters a day to Alexei Alexandrovich. She enjoyed that form of communication, which gave opportunity for a refinement and air of mystery not afforded by their personal interviews.

## XXIV.

The levee was drawing to a close. People met as they were going away, and gossiped of the latest news, of the newly bestowed honors, and the changes in the positions of the higher functionaries.

"If only Countess Marya Borissovna were Minister of War, and Princess Vatkovsky were Commander in Chief," said a gray-headed, little old man in a gold-embroidered uniform, addressing a tall, handsome maid of honor who had questioned him about the new appointments.

"And if I were one of the adjutants," said the maid of honor, smiling.

"You have an appointment already. You're over the Ecclesiastical Department. And your assistant's Karenin."

"Good day, Prince!" said the little old man to a man who came up to him.

"What were you saying of Karenin?" said the Prince.

"He and Putiatov have received the order of Alexandre Nevsky."

"I thought he had it already."

## Anna Karenina

"No. Just look at him," said the little old man, pointing with his embroidered hat to Karenin in a Court uniform, with the new red ribbon across his shoulders, standing in the doorway of the hall with an influential member of the Imperial Council. "Pleased and happy as brass," he added, stopping to shake hands with a handsome gentleman of the bedchamber of colossal proportions.

"No he's looking older," said the gentleman of the bedchamber.

"From overwork. He's always drawing up projects nowadays. He won't let a poor devil go nowadays till he's explained it all to him under heads."

"Looking older, did you say? Il fait des passions. I believe Countess Lidia Ivanovna's jealous now of his wife."

"Oh, come now, please don't say any harm of Countess Lidia Ivanovna."

"Why, is there any harm in her being in love with Karenin?"

"But is it true Madame Karenina's here?"

"Well, not here in the palace, but in Peterburg. I met her yesterday with Alexei Vronsky, bras dessus, bras dessous, on the Morskaia."

"C'est un homme qui n'a pas..." the gentleman of the bedchamber was beginning, but he stopped to make room, bowing, for a member of the Imperial family to pass.

Thus people talked incessantly of Alexei Alexandrovich, finding fault with him and laughing at him, while he, blocking up the way of the member of the Imperial Council he had captured, was explaining to him point by point his new financial project, never interrupting his discourse for an instant for fear he should escape.

Almost at the same time that his wife left Alexei Alexandrovich there had come to him that bitterest moment in the life of an official the moment when his upward career comes to a full stop. This full stop had arrived and everyone perceived it, but Alexei Alexandrovich himself was not yet aware that his career was over. Whether it was due to his feud with Stremov, or his misfortune with his wife, or simply that Alexei Alexandrovich had reached his predestined limits, it had become evident to everyone in the course of that year that his career was at an end. He still filled a position of consequence, he sat on many commissions and committees, but he was a man whose day was over, and from whom nothing was expected. Whatever he said, whatever he proposed, was heard as though it were something long familiar, and the very thing that was not needed. But Alexei Alexandrovich was not aware of this, and, on the contrary, being cut off from direct participation in governmental activity, he saw more clearly than ever the errors and defects in the action of others, and thought it his duty to point out means for their correction. Shortly after his separation from his wife, he began writing his first note on the new judicial procedure, the first of the endless series of notes he was destined to write in the future.

Alexei Alexandrovich did not merely fail to observe his hopeless position in the official world, he was not merely free from anxiety on this head he was positively more satisfied than ever with his own activity.

"He that is married careth for the things of the world, how he may please his wife; he that is unmarried careth for the things that belong to the Lord, how he may please the Lord," says the Apostle Paul, and Alexei Alexandrovich, who was now guided in every action by Scripture, often recalled this text. It seemed to him that ever since he had been left without a wife, he had, in these very projects of reform, been serving the Lord more zealously than ever.

## Anna Karenina

The unmistakable impatience of the member of the Council trying to get away from him did not trouble Alexei Alexandrovich; he gave up his exposition only when the member of the Council, seizing his chance when one of the Imperial family was passing, slipped away from him.

Left alone, Alexei Alexandrovich looked down, collecting his thoughts, then looked casually about him and walked toward the door, where he hoped to meet Countess Lidia Ivanovna.

"And how strong they all are how sound physically," thought Alexei Alexandrovich, looking at the powerfully built gentleman of the bedchamber with his well-groomed, perfumed whiskers, and at the red neck of the Prince, pinched by his tight uniform. He had to pass them on his way. "Truly is it said that all the world is evil," he thought, with another sidelong glance at the calves of the gentleman of the bedchamber.

Moving forward deliberately, Alexei Alexandrovich bowed with his customary air of weariness and dignity to the gentleman who had been talking about him, and, looking toward the door, his eyes sought Countess Lidia Ivanovna.

"Ah! Alexei Alexandrovich!" said the little old man, with a malicious light in his eyes, at the moment when Karenin had come up to them, and was nodding with a frigid gesture. "I haven't congratulated you yet," said the old man, pointing to his newly received ribbon.

"Thank you," answered Alexei Alexandrovich. "What an exquisite day today," he added, laying emphasis in his peculiar way on the word exquisite.

That they laughed at him he was well aware, but he did not expect anything but hostility from them; he was used to that by now.

Catching sight of the yellow shoulders of Lidia Ivanovna jutting out above her corset, and her fine pensive eyes summoning him to her, Alexei Alexandrovich smiled, revealing untarnished white teeth, and went toward her.

Lidia Ivanovna's dress had cost her great pains, as indeed all her dresses had done of late. Her aim in dress was now quite the reverse of what she had pursued thirty years before. Then her desire had been to adorn herself with something, and the more adorned the better. Now, on the contrary, she was perforce decked out in a way so inconsistent with her age and her figure, that her one anxiety was to contrive that the contrast between these adornments and her own exterior should not be too appalling. And as far as Alexei Alexandrovich was concerned she succeeded, and was in his eyes attractive. For him she was the one island not only of good will to him, but of love in the midst of the sea of hostility and jeering that surrounded him.

Passing through rows of ironical eyes, he was drawn as naturally to her loving glance as a plant to the sun.

"I congratulate you," she said to him, her eyes on his ribbon.

Suppressing a smile of pleasure, he shrugged his shoulders, closing his eyes, as though to say that that could not be a source of joy to him. Countess Lidia Ivanovna was very well aware that it was one of his chief sources of satisfaction, though he never admitted it.

"How is our angel?" said Countess Lidia Ivanovna, meaning Seriozha.

"I can't say I was quite pleased with him," said Alexei Alexandrovich, raising his eyebrows and opening his eyes. "And Sitnikov is not satisfied with him." (Sitnikov was the tutor to whom Seriozha's secular education had been intrusted.) "As I have mentioned to you, there's a sort of coldness in him toward the most important questions which ought to touch the heart of every man and every child...." Alexei Alexandrovich began expounding his



views on the sole question that interested him outside the service the education of his son.

When Alexei Alexandrovich, with Lidia Ivanovna's help, had been brought back anew to life and activity, he felt it his duty to undertake the education of the son left on his hands. Having never before taken any interest in educational questions, Alexei Alexandrovich devoted some time to the theoretical study of the subject. After reading several books on anthropology, education, and didactics, Alexei Alexandrovich drew up a plan of education, and, engaging the best tutor in Peterburg to superintend it, he set to work, and the subject continually absorbed him.

"Yes but the heart! I see in him his father's heart, and with such a heart a child cannot go far wrong," said Lidia Ivanovna with enthusiasm.

"Yes, perhaps.... As for me, I do my duty. It's all I can do."

"You're coming to me," said Countess Lidia Ivanovna, after a pause; "we have to speak of a subject painful for you. I would give anything to have spared you certain memories, but others are not of the same mind. I have received a letter from her. She is here in Peterburg."

Alexei Alexandrovich shuddered at the allusion to his wife, but immediately his face assumed the deathlike rigidity which expressed utter helplessness in the matter.

"I was expecting it," he said.

Countess Lidia Ivanovna looked at him ecstatically, and tears of rapture at the greatness of his soul came into her eyes.

## XXV.

When Alexei Alexandrovich came into the Countess Lidia Ivanovna's snug little boudoir, decorated with old china and hung with portraits, the lady herself had not yet made her appearance.

She was changing her dress.

A cloth was laid on a round table, and on it stood a china tea service and a silver teakettle and spirit lamp. Alexei Alexandrovich looked idly about at the endless familiar portraits which adorned the room, and, sitting down to the table, he opened a New Testament lying upon it. The rustle of the Countess's silk skirt drew his attention off.

"Well, now, we can sit quietly," said Countess Lidia Ivanovna, slipping hurriedly with an agitated smile between the table and the sofa, "and talk over our tea."

After some words of preparation, Countess Lidia Ivanovna, breathing hard and flushing crimson, gave into Alexei Alexandrovich's hands the letter she had received.

After reading the letter, he sat a long while in silence.

"I don't think I have the right to refuse her," he said, timidly lifting his eyes.

"Dear friend, you never see evil in anyone!"

"On the contrary, I see that all is evil. But whether it is just..."

## Anna Karenina

His face showed irresolution, and a seeking for counsel, support, and guidance, in a matter he did not understand.

"No," Countess Lidia Ivanovna interrupted him; "there are limits to everything. I can understand immorality," she said, not quite truthfully, since she never could understand that which leads women to immorality; "but I don't understand cruelty to whom? To you! How can she stay in the town where you are? No, the longer one lives the more one learns. And I'm learning to understand your loftiness and her baseness."

"Who is to cast a stone?" said Alexei Alexandrovich, unmistakably pleased with the part he had to play. "I have forgiven all, and so I cannot deprive her of what is exacted by love in her by her love for her son...."

"But is that love, my friend? Is it sincere? Admitting that you have forgiven that you forgive... have we the right to work on the soul of that angel? He looks on her as dead. He prays for her, and beseeches God to have mercy on her sins. And it is better so. But now what will he think?"

"I had not thought of that," said Alexei Alexandrovich, evidently agreeing.

Countess Lidia Ivanovna hid her face in her hands and was silent. She was praying.

"If you ask my advice," she said, having finished her prayer and uncovered her face, "I do not advise you to do this. Do you suppose I don't see how you are suffering, how this has torn open your wounds? But supposing that, as always, you don't think of yourself what can it lead to? To fresh suffering for you, to torture for the child. If there were a trace of humanity left in her, she ought not to wish it herself. No, I have no hesitation in saying I advise against it, and if you will intrust it to me, I will write to her."

And Alexei Alexandrovich consented, and Countess Lidia Ivanovna sent the following letter in French:

"Dear Madame To be reminded of you might result in your son's asking questions, which could not be answered without implanting in the child's soul a spirit of censure toward what should be for him sacred, and therefore I beg you to interpret your husband's refusal in the spirit of Christian love. I pray to Almighty God to have mercy on you.

"Countess Lidia"

This letter attained the secret object which Countess Lidia Ivanovna had concealed from herself. It wounded Anna to the quick.

For his part, Alexei Alexandrovich, on returning home from Lidia Ivanovna's, could not all that day concentrate himself on his usual pursuits, and find that spiritual peace of one saved and believing which he had felt of late.

The thought of his wife, who had so greatly sinned against him, and toward whom he had been so saintly, as Countess Lidia Ivanovna had so justly told him, ought not to have troubled him; but he was not easy; he could not understand the book he was reading; he could not drive away harassing recollections of his relations with her, of the mistake which, as it now seemed, he had made in regard to her. The memory of how he had received her confession of infidelity on their way home from the races (especially his having insisted only on the observance of external decorum, and not having sent a challenge) tortured him like a remorse. He was tortured, too, by the thought of the letter he had written her; and, most of all, his forgiveness, which nobody wanted, and his care of the other man's child, seared his heart with shame and remorse.

And just the same feeling of shame and remorse he felt now, as he reviewed all his past with her, recalling the awkward words in which, after long wavering, he proposed to her.

"But how have I been to blame?" he said to himself. And this question always excited another question in him whether they felt differently, did their loving and marrying differently, these Vronskys and Oblonskys... these gentlemen of the bedchamber, with their fine calves. And there passed before his mind a whole series of these succulent, vigorous, self-confident men, who always and everywhere drew his inquisitive attention in spite of himself. He tried to dispel these thoughts, he tried to persuade himself that he was not living for this transient life, but for the life of eternity, and that there was peace and love in his heart. But the fact that he had in this transient, trivial life made, as it seemed to him, a few trivial mistakes, tortured him as though the eternal salvation in which he believed had no existence. But this temptation did not last long, and soon there was reestablished once more in Alexei Alexandrovich's soul the peace and the loftiness by virtue of which he could forget what he did not want to remember.

## XXVI.

"Well, Kapitonich?" said Seriozha, coming back rosy and good-humored from his walk the day before his birthday, and giving his Russian plaited overcoat to the tall old hall porter, who smiled down at the little person from the height of his long figure. "Well, has the bandaged official been here today? Did papa see him?"

"He saw him. The minute the head clerk came out, I announced him," said the hall porter with a good-humored wink. "Here, I'll take it off."

"Seriozha!" said his Slavonic tutor, stopping in the doorway leading to the inner rooms. "Take it off yourself." But Seriozha, though he heard the tutor's feeble voice, did not pay attention to it. He stood keeping hold of the hall porter's shoulder knot and gazing into his face.

"Well, and did papa do what he wanted for him?"

The hall porter nodded his head affirmatively.

The bandaged official, who had already been seven times to ask some favor of Alexei Alexandrovich, interested both Seriozha and the hall porter. Seriozha had come upon him in the hall, and had heard him plaintively beg the hall porter to announce him, saying that he and his children had death staring them in the face.

Since then Seriozha, having met him a second time in the hall, took great interest in him.

"Well, was he very glad?" he asked.

"Glad? I should think so! Almost dancing as he walked away."

"And has anything been left for me?" asked Seriozha, after a pause.

"Come, sir," said the hall porter; then with a shake of his head he whispered: "Something from the Countess."

Seriozha understood at once that what the hall porter was speaking of was a present from Countess Lidia Ivanovna for his birthday.

"You don't say? Where?"

"Kornei took it to your papa. A fine plaything it must be, too!"

"How big? Like this?"

"Rather small, but a fine thing."

"A book?"

"No—something else. Run along, run along, Vassilii Lukich is calling you," said the porter, hearing the tutor's steps approaching, and, carefully taking away from his shoulder knot the little hand in the glove half-pulled off, he indicated with his head Lukich, the tutor.

"Vassilii Lukich, I'm coming in one tiny minute!" answered Seriozha with gay and loving smile which always won over the careful Vassilii Lukich.

Seriozha was too happy; everything was too delightful for him to be able to help sharing with his friend the porter the family good fortune, of which he had heard from Lidia Ivanovna's niece during his walk in the public gardens. This piece of good news seemed to him particularly important from its coming at the same time with the joy of the bandaged official, and his own joy at toys having come for him. It seemed to Seriozha that this was a day on which everyone ought to be glad and happy.

"You know papa's received the order of Alexandre Nevsky today?"

"To be sure I do! People have already been here to congratulate him."

"And is he glad?"

"Glad at the Czar's gracious favor? I should think so! It's a proof he's deserved it," said the porter sternly and seriously.

Seriozha fell to musing, gazing up at the face of the porter, which he had thoroughly studied in every detail, especially at his chin, which hung down between the gray whiskers never seen by anyone but Seriozha, who saw him only from below.

"Well, and has your daughter been to see you lately?"

The porter's daughter was a ballet dancer.

"When is she to come on weekdays? They've their lessons to learn, too. And you've your lesson, sir; run along."

On coming into the room Seriozha, instead of sitting down to his lessons, told his tutor of his supposition that what had been brought him must be a toy railway. "What do you think?" he inquired.

But Vassilii Lukich was thinking of nothing but the necessity of learning the grammar lesson for the teacher, who was coming at two.

"No, do just tell me, Vassilii Lukich," he asked suddenly, when he was seated at their worktable with the book in his hands, "what is greater than the Alexandre Nevsky? You know papa's received the Alexandre Nevsky?"

Vassilii Lukich replied that the Vladimir was greater than the Alexandre Nevsky.

"And higher still?"

"Well, highest of all is the Andrei Pervozvanny."

"And higher than the Andrei?"

"I don't know."

"What you don't know?" And Seriozha, leaning on his elbows, sank into deep meditation.

His meditations were of the most complex and diverse character. He imagined his father's having been suddenly presented with both the Vladimir and the Andrei today, and in consequence being much better tempered at his lesson; and dreamed how, when he was grown up, he would himself receive all the orders, and what might be invented higher than the Andrei. Directly any higher order were invented, he would win it. They would make a higher one still, and he would immediately win that too.

The time passed in such meditations, and when the teacher came, the lesson about the adverbs of place and time and manner of action was not ready, and the teacher was not only displeased, but hurt. This touched Seriozha. He felt he was not to blame for not having learned the lesson; however much he tried, he was utterly unable to do it. As long as the teacher was explaining to him, he believed him and seemed to comprehend, but as soon as he was left alone, he was positively unable to recollect and to understand that the short and familiar word "suddenly" is an adverb of manner of action. Still he was sorry that he had disappointed the teacher, and he was anxious to comfort him.

He chose a moment when the teacher was looking in silence at the book.

"Mikhail Ivanich, when is your birthday?" he asked, all of a sudden.

"You'd much better be thinking about your work. Birthdays are of no importance to a rational being. It's a day like any other, on which one has to do one's work."

Seriozha looked intently at the teacher, at his scanty beard, at his spectacles, which had slipped down below the ridge on his nose, and fell into so deep a reverie that he heard nothing of what the teacher was explaining to him. He knew that the teacher did not think what he had said—he felt it from the tone in which it was said. "But why have they all agreed to speak, just in the same manner, always the dreariest and most useless stuff? Why does he keep me off; why doesn't he love me?" he asked himself mournfully, and could not think of an answer.

## XXVII.

After the lesson with the teacher of grammar came his father's lesson. While waiting for his father, Seriozha sat at the table playing with a penknife, and fell to musing. Among Seriozha's favorite occupations was searching for his mother during his walks. He did not believe in death generally, and in her death in particular, in spite of what Lidia Ivanovna had told him and his father had confirmed, and it was just because of that, and after he had been told she was dead, that he had begun looking for her when out for a walk. Every woman of full, graceful figure with dark hair was his mother. At the sight of such a woman such a feeling of tenderness stirred within him that his breath failed him, and tears came into his eyes. And he was on tiptoe with expectation that she would come up to him, would lift her veil. All her face would be visible, she would smile, she would hug him, he would sniff her fragrance, feel the softness of her arms, and cry with happiness, just as he had one evening lain on her lap while she tickled him, and he laughed and bit her white, ring-covered fingers. Later, when he accidentally learned from his old nurse that his mother was not dead, and his father and Lidia Ivanovna had explained to him that she was dead to him because she was wicked (which he could not possibly believe, because he loved her), he went on seeking her and expecting her in the same way. That day in the public gardens there had been a lady in a lilac veil, whom he had watched with a throbbing heart, believing it to be her as she came toward them along the path. The lady had not come up to them, but had disappeared somewhere. That day, more intensely than ever, Seriozha felt

a rush of love for her, and now, waiting for his father, he forgot everything, and cut all round the edge of the table with his penknife, staring straight before him with sparkling eyes, and thinking of her.

"Here is your papa," Vassilii Lukich diverted him.

Seriozha jumped up and went up to his father, and, kissing his hand, looked at him intently, trying to discover signs of his joy at receiving the Alexandre Nevsky.

"Did you have a good walk?" said Alexei Alexandrovich, sitting down in his easy chair, pulling the volume of the Old Testament to him and opening it. Although Alexei Alexandrovich had more than once told Seriozha that every Christian ought to know Scripture history thoroughly, he often referred to the Bible himself during the lesson, and Seriozha observed this.

"Yes, it was very good indeed, papa," said Seriozha, sitting sideways on his chair and rocking it, which was forbidden. "I saw Nadinka" (Nadinka was a niece of Lidia Ivanovna's who was being brought up in her house). "She told me you'd been given a new star. Are you glad, papa?"

"First of all, don't rock your chair, please," said Alexei Alexandrovich. "And secondly, it's not the reward that's precious, but the work itself. And I could have wished you had understood that. If you now are going to work, to study, in order to win a reward, then the work will seem hard to you; but when you work" (Alexei Alexandrovich, as he spoke, thought of how he had been sustained by a sense of duty through the wearisome labor of the morning, consisting of signing one hundred and eighty papers), "loving your work, you will find your reward for it."

Seriozha's eyes hitherto shining with gaiety and tenderness, grew dull and dropped before his father's gaze. This was the same long-familiar tone his father always took with him, and Seriozha had learned by now to fall in with it. His father always talked to him so Seriozha felt as though he were addressing some boy of his own imagination, one of those boys who exist in books, utterly unlike himself. And Seriozha always tried, before his father, to pretend being this storybook boy.

"You understand that, I hope?" said his father.

"Yes, papa," answered Seriozha, acting the part of the imaginary boy.

The lesson consisted of learning by heart several verses out of the Evangel and the repetition of the beginning of the Old Testament. The verses from the Evangel Seriozha knew fairly well, but at the moment when he was saying them he became so absorbed in watching the sharply protruding, bony knobiness of his father's forehead, that he lost the thread, and he transposed the end of one verse and the beginning of another. It was evident to Alexei Alexandrovich that he did not understand what he was saying, and this irritated him.

He frowned, and began explaining what Seriozha had heard many times before and never could remember, because he understood it too well, just as that "suddenly" is an adverb of manner of action. Seriozha looked with scared eyes at his father, and could think of nothing but whether his father would make him repeat what he had said, as he sometimes did. And this thought so alarmed Seriozha that he now understood nothing. But his father did not make him repeat it, and passed on to the lesson out of the Old Testament. Seriozha recounted the events themselves well enough, but when he had to answer questions as to what certain events prefigured, he knew nothing, though he had already been punished over this lesson. The passage at which he was utterly unable to say anything, and began fidgeting and cutting the table and swinging his chair, was where he had to tell of the patriarchs before the Flood. He did not know one of them, except Enoch, who had been taken up alive to heaven. Last time he had remembered their names, but now he had forgotten them utterly, chiefly because Enoch was the personage he liked best in the whole of the Old Testament, and Enoch's translation to heaven was connected in his

mind with a whole long train of thought, in which he became absorbed now while he gazed with fascinated eyes at his father's watch chain and a half-unbuttoned button on his waistcoat.

In death, of which they talked to him so often, Seriozha disbelieved entirely. He did not believe that those he loved could die, above all that he himself would die. That was to him something utterly inconceivable and impossible. But he had been told all men die; he had asked people, indeed, whom he trusted, and they, too, had confirmed it; his old nurse, too, said the same, though reluctantly. But Enoch had not died, and so it followed that everyone did not die. "And why cannot anyone else so serve God and be taken alive to heaven?" thought Seriozha. Bad people that is, those Seriozha did not like might die, but the good might all be like Enoch.

"Well, what are the names of the patriarchs?"

"Enoch, Enos—"

"But you have said that already. This is bad. Seriozha, very bad. If you don't try to learn what is most necessary of all for a Christian," said his father, getting up, "whatever can interest you? I am displeased with you, and Piotr Ignatich" (this was the chief pedagogue) "is displeased with you.... I shall have to punish you."

His father and his teacher were both displeased with Seriozha, and he certainly did learn his lessons very badly. But still it could not be said he was a stupid boy. On the contrary, he was far cleverer than the boys his teacher held up as examples to Seriozha. In his father's opinion, he did not want to learn what he was taught. In reality he could not learn that. He could not, because the claims of his own soul were more binding on him than those claims his father and his teacher made upon him. Those claims were in opposition, and he was in direct conflict with his governors.

He was nine years old; he was a child; but he knew his own soul, it was precious to him; he guarded it as the eyelid guards the eye, and without the key of love he let no one into his soul. His teachers complained that he would not learn, while his soul was brimming over with thirst for knowledge. And he learned from Kapitonich, from his nurse, from Nadinka, from Vassilii Lukich but not from his teachers. The spring his father and his teachers reckoned upon to turn their mill wheels had long oozed at another place, and its waters did their work there.

His father punished Seriozha by not letting him go to see Nadinka, Lidia Ivanovna's niece; but this punishment turned out happily for Seriozha. Vassilii Lukich was in a good humor, and showed him how to make windmills. The whole evening passed over this work and in dreaming how to make a windmill on which he could turn himself clutching at the wings or tying himself on and whirling round. Of his mother Seriozha did not think all the evening, but, when he had gone to bed, he suddenly remembered her, and prayed in his own words that tomorrow his mother, in time for his birthday, might leave off hiding herself and come to him.

"Vassilii Lukich, do you know what I prayed for tonight extra beside the regular things?"

"That you might learn your lessons better?"

"No."

"Toys?"

"No. You'll never guess. A splendid thing but it's a secret. When it comes to pass I'll tell you. Can't you guess?"

"No, I can't guess. You tell me," said Vassilii Lukich with a smile, which was rare with him. "Come, lie down, I'm putting out the candle."

## Anna Karenina

"Without the candle I can see better what I see and what I prayed for. There! I was almost telling the secret!" said Seriozha, laughing gaily.

When the candle was taken away, Seriozha heard his mother and felt her presence. She stood over him, and her loving gaze caressed him. But then came windmills a penknife everything became confused, and he fell asleep.

### XXVIII.

On arriving in Peterburg, Vronsky and Anna stayed at one of the best hotels; Vronsky apart in a lower story, Anna above with her child, its nurse, and her maid, in a large suite of four rooms.

On the day of his arrival Vronsky went to his brother's. There he found his mother, who had come from Moscow on business. His mother and sister-in-law greeted him as usual: they asked him about his stay abroad, and talked of their common acquaintances, but did not let drop a single word in allusion to his connection with Anna. His brother came next morning to see Vronsky, and of his own accord asked him about her, and Alexei Vronsky told him directly that he looked upon his connection with Madame Karenina as marriage; that he hoped to arrange a divorce, and then to marry her, and until then he considered her as much a wife as any other wife, and he begged him to tell their mother and his wife so.

"If the world disapproves, I don't care," said Vronsky; "but if my relations want to be on terms of relationship with me, they will have to be on the same terms with my wife."

The elder brother, who had always a respect for his younger brother's judgment, could not well tell whether he was right or not till the world had decided the question; for his part he had nothing against it, and with Alexei he went up to see Anna.

Before his brother, as before everyone, Vronsky addressed Anna with a certain formality, treating her as he might a very intimate friend, but it was understood that his brother knew their real relations, and they talked about Anna's going to Vronsky's estate.

In spite of all his social experience Vronsky was, in consequence of the new position in which he was placed, laboring under a strange misapprehension. One would have thought he must have understood that society was closed for him and Anna; but now some vague ideas had sprung up in his brain that this was only the case in old-fashioned days, and that now, with the rapidity of modern progress (he had unconsciously become by now a partisan of every sort of progress), the views of society had changed, and that the question of their reception by society was far from decided. "Of course," he thought, "she would not be received at Court, but intimate friends can, and must, look at it in the proper light."

One may sit for several hours at a stretch with one's legs crossed in the same position, if one knows that there's nothing to prevent one's changing one's position; but if a man knows that he must remain sitting so with crossed legs, then cramps come on, the legs begin to twitch and to strain toward the spot to which one would like to draw them. This was what Vronsky was experiencing in regard to the world. Though at the bottom of his heart he knew that the world was shut on them, he put it to the test whether the world had not changed by now and would not receive them. But he very quickly perceived that though the world was open for him personally, it was closed for Anna. Just as in the game of cat and mouse, the hands raised for him were dropped to bar the way for Anna.

One of the first ladies of Peterburg society whom Vronsky saw was his cousin Betsy.

"At last!" she greeted him joyfully. "And Anna? How glad I am! Where are you stopping? I can fancy after your



## Anna Karenina

delightful travels you must find our poor Peterburg horrid. I can fancy your honeymoon in Rome. How about the divorce? Is that all over?"

Vronsky noticed that Betsy's enthusiasm waned when she learned that no divorce had as yet taken place.

"People will cast a stone at me, I know," she said, "but I shall come and see Anna; yes, I shall certainly come. You won't be here long, I suppose?"

And she did certainly come to see Anna the same day, but her tone was not at all the same as in former days. She unmistakably prided herself on her courage, and wished Anna to appreciate the fidelity of her friendship. She only stayed ten minutes, talking of society news, and on leaving she said:

"You've never told me when the divorce is to be? Supposing I'm ready to fling my cap over the mill, other starchy people will give you the cold shoulder until you're married. And that's so simple nowadays. *Ca se fait*. So you're going on Friday? Sorry we shan't see each other again."

From Betsy's tone Vronsky might have grasped what he had to expect from the world; but he made another effort in his own family. His mother he did not reckon upon. He knew that his mother, who had been so enthusiastic over Anna at their first acquaintance, would have no mercy on her now for having ruined her son's career. But he had more hope of Varia, his brother's wife. He fancied she would not cast a stone, and would go simply and directly to see Anna, and would receive her in her own house.

The day after his arrival Vronsky went to her, and finding her alone, expressed his wishes directly.

"You know, Alexei," she said after hearing him, "how fond I am of you, and how ready I am to do anything for you; but I have not spoken, because I knew I could be of no use to you and to Anna Arkadyevna," she said, articulating the name "Anna Arkadyevna" with particular care. "Don't suppose, please, that I judge her. Never! Perhaps in her place I should have done the same. I don't and can't enter into that," she said, glancing timidly at his gloomy face. "But one must call things by their names. You want me to go and see her, to ask her here, and to rehabilitate her in society; but do understand that I cannot do so. I have daughters growing up, and I must live in the world for my husband's sake. Well, I'm ready to come and see Anna Arkadyevna she will understand that I can't ask her here, or I should have to do so in such a way that she would not meet people who look at things differently; that would offend her. I can't raise her..."

"Oh, I don't regard her as having fallen more than hundreds of women you do receive!" Vronsky interrupted her still more gloomily, and he got up in silence, understanding that his sister-in-law's decision was not to be shaken.

"Alexei! Don't be angry with me. Please understand that I'm not to blame," began Varia, looking at him with a timid smile.

"I'm not angry with you," he said still as gloomily; "but this is doubly painful to me. I'm sorry, too, that this means breaking up our friendship if not breaking up, at least weakening it. You will understand that for me, too, it cannot be otherwise."

And with that he left her.

Vronsky knew that further efforts were useless, and that he had to spend these few days in Peterburg as though in a strange town, avoiding every sort of relation with his own old circle in order not to be exposed to the annoyances and humiliations which were so intolerable to him. One of the most unpleasant features of his position in Peterburg was that Alexei Alexandrovich and his name seemed to meet him everywhere. He could not begin to talk of anything without the conversation turning on Alexei Alexandrovich, he could not go anywhere

without risk of meeting him. So at least it seemed to Vronsky, just as it seems to a man with a sore finger that he is continually, as though on purpose, grazing his sore finger against everything.

Their stay in Peterburg was the more painful to Vronsky because he perceived all the time a sort of new mood he could not understand in Anna. At one time she would seem in love with him, and the next she would become cold, irritable, and impenetrable. She was worrying over something, and keeping something back from him, and did not seem to notice the humiliations which poisoned his existence, and which for her, with her delicate intuition, must have been still more unbearable.

## XXIX.

One of Anna's objects in coming back to Russia had been to see her son. From the day she left Italy the thought of seeing him had never ceased to agitate her. And, as she got nearer to Peterburg, the delight and importance of this meeting grew ever greater in her imagination. She did not even put to herself the problem of how to arrange it. It seemed to her natural and simple to see her son when she should be in the same town with him. But on her arrival in Peterburg she was suddenly made distinctly aware of her present position in society, and she grasped the fact that to arrange this meeting was no easy matter.

She had now been two days in Peterburg. The thought of her son never left her for a single instant, but she had not yet seen him. To go straight to the house, where she might meet Alexei Alexandrovich that she felt she had no right to do. She might be refused admittance and insulted. To write and so enter into relations with her husband the thought of doing that made her miserable; she could only be at peace when she did not think of her husband. To get a glimpse of her son out walking, finding out where and when he went out, was not enough for her; she had so looked forward to this meeting, she had so much she must say to him, she so longed to embrace him, to kiss him. Seriozha's old nurse might be a help to her and show her what to do. But the nurse was not now living in Alexei Alexandrovich's house. In this uncertainty, and in efforts to find the nurse, two days had slipped by.

Hearing of the close intimacy between Alexei Alexandrovich and Countess Lidia Ivanovna, Anna decided on the third day to write her a letter, which cost her great pains, and in which she intentionally said that permission to see her son must depend on her husband's magnanimity. She knew that if the letter were shown to her husband, he would keep up his role of magnanimity, and would not refuse her request.

The commissionaire who took the letter had brought her back the most cruel and unexpected answer that there was no answer. She had never felt so humiliated as at the moment when, sending for commissionaire, she heard from him the exact account of how he had waited, and how afterward he had been told there was no answer. Anna felt humiliated, insulted, but she saw that from her point of view Countess Lidia Ivanovna was right. Her suffering was the more poignant since she had to bear it in solitude. She could not and would not share it with Vronsky. She knew that to him, although he was the primary cause of her distress, the question of her seeing her son would seem a matter of very little consequence. She knew that he would never be capable of understanding all the depth of her suffering, that for his cool tone at any allusion to it she would begin to hate him. And she dreaded that more than anything in the world, and so she hid from him everything that related to her son.

Spending the whole day at home she considered ways of seeing her son, and had reached a decision to write to her husband. She was just composing this letter when she was handed the letter from Lidia Ivanovna. The Countess's silence had subdued and depressed her, but the letter, all that she read between the lines in it, so exasperated her, this malice was so revolting beside her passionate, legitimate tenderness for her son, that she turned against other people and left off blaming herself.

"This coldness is simulation of feeling!" she said to herself. "They must needs insult me and torture the child, and I am to submit to it! Not on any consideration! She is worse than I am. I don't lie, anyway." And she decided on

## Anna Karenina

the spot that next day, Seriozha's birthday, she would go straight to her husband's house, bribe the servants, deceive the people, but at any cost see her son and overturn the hideous deception with which they were encompassing the unhappy child.

She went to a toyshop, bought toys, and thought over a plan of action. She would go early in the morning at eight o'clock, when Alexei Alexandrovich would be certain not to be up. She would have money in her hand to give the hall porter and the footman, so that they should let her in, and, without raising her veil, she would say that she had come from Seriozha's godfather to congratulate him, and that she had been charged to leave the toys at his bedside. She had prepared everything but the words she should say to her son. Often she dreamed of it, she could never think of anything.

The next day, at eight o'clock in the morning, Anna got out of a hired coach and rang at the front entrance of her former home.

"Run and see what's wanted. Some lady," said Kapitonich, who, not yet dressed, in his overcoat and galoshes, had peeped out of the window and seen a lady in a veil standing close up to the door. His assistant, a lad Anna did not know, had no sooner opened the door to her than she came in, and pulling a three-rouble note out of her muff put it hurriedly into his hand.

"Seriozha Sergei Alexeich," she said, and was going on. Scrutinizing the note, the porter's assistant stopped her at the second glass door.

"Whom do you want?" he asked.

She did not hear his words and made no answer.

Noticing the embarrassment of the unknown lady, Kapitonich went out to her, opened the second door for her, and asked her what she was pleased to want.

"From Prince Skorodumov for Sergei Alexeich," she said.

"He's not up yet," said the porter, looking at her attentively.

Anna had not anticipated that the absolutely unchanged hall of the house where she had lived for nine years would so greatly affect her. Memories sweet and painful rose one after another in her heart, and for a moment she forgot what she was here for.

"Would you kindly wait?" said Kapitonich, taking off her fur cloak.

As he took off the cloak, Kapitonich glanced at her face, recognized her, and made her a low bow in silence.

"Please walk in, Your Excellency," he said to her.

She tried to say something, but her voice refused to utter any sound; with a guilty and imploring glance at the old man she went with light, swift steps up the stairs. Bent double, and his galoshes catching in the steps, Kapitonich ran after her, trying to overtake her.

"The tutor's there; maybe he's not dressed. I'll let him know."

Anna still mounted the familiar staircase, not understanding what the old man was saying.

## Anna Karenina

"This way, to the left, if you please. Excuse its not being tidy. He's in the former smoking room now," the hall porter said, panting. "Excuse me, wait a little, Your Excellency; I'll just see," he said, and overtaking her, he opened the high door and disappeared behind it. Anna stood still waiting. "He's only just awake," said the hall porter, coming out.

And at the very instant the porter said this, Anna caught the sound of a childish yawn. From the sound of this yawn alone she knew her son and seemed to see him living before her eyes.

"Let me in; go away!" she said and went in through the high doorway. On the right of the door stood a bed, and sitting up in the bed was the boy. His little body bent forward, his nightshirt unbuttoned, he was stretching and still yawning. The instant his lips came together they curved into a blissfully sleepy smile, and with that smile he slowly and deliciously rolled back again.

"Seriozha!" she whispered, walking noiselessly up to him.

When she was parted from him, and all this latter time when she had been feeling a fresh rush of love for him, she had pictured him as he was at four years old, when she had loved him most of all. Now he was not even the same as when she had left him; he was farther than ever from the four-year-old baby, more grown and thinner. How thin his face was, how short his hair was! What long hands! How he had changed since she left him! But it was he with his head, his lips, his soft neck and broad little shoulders.

"Seriozha!" she repeated, in the child's very ear.

He raised himself again on his elbow, turned his tousled head from side to side, as though looking for something, and opened his eyes. Quietly and inquiringly he looked for several seconds at his mother standing motionless before him, then all at once he smiled a blissful smile, and shutting his eyes again, rolled not backward but toward her, into her arms.

"Seriozha! My darling boy!" she said, breathing hard and putting her arms around his plump little body.

"Mother!" he said, wriggling about in her arms so as to touch her hands with different parts of him.

Smiling sleepily still, with closed eyes, he flung his fat little arms round her shoulders, rolled toward her, with the delicious sleepy warmth and fragrance that is only found in children, and began rubbing his face against her neck and shoulders.

"I knew," he said, opening his eyes. "It's my birthday today. I knew you'd come. I'll get up directly."

And saying that he dropped asleep.

Anna looked at him hungrily; she saw how he had grown and changed in her absence. She knew, and did not know, the bare legs so long now, that were thrust out below the quilt; she knew those short-cropped curls on his neck in which she had so often kissed him. She touched all this and could say nothing; tears choked her.

"What are you crying for, mother?" he said, waking up completely. "Mother, what are you crying for?" he cried in a tearful voice.

"I?... I won't cry... I'm crying for joy. It's so long since I've seen you. I won't, I won't," she said, gulping down her tears and turning away. "Come, it's time for you to dress now," she added, after a pause, and, never letting go his hands, she sat down by his bedside on the chair, where his clothes were put ready for him.

## Anna Karenina

"How do you dress without me? How..." she made an attempt to talk simply and cheerfully, but she could not, and again she turned away.

"I don't have a cold bath papa didn't order it. And you've not seen Vassilii Lukich? He'll come in soon. Why, you're sitting on my clothes!"

And Seriozha went off into a peal of laughter. She looked at him and smiled.

"Mother, darling, sweet one!" he shouted, flinging himself on her again and hugging her. It was as if only now, on seeing her smile, he fully grasped what had happened. "I don't want that on," he said, taking off her hat. And, as it were, seeing her afresh without her hat, he fell to kissing her again.

"But what did you think about me? You didn't think I was dead?"

"I never believed it."

"You didn't believe it, my sweet?"

"I knew, I knew!" he repeated his favorite phrase, and snatching the hand that was stroking his hair, he pressed the open palm to his mouth and kissed it.

### XXX.

Meanwhile Vassilii Lukich had not at first understood who this lady was, and had learned from their conversation that it was no other person than the mother who had left her husband, and whom he had not seen, as he had entered the house after her departure. He was in doubt whether to go in or not, or whether to communicate with Alexei Alexandrovich. Reflecting finally that his duty was to get Seriozha up at the hour fixed, and that it was therefore not his business to consider who was there, the mother or anyone else, but simply to do his duty, he finished dressing, went to the door and opened it.

But the embraces of the mother and child, the sound of their voices, and what they were saying, made him change his mind. He shook his head, and with a sigh he closed the door. "I'll wait another ten minutes," he said to himself, clearing his throat and wiping away tears.

Among the servants of the household there was intense excitement all this time. All had heard that their mistress had come, and that Kapitonich had let her in, and that she was even now in the nursery, and everyone knew that their master always went in person to the nursery at nine o'clock, and everyone fully comprehended that it was impossible for the husband and wife to meet, and that they must prevent it. Kornei, the valet, going down to the hall porter's room, asked who had let her in, and how it was he had done so, and ascertaining that Kapitonich had admitted her and shown her up, he gave the old man a talking-to. The hall porter was doggedly silent, but when Kornei told him he ought to be sent packing Kapitonich darted up to him, and, shaking his hands in Kornei's face, began:

"Oh yes, to be sure you'd not have let her in! After ten years' service, and never a word but of kindness, and there you'd up and say, 'Be off, go along, get away with you!' Oh yes, you're a shrewd one at politics, I dare say! You don't need to be taught how to swindle the master, and to filch raccoon fur coats!"

"Soldier!" said Kornei contemptuously, and he turned to the nurse who was coming in. "Here, what do you think, Maria Efimovna: he let her in without a word to anyone," Kornei said addressing her. "Alexei Alexandrovich will be down immediately and will go into the nursery!"

## Anna Karenina

"A pretty business, a pretty business!" said the nurse, "You, Kornei Vassilyevich you'd best detain the master some way or other, while I'll run and get her away somehow. A pretty business!"

When the nurse went into the nursery, Seriozha was telling his mother how he and Nadinka had had a fall in tobogganing downhill, and had turned over three times. She was listening to the sound of his voice, watching his face and the play of expression on it, touching his hand, but she did not follow what he was saying. She must go, she must leave him this was the only thing she was thinking and feeling. She heard the steps of Vassilii Lukich coming up to the door and coughing; she heard, too, the steps of the nurse as she came near; but she sat like one turned to stone, incapable of speaking or rising.

"Mistress, darling!" began the nurse, going up to Anna and kissing her hands and shoulders. "God has brought joy indeed to our boy on his birthday. You haven't changed one bit."

"Oh, nurse dear, I didn't know you were in the house," said Anna, rousing herself for a moment.

"I'm not living here I'm living with my daughter. I came for the birthday, Anna Arkadyevna, darling!"

The nurse suddenly burst into tears, and fell to kissing her hand again.

Seriozha, with radiant eyes and smiles, holding his mother by one hand and his nurse by the other, pattered on the rug with his chubby little bare feet. The tenderness shown by his beloved nurse to his mother threw him into an ecstasy.

"Mother! She often comes to see me, and when she comes..." he was beginning, but he stopped, noticing that the nurse was saying something in a whisper to his mother, and that in his mother's face there was a look of dread and something like shame, which was so strangely unbecoming to her.

She went up to him.

"My sweet!" she said.

She could not say good-bye, but the expression on her face said it, and he understood. "Darling, darling Kootik!" she used the name by which she had called him when he was little "you won't forget me? You..." but she could not say more.

How often afterward she thought of words she might have said. But now she did not know what to say, and could say nothing. But Seriozha knew all she wanted to say to him. He understood that she was unhappy and loved him. He understood even what the nurse had whispered. He had caught the words "Always at nine o'clock," and he knew that this was said of his father, and that his father and mother could not meet. That he understood, but one thing he could not understand why there should be a look of dread and shame in her face?... She was not at fault, but she was afraid of his father and ashamed of something. He would have liked to put a question that would have set at rest this doubt, but he did not dare; he saw that she was miserable, and he pitied her. Silently he pressed close to her and whispered:

"Don't go yet. He won't come just yet."

The mother held him away from her to see whether he was thinking, what he said to her, and in his frightened face she read not only that he was speaking of his father, but, as it were, asking her what he ought to think about his father.

## Anna Karenina

"Seriozha, my darling," she said, "love him; he's better and kinder than I am, and I have done him wrong. When you grow up you will judge."

"There's no one better than you!..." he cried in despair through his tears, and, clutching her by the shoulders, he began squeezing her with all his force to him, his arms trembling with the strain.

"My sweet, my little one!" said Anna, and she cried as weakly and childishly as he.

At that moment the door opened; Vassilii Lukich came in. At the other door there was the sound of steps, and the nurse in a scared whisper said, "He's coming," and gave Anna her hat.

Seriozha sank on the bed and sobbed, hiding his face in his hands. Anna removed his hands, once more kissed his wet face, and with rapid steps went to the door. Alexei Alexandrovich walked in, meeting her. Seeing her, he stopped short and bowed his head.

Although she had just said he was better and kinder than she, in the rapid glance she flung at him, taking in his whole figure in all its details, feelings of repulsion and hatred for him, and jealousy for her son, took possession of her. With a swift gesture she put down her veil, and, quickening her pace, almost ran out of the room.

She had not time to undo, and so carried back with her, the parcel of toys she had chosen the day before in a toyshop with such love and sorrow.

### XXXI.

Intensely as Anna had longed to see her son, and long as she had been thinking of it and preparing herself for it, she had not in the least expected that seeing him would affect her so deeply. On getting back to her lonely rooms in the hotel she could not for a long while understand why she was there. "Yes, it's all over, and I am again alone," she said to herself, and, without taking off her hat she sat down in a low chair by the hearth. Fixing her eyes on a bronze clock standing on a table between the windows, she tried to think.

The French maid brought from abroad came in to suggest she should dress. She gazed at her wonderingly and said, "Later on." A footman offered her coffee. "Later on," she said.

The Italian nurse, after taking the baby out in her best, came in with her, and brought her to Anna. The plump, well-fed little baby, on seeing her mother, as she always did, held out her chubby little hands, and with a smile on her toothless mouth, began, like a fish with a float, bobbing her fingers up and down the starched folds of her embroidered pinafore, making them rustle. It was impossible not to smile, not to kiss the baby, impossible not to hold out a finger for her to clutch, crowing and prancing all over; impossible not to offer her a lip which she sucked into her little mouth by way of a kiss. And all this Anna did, and took her in her arms and made her dance, and kissed her fresh little cheek and bare little elbows; but at the sight of this child it was plainer than ever to her that the feeling she had for her could not be called love in comparison with what she felt for Seriozha. Everything in this baby was charming, but for some reason all this did not go deep to her heart. On her first child, though the child of an unloved father, had been concentrated all the love that had never found satisfaction. Her baby girl had been born in the most painful circumstances and had not had a hundredth part of the care and thought which had been concentrated on her first child. Besides, in the little girl everything was still in the future, while Seriozha was by now almost a personality, and a personality dearly loved. In him there was a conflict of thoughts, and of feelings; he understood her, he loved her, he judged her, she thought, recalling his words and his eyes. And she was forever not physically only but spiritually divided from him, and it was impossible to set this right.

She gave the baby back to the nurse, let her go, and opened the locket in which there was Seriozha's portrait when

he was almost of the same age as the girl. She got up, and, taking off her hat, took up from a little table an album in which there were photographs of her son at different ages. She wanted to compare them, and began taking them out of the album. She took them all out except one, the latest and best photograph. In it he was in a white smock, sitting astride a chair, with frowning eyes and smiling lips. It was his best, most singular expression. With her little supple hands, her white, delicate fingers, that moved with a peculiar intensity today, she pulled at a corner of the photograph, but the photograph had caught somewhere and she could not get it out. There was no paper knife on the table, and, pulling out the photograph that was next to her son's (it was a photograph of Vronsky taken at Rome in a round hat and with long hair), she used it to push out her son's photograph. "Oh, here he is!" she said, glancing at the portrait of Vronsky, and she suddenly recalled that he was the cause of her present misery. She had not once thought of him all the morning. But now, coming all at once upon that manly, noble face, so familiar and so dear to her, she felt a sudden rush of love for him.

"But where is he? How is it he leaves me alone in my misery?" she thought all at once with a feeling of reproach, forgetting she had herself kept from him everything concerning her son. She sent to ask him to come to her immediately; with a throbbing heart she awaited him, rehearsing to herself the words in which she would tell him all, and the expressions of love with which he would console her. The messenger returned with the answer that he had a visitor with him, but that he would come immediately, and that he asked whether she would let him bring with him Prince Iashvin, who had just arrived in Peterburg. "He's not coming alone, and since dinner yesterday he has not seen me," she thought; "he's not coming so that I could tell him everything, but coming with Iashvin." And all at once a strange idea came to her: What if he had ceased to love her?

And going over the events of the last few days, it seemed to her that she saw in everything a confirmation of this terrible idea: the fact that he had not dined at home yesterday, and the fact that he had insisted on their taking separate sets of rooms at Peterburg, and that even now he was not coming to her alone, as though he were trying to avoid meeting her face to face.

"But he ought to tell me so. I must know that it is so. If I knew it, then I'd know what I should do," she said to herself, utterly unable to picture to herself the position she would be in if she were convinced of his not caring for her. She thought he had ceased to love her, she felt close upon despair, and consequently she felt exceptionally alert. She rang for her maid and went to her dressing room. As she dressed, she took more care over her appearance than she had done all these days, as though he might, if he had grown cold to her, fall in love with her again because she had dressed and arranged her hair in the way most becoming to her.

She heard the bell ring before she was ready.

When she went into the drawing room it was not he, but Iashvin, who met her eyes. Vronsky was looking through the photographs of her son, which she had forgotten on the table, and he made no haste to look round at her.

"We have met already," she said, putting her little hand into the huge hand of Iashvin, whose bashfulness was so queerly out of keeping with his immense frame and coarse face. "We met last year at the races. Give them to me," she said, with a rapid movement snatching from Vronsky the photographs of her son, and glancing significantly at him with flashing eyes. "Were the races good this year? Instead of them I saw the races in the Corso in Rome. But you don't care for life abroad," she said with a cordial smile. "I know you and all your tastes, though I have seen so little of you."

"I'm awfully sorry for that, for my tastes are mostly bad," said Iashvin, gnawing at his left mustache.

Having talked a little while, and noticing that Vronsky glanced at the clock, Iashvin asked her whether she would be staying much longer in Peterburg, and unbending his huge figure, reached after his cap.

"Not long, I think," she said hesitatingly, glancing at Vronsky.



## Anna Karenina

"So then we shan't meet again?" said Iashvin getting up and turning to Vronsky. "Where do you have your dinner?"

"Come and dine with me," said Anna resolutely, angry it seemed with herself for her embarrassment, but flushing as she always did when she defined her position before a fresh person. "The dinner here is not good, but at least you will see him. There is no one of his old friends in the regiment Alexei cares for as he does for you."

"Delighted," said Iashvin with a smile, from which Vronsky could see that he liked Anna very much.

Iashvin said good-bye, and went away; Vronsky stayed behind.

"Are you going too?" she said to him.

"I'm late already," he answered. "Run along! I'll catch up in a moment," he called to Iashvin.

She took him by the hand, and without taking her eyes off him, gazed at him while she ransacked her mind for the words to say that would keep him.

"Wait a minute, there's something I want to say to you," and taking his broad hand she pressed it on her neck. "Oh, was it right my asking him to dinner?"

"You did quite right," he said with a serene smile that showed his close teeth, and he kissed her hand.

"Alexei, you have not changed to me?" she said, pressing his hand in both of hers. "Alexei, I am miserable here. When are we going away?"

"Soon, soon. You wouldn't believe how disagreeable our way of living here is to me too," he said, and he drew away his hand.

"Well, go, go!" she said, offended, and she walked quickly away from him.

## XXXII.

When Vronsky returned home, Anna was not yet home. Soon after he had left, some lady, so they told him, had come to see her, and she had gone out with her. That she had gone out without leaving word where she was going, that she had not yet come back, and that all the morning she had been going about somewhere without a word to him—all this, together with the strange look of excitement in her face in the morning, and the recollection of the hostile tone with which she had before Iashvin almost snatched her son's photographs out of his hands, made him serious. He decided he absolutely must speak openly with her. And he waited for her in her drawing room. But Anna did not return alone, but brought with her her old unmarried aunt, Princess Oblonskaia. This was the lady who had come in the morning, and with whom Anna had gone out shopping. Anna appeared not to notice Vronsky's worried and inquiring expression, and began a lively account of her morning's shopping. He saw that there was something working within her; in her flashing eyes, when they rested for a moment on him, there was an intense concentration, and in her words and movements there was that nervous rapidity and grace which, during the early period of their intimacy, had so fascinated him, but which now so disturbed and alarmed him.

The dinner was laid for four. All were gathered together and about to go into the little dining room when Tushkevich made his appearance with a message from Princess Betsy. Princess Betsy begged her to excuse her not having come to say good-bye; she had been indisposed, but begged Anna to come to her between half-past six and half-past eight o'clock. Vronsky glanced at Anna at the precise limit of time, so suggestive of steps having

## Anna Karenina

been taken that she should meet no one; but Anna appeared not to notice it.

"Very sorry that I can't come just between half-past six and nine," she said with a faint smile.

"The Princess will be very sorry."

"And so shall I."

"You're going, no doubt, to hear Patti?" said Tushkevich.

"Patti? You give me an idea. I would go if it were possible to get a box."

"I can get one," Tushkevich offered his services.

"I should be very, very grateful to you," said Anna. "But won't you dine with us?"

Vronsky gave a hardly perceptible shrug. He was at a complete loss to understand what Anna was about. What had she brought the old Princess Oblonskaia home for, what had she made Tushkevich stay to dinner for, and, most amazing of all, why was she sending him for a box? Could she possibly think in her position of going to Patti's benefit, where all the circle of her acquaintances would be? He looked at her with serious eyes, but she responded with that defiant, half-mirthful, half-desperate look, the meaning of which he could not comprehend. At dinner Anna was in aggressively high spirits she almost flirted both with Tushkevich and with Iashvin. When they got up from dinner and Tushkevich had gone to get a box at the opera, Iashvin went to smoke, and Vronsky went down with him to his own rooms. After sitting there for some time he ran upstairs. Anna was already dressed in a low-necked gown of light silk and velvet that she had had made in Paris, and with costly white lace on her head, framing her face, and particularly becoming, showing up her dazzling beauty.

"Are you really going to the theater?" he said, trying not to look at her.

"Why do you ask with such alarm?" she said, wounded again at his not looking at her. "Why shouldn't I go?"

She appeared not to understand the meaning of his words.

"Oh, of course there's no reason whatever," he said frowning.

"That's just what I say," she said, willfully refusing to see the irony of his tone, and quietly turning back her long, perfumed glove.

"Anna, for God's sake! What is the matter with you?" he said, watching her exactly as once her husband had done.

"I don't understand what you are asking."

"You know that it's out of the question to go."

"Why so? I'm not going alone. Princess Varvara has gone to dress she is going with me."

He shrugged his shoulders with an air of perplexity and despair.

"But do you mean to say you don't know?..." he began.

## Anna Karenina

"But I don't care to know!" she almost shrieked. "I don't care to. Do I regret what I have done? No, no, no! If it were all to do again from the beginning, it would be the same. For us, for you and for me, there is only one thing that matters, whether we love each other. Other people we need not consider. Why are we living here apart and not seeing each other? Why can't I go? I love you, and I don't care for anything," she said in Russian, glancing at him with a peculiar, obscure for him, gleam in her eyes, "if you have not changed to me.... Why don't you look at me?"

He looked at her. He saw all the beauty of her face and full dress, always so becoming to her. But now her beauty and elegance were just what irritated him.

"My feeling cannot change, you know, but I beg you, I entreat you," he said again in French, with a note of tender supplication in his voice, but with coldness in his eyes.

She did not hear his words, but she saw the coldness of his eyes, and answered with irritation:

"And I beg you to explain why I should not go."

"Because it might cause you..." He hesitated.

"I don't understand. Iashvin n'est compromettant, and Princess Varvara is no worse than others. Oh, here she is!"

### XXXIII.

Vronsky for the first time experienced a feeling of anger against Anna, almost a hatred for her intentional refusal to understand her own position. This feeling was aggravated by his being unable to tell her plainly the cause of his anger. If he had told her directly what he was thinking, he would have said: "In that dress, with a Princess only too well known to everyone, to show yourself at the theater is equivalent not merely to acknowledging your position as a fallen woman, but is flinging down a challenge to society that is to say, cutting yourself off from it forever."

He could not say that to her. "But how can she fail to see it, and what is going on within her?" he said to himself. He felt at the same time that his respect for her was diminished while his sense of her beauty was intensified.

He went back scowling to his rooms, and, sitting down beside Iashvin, who, with his long legs stretched out on a chair, was drinking cognac and Seltzer water, he ordered a glass of the same for himself.

"You were talking of Lankovsky's Powerful. That's a fine horse, and I would advise you to buy him," said Iashvin, glancing at his comrade's gloomy face. "His hindquarters aren't quite first-rate, but the legs and head one couldn't wish for anything better."

"I think I will take him," answered Vronsky.

Their conversation about horses interested him, but he did not for an instant forget Anna, and could not help listening to the sound of steps in the corridor and looking at the clock on the chimney piece.

"Anna Arkadyevna gave orders to announce that she has gone to the theater."

Iashvin, tipping another glass of cognac into the bubbling water, drank it and got up, buttoning his coat.

"Well, let's go," he said, faintly smiling under his mustache, and showing by this smile that he knew the cause of

Vronsky's gloominess, and did not attach any significance to it.

"I'm not going," Vronsky answered gloomily.

"Well, I must I promised to. Good-by then. If you do, come to the stalls; you can take Krassinsky's stall," added Iashvin as he went out.

"No, I'm busy."

"A wife is a care, but it's worse when she's not a wife," thought Iashvin, as he walked out of the hotel.

Vronsky, left alone, got up from his chair and began pacing up and down the room.

"And what's today? The fourth series.... Iegor and his wife are there, and my mother, most likely. Of course all Petersburg's there. Now she's gone in, taken off her cloak and come into the glare. Tushkevich, Iashvin, Princess Varvara," he pictured them to himself.... "What about me? Either that I'm frightened, or have given up to Tushkevich the right to protect her? From every point of view stupid, stupid!... And why is she putting me in such a position?" he said with a gesture of despair.

With that gesture he knocked against the table, on which there was standing the Seltzer water and the decanter of cognac, and almost upset it. He tried to catch it, let it slip, and angrily kicked the table over and rang.

"If you care to be in my service," he said to the valet who came in, "you had better remember your duties. This shouldn't be here. You ought to have cleared away."

The valet, conscious of his own innocence, would have defended himself, but, glancing at his master, he saw from his face that the only thing to do was to be silent, and hurriedly threading his way in and out, dropped down on the carpet and began gathering up the whole and broken glasses and bottles.

"That's not your duty; send the waiter to clear away, and get my dress coat out."

Vronsky arrived at the theater at half-past eight The performance was in full swing. The little old boxkeeper, recognizing Vronsky as he helped him off with his fur coat, called him "Your Excellency," and suggested he should not take a check but should simply call Fiodor. In the brightly lighted corridor there was no one but the box opener and two footmen with fur cloaks on their arms listening at the doors. Through the closed doors came the sounds of the discreet staccato accompaniment of the orchestra, and a single female voice rendering distinctly a musical phrase. The door opened to let the box opener slip through, and the phrase drawing to the end reached Vronsky's hearing clearly. But the doors were closed again at once, and Vronsky did not hear the end of the phrase and the cadence of the accompaniment, though he knew from the thunder of applause that it was over. When he entered the hall, brilliantly lighted with chandeliers and gas jets, the noise was still going on. On the stage the singer, bowing and smiling, flashing with bare shoulders and with diamonds, was, with the help of the tenor who had given her his arm, gathering up the bouquets that were clumsily flying over the footlights. Then she went up to a gentleman with glossy pomaded hair parted down the middle, who was stretching across the footlights holding out something to her, and all the public in the stalls as well as in the boxes was in excitement, craning forward, shouting and clapping. The conductor in his high chair assisted in passing the offering, and straightened his white tie. Vronsky walked into the middle of the stalls, and, standing still, began looking about him. That day less than ever was his attention turned upon the familiar, habitual surroundings, the stage, the noise, all the familiar, uninteresting, particolored herd of spectators in the packed theater.

There were, as always, the same ladies of some sort with officers of some sort in the back of the boxes; the same gaily dressed women God knows who and uniforms and black coats; the same dirty crowd in the upper

gallery, and among the crowd, in the boxes and in the front rows, were some forty of the real people, men and women. And to those oases Vronsky at once directed his attention, and with them he entered at once into relation.

The act was over when he went in, and so he did not go straight to his brother's box, but going up to the first row of stalls stopped at the footlights with Serpukhovskoy, who, standing with one knee, raised and his heel on the footlights, caught sight of him in the distance and beckoned to him, smiling.

Vronsky had not yet seen Anna. He purposely avoided looking in her direction. But he knew by the direction of people's eyes where she was. He looked round discreetly, but he was not seeking her; expecting the worst, his eyes sought for Alexei Alexandrovich. To his relief Alexei Alexandrovich was not in the theater that evening.

"How little of the military man there is left in you!" Serpukhovskoy was saying to him. "A diplomat, an artist, something of that sort, one would say."

"Yes, it was like going back home when I put on a dress coat," answered Vronsky, smiling and slowly taking out his opera glasses.

"Well, I'll own I envy you there. When I come back from abroad and put on this," he touched his shoulder knot, "I regret my freedom."

Serpukhovskoy had long given up all hope of Vronsky's career, but he liked him as before, and was now particularly cordial to him.

"What a pity you were not in time for the first act!"

Vronsky, listening with half an ear, moved his opera glasses from the stalls and scanned the boxes. Near a lady in a turban and a bald old man, who seemed to blink angrily in the moving opera glasses, Vronsky suddenly caught sight of Anna's head, proud, strikingly beautiful, and smiling in its frame of lace. She was in the fifth box, twenty paces from him. She was sitting in front, and, slightly turning, was saying something to Iashvin. The setting of her head on her handsome, broad shoulders, and the restrained excitement and brilliance of her eyes and her whole face reminded him of her just as he had seen her at the ball in Moscow. But he felt utterly different toward her beauty now. In his feeling for her now there was no element of mystery, and so her beauty, though it attracted him even more intensely than before, gave him now a sense of injury. She was not looking in his direction, but Vronsky felt that she had seen him already.

When Vronsky turned the opera glasses again in that direction, he noticed that Princess Varvara was particularly red, and kept laughing unnaturally and looking round at the next box. Anna, folding her fan and tapping it on the red velvet, was gazing away and did not see, and obviously did not wish to see, what was taking place in the next box. Iashvin's face wore the expression which was common when he was losing at cards. Scowling, he sucked the left tip of his mustache further and further into his mouth, and cast sidelong glances at the next box.

In that box on the left were the Kartassovs. Vronsky knew them, and knew that Anna was acquainted with them. Madame Kartassova, a thin little woman, was standing up in her box, and, her back turned upon Anna, she was putting on a mantle that her husband was holding for her. Her face was pale and angry, and she was talking excitedly. Kartassov, a fat, bald man, was continually looking round at Anna, while he attempted to soothe his wife. When the wife had gone out, the husband lingered a long while, and tried to catch Anna's eye, obviously anxious to bow to her. But Anna, with unmistakable intention, avoided noticing him, and talked to Iashvin, whose cropped head was bent down to her. Kartassov went out without making his salutation, and the box was left empty.

## Anna Karenina

Vronsky could not understand exactly what had passed between the Kartassovs and Anna, but he saw that something humiliating for Anna had happened. He knew this both from what he had seen, and most of all from the face of Anna, who, he could see, was taxing every nerve to carry through the part she had taken up. And in maintaining this attitude of external composure she was completely successful. Anyone who did not know her and her circle, who had not heard all the utterances of the women expressive of commiseration, indignation and amazement, that she should show herself in society, and show herself so conspicuously with her lace and her beauty, would have admired the serenity and loveliness of this woman without a suspicion that she was undergoing the sensations of a man in the stocks.

Knowing that something had happened, but not knowing precisely what, Vronsky felt a thrill of agonizing anxiety, and hoping to find out something, he went toward his brother's box. Purposely choosing the way round farthest from Anna's box, he jostled as he came out against the colonel of his old regiment, talking to two acquaintances. Vronsky heard the name of Karenin, and noticed how the colonel hastened to address Vronsky loudly by name, with a meaning glance at his companions.

"Ah, Vronsky! When are you coming to the regiment? We can't let you off without a supper. You're our one of the most thorough," said the colonel of his regiment.

"I can't stop, awfully sorry, another time," said Vronsky, and he ran upstairs toward his brother's box.

The old countess, Vronsky's mother, with her steel-gray curls, was in his brother's box. Varia with the young Princess Sorokina met him in the corridor.

Leaving the Princess Sorokina with her mother, Varia held out her hand to her brother-in-law, and began immediately to speak of what interested him. She was more excited than he had ever seen her.

"I think it's mean and hateful, and Madame Kartassova had no right to do it. Madame Karenina..." she began.

"But what is it? I don't know."

"What? You haven't heard?"

"You know I should be the last person to hear of it."

"There isn't a more spiteful creature than that Madame Kartassova!"

"But what did she do?"

"My husband told me.... She has insulted Madame Karenina. Her husband began talking to her across the box, and Madame Kartassova made a scene. She said something aloud, they say, something insulting, and went away."

"Count, your maman is asking for you," said the young Princess Sorokina, peeping out of the door of the box.

"I've been expecting you all the while," said his mother, smiling sarcastically. "You were nowhere to be seen."

Her son saw that she could not suppress a smile of delight.

"Good evening, maman. I have come to you," he said coldly.

"Why aren't you going to faire la cour a Madame Karenina?" she went on, when Princess Sorokina had moved away. "Elle fait sensation. On oublie la Patti pour elle."

## Anna Karenina

"Maman, I have asked you not to say anything to me of that," he answered, scowling.

"I'm only saying what everyone's saying."

Vronsky made no reply, and saying a few words to Princess Sorokina, he went away. At the door he met his brother.

"Ah, Alexei!" said his brother. "How disgusting! Idiot of a woman, nothing else.... I wanted to go straight to her. Let's go together."

Vronsky did not hear him. With rapid steps he went downstairs; he felt that he must do something, but he did not know what. Anger with her for having put herself and him in such a false position, together with pity for her suffering, filled his heart. He went down, and made straight for Anna's box. At her box stood Stremov, talking to her.

"There are no more tenors. Le moule en est brisé!"

Vronsky bowed to her and stopped to greet Stremov.

"You came in late, I think, and have missed the best song," Anna said to Vronsky, glancing ironically, he thought, at him.

"I am a poor judge of music," he said, looking sternly at her.

"Like Prince Iashvin," she said smiling, "who considers that Patti sings too loud. Thank you," she said, her little hand in its long glove taking the playbill Vronsky picked up, and suddenly at that instant her lovely face quivered. She got up and went into the interior of the box.

Noticing in the next act that her box was empty, Vronsky, rousing many an indignant "Hush!" in the silent audience, went out in the middle of a solo and drove home.

Anna was already at home. When Vronsky went up to her, she was in the same dress she had worn at the theater. She was sitting in the first armchair against the wall, looking straight before her. She looked at him, and at once resumed her former position.

"Anna," he said.

"You, you are to blame for everything!" she cried, with tears of despair and hatred in her voice, getting up.

"I begged, I implored you not to go; I knew it would be unpleasant..."

"Unpleasant?" she cried. "Hideous! As long as I live I shall never forget it. She said it was a disgrace to sit beside me."

"A silly woman's chatter," he said, "but why risk it, why provoke?..."

"I hate your calm. You ought not to have brought me to this. If you had loved me..."

"Anna! How does the question of my love come in?..."

"Oh, if you loved me, as I love, if you were tortured as I am..." she said, looking at him with an expression of terror.

He was sorry for her, and angry notwithstanding. He assured her of his love because he saw that this was the only means of soothing her, and he did not reproach her in words, but in his heart he reproached her.

And the asseverations of his love, which seemed to him so trivial that he was ashamed to utter them, she drank in eagerly, and gradually became calmer. The next day, completely reconciled, they left for the country.

## PART SIX

### I.

Darya Alexandrovna spent the summer with her children at Pokrovskoe, at her sister Kitty Levin's. The house on her own estate was quite in ruins, and Levin and his wife had persuaded her to spend the summer with them. Stepan Arkadyevich greatly approved of the arrangement. He said he was very sorry his official duties prevented him from spending the summer in the country with his family, which would have been the greatest happiness for him; and remaining in Moscow, he came down to the country from time to time for a day or two. Besides the Oblonskys, with all their children and their governess, the old Princess, too, came to stay that summer with the Levins, as she considered it her duty to watch over her inexperienced daughter in her interesting condition. Moreover, Varenka, Kitty's friend abroad, kept her promise to come to Kitty when she was married, and stayed with her friend. All of these were friends or relations of Levin's wife. And though he liked them all, he rather regretted his own Levin world and ways, which was smothered by this influx of the "Shcherbatsky element," as he called it to himself. Of his own relations there stayed with him only Sergei Ivanovich, but he too was a man of the Koznishev and not the Levin stamp, so that the Levin spirit was utterly obliterated.

In the Levins' house, so long deserted, there were now so many people that almost all the rooms were occupied, and almost every day it happened that the old Princess, sitting down to table, counted them all over, and put the thirteenth grandson or granddaughter at a separate table. And Kitty, with her careful housekeeping, had no little trouble to get all the chickens, turkeys and geese, of which so many were needed to satisfy the summer appetites of the visitors and children.

The whole family were sitting at dinner. Dolly's children, with their governess and Varenka, were making plans for going to look for mushrooms. Sergei Ivanovich, who was looked up to by all the party for his intellect and learning, with a respect that almost amounted to awe, surprised everyone by joining in the conversation about mushrooms.

"Take me with you. I am very fond of picking mushrooms," he said, looking at Varenka; "I think it's a very fine occupation."

"Oh, we shall be delighted," answered Varenka coloring. Kitty exchanged meaning glances with Dolly. The proposal of the learned and intellectual Sergei Ivanovich to go looking for mushrooms with Varenka confirmed certain theories of Kitty's with which her mind had been very busy of late. She made haste to address some remark to her mother, so that her look should not be noticed. After dinner Sergei Ivanovich sat with his cup of coffee at the drawing-room window, and while he took part in a conversation he had begun with his brother, he watched the door through which the children would start on the mushroom-picking expedition. Levin was sitting on the window sill near his brother.

Kitty stood beside her husband, evidently awaiting the end of a conversation that had no interest for her, in order to tell him something.



## Anna Karenina

"You have changed in many respects since your marriage, and for the better," said Sergei Ivanovich, smiling to Kitty, and obviously little interested in the conversation, "but you have remained true to your passion for defending the most paradoxical theories."

"Katia, it's not good for you to stand," her husband said to her, drawing up a chair for her and looking significantly at her.

"Oh, and there's no time either," added Sergei Ivanovich, seeing the children running out.

At the head of them all Tania galloped sideways, in her tightly drawn stockings, and waving a basket and Sergei Ivanovich's hat, she ran straight up to him.

Boldly running up to Sergei Ivanovich with smiling eyes, so like her father's fine eyes, she handed him his hat and made as though she would put it on for him, softening her freedom by a shy and friendly smile.

"Varenka's waiting," she said, carefully putting his hat on, seeing from Sergei Ivanovich's smile that she might do so.

Varenka was standing at the door, dressed in a yellow print gown, with a white kerchief on her head.

"I'm coming, I'm coming, Varvara Andreevna," said Sergei Ivanovich, finishing his cup of coffee, and putting into their separate pockets his handkerchief and cigar case.

"And how sweet my Varenka is! Eh?" said Kitty to her husband, as soon as Sergei Ivanovich rose. She spoke so that Sergei Ivanovich could hear, and it was clear that she meant him to do so. "And how good-looking she is such a refined beauty! Varenka!" Kitty shouted. "Shall you be in the mill forest? We'll come out to you."

"You certainly forget your condition, Kitty," said the old Princess, hurriedly coming out at the door. "You mustn't shout like that."

Varenka, hearing Kitty's voice and her mother's reprimand, went with light, rapid steps up to Kitty. The rapidity of her movement, her flushed and eager face, everything betrayed that something out of the common was going on in her. Kitty knew what this thing was and had been watching her intently. She called Varenka at that moment merely in order mentally to give her a blessing for the important event which, as Kitty fancied, was bound to come to pass that day after dinner in the forest.

"Varenka, I should be very happy if a certain something were to happen," she whispered as she kissed her.

"And are you coming with us?" Varenka said to Levin in confusion, pretending not to have heard what had been said.

"I am coming, but only as far as the threshing floor, and there I shall stop."

"Why, what do you want there?" said Kitty.

"I must go to have a look at the new wagons, and to make my calculations," said Levin; "and where will you be?"

"On the terrace."

II.

On the terrace were assembled all the ladies of the party. They always liked sitting there after dinner, and that day they had work to do there too. Besides the sewing of baby's chemises and knitting of swaddles, with which all of them were busy, that afternoon jam was being made on the terrace by a method new to Agathya Mikhailovna, without the addition of water. Kitty had introduced this new method, which had been in use in her home. Agathya Mikhailovna, to whom the task of jam making had always been intrusted, considering that what had been done in the Levin household could not be amiss, had nevertheless put water with the strawberries, maintaining that the jam could not be made without it. She had been caught in the act, and was now making raspberry jam before everyone, and it was to be proved to her conclusively that jam could be very well made without water.

Agathya Mikhailovna, her face heated and angry, her hair untidy, and her thin arms bare to the elbows, was swaying the preserving pan in a circular motion over the charcoal stove, looking darkly at the raspberries and devoutly hoping they would stick and not cook properly. The Princess, conscious that Agathya Mikhailovna's wrath must be chiefly directed against her, as the person responsible for the raspberry jam making, tried to appear to be absorbed in other things and not interested in the raspberries, talking of other matters, but cast stealthy glances in the direction of the stove.

"I always buy my maids' dresses myself, at the bargain sale," the Princess said, continuing the previous conversation. "Isn't it time to skim it, my dear?" she added, addressing Agathya Mikhailovna. "There's not the slightest need for you to do it, and it's hot for you," she said, stopping Kitty.

"I'll do it," said Dolly, and, getting up, she carefully passed the spoon over the frothing sugar, and from time to time shook off the clinging jam from the spoon by knocking it on a plate that was covered with yellow-red scum and blood-colored syrup. "How they'll lick this at teatime!" she thought of her children, remembering how she herself as a child had wondered how it was the grown-up people did not eat what was best of all the scum of the jam.

"Stiva says it's much better to give money," Dolly took up meanwhile the weighty subject under discussion of what presents should be made to servants. "But..."

"Money's out of the question!" the Princess and Kitty exclaimed with one voice. "They appreciate a present..."

"Well, last year, for instance, I bought our Matriona Semionovna, not a poplin, but something of that sort," said the Princess.

"I remember she was wearing it on your name day."

"A charming pattern so simple and refined I should have liked it myself, if she hadn't had it. Something like Varenka's. So pretty and inexpensive."

"Well, now I think it's done," said Dolly, dropping the syrup from the spoon.

"When it sets as it drops, it's ready. Cook it a little longer, Agathya Mikhailovna."

"The flies!" said Agathya Mikhailovna angrily. "It'll be just the same," she added.

"Ah! How sweet it is! Don't frighten it!" Kitty said suddenly, looking at a sparrow that had settled on the step and was pecking at the center of a raspberry.

## Anna Karenina

"Yes, but you keep a little further from the stove," said her mother.

"A propos de Varenka," said Kitty, speaking in French, as they had been doing all the while, so that Agathya Mikhailovna should not understand them, "you know, maman, I somehow expect things to be settled today. You know what I mean. How splendid it would be!"

"But what a famous matchmaker she is!" said Dolly. "How carefully and cleverly she throws them together!..."

"No tell me, mamma, what do you think?"

"Why, what is one to think? He" ('he' meant Sergei Ivanovich) "might at any time have been one of the best matches in Russia; now, of course, he's not quite a young man, still I know ever so many girls would be glad to marry him, even now.... She's a very nice girl, but he might..."

"Oh, no, mamma, do understand why, for him and for her too, nothing better could be imagined. In the first place, she's charming!" said Kitty, crooking one of her fingers.

"He thinks her very attractive, that's certain," assented Dolly.

"Then he occupies such a position in society that he has no need to look for either fortune or position in his wife. All he needs is a good, sweet wife a restful one."

"Well, with her he would certainly be restful," Dolly assented.

"Thirdly, that she should love him. And so it is... that is, it would be so splendid!... I look forward to seeing them coming out of the forest and everything settled. I shall see at once by their eyes. I should be so delighted! What do you think, Dolly?"

"But don't excite yourself. It's not at all the thing for you to be excited," said her mother.

"Oh, I'm not excited, mamma. I fancy he will propose to her today."

"Ah, that's so strange how and when a man proposes!... There is a sort of barrier, and all at once it's broken down," said Dolly, smiling pensively and recalling her past with Stepan Arkadyevich.

"Mamma, how did papa propose to you?" Kitty asked suddenly.

"There was nothing out of the way it was very simple," answered the Princess, but her face beamed all over at the recollection.

"Oh, but how was it? You loved him, at any rate, before you were allowed to speak?"

Kitty felt a peculiar pleasure in being able now to talk to her mother on equal terms about those questions of such paramount interest in a woman's life.

"Of course I did; he had come to stay with us in the country."

"But how was it settled between you, mamma?"

"You imagine, I dare say, that you invented something quite new? It's always just the same: it was settled by the eyes, by smiles..."

## Anna Karenina

"How well you said that, mamma! It's just by the eyes, by smiles that it's done," Dolly assented.

"But what words did he say?"

"What did Kostia say to you?"

"He wrote it in chalk. It was wonderful.... How long ago it seems!" she said.

And the three women all fell to musing on the same thing. Kitty was the first to break the silence. She remembered all that last winter before her marriage, and her passion for Vronsky.

"There's one thing... that old love affair of Varenka's," she said, a natural chain of ideas bringing her to this point. "I should have liked to say something to Sergei Ivanovich, to prepare him. They're all all men, I mean," she added, "awfully jealous over our past."

"Not all," said Dolly. "You judge by your own husband. It makes him miserable even now to remember Vronsky. Eh? that's true, isn't it?"

"Yes", Kitty answered, a pensive smile in her eyes.

"But I really don't know," the mother put in in defense of her motherly care of her daughter, "what there was in your past that could worry him? That Vronsky paid you attentions that happens to every girl."

"Oh, yes, but we didn't mean that," Kitty said, flushing a little

"No, let me speak," her mother went on, "why, you yourself would not let me have a talk with Vronsky. Don't you remember?"

"Oh, mamma!" said Kitty, with an expression of suffering.

"There's no keeping you young people in check nowadays.... Your friendship could not have gone beyond what was suitable. I should myself have called upon him to explain himself. But, my darling, it's not right for you to be agitated. Please remember that, and calm yourself."

"I'm perfectly calm, maman."

"How happy it was for Kitty that Anna came then," said Dolly, "and how unhappy for her. It turned out quite the opposite," she said, struck by her own ideas. "Then Anna was so happy, and Kitty thought herself unhappy. Now it is just the opposite. I often think of her."

"A fine person to think about! Horrid, repulsive woman no heart," said her mother, who could not forget that Kitty had married not Vronsky, but Levin.

"What do you want to talk of it for?" Kitty said with annoyance. "I never think about it, and I don't want to think of it.... And I don't want to think of it," she said, catching the sound of her husband's familiar step on the steps of the terrace.

"What's that you don't want to think about?" inquired Levin, coming onto the terrace.

But no one answered him, and he did not repeat the question.

## Anna Karenina

"I'm sorry I've broken in on your feminine kingdom," he said, looking round on everyone discontentedly, and perceiving that they had been talking of something which they would not talk about before him.

For a second he felt that he was sharing the feeling of Agathya Mikhailovna, vexation at their making jam without water, and, on the whole, at the outside, Shcherbatsky authority. He smiled, however, and went up to Kitty.

"Well, how are you?" he asked her, looking at her with the expression with which everyone looked at her now.

"Oh, very well," said Kitty, smiling, "and how have things gone with you?"

"The wagon held three times as much as the telega did. Well, are we going for the children? I've ordered the horses to be put in."

"What! You want to take Kitty in the wide droshky?" her mother said reproachfully.

"Yes at walking pace, Princess."

Levin never called the princess "maman" as men often do call their mothers-in-law, and the Princess disliked his not doing so. But though he liked and respected the Princess, Levin could not call her so without a sense of profaning his feeling for his dead mother.

"Come with us, maman," said Kitty.

"I don't like to see such imprudence."

"Well, I'll walk then, I'm so well." Kitty got up and went to her husband and took his hand.

"You may be well, but everything in moderation," said the Princess.

"Well, Agathya Mikhailovna, is the jam done?" said Levin, smiling to Agathya Mikhailovna, and trying to cheer her up. "Is it all right in the new way?"

"I suppose it's all right. According to our notions it's boiled too long."

"It'll be all the better, Agathya Mikhailovna, it won't turn sour, even though the ice in our icehouse has begun to melt already, so that we've no cool place to store it," said Kitty, at once divining her husband's motive, and addressing the old housekeeper with the same feeling; "but your pickles are so good, that mamma says she never tasted any like them," she added, smiling, and putting her kerchief straight.

Agathya Mikhailovna looked sulkily at Kitty.

"You needn't try to console me, mistress. I need only to look at you with him, and I feel happy," she said, and something in the rough familiarity of that with him touched Kitty.

"Come along with us to look for mushrooms, you will show us the best places."

Agathya Mikhailovna smiled and shook her head, as though to say: "I would even like to be angry with you, but I can't."

"Do it, please, according to my recipe," said the Princess; "put some paper over the jam, and moisten it with a little rum, and, even without ice, it will never grow moldy."

III.

Kitty was particularly glad of a chance of being alone with her husband, for she had noticed the shade of mortification that had passed over his face always so quick to reflect every feeling at the moment when he had come onto the terrace and asked what they were talking of, and had got no answer.

When they had set off on foot ahead of the others, and had gotten out of sight of the house onto the beaten, dusty road, sprinkled with ears of rye and with separate grains, she clung faster to his arm and pressed it closer to her. He had quite forgotten the momentary unpleasant impression, and alone with her he felt, now that the thought of her approaching motherhood was never for a moment absent from his mind, a new and delicious bliss, quite pure from all alloy of sense, in being near to the woman he loved. There was no need of speech, yet he longed to hear the sound of her voice, which, like her eyes, had changed since she had become pregnant. In her voice, as in her eyes, there was that softness and gravity which is found in people continually concentrated on some cherished pursuit.

"So you're not tired? Lean more on me," said he.

"No, I'm so glad of a chance of being alone with you, and I must own, though I'm happy with them, I sigh for our winter evenings alone."

"That was good, but this is even better. Both are better," he said, squeezing her hand.

"Do you know what we were talking about when you came in?"

"About jam?"

"Oh, yes, about jam too; but, afterward, about how men propose."

"Ah!" said Levin, listening more to the sound of her voice than to her words, and all the while paying attention to the road, which passed now through the forest, and avoiding places where she might make a false step.

"And about Sergei Ivanovich and Varenka. You've noticed?... I'm very anxious for it," she went on. "What do you think about it?" And she peeped into his face.

"I don't know what to think," Levin answered, smiling. "Sergei seems very strange to me in that way. I told you, you know..."

"Yes, that he was in love with that girl who died..."

"That was when I was a child; I know about it from hearsay and tradition. I remember him then. He was wonderfully sweet. But I've watched him since with women; he is friendly, some of them he likes, but one feels that to him they're simply people, not women."

"Yes, but now with Varenka... I fancy there's something..."

"Perhaps there is.... But one has to know him.... He's a peculiar, wonderful person. He lives a spiritual life only. He's too pure, too exalted a nature."

"Why? Would this lower him, then?"

## Anna Karenina

"No, but he's so used to a spiritual life that he can't reconcile himself with actual fact, and Varenka is after all fact."

Levin had grown used by now to uttering his thought boldly, without taking the trouble of clothing it in exact language. He knew that his wife, in such moments of loving tenderness as now, would understand what he meant to say from a hint, and she did understand him.

"Yes, but there's not so much of that actual fact about her as about me. I can see that he would never have cared for me. She is altogether spiritual."

"Oh, no, he is so fond of you, and I am always so glad when my people like you...."

"Yes, he's very good to me; but..."

"It's not as it was with poor Nikolenka.... You really cared for each other," Levin finished. "Why not speak of him?" he added. "I sometimes blame myself for not doing so; it ends in one's forgetting. Ah, how terrible and dear he was!... Yes, what were we talking about?" Levin said, after a pause.

"You think he can't fall in love," said Kitty, translating into her own language.

"It's not so much that he can't fall in love," Levin said, smiling, "but he has not the weakness necessary.... I've always envied him, and even now, when I'm so happy, I still envy him."

"You envy him for not being able to fall in love?"

"I envy him for being better than me," said Levin. "He does not live for himself. His whole life is subordinated to his duty. And that's why he can be calm and contented."

"And you?" Kitty asked, with an ironical and loving smile.

She could never have explained the chain of thought that made her smile; but the last link in it was that her husband, in exalting his brother and abasing himself, was not quite sincere. Kitty knew that this insincerity came from his love for his brother, from his sense of shame at being too happy, and, above all, from his unflagging craving to be better she loved this trait in him, and so she smiled.

"And you? What are you dissatisfied with?" she asked, with the same smile.

Her disbelief in his self-dissatisfaction delighted him, and unconsciously he tried to draw her into giving utterance to the grounds of her disbelief.

"I am happy, but dissatisfied with myself..." he said.

"Why, how can you be dissatisfied with yourself if you are happy?"

"Well, how shall I say?... In my heart I really care for nothing whatever but that you should not stumble see? Oh, but really you mustn't skip about like that!" he cried, breaking off to scold her for too agile a movement in stepping over a branch that lay in the path. "But when I think about myself, and compare myself with others, especially with my brother, I feel I'm a poor creature."

"But in what way?" Kitty pursued with the same smile. "Don't you, too, work for others? What about your farmsteading, and your agriculture, and your book?..."

## Anna Karenina

"Oh, but I feel, and particularly just now it's your fault," he said, pressing her hand "that all that doesn't count. I do it, in a way, halfheartedly. If I could care for all that as I care for you!... Instead of that, I do it in these days like a task that is set me."

"Well, what would you say about papa?" asked Kitty. "Is he a poor creature then, as he does nothing for the public good?"

"He? No! But then, one must have the simplicity, the straight-forwardness, the goodness of your father: and I haven't got that. I do nothing, and I fret about it. It's all your doing. Before you and this too," he added with a glance toward her waist that she understood "I put all my energies into work; now I can't, and I'm ashamed; I do it just as though it were a task set me; I'm pretending...."

"Well, but would you like to change this minute with Sergei Ivanovich?" said Kitty. "Would you like to do this work for the general good, and to love the task set you, as he does, and nothing else?"

"Of course not," said Levin. "But I'm so happy that I don't understand anything. So you think he'll propose to her today?" he added after a brief silence.

"I think so, and I don't think so. Only, I'm awfully anxious for it. Here, wait a minute." She stooped down and picked a wild daisy at the edge of the path. "Come, count: he will, he won't," she said, giving him the flower.

"He will, he won't," said Levin, tearing off the white petals.

"No, no!" Kitty, snatching at his hand, stopped him. She had been watching his fingers with agitation. "You picked off two."

"Oh, but see, this little one shan't count to make up," said Levin, tearing off a little half-grown petal. "Here's the droshky overtaking us."

"Aren't you tired, Kitty?" called the Princess.

"Not in the least."

"If you are you can get in, as the horses are quiet and walking."

But it was not worth-while to get in; they were quite near the place, and all walked on together.

## IV.

Varenka, with her white kerchief on her black hair, surrounded by the children, gaily and good-humoredly looking after them, and at the same time visibly excited at the possibility of receiving a declaration from the man she cared for, was very attractive. Sergei Ivanovich walked beside her, and never left off admiring her. Looking at her, he recalled all the delightful things he had heard from her lips, all the good he knew about her, and became more and more conscious that the feeling he had for her was something special that he had felt long, long ago, and only once, in his early youth. The feeling of happiness in being near her continually grew, and at last reached such a point that, as he put a huge, slender-stalked mushroom with rolled brims, in her basket, he looked straight into her face, and noticing the flush of glad and alarmed excitement that overspread her face, he was confused himself, and smiled to her in silence a smile that said too much.

"If so," he said to himself, "I ought to think it over and make up my mind, and not give way like a boy to the



impulse of a moment."

"I'm going to pick by myself apart from all the rest, or else my efforts will make no show," he said, and he left the edge of the forest where they were walking on low silky grass between old birch trees standing far apart, and went more into the heart of the wood, where between the white birch trunks there were gray trunks of aspen and dark bushes of hazel. Walking some forty paces away, Sergei Ivanovich, knowing he was out of sight, stood still behind a bushy spindle tree in full flower with its rosy-red catkins. It was perfectly still all round him. Only overhead, in the birches under which he stood, the flies, like a swarm of bees, buzzed unceasingly, and from time to time the children's voices floated across to him. All at once he heard, not far from the edge of the wood, the sound of Varenka's contralto voice, calling Grisha, and a smile of delight passed over Sergei Ivanovich's face. Conscious of this smile, he shook his head disapprovingly at his own state and, taking out a cigar, he began lighting it. For a long while he could not get a match to light against the trunk of a birch tree. The soft pellicle of the white bark stuck around the phosphorus, and the light went out. At last one of the matches burned, and the fragrant cigar smoke, hovering uncertainly in flat, wide coils, stretched away forward and upward over a bush under the overhanging branches of a birch tree. Watching the streak of smoke, Sergei Ivanovich walked gently on, deliberating on his position.

"Why not?" he thought. "If it were only a flash in the pan, or a passion, if it were only this attraction this mutual attraction (I can call it a mutual attraction), yet if I felt that it was in contradiction with the whole bent of my life; if I felt that in giving way to this attraction I should be false to my vocation and my duty... But it's not so. The only thing I can say against it is that, when I lost Marie, I said to myself that I would remain faithful to her memory. That's the only thing I can say against my feeling.... That's a great thing," Sergei Ivanovich said to himself, feeling at the same time that this consideration had not the slightest importance for him personally, but would only perhaps detract from his romantic character in the eyes of others. "But apart from that, however much I searched, I should never find anything to say against my feeling. If I were choosing by considerations of intellect alone, I could not have found anything better."

However many women and girls he thought of whom he knew, he could not think of a girl who united to such a degree all positively all the qualities he would wish to see in his wife. She had all the charm and freshness of youth, but she was not a child; and if she loved him, she loved him consciously, as a woman ought to love; that was one thing. Another point: she was not only far from being worldly, but had an unmistakable distaste for worldly society, and at the same time she knew the world, and had all the ways of a woman of the best society, which were absolutely essential to Sergei Ivanovich's conception of the woman who was to share his life. Thirdly: she was religious, and not like a child, unconsciously religious and good, as Kitty, for example, was, but her life was founded on religious principles. Even in trifling matters, Sergei Ivanovich found in her all that he wanted in his wife: she was poor and alone in the world, so she would not bring with her a mass of relations and their influence into her husband's house, as he saw now in Kitty's case. She would owe everything to her husband, which was what he had always desired, too, for his future family life. And this girl, who united all these qualities, loved him. He was a modest man, but he could not help seeing it. And he loved her. There was one consideration against it his age. But he came of a long-lived family, he had not a single gray hair, no one would have taken him for forty, and he remembered Varenka's saying that it was only in Russia that men of fifty thought themselves old, and that in France a man of fifty considers himself *dans la force de l'age*, while a man of forty is *un jeune homme*. But what did the mere reckoning of years matter when he felt as young in heart as he had been twenty years ago? Was it not youth to feel as he felt now, when coming from the other side to the edge of the wood he saw in the glowing light of the slanting sunbeams the graceful figure of Varenka in her yellow gown with her basket, walking lightly by the trunk of an old birch tree, and when this impression of the sight of Varenka blended so harmoniously with the beauty of the view, of the yellow oat field lying bathed in the slanting sunshine, and, beyond it, the distant ancient forest, flecked with yellow and melting into the blue of the distance? His heart throbbed joyously. A softened feeling came over him. He felt that he had made up his mind. Varenka, who had just crouched down to pick a mushroom, rose with a supple movement and looked round. Flinging away the cigar, Sergei Ivanovich advanced with resolute steps toward her.

V.

"Varvara Andreevna, when I was very young, I set before myself the ideal of the woman I loved and should be happy to call my wife. I have lived through a long life, and now for the first time I have met what I sought in you. I love you, and offer you my hand."

Sergei Ivanovich was saying this to himself while he was ten paces from Varenka. Kneeling down, with her hands over the mushrooms to guard them from Grisha, she was calling little Masha.

"Come here, little ones! There are so many!" she was saying in her sweet, deep voice.

Seeing Sergei Ivanovich approaching, she did not get up and did not change her position, but everything told him that she felt his presence and was glad of it.

"Well, did you find some?" she asked from under the white kerchief, turning her handsome, gently smiling face to him.

"Not one," said Sergei Ivanovich. "Did you?"

She did not answer, busy with the children who thronged about her.

"That one too, near the twig," she pointed out to little Masha a little fungus, split in half across its rosy cap by the dry grass from under which it thrust itself. Varenka got up while Masha picked the fungus, breaking it into two white halves. "This brings back my childhood," she added, moving apart from the children, to Sergei Ivanovich's side.

They walked on for a few steps in silence. Varenka saw that he wanted to speak; she guessed of what, and felt faint with joy and panic. They had walked so far away that no one could hear them now, but still he did not begin. It would have been better for Varenka to be silent. After a silence it would have been easier for them to say what they wanted to say, than after talking about mushrooms. But against her own will, as it were accidentally, Varenka said:

"So you found nothing? In the middle of the wood there are always fewer, though."

Sergei Ivanovich sighed and made no answer. He was annoyed that she had spoken about the mushrooms. He wanted to bring her back to the first words she had uttered about her childhood; but after a pause of some length, as though against his own will, he made an observation in response to her last words.

"I have heard that the white edible fungi are found principally at the edge of the wood, though I can't tell them apart."

Some minutes more passed; they moved still farther away from the children, and were quite alone. Varenka's heart throbbed so that she heard it beating, and felt that she was turning red, and pale, and red again.

To be the wife of a man like Koznischev, after her position with Madame Stahl, was to her imagination the height of happiness. Besides, she was almost certain that she was in love with him. And this moment it would have to be decided. She felt frightened. She dreaded both his speaking and his not speaking.

Now or never it must be said. Sergei Ivanovich felt that too. Everything in the expression, the flushed cheeks and the downcast eyes of Varenka betrayed a painful suspense. Sergei Ivanovich saw it, and felt sorry for her. He

## Anna Karenina

felt even that to say nothing now would be a slight to her. Rapidly in his own mind he ran over all the arguments in support of his decision. He even said over to himself the words in which he meant to put his proposal, but instead of those words, some utterly unexpected reflection that occurred to him made him ask:

"What is the difference between the 'birch' mushroom and the 'white' mushroom?"

Varenka's lips quivered with emotion as she answered:

"In the top part there is scarcely any difference it's in the stalk."

And as soon as these words were uttered, both he and she felt that it was over, that what was to have been said would not be said; and their emotion, which up to then had been continually growing more intense, began to subside.

"The birch mushroom's stalk suggests a dark man's chin after two days without shaving," said Sergei Ivanovich, speaking quite calmly now.

"Yes, that's true," answered Varenka smiling, and unconsciously the direction of their walk changed. They began to turn toward the children. Varenka felt both hurt and ashamed; at the same time she felt a sense of relief.

When he had got home again, and went over the whole set of arguments, Sergei Ivanovich thought his previous decision had been a mistaken one. He could not be false to the memory of Marie.

"Gently, children, gently!" Levin shouted quite angrily to the children, standing before his wife to protect her when the crowd of children flew with shrieks of delight to meet them.

Behind the children Sergei Ivanovich and Varenka walked out of the forest. Kitty had no need to ask Varenka; she saw from the calm and somewhat crestfallen faces of both that her plans had not come off.

"Well?" her husband questioned her as they were going home again.

"No bites," said Kitty, her smile and manner of speaking recalling her father, a likeness Levin often noticed with pleasure.

"No bites, how?"

"I'll show you," she said, taking her husband's hand, lifting it to her mouth, and just faintly brushing it with closed lips. "Like a kiss on a priest's hand."

"Which one didn't bite?" he said, laughing.

"Both. But it should have been like this..."

"There are some peasants coming..."

"Oh, they didn't see."

## VI.

During the time of the children's tea the grownups sat on the balcony and talked as though nothing had happened

though they all, especially Sergei Ivanovich and Varenka, were very well aware that there had happened an event which, though negative, was of very great importance. They both had the same feeling, rather like that of a schoolboy after an unlucky examination, which has left him in the same class or shut him out of school forever. Everyone present, also feeling that something had happened, talked eagerly about extraneous subjects. Levin and Kitty were particularly happy and conscious of their love that evening. And their happiness in their love seemed to imply a disagreeable reference to those who would have liked to feel the same and could not and they felt a prick of conscience.

"Mark my words, Alexandre will not come," said the old Princess.

That evening they were expecting Stepan Arkadyevich to come down by train, and the old Prince had written that possibly he might come too.

"And I know why," the Princess went on; "he says that newly married couples ought to be left alone for a while at first."

"But papa has left us alone. We've never seen him," said Kitty. "Besides, we're not newly married! we're old married people by now."

"Only if he doesn't come, I shall say good-bye to you, children," said the Princess, sighing mournfully.

"What nonsense, mamma!" both the daughters fell upon her at once. "How do you suppose he is feeling? Why, now..."

And suddenly there was an unexpected quiver in the Princess's voice. Her daughters were silent, and looked at one another. "Maman always finds something to be miserable about," they said in that glance. They did not know that happy as the Princess was in her daughter's house, and useful as she felt herself to be there, she had been extremely miserable, both on her own account and her husband's, ever since they had married off their last and favorite daughter, and their family nest had been left empty.

"What is it, Agathya Mikhailovna?" Kitty asked suddenly of Agathya Mikhailovna, who was standing with a mysterious air, and a face full of meaning.

"About supper."

"Well, that's right," said Dolly; "you go and arrange about it, and I'll go and hear Grisha repeat his lesson, or else he will have done nothing all day."

"That's my duty! No, Dolly, I'm going," said Levin, jumping up.

Grisha, who was by now at a high school, had to go over the lessons of the term in the summer holidays. Darya Alexandrovna, who had been studying Latin with her son in Moscow before, had made it a rule on coming to the Levins' to go over with him, at least once a day, the most difficult lessons of Latin and arithmetic. Levin had offered to take her place, but the mother, having once overheard Levin's lesson, and noticing that it was not given exactly as the teacher in Moscow had given it, said resolutely, though with much embarrassment and anxiety not to mortify Levin, that they must keep strictly to the book as the teacher had done, and that she had better undertake it again herself. Levin was amazed both at Stepan Arkadyevich, who, by neglecting his duty, threw upon the mother the supervision of studies of which she had no comprehension, and at the teachers for teaching the children so badly. But he promised his sister-in-law to give the lessons exactly as she wished. And he went on teaching Grisha, not in his own way, but by the book, and so took little interest in it, and often forgot the hour of the lesson. So it had been today.

## Anna Karenina

"No, I'm going, Dolly, you sit still," he said. "We'll do it all properly, according to the book. Only when Stiva comes, and we go out shooting, then we shall have to miss it."

And Levin went to Grisha.

Varenka was saying the same thing to Kitty. Even in the happy, well-ordered household of the Levins, Varenka had succeeded in making herself useful.

"I'll see to the supper, you sit still," she said, and got up to go to Agathya Mikhailovna.

"Yes, yes, most likely they've not been able to get chickens. If so, our..."

"Agathya Mikhailovna and I will see about it," and Varenka vanished with her.

"What a fine girl!" said the Princess.

"Not merely fine, maman; she's an exquisite girl; there's no one else like her."

"So you are expecting Stepan Arkadyevich today?" said Sergei Ivanovich, evidently not disposed to pursue the conversation about Varenka. "It would be difficult to find two sons-in-law more unlike than yours," he said with a subtle smile. "One mobility itself, only living in society, like a fish in water; the other our Kostia, lively, alert, quick in everything, but, as soon as he is in society, he either sinks into apathy, or struggles helplessly like a fish on land."

"Yes, he's very heedless," said the Princess, addressing Sergei Ivanovich. "I've intended, indeed, to ask you to tell him that it's out of the question for her" (she indicated Kitty) "to stay here; that she positively must come to Moscow. He talks of getting a doctor down..."

"Maman, he'll do everything; he has agreed to everything," Kitty said, angry with her mother for appealing to Sergei Ivanovich to judge in such a matter.

In the middle of their conversation they heard the snorting of horses and the sound of wheels on the gravel.

Dolly had not time to get up to go and meet her husband, when from the window of the room below, where Grisha was having his lesson, Levin leaped out and helped Grisha out after him.

"It's Stiva!" Levin shouted from under the balcony. "We've finished, Dolly, don't be afraid!" he added, and started running like a boy to meet the carriage.

"Is, ea, id, ejus, ejus, ejus!" shouted Grisha, skipping along the avenue.

"And someone else too! Papa, of course!" cried Levin, stopping at the entrance of the avenue. "Kitty, don't come down the steep staircase go around."

But Levin had been mistaken in taking the person sitting in the carriage for the old Prince. As he got nearer to the carriage he saw beside Stepan Arkadyevich not the Prince, but a handsome, stout young man in a Scotch cap, with long ends of ribbon behind. This was Vassenka Veslovsky, a distant cousin of the Shcherbatskys, a brilliant young gentleman in Petersburg and Moscow society a capital fellow, and a keen sportsman," as Stepan Arkadyevich said, introducing him.

## Anna Karenina

Not a whit abashed by the disappointment caused by his having come in place of the old Prince, Veslovsky greeted Levin gaily, claiming acquaintance with him in the past, and snatching up Grisha into the carriage, lifted him over the pointer that Stepan Arkadyevich had brought with him.

Levin did not get into the carriage, but walked behind. He was rather vexed at the nonarrival of the old Prince, whom he liked more and more the more he saw him, and also the arrival of this Vassenka Veslovsky, a quite alien and superfluous person. He seemed to him still more alien and superfluous when, on approaching the steps where the whole party, children and grownups, were gathered together in much animation, Levin saw Vassenka Veslovsky, with a particularly warm and gallant air, kissing Kitty's hand.

"Your wife and I are cousins and very old friends," said Vassenka Veslovsky, once more shaking Levin's hand with great warmth.

"Well, are there plenty of birds?" Stepan Arkadyevich said to Levin, hardly leaving time for everyone to exchange greetings. "We've come with the most savage intentions. Why, maman, they've not been in Moscow since! Look, Tania, here's something for you! Get it, please, it's in the carriage, behind!" he talked in all directions. "How pretty you've grown, Dollenka," he said to his wife, once more kissing her hand, holding it in one of his, and patting it with the other.

Levin, who a minute before had been in the happiest frame of mind, now looked darkly at everyone, and everything displeased him.

"Who was it he kissed yesterday with these lips?" he thought, looking at Stepan Arkadyevich's tender demonstrations to his wife. He looked at Dolly, and he did not like her either.

"She doesn't believe in his love. So what is she pleased about? Revolting!" thought Levin.

He looked at the Princess, who had been so dear to him a minute before, and he did not like the manner in which she welcomed this Vassenka, with his ribbons, just as though she were in her own house.

Even Sergei Ivanovich, who had come out too on the steps, seemed to him unpleasant with the show of cordiality with which he met Stepan Arkadyevich, though Levin knew that his brother neither liked nor respected Oblonsky.

And Varenka even she seemed hateful, with her air sainte nitouche making the acquaintance of this gentleman, while all the while she was thinking of nothing but getting married.

And more hateful than anyone was Kitty, for falling in with the tone of gaiety with which this gentleman regarded his visit in the country, as though it were a holiday for himself and everyone else. And, more unpleasant than everything else, was that peculiar smile with which she responded to his smile.

Noisily talking, they all went into the house; but as soon as they were all seated, Levin turned and went out.

Kitty saw something was wrong with her husband. She tried to seize a moment to speak to him alone, but he made haste to get away from her, saying he was wanted at the countinghouse. It was long since his own work on the estate had seemed to him so important as at that moment. "It's all holiday for them," he thought; "but these are no holiday matters, they won't wait, and there's no living without them."

## VII.

Levin came back to the house only when they sent to summon to supper. On the stairs were standing Kitty and

## Anna Karenina

Agathya Mikhailovna, consulting about wines for supper.

"But why are you making all this fuss? Have what we usually do."

"No, Stiva doesn't drink... Kostia, stop, what's the matter?" Kitty began, hurrying after him, but he strode ruthlessly away to the dining room without waiting for her, and at once joined in the lively general conversation which was being maintained there by Vassenka Veslovsky and Stepan Arkadyevich.

"Well, what do you say, are we going shooting tomorrow?" said Stepan Arkadyevich.

"Please, do let's go," said Veslovsky, moving to another chair, where he sat down sideways, with one fat leg crossed under him.

"I shall be delighted, we will go. And have you had any shooting yet this year?" said Levin to Veslovsky, looking intently at his leg, but speaking with that forced amiability that Kitty knew so well in him, and that was so out of keeping with him. "I can't answer for our finding double snipe, but there are plenty of jacksnipe. Only we ought to start early. You're not tired? Aren't you tired, Stiva?"

"Me tired? I've never been tired yet. Suppose we stay up all night. Let's go for a walk!"

"Yes, really, let's not go to bed at all! Capital!" Veslovsky chimed in.

"Oh, we all know you can do without sleep, and keep other people up too," Dolly said to her husband, with that faint note of irony in her voice which she almost always had now with her husband. "But to my thinking, it's time for bed now... I'm going, I don't want supper."

"No, do stay a little, Dollenka," said Stepan Arkadyevich, going round to her side behind the table where they were having supper. "I've so much still to tell you."

"Nothing really, I suppose."

"Do you know Veslovsky has been at Anna's, and he's going to them again? You know they're hardly seventy verstas from you, and I too must certainly go over there. Veslovsky, come here!"

Vassenka crossed over to the ladies, and sat down beside Kitty.

"Ah, do tell me, please; you have visited her? How was she?" Darya Alexandrovna appealed to him.

Levin was left at the other end of the table, and though never pausing in his conversation with the Princess and Varenka, he saw that there was an eager and mysterious conversation going on between Stepan Arkadyevich, Dolly, Kitty, and Veslovsky. And that was not all. He saw on his wife's face an expression of real feeling as she gazed with fixed eyes on the handsome face of Vassenka, who was telling them something with great animation.

"It's exceedingly nice at their place," Veslovsky was telling them about Vronsky and Anna. "I can't, of course, take it upon myself to judge, but in their house you feel the real feeling of home."

"What do they intend doing?"

"I believe they think of going to Moscow for the winter."

## Anna Karenina

"How jolly it would be for us all to go over to them together! When are you going there?" Stepan Arkadyevich asked Vassenka.

"I'm spending July there."

"Will you go?" Stepan Arkadyevich said to his wife.

"I've been wanting to a long while; I shall certainly go," said Dolly. "I am sorry for her, and I know her. She's a splendid woman. I will go alone, when you go back, and then I shall be in no one's way. And it will be better indeed without you."

"To be sure," said Stepan Arkadyevich. "And you, Kitty?"

"I? Why should I go?" Kitty said, flushing all over, and she glanced round at her husband.

"Do you know Anna Arkadyevna, then?" Veslovsky asked her. "She's a very fascinating woman?"

"Yes," she answered Veslovsky, crimsoning still more. She got up and walked across to her husband.

"Are you going shooting, then, tomorrow?" she said.

His jealousy had in these few moments, especially at the flush that had overspread her cheeks while she was talking to Veslovsky, gone far indeed. Now as he heard her words, he construed them in his own fashion. Strange as it was to him afterward to recall it, it seemed to him at the moment clear that in asking whether he was going shooting, all she cared to know was whether he would give that pleasure to Vassenka Veslovsky, with whom, as he fancied, she was in love.

"Yes, I'm going," he answered her in an unnatural voice, disagreeable to himself.

"No, better spend the day here tomorrow, or Dolly won't see anything of her husband, and set off the day after," said Kitty.

The motive of Kitty's words was interpreted by Levin thus: "Don't separate me from him. I don't care about your going, but do let me enjoy the society of this delightful young man."

"Oh, if you wish, we'll stay here tomorrow," Levin answered, with peculiar amiability.

Vassenka meanwhile, utterly unsuspecting the misery his presence had occasioned, got up from the table after Kitty, and watching her with smiling and admiring eyes, he followed her.

Levin saw that look. He turned white, and for a minute he could hardly breathe. "How dare he look at my wife like that!" was the feeling that boiled within him.

"Tomorrow, then? Do, please, let us go," said Vassenka, sitting down on a chair, and again crossing his leg as his habit was.

Levin's jealousy went further still. Already he saw himself a deceived husband, looked upon by his wife and her lover as simply necessary to provide them with the conveniences and pleasures of life.... But in spite of that he made polite and hospitable inquiries of Vassenka about his shooting, his gun, and his boots, and agreed to go shooting next day.



## Anna Karenina

Happily for Levin, the old Princess cut short his agonies by getting up herself and advising Kitty to go to bed. But even at this point Levin could not escape another agony. As he said good night to his hostess, Vassenka would again have kissed her hand, but Kitty, reddening, drew back her hand and said with a naive bluntness, for which the old Princess scolded her afterward:

"We don't like that fashion."

In Levin's eyes she was to blame for having allowed such relations to arise, and still more to blame for showing so awkwardly that she did not like them.

"Why, how can one want to go to bed!" said Stepan Arkadyevich, who, after drinking several glasses of wine at supper, was now in his most charming and lyrical humor. "Look, Kitty," he said, pointing to the moon, which had just risen behind the linden trees, "how exquisite! Veslovsky, this is the time for a serenade. You know, he has a splendid voice; we practised songs together along the road. He has brought some lovely songs with him two new ones. Varvara Andreevna and he must sing some duets."

When the party had broken up, Stepan Arkadyevich walked a long while about the avenue with Veslovsky; their voices could be heard singing one of the new songs.

Levin, hearing these voices, sat scowling in an easy chair in his wife's bedroom, and maintained an obstinate silence when she asked him what was wrong. But when at last with a timid glance she hazarded the question: "Was there perhaps something you disliked about Veslovsky?" it all burst out, and he told her all. He was hurt himself by what he was saying, and that exasperated him all the more.

He stood facing her with his eyes glittering menacingly under his scowling brows, and he squeezed his strong arms across his chest, as though he were straining every nerve to hold himself in. The expression of his face would have been grim, and even cruel, if it had not at the same time had a look of suffering which touched her. His jaws were twitching, and his voice kept breaking.

"You must understand that I'm not jealous, that's a nasty word. I can't be jealous, and believe that... I can't say what I feel, but this is awful... I'm not jealous, but I'm wounded, humiliated that anybody dare think, that anybody dare look at you with eyes like that..."

"Eyes like what?" said Kitty, trying as conscientiously as possible to recall every word and gesture of that evening and every shade implied in them.

At the very bottom of her heart she did think there had been something, precisely at the moment when he had crossed over after her to the other end of the table; but she dared not own it even to herself, and would have been even more unable to bring herself to say so to him, and so increase his suffering.

"And what can there possibly be attractive about me as I am now?..."

"Ah!" he cried, clutching at his head, "You shouldn't say that!... If you had been attractive, then..."

"Oh, no, Kostia, oh, wait a minute, oh, do listen!" she said, looking at him with an expression of pained commiseration. "Why, what can you be thinking about! When for me there's no one in the world, no one, no one!... Would you like me never to see anyone?"

For the first minute she had been offended at his jealousy; she was angry that the slightest amusement, even the most innocent, should be forbidden her; but now she would readily have sacrificed, not merely such trifles, but everything, for his peace of mind, to save him from the agony he was suffering.

## Anna Karenina

"You must understand the horror and comedy of my position," he went on in a desperate whisper; "that he's in my house, that he's done nothing positively improper one can take exception only to his free and easy airs and the way he tucks his legs in under him. He thinks it's the best possible form, and so I'm obliged to be civil to him."

"But, Kostia, you're exaggerating," said Kitty, at the bottom of her heart rejoicing at the depth of his love for her, shown now in his jealousy.

"The most awful part of it all is that you're just as you always are, and especially now when to me you're something sacred, and we're so happy, so particularly happy and all of a sudden a little wretch... He's not a little wretch; why should I abuse him? I have nothing to do with him. But why should my, and your, happiness..."

"Do you know, I understand now what it all came from," Kitty was beginning.

"Well, what? What?"

"I saw how you looked while we were talking at supper."

"Well, well!" Levin said in dismay.

She told him what they had been talking about. And as she told him, she was breathless with emotion. Levin was silent for a space, then he scanned her pale and distressed face, and suddenly he clutched at his head.

"Katia, I've been worrying you! Darling, forgive me! It's madness! Katia, I'm a criminal. And how could you be so distressed at such idiocy?"

"Oh, I was sorry for you."

"For me? For me? How mad I am!... But why make you miserable? It's awful to think that any outsider can shatter our happiness."

"It's humiliating too, of course."

"Oh, then I'll keep him here all the summer, and will overwhelm him with civility," said Levin, kissing her hands. "You shall see. Tomorrow... oh, yes, we are going tomorrow."

## VIII.

Next day, before the ladies were up, the carriages for the shooting party, the droshky and a trap, were at the door, and Laska, aware since early morning that they were going shooting, after much whining and darting to and fro, had sat herself down in the droshky beside the coachman, and, disapproving of the delay, was excitedly watching the door from which the sportsmen still did not issue. The first to come out was Vassenka Veslovsky, in new high boots that reached halfway up his thick thighs, in a green blouse, with a new cartridge belt, redolent of leather, and in his Scotch cap with ribbons, with a brand-new English gun without a sling. Laska flew up to him, welcomed him, and, jumping up, asked him in her own way whether the others were coming soon; but getting no answer from him, she returned to her post of observation and sank into repose again, her head on one side, and one ear pricked up to listen. At last the door opened with a creak, and Stepan Arkadyevich's spot-and-tan pointer Krak flew out, running round and round and turning over in the air. Stepan Arkadyevich himself followed with a gun in his hand and a cigar in his mouth. "Soho, soho, Krak!" he cried encouragingly to the dog, who put his paws up on his chest, catching at his gamebag. Stepan Arkadyevich was dressed in brogues and puttees, in torn trousers and a short coat. On his head there was a wreck of a hat of indefinite form, but his gun of a new patent was a

## Anna Karenina

perfect gem, and his gamebag and cartridge belt, though worn, were of the very best quality.

Vassenska Veslovsky had had no notion before that it was truly chic for a sportsman to be in tatters, but to have his shooting outfit of the best quality. He saw it now as he looked at Stepan Arkadyevich, radiant in his rags, graceful, well-fed, and joyous, a typical Russian nobleman. And he made up his mind that next time he went shooting he would certainly adopt the same getup.

"Well, and what about our host?" he asked.

"A young wife," said Stepan Arkadyevich, smiling.

"Yes, and such a charming one!"

"He came down dressed. No doubt he's run up to her again."

Stepan Arkadyevich guessed right. Levin had run up again to his wife to ask her once more if she forgave him for his idiocy yesterday, and, moreover, to beg her in Christ's name to be more careful. The great thing was for her to keep away from the children—they might any minute jostle against her. Then he had once more to hear her declare that she was not angry with him for going away for two days, and to beg her to be sure to send a note next morning by a servant on horseback, to write him, if it were but two words only, to let him know that all was well with her.

Kitty was distressed, as she always was, at parting for a couple of days from her husband, but when she saw his eager figure, looking big and strong in his shooting boots and his white blouse, and a sort of sportsman elation and excitement incomprehensible to her, she forgot her own chagrin for the sake of his pleasure, and said good-bye to him cheerfully.

"Pardon, gentlemen!" he said, running out on the steps. "Have you put the lunch in? Why is the chestnut on the right? Well, it doesn't matter. Laska, down; go and lie down!"

"Put them with the herd of heifers," he said to the herdsman who was waiting for him at the steps to ask him what was to be done with the geld oxen. "Excuse me, here comes another villain."

Levin jumped out of the droshky, in which he had already taken his seat, to meet the carpenter, who came toward the steps with a rule in his hand.

"You didn't come to the countinghouse yesterday, and now you're detaining me. Well, what is it?"

"Would your honor let me make another turning? There's only three steps to add. And we make it just fit at the same time. It will be much more convenient."

"You should have listened to me," Levin answered with annoyance. "I said: Put the lines and then fit in the steps. Now there's no setting it right. Do as I told you, and make a new staircase."

The point was that in the wing that was being built the carpenter had spoiled the staircase, fitting it together without calculating the space it was to fill, so that the steps were all sloping when it was put in place. Now the carpenter wanted to keep the same staircase, by adding three steps.

"It will be much better."

"But where's your staircase coming out with its three steps?"

## Anna Karenina

"Why, upon my word, sir," the carpenter said with a contemptuous smile. "It comes out right at the very spot. It starts here," he said, with a persuasive gesture, "then it'll go up, and go up and come out."

"But three steps will add to the length too... where is it to come out?"

"Why, to be sure, it'll go up, and come out," the carpenter said obstinately and convincingly.

"It'll reach the ceiling and the wall."

"Upon my word! Why, it'll go up, and go up, and come out like this."

Levin took out a ramrod and began sketching him the staircase in the dust.

"There, do you see?"

"As your honor likes," said the carpenter, with a sudden gleam in his eyes, obviously understanding the thing at last. "It seems it'll be best to make a new one."

"Well, then, do it as you're told," Levin shouted, seating himself in the droshky. "Down! Hold the dogs, Philip!"

Levin felt now at leaving behind all his family and household cares such an eager sense of joy in life and expectation that he was not disposed to talk. Besides that, he had that feeling of concentrated excitement that every sportsman experiences as he approaches the scene of action. If he had anything on his mind at that moment, it was only the doubt whether they would start anything in the Kolpensky marsh, whether Laska would show to advantage in comparison with Krak, and whether he would shoot well that day himself. Not to disgrace himself before a new spectator not to be outdone by Oblonsky that too was a thought that crossed his brain.

Oblonsky was feeling the same, and he too was not talkative. Vassenka Veslovsky alone kept up a ceaseless flow of cheerful chatter. As he listened to him now, Levin felt ashamed to think how unfair he had been to him the day before. Vassenka was really a fine fellow, simple, goodhearted, and very good-humored. If Levin had met him before he was married, he would have made friends with him. Levin rather disliked his holiday attitude to life and a sort of free and easy assumption of elegance. It was as though he assumed a high degree of importance in himself that could not be disputed, because he had long nails and a stylish cap, and everything else to correspond; but this could be forgiven for the sake of his good nature and good breeding. Levin liked him for his good education, for speaking French and English with such an excellent accent, and for being a man of his world.

Vassenka was extremely delighted with the left outrigger, a horse of the Don steppes. He kept praising him enthusiastically. "How fine it must be galloping over the steppes on a steppe horse! Eh? Isn't it?" he said. He had imagined riding on a steppe horse as something wild and romantic, and it turned out nothing of the sort. But his simplicity, particularly in conjunction with his good looks, his amiable smile, and the grace of his movements, was very attractive. Either because his nature was sympathetic to Levin, or because Levin was trying to atone for his sins of the previous evening by seeing nothing but what was good in him at any rate, he liked his society.

After they had driven three verstas from home, Veslovsky all at once felt for a cigar and his pocketbook, and did not know whether he had lost them or left them on the table. In the pocketbook there were three hundred and seventy roubles, and so the matter could not be left in uncertainty.

"Do you know what, Levin, I'll gallop home on that outrigger. That will be splendid. Eh?" he said, preparing to get out.

"No, why should you?" answered Levin, calculating that Vassenka could hardly weigh less than six poods. "I'll send the coachman."

The coachman rode back on the outrigger, and Levin himself drove the remaining pair.

## IX.

"Well, now, what's our plan of campaign? Tell us all about it," said Stepan Arkadyevich.

"Our plan is this. Now we're driving to Gvozdiov. In Gvozdiov there's a double snipe marsh on this side, and beyond Gvozdiov come some magnificent jacksnipe marshes, where there are double snipe too. It's hot now, and we'll get there it's twenty versts toward evening, and have some evening shooting; we'll spend the night there and go on tomorrow to the bigger moors."

"And is there nothing on the way?"

"Yes; but we'll save ourselves; besides, it's hot. There are two good little places, but I doubt there being anything to shoot."

Levin would himself have liked to go into these little places, but they were near home; he could shoot them over any time, and they were only little places there would hardly be room for three to shoot. And so, with some insincerity, he said that he doubted there being anything to shoot. When they reached a little marsh Levin would have driven by, but Stepan Arkadyevich, with the experienced eye of a sportsman, at once detected a soggy spot visible from the road.

"Shan't we try that?" he said, pointing to the little marsh.

"Levin, do, please! How delightful!" Vassenka Veslovsky began begging, and Levin could not but consent.

Before they had time to stop, the dogs had flown one before the other into the marsh.

"Krak! Laska!..."

The dogs came back.

"There won't be room for three. I'll stay here," said Levin, hoping they would find nothing but pewits, which had been startled by the dogs, and, turning over in their flight, were plaintively wailing over the marsh.

"No! Come along, Levin, let's go together!" Veslovsky called.

"Really, there's no room. Laska, back, Laska! You won't want another dog, will you?"

Levin remained with the droshky, and looked enviously at the sportsmen. They walked across the marsh. Except one moor hen and pewits, of which Vassenka killed one, there was nothing in the marsh.

"Come, you see now that it was not that I grudged the marsh," said Levin, "only it's wasting time."

"Oh, no, it was jolly all the same. Did you see us?" said Vassenka Veslovsky, clambering awkwardly into the droshky with his gun and his pewit in his hands. "How splendidly I shot this bird! Didn't I? Well, shall we soon be getting to the real place?"

## Anna Karenina

The horses started off suddenly, Levin knocked his head against the stock of someone's gun, and there was the report of a shot. The gun did actually go off first, but that was how it seemed to Levin. It appeared that Vassenka Veslovsky making the cocks safe had pressed one trigger, and had held back the other cock. The charge flew into the ground without doing harm to anyone. Stepan Arkadyevich shook his head and laughed reprovingly at Veslovsky. But Levin had not the heart to reprove him. In the first place, any reproach would have seemed to be called forth by the danger he had incurred and the bump that had come up on Levin's forehead. And besides, Veslovsky was at first so naively distressed, and then laughed so good-humoredly and infectiously at their general dismay, that one could not but laugh with him.

When they reached the second marsh, which was fairly large, and would inevitably take some time to shoot over, Levin tried to persuade them to pass it by. But Veslovsky again talked him over. Again, as the marsh was narrow, Levin, like a good host, remained with the carriages.

Krak made straight for hummocks; Vassenka Veslovsky was the first to run after the dog. Before Stepan Arkadyevich had time to come up, a double snipe flew out. Veslovsky missed it and it flew into an unmown meadow. This double snipe was left for Veslovsky to follow up. Krak found it again and pointed, and Veslovsky shot it and went back to the carriages.

"Now you go and I'll stay with the horses," he said.

Levin had begun to feel the pangs of a sportsman's envy. He handed the reins to Veslovsky and walked into the marsh.

Laska, who had been plaintively whining and fretting against the injustice of her treatment, flew straight ahead to an unfailing place, covered with mossy hummocks, that Levin knew well, and that Krak had not yet come upon.

"Why don't you stop her?" shouted Stepan Arkadyevich.

"She won't scare them," answered Levin, sympathizing with his bitch's pleasure and hurrying after her.

As she came nearer and nearer to the familiar hummocks there was more and more earnestness in Laska's exploration. A little marsh bird did not divert her attention for more than an instant. She made one circuit round the hummocks, was beginning a second, and suddenly quivered with excitement and stood stock-still.

"Come, come, Stiva!" shouted Levin, feeling his heart beginning to beat more violently; and all of a sudden, as though some sort of shutter had been drawn back from his straining ears, all sounds, confused but loud, began to beat on his hearing, losing all sense of distance. He heard the steps of Stepan Arkadyevich, mistaking them for the tramp of the horses in the distance; he heard the brittle sound of the tussock which came off with its roots when he had trodden on a hummock, and he took this sound for the flight of a double snipe. He heard too, not far behind him, a splashing in the water, which he could not explain to himself.

Picking his steps, he moved up to the dog.

"Fetch it!"

Not a double but a jacksnipe flew up from beside the dog. Levin had lifted his gun, but at the very instant when he was taking aim, the sound of splashing grew louder, came closer, and was joined with the sound of Veslovsky's voice, shouting something with strange loudness. Levin saw he had his gun pointed behind the snipe, but still he fired.

When he had made sure he had missed, Levin looked round and saw the horses and the droshky not on the road but in the marsh.

Veslovsky, eager to see the shooting, had driven into the marsh, and got the horses stuck in the mud.

"Damn the fellow!" Levin said to himself, as he went back to the carriage that had sunk in the mire. "What did you drive in for?" he said to him dryly, and, calling the coachman he began pulling the horses out.

Levin was vexed both at being hindered from shooting and at his horses getting stuck in the mud, and still more at the fact that neither Stepan Arkadyevich nor Veslovsky helped him and the coachman to unharness the horses and get them out, since neither of them had the slightest notion of harnessing. Without answering a syllable to Vassenka's protestations that it had been quite dry there, Levin worked in silence with the coachman at extricating the horses. But then, as he got warm at the work and saw how assiduously Veslovsky was tugging at the droshky by one of the splashboards, so that he broke it indeed, Levin blamed himself for having under the influence of yesterday's feelings been too cold to Veslovsky, and tried to be particularly genial so as to smooth over his chilliness. When everything had been put right, and the vehicles had been brought back to the road, Levin had the lunch served.

"Bon appetit bonne conscience! Ce poulet va tomber jusqu'au fond de mes bottes," Vassenka, who had recovered his spirits, quoted the French saying as he finished his second chicken. "Well, now our troubles are over, now everything's going to go well. Only, to atone for my sins, I'm bound to sit on the box. That's so? Eh? No, no! I'll be your Automedon. You shall see how I'll get you along," he answered, without letting go the rein, when Levin begged him to let the coachman drive. "No, I must atone for my sins, and I'm very comfortable on the box." And he drove.

Levin was a little afraid he would exhaust the horses, especially the left of them, the chestnut, whom he did not know how to hold in; but unconsciously he fell under the influence of his gaiety and listened to the songs he sang all the way on the box, or the descriptions and representations he gave of driving in the English fashion, four-in-hand; and it was in the very best of spirits that after lunch they drove to the Gvozdiov marsh.

## X.

Vassenka drove the horses so fast that they reached the marsh too early, while it was still hot.

As they drew near this more important marsh, the chief aim of their expedition, Levin could not help considering how he could get rid of Vassenka and be free in his movements. Stepan Arkadyevich evidently had the same desire, and on his face Levin saw the look of anxiety always present in a true sportsman when beginning shooting, together with a certain good-humored slyness peculiar to him.

"How shall we go? It's a splendid marsh, I see, and there are hawks," said Stepan Arkadyevich, pointing to two great birds hovering over the sedge. "Where there are hawks, there is sure to be game."

"Now, gentlemen," said Levin, pulling up his boots and examining the lock of his gun with a somewhat somber expression, "do you see that sedge?" He pointed to an oasis of blackish green in the huge half-mown wet meadow that stretched along the right bank of the river. "The marsh begins here, straight in front of us, do you see where it is greener? From here it runs to the right where the horses are; there are hummocks there, and double snipe, and all round that sedge as far as that alder tree, and right up to the mill. Over there, do you see, where the creek is? That's the best place. There I once shot seventeen jacksnipe. We'll separate with the dogs and go in different directions, and then meet over there at the mill."

## Anna Karenina

"Well, who'll go left, and who to the right?" asked Stepan Arkadyevich. "It's wider to the right; you two go that way and I'll take the left," he said with apparent carelessness.

"Capital! We'll make the bigger bag! Yes, come along, come along!" Vassenka exclaimed.

Levin could do nothing but agree, and they divided.

As soon as they entered the marsh, the two dogs began hunting about together and made toward the rust-colored spot. Levin knew Laska's method, wary and indefinite; he knew the place too, and expected a whole covey of snipe.

"Veslovsky, walk beside me beside me!" he said in a faint voice to his companion splashing in the water behind him. Levin could not help feeling an interest in the direction his gun was pointed, after that casual shot near the Kolpensky marsh.

"Oh, I won't get in your way, don't trouble about me."

But Levin could not help troubling, and recalled Kitty's words at parting: "Mind you don't shoot one another." The dogs came nearer and nearer, passed each other, each pursuing its own scent. The expectation of snipe was so intense that to Levin the smacking sound of his own heel, as he drew it up out of the rusty mire, seemed to be the call of a snipe, and he clutched and pressed the butt of his gun.

Bang! bang! sounded almost in his ear. Vassenka had fired at a flock of ducks which was hovering over the marsh and flying at that moment toward the sportsmen, far out of range. Before Levin had time to look round, there was the whirl of one snipe, another, a third, and some eight more rose one after another.

Stepan Arkadyevich hit one at the very moment when it was beginning its zigzag movements, and the snipe fell as a clod into the quagmire. Oblonsky aimed deliberately at another, still flying low toward the sedge, and together with the report of the shot, that snipe too fell, and it could be seen fluttering out where the sedge had been cut, its unhurt wing showing white beneath.

Levin was not so lucky: he aimed at his first bird too low, and missed; he aimed at it again, just as it was rising, but at that instant another snipe flew up at his very feet, distracting him so that he missed again.

While they were reloading their guns, another snipe rose, and Veslovsky, who had had time to reload again, sent two charges of small shot into the water. Stepan Arkadyevich picked up his snipe, and with sparkling eyes looked at Levin.

"Well, now let us separate," said Stepan Arkadyevich, and limping on his left foot, holding his gun in readiness and whistling to his dog, he walked off in one direction. Levin and Veslovsky walked off in the other.

It always happened with Levin that when his first shots were a failure he got heated and out of temper, and shot badly the whole day. So was it that day. The snipe showed themselves in numbers. They kept flying up from just under the dogs, from under the sportsmen's legs, and Levin might have retrieved his ill luck. But the more he shot, the more he felt disgraced in the eyes of Veslovsky, who kept popping away merrily and indiscriminately, killing nothing, and not in the slightest abashed by his ill success. Levin, in feverish haste, could not restrain himself, got more and more out of temper, and ended by shooting almost without a hope of hitting. Laska, indeed, seemed to understand this. She began searching more listlessly, and gazed back at the sportsmen with apparent perplexity or reproach in her eyes. Shots followed shots in rapid succession. The smoke of the powder hung about the sportsmen, while in the great roomy net of the gamebag there were only three light, small snipe. And of these one had been killed by Veslovsky alone, and one by both of them together. Meanwhile, from the other side of the



marsh, came the sound of Stepan Arkadyevich's shots, not frequent, but, as Levin fancied, well directed, for almost after each they heard "Krak, Krak, apporte!"

This excited Levin still more. The snipe were floating continually in the air over the sedge. Their whirring wings close to the earth, and their harsh cries high in the air, could be heard on all sides; the snipe that had risen first and flown up into the air, settled again before the sportsmen. Instead of two hawks there were now dozens of them hovering with shrill cries over the marsh.

After walking through the larger half of the marsh, Levin and Veslovsky reached the place where the peasants' mowing grass was divided into long strips reaching to the sedge, marked off in one place by the trampled grass, in another by a path mown through it. Half of these strips had already been mown.

Though there was not so much hope of finding birds in the uncut part as the cut part, Levin had promised Stepan Arkadyevich to meet him, and so he walked on with his companion through the cut and uncut patches.

"Hi, hunters!" shouted one of a group of peasants, sitting on an unharnessed telega: "Come and have some lunch with us! Have a drop of wine!"

Levin looked round.

"Come along, it's all right!" shouted a good-humored-looking bearded peasant with a red face, showing his white teeth in a grin, and holding up a greenish bottle that flashed in the sunlight.

"Qu'est-ce qu'ils disent?" asked Veslovsky.

"They invite you to have some vodka. Most likely they've been dividing the meadow into lots. I should have some," said Levin, not without some guile, hoping Veslovsky would be tempted by the vodka, and would go off to them.

"Why do they offer it?"

"Oh, they're merrymaking. Really, you should join them. You would be interested."

"Allons, c'est curieux."

"You go, you go, you'll find the way to the mill!" cried Levin, and looking round he perceived with satisfaction that Veslovsky, bent and stumbling with weariness, holding his gun out at arm's length, was making his way out of the marsh toward the peasants.

"You come too!" the peasant shouted to Levin. "Never fear! Taste our pie!"

Levin felt a strong inclination for a drink of vodka and a bite of bread. He was exhausted, and felt it a great effort to drag his staggering legs out of the mire, and for a minute he hesitated. But Laska was pointing. And immediately all his weariness vanished, and he walked lightly through the swamp toward the dog. A snipe flew up at his feet; he fired and killed it. Laska still pointed. "Fetch it!" Another bird flew up close to the dog. Levin fired. But it was an unlucky day for him; he missed it, and when he went to look for the one he had shot, he could not find that either. He wandered all about the sedge, but Laska did not believe he had shot it, and when he sent her to find it, she pretended to hunt for it, but did not really do so.

And in the absence of Vassenka, on whom Levin threw the blame of his failure, things went no better. There was plenty of snipe still, but Levin made one miss after another.

## Anna Karenina

The slanting rays of the sun were still hot; his clothes, soaked through with perspiration, stuck to his body; his left boot full of water weighed heavily on his leg and squelched at every step; the sweat ran in drops down his powder-grimed face, his mouth was full of a bitter taste, his nose of the smell of powder and stagnant water, his ears were ringing with the incessant whirl of the snipe; he could not touch the barrel of his gun, it was so hot; his heart beat with short, rapid throbs; his hands shook with excitement, and his weary legs stumbled and staggered over the hummocks and in the swamp, but still he walked on and still he shot. At last, after a disgraceful miss, he flung his gun and his hat on the ground.

"No, I must control myself," he said to himself. Picking up his gun and his hat, he called Laska, and went out of the swamp. When he got onto dry ground he sat down on a hummock, pulled off his boot and emptied it, then walked to the marsh, drank some rust-tasting water, moistened the burning hot barrel of his gun, and washed his face and hands. Feeling refreshed, he went back to the spot where a snipe had settled, firmly resolved to keep cool.

He tried to be calm, but it was the same again. His finger pressed the trigger before he had taken a good aim at the bird. It got worse and worse.

He had only five birds in his gamebag when he walked out of the marsh toward the alders, where he was to rejoin Stepan Arkadyevich.

Before he caught sight of Stepan Arkadyevich he saw his dog. Krak, black all over with the stinking mire of the marsh, darted out from behind the twisted root of an alder, and, with the air of a conqueror, sniffed Laska. Behind Krak there came into view in the shade of the alder tree the shapely figure of Stepan Arkadyevich. He came to meet him, red and perspiring, with unbuttoned neckband, still limping in the same way.

"Well? You have been popping away!" he said, smiling good-humoredly.

"How have you got on?" queried Levin. But there was no need to ask, for he had already seen the full gamebag.

"Oh, pretty fair."

He had fourteen birds.

"A splendid marsh! I've no doubt Veslovsky got in your way. It's awkward too, shooting with one dog," said Stepan Arkadyevich, to soften his triumph.

## XI.

When Levin and Stepan Arkadyevich reached the peasant's hut where Levin always used to stay, Veslovsky was already there. He was sitting in the middle of the hut, clinging with both hands to the bench from which he was being pulled by a soldier, the brother of the peasant's wife, who was helping him off with his miry boots. Veslovsky was laughing his infectious, good-humored laugh.

"I've only just come. Ils ont ete charmants. Just fancy they gave me drink, and fed me! Such bread it was exquisite! Dilicieux! And the vodka I never tasted any better. And they would not take a penny for anything. And they kept saying: 'Excuse our homely ways.'"

"What should they take anything for? They were entertaining you, to be sure. Do you suppose they keep vodka for sale?" said the soldier, succeeding at last in pulling the soaked boot off, together with the blackened stocking.

In spite of the dirtiness of the hut, which was all muddled by their boots and the filthy dogs licking themselves clean, and the smells of the marsh and the powder that filled the room, and the absence of knives and forks, the party drank their tea and ate their supper with a relish only known to sportsmen. Washed and clean, they went into a hay barn swept ready for them, where the coachmen had been making up beds for the gentlemen.

Though it was dusk, not one of them wanted to go to sleep.

After wavering among reminiscences and anecdotes of guns, of dogs, and of former shooting parties, the conversation rested on a topic that interested all of them. After Vassenka had several times over expressed his appreciation of this delightful sleeping place among the fragrant hay, this delightful broken telega (he supposed it to be broken because the shafts had been taken out), of the good nature of the peasants who had treated him to vodka, of the dogs who lay at the feet of their respective masters, Oblonsky began telling them of a delightful shooting party at Malthus's where he had stayed the previous summer. Malthus was a well-known capitalist, who had made his money by speculation in railway shares. Stepan Arkadyevich described what snipe moors this Malthus had taken on lease in the Tver province, and how they were preserved, and of the carriages and dogcarts in which the shooting party had been driven, and the luncheon pavilion that had been rigged up at the marsh.

"I don't understand you," said Levin, sitting up in the hay; "how is it such people don't disgust you? I can understand a lunch with Lafitte is all very pleasant, but don't you dislike just that very sumptuousness? All these people, just like our tax farmers in the old days, get their money in a way that gains them the contempt of everyone. They don't care for their contempt, and then they use their dishonest gains to buy off the contempt they have deserved."

"Perfectly true!" chimed in Vassenka Veslovsky. "Perfectly! Oblonsky, of course, goes out of bonhomie, but other people say: 'Well, Oblonsky stays with them.'"

"Not a bit of it." Levin could hear that Oblonsky was smiling as he spoke. "I simply don't consider him more dishonest than any other wealthy merchant or nobleman. They've all made their money alike by their work and their intelligence."

"Oh, by what work? Do you call it work to get hold of concessions and speculate with them?"

"Of course it's work. Work in this sense, that if it were not for him and others like him, there would have been no railways."

"But that's not work, like the work of a peasant, or in a learned profession."

"Granted, but it's work in the sense that his activity produces a result the railways. But of course you think the railways useless."

"No, that's another question; I am disposed to admit that they're useful. But all profit that is out of proportion to the labor expended is dishonest."

"But who is to define what is proportionate?"

"Making profit by dishonest means, by trickery," said Levin, conscious that he could not draw a distinct line between honesty and dishonesty. "Such as banking, for instance," he went on. "It's an evil the amassing of huge fortunes without labor, just the same thing as with the tax farmers it's only the form that's changed. *Le roi est mort, vive le roi!* No sooner were the tax farmers abolished than the railways came up, and banking companies; that, too, is profit without work."

## Anna Karenina

"Yes, that may all be very true and clever.... Lie down, Krak!" Stepan Arkadyevich called to his dog, who was scratching and turning over all the hay. He was obviously convinced of the correctness of his position, and so talked serenely and without haste. "But you have not drawn the line between honest and dishonest work. That I receive a bigger salary than my chief clerk, though he knows more about the work than I do that's dishonest, I suppose?"

"I can't say."

"Well, but I can tell you: your receiving some five thousand, let's say, for your work on the land, while our host, the peasant here, however hard he works, can never get more than fifty roubles, is just as dishonest as my earning more than my chief clerk, and Malthus getting more than a railway expert. No, quite the contrary; I see that society takes up a sort of antagonistic attitude to these people, which is utterly baseless, and I fancy there's envy at the bottom of it...."

"No, that's unfair," said Veslovsky; "how could envy come in? There is something unclean about that sort of business."

"You say," Levin went on, "that it's unjust for me to receive five thousand, while the peasant has fifty roubles; that's true. It is unfair, and I feel it, but..."

"It really is. Why is it we spend our time riding, drinking, shooting, doing nothing while they are forever at work?" said Vassenka Veslovsky, obviously for the first time in his life reflecting on the question, and consequently considering it with perfect sincerity.

"Yes, you feel it, but you don't give him your property," said Stepan Arkadyevich, intentionally, as it seemed, provoking Levin.

There had arisen of late something like a secret antagonism between the two brothers-in-law; as though, since they had married sisters, a kind of rivalry had sprung up between them as to which was ordering his life best, and now this hostility showed itself in the conversation, as it began to take a personal note.

"I don't give it away, because no one demands that from me, and if I wanted to, I could not give it away," answered Levin, "and have no one to give it to."

"Give it to this peasant, he would not refuse it."

"Yes, but how am I to give it up? Am I to go to him and make a title deed?"

"I don't know; but if you are convinced that you have no right..."

"I'm not at all convinced. On the contrary, I feel have no right to give it up, that I have duties both to the land and to my family."

"No, excuse me, but if you consider this inequality is unjust, why is it you don't act accordingly?..."

"Well, I do act negatively on that idea, so far as not trying to increase the difference of position existing between him and me."

"No, excuse me, that's a paradox."

## Anna Karenina

"Yes, there's something of a sophistry about that," Veslovsky agreed. "Ah! Our host!" he said to the peasant who came into the barn, opening the creaking door. "How is it you're not asleep yet?"

"No, how's one to sleep! I thought our gentlemen would be asleep, but I heard them chattering. I want to get a hook from here. She won't bite?" he added, stepping cautiously with his bare feet.

"And where are you going to sleep?"

"We are going out for night watching."

"Ah, what a night!" said Veslovsky, looking out at the edge of the hut and the unharnessed droshky that could be seen in the faint light of the evening glow in the great frame of the open doors. "But listen, there are women's voices singing, and, on my word, not badly too! Who's that singing, my friend?"

"That's the housemaids from hard by here."

"Let's go let's take a walk! We shan't go to sleep, you know. Oblonsky, come along!"

"If one could only do both, lie here and go," answered Oblonsky, stretching. "It's capital lying here."

"Well, I shall go by myself," said Veslovsky, getting up eagerly, and putting on his boots and stockings.

"Good-by, gentlemen. If it's fun, I'll fetch you. You've treated me to some good sport, and I won't forget you."

"He really is a capital fellow, isn't he?" said Stepan Arkadyevich when Veslovsky had gone out and the peasant had closed the door after him.

"Yes, capital," answered Levin, still thinking of the subject of their conversation just before. It seemed to him that he had clearly expressed his thoughts and feelings to the best of his capacity, and yet both of them, straightforward men and not fools, had said with one voice that he was comforting himself with sophistries. This disconcerted him.

"It's just this, my dear boy. One must do one of two things: either admit that the existing order of society is just, and then stick up for one's rights in it; or acknowledge that you are enjoying unjust privileges, as I do, and then enjoy them and be satisfied."

"No, if it were unjust, you could not enjoy these advantages and be satisfied at least I could not. The great thing for me is to feel that I'm not to blame."

"What do you say why not go after all?" said Stepan Arkadyevich, evidently weary of the strain of thought.

"We shan't go to sleep, you know. Come, let's go!"

Levin did not answer. What they had said in the conversation that he acted justly only in a negative sense absorbed his thoughts. "Can it be that it's only possible to be just negatively?" he was asking himself.

"How strong the smell of the fresh hay is, though," said Stepan Arkadyevich, getting up. "There's not a chance of sleeping. Vassenka has been getting up some fun there. Do you hear the laughter and his voice? Hadn't we better go? Come along!"

"No, I'm not coming," answered Levin.

"Surely that's not a matter of principle too," said Stepan Arkadyevich, smiling, as he felt about in the dark for his cap.

"It's not a matter of principle, but why should I go?"

"But do you know you are preparing trouble for yourself," said Stepan Arkadyevich, finding his cap and getting up.

"How so?"

"Do you suppose I don't see the line you've taken up with your wife? I heard how it's a question of the greatest consequence, whether or not you're to be away for a couple of days' shooting. That's all very well as an idyllic episode, but for your whole life that won't answer. A man must be independent; he has his masculine interests. A man has to be manly," said Oblonsky, opening the door.

"In what way? To go running after servant girls?" said Levin.

"Why not, if it amuses him? Ça ne tire pas a consequence. It won't do my wife any harm, and it'll amuse me. The great thing is to respect the sanctity of the home. There should be nothing in the home. But don't tie your own hands."

"Perhaps so," said Levin dryly, and he turned on his side. "Tomorrow, early, I want to go shooting, and I won't wake anyone, and shall set off at daybreak."

"Messieurs, venez vite!" they heard the voice of Veslovsky coming back. "Charmante! I've made such a discovery. Charmante! A perfect Gretchen, and I've already made friends with her. Really, exceedingly pretty," he declared in a tone of approval, as though she had been made pretty entirely on his account, and he were expressing his satisfaction with the entertainment that had been provided for him.

Levin pretended to be asleep, while Oblonsky, putting on his slippers, and lighting a cigar, walked out of the barn, and soon their voices were lost.

For a long while Levin could not get to sleep. He heard his horses munching hay, then he heard the peasant and his elder boy getting ready, and then going off for the night watching, then he heard the soldier arranging his bed on the other side of the barn, with his nephew, the younger son of their peasant host. He heard the boy in his shrill little voice telling his uncle what he thought about the dogs, who seemed to him huge and terrible creatures, and asking what the dogs were going to hunt next day, and the soldier in a husky, sleepy voice, telling him the sportsmen were going in the morning to the marsh, and would shoot with their guns; and then, to check the boy's questions, he said, "Go to sleep, Vaska; go to sleep or you'll catch it," and soon after he began snoring himself, and everything was still. He could only hear the neigh of the horses, and the guttural cry of a snipe. "Is it really only negative? he repeated to himself. "Well, what of it? It's not my fault." And he began thinking about the next day.

"Tomorrow I'll go out early, and I'll make a point of keeping cool. There are lots of snipe; and there are double snipe too. When I come back there'll be the note from Kitty. Yes, Stiva may be right, I'm not manly with her, I'm tied to her apron strings.... Well, it can't be helped! Negative again...."

Half asleep, he heard the laughter and mirthful talk of Veslovsky and Stepan Arkadyevich. For an instant he opened his eyes: the moon was up, and in the open doorway, brightly lighted up by the moonlight, they were standing talking. Stepan Arkadyevich was saying something of the freshness of one girl, comparing her to a freshly peeled nut, and Veslovsky with his infectious laugh was repeating some words, probably said to him by a

peasant: "Ah, you'd better get round your own wife!" Levin, half asleep, said:

"Gentlemen, tomorrow before daylight!" and fell asleep.

## XII.

Waking up at earliest dawn, Levin tried to wake his companions. Vassenka, lying on his stomach, with one leg in a stocking thrust out, was sleeping so soundly that he could elicit no response. Oblonsky, half asleep, declined to get up so early. Even Laska, who was asleep, curled up in the hay, got up unwillingly, and lazily stretched out and straightened her hind legs one after the other. Getting on his boots, taking his gun, and carefully opening the creaking door of the barn, Levin went out into the road. The coachmen were sleeping near their carriages; the horses were dozing. Only one was lazily eating oats, scattering them in the manger when snorting. It was still gray out-of-doors.

"Why are you up so early, my dear?" the old woman, their hostess, said, coming out of the hut and addressing him affectionately as an old friend.

"Going shooting, auntie. Do I go this way to the marsh?"

"Straight out at the back; by our threshing floor, my dear, and hemp patches; there's a little footpath."

Stepping carefully with her sunburned, bare feet, the old woman conducted Levin, and moved back the gate for him by the threshing floor.

"Straight ahead, and you'll come to the marsh. Our lads drove the horses there yesterday evening."

Laska ran eagerly forward along the little path. Levin followed her with a light, rapid step, continually looking at the sky. He hoped the sun would not be up before he reached the marsh. But the sun did not delay. The moon, which had been bright when he went out, by now shone only like a crescent of quicksilver. The rosy flush of dawn, which one could not help seeing before, now had to be sought to be discerned at all. What before had been undefined, vague blurs in the distant countryside, could now be distinctly seen. They were sheaves of rye. The dew, not visible till the sun was up, wetted Levin's legs and his blouse above his belt in the high-growing, fragrant hemp patch, from which the male plants had already been gathered in. In the transparent stillness of morning the smallest sounds were audible. A bee flew by Levin's ear with the whizzing sound of a bullet. He looked carefully, and saw a second and a third. They were all flying from the beehives behind the hedge, and they disappeared over the hemp patch in the direction of the marsh. The path led straight to the marsh. The marsh could be recognized by the mist which rose from it, thicker in one place and thinner in another, so that the sedge and willow bushes swayed like islands in this mist. At the edge of the marsh and the road peasant boys and men, who had been herding for the night, were lying, and in the dawn all were asleep under their coats. Not far from them were three hobbled horses. One of them clanked a chain. Laska walked beside her master, pressing a little forward and looking round. Passing the sleeping peasants and reaching the first reeds, Levin examined his percussion caps and unleashed his dog. One of the horses, a sleek, dark-brown three-year-old, seeing the dog, started away, switched its tail and snorted. The other horses too were frightened, and splashing through the water with their hobbled legs, and drawing their hoofs out of the thick mud with a squelching sound, they bounded out of the marsh. Laska stopped, looking ironically at the horses and inquiringly at Levin. Levin patted Laska, and whistled as a sign that she might begin.

Laska ran joyfully and anxiously through the quagmire that quaked under her.

Running into the marsh among the familiar scents of roots, marsh plants, and dross, and the extraneous smell of

horse manure, Laska detected at once a smell that pervaded the whole marsh, the scent of that strong-smelling bird that always excited her more than any other. Here and there among the moss and marsh plants this scent was very strong, but it was impossible to determine in which direction it grew stronger or fainter. To find the direction, she had to get farther away from the wind. Not feeling the motion of her legs, Laska bounded with a still gallop, so that at each bound she could stop short, to the right, away from the wind that blew from the east before sunrise, and turned facing the wind. Sniffing in the air with dilated nostrils, she felt at once that not their traces only, but they themselves, were here before her not one, but many. Laska slackened her speed. They were here, but where precisely she could not yet determine. To find the very spot, she began to make a circle, when suddenly her master's voice drew her off. "Laska! Here!" he said, pointing her to a different direction. She stopped, asking him if she had better not go on doing as she had begun. But he repeated his command in an angry voice, pointing to a hummock spot covered with water, where there could not be anything. She obeyed him, pretending she was searching so as to please him, went round it, and went back to her former position, and was at once aware of the scent again. Now when he was not hindering her, she knew what to do, and, without looking at what was under her feet, and to her vexation stumbling over a hummock into the water, but righting herself with her strong, supple legs, she began making the circuit which was to make all clear to her. The scent of them reached her, stronger and stronger, and more and more defined, and all at once it became perfectly clear to her that one of them was here, behind this hummock, five paces in front of her; she stopped, and her whole body was still and rigid. On her short legs she could see nothing in front of her, but by the scent she knew it was sitting not more than five paces off. She stood still, feeling more and more conscious of it, and enjoying it in anticipation. Her tail was stretched straight and tense, and only wagged at the extreme tip. Her mouth was slightly open, her ears raised. One ear had been turned wrong side out as she ran up, and she breathed heavily but warily, and still more warily she turned around, but more with her eyes than her head, to her master. He was coming along with the face she knew so well, though the eyes were always terrible to her. He stumbled over the hummocks as he came, and moved, as she thought, extraordinarily slowly. She thought he came slowly, but he was running.

Noticing Laska's special attitude as she crouched on the ground, as it were, scratching big prints with her hind paws, and with her mouth slightly open, Levin knew she was pointing at double snipe, and with an inward prayer for luck, especially with the first bird, he ran up to her. Coming quite close up to her, he could from his height look beyond her, and he saw with his eyes what she was seeing with her nose. In a space between two little hummocks, at a couple of yards' distance, he could see a double snipe. Turning its head, it was listening. Then lightly preening and folding its wings, it disappeared round a corner with a clumsy wag of its tail.

"Fetch it, fetch it!" shouted Levin, giving Laska a shove from behind.

"But I can't go," thought Laska. "Where am I to go? From here I feel them, but if I move forward I shall know nothing of where they are, or who they are." But then he shoved her with his knee, and in an excited whisper said, "Fetch it, Lassochka, fetch it."

"Well, if that's what he wishes, I'll do it, but I can't answer for myself now," she thought, and darted forward as fast as her legs would carry her between the hummocks. She scented nothing now; she could only see and hear, without understanding anything.

Ten paces from her former place a double snipe rose with a guttural cry and the peculiar convex sound of its wings. And immediately after the shot it splashed heavily with its white breast on the wet mire. Another bird did not linger, but rose behind Levin, without the dog's offices.

When Levin turned toward it, it was already some way off. But his shot caught it. Flying twenty paces farther, the second double snipe rose upward, and, whirling round like a ball, dropped heavily on a dry place.

"Come, this is going to be some good!" thought Levin, packing the warm and fat snipe into his gamebag. "Eh, Laska, will it be good?"



## Anna Karenina

When Levin, after reloading his gun, moved on, the sun had fully risen, though unseen behind clouds. The moon had lost all of its luster, and was like a white cloud in the sky. Not a single star could be seen. The soggy places, silvery with dew before, now shone like gold. The rusty pools were all like amber. The blue of the grass had changed to yellow green. The marsh birds twittered and swarmed about the brook and upon the bushes that glittered with dew and cast long shadows. A hawk woke up and settled on a haycock, turning its head from side to side and looking discontentedly at the marsh. Crows were flying about the field, and a barelegged boy was driving the horses to an old man, who had got up from under his long coat and was combing his hair. The smoke from the gun was white as milk over the green of the grass.

One of the boys ran up to Levin.

"Uncle, there were ducks here yesterday!" he shouted to him, and he walked a little way off behind him.

And Levin was doubly pleased, in sight of the boy, who expressed his approval, at killing three jacksnipe, one after another, straight off.

### XIII.

The sportsman's saying, that if the first beast or the first bird is not missed, the shooting will be lucky, turned out correct.

At ten o'clock Levin, weary, hungry, and happy after a tramp of thirty verstas, returned to his night's lodging with nineteen head of fine game and one duck, which he tied to his belt, as it would not go into the gamebag. His companions had long been awake, and had had time to get hungry and have breakfast.

"Wait a bit, wait a bit, I know there are nineteen," said Levin, counting a second time over the double snipe and jacksnipe, that looked so much less important now, bent and dry and bloodstained, with heads crookedly to one side, than they did when they were flying.

The number was verified, and Stepan Arkadyevich's envy pleased Levin. He was pleased too on returning to find that the man sent by Kitty with a note was already here.

"I am perfectly well and happy. If you were uneasy about me, you can feel easier than ever. I've a new bodyguard, Marya Vlassyevna." (This was the midwife, a new and important personage in Levin's domestic life.) "She has come to have a look at me. She found me perfectly well, and we are holding her till you are back. All are happy and well, and please, don't be in a hurry to come back, but, if the sport is good, stay another day."

These two pleasures, his lucky shooting and the letter from his wife, were so great that two slightly disagreeable incidents passed lightly over Levin. One was that the chestnut trace horse, who had been unmistakably overworked on the previous day, was off his feed and out of sorts. The coachman said the horse was overstrained.

"Overdriven yesterday, Konstantin Dmitrievich!" he said. "Yes, indeed! Driving ten miles without any sense!"

The other unpleasant incident, which for the first minute destroyed his good humor, though later he laughed at it a great deal, was to find that of all the provisions which Kitty had provided in such abundance, that one would have thought there was enough for a week, nothing was left. On his way back, tired and hungry, from shooting, Levin had so distinct a vision of meat pies that as he approached the hut he seemed to smell and taste them, as Laska had smelt the game, and he immediately told Philip to give him some. It appeared that there were no pies left nor even any chicken.

## Anna Karenina

"Well, this fellow's appetite!" said Stepan Arkadyevich, laughing and pointing at Vassenka Veslovsky. "I never suffer from loss of appetite, but he's really marvelous!..."

"Well, it can't be helped," said Levin, looking gloomily at Veslovsky. "Well, Philip, give me some beef, then."

"The beef's been eaten, and the bones given to the dogs," answered Philip.

Levin was so hurt that he said, in a tone of vexation: "You might have left me something!" and he felt ready to cry.

"Then disembowel the game," he said in a shaking voice to Philip, trying not to look at Vassenka, "and cover them with some nettles. And you might at least ask for some milk for me."

But when he had drunk some milk, he felt ashamed immediately at having shown his annoyance to a stranger, and he began to laugh at his hungry mortification.

In the evening they went shooting again, and Veslovsky, too, had several successful shots, and in the night they drove home.

Their homeward journey was as lively as their drive out had been. Veslovsky sang songs and related with enjoyment his adventures with the peasants, who had regaled him with vodka, and said to him, "Excuse our homely ways," and his night's adventures with tug of war, and the servant girl, and the peasant, who had asked him was he married and on learning that he was not, said to him: "Well, mind you don't run after other men's wives you'd better get round your own." These words had particularly amused Veslovsky.

"Altogether, I've enjoyed our outing awfully. And you, Levin?"

"I have, very much," Levin said quite sincerely. It was particularly delightful to him to have got rid of the hostility he had been feeling toward Vassenka Veslovsky at home, and to feel instead the most friendly disposition to him.

## XIV.

Next day at ten o'clock Levin, who had already gone his rounds, knocked at the room where Vassenka had been put for the night.

"Entrez!" Veslovsky called to him. "Excuse me, I've only just finished my ablutions," he said, smiling, standing before him in his underclothes only.

"Don't mind me, please," Levin sat down in the window. "Have you slept well?"

"Like the dead. What sort of day is it for shooting?"

"What will you take, tea or coffee?"

"Neither. I'll wait till lunch. I'm really ashamed. I suppose the ladies are down? A walk now would be capital. You show me your horses."

After walking about the garden, visiting the stable, and even doing some gymnastic exercises together on the parallel bars, Levin returned to the house with his guest, and went with him into the drawing room.

## Anna Karenina

"We had splendid shooting, and so many delightful experiences!" said Veslovsky, going up to Kitty, who was sitting at the samovar. "What a pity ladies are cut off from these delights!"

"Well, I suppose he must say something to the lady of the house," Levin said to himself. Again he fancied something in the smile, in the all-conquering air with which their guest addressed Kitty...

The Princess, sitting on the other side of the table with Marya Vlassyevna and Stepan Arkadyevich, called Levin to her side, and began to talk to him about moving to Moscow for Kitty's confinement, and getting ready rooms for them. Just as Levin had disliked all the trivial preparations for his wedding, as derogatory to the grandeur of the event, now he felt still more offensive the preparations for the approaching birth, the date of which they reckoned, it seemed, on their fingers. He tried to turn a deaf ear to these discussions of the best patterns of long clothes for the coming baby; tried to turn away and avoid seeing the mysterious, endless strips of knitting, the triangles of linen, to which Dolly attached special importance, and so on. The birth of a son (he was certain it would be a son) which was promised him, but which he still could not believe in so marvelous it seemed presented itself to his mind, on one hand, as a happiness so immense, and therefore so incredible; on the other, as an event so mysterious, that this assumption of a definite knowledge of what would be, and consequent preparation for it, as for something ordinary that did happen to people, jarred on him as confusing and humiliating.

But the Princess did not understand his feelings, and put down his reluctance to think and talk about it to carelessness and indifference, and so she gave him no peace. She had commissioned Stepan Arkadyevich to look at an apartment, and now she called Levin to her.

"I know nothing about it, Princess. Do as you think fit," he said.

"You must decide when you will move."

"I really don't know. I know millions of children are born away from Moscow, and doctors... Why..."

"But if so..."

"Oh, no, as Kitty wishes."

"We can't talk to Kitty about it! Do you want me to frighten her? Why, this spring Natalie Golitzina died from having an ignorant doctor."

"I will do just what you say," he said gloomily.

The Princess began talking to him, but he did not hear her. Though the conversation with the Princess had indeed jarred upon him, he was gloomy not on account of that conversation, but from what he saw at the samovar.

"No, it's impossible," he thought, glancing now and then at Vassenka bending over Kitty, telling her something with his charming smile, and at her, flushed and disturbed.

There was something unclean in Vassenka's attitude, in his eyes, in his smile. Levin even saw something unclean in Kitty's attitude and look. And again the light died away in his eyes. Again, as before, all of a sudden, without the slightest transition, he felt cast down from a pinnacle of happiness, peace, and dignity, into an abyss of despair, rage, and humiliation. Again everything and everyone had become hateful to him.

"You do just as you think best, Princess," he said again, looking round.

## Anna Karenina

"Uneasy lies the head that wears a crown!" Stepan Arkadyevich said playfully, hinting, evidently, not simply at the Princess's conversation, but at the cause of Levin's agitation, which he had noticed. "How late you are today, Dolly!"

Everyone got up to greet Darya Alexandrovna. Vassenska only rose for an instant, and, with the lack of courtesy to ladies characteristic of the modern young man, he scarcely bowed, and resumed his conversation again, laughing at something.

"Masha has been almost the end of me. She did not sleep well, and is dreadfully capricious today," said Dolly.

The conversation Vassenska had started with Kitty was running on the same lines as on the previous evening discussing Anna, and whether love is to be put higher than worldly considerations. Kitty disliked the conversation, and she was disturbed both by the subject and the tone in which it was conducted, and especially by the knowledge of the effect it would have on her husband. But she was too simple and unsophisticated to know how to cut short this conversation, or even to conceal the superficial pleasure afforded her by the young man's very obvious admiration. She wanted to stop this conversation, but she did not know what to do. Whatever she did, she knew it would be observed by her husband, and the worst interpretation put on it. And, in fact, when she asked Dolly what was wrong with Masha, and Vassenska, waiting till this uninteresting conversation was over, began to gaze indifferently at Dolly, the question struck Levin as an unnatural and disgusting piece of hypocrisy.

"What do you say, shall we go and look for mushrooms today?" said Dolly.

"By all means, please, and I shall come too," said Kitty, and she blushed. She wanted from politeness to ask Vassenska whether he would come, and she did not ask him. "Where are you going, Kostia?" she asked her husband with a guilty face, as he passed by her with a resolute step. This guilty air confirmed all his suspicions.

"The mechanic came when I was away; I haven't seen him yet," he said, not looking at her.

He went downstairs, but before he had time to leave his study he heard his wife's familiar footsteps running with reckless speed to him.

"What do you want?" he said to her shortly. "We are busy."

"I beg your pardon," she said to the German mechanic; "I want a few words with my husband."

The German would have left the room, but Levin said to him:

"Don't disturb yourself"

"The train is at three?" queried the German. "I mustn't be late."

Levin did not answer him, but walked out himself with his wife.

"Well, what have you to say to me?" he said to her in French.

He did not look her in the face, and did not care to see that she in her condition was trembling all over, and had a piteous, crushed look.

"I... I want to say that we can't go on like this; that this is misery..." she said.

"The servants are here at the buttery," he said angrily; "don't make a scene."

"Well, let's go in here!"

They were standing in the passage room. Kitty would have gone into the next room, but there the English governess was giving Tania a lesson.

"Well, come into the garden."

In the garden they came upon a peasant weeding the path. And no longer considering that the peasant could see her tear-stained and his agitated face, that they looked like people fleeing from some disaster, they went on with rapid steps, feeling that they must speak out and clear up misunderstandings, must be alone together, and so get rid of the misery they were both feeling.

"We can't go on like this! It's misery! I am wretched; you are wretched. What for?" she said, when they had at last reached a solitary garden seat at a turn in the linden tree avenue.

"But tell me one thing: was there in his tone anything unseemly, unclean, humiliatingly horrible?" he said, standing before her again in the same position, with his clenched fists on his chest, as he had stood before her that night.

"Yes," she said in a shaking voice; "but, Kostia, surely you see I'm not to blame? All the morning I've been trying to take a tone... But such people... Why did he come? How happy we were!" she said, breathless with the sobs that shook her.

Although nothing had been pursuing them, and there was nothing to run away from, and they could not possibly have found anything very delightful on that garden seat, the gardener saw with astonishment that they passed him on their way home with comforted and radiant faces.

## XV.

After escorting his wife upstairs, Levin went to Dolly's part of the house. Darya Alexandrovna, for her part, was also in great distress that day. She was walking about the room, talking angrily to a little girl, who stood in the corner bawling.

"And you shall stand all day in the corner, and have your dinner all alone, and not see one of your dolls, and I won't make you a new frock," she said, not knowing how to punish her.

"Oh, she is a disgusting child!" she turned to Levin. "Where does she get such wicked propensities?"

"Why, what has she done?" Levin said without much interest, for he had wanted to ask her advice, and so was annoyed that he had come at an unlucky moment.

"Grisha and she went into the raspberries, and there... I can't tell you really what she did. It's a thousand pities Miss Elliot's not with us. This one sees to nothing she's a machine.... Figurez-vous que la petite?..."

And Darya Alexandrovna described Masha's crime.

"That proves nothing; it's not a question of evil propensities at all, it's simply mischief," Levin assured her.

"But you are upset about something? What have you come for?" asked Dolly. "What's going on there?"

## Anna Karenina

And in the tone of her question Levin heard that it would be easy for him to say what he had meant to say.

"I've not been in there, I've been alone in the garden with Kitty. We've had a quarrel for the second time since... Stiva came."

Dolly looked at him with her shrewd, comprehending eyes.

"Come, tell me, honor bright, has there been... Not in Kitty, but in that gentleman's behavior, a tone which might be unpleasant not unpleasant, but horrible, offensive to a husband?"

"You mean, how shall I say... Stand there stand in the corner!" she said to Masha, who, detecting a faint smile on her mother's face, had been turning round. "The opinion of the world would be that he is behaving as young men do behave. Il fait le cour a une jeune et jolie femme, and a husband who's a man of the world should only be flattered by it."

"Yes, yes," said Levin gloomily; "but you noticed it?"

"Not only I, but Stiva noticed it. Just after breakfast he said to me: Je crois que Veslovsky fait un petit brin de cour a Kitty."

"Well, that's all right then; now I'm satisfied. I'll send him away," said Levin.

"What do you mean! Are you crazy?" Dolly cried in horror. "Nonsense, Kostia, only think!" she said, laughing. "You can go now to Fanny," she said to Masha. "No, if you wish it, I'll speak to Stiva. He'll take him away. He can say you're expecting visitors. Altogether he doesn't fit into the house."

"No, no, I'll do it myself."

"But you'll quarrel with him?"

"Not a bit. I shall so enjoy it," Levin said, his eyes flashing with real enjoyment. "Come, forgive her, Dolly, she won't do it again," he said of the little sinner, who had not gone to Fanny, but was standing irresolutely before her mother, waiting and looking up from under her brows to catch her mother's eye.

The mother glanced at her. The child broke into sobs, hid her face on her mother's lap, and Dolly laid her thin, tender hand on her head.

"And what is there in common between us and him?" thought Levin, and he went off to look for Veslovsky.

As he passed through the hall he gave orders for the carriage to be got ready to drive to the station.

"The spring was broken yesterday," said the footman.

"Well, the tarantass then, and make haste. Where's the visitor?"

"The gentleman's gone to his room."

Levin came upon Vassenka at the moment when the latter, having unpacked his things from his trunk, and laid out some new songs, was putting on his leather gaiters to go out riding.

## Anna Karenina

Whether there was something exceptional in Levin's face, or that Vassenka was himself conscious that *ce petit brin de cour* he was making was out of place in this family; he was somewhat (as much as a young man in society can be) disconcerted at Levin's entrance.

"You ride in gaiters?"

"Yes, it's much cleaner," said Vassenka, putting his fat leg on a chair, fastening the bottom hook, and smiling with simplehearted good humor.

He was undoubtedly a good-natured fellow, and Levin felt sorry for him and ashamed of himself, as his host, when he saw the shy look on Vassenka's face.

On the table lay a piece of stick which they had broken together that morning at gymnastics, trying to raise up the swollen bars. Levin took the fragment in his hands and began breaking off the split end of the stick, not knowing how to begin.

"I wanted..." He paused, but suddenly, remembering Kitty and everything that had happened, he said, looking him resolutely in the face: "I have ordered the horses to be put to for you."

"How so?" Vassenka began in surprise. "To drive where?"

"For you to drive to the station," Levin said gloomily pinching off the end of the stick.

"Are you going away, or has something happened?"

"It happens that I expect visitors," said Levin, his strong fingers more and more rapidly breaking off the ends of the split stick. "And I'm not expecting visitors, and nothing has happened, but I beg you to go away. You can explain my rudeness as you like."

Vassenka drew himself up.

"I beg you to explain..." he said with dignity, understanding at last.

"I can't explain," Levin said softly and deliberately, trying to control the trembling of his jaw; "and you'd better not ask."

And as the split ends were all broken off, Levin clutched the thick ends in his finger, split the stick in two, and carefully caught the end as it fell.

Probably the sight of those tense hands, of the same muscles he had proved that morning at gymnastics, of the glittering eyes, the soft voice, and quivering jaws, convinced Vassenka better than any words. He bowed, shrugging his shoulders, and smiling contemptuously.

"May I not see Oblonsky?"

The shrug and the smile did not irritate Levin. "What else was there for him to do?" he thought.

"I'll send him to you at once."

"What madness is this?" Stepan Arkadyevich said when, after hearing from his friend that he was being turned out of the house, he found Levin in the garden, where he was walking about waiting for his guest's departure. "Mais

## Anna Karenina

c'est ridicule! What flea has bitten you? Mais c'est du dernier ridicule! What did you think, if a young man..."

But the place where Levin had been bitten was evidently still sore, for he turned pale again, when Stepan Arkadyevich would have enlarged on the reason, and he himself cut him short.

"Please don't go into it! I can't help it. I feel ashamed of the way I'm treating you and him. But it won't be, I imagine, a great grief to him to go, and his presence was distasteful to me and to my wife."

"But it's insulting to him! Et puis c'est ridicule."

"And to me it's both insulting and distressing! And I'm not in fault in any way, and there's no need for me to suffer."

"Well, this I didn't expect of you! On peut etre jaloux, mais a ce point c'est du dernier ridicule!"

Levin turned quickly, and walked away from him into the depths of the avenue, and he went on walking up and down alone. Soon he heard the rumble of the tarantass, and saw from behind the trees how Vassenka, sitting in the hay (unluckily there was no seat in the tarantass) in his Scotch cap, was driven along the avenue, jolting up and down over the ruts.

"What's this?" Levin thought, when a footman ran out of the house and stopped the tarantass. It was the mechanic, whom Levin had totally forgotten. The mechanic, bowing low, said something to Veslovsky, then clambered into the tarantass and they drove off together.

Stepan Arkadyevich and the Princess were much upset by Levin's action. And he himself felt not only in the highest degree ridicule, but also utterly guilty and disgraced. But remembering what sufferings he and his wife had been through, when he asked himself how he should act another time, he answered that he would do precisely the same.

In spite of all this, toward the end of that day, everyone, except the Princess, who could not pardon Levin's action, became extraordinarily lively and good-humored, like children after a punishment, or grown-up people after a dreary, ceremonious reception, so that by the evening Vassenka's dismissal was spoken of, in the absence of the Princess, as though it were some remote event. And Dolly, who had inherited her father's gift of humorous storytelling, made Varenka helpless with laughter as she related for the third and fourth time, always with fresh humorous additions, how she had just put on her new ribands for the benefit of the visitor, and, on going into the drawing room, had suddenly heard the rumble of the chariot. And who should be in the chariot but Vassenka himself, with his Scotch cap, and his songs, and his gaiters, and all, sitting in the hay.

"If only you'd ordered out the carriage! But no! And then I hear: 'Stop!' Oh, I thought they've relented. I look out and a fat German is being sat down by him, and they're driving away... And my new ribands all for nothing!..."

## XVI.

Darya Alexandrovna carried out her intention and went to see Anna. She was sorry to annoy her sister and to do anything Levin disliked. She quite understood how right the Levins were in not wishing to have anything to do with Vronsky. But she felt she must go and see Anna, and show her that her feelings could not be changed, in spite of the change in her position.

That she might be independent of the Levins in this expedition, Darya Alexandrovna sent to the village to hire



horses for the drive; but Levin learning of it went to her to protest.

"What makes you suppose that I dislike your going? But, even if I did dislike it, I should still more dislike your not taking my horses," he said. "You never told me that you were going definitely. Hiring horses in the village is disagreeable to me, and, what's of more importance, they'll undertake the job and never get you there. I have horses. And if you don't want to wound me, you'll take mine."

Darya Alexandrovna had to consent, and on the day fixed Levin had ready for his sister-in-law a set of four horses and relays, getting them together from the farm and saddle horses not at all a smart-looking set, but capable of taking Darya Alexandrovna the whole distance in a single day. At that moment, when horses were wanted for the Princess, who was going, and for the midwife, it was a difficult matter for Levin to make up the number, but the duties of hospitality would not let him allow Darya Alexandrovna to hire horses when staying in his house. Moreover, he was well aware that the twenty roubles that would be asked for the journey were a serious matter for her; Darya Alexandrovna's pecuniary affairs, which were in a very unsatisfactory state, were taken to heart by the Levins as if they were their own.

Darya Alexandrovna, by Levin's advice, started before daybreak. The road was good, the carriage comfortable, the horses trotted along merrily, and on the box, beside the coachman, sat the countinghouse clerk, whom Levin was sending instead of a groom for greater security. Darya Alexandrovna dozed and waked up only on reaching the inn where the horses were to be changed.

After drinking tea at the same well-to-do peasant's with whom Levin had stayed on the way to Sviiazhsy's, and chatting with the women about their children, and with the old man about Count Vronsky, whom the latter praised very highly, Darya Alexandrovna, at ten o'clock, went on again. At home, looking after her children, she had no time to think. So now, after this journey of four hours, all the thoughts she had suppressed before rushed swarming into her brain, and she thought over all her life as she never had before, and from the most different points of view. Her thoughts seemed strange even to herself. At first she thought about the children, about whom she was uneasy, although the Princess and Kitty (she reckoned more upon her) had promised to look after them. "If only Masha does not begin her naughty tricks, if Grisha isn't kicked by a horse, and Lily's stomach isn't upset again!" But these questions of the present were succeeded by questions of the immediate future. She began thinking how she had to get a new flat in Moscow for the coming winter, to renew the drawing-room furniture, and to make her elder girl a cloak. Then questions of the more remote future occurred to her: how she was to place her children in the world. "The girls are all right," she thought; "but the boys?"

"It's all very fine for me to be teaching Grisha, but of course that's only because I am free myself now, I'm not with child. Stiva, of course, there's no counting on. And with the help of good-natured friends I can bring them up; but if there's another baby coming?..." And the thought struck her how unjustly it was said, that the curse laid on woman was that in sorrow she should bring forth children. "The birth itself, that's nothing; but the months of carrying the child that's what's so intolerable," she thought, picturing to herself her last pregnancy, and the death of the last baby. And she recalled the conversation she had just had with the young woman at the inn. On being asked whether she had any children, the handsome young woman had answered cheerfully.

"I had a girl baby, but God set me free; I buried her last Lent."

"Well, did you grieve very much for her?" asked Darya Alexandrovna.

"Why grieve? The old man has grandchildren enough as it is. It was only a trouble. No working, nor nothing. Only a tie."

This answer had struck Darya Alexandrovna as revolting in spite of the good-natured and pleasing face of the young woman; but now she could not help recalling these words. In those cynical words there was indeed a grain

of truth.

"Yes, in general," thought Darya Alexandrovna, looking back over her whole existence during those fifteen years of her married life, "pregnancy, sickness, mental incapacity, indifference to everything and, most of all, hideousness. Kitty, young and pretty as she is, even Kitty has lost her looks; and I, when I'm with child, become hideous, I know it. The birth, the agony, the hideous agonies, that last moment... Then the nursing, the sleepless nights, the fearful pains..."

Darya Alexandrovna shuddered at the mere recollection of the pain from sore breasts which she had suffered with almost every child. "Then the children's illnesses, that everlasting apprehension; then bringing them up; evil propensities" (she thought of little Masha's crime among the raspberries), "education, Latin it's all so incomprehensible and difficult. And, on the top of it all, the death of these children." And there rose again before her imagination the cruel memory that always tore her mother's heart, of the death of her last little baby, who had died of croup; his funeral, the callous indifference of all at the little pink coffin, and her own torn heart, and her lonely anguish at the sight of the pale little brow with the curls falling on temples, and the open, wondering little mouth seen in the coffin at the moment when it was being covered with the little pink lid with a gallooned cross on it.

"And all this what's it for? What is to come of it all? This: I'm wasting my life, never having a moment's peace, either with child, or nursing a child, forever irritable, peevish, wretched myself and worrying others, repulsive to my husband, while the children are growing up unhappy, badly educated and penniless. Even now, if it weren't for spending the summer at the Levins', I don't know how we should be managing to live. Of course Kostia and Kitty have so much tact that we don't feel it; but it can't go on. They'll have children, they won't be able to keep us; it's a drag on them as it is. How is papa, who has hardly anything left for himself, to help us? So that I can't even bring the children up by myself, and may find it hard with the help of other people, at the cost of humiliation. Why, even if we suppose the greatest good luck, that the children don't die, and I bring them up somehow. At the very best they'll simply be decent people. That's all I can hope for. And to gain simply that what agonies, what toil!... One's whole life ruined!" Again she recalled what the young peasant woman had said, and again she was revolted at the thought; but she could not help admitting that there was a grain of brutal truth in the words.

"Is it far now, Mikhaila?" Darya Alexandrovna asked the countinghouse clerk, to turn her mind from thoughts that were frightening her.

"From this village, they say, it's seven verstas."

The carriage drove along the village street and onto a bridge. On the bridge was a crowd of peasant women with coils of ties for the sheaves on their shoulders, cheerfully chattering. They stood still on the bridge, staring inquisitively at the carriage. All the faces turned to Darya Alexandrovna looked to her healthy and happy, making her envious of their enjoyment of life. "They're all living, they're all enjoying life," Darya Alexandrovna still mused when she had passed the peasant women and was driving uphill again at a trot, seated comfortably on the soft springs of the old carriage, "while I, let out, as it were from prison, from the world of worries that fret me to death, am only looking about me now for an instant. They all live; those peasant women, and my sister Natalie, and Varenka, and Anna, whom I am going to see all, but not I."

"And they attack Anna. What for? Am I any better? I have, at any rate, a husband I love not as I should like to love him still, I do love him; while Anna never loved hers. How is she to blame? She wants to live. God has put that in our hearts. Very likely I should have done the same. Even to this day I don't feel sure I did right in listening to her at that terrible time when she came to me in Moscow. I ought then to have cast off my husband and have begun my life anew. I might have loved and have been loved in reality. And is it any better as it is? I don't respect him. He's necessary to me," she thought about her husband, "and I put up with him. Is that any better? At that time I could still have been admired, I had beauty left me still," Darya Alexandrovna pursued her thoughts, and she

## Anna Karenina

would have liked to look at herself in the looking glass. She had a traveling looking glass in her handbag, and she wanted to take it out; but looking at the backs of the coachman and the swaying countinghouse clerk, she felt that she would be ashamed if either of them were to look round, and she did not take out the glass.

But, without looking in the glass, she thought that even now it was not too late; and she thought of Sergei Ivanovich, who was always particularly attentive to her, of Stiva's goodhearted friend, Turovtsin, who had helped her nurse her children through the scarlatina, and was in love with her. And there was someone else, quite a young man, who her husband had told her it as a joke thought her more beautiful than either of her sisters. And the most passionate and impossible romances rose before Darya Alexandrovna's imagination. "Anna did quite right, and certainly I shall never reproach her for it. She is happy, she makes another person happy, and she's not broken down as I am, but most likely just as she always was, bright, clever, open to every impression," thought Darya Alexandrovna and a sly smile curved her lips, for, as she pondered on Anna's love affair, Darya Alexandrovna constructed on parallel lines an almost identical love affair for herself, with an imaginary composite figure, the ideal man who was in love with her. She, like Anna, confessed the whole affair to her husband. And the amazement and perplexity of Stepan Arkadyevich at this avowal made her smile.

In such daydreams she reached the turning of the highroad that led to Vozdivzhenskoe.

### XVII.

The coachman pulled up his four horses and looked round to the right, to a field of rye, where some peasants were sitting near a telega. The countinghouse clerk was just going to jump down, but on second thought he shouted peremptorily to the peasants instead, and beckoned to them to come up. The wind, that seemed to blow as they drove, dropped when the carriage stood still; gadflies settled on the steaming horses that angrily shook them off. The metallic clank of a whetstone against a scythe, that came to them from the telega, ceased. One of the peasants got up and came toward the carriage.

"Well, you are slow!" the countinghouse clerk shouted angrily to the peasant who was stepping slowly with his bare feet over the ruts of the unbeaten, sun-baked road. "Come along, do!"

A curly-headed old man with a bit of bast tied round his hair, and his bent back dark with perspiration, came toward the carriage, quickening his steps, and took hold of the mudguard with his sunburned hand.

"Vozdivzhenskoe the manor house? The Count's?" he repeated. "Go on to the end of this slope. Then turn to the left. Straight along the avenue, and you'll come right upon it. But whom do you want? The Count himself?"

"Well, are they at home, my good man?" Darya Alexandrovna said vaguely, not knowing how to ask about Anna, even of this peasant.

"At home for sure," said the peasant, shifting from one bare foot to the other, and leaving a distinct print of five toes and a heel in the dust. "Sure to be at home," he repeated, evidently eager to talk. "Only yesterday visitors arrived. There's a sight of visitors come. What do you want?" He turned round and called to a lad, who was shouting something to him from the telega. "Oh! They all rode by here not long since, to look at a reaping machine. They'll be home by now. And who may you belong to?..."

"We've come a long way," said the coachman, climbing onto the box. "So it's not far?"

"I tell you, it's just here. As soon as you get out..." he said, keeping hold all the while of the mudguard of the carriage.

## Anna Karenina

A healthy-looking, broad-shouldered young fellow came up too.

"What, is it laborers they want for the harvest?" he asked.

"I don't know, my boy."

"So you keep to the left, and you'll come right on it," said the peasant, unmistakably loath to let the travelers go, and eager to converse.

The coachman started the horses, but they were only just turning off when the peasant shouted: "Stop! Hi, friend! Stop!" The coachman stopped.

"They're coming! They're yonder!" shouted the peasant. "See what a turnout!" he said, pointing to four persons on horseback, and two in a charabanc, coming along the road.

They were Vronsky with a jockey, Veslovsky, and Anna on horseback, and Princess Varvara and Sviiashsky in the charabanc. They had gone out to look at the working of a new reaping machine.

When the carriage stopped, the party on horseback were coming at a walking pace. Anna was in front beside Veslovsky. Anna was quietly walking her horse, a sturdy English cob with cropped mane and short tail; Anna, with her beautiful head, her black hair straying loose under her high hat, her full shoulders, her slender waist in her black riding habit, and all the ease and grace of her deportment, impressed Dolly.

For the first minute it seemed to her unsuitable for Anna to be on horseback. The conception of riding on horseback for a lady was, in Darva Alexandrovna's mind, associated with ideas of youthful flirtation and frivolity, which, in her opinion, was unbecoming in Anna's position. But when she had scrutinized her, seeing her closer, she was at once reconciled to her riding. In spite of her elegance, everything was so simple, quiet and dignified in the attitude, the dress and the movements of Anna, that nothing could have been more natural.

By the side of Anna, on a hot-looking gray cavalry horse, was Vassenka Veslovsky in his Scotch cap with floating ribbons, his stout legs stretched out in front, obviously pleased with his own appearance. Darya Alexandrovna could not suppress a good-humored smile as she recognized him. Behind rode Vronsky on a dark bay mare, obviously heated from galloping. He was holding her in, pulling at the reins.

After him rode a little man in the dress of a jockey. Sviiashsky and Princess Varvara in a new charabanc with a big, raven-black trotting horse, overtook the party on horseback.

Anna's face suddenly beamed with a joyful smile at the instant when, in the little figure huddled in a corner of the old carriage, she recognized Dolly. She uttered a cry, started in the saddle, and set her horse into a gallop. On reaching the carriage she jumped off without assistance, and, holding up her riding habit, she ran up to greet Dolly.

"I thought it was you and dared not think it. How delightful! You can't fancy how glad I am!" she said, at one moment pressing her face against Dolly and kissing her, and at the next holding her off and examining her with a smile. "Here's a delightful surprise, Alexei!" she said, looking round at Vronsky, who had dismounted, and was walking toward them.

Vronsky, taking off his tall gray hat, went up to Dolly.

"You wouldn't believe how glad we are to see you," he said, giving peculiar significance to the words, and showing his strong white teeth in a smile.

## Anna Karenina

Vassenka Veslovsky, without getting off his horse, took off his cap and greeted the visitor by gleefully waving the ribbons over his head.

"That's Princess Varvara," Anna said in reply to a glance of inquiry from Dolly as the charabanc drove up.

"Ah!" said Darya Alexandrovna, and unconsciously her face betrayed her dissatisfaction.

Princess Varvara was her husband's aunt, and she had long known her, and did not respect her. She knew that Princess Varvara had passed her whole life toadying to her rich relations, but that she should now be sponging on Vronsky, a man who was nothing to her, mortified Dolly on account of her kinship with her husband. Anna noticed Dolly's expression, and was disconcerted by it. She blushed, dropped her riding habit, and stumbled over it.

Darya Alexandrovna went up to the charabanc and coldly greeted Princess Varvara. Sviiashsky, too, she knew. He inquired how his queer friend with the young wife was, and running his eyes over the ill-matched horses and the carriage with its patched mudguards, proposed to the ladies that they should get into the charabanc.

"And I'll get in this vehicle," he said. "The horse is quiet, and the Princess drives capitally."

"No, stay as you were," said Anna, coming up, "and we'll go in the carriage," and, taking Dolly's arm, she drew her away.

Darya Alexandrovna's eyes were fairly dazzled by the elegant carriage of a pattern she had never seen before, the splendid horses, and the elegant and gorgeous people surrounding her. But what struck her most of all was the change that had taken place in Anna, whom she knew so well and loved. Any other woman, a less close observer, not knowing Anna before, and particularly not having thought as Darya Alexandrovna had been thinking on the road, would not have noticed anything special in Anna. But now Dolly was struck by that temporary beauty, which is only found in women during the moments of love, and which she saw now in Anna's face. Everything in her face, the clearly marked dimples in her cheeks and chin, the line of her lips, the smile which, as it were, fluttered about her face, the brilliance of her eyes, the grace and rapidity of her movements, the fullness of the notes of her voice, even the manner in which, with a sort of angry friendliness, she answered Veslovsky when he asked permission to get on her cob, so as to teach it to gallop with the right leg foremost—it was all peculiarly fascinating, and it seemed as if Anna herself were aware of it, and rejoicing in it.

When both the women were seated in the carriage, a sudden embarrassment came over both of them. Anna was disconcerted by the intent look of inquiry Dolly fixed upon her. Dolly was embarrassed because after Sviiashsky's phrase about "this vehicle," she could not help feeling ashamed of the dirty old carriage in which Anna was sitting with her. The coachman Philip and the countinghouse clerk were experiencing the same sensation. The countinghouse clerk, to conceal his confusion, busied himself settling the ladies, but Philip the coachman became sullen, and was bracing himself not to be overawed in future by this external superiority. He smiled ironically, looking at the raven horse, and was already deciding in his own mind that this smart trotter in the charabanc was only good for promenade, and wouldn't do forty verstas straight off in the heat.

The peasants had all got up from the telega and were inquisitively and mirthfully staring at the meeting of the friends, making their comments on it.

"They're pleased, too; haven't seen each other for a long while," said the curly-headed old man with the bast round his hair.

"I say, Uncle Gherasim, if we could take that raven horse now, to cart the corn, that 'ud be quick work!"

## Anna Karenina

"Look—ee! Is that a woman in breeches?" said one of them, pointing to Vassenka Veslovsky sitting in a sidesaddle.

"Nay, a man! See how smartly he's going it!"

"Eh, lads! Seems we're not going to sleep, then?"

"What chance of sleep today!" said the old man, with a sidelong look at the sun. "Midday's past, look—ee! Get your hooks, and come along!"

### XVIII.

Anna looked at Dolly's thin, careworn face, with its wrinkles filled with dust from the road, and she was on the point of saying what she was thinking—that is, that Dolly had grown thinner. But, conscious that she herself had grown handsomer, and that Dolly's eyes were telling her so, she sighed and began to speak about herself.

"You are looking at me," she said, "and wondering how I can be happy in my position? Well! It's shameful to confess, but I... I'm inexcusably happy. Something magical has happened to me, like a dream, when you're frightened, panic-stricken, and all of a sudden you wake up and all the horrors are no more. I have waked up. I have lived through the misery, the dread, and now for a long while past, especially since we've been here, I've been so happy!..." she said, with a timid smile of inquiry looking at Dolly.

"How glad I am!" said Dolly smiling, involuntarily speaking more coldly than she wanted to. "I'm very glad for you. Why haven't you written to me?"

"Why?... Because I hadn't the courage.... You forget my position...."

"To me? Hadn't the courage? If you knew how I... I look at..."

Darya Alexandrovna wanted to express her thoughts of the morning, but for some reason it seemed to her now out of place to do so.

"But of that we'll talk later. What's this—what are all these buildings?" she asked, wanting to change the conversation and pointing to the red and green roofs that came into view behind the green hedges of acacia and lilac. "Quite a little town."

But Anna did not answer.

"No, no! How do you look at my position, what do you think of it?" she asked.

"I consider..." Darya Alexandrovna was beginning, but at that instant Vassenka Veslovsky, having brought the cob to gallop with the right leg foremost, galloped past them, bumping heavily up and down in his short jacket on the chamois leather of the sidesaddle. "He's doing it, Anna Arkadyevna!" he shouted. Anna did not even glance at him; but again it seemed to Darya Alexandrovna out of place to enter upon such a long conversation in the carriage, and so she cut short her thought.

"I don't think anything," she said, "but I always loved you, and if one loves anyone, one loves the whole person, just as that person is, and not as one would like her or him to be...."

Anna, taking her eyes off her friend's face and dropping her eyelids (this was a new habit Dolly had not seen in

her before), pondered, trying to penetrate the full significance of the words. And obviously interpreting them as she would have wished, she glanced at Dolly.

"If you had any sins," she said, "they would all be forgiven you for your coming to see me, and these words."

And Dolly saw that the tears stood in her eyes. She pressed Anna's hand in silence.

"Well, what are these buildings? How many there are of them!" After a moment's silence she repeated her question.

"These are the servant's houses, stud farm, and stables," answered Anna. "And there the park begins. It had all gone to ruin, but Alexei had everything renewed. He is very fond of this place, and, what I never expected, he has become intensely interested in looking after it. But his is such a rich nature! Whatever he takes up, he does splendidly. So far from being bored by it, he works with passionate interest. He with his temperament as I know it he has become careful and businesslike, a first-rate manager, he positively reckons every penny in his management of the land. But only in that. When it's a question of tens of thousands, he doesn't think of money." She spoke with that gleefully sly smile with which women often talk of the secret characteristics only known to them of those they love. "Do you see that big building? That's the new hospital. I believe it will cost over a hundred thousand; that's his dada just now. And do you know how it all came about? The peasants asked him for some meadowland, I think it was, at a cheaper rate, and he refused, and I accused him of being miserly. Of course it was not really because of that, but because of everything together he began this hospital to prove, do you see, that he was not miserly about money. C'est une petitesse, if you like, but I love him all the more for it. And now you'll see the house in a moment. It was his grandfather's house, and he has had nothing changed outside."

"How beautiful!" said Dolly, looking with involuntary admiration at the handsome house with columns, standing out among the different-colored greens of the old trees in the garden.

"Isn't it fine? And from the house, from the top, the view is wonderful."

They drove into a courtyard strewn with gravel and bright with flowers, in which two laborers were at work putting an edging of stones round the light mold of a flower bed, and drew up in a covered entry.

"Ah, they're here already!" said Anna, looking at the saddle horses, which were just being led away from the steps. "It is a good horse, isn't it? It's my cob; my favorite. Lead him here and bring me some sugar. Where is the Count?" she inquired of two smart footmen who darted out. "Ah, there he is!" she said, seeing Vronsky coming to meet her with Veslovsky.

"Where are you going to put the Princess?" said Vronsky in French, addressing Anna, and without waiting for a reply, he once more greeted Darya Alexandrovna, and this time he kissed her hand. "I think the big balcony room."

"Oh, no, that's too far off! Better in the corner room, we shall see each other more. Come, let's go up," said Anna, as she gave her favorite horse the sugar the footman had brought her.

"Et vous oubliez votre devoir," she said to Veslovsky, who came out too on the steps.

"Pardon, j'en ai tout plein les poches," he answered, smiling, putting his fingers in his waistcoat pocket.

"Mais vous venez trop tard," she said, rubbing her handkerchief on her hand, which the horse had made wet in taking the sugar.

## Anna Karenina

Anna turned to Dolly, "You can stay some time? For one day only? That's impossible!"

"I promised to be back, and the children..." said Dolly, feeling embarrassed both because she had to get her bag out of the carriage, and because she knew her face must be covered with dust.

"No, Dolly, darling!... Well, we'll see. Come along, come along!" and Anna led Dolly to her room.

That room was not the smart guestchamber Vronsky had suggested, but the one which Anna had said Dolly would surely excuse. And this room, for which excuse was needed, was more full of luxury than any in which Dolly had ever stayed, a luxury that reminded her of the best hotels abroad.

"Well, darling, how happy I am!" Anna said, sitting down in her riding habit for a moment beside Dolly. "Tell me about all of you. Stiva I had only a glimpse of, and he cannot tell one about the children. How is my favorite, Tania? Quite a big girl, I expect?"

"Yes, she's very tall," Darya Alexandrovna answered shortly, surprised herself that she should respond so coolly about her children. "We are having a delightful stay at the Levins'," she added.

"Oh, if I had known," said Anna, "that you do not despise me!... You might have all come to us. Stiva's an old friend and a great friend of Alexei's, you know," she added, and suddenly she blushed.

"Yes, but we are all..." Dolly answered in confusion.

"But in my delight I'm talking nonsense. The one thing, darling, is that I am so glad to have you!" said Anna, kissing her again. "You haven't told me yet how and what you think about me, and I keep wanting to know. But I'm glad you will see me as I am. The chief thing I shouldn't like would be for people to imagine I want to prove anything. I don't want to prove anything; I merely want to live, to do no one harm but myself. I have the right to do that, haven't I? But it is a big subject, and we'll talk over everything properly later. Now I'll go and dress and send a maid to you."

## XIX.

Left alone, Darya Alexandrovna, with a good housewife's eye, scanned her room. All she had seen in entering the house and walking through it, and all she saw now in her room, gave her an impression of wealth and sumptuousness and of that modern European luxury of which she had only read in English novels, but had never seen in Russia and in the country. Everything was new, from the new French hangings on the walls to the carpet which covered the whole floor. The bed had a spring mattress, and a special sort of bolster and taffeta pillowcases on the small pillows. The marble washstand, the dressing table, the little sofa, the tables, the bronze clock on the chimney piece, the window curtains and the portieres were all new and expensive.

The smart maid, who came in to offer her services, with her hair done up high, and a gown more fashionable than Dolly's, was as new and expensive as the whole room. Darya Alexandrovna liked her neatness, her deferential and obliging manners, but she felt ill at ease with her. She felt ashamed of her seeing the patched dressing jacket that had unluckily been packed by mistake for her. She was ashamed of the very patches and darned places of which she had been so proud at home. At home it had been so clear that for six dressing jackets there would be needed twenty-four arsheenes of nainsook at sixty-five kopecks the yard, which was a matter of fifteen roubles, besides the cutting out and making, and these fifteen roubles had been saved. But before the maid she felt, if not exactly ashamed, at least uncomfortable.

Darya Alexandrovna had a great sense of relief when Annushka, whom she had known for years, walked in. The



## Anna Karenina

smart maid was sent for to go to her mistress, and Annushka remained with Darya Alexandrovna.

Annushka was obviously much pleased at that lady's arrival, and began to chatter away without a pause. Dolly observed that she was longing to express her opinion in regard to her mistress's position, especially as to the love and devotion of the Count to Anna Arkadyevna, but Dolly carefully interrupted her whenever she began to speak about this.

"I grew up with Anna Arkadyevna; my lady's dearer to me than anything. Well, it's not for us to judge. And, to be sure, there seems so much love..."

"Kindly order these things washed for me, please," Darya Alexandrovna cut her short.

"Certainly. We've two women kept specially for washing small things, but most of the linen's done by machinery. The Count goes into everything himself. Ah, what a husband he would make!..."

Dolly was glad when Anna came in, and by her entrance put a stop to Annushka's gossip.

Anna had put on a very simple batiste gown. Dolly scrutinized that simple gown attentively. She knew what it meant, and the price at which such simplicity was obtained.

"An old friend," said Anna of Annushka.

Anna was not embarrassed now. She was perfectly composed and at ease. Dolly saw that she had now completely recovered from the impression her arrival had made on her, and had assumed that superficial, careless tone which, as it were, closed the door on that compartment in which her deeper feelings and intimate meditations were kept.

"Well, Anna, and how is your little girl?" asked Dolly.

"Annie?" (This was what she called her little daughter Anna.) "Very well. She has got on wonderfully. Would you like to see her? Come, I'll show her to you. We had a terrible bother," she began telling her, "over nurses. We had an Italian wet nurse. A good creature, but so stupid! We wanted to get rid of her, but the baby is so used to her that we've gone on keeping her still."

"But how have you managed?..." Dolly was beginning a question as to what name the little girl would have; but noticing a sudden frown on Anna's face, she changed the drift of her question. "How did you manage? Have you weaned her yet?"

But Anna had understood.

"You didn't mean to ask that? You meant to ask about her surname. Yes? That worries Alexei. She has no name that is, she's a Karenina," said Anna, dropping her eyelids till nothing could be seen but the eyelashes meeting. "But we'll talk about all that later," her face suddenly brightening. "Come, I'll show her to you. Elle est tres gentille. She crawls now."

In the nursery the luxury which had impressed Dolly in the whole house struck her still more. There were little gogarts ordered from England, and appliances for learning to walk, and a sofa after the fashion of a billiard table, purposely constructed for crawling, and swings, and baths, all of special pattern, and modern. They were all English, solid, and of good make, and obviously very expensive. The room was large, and very light and lofty.

When they went in, the baby, with nothing on but her little smock, was sitting in a little elbowchair at the table, having her dinner of broth, which she was spilling all over her little chest. The baby was being fed, and the

Russian nurserymaid was evidently sharing her meal. Neither the wet nurse nor the head nurse were there; they were in the next room, from which came the sound of their conversation in the queer French which was their only means of communication.

Hearing Anna's voice, a smart, tall English nurse with a disagreeable face and a dissolute expression walked in at the door, hurriedly shaking her fair curls, and immediately began to defend herself though Anna had not found fault with her. At every word Anna said the English nurse said hurriedly several times, "Yes, my lady."

The rosy baby with her black eyebrows and hair, her sturdy red little body with tight goose-flesh skin, delighted Darya Alexandrovna in spite of the cross expression with which she stared at the stranger. She positively envied the baby's healthy appearance. She was delighted, too, at the baby's crawling. Not one of her own children had crawled like that. When the baby was put on the carpet and its little dress tucked up behind, it was wonderfully charming. Looking round like some little wild animal at the grown-up big people with her bright black eyes, she smiled, unmistakably pleased at their admiring her, and, holding her legs sideways, she pressed vigorously on her arms, and rapidly drew her whole back up after, and then made another step forward with her little arms.

But the whole atmosphere of the nursery, and especially the English nurse, Darya Alexandrovna did not like at all. It was only on the supposition that no good nurse would have entered so irregular a household as Anna's that Darya Alexandrovna could explain to herself how Anna with her insight into people could take such an unprepossessing, indecorous woman as nurse to her child. Besides, from a few words that were dropped, Darya Alexandrovna saw at once that Anna, the two nurses, and the child, had no existence in common, and that the mother's visit was something exceptional. Anna wanted to get the baby her plaything, and could not find it.

Most amazing of all was the fact that on being asked how many teeth the baby had, Anna answered wrong, and knew nothing about the two last teeth.

"I sometimes feel sorry I'm, as it were, superfluous here," said Anna, going out of the nursery, and holding up her skirt so as to escape the plaything standing near the doorway. "It was very different with my first child."

"I expected it to be the other way," said Darya Alexandrovna shyly.

"Oh, no! By the way, do you know I saw Seriozha?" said Anna, screwing up her eyes, as though looking at something far away. "But we'll talk about that later. You wouldn't believe it, I'm like a hungry beggar woman when a full dinner is set before her, and she does not know what to begin on first. The full dinner is you, and the talks I have before me with you, which I could never have with anyone else; and I don't know which subject to begin upon first. Mais je ne vous ferai grace de rien. I must have everything out with you. Oh, I ought to give you a sketch of the company you will meet with us," she began. "I'll begin with the ladies. Princess Varvara you know her, and I know your opinion and Stiva's about her. Stiva says the whole aim of her existence is to prove her superiority over Auntie Katerina Pavlovna: that's all true; but she's a good-natured woman, and I am so grateful to her. In Petersburg there was a moment when un chaperon was absolutely essential for me. Then she turned up. But, really, she is good-natured. She did a great deal to alleviate my position. I see you don't understand all the difficulty of my position... there in Petersburg," she added. "Here I'm perfectly at ease and happy. Well, of that later on, though. Then Sviiashsky he's the marshal of the district, and he's a very good sort of a man, but he wants to get something out of Alexei. You understand, with his property, now that we are settled in the country, Alexei can exercise great influence. Then there's Tushkevich you have seen him, you know Betsy's admirer. Now he's been thrown over, and he's come to see us. As Alexei says, he's one of those people who are very pleasant if one accepts them for what they try to appear to be, et puis, il est comme il faut, as Princess Varvara says. Then Veslovsky... you know him. A very charming boy," she said, and a sly smile curved her lips. "What's this wild story about him and the Levins? Veslovsky told Alexei about it, and we don't believe it. Il est tres gentil et naif," she said again with the same smile. "Men need occupation, and Alexei needs a circle, so I value all these people. We have to have the house lively and gay, so that Alexei may not long for any novelty. Then you'll see the

## Anna Karenina

steward a German, a very good fellow, and he understands his work. Alexei has a very high opinion of him. Then the doctor, a young man, not quite a Nihilist perhaps, but, you know, he eats with his knife... But a very good doctor. Then the architect... Une petite cour."

### XX.

"Here's Dolly for you, Princess, you were so anxious to see her," said Anna, coming out with Darya Alexandrovna on the stone terrace where Princess Varvara was sitting in the shade at an embroidery frame, working at a cover for Count Alexei Kirillovich's easy chair. "She says she doesn't want anything before dinner, but please order some lunch for her, and I'll go look for Alexei and bring them all in."

Princess Varvara gave Dolly a cordial and rather patronizing reception, and began at once explaining to her that she was living with Anna because she had always cared more for her than her sister, that aunt that had brought Anna up; and that now, when everyone had abandoned Anna, she thought it her duty to help her in this most difficult period of transition.

"Her husband will give her a divorce, and then I shall go back to my solitude; but now I can be of use, and I am doing my duty, however difficult it may be for me not like some other people. And how sweet it is of you, how right of you to have come! They live like the best of married couples; it's for God to judge them, not for us. And didn't Biriuzovsky and Madame Avenieva... and Nikandrov himself, and Vassiliev with Madame Mamonova, and Liza Neptunova... Did no one say anything about them? And it has ended by their being received by everyone. And then, c'est un interieur si joli, si comme il faut. Tout-a-fait a l'anglaise. On se reunit le matin au breakfast, et puis on se separe. Everyone does as he pleases till dinnertime. Dinner at seven o'clock. Stiva did very rightly to send you. He needs their support. You know that through his mother and brother he can do everything. And then they do so much good. He didn't tell you about his hospital? Ce sera admirable everything from Paris."

Their conversation was interrupted by Anna, who had found the men of the party in the billiard room, and returned with them to the terrace. There was still a long time before the dinner hour, it was exquisite weather, and so several different methods of spending the next two hours were proposed. There were very many methods of passing the time at Vozdvizhenskoe, and these were all unlike those in use at Pokrovskoe.

"Une partie de lawn tennis," Veslovsky proposed, with his handsome smile. "We'll be partners again, Anna Arkadyevna."

"No, it's too hot; better stroll about the garden and have a row in the boat show Darya Alexandrovna the riverbanks," Vronsky proposed.

"I agree to anything," said Sviiashsky.

"I imagine that what Dolly would like best would be a stroll wouldn't you? And then the boat, perhaps," said Anna.

So it was decided. Veslovsky and Tushkevich went off to the bathing place, promising to get the boat ready and to wait there for them.

They walked along the path in two couples, Anna with Sviiashsky, and Dolly with Vronsky. Dolly was a little embarrassed and anxious in the new surroundings in which she found herself Abstractly, theoretically, she did not merely justify she positively approved of Anna's conduct. As is indeed not infrequent with women of unimpeachable virtue, weary of the monotony of virtuous existence, at a distance she not only excused illicit love she positively envied it. Besides, she loved Anna with all her heart. But seeing Anna in actual life among

these strangers, with this fashionable tone that was so new to Darya Alexandrovna, she felt ill at ease. What she disliked particularly was seeing Princess Varvara ready to overlook everything for the sake of the comforts she enjoyed.

As a general principle, abstractly, Dolly approved of Anna's action; but to see the man for whose sake her action had been taken was disagreeable to her. Moreover, she had never liked Vronsky. She thought him very proud, and saw nothing in him of which he could be proud except his wealth. But against her own will, here in his own house, he imposed upon her more than ever, and she could not be at ease with him. She experienced with him the same feeling she had had the maid about her dressing jacket. Just as with the maid she had felt not exactly ashamed, but embarrassed at her darns, so she felt with him not exactly ashamed, but embarrassed at herself.

Dolly was ill at ease, and tried to find a subject of conversation. Even though she supposed that, through his pride, praise of his house and garden would be sure to be disagreeable to him, she did all the same tell him how much she liked his house.

"Yes, it's a very fine building, and in the good old-fashioned style," he said.

"I like so much the court in front of the steps. Was that always so?"

"Oh, no!" he said, and his face beamed with pleasure. "If you could only have seen the court last spring!"

And he began, at first rather diffidently, but more and more carried away by the subject as he went on, to draw her attention to the various details of the decoration of his house and garden. It was evident that, having devoted a great deal of trouble to improve and beautify his home, Vronsky felt a need to show off the improvements to a new person, and was genuinely delighted at Darya Alexandrovna's praise.

"If you would care to look at the hospital, and are not really tired, it's not far. Shall we go?" he said, glancing into her face to convince himself that she was not bored. "Are you coming, Anna?" he turned to her.

"We will come, won't we?" she said, addressing Sviiashsky. "Mais il ne faut pas laisser le pauvre Veslovsky et Tushkevich se morfondre la dans le bateau. We must send and tell them."

"Yes, this is a monument he is setting up here," said Anna, turning to Dolly with that sly smile of comprehension with which she had previously talked about the hospital.

"Oh, it's a work of real importance!" said Sviiashsky. But to show he was not trying to ingratiate himself with Vronsky, he promptly added some slightly critical remarks. "I wonder, though, Count," he said, "that while you do so much for the health of the peasants, you take so little interest in the schools."

"C'est devenu tellement commun les ecoles," said Vronsky. "You understand it's not on that account, but it just happens so, my interest has been diverted elsewhere. This way, then, to the hospital," he said to Darya Alexandrovna, pointing to a side path leading out of the avenue.

The ladies put up their parasols and turned into the side path. After going down several turnings, and going through a little gate, Darya Alexandrovna saw standing on rising ground before her a large pretentious-looking red building, almost finished. The iron roof, which was not yet painted, shone with dazzling brightness in the sunshine. Beside the finished building another had been begun, surrounded by scaffolding. Workmen in aprons, standing on scaffolds, were laying bricks, pouring mortar out of vats, and smoothing it with trowels.

"How quickly work gets done with you!" said Sviiashsky. "When I was here last time the roof was not on."

## Anna Karenina

"By the autumn it will all be ready. Inside almost everything is done," said Anna.

"And what's this new building?"

"That's the house for the doctor and the dispensary," answered Vronsky; seeing the architect in a short jacket coming toward him, and excusing himself to the ladies, he went to meet him.

Going round a hole where the workmen were slaking lime, he stood still with the architect and began talking rather warmly.

"The pediment looks still too low," he said to Anna, who had asked what was the matter.

"I said the foundation ought to be raised," said Anna.

"Yes, of course, it would have been much better, Anna Arkadyevna," said the architect, "but now it's too late."

"Yes, I take a great interest in it," Anna answered Sviiashzsky, who was expressing his surprise at her knowledge of architecture. "This new building ought to have been in harmony with the hospital. It was an afterthought, and was begun without a plan."

Vronsky, having finished his talk with the architect, joined the ladies, and led them inside the hospital.

Although they were still at work on the cornices outside and were painting on the ground floor, upstairs almost all the rooms were finished. Going up the broad cast-iron staircase to the landing, they walked into the first large room. The walls were stuccoed to look like marble, the huge plate-glass windows were already in, only the parquet floor was not yet finished, and the carpenters, who were planing a block of it, left their work, taking off the bands that fastened their hair, to greet the gentry.

"This is the reception room," said Vronsky. "Here there will be a desk, a cupboard, and benches, and nothing more."

"This way; let us go in here. Don't go near the window," said Anna, trying the paint to see if it were dry. "Alexei, the paint's dry already," she added.

From the reception room they went into the corridor. Here Vronsky showed them the mechanism for ventilation on a novel system. Then he showed them marble baths, and beds with extraordinary springs. Then he showed them the wards one after another, the storeroom, the linen room, then the heating stove of a new pattern, then the trolleys, which would make no noise as they carried everything needed along the corridors, and many other things. Sviiashzsky, as a connoisseur in the latest mechanical improvements, appreciated everything fully. Dolly simply wondered at all as something she had not seen before, and, anxious to understand it all, made minute inquiries about everything, which gave Vronsky apparent satisfaction.

"Yes, I imagine that this will be the solitary example of a properly fitted hospital in Russia," said Sviiashzsky.

"And won't you have a lying-in ward?" asked Dolly. "That's so much needed in the country. I have often..."

In spite of his usual courtesy, Vronsky interrupted her.

"This is not a lying-in home, but a hospital for the sick, and is intended for all diseases, except infectious complaints," he said. "Ah! Look at this," and he rolled up to Darya Alexandrovna an invalid chair that had just been ordered for convalescents. "Look!" He sat down in the chair and began moving it. "The patient can't walk

## Anna Karenina

still too weak, perhaps, or something wrong with his legs, but he must have air, and he moves, rolls himself along...."

Darya Alexandrovna was interested by everything. She liked everything very much, but most of all she liked Vronsky himself, with his natural, simplehearted enthusiasm. "Yes, he's a very dear, good man," she thought several times, not hearing what he said, but looking at him and penetrating into his expression, while she mentally put herself in Anna's place. She liked him so much just now with his eager interest that she saw how Anna could be in love with him.

### XXI.

"No, I think the Princess is tired, and horses don't interest her," Vronsky said to Anna, who wanted to go on to the stud farm, where Sviiashsky wished to see the new stallion. "You go on, while I escort the Princess home, and we'll have a little talk," he said. "If you would like that?" he added, turning to her.

"I know nothing about horses, and I shall be delighted to go back with you," answered Darya Alexandrovna, rather astonished.

She saw by Vronsky's face that he wanted something from her. She was not mistaken. As soon as they had passed through the little gate back into the garden, he looked in the direction Anna had taken, and, having made sure that she could neither hear nor see them, he began:

"You guess that I have something I want to say to you," he said, looking at her with laughing eyes. "I am not wrong in believing you to be a friend of Anna's." He took off his hat, and taking out his handkerchief, wiped his head, which was growing bald.

Darya Alexandrovna made no answer, and merely stared at him with dismay. When she was left alone with him, she suddenly felt afraid; his laughing eyes and stern expression scared her.

The most diverse suppositions as to what he was about to say to her flashed into her brain. "He is going to beg me to come to stay with them with the children, and I shall have to refuse; or to create a set that will receive Anna in Moscow.... Or isn't it Vassenka Veslovsky and his relations with Anna? Or perhaps about Kitty that he feels he was to blame?" All her conjectures were unpleasant, but she did not guess what he really wanted to talk about to her.

"You have so much influence with Anna, she is so fond of you," he said; "do help me."

Darya Alexandrovna looked with timid inquiry into his energetic face, which under the linden trees was continually being lighted up in patches by the sunshine, and then passing into complete shadow again. She waited for him to say more, but he walked in silence beside her, scratching with his cane in the gravel.

"You have come to see us, you, the only woman of Anna's former friends I don't count Princess Varvara but I know that you have done this not because you regard our position as normal, but because, understanding all the difficulty of the position, you still love her and want to be a help to her. Have I understood you rightly?" he asked, looking round at her.

"Oh, yes," answered Darya Alexandrovna, putting down her sunshade, "but..."

"No," he broke in, and unconsciously, oblivious of the awkward position in which he was putting his companion, he stopped abruptly, so that she had to stop short too. "No one feels more deeply and intensely than I do all the

difficulty of Anna's position; and that you may well understand, if you do me the honor of supposing I have any heart. I am to blame for that position, and that is why I feel it."

"I understand," said Darya Alexandrovna, involuntarily admiring the sincerity and firmness with which he said this. "But just because you feel yourself responsible, you exaggerate it, I am afraid," she said. "Her position in the world is difficult, I can well understand."

"In the world it is hell!" he brought out quickly, frowning darkly. "You can't imagine moral sufferings greater than what she went through in Petersburg during that fortnight.... And I beg you to believe it."

"Yes, but here, so long as neither Anna... nor you want society..."

"Society!" he said contemptuously. "How could I want society?"

"So far and it may be so always you are happy and at peace. I see in Anna that she is happy, perfectly happy she has had time to tell me so much already," said Darya Alexandrovna, smiling; and involuntarily, as she said this, at the same moment a doubt entered her mind whether Anna really were happy.

But Vronsky, it appeared, had no doubts on that score.

"Yes, yes," he said, "I know that she has revived after all her sufferings; she is happy. She is happy in the present. But I?... I am afraid of what is before us... I beg your pardon you would like to walk on?"

"No, I don't mind."

"Well, then, let us sit here."

Darya Alexandrovna sat down on a garden seat in a corner of the avenue. He stood up, facing her.

"I see that she is happy," he repeated, and the doubt whether she were happy sank more deeply into Darya Alexandrovna's mind. "But can it last? Whether we have acted rightly or wrongly is another question, but the die is cast," he said, passing from Russian to French, "and we are bound together for life. We are united by all the ties of love that we hold most sacred. We have a child, we may have other children. But the law and all the conditions of our position are such that thousands of complications arise which she does not see at present, and does not want to see, setting her heart at rest after all these sufferings and ordeals. And that one can well understand. But I can't help seeing them. My daughter is by law not my daughter, but Karenin's. I cannot bear this falsity!" he said, with a vigorous gesture of refusal, and he looked with gloomy inquiry toward Darya Alexandrovna.

She made no answer, but simply gazed at him. He went on:

"One day a son may be born, my son, and he will be legally a Karenin; he will not be the heir of my name nor of my property; and however happy we may be in our home life, and however many children we may have, there will be no real tie between us. They will be Karenin's. You will understand the bitterness and horror of this position! I have tried to speak of this to Anna. It irritates her. She does not understand, and to her I cannot speak plainly of all this. Now look at another side. I am happy, happy in her love, but I must have occupation. I have found occupation, and am proud of what I am doing, and consider it nobler than the pursuits of my former companions at Court and in the army. And most certainly I would not change the work I am doing for theirs. I am working here, settled in my own place, and I am happy and contented, and we need nothing more to make us happy. I love my work here. Ce n'est pas un pis-aller, on the contrary..."

## Anna Karenina

Darya Alexandrovna noticed that at this point in his explanation he grew confused, and she did not quite understand this digression, but she felt that having once begun to speak of matters near his heart, of which he could not speak to Anna, he was now making a clean breast of everything, and that the question of his pursuits in the country fell into the same compartment of his intimate meditations as the question of his relations with Anna.

"Well, I will go on," he said, collecting himself. "The great thing is that as I work I want to have a conviction that what I am doing will not die with me, that I shall have heirs to come after me and this I have not. Conceive the position of a man who knows that his children, the children of the woman he loves, will not be his, but will belong to someone who hates them and cares nothing about them! It is awful!

He paused, evidently much moved.

"Yes, indeed, I see that. But what can Anna do?" queried Darya Alexandrovna.

"Yes, that brings me to the object of my conversation," he said, calming himself with an effort. "Anna can, it depends on her.... Even to petition the Czar for legitimization, a divorce is essential. And that depends on Anna. Her husband agreed to a divorce at that time your husband had arranged it completely. And now, I know, he would not refuse it. It is only a matter of writing to him. He said plainly at that time that if she expressed the desire, he would not refuse. Of course," he said gloomily, "it is one of those Pharisaical cruelties of which only such heartless men are capable. He knows what agony any recollection of him must give her, and knowing her, he must have a letter from her. I can understand that it is agony to her. But the matter is of such importance, that one must passer pardessus toutes ces finesses de sentiment. Il y va du bonheur et de l'existence d'Anne et de ses enfants. I won't speak of myself, though it's hard for me, very hard," he said, with an expression as though he were threatening someone for its being hard for him. "And so it is, Princess, that I am shamelessly clutching at you as an anchor of salvation. Help me to persuade her to write to him and ask for a divorce."

"Yes, of course," Darya Alexandrovna said dreamily, as she vividly recalled her last interview with Alexei Alexandrovich. "Yes, of course," she repeated with decision, thinking of Anna.

"Use your influence with her, make her write. I don't like I'm almost unable to speak about this to her."

"Very well, I will talk to her. But how is it she does not think of it herself?" said Darya Alexandrovna, and for some reason she suddenly at that point recalled Anna's strange new habit of half-closing her eyes. And she remembered that Anna drooped her eyelids just when the deeper questions of life were touched upon. "Just as though she half-shut her eyes to her own life, so as not to see everything," thought Dolly. "Yes, indeed, for my own sake and for hers, I will talk to her," Dolly said in reply to his expression of gratitude.

They got up and walked to the house.

## XXII.

When Anna found Dolly at home before her, she looked intently in her eyes, as though questioning her about the talk she had had with Vronsky, but she made no inquiry in words.

"I believe it's dinnertime," she said. "We've not seen each other at all yet. I am reckoning on the evening. Now I want to go and dress. I expect you do too; we all got splashed at the buildings."

Dolly went to her room and she felt amused. To change her dress was impossible, for she had already put on her best dress. But in order to signify in some way her preparation for dinner, she asked the maid to brush her dress, changed her cuffs and rosette, and put some lace on her head.



"This is all I can do," she said with a smile to Anna, who came in to her in a third dress, again of extreme simplicity.

"Yes, we are too prim here," she said, as it were apologizing for her finery. "Alexei is delighted at your visit, as he rarely is at anything. He has completely lost his heart to you," she added. "You're not tired?"

There was no time for talking about anything before dinner. Going into the drawing room they found Princess Varvara already there, and the gentlemen of the party in black frock coats. The architect wore a swallow-tailed coat. Vronsky presented the doctor and the steward to his guest. The architect he had already introduced to her at the hospital.

A stout butler, resplendent with a smoothly shaven round chin and a starched white cravat, announced that dinner was ready, and the ladies got up. Vronsky asked Sviiazhsky to take in Anna Arkadyevna, and himself offered his arm to Dolly. Veslovsky was before Tushkevich in offering his arm to Princess Varvara, so that Tushkevich with the steward and the doctor walked in alone.

The dinner, the dining room, the service, the waiting at table, the wine and the food, were not simply in keeping with the general tone of modern luxury throughout the house, but seemed even more sumptuous and modern. Darya Alexandrovna watched this luxury which was novel to her, and as a good housekeeper used to managing a household though she never dreamed of adapting anything she saw to her own household, as it was all in a style of luxury far above her own manner of living she could not help scrutinizing every detail, and wondering how and by whom it was all done. Vassenka Veslovsky, her husband, and even Sviiazhsky, and many other people she knew, would never have considered this question, and would have readily believed what every well-bred host tries to make his guests feel, that is, that all that is well-ordered in his house has cost him, the host, no trouble whatever, but comes of itself. Darya Alexandrovna was well aware that even porridge for the children's breakfast does not come of itself, and that therefore, where so complicated and magnificent a style of luxury was maintained, someone must give earnest attention to its organization. And from the glance with which Alexei Kirillovich scanned the table, from the way he nodded to the butler, and offered Darya Alexandrovna her choice between cold soup and hot soup, she saw that it was all organized and maintained by the care of the master of the house himself. It was evident that it all rested no more upon Anna than upon Veslovsky. She, Sviiazhsky, the Princess, and Veslovsky, were equally guests, with light hearts enjoying what had been arranged for them.

Anna was the hostess only in conducting the conversation. The conversation was a difficult one for the lady of the house at a small table with persons present, like the steward and the architect, belonging to a completely different world, struggling not to be overawed by an elegance to which they were unaccustomed, and unable to sustain a large share in the general conversation. But this difficult conversation Anna directed with her usual tact and naturalness, and indeed she did so with actual enjoyment, as Darya Alexandrovna observed.

The conversation began about the row Tushkevich and Veslovsky had taken alone together in the boat, and Tushkevich began describing the last boat races in Peterburg at the Yacht Club. But Anna, seizing the first pause, at once turned to the architect to draw him out of his silence.

"Nikolai Ivanich was struck," she said meaning Sviiazhsky, "at the progress the new building had made since he was here last; but I am there every day, and every day I wonder at the rate at which it grows."

"It's first-rate working with His Excellency," said the architect with a smile (he was respectful and composed, though with a sense of his own dignity). "It's a very different matter to have to do with the district authorities. Where one would have to write out sheaves of papers, here I call upon the Count, and in three words we settle the business."

"The American way of doing business," said Sviiazhsky, with a smile.

"Yes, there they build in a rational fashion...."

The conversation passed to the misuse of political power in the United States, but Anna quickly brought it round to another topic, so as to draw the steward into talk.

"Have you ever seen a reaping machine?" she said, addressing Darya Alexandrovna. "We had just ridden over to look at one when we met. It's the first time I ever saw one."

"How do they work?" asked Dolly.

"Exactly like scissors. A plank and a lot of little scissors. Like this."

Anna took a knife and fork in her beautiful white hands, covered with rings, and began showing how the machine worked. It was clear that she saw nothing would be understood from her explanation; but aware that her talk was pleasant, and her hands beautiful, she went on explaining.

"More like little penknives," Veslovsky said playfully, never taking his eyes off her.

Anna gave a just perceptible smile, but made no answer. "Isn't it true, Karl Fedorich, that it's just like scissors?" she said to the steward.

"Oh, ja," answered the German. "Es ist ein ganz einfaches Ding," and he began to explain the construction of the machine.

"It's a pity it doesn't bind too. I saw one at the Vienna exhibition, which binds with a wire," said Sviiazhsky. "They would be more profitable in use."

"Es kommt drauf an... Der Preis vom Draht muss ausgerechnet werden." And the German, roused from his taciturnity, turned to Vronsky. "Das lasst sich ausrechnen, Erlaucht." The German was just feeling in the pocket where were his pencil and the notebook he always wrote in, but recollecting that he was at a dinner, and observing Vronsky's chilly glance, he checked himself. "Zu compliziert, macht zu viel pains," he concluded.

"Wünscht man gains, so hat man auch pains," said Vassenka Veslovsky, bantering the German. "J'adore l'allemand," he addressed Anna again with the same smile.

"Cessez," she said with playful severity.

"We expected to find you in the fields, Vassilii Semionich," she said to the doctor, a sickly-looking man; "have you been there?"

"I went there, but I evaporated," the doctor answered with gloomy jocoseness.

"Then you've taken a good constitutional?"

"Splendid!"

"Well, and how was the old woman? I hope it's not typhus?"

"Typhus it isn't, but she's not to be found to the best advantage."

## Anna Karenina

"What a pity!" said Anna, and having thus paid the dues of civility to her domestic circle, she turned to her own friends.

"It would be a hard task, though, to construct a machine from your description, Anna Arkadyevna," Sviiazhsky said jestingly.

"Oh, no, why so?" said Anna with a smile that betrayed that she knew there was something charming in her disquisitions upon the machine, that had been noticed by Sviiazhsky too. This new trait of girlish coquettishness made an unpleasant impression on Dolly.

"But Anna Arkadyevna's knowledge of architecture is marvelous," said Tushkevich.

"To be sure, I heard Anna Arkadyevna saying yesterday: 'by cramp' and 'plinths,'" said Veslovsky. "Have I got it right?"

"There's nothing marvelous about it, when one sees and hears so much of it," said Anna. "But, I dare say, you don't even know what houses are made of?"

Darya Alexandrovna saw that Anna disliked the tone of playfulness that existed between her and Veslovsky, but fell in with it against her will.

Vronsky acted in this matter quite differently from Levin. He obviously attached no significance to Veslovsky's chattering; on the contrary, he encouraged his jests.

"Come now, tell us, Veslovsky, how are the stones held together?"

"By cement, of course."

"Bravo! And what is cement?"

"Oh, some sort of paste.... No, putty," said Veslovsky, raising a general laugh.

The company at dinner, with the exception of the doctor, the architect, and the steward, who remained plunged in gloomy silence, kept up a conversation that never paused, glancing off one subject, fastening on another, and at times stinging one or the other of the company to the quick. Once Darya Alexandrovna felt wounded to the quick, and got so hot that she positively flushed and wondered afterward whether she had said anything extreme or unpleasant. Sviiazhsky began talking of Levin, describing his strange view that machinery is simply pernicious in its effects on Russian agriculture.

"I have not the pleasure of knowing this M. Levin," Vronsky said, smiling, "but most likely he has never seen the machines he condemns; or if he has seen and tried any, it must have been after a queer fashion, some Russian imitation, not a machine from abroad. What sort of views can anyone have on such a subject?"

"Turkish views, in general," Veslovsky said, turning to Anna with a smile.

"I can't defend his opinions," Darya Alexandrovna said, flaring up; "but I can say that he's a highly cultivated man, and if he were here he would know very well how to answer you, though I am not capable of doing so."

"I like him extremely, and we are great friends," Sviiazhsky said, smiling good-naturedly. "Mais pardon, il est un petit peu toque; he maintains, for instance, that zemstvoes and justices of the peace are all of no use, and he is unwilling to take part in anything."

"It's our Russian apathy," said Vronsky, pouring water from an iced decanter into a delicate glass on a high stem; "we've no sense of the duties our privileges impose upon us, and so we refuse to recognize these duties."

"I know no man more strict in the performance of his duties," said Darya Alexandrovna, irritated by Vronsky's tone of superiority.

"For my part," pursued Vronsky, who was evidently for some reason or other keenly affected by this conversation, "such as I am, I am, on the contrary, extremely grateful for the honor they have done me, thanks to Nikolai Ivanich" (he indicated Sviiashsky), "in electing me an honorary justice of the peace. I consider that for me the duty of being present at the session, of judging some peasants' quarrel about a horse, is as important as anything I can do. And I shall regard it as an honor if they elect me for the district council. It's only in that way I can pay for the advantages I enjoy as a landowner. Unluckily they don't understand the importance that the big landowners ought to have in the state."

It was strange to Darya Alexandrovna to hear how serenely confident he was of being right at his own table. She thought how Levin, who believed the opposite, was just as positive in his opinions at his own table. But she loved Levin, and so she was on his side.

"So we can reckon upon you, Count, for the coming elections?" said Sviiashsky. "But you must come a little beforehand, so as to be on the spot by the eighth. If you would do me the honor to stop with me!"

"I rather agree with your beau-frere", said Anna, "though not quite on the same ground as he," she added with a smile. "I'm afraid that we have too many of these public duties in these latter days. Just as in the old days there were so many government functionaries that one had to call in a functionary for every single thing, so now everyone's doing some sort of public duty. Alexei has been here now six months, and he's a member, I do believe, of five or six different public bodies, a guardian, a justice of the peace, a member of the council, a juryman, an equine something. Du train que cela va, his whole time will be wasted on it. And I'm afraid that with such a multiplicity of these bodies, they'll end in being a mere form. How many are you a member of, Nikolai Ivanich?" she turned to Sviiashsky. "Over twenty, I fancy."

Anna spoke lightly, but irritation could be discerned in her tone. Darya Alexandrovna, watching Anna and Vronsky attentively, detected it instantly. She noticed, too, that as she spoke Vronsky's face had immediately taken a serious and obstinate expression. Noticing this, and that Princess Varvara at once made haste to change the conversation by talking of Petersburg acquaintances, and remembering what Vronsky had without apparent connection said in the garden of his work in the country, Dolly surmised that this question of public activity was connected with some deep private disagreement between Anna and Vronsky.

The dinner, the wine, the dinner set, were all very good; but it was all like what Darya Alexandrovna had seen at formal dinners and balls which of late years had become quite unfamiliar to her; it all had the same impersonal and constrained character, and so on an ordinary day and in a little circle of friends it made a disagreeable impression on her.

After dinner they sat on the terrace; then they proceeded to play lawn tennis. The players, divided into two parties, stood on opposite sides of a tightly drawn net with gilt poles, on the carefully leveled and rolled croquet ground. Darya Alexandrovna made an attempt to play, but it was a long time before she could understand the game, and by the time she did understand it she was so tired that she sat down with Princess Varvara and simply looked on at the players. Her partner, Tushkevich, gave up playing too, but the others kept the game up for a long time. Sviiashsky and Vronsky both played very well and seriously. They kept a sharp lookout on the balls served to them, and without loitering, they ran adroitly up to them, waited for the rebound, and neatly and accurately returned them over the net. Veslovsky played worse than the others. He was too eager, but he kept the players lively with his high spirits. His laughter and outcries never paused. Like the other men of the party, with the

## Anna Karenina

ladies' permission, he took off his coat, and his solid, comely figure in his white shirt sleeves, with his red perspiring face and his impulsive movements, made a picture that imprinted itself vividly on the memory.

When Darya Alexandrovna lay in bed that night, as soon as she closed her eyes, she saw Vassenka Veslovsky flying about the croquet ground.

During the game Darya Alexandrovna was not enjoying herself. She did not like the light tone of playfulness that was kept up all the time between Vassenka Veslovsky and Anna, and the unnaturalness, altogether, of grown-up people, all alone without children, playing at a child's game. But to avoid breaking up the party and to get through the time somehow, after a rest she joined the game again, and pretended to be enjoying it. All that day it seemed to her as though she were acting in a theater with actors cleverer than she, and that her bad acting was spoiling the whole performance.

She had come with the intention of staying two days, if all went well. But in the evening, during the game, she made up her mind that she would go home next day. The maternal cares and worries, which she had so hated on the way, now, after a day spent without them struck her in quite another light, and tempted her back to them.

When, after evening tea and a row by night in the boat, Darya Alexandrovna went alone to her room, took off her dress, and began arranging her thin hair for the night, she had a great sense of relief.

It was positively disagreeable to her to think that Anna would be coming to see her immediately. She longed to be alone with her own thoughts.

### XXIII.

Dolly was just about to go to bed when Anna came in to see her, attired for the night.

In the course of the day Anna had several times begun to speak of matters near her heart, and every time after a few words she had stopped: "Afterward, by ourselves, we'll talk about everything. I've got so much I want to tell you," she had said.

Now they were by themselves, and Anna did not know what to talk about. She sat in the window looking at Dolly, and going over in her own mind all the stores of intimate talk which had seemed so inexhaustible beforehand, and she found nothing. At that moment it seemed to her that everything had been said already.

"Well, what of Kitty?" she said with a heavy sigh, looking penitently at Dolly. "Tell me the truth, Dolly: isn't she angry with me?"

"Angry? Oh, no!" said Darya Alexandrovna, smiling.

"But she hates me, despises me?"

"Oh, no! But you know that sort of thing isn't forgiven."

"Yes, yes," said Anna, turning away and looking out of the open window. "But I was not to blame. And who is to blame? What's the meaning of being to blame? Could it have been otherwise? What do you think? Could it possibly have happened otherwise than that you should become the wife of Stiva?"

"Really, I don't know. But this is what I want you to tell me..."

## Anna Karenina

"Yes, yes, but we've not finished about Kitty. Is she happy? He's a very fine man, they say."

"He's much more than very fine. I don't know a better man."

"Ah, how glad I am! I'm so glad! Much more than very fine," she repeated.

Dolly smiled.

"But tell me about yourself. We've a great deal to talk about. And I've had a talk with..." Dolly did not know what to call him. She felt it awkward to call him either the Count or Alexei Kirillovich.

"With Alexei," said Anna, "I know what you talked about. But I wanted to ask you directly what you think of me, of my life?"

"How am I to say anything so suddenly? I really don't know."

"No, tell me all the same.... You see my life. But you mustn't forget that you're seeing us in the summer, when you have come to us and we are not alone.... But we came here early in the spring, lived quite alone, and shall be alone again, and I desire nothing better. But imagine me living alone without him, alone, and that will be... I see by everything that it will often be repeated, that he will be half the time away from home," she said, getting up and sitting down close by Dolly. "Of course," she interrupted Dolly, who would have answered, "of course I won't try to keep him by force. I don't keep him indeed. The races are just coming, his horses are running, he will go. I'm very glad. But think of me, fancy my position.... But what's the use of talking about it!" She smiled. "Well, what did he talk about with you?"

"He spoke of what I want to speak about myself, and it's easy for me to be his advocate; of whether there is not a possibility... whether you could not..." (Darya Alexandrovna hesitated) "correct, or improve your position.... You know how I look at it... But all the same, if possible, you should get married...."

"Divorce, you mean?" said Anna. "Do you know, the only woman who came to see me in Peterburg was Betsy Tverskaia? You know her, of course? Au fond, c'est la femme la plus dipravée qui existe. She had an intrigue with Tushkevich, deceiving her husband in the basest way. And she told me that she did not care to know me so long as my position was irregular. Don't imagine I would compare... I know you, darling. But I could not help remembering... Well, so what did he say to you?" she repeated.

"He said that he was unhappy on your account and his own. Perhaps you will say that it's egoism, but what a legitimate and noble egoism. He wants first of all to legitimize his daughter, and to be your husband, to have a legal right to you."

"What wife, what slave can be so utterly a slave as I, in my position?" she put in gloomily.

"The chief thing he desires... he desires that you should not suffer."

"That's impossible. Well?"

"Well, and the most legitimate desire he wishes that your children should have a name."

"What children?" Anna said, not looking at Dolly, and half closing her eyes.

"Annie and those to come..."

## Anna Karenina

"He need not trouble on that score; I shall have no more children."

"How can you tell that you won't?"

"I shall not, because I don't wish it." And, in spite of all her emotion, Anna smiled, as she caught the naive expression of curiosity, wonder, and horror on Dolly's face.

"The doctor told me after my illness..."

"Impossible!" said Dolly, opening her eyes wide. For here this was one of those discoveries the consequences and deductions from which are so immense that all that one feels for the first instant is that it is impossible to take it all in, and that one will have to reflect a great, great deal upon it.

This discovery, suddenly throwing light on all those families of one or two children, which had hitherto been so incomprehensible to her, aroused so many ideas, reflections, and contradictory emotions, that she had nothing to say, and simply gazed with wide-open eyes of wonder at Anna. This was the very thing she had been dreaming of, but now learning that it was possible, she was horrified. She felt that it was too simple a solution of too complicated a problem.

"N'est-ce pas immoral?" was all she said, after a brief pause.

"Why so? Think I have a choice between two alternatives: either to be with child, that is an invalid, or to be the friend and companion of my husband practically my husband," Anna said in a tone intentionally superficial and frivolous.

"Yes, yes," said Darya Alexandrovna, hearing the very arguments she had used to herself, and not finding the same force in them as before.

"For you, for other people," said Anna, as though divining her thoughts, "there may be reason to hesitate; but for me... You must consider I am not his wife; he loves me as long as he loves me. And how am I to keep his love? Not like this!"

She moved her white hands in a curve before her waist.

With extraordinary rapidity, as happens during moments of excitement, ideas and memories rushed into Darya Alexandrovna's head. "I," she thought, "did not keep my attraction for Stiva; he left me for others, and the first woman for whom he betrayed me did not keep him by being always pretty and lively. He deserted her and took another. And can Anna attract and keep Count Vronsky in that way? If that is what he looks for, he will find dresses and manners still more attractive and charming. And, however white and beautiful her bare arms are, however beautiful her full figure and her eager face under her black curls, he will find something better still, just as my disgusting, pitiful, and charming husband does."

Dolly made no answer, she merely sighed. Anna noticed this sigh, indicating dissent, and she went on. In her armory she had other arguments so strong that no answer could be made to them.

"Do you say that it's not right? But you must consider," she went on; "you forget my position. How can I desire children? I'm not speaking of the suffering I'm not afraid of that. Think, only what are my children to be? Ill-fated children, who will have to bear a stranger's name. For the very fact of their birth they will be forced to be ashamed of their mother, their father, their birth."

"But that is just why a divorce is necessary."

## Anna Karenina

But Anna did not hear her. She longed to give utterance to all the arguments with which she had so many times convinced herself.

"What is reason given me for, if I am not to use it to avoid bringing unhappy beings into the world!"

She looked at Dolly, but without waiting for a reply she went on:

"I should always feel I had wronged these unhappy children," she said. "If there are none, at any rate they are not unhappy; while if they are unhappy, I alone should be to blame for it."

These were the very arguments Darya Alexandrovna had used in her own reflections; but she heard them now without understanding them. "How can one wrong creatures that don't exist?" she thought. And all at once the idea struck her. Could it possibly, under any circumstances, have been better for her favorite Grisha if he had never existed? And this seemed to her so wild, so strange, that she shook her head to drive away this tangle of whirling, mad ideas.

"No, I don't know; it's not right," was all she said, with an expression of disgust on her face.

"Yes, but you mustn't forget what you are and what I am.... And besides that," added Anna, in spite of the wealth of her arguments and the poverty of Dolly's objections, seeming still to admit that it was not right, "don't forget the chief point, that I am not now in the same position as you. For you the question is: Do you desire not to have any more children? While for me it is: Do I desire to have them? And that's a great difference. You must see that I can't desire them in my position."

Darya Alexandrovna made no reply. She suddenly felt that she had got away from Anna so far, that there lay between them a barrier of questions on which they could never agree, and about which it was better not to speak.

## XXIV.

"Then there is all the more reason for you to legalize your position, if possible," said Dolly.

"Yes, if possible," said Anna, speaking all at once in an utterly different tone, subdued and mournful.

"Surely you don't mean a divorce is impossible? I was told your husband had consented to it."

"Dolly, I don't want to talk about that."

"Oh, we won't then," Darya Alexandrovna hastened to say, noticing the expression of suffering on Anna's face. "All I see is that you take too gloomy a view of things."

"I? Not at all! I'm very satisfied and happy. You see, je fais passions. Veslovsky..."

"Yes, to tell the truth, I don't like Veslovsky's tone," said Darya Alexandrovna, anxious to change the subject.

"Oh, that's nonsense! It amuses Alexei, and that's all; but he's a boy, and quite under control. You know, I turn him as I please. It's just as it might be with your Grisha.... Dolly!" she suddenly changed the subject. "You say I take too gloomy a view of things. You can't understand. It's too awful! I try not to take any view of it at all."

"But I think you ought to. You ought to do all you can."



## Anna Karenina

"But what can I do? Nothing. You tell me to marry Alexei, and say I don't think about it. I don't think about it!" she repeated, and a flush rose into her face. She got up, straightening her chest, and sighed heavily. With her light step she began pacing up and down the room, stopping now and then. "I don't think of it? Not a day, not an hour passes that I don't think of it, and blame myself for what I think... because thinking of that may drive me mad. Drive me mad!" she repeated. "When I think of it, I can't sleep without morphine. But never mind. Let us talk quietly. They tell me divorce. In the first place, he won't give me a divorce. He's under the influence of Countess Lidia Ivanovna now."

Darya Alexandrovna, sitting erect on a chair, turned her head following Anna with a face of sympathetic suffering.

"You ought to make the attempt," she said softly.

"Suppose I make the attempt. What does it mean?" she said, evidently giving utterance to a thought, a thousand times thought over and learned by heart. "It means that I, hating him, but still recognizing that I have wronged him and I consider him magnanimous that I humiliate myself to write to him.... Well, suppose I make the effort; I do it. Either I receive a humiliating refusal, or consent. Well, I have received his consent, say..." Anna was at that moment at the farthest end of the room, and she stopped there, doing something to the curtain at the window. "I receive his consent, but my... my son? They won't give him up to me. He will grow up despising me, with his father, whom I've abandoned. Do you see, I love equally, I think, but both more than myself, two beings Seriozha and Alexei."

She came out into the middle of the room and stood facing Dolly, with her arms pressed tightly across her chest. In her white dressing gown her figure seemed more than usually grand and broad. She bent her head, and with shining, wet eyes looked from under her brows at Dolly, a thin little pitiful figure in her patched dressing jacket and nightcap, shaking all over with emotion.

"It is only those two beings whom I love, and one excludes the other. I can't have them together, and that's the only thing I want. And since I can't have that, I don't care about the rest. I don't care about anything anything. And it will end one way or another, and so I can't, I don't like to talk of it. So don't blame me, don't judge me for anything. You can't with your pure heart understand all that I'm suffering."

She went up, sat down beside Dolly, and, with a guilty look, peeped into her face and took her hand.

"What are you thinking? What are you thinking about me? Don't despise me. I don't deserve contempt. I'm simply unhappy. If anyone is unhappy, I am," she uttered, and turning away, she burst into tears.

Left alone, Dolly said her prayers and went to bed. She had felt for Anna with all her heart while she was speaking to her, but now she could not force herself to think of her. The memories of home and of her children rose up in her imagination with a peculiar charm quite new to her, with a sort of new brilliance. That world of her own seemed to her now so sweet and precious that she would not on any account spend an extra day outside it, and she made up her mind that she would certainly go back the next day.

Anna meantime went back to her boudoir, took a wineglass, and dropped into it several drops of a medicine, of which the principal ingredient was morphine. After drinking it off and sitting still a little while, she went into her bedroom in a soothed and more cheerful frame of mind.

When she went into the bedroom, Vronsky looked intently at her. He was looking for traces of the conversation which he knew, staying so long in Dolly's room, she must have had with her. But in her expression of restrained excitement, and of a sort of reserve, he could find nothing but the beauty that always bewitched him afresh though he was used to it, the consciousness of it, and the desire that it should affect him. He did not want to ask her what

they had been talking of, but he hoped that she would tell him something of her own accord. But she only said:

"I am so glad you like Dolly. You do, don't you?"

"Oh, I've known her a long while. She's very goodhearted, I suppose, mais excessivement terre-a-terre. Still, I'm very glad to see her."

He took Anna's hand and looked inquiringly into her eyes.

Misinterpreting the look, she smiled to him.

Next morning, in spite of the protests of her hosts, Darya Alexandrovna prepared for her homeward journey. Levin's coachman, in his by no means new coat and shabby hat, with his ill-matched horses and his carriage with the patched mudguards, drove with gloomy determination into the covered gravel approach.

Darya Alexandrovna disliked taking leave of Princess Varvara and the gentlemen of the party. After a day spent together, both she and her hosts were distinctly aware that they did not get on together, and that it was better for them not to meet. Only Anna was sad. She knew that now, after Dolly's departure, no one again would stir up within her soul the feelings that had been roused by their conversation. It hurt her to stir up these feelings, but yet she knew that that was the best part of her soul, and that that part of her soul would quickly grow weedy in the life she was leading.

As she drove out into the open country, Darya Alexandrovna had a delightful sense of relief, and she felt tempted to ask the two men how they had liked being at Vronsky's, when suddenly the coachman, Philip, expressed himself unasked:

"Rolling in wealth they may be, but three pots of oats was all they gave us. Everything cleared up till there wasn't a grain left by cock-crow. What are three pots? A mere mouthful! And oats now you could get from innkeepers for forty-five kopecks. At our place, no fear, all comers may have as much as they can eat."

"The master's a screw," put in the countinghouse clerk.

"Well, did you like their horses?" asked Dolly.

"The horses! There's no two opinions about them. And the food was good. But it seemed to me sort of dreary there, Darya Alexandrovna. I don't know what you thought," he said, turning his handsome, good-natured face to her.

"I thought so too. Well, shall we get home by evening?"

"Eh, we must!"

On reaching home and finding everyone entirely safe and particularly charming, Darya Alexandrovna began with great liveliness telling them about her arrival, her warm reception, about the luxury and good taste in which the Vronskys lived, and about their recreations, and she would not allow a word to be said against them.

"One has to know Anna and Vronsky I have got to know him better now to see how fine they are, and how touching," she said, speaking now with perfect sincerity, and forgetting the vague feeling of dissatisfaction and awkwardness she had experienced there.

XXV.

Vronsky and Anna spent the whole summer and part of the autumn in the country, living in just the same condition, and still taking no steps to obtain a divorce. It was a decided thing between them that they should not go away anywhere; but both felt, the longer they lived alone, especially in the autumn, and without guests in the house, that they could not stand this existence, and that they would have to change it.

Their life was apparently such that nothing better could be desired. They had the fullest abundance of everything; they had a child, and both had occupation. Anna devoted just as much care to her appearance when they had no visitors, and she did a great deal of reading, both of novels and of what serious literature was in fashion. She ordered all the books that were praised in the foreign papers and journals she received, and read them with that concentrated attention which is only given to what is read in seclusion. Moreover, every subject that was of interest to Vronsky, she studied in books and special journals, so that he often went straight to her with questions relating to agriculture or architecture, sometimes even with questions relating to horse breeding or sport. He was amazed at her knowledge, her memory, and at first was disposed to doubt it, to ask for confirmation of her facts; and she would find what he asked for in some book, and show it to him.

The building of the hospital, too, interested her. She did not merely assist, but planned and suggested a great deal herself. But her chief thought was still of herself—how far she was dear to Vronsky, how far she could make up to him for all he had given up. Vronsky appreciated this desire not only to please, but to serve him, which had become the sole aim of her existence, but at the same time he wearied of the loving snares in which she tried to hold him fast. As time went on, and he saw himself more and more often held fast in these snares, he had an ever-growing desire, not so much to escape from them, as to try whether they hindered his freedom. Had it not been for this growing desire to be free, not to have scenes every time he wanted to go to the town to a session or a race, Vronsky would have been perfectly satisfied with his life. The role he had taken up, the role of a wealthy landowner, one of that class which ought to be the very heart of the Russian aristocracy, was entirely to his taste; and now, after spending six months in that role, he derived even greater satisfaction from it. And his management of his estate, which occupied and absorbed him more and more, was most successful. In spite of the immense sums which the hospital, the machinery, the cows ordered from Switzerland, and many other things, cost him, he was convinced that he was not wasting but increasing his substance. In all matters affecting income, the sales of timber, wheat, and wool, the letting of lands, Vronsky was hard as a rock, and knew well how to keep up prices. In all operations on a large scale on this and his other estates, he kept to the simplest methods involving no risk, and in trifling details he was careful and exacting to an extreme degree. In spite of all the cunning and ingenuity of the German steward, who would try to tempt him into purchases by making his original estimate always far larger than really required, and then representing to Vronsky that he might get the thing cheaper, and so make a profit, Vronsky did not give in. He listened to his steward, cross-examined him, and only agreed to his suggestions when the implement to be ordered or constructed was the very newest, not yet known in Russia, and likely to excite wonder. Apart from such exceptions, he resolved upon an increased outlay only where there was a surplus, and in making such an outlay he went into the minutest details, and insisted on getting the very best for his money; so that by the method on which he managed his affairs, it was clear that he was not wasting, but increasing his substance.

In October there were the provincial nobility elections in the Kashinsky province, where were the estates of Vronsky, Sviiazhsky, Koznishev, Oblonsky, and a small part of Levin's land.

These elections were attracting public attention from several circumstances connected with them, and also from the people taking part in them. There had been a great deal of talk about these elections, and great preparations were being made for them. Persons who never attended the elections were coming from Moscow, from Petersburg, and from abroad to attend these.

Vronsky had long before promised Sviiashsky to go to them.

Before the elections Sviiashsky, who often visited Vozdvizhenskoe, drove over to fetch Vronsky.

On the day before there had been almost a quarrel between Vronsky and Anna over this proposed expedition. It was the very dullest autumn weather, which is so dreary in the country, and so, preparing himself for a struggle, Vronsky, with a hard and cold expression, informed Anna of his departure as he had never spoken to her before. But, to his surprise, Anna accepted the information with great composure, and merely asked when he would be back. He looked intently at her, at a loss to explain this composure. She smiled at his look. He knew that way she had of withdrawing into herself, and knew that it only happened when she had determined upon something without letting him know her plans. He was afraid of this; but he was so anxious to avoid a scene that he kept up appearances, and half sincerely believed in what he longed to believe in her reasonableness.

"I hope you won't be dull?"

"I hope not," said Anna. "I got a box of books yesterday from Gautier's. No, I shan't be dull."

"She's trying to take that tone, and so much the better," he thought, "or else it would be the same thing over and over again."

And he set off for the elections without appealing to her for a candid explanation. It was the first time since the beginning of their intimacy that he had parted from her without a full explanation. From one point of view this troubled him, but on the other side he felt that it was better so. "At first there will be, as this time, something undefined, kept back, and then she will get used to it. In any case I can give up anything for her, but not my masculine independence," he thought.

## XXVI.

In September Levin moved to Moscow for Kitty's confinement. He had spent a whole month in Moscow with nothing to do, when Sergei Ivanovich, who had property in the Kashinsky province, and took great interest in the question of the approaching elections, made ready to set off to the elections. He invited his brother, who had a vote in the Selezniovsky district, to come with him. Levin had, moreover, to transact in Kashin some extremely important business relating to the wardship, and to the receiving of certain redemption money for his sister, who was abroad.

Levin still hesitated, but Kitty, who saw that he was bored in Moscow, and urged him to go, on her own authority ordered him the proper nobleman's uniform, costing eighty roubles. And this eighty roubles paid for the uniform was the chief reason that finally decided Levin to go. He went to Kashin.

Levin had been five days in Kashin, visiting the assembly each day, and busily engaged about his sister's business, which still dragged on. The district marshals of nobility were all occupied with the elections, and it was impossible to get the simplest thing done that depended upon the court of wardship. The other matter, the receipt of the sums due, was also met by difficulties. After long negotiations over the lifting of the prohibition, the money was at last ready to be paid; but the notary, a most obliging person, could not hand over the order, because it must have the signature of the president, and the president, though he had not given over his duties to a deputy, was at the elections. All these worrying negotiations, this endless going from place to place, and talking with pleasant and excellent people, who quite saw the unpleasantness of the petitioner's position, but were powerless to assist him all these efforts that yielded no result, led to a feeling of misery in Levin akin to the mortifying helplessness one experiences in dreams, when one tries to use physical force. He felt this frequently as he talked to his exceedingly good-natured solicitor. This solicitor did, it seemed, everything possible, and strained every

nerve to get him out of his difficulties. "I tell you what you might try," he said more than once; "go to so-and-so and so-and-so," and the solicitor drew up a regular plan for getting round the fatal point that hindered everything. But he would add immediately, "It'll mean some delay, anyway, but you might try it." And Levin did try, and did go. Everyone was kind and civil, but the point evaded seemed to crop up again in the end, and again to bar the way. What was particularly trying, was that Levin could not make out with whom he was struggling, to whose interest it was that his business should not be done. That no one seemed to know; the solicitor certainly did not know. If Levin could have understood why, just as he saw why one can only approach the booking office of a railway station in single file, it would not have been so vexatious and tiresome to him. But in the case of the hindrances that confronted him in his business, no one could explain why they existed.

But Levin had changed a good deal since his marriage; he was patient, and if he could not see why it was all arranged like this, he told himself that he could not judge without knowing all about it, and that most likely it must be so, and he tried not to resent it.

In attending the elections, too, and taking part in them, he tried now not to judge, not to fall foul of them, but to comprehend as fully as he could the question which was so earnestly and ardently absorbing honest and excellent men whom he respected. Since his marriage there had been revealed to Levin so many new and serious aspects of life which had previously, through his frivolous attitude to them, seemed of no importance, that in the question of the elections, too, he assumed and tried to find some serious significance.

Sergei Ivanovich explained to him the meaning and object of the proposed radical change at the elections. The marshal of the province in whose hands the law had placed the control of so many important public functions the guardianship of wards (the very department which was giving Levin so much trouble just now), the disposal of large sums subscribed by the nobility of the province, the high schools, for girls, for boys, and military, and primary instruction on the new statute and finally, the Zemstvo the marshal of the province, Snetkov, was a nobleman of the old school, dissipating an immense fortune, a goodhearted man, honest after his own fashion, but utterly without any comprehension of the needs of modern days. He always took, in every question, the side of the nobility; he was positively antagonistic to the spread of primary education, and he succeeded in giving a purely party character to the Zemstvo which ought by rights to be of such an immense importance. What was needed was to put in his place a fresh, capable, perfectly modern man, of contemporary ideas, and to frame their policy so as to derive, from the rights conferred upon the nobles (not as the nobility, but as an element of the Zemstvo), all the benefits of self-government that could possibly be derived from them. In the wealthy Kashinsky province, which always took the lead of other provinces in everything, there was now such a preponderance of forces that this policy, once carried through properly there, might serve as a model for other provinces for all Russia. And hence the whole question was of the greatest importance. It was proposed to elect as marshal in place of Snetkov either Sviiashzsky, or, better still, Neviedovsky, a former university professor, a man of remarkable intelligence, and a great friend of Sergei Ivanovich.

The meeting was opened by the governor, who made a speech to the nobles, urging them to elect the public functionaries, not from regard for persons, but for the service and welfare of the native country, and hoping that the honorable nobility of the Kashinsky province would, as at all former elections, hold their duty as sacred, and vindicate the exalted confidence of the Monarch.

When he had finished his speech, the governor walked out of the hall, and the noblemen noisily and eagerly some even enthusiastically followed him and thronged round him while he put on his fur coat and conversed amicably with the marshal of the province. Levin, anxious to see into everything and not miss anything, also stood there in the crowd, and heard the governor say: "Please, tell Marya Ivanovna my wife is very sorry she could not visit the charity school." And thereupon the nobles in high good humor sorted out their fur coats and all drove off to the cathedral.

In the cathedral Levin, lifting his hand like the rest, and repeating the words of the dean, vowed with the most awesome oaths to do all the governor had hoped they would do. Church services always affected Levin, and as he uttered the words: "I kiss the cross," and glanced round at the crowd of young and old men repeating the same, he felt touched.

On the second and third days there was business relating to the finances of the nobility, and the high school for girls, of no importance whatever, as Sergei Ivanovich explained, and Levin, busy seeing after his own affairs, did not attend the meetings. On the fourth day the auditing of the marshal's accounts took place at the high table of the marshal of the province. And then there occurred the first skirmish between the new party and the old. The committee which had been deputed to verify the accounts reported to the meeting that all was in order. The marshal of the province got up, thanked the nobility for their confidence, and shed tears. The nobles gave him a loud welcome and shook hands with him. But at that instant a nobleman of Sergei Ivanovich's party said that he had heard that the committee had not verified the accounts, considering such a verification an insult to the marshal of the province. One of the members of the committee incautiously admitted this. Then a small gentleman, very young-looking but very venomous, began to say that it would probably be agreeable to the marshal of the province to give an account of his expenditures of the public moneys, and that the misplaced delicacy of the members of the committee was depriving him of this moral satisfaction. Then the members of the committee tried to withdraw their admission, and Sergei Ivanovich began to prove that they must logically admit either that they had verified the accounts or that they had not, and he developed this dilemma in detail. Sergei Ivanovich was answered by the talker of the opposite party. Then Sviazhsky spoke, and then the venomous gentleman again. The discussion lasted a long time and ended in nothing. Levin was surprised that they should dispute upon this subject so long, especially as, when he asked Sergei Ivanovich whether he supposed that money had been misappropriated, Sergei Ivanovich answered:

"Oh, no! He's an honest man. But those old-fashioned methods of paternal family arrangements in the management of nobility affairs must be broken down."

On the fifth day came the elections of the district marshals. It was rather a stormy day in several districts. In the Selezniovsky district Sviazhsky was elected unanimously without a ballot, and he gave a dinner that evening.

## XXVII.

The sixth day was fixed for the election of the marshal of the province. The rooms, large and small, were full of nobleman in all sorts of uniforms. Many had come only for that day. Men who had not seen each other for years, some from the Crimea, some from Peterburg, some from abroad, met in the rooms of the Hall of Nobility. There was much discussion around the province table under the portrait of the Czar.

The nobles, both in the larger and in the smaller rooms, grouped themselves in camps, and from their hostile and suspicious glances, from the silence that fell upon them when outsiders approached a group, and from the way that some, whispering together, retreated to the farther corridor, it was evident that each side had secrets from the other. In appearance the noblemen were sharply divided into two classes: the old and the new. The old were for the most part either in the old uniform of the nobility, buttoned up closely, with spurs and hats, or in their own special naval, cavalry, infantry uniforms, earned by their former service. The uniforms of the older men were embroidered in the old-fashioned way with small puffs on their shoulders; they were unmistakably tight and short in the waists, as though their wearers had grown out of them. The younger men wore the uniform of the nobility with long waists and broad shoulders, unbuttoned over white waistcoats, or uniforms with black collars and with the embroidered laurel leaves of justices of the peace. To the younger men belonged the Court uniforms that here and there brightened up the crowd.

But the division into young and old did not correspond with the division of parties. Some of the young men, as

Levin observed, belonged to the old party; and some of the very oldest noblemen, on the contrary, were whispering with Sviiazhsky, and were evidently ardent partisans of the new party.

Levin stood in the smaller room, where they were smoking and taking light refreshments, close to his own friends, and, listening to what they were saying, he vainly exerted all his intelligence trying to understand what was said. Sergei Ivanovich was the center round which the others grouped themselves. He was listening at that moment to Sviiazhsky and Khliustov, the marshal of another district, who belonged to their party. Khliustov would not agree to go with his district to ask Snetkov to be a candidate, while Sviiazhsky was persuading him to do so, and Sergei Ivanovich was approving of the plan. Levin could not make out why the opposition had to ask the marshal to be a candidate when they wanted to supersede him.

Stepan Arkadyevich, who had just been drinking and taking some snack lunch, came up to them in his uniform of a gentleman of the bedchamber, wiping his lips with a perfumed handkerchief of bordered batiste.

"We are placing our forces," he said, pulling out his side whiskers, "Sergei Ivanovich!"

And listening to the conversation, he supported Sviiazhsky's contention.

"One district's enough, and Sviiazhsky's obviously of the opposition," he said, words evidently intelligible to all except Levin.

"Why, Kostia, you, it seems, get the taste for these affairs too!" he added, turning to Levin and drawing his arm through his. Levin would have been glad indeed to get the taste for these affairs, but could not make out what the point was, and retreating a few steps from the speakers, he explained to Stepan Arkadyevich his inability to understand why the marshal of the province should be asked to be a candidate.

"O sancta simplicitas!" said Stepan Arkadyevich, and briefly and clearly he explained it to Levin.

If, as at previous elections, all the districts asked the marshal of the province to be a candidate, then he would be elected without a ballot. That must not be. Now eight districts had agreed to call upon him: if two refused to do so, Snetkov might decline the candidacy entirely; and then the old party might choose another of their party, which would throw them completely out in their reckoning. But if only one district, Sviiazhsky's, did not call upon him to be a candidate, Snetkov would let himself be balloted for. They were even, some of them, going to vote for him, and purposely to let him get a good many votes, so that the enemy might be thrown off the scent, and when a candidate of the other side was put up, they too might give him some votes. Levin understood to some extent, but not fully, and would have put a few more questions, when suddenly everyone began talking and making a noise, and they moved toward the big room.

"What is it? Eh? Whom?... Proxy? Whose? What?... They won't pass him?... No proxy?... They won't let Florov in?... Eh, because of the charge against him?... Why, at this rate, they won't admit anyone. It's a swindle!... The law!" Levin heard exclamations on all sides, and he moved into the big room together with the others, all hurrying somewhere and afraid of missing something. Squeezed by the crowding noblemen, he drew near the high table where the marshal of the province, Sviiazhsky, and the other leaders, were hotly disputing about something.

## XXVIII.

Levin was standing rather far off. A nobleman breathing heavily and hoarsely at his side, and another whose thick boots were creaking, prevented him from hearing distinctly. He could only hear the soft voice of the marshal faintly, then the shrill voice of the venomous gentleman, and then the voice of Sviiazhsky. They were disputing, as far as he could make out, as to the interpretation to be put on the act and the exact meaning of the words:

"liable to be called up for trial."

The crowd parted to make way for Sergei Ivanovich approaching the table. Sergei Ivanovich, waiting till the venomous gentleman had finished speaking, said that he thought the best solution would be to refer to the act itself, and asked the secretary to find the act. The act said that in case of difference of opinion, there must be a ballot.

Sergei Ivanovich read the act and began to explain its meaning, but at that point a tall, stout, stoop-shouldered landowner, with dyed mustache, in a tight uniform that made the back of his neck bulge up, interrupted him. He went up to the table, and striking it with his finger ring, he shouted loudly:

"A ballot! Put it to the vote! No need for more talking!"

Then several voices began to talk all at once, and the tall nobleman with the ring, getting more and more exasperated, shouted more and more loudly. But it was impossible to make out what he said.

He was shouting for the very course Sergei Ivanovich had proposed; but it was evident that he hated him and all his party, and this feeling of hatred spread through the whole party and roused in opposition to it the same vindictiveness, though in a more seemly form, on the other side. Shouts were raised, and for a moment all was confusion, so that the marshal of the province had to call for order.

"A ballot! A ballot! Whoever is a nobleman understands! We shed our blood for our country!... The confidence of the Monarch.... No checking of the accounts of the marshal he's not a cashier!... But that's not the point.... Votes, please! What vileness!..." shouted furious and violent voices on all sides. Looks and faces were even more violent and furious than their words. They expressed the most implacable hatred. Levin did not in the least understand what it was all about, and he marveled at the passion with which it was disputed whether or not the decision about Fliorov should be put to the vote. He forgot, as Sergei Ivanovich explained to him afterward, this syllogism: that it was necessary for the public good to get rid of the marshal of the province; that to get rid of the marshal it was necessary to have a majority of votes; that to get a majority of votes it was necessary to secure Fliorov's right to vote; that to secure the recognition of Fliorov's right to vote they must decide on the interpretation to be put on the act.

"And one vote may decide the whole question, and one must be serious and consecutive, if one wants to be of use in public life," concluded Sergei Ivanovich. But Levin forgot all that, and it was painful to him to see all these excellent persons, for whom he had respect, in such an unpleasant and vicious state of excitement. To escape from this painful feeling he went away into the other room where there was nobody except the waiters at the refreshment bar. Seeing the waiters busy washing up the crockery and setting in order their plates and wineglasses, seeing their alert and vivacious faces, Levin felt an unexpected sense of relief, as though he had come out of a stuffy room into the fresh air. He began walking up and down, looking with pleasure at the waiters. He particularly liked the way one gray-whiskered waiter, who showed his scorn for the other younger ones, and was jeered at by them, was teaching them how to fold napkins properly. Levin was just about to enter into conversation with the old waiter, when the secretary of the court of wardship, a little old man whose speciality it was to know all the noblemen of the province by name and patronymic, drew him away.

"Please come, Konstantin Dmitrievich," he said, "your brother's looking for you. They are voting on the legal point."

Levin walked into the room, received a white ball, and followed his brother, Sergei Ivanovich, to the table where Sviiazhsky was standing with a significant and ironical face, holding his beard in his fist and sniffing at it. Sergei Ivanovich put his hand into the box, put the ball somewhere, and, making room for Levin, stopped. Levin advanced, but utterly forgetting what he was to do, and much embarrassed, he turned to Sergei Ivanovich with the



question, "Where am I to put it?" He asked this softly, at a moment when there was talking going on near, so that he had hoped his question would not be overheard. But the persons speaking paused, and his improper question was overheard. Sergei Ivanovich frowned.

"That is a matter for each man's own decision," he said severely.

Several people smiled. Levin crimsoned, hurriedly thrust his hand under the cloth, and put the ball to the right as it was in his right hand. Having put it in, he recollected that he ought to have thrust his left hand in too, and so he thrust it in though too late, and, still more overcome with confusion, he beat a hasty retreat into the background.

"A hund'ed and twenty-six fo' admission! Ninety-eight against!" sang out the voice of the secretary, who could not pronounce the letter r. Then there was a laugh; a button and two hazelnuts were found in the box. The nobleman was allowed the right to vote, and the new party had conquered.

But the old party did not consider themselves conquered. Levin heard that they were asking Snetkov to be candidate, and he saw that a crowd of noblemen was surrounding the marshal, who was saying something. Levin went nearer. In reply Snetkov spoke of the trust the noblemen of the province had placed in him, the affection they had shown him, which he did not deserve, as his only merit had been his attachment to the nobility, to whom he had devoted twelve years of service. Several times he repeated the words: "I have served to the best of my powers with truth and good faith; I value your goodness and thank you," and suddenly he stopped short from the tears that choked him, and went out of the room. Whether these tears came from a sense of the injustice being done him, from his love for the nobility, or from the strain of the position he was placed in, feeling himself surrounded by enemies, his emotion infected the assembly, the majority were touched, and Levin felt a tenderness for Snetkov.

In the doorway the marshal of the province jostled against Levin.

"Beg pardon excuse me, please," he said as to a stranger, but, recognizing Levin, he smiled timidly. It seemed to Levin that he would have liked to say something, but could not speak for emotion. His face and his whole figure in his uniform with the crosses, and white trousers striped with galloons, as he moved hurriedly along, reminded Levin of some hunted beast who sees that he is in evil plight. This expression on the marshal's face was particularly touching to Levin, because, only the day before, he had been at his house about his guardianship business and had seen him in all his grandeur, a kindhearted, fatherly man. The big house with the old family furniture; the rather slovenly, far from stylish, but respectful footmen unmistakably old house serfs who had stuck to their master; the stout, good-natured wife in a cap with lace and a Turkish shawl, petting her pretty grandchild, her daughter's daughter; the young son, a sixth-form high school boy, coming home from school, and greeting his father by kissing his big hand; the genuine, cordial words and gestures of the old man all this had the day before roused an instinctive feeling of respect and sympathy in Levin. This old man was a touching and pathetic figure to Levin now, and he longed to say something pleasant to him.

"So you're our marshal again," he said.

"It's not likely," said the marshal, looking round with a scared expression. "I'm worn-out, I'm old. If there are men younger and more deserving than I, let them serve."

And the marshal disappeared through a side door.

The most solemn moment was at hand. They were to proceed immediately to the election. The leaders of both parties were reckoning white and black on their fingers.

## Anna Karenina

The discussion upon Fliorov had given the new party not only Fliorov's vote, but had also gained time for them, so that they could send to fetch three noblemen who had been rendered unable to take part in the elections by the wiles of the other party. Two noble gentlemen, who had a weakness for strong drink, had been made drunk by the partisans of Snetkov, and a third had been relieved of his uniform.

On learning this, the new party had made haste, during the dispute about Fliorov, to send some of their men in a cab to clothe the stripped gentleman, and to bring along one of the intoxicated to the meeting.

"I've brought one after bringing him to by throwing water over him," said the landowner who had gone on this errand, to Sviiazhsky. "Never mind he'll do."

"Not too drunk he won't fall down?" said Sviiazhsky, shaking his head.

"No, he's first-rate. If only they don't give him any more here.... I've told the barman not to give him anything, on any account."

## XXIX.

The narrow room, in which they were smoking and taking refreshment, was full of noblemen. The excitement grew more intense, and every face betrayed some uneasiness. The excitement was specially keen for the leaders of each party, who knew every detail, and had reckoned up every vote. They were the generals organizing the approaching battle. The rest, like the rank and file before an engagement, though they were getting ready for the fight, sought for other distractions in the interval. Some were lunching, standing at the bar, or sitting at the table; others were walking up and down the long room, smoking cigarettes, and talking with friends whom they had not seen for a long while.

Levin did not care to eat, and he was not a smoker; he did not want to join his own friends that is Sergei Ivanovich, Stepan Arkadyevich, Sviiazhsky, and the rest, because Vronsky in his equerry's uniform was standing with them in eager conversation. Levin had seen him already at the meeting on the previous day, and he had studiously avoided him, not caring to greet him. He went to the window and sat down, scanning the groups, and listening to what was being said around him. He felt depressed, especially because everyone else was, as he saw, eager, anxious, and interested, and he alone, with an old, toothless little man with mumbling lips, wearing a naval uniform who sat beside him, had no interest in it, and nothing to do.

"He's such a blackguard! I have told him so, but it makes no difference. Only think of it! He couldn't collect it in three years!" he heard vigorously uttered by a stoop-shouldered, short country gentleman, who had pomaded hair hanging over his embroidered collar, and new boots obviously put on for the occasion, with heels that tapped energetically as he spoke. Casting a displeased glance at Levin, this gentleman sharply turned his back.

"Yes, it's a dirty business, there's no denying," another puny landowner assented in a high voice.

Next, a whole crowd of country gentlemen, surrounding a stout general, hurriedly came near Levin. These persons were unmistakably seeking a place where they could talk without being overheard.

"How dare he say I had his breeches stolen! Pawned them for drink, I expect. Damn the fellow Prince indeed! He'd better not say it that's swinish!"

"But excuse me! They take their stand on the act," was being said in another group; "the wife must be registered as a noble."

## Anna Karenina

"Oh, damn your acts! I speak from my heart. We're all gentlemen, aren't we? Have trust in us."

"Shall we go on, Your Excellency fine champagne?"

Another group was following a nobleman who was shouting something in a loud voice; it was one of the three intoxicated gentlemen.

"I always advised Marya Semionovna to let for a fair rent, for she can never save a profit," he heard a pleasant voice say. The speaker was a country gentleman with white mustache, wearing the regimental uniform of an old general staff officer. It was the very landowner Levin had met at Sviiazhsky's. He knew him at once. The landowner too stared at Levin, and they exchanged greetings.

"Very glad to see you! To be sure! I remember you very well. Last year at our district marshal's, Nikolai Ivanovich's."

"Well, and how is your land doing?" asked Levin.

"Oh, still just the same, always at a loss," the landowner answered with a resigned smile, but with an expression of serenity and conviction that it must be thus. "And how do you come to be in our province?" he asked. "Come to take part in our coup d'etat?" he said, confidently pronouncing the French words with a bad accent.

"All Russia's here gentlemen of the bedchamber, and everything short of the ministry." He pointed to the imposing figure of Stepan Arkadyevich in white trousers and his court uniform, walking by with a general.

"I ought to own that I don't very well understand the drift of the provincial elections," said Levin.

The landowner looked at him.

"Why, what is there to understand? There's no meaning in it at all. It's a decaying institution that goes on running only by the force of inertia. Just look, the very uniforms tell you that it's an assembly of justices of the peace, permanent members of the boards, and so on, but not of noblemen."

"Then why do you come?" asked Levin.

"From habit, nothing else. Then, too, one must keep up connections. It's a moral obligation of a sort. And then, to tell the truth, there are one's own interests. My son-in-law wants to run as a permanent member; they're not rich people, and he must be brought forward. These gentlemen, now what do they come for?" he said, pointing to the venomous gentleman, who was talking at the high table.

"That's the new generation of nobility."

"New it may be, but nobility it isn't. They're landed proprietors but we're the landowners. As noblemen, they're cutting their own throats."

"But you say it's an institution that's served its time."

"That it may be, but still, it ought to be treated a little more respectfully. Snetkov, now... We may be of use, or we may not, but we're the growth of a thousand years. If we're laying out a garden, planning one before the house, you know, and there you've a tree that's stood for centuries in the very spot... Old and gnarled it may be, and yet you don't cut down the old fellow to make room for the flowerbeds, but lay out your beds so as to take advantage of the tree. You won't grow him again in a year," he said cautiously, and he immediately changed the

conversation. "Well, and how is your estate doing?"

"Oh, not very well. I make about five per cent."

"Yes, but you don't reckon your own work. Aren't you worth something too? I'll tell you my own case. Before I took to seeing after the land, I had a salary of three thousand roubles from the service. Now I do more work than I did in the service, and, like you, I get five per cent on the land, and thank God for that. But one's work is thrown in for nothing."

"Then why do you do it, if it's a clear loss?"

"Oh, well, one does it! What would you have? It's habit, and one knows it's as it should be. And what's more," the landowner went on, leaning on the window and chatting on, "my son, I must tell you, has no taste for it. There's no doubt he'll be a savant. So there'll be no one to keep it up. And yet one does it. Here this year I've planted an orchard."

"Yes, yes," said Levin, "that's perfectly true. I always feel there's no real balance of gain in my work on the land, and yet one does it.... It's a sort of duty one feels to the land."

"But I tell you what," the landowner pursued; "a neighbor of mine, a merchant, was at my place. We walked about the fields and the park. 'No,' said he, 'Stepan Vassilyevich everything's well looked after but your garden's neglected.' But, as a fact, it's well kept up. 'To my thinking, I'd cut down the linden trees. Only do it when they're running sap. Here's a thousand lindens, and each would make two good bundles of bast. And nowadays that bast's worth something. And you'd cut down the lot of the linden shells.'"

"And with what he made he'd buy up livestock, or buy some land for a trifle, and let it out to the peasants," Levin added, smiling. He had evidently more than once come across those commercial calculations. "And he'd make his fortune. But you and I must thank God if we keep what we've got and leave it to our children."

"You're married, I've heard?" said the landowner.

"Yes," Levin answered, with proud satisfaction. "Yes, all this is rather strange," he went on. "So we live on without any reckoning, as though we were the vestals of antiquity, set to guard a sacred fire or something."

The landowner chuckled under his white mustaches.

"There are some among us, too, like our friend Nikolai Ivanovich, or Count Vronsky, who's settled here lately they try to set up an agronomic industry; but so far it leads to nothing but making away with capital."

"But why is it we don't do like the merchants? Why don't we cut down our parks for bast?" said Levin, returning to a thought that had struck him.

"Why, as you said, to guard the fire. Besides, that's not work for a nobleman. And our work as noblemen isn't done here at the elections, but yonder, each in his own nook. There's a class instinct, too, of what one ought and oughtn't to do. There are the peasants, too I wonder at them sometimes; any good peasant tries to take all the land he can. However bad the land is, he'll work it. Without a reckoning too. At a simple loss."

"Just as we do," said Levin. "Very, very glad to have met you," he added, seeing Sviiashzsky approaching him.

"And here we've met for the first time since we met at your place," said the landowner to Sviiashzsky, "and we've had a good talk, too."

"Well, have you been attacking the new order of things?" said Sviiazhsky with a smile.

"That we're bound to do."

"You've been relieving your feelings."

**XXX.**

Sviiazhsky took Levin's arm, and went with him to his own friends. This time there was no avoiding Vronsky. He was standing with Stepan Arkadyevich and Sergei Ivanovich, and looking straight at Levin as he drew near.

"Delighted! I believe I've had the pleasure of meeting you... at Princess Shcherbatskaia's," he said, giving Levin his hand.

"Yes, I quite remember our meeting," said Levin, and, blushing crimson, he turned away immediately, and began talking to his brother.

With a slight smile Vronsky went on talking to Sviiazhsky, obviously without the slightest inclination to enter into conversation with Levin. But Levin, as he talked to his brother, was continually looking round at Vronsky, trying to think of something to say to him to smooth over his rudeness.

"What are we waiting for now?" asked Levin, looking at Sviiazhsky and Vronsky.

"For Snetkov. He has to refuse or accept the candidacy," answered Sviiazhsky.

"Well, and what has he done consented or not?"

"That's the point: he's done neither," said Vronsky.

"And if he refuses, who will run then?" asked Levin, looking at Vronsky.

"Whoever chooses to," said Sviiazhsky.

"Shall you?" asked Levin.

"Certainly not I," said Sviiazhsky, looking confused, and turning an alarmed glance at the venomous gentleman, who was standing beside Sergei Ivanovich.

"Who then? Neviedovsky?" said Levin, feeling he was putting his foot into it.

But this was worse still. Neviedovsky and Sviiazhsky were the two candidates.

"I certainly shall not, under any circumstances," answered the venomous gentleman.

This was Neviedovsky himself. Sviiazhsky introduced him to Levin.

"Well, do you find it exciting too?" said Stepan Arkadyevich, winking at Vronsky. "It's something like a race. One might bet on it."

"Yes, it is keenly exciting," said Vronsky. "And once taking the thing up, one's eager to see it through. It's a

fight!" he said, scowling and setting his powerful jaws.

"What a businessman Sviiazhsky is! Sees it all so clearly."

"Oh, yes!" Vronsky assented indifferently.

A silence followed, during which Vronsky since he had to look at something looked at Levin, at his feet, at his frock coat, then at his face, and noticing his gloomy eyes fixed upon him, he said, in order to say something:

"How is it that you, living constantly in the country, are not a justice of the peace? You are not in the uniform of one."

"It's because I consider the justice of the peace a silly institution," morosely answered Levin, who had been all the time looking for an opportunity to enter into conversation with Vronsky, so as to smooth over his rudeness at their first meeting.

"I don't think so quite the contrary," Vronsky said, with calm surprise.

"It's a plaything," Levin cut him short. "We don't want justices of the peace. I've never had a single thing to do with them during eight years. And what I have had, was decided wrongly by them. The justice of the peace is over thirty miles from me. For a matter of two roubles or so, I should have to send a lawyer, who costs me fifteen."

And he related how a peasant had stolen some flour from the miller, and when the miller told him of it, had lodged a complaint for slander. All this was utterly uncalled-for and stupid, and Levin felt it himself as he said it.

"Oh, this is such an original fellow!" said Stepan Arkadyevich with his most soothing, almond-oil smile. "But come along; I think they're voting...."

And they separated.

"I can't understand," said Sergei Ivanovich, who had observed his brother's gaucherie, "I can't understand how anyone can be so absolutely devoid of political tact. That's where we Russians are so deficient. The marshal of the province is our opponent, and with him you're *ami cochon*, and you beg him to be candidate. Count Vronsky, now... I'm not making a friend of him he's asked me to dinner, and I'm not going; but he's one of our side why make an enemy of him? Then you ask Neviedovsky if he's going to run. That's not done."

"Oh, I don't understand it at all! And it's all such nonsense," Levin answered somberly.

"You say it's all such nonsense yet as soon as you have anything to do with it, you make a muddle."

Levin did not answer, and they walked together into the big room.

The marshal of the province, though he was vaguely conscious in the air of some trap being prepared for him, and though he had not been called upon by all to run, had nevertheless made up his mind to run for office. All was silence in the room. The secretary announced in a loud voice that Mikhail Stepanovich Snetkov, captain of the guards, would now be balloted for as marshal of the province.

The district marshals walked carrying plates, on which were balls, from their tables to the province table, and the election began.

## Anna Karenina

"Put it in the right side," whispered Stepan Arkadyevich, as Levin with his brother followed the marshal of his district to the table. But Levin had forgotten by now the machination that had been explained to him, and was afraid Stepan Arkadyevich might be mistaken in saying "the right side." Surely Snetkov was the enemy. As he went up, he held the ball in his right hand, but thinking he was wrong, just at the box he changed to the left hand, and undoubtedly put the ball to the left. An adept in the business, standing at the box and seeing by the mere action of the elbow where each put his ball, scowled with annoyance. It was no good for him to use his insight.

Everything was still, and the counting of the balls was heard. Then a single voice rose and proclaimed the numbers for and against.

The marshal had been voted for by a considerable majority. All was noise and eager movement toward the doors. Snetkov came in, and the nobles thronged round him, congratulating him.

"Well, now, is it over?" Levin asked Sergei Ivanovich.

"It's only just beginning," Sviiazhsky said, replying for Sergei Ivanovich with a smile. "Some other candidate may receive more votes than the marshal."

Levin had quite forgotten about that again. Now he could only remember that there was some sort of trickery in it, but he was too bored to think what it was exactly. He felt depressed, and longed to get out of the crowd.

As no one was paying any attention to him, and no one apparently needed him, he quietly slipped away into the little room where the refreshments were, and again had a great sense of comfort when he saw the waiters. The little old waiter pressed him to have something, and Levin agreed. After eating a cutlet with beans and talking to the waiters of their former masters, Levin, not wishing to go back to the hall, where it was all so distasteful to him, proceeded to walk through the galleries.

The galleries were full of fashionably dressed ladies, leaning over the balustrade and trying not to lose a single word of what was being said below. With the ladies were sitting and standing smart lawyers, high school teachers in spectacles, and officers. Everywhere they were talking of the election, and of how worried the marshal was, and how splendid the discussions had been. In one group Levin heard his brother's praises. One lady was telling a lawyer:

"How glad I am I heard Koznishev! It's worth missing one's lunch. He's exquisite! So clear and distinct all of it! There's not one of you in the law courts that speaks like that. The only one is Meidel, and he's very far from being so eloquent."

Finding a free place, Levin leaned over the balustrade and began looking and listening.

All the noblemen were sitting railed off behind barriers, according to their districts. In the middle of the room stood a man in a uniform, who shouted in a loud high voice:

"As a candidate for the marshalship of the nobility of the province we call upon staff captain Eugenii Ivanovich Apukhtin!" A dead silence followed, and then a weak old voice was heard:

"Declined!"

"We call upon the privy councilor Piotr Petrovich Bol," the voice began again.

"Declined!" a high boyish voice replied.

## Anna Karenina

Again it began, and again came the "Declined." And so it went on for about an hour. Levin, with his elbows on the balustrade, looked and listened. At first he wondered and wanted to know what it meant; then feeling sure that he could not make it out he began to be bored. Then, recalling all the excitement and vindictiveness he had seen on all the faces, he felt sad; he made up his mind to go, and went downstairs. As he passed through the entry to the galleries he met a dejected high school boy walking up and down with tired-looking eyes. On the stairs he met a couple a lady running quickly on her high heels and the jaunty deputy prosecutor.

"I told you you weren't late," the deputy prosecutor was saying at the moment when Levin moved aside to let the lady pass.

Levin was on the stairs to the way out, and was just feeling in his waistcoat pocket for his overcoat check, when the secretary overtook him. "This way, please, Konstantin Dmitrievich; they are voting."

The candidate who was being voted on was Neviedovsky, who had so stoutly denied all idea of candidacy.

Levin went up to the door of the room; it was locked. The secretary knocked, the door opened, and Levin was met by two red-faced gentlemen, who darted out.

"I can't stand any more of it," said one red-faced gentleman.

After them the face of the marshal of the province was poked out. His face was dreadful-looking from exhaustion and dismay.

"I told you not to let anyone out!" he cried to the doorkeeper.

"I let someone in, Your Excellency!"

"Mercy on us!" And with a heavy sigh the marshal of the province walked with downcast head to the high table in the middle of the room, his white-trousered legs wavering from fatigue.

Neviedovsky had scored a higher majority, as they had planned, and he was the new marshal of the province. Many people were amused, many were pleased and happy, many were in ecstasies, many were disgusted and unhappy. The former marshal of the province was in a state of despair which he could not conceal. When Neviedovsky went out of the room, the crowd thronged round him and followed him enthusiastically, just as they had followed the governor on the first day, when he had opened the meetings, and just as they had followed Snetkov when he had been elected.

## XXXI.

The newly elected marshal and many of the successful party dined that day with Vronsky.

Vronsky had come to the elections partly because he was bored in the country and wanted to show Anna his right to independence, and also to repay Sviiazhsky by his support at the election for all the trouble he had taken for Vronsky at the Zemstvo election, but chiefly for the strict performance of all those duties of a nobleman and landowner which he had taken upon himself. But he had not in the least expected that the election would interest him so, so keenly excite him, and that he would be so good at this kind of thing. He was quite a new man in the circle of the nobility of the province, but his success was unmistakable, and he was not wrong in supposing that he had already obtained a certain influence. This influence was due to his wealth and aristocracy; the capital house in the town lent him by his old friend Shirkov, who had a post in the department of finances and was director of a flourishing bank in Kashin; the excellent cook Vronsky had brought from the country; and his



friendship with the governor, who was a schoolfellow of Vronsky a schoolfellow he had patronized and protected indeed. But what contributed more than all to his success was his direct, equable manner with everyone, which very quickly made the majority of the noblemen reverse the current opinion of his supposed haughtiness. He was himself conscious that, except for that mad gentleman married to Kitty Shcherbatskaia, who had a propos de bottes poured out a stream of irrelevant absurdities with such spiteful fury, every nobleman with whom he had made acquaintance had become his adherent. He saw clearly, and other people recognized it, too, that he had done a great deal to secure the success of Neviedovsky. And now at his own table, celebrating Neviedovsky's election, he was experiencing an agreeable sense of triumph over the success of his candidate. The election itself had so fascinated him that, if he could succeed in getting married during the next three years, he began to think of running for office himself much as, after winning a race ridden by a jockey, he had longed to ride a race himself.

Today he was celebrating the success of his jockey. Vronsky sat at the head of the table, on his right hand sat the young governor, a general of high rank. To all the rest he was the master of the province, who had solemnly opened the elections with his speech, and aroused a feeling of respect and even of awe in many people, as Vronsky saw; to Vronsky he was Katka Maslov that had been his nickname in the Pages' Corps whom he felt to be shy and tried to put at ease. On the left hand sat Neviedovsky with his youthful, stubborn, and venomous countenance. With him Vronsky was simple and deferential.

Sviiazhsky took his failure very lightheartedly. It was indeed no failure in his eyes, as he said himself, turning, glass in hand, to Neviedovsky: they could not have found a better representative of the new movement, which the nobility ought to follow. And so every honest person, as he said, was on the side of today's success and was celebrating over it.

Stepan Arkadyevich was glad, too, because he was having a good time, and because everyone was pleased. The episodes of the elections served as a good occasion for a capital dinner. Sviiazhsky comically imitated the tearful discourse of marshal, and observed, addressing Neviedovsky, that His Excellency would have to select another, more complicated method of auditing accounts than tears. Another nobleman jocosely described how footmen in stockings had been imported for the marshal's ball, and how now they would have to be sent back unless the new marshal would give a ball with footmen in stockings.

Continually during dinner they said of Neviedovsky: "Our Marshal" and "Your Excellency."

This was said with the same pleasure with which a young wife is called "Madame" and by her husband's name. Neviedovsky affected to be not merely indifferent but scornful of this appellation, but it was obvious that he was highly delighted, and had to keep a curb on himself not to betray the triumph which was unsuitable to their new, liberal party.

In the course of dinner several telegrams were sent to people interested in the result of the election. And Stepan Arkadyevich, who was in high spirits, sent Darya Alexandrovna a telegram: "Neviedovsky elected by twenty votes. Congratulations. Tell people." He dictated it aloud, saying: "We must let them share our rejoicing." Darya Alexandrovna, getting the message, simply sighed over the rouble wasted on it, and understood that it was an afterdinner affair. She knew Stiva had a weakness after dining for faire jouer le telegraphe.

Everything, together with the excellent dinner and the wine, not from Russian merchants, but imported direct from abroad, was extremely dignified, simple, and enjoyable. The party some twenty had been selected by Sviiazhsky from among the more active new liberals, all of the same way of thinking, who were at the same time clever and well-bred. They drank, also half in jest, to the health of the new marshal of the province, of the governor, of the bank director, and of "our amiable host."

Vronsky was satisfied. He had never expected to find so pleasant a tone in the provinces.

## Anna Karenina

Toward the end of dinner it was still more lively. The governor asked Vronsky to come to a concert for the benefit of the brethren which his wife, who was anxious to make his acquaintance, had been getting up:

"There'll be a ball, and you'll see the belle of the province. Worth seeing, really."

"Not in my line," Vronsky answered. He liked that English phrase. But he smiled, and promised to come.

Before they rose from the table, when all of them were smoking, Vronsky's valet went up to him with a letter on a tray.

"From Vozdvizhenskoe by special messenger," he said with a significant expression.

"Astonishing! How like he is to the deputy prosecutor Sventitsky," said one of the guests in French of the valet, while Vronsky, frowning, read the letter.

The letter was from Anna. Before he read the letter, he knew its contents. Expecting the elections to be over in five days, he had promised to be back on Friday. Today was Saturday, and he knew that the letter contained reproaches for not being back at the time fixed. The letter he had sent the previous evening had probably not reached her yet.

The letter was what he had expected, but the form of it was unexpected, and particularly disagreeable to him. "Annie is very ill, the doctor says it may be inflammation of the lungs. I am losing my head all alone. Princess Varvara is no help, but a hindrance. I expected you the day before yesterday, and yesterday, and now I am sending to find out where you are and what you are doing. I wanted to come myself, but thought better of it, knowing you would dislike it. Send some answer, that I may know what to do."

The child ill, yet she had thought of coming herself. Their daughter ill and this hostile tone.

The innocent festivities over the election, and this gloomy, burdensome love to which he had to return, struck Vronsky by their contrast. But he had to go, and by the first train that night he set off home.

## XXXII.

Before Vronsky's departure for the elections, Anna had reflected that the scenes constantly repeated between them each time he left home might only make him cold to her instead of attaching him to her, and resolved to do all she could to control herself so as to bear the parting with composure. But the cold, severe glance with which he had looked at her when he came to tell her he was going had wounded her, and before he had started her peace of mind was destroyed.

In solitude, later, thinking over that glance which had expressed his right to freedom, she came, as she always did, to the same point the sense of her own humiliation. "He has the right to go away when and where he chooses. Not simply to go away, but to leave me. He has every right, and I have none. But knowing that, he ought not to do it. What has he done, though?... He looked at me with a cold, severe expression. Of course that is something indefinable, impalpable, but it has never been so before, and that glance means a great deal," she thought. "That glance shows the beginning of coolness."

And though she felt sure that a coolness was beginning, there was nothing she could do; she could not in any way alter her relations to him. Just as before, only by love and by charm could she keep him. And so, just as before, only by occupation in the day, by morphine at night, could she stifle the fearful thought of what would come if he ceased to love her. It is true there was still one means; not to keep him for that she wanted nothing more than

his love but to be nearer to him, to be in such a position that he would not leave her. That means was divorce and marriage. And she began to long for that, and made up her mind to agree to it the first time he or Stiva approached her on the subject.

Absorbed in such thoughts, she passed five days without him, the five days that he was to be absent.

Walks, conversation with Princess Varvara, visits to the hospital, and, most of all, reading reading of one book after another filled up her time. But on the sixth day, when the coachman came back without him, and she felt that now she was utterly incapable of stifling the thought of him and of what he was doing there just at that time her little girl was taken ill. Anna began to look after her, but even that did not distract her mind, especially as the illness was not serious. However hard she tried, she could not love this little child, and to feign love was beyond her powers. Toward the evening of that day, still alone, Anna was in such a panic about him that she decided to start for the town, but on second thought wrote him the contradictory letter that Vronsky received, and, without reading it through, sent it off by a special messenger. The next morning she received his letter and regretted her own. She dreaded a repetition of the severe look he had flung at her at parting, especially when he would learn that the baby was not dangerously ill. But still, she was glad she had written to him. By now Anna was admitting to herself that she was a burden to him, that he would relinquish his freedom regretfully to return to her, and in spite of that she was glad he was coming. Let him weary of her, but he would be here with her, so that she would see him, would know of every action he took.

She was sitting in the drawing room near a lamp, with a new volume of Taine, and, as she read, listening to the sound of the wind outside, and every minute expecting the carriage to arrive. Several times she had fancied she heard the sound of wheels, but she had been mistaken. At last she heard not the sound of wheels, but the coachman's shout and the dull rumble in the covered entry. Even Princess Varvara, playing solitaire, confirmed this, and Anna, flushing hotly, got up; but, instead of going down, as she had done twice before, she stood still. She suddenly felt ashamed of her duplicity, but even more she dreaded how he might meet her. All feeling of wounded pride had passed now; she was only afraid of the expression of his displeasure. She remembered that her child had been perfectly well again for the last day. She felt positively vexed with her for getting better from the very moment her letter was sent off. Then she thought of him, that he was here all of him, with his hands, his eyes. She heard his voice. And forgetting everything, she ran joyfully to meet him.

"Well, how is Annie?" he said apprehensively from below, looking up to Anna as she ran down to him.

He was sitting on a chair, and a footman was pulling off his warm overboots.

"Oh, she is better."

"And you?" he said, shaking himself.

She took his hand in both of hers, and drew it to her waist, never taking her eyes off him.

"Well, I'm glad," he said, coldly scanning her, her hair, her dress, which he knew she had put on for him. All was charming, but how many times it had charmed him! And the stern, stony expression that she so dreaded settled upon his face.

"Well, I'm glad. And are you well?" he said, wiping his damp beard with his handkerchief and kissing her hand.

"Never mind," she thought, "only let him be here, and so long as he's here he cannot, he dare not, cease to love me."

## Anna Karenina

The evening was spent happily and gaily in the presence of Princess Varvara, who complained to him that Anna had been taking morphine in his absence.

"What am I to do? I couldn't sleep.... My thoughts prevented me. When he's here I never take it hardly ever."

He told her about the election, and Anna knew how by adroit questions to bring him to what gave him most pleasure his own success. She told him of everything that interested him at home; and all that she told him was of the most cheerful description.

But late in the evening, when they were alone, Anna, seeing that she had regained complete possession of him, wanted to erase the painful impression of the glance he had given her for her letter. She said:

"Tell me frankly, you were vexed at getting my letter, and you didn't believe me?"

As soon as she had said it, she felt that however warm his feelings were to her, he had not forgiven her for that.

"Yes," he said, "the letter was so strange. First, Annie ill, and then you thought of coming yourself."

"It was all the truth."

"Oh, I don't doubt it."

"Yes, you do doubt it. You are vexed, I see."

"Not for one moment. I'm only vexed, that's true, that you seem somehow unwilling to admit that there are duties..."

"The duty of going to a concert...."

"But we won't talk about it," he said.

"Why not talk about it?" she said.

"I only meant to say that matters of real importance may turn up. Now, for instance, I shall have to go to Moscow to arrange about the house.... Oh, Anna, why are you so irritable? Don't you know that I can't live without you?"

"If so," said Anna, her voice suddenly changing, "it means that you are sick of this life.... Yes, you will come for a day and go away, as men do...."

"Anna, that's cruel. I am ready to give up my whole life."

But she did not hear him.

"If you go to Moscow, I will go too. I will not stay here. Either we must separate or else live together."

"Why, you know, that's my one desire. But to do that..."

"We must get a divorce. I will write to him. I see I cannot go on like this.... But I will come with you to Moscow."

"You talk as if you were threatening me. But I desire nothing so much as never to be parted from you," said Vronsky, smiling.

But as he said these words there gleamed in his eyes not merely a cold look, but the vindictive look of a man persecuted and made cruel.

She saw the look and correctly divined its meaning.

"And, if things have come to such a pass, it's a calamity!" that glance told her. It was a moment's impression, but she never forgot it.

Anna wrote to her husband asking him about a divorce, and toward the end of November, taking leave of Princess Varvara, who wanted to go to Peterburg, she went with Vronsky to Moscow. Expecting every day an answer from Alexei Alexandrovich, and after that the divorce, they now established themselves together, like married people.

## PART SEVEN

### I.

The Levins had been two months in Moscow. The date had long passed on which, according to the most trustworthy calculations of people learned in such matters, Kitty should have been confined. But she was still about, and there was nothing to show that her time was any nearer than two months ago. The doctor, the midwife, and Dolly and her mother, and most of all Levin, who could not think of the approaching event without terror, began to be impatient and uneasy. Kitty was the only person who felt perfectly calm and happy.

She was distinctly conscious now of the birth of a new feeling of love for the future child, for her to some extent actually existing already, and she brooded blissfully over this feeling. He was not by now altogether a part of herself, but sometimes lived his own life independently of her. Often this separate being gave her pain, but at the same time she wanted to laugh with a strange new joy.

All the people she loved were with her, and all were so good to her, so attentively looking out for her, so entirely pleasant was everything presented to her, that if she had not known and felt that it must all soon be over, she could not have wished for a better and pleasanter life. The only thing that spoiled the charm of this mode of life was that here her husband was not as she loved him to be, and as he was in the country.

She liked his serene, friendly, and hospitable manner in the country. In the town he seemed continually uneasy and on his guard, as though he were afraid someone would be rude to him, and, still more, to her. At home in the country, definitely knowing himself to be in his right place, he was never in haste to be off elsewhere, was occupied all the time. Here in town he was in a continual hurry, as though afraid of missing something, and yet he had nothing to do. And she felt pity for him. To others, she knew, he did not appear an object of pity; on the contrary, when Kitty looked at him in society, as one sometimes looks at those one loves, trying to see him as if he were a stranger, so as to catch the impression he must make on others, she saw with a panic even of jealous fear that he was far indeed from being a pitiable figure, that he was very attractive with his honesty, his rather old-fashioned, reserved courtesy to women, his powerful figure, and striking, as she thought, and expressive face. But she saw him not from without, but from within; she saw that here he was not himself; that was the only way she could define his condition to herself. Sometimes she inwardly reproached him for his inability to live in the town; sometimes she recognized that it was really hard for him to order his life here so that he could be satisfied with it.

What had he to do, indeed? He did not care for cards; he did not go to a club. Spending the time with jovial gentlemen of Oblonsky's type she knew now what that meant... it meant drinking, and going somewhere after drinking. She could not think without horror of where men went on such occasions. Was he to go into society? But she knew he could only find satisfaction in that if he took pleasure in the society of young women, and that

she could not wish for. Should he stay at home with her, her mother, and her sisters? But much as she liked and enjoyed their conversations forever on the same subjects "Alines–Nadines," as the old Prince called the sisters' talks she knew it must bore him. What was there left for him to do? To go on writing his book? He had indeed attempted to do it; and at first he used to go to the library and make extracts and look up references for his book, but, as he told her, the more he did nothing, the less time he had to do anything. And besides, he complained that he had talked too much about his book here, and that consequently all his ideas about it were muddled and had lost their interest for him.

One advantage in this town life was that quarrels hardly ever happened between them here in town. Whether it was that their conditions, in town, were different, or that they had both become more careful and sensible in that respect, they had no quarrels in Moscow from jealousy, which they had so dreaded when they moved from the country.

One event, an event of great importance to both from that point of view, did indeed happen which was Kitty's meeting with Vronsky.

The old Princess Marya Borissovna, Kitty's godmother, who had always been very fond of her, had insisted on seeing her. Kitty, though she did not go into society at all on account of her condition, went with her father to see the venerable old lady, and there met Vronsky.

The only thing Kitty could reproach herself for at this meeting was that at the instant when she recognized in his civilian dress the features once so familiar to her, her breath failed her, the blood rushed to her heart, and a vivid blush she felt it overspread her face. But this lasted only a few seconds. Before her father, who purposely began talking in a loud voice to Vronsky, had finished, she was perfectly ready to look at Vronsky, to speak to him, if necessary, exactly as she spoke to Princess Marya Borissovna, and, more than that, to do so in such a way that everything, to the faintest intonation and smile would have been approved by her husband, whose unseen presence she seemed to feel about her at that instant.

She said a few words to him, even smiled serenely at his joke about the elections, which he called "our parliament." (She had to smile to show she saw the joke.) But she turned away immediately to Princess Marya Borissovna, and did not once glance at him till he got up to go; then she looked at him, but evidently only because it would be uncivil not to look at a man when he is saying good–by.

She was grateful to her father for saying nothing to her about their meeting Vronsky, but she saw by his special warmth to her after the visit, during their usual walk, that he was pleased with her. She was pleased with herself. She had not expected she would have had the power, while keeping somewhere in the bottom of her heart all the memories of her old feeling for Vronsky, not only to seem, but to be, perfectly indifferent and composed with him.

Levin flushed a great deal more than she when she told him she had met Vronsky at Princess Marya Borissovna's. It was very hard for her to tell him this, but still harder to go on speaking of the details of the meeting, as he did not question her, but simply gazed at her with a frown.

"I am very sorry you weren't there," she said. "It wasn't so much the fact that you weren't in the room... I couldn't have been so natural in your presence... I am blushing now much more much, much more," she said, blushing till the tears came into her eyes. "But it's a pity you couldn't have looked through a peephole."

The truthful eyes told Levin that she was satisfied with herself, and, in spite of her blushing he was quickly reassured and began questioning her, which was all she wanted. When he had heard everything, even to the detail that for the first second she could not help flushing, but that afterward she was just as direct and as much at her ease as with any chance acquaintance, Levin was quite happy again and said he was glad of it, and would not now

## Anna Karenina

behave as stupidly as he had done at the election, but would try the first time he met Vronsky to be as friendly as possible.

"It's so wretched to feel that there's any man who is almost your enemy, and whom it's painful to meet," said Levin. "I'm very, very glad."

## II.

"Do go then, please, and call on the Bols," Kitty said to her husband, when he came in to see her at eleven o'clock before going out. "I know you are dining at the club; papa put down your name. But what are you going to do in the morning?"

"I am only going to Katavassov," answered Levin.

"Why so early?"

"He promised to introduce me to Metrov. I wanted to talk to him about my work. He's a distinguished savant from Peterburg," said Levin.

"Yes; wasn't it his article you were praising so? Well, and after that?" said Kitty.

"I shall go to the court, perhaps, about my sister's business."

"And the concert?" she queried.

"I shan't go there all alone."

"No? Do go; there are going to be some new things.... That used to interest you so. I should certainly go."

"Well, anyway, I shall come home before dinner," he said, looking at his watch.

"Put on your frock coat, so that you can go straight to call on Countess Bol."

"But is it absolutely necessary?"

"Oh, absolutely! He has been to see us. Come, what is it? You go in, sit down, talk for five minutes of the weather, get up, and go away."

"Oh, you wouldn't believe it! I've got so out of the way of all this that it makes me feel positively ashamed. It's such a horrible thing to do! A complete outsider walks in, sits down, stays on with nothing to do, wastes their time and upsets himself, and then goes away!"

Kitty laughed.

"Why, I suppose you used to pay calls before you were married, didn't you?"

"Yes, I did, but I always felt ashamed, and now I'm so unaccustomed to it that, by God, I'd sooner go two days running without my dinner than pay this call! One's so ashamed! I feel all the while that they're annoyed, that they're saying: What has he come for?"

## Anna Karenina

"No, they won't. I'll answer for that," said Kitty, looking into his face with a laugh. She took his hand. "Well, good-by.... Do go, please."

He was just going out after kissing his wife's hand, when she stopped him.

"Kostia, do you know I've only fifty roubles left?"

"Oh, all right, I'll go to the bank and get some. How much?" he said, with the expression of dissatisfaction she knew so well.

"No, wait a minute." She held his hand. "Let's talk about it, it worries me. I seem to spend nothing unnecessarily, but money seems simply to fly away. We don't manage well, somehow."

"Not at all," he said with a little cough, looking at her from under his brows.

That cough she knew well. It was a sign of intense dissatisfaction, not with her, but with himself. He certainly was displeased, not at so much money being spent, but at being reminded of what he, knowing something was unsatisfactory, wanted to forget.

"I have told Sokolov to sell the wheat, and to borrow an advance on the mill. We shall have money enough in any case."

"Yes, but I'm afraid that altogether it's too much...."

"Not at all, not at all," he repeated. "Well, good-by, darling."

"No, I'm really sorry sometimes that I listened to mamma. How nice it would have been in the country! As it is, I'm worrying you all, and we're wasting our money."

"Not at all, not at all. Not once since I've been married have I said that things could have been better than they are...."

"Truly?" she said, looking into his eyes.

He had said it without thinking, simply to console her. But when he glanced at her and saw those sweet truthful eyes fastened questioningly on him, he repeated it with his whole heart. "I was positively forgetting her," he thought. And he remembered what was before them, so soon to come.

"Will it be soon? How do you feel?" he whispered, taking her two hands.

"I have so often thought so, that now I don't think about it, or know anything about it."

"And you're not frightened?"

She smiled contemptuously.

"Not the least little bit," she said.

"Well, if anything happens, I shall be at Katavassov's."



## Anna Karenina

"No, nothing will happen, and don't think about it. I'm going for a walk on the boulevard with papa. We're going to see Dolly. I shall expect you before dinner. Oh, yes! Do you know that Dolly's position is becoming utterly impossible? She's in debt all round; she hasn't a penny. We were talking yesterday with mamma and Arsenii" (this was her sister's husband, Lvov), "and we determined to send you with him to talk to Stiva. It's really unbearable. One can't speak to papa about it.... But if you and he..."

"Why, what can we do?" said Levin.

"You'll be at Arsenii's, anyway; talk to him he will tell you what we decided."

"Oh, I agree to everything Arsenii thinks beforehand. I'll go and see him. By the way, if I do go to the concert, I'll go with Natalie. Well, good-by."

On the steps Levin was stopped by his old servant Kouzma, who had been with him before his marriage, and now looked after their household in town.

"Little Adonis" (that was the left shaft horse brought up from the country) "has been shod anew, but she is still lame," he said. "What does Your Honor wish to be done?"

During the first part of their stay in Moscow, Levin had used his own horses brought up from the country. He had tried to arrange this part of their expenses in the best and cheapest way possible; but it appeared that their own horses came dearer than hired horses, and they still hired additional horses.

"Send for the veterinary there may be a bruise."

"And for Katerina Alexandrovna?" asked Kouzma.

Levin was not by now struck as he had been at first by the fact that to get in Moscow from the Vozdvizhenka to the Ssvtzev-Vrazhek he had to have two powerful horses put into a heavy carriage, to take the carriage a quarter of a versta through the snowy mush and to keep it standing there four hours, paying five roubles every time.

Now it seemed quite natural.

"Hire a pair for our carriage from the livery stable," said he.

"Yes, sir."

And so, simply and easily, thanks to the facilities of town life, Levin settled a question which, in the country, would have called for so much personal trouble and exertion, and, going out on the steps, he called a sleigh, sat down, and drove to the Nikitskaia. On the way he thought no more of money, but mused on the introduction that awaited him to the Petersburg savant, a writer on sociology, and what he would say to him about his book.

Only during the first days of his stay in Moscow Levin had been struck by the expenditure, strange to one living in the country, unproductive but inevitable, that was expected of him on every side. But by now he had grown used to it. That had happened to him in this matter which is said to happen to drunkards the first glass sticks in the throat, the second flies down like a hawk, but after the third they're like tiny little birds. When Levin had changed his first hundred-rouble note to pay for liveries for his footman and hall porter he could not help reflecting that these liveries were of no use to anyone but they were indubitably necessary, to judge by the amazement of the Princess and Kitty when he suggested that they might do without liveries that these liveries would cost the wages of two laborers for the summer that is, would pay for about three hundred working days from Easter to the fast of Advent, and each a day of hard work from early morning to late evening and that

hundred-rouble note did stick in his throat. But the next note, changed to pay for providing a dinner for their relations, that cost twenty-eight roubles, though it did excite in Levin the reflection that twenty-eight roubles meant nine chetverts of oats, which men would with groans and sweat have reaped and bound and threshed and winnowed and sifted and sown this next one he parted with more easily. And now the notes he changed no longer aroused such reflections, and they flew off like little birds. Whether the labor devoted to obtaining the money corresponded to the pleasure given by what was bought with it, was a consideration he had long ago dismissed. His business calculation that there was a certain price below which he could not sell certain grain was forgotten too. The rye, for the price of which he had so long held out, had been sold for fifty kopecks a chetvert cheaper than it had been fetching a month ago. Even the consideration that with such an expenditure he could not go on living for a year without debt, even that had no force. Only one thing was essential: to have money in the bank, without inquiring where it came from, so as to know that one had the wherewithal to buy meat for tomorrow. And this condition had hitherto been fulfilled; he had always had the money in the bank. But now the money in the bank had gone, and he could not quite tell where to get the next installment. And this it was which, at the moment when Kitty had mentioned money, had disturbed him; but he had no time to think about it. He drove off, thinking of Katavassov and the meeting with Metrov which was before him.

### III.

Levin had on this visit to town seen a great deal of his old friend at the university, Professor Katavassov, whom he had not seen since his marriage. He liked in Katavassov the clearness and simplicity of his conception of life. Levin thought that the clearness of Katavassov's conception of life was due to the poverty of his nature; Katavassov thought that the disconnectedness of Levin's ideas was due to his lack of intellectual discipline; but Levin enjoyed Katavassov's clearness, and Katavassov enjoyed the abundance of Levin's untrained ideas, and they liked to meet and to dispute.

Levin had read to Katavassov some parts of his book, and he had liked them. On the previous day Katavassov had met Levin at a public lecture and told him that the celebrated Metrov, whose article Levin had so much liked, was in Moscow, that he had been much interested by what Katavassov had told him about Levin's work, and that he was coming to see him tomorrow at eleven, and would be very glad to make Levin's acquaintance.

"You're positively a reformed character, my dear, I'm glad to see," said Katavassov, meeting Levin in the little drawing room. "I heard the bell and thought: Impossible! It can't be he at the exact time!... Well, what do you say to the Montenegrins now? They're a race of warriors."

"Why, what's happened?" asked Levin.

Katavassov in a few words told him the last piece of news from the war, and, going into his study, introduced Levin to a short, thickset man of pleasant appearance. This was Metrov. The conversation touched for a brief space on politics and on how recent events were looked at in the higher spheres in Peterburg. Metrov repeated a saying that had reached him through a most trustworthy source, reported as having been uttered on this subject by the Czar and one of the ministers. Katavassov had heard also on excellent authority that the Czar had said something quite different. Levin tried to imagine circumstances in which both sayings might have been uttered, and the conversation on that topic dropped.

"Yes, here he's practically written a book on the natural conditions of the laborer in relation to the land," said Katavassov; "I'm not a specialist, but I, as a student of natural science, was pleased at his not taking mankind as something outside biological laws; but, on the contrary, perceiving his dependence on his surroundings, and in that dependence seeking the laws of his development."

"That's very interesting," said Metrov.

"To tell the truth, I began to write a book on agriculture; but, studying the chief instrument of agriculture, the laborer," said Levin, reddening, "I could not help coming to quite unexpected results."

And Levin began carefully, as though feeling his ground, to expound his views. He knew Metrov had written an article against the generally accepted theory of political economy, but to what extent he could reckon on his sympathy with his own new views he did not know and could not guess from the clever and serene face of the savant.

"But in what do you see the special characteristics of the Russian laborer?" said Metrov; "in his biological characteristics, so to speak, or in the condition in which he is placed?"

Levin saw that there was an idea underlying this question with which he did not agree. But he went on explaining his own idea that the Russian laborer has a quite special view of the land, different from that of other people; and to support this proposition he made haste to add that in his opinion this attitude of the Russian peasant was due to the consciousness of his vocation to settle vast unoccupied expanses in the East.

"One may easily be led into error in basing any conclusion on the general vocation of a people," said Metrov, interrupting Levin. "The condition of the laborer will always depend on his relation to the land and to capital."

And without letting Levin finish explaining his idea, Metrov began expounding to him the special point of his own theory.

In what the point of his theory lay, Levin did not understand, because he did not take the trouble to understand. He saw that Metrov, like other people, in spite of his own article, in which he had attacked the current theory of political economy, looked at the position of the Russian peasant simply from the point of view of capital, wages, and rent. He would indeed have been obliged to admit that in the eastern much the larger part of Russia rent was as yet nil, that for nine-tenths of the eighty millions of the Russian peasants wages took the form simply of food provided for themselves, and that capital does not so far exist except in the form of the most primitive tools. Yet it was only from that point of view that he considered every laborer, though in many points he differed from the economists and had his own theory of the wage fund, which he expounded to Levin.

Levin listened reluctantly, and at first made objections. He would have liked to interrupt Metrov, to explain his own thought, which in his opinion would have rendered further exposition of Metrov's theories superfluous. But later on, feeling convinced that they looked at the matter so differently, that they could never understand one another, he did not even oppose his statements, but simply listened. Although what Metrov was saying was by now utterly devoid of interest for him, he yet experienced a certain satisfaction in listening to him. It flattered his vanity that such a learned man should explain his ideas to him so eagerly, with such intensity and confidence in Levin's understanding of the subject, sometimes with a mere hint referring him to a whole aspect of the subject. He put this down to his own credit, unaware that Metrov, who had already discussed his theory over and over again with all his intimate friends, talked of it with special eagerness to every new person, and in general was eager to talk to anyone of any subject that interested him, even if still obscure to himself.

"We are late though," said Katavassov, looking at his watch directly Metrov had finished his discourse.

"Yes, there's a meeting of the Society of Amateurs today in commemoration of the fifty-year jubilee of Svintich," said Katavassov in answer to Levin's inquiry. "Piotr Ivanovich and I were going. I've promised to deliver an address on his labors in zoology. Come along with us, it's very interesting."

"Yes, and it's really time to start," said Metrov. "Come with us, and from there, if you care to, come to my place. I should very much like to hear your work."

"Oh, no! It's no good yet it's unfinished. But I shall be very glad to go to the meeting."

"I say, my dear, have you heard? He has handed in a minority report," Katavassov called from the other room, where he was putting on his dress coat.

And a conversation sprang up on the university question.

The university question was a very important event that winter in Moscow. Three old professors in the council had not accepted the opinion of the younger professors. The young ones had registered a separate resolution. This resolution, in the judgment of some people, was monstrous, in the judgment of others it was the simplest and most just thing to do, and the professors were split into two parties.

One party, to which Katavassov belonged, saw in the opposite party a scoundrelly betrayal and treachery, while the opposite party saw in them childishness and lack of respect for the authorities. Levin, though he did not belong to the university, had several times already during his stay in Moscow heard and talked about this matter, and had his own opinion on the subject. He took part in the conversation that was continued in the street, as all three walked to the old buildings of the university.

The meeting had already begun. Round the cloth-covered table, at which Katavassov and Metrov seated themselves, there were some half-dozen persons, and one of these was bending close over a manuscript, reading something aloud. Levin sat down in one of the empty chairs that were standing round the table, and in a whisper asked a student sitting near what was being read. The student, eying Levin with displeasure, said:

"The biography."

Though Levin was not interested in the biography, he could not help listening, and learned some new and interesting facts about the life of the distinguished man of science.

When the reader had finished, the chairman thanked him and read some verses of the poet Ment, sent him on the jubilee, and said a few words by way of thanks to the poet. Then Katavassov in his loud, ringing voice read his address on the scientific labors of the man whose jubilee was being kept.

When Katavassov had finished, Levin looked at his watch, saw it was past one, and thought that there would not be time before the concert to read his paper to Metrov, and indeed, he did not now care to do so. During the reading he had thought over their conversation. He saw distinctly now that though Metrov's ideas might perhaps have value, his own ideas had a value too, and their ideas could only be made clear and lead to something if each worked separately in his chosen path, and that nothing would be gained by communicating these ideas. And having made up his mind to refuse Metrov's invitation, Levin went up to him at the end of the meeting. Metrov introduced Levin to the chairman, with whom he was talking of the political news. Metrov told the chairman what he had already told Levin, and Levin made the same remarks on his news that he had already made that morning, but for the sake of variety he expressed also a new opinion which had only just struck him. After that the conversation turned again on the university question. As Levin had already heard it all, he made haste to tell Metrov that he was sorry he could not take advantage of his invitation, took leave, and drove to Lvov's.

#### IV.

Lvov, the husband of Natalie, Kitty's sister, had spent all his life in the capitals and abroad, where he had been educated, and had been in the diplomatic service.

During the previous year he had left the diplomatic service, not owing to any "unpleasantness" (he never had any

"unpleasantness" with anyone), and was transferred to the Palace Department in Moscow, in order to give his two boys the best education possible.

In spite of the striking contrast in their habits and views and the fact that Lvov was older than Levin, they had seen a great deal of one another that winter, and had taken a great liking to each other.

Lvov was at home, and Levin went in to him unannounced.

Lvov, in a house coat with a belt and in chamois leather shoes, was sitting in an armchair, and with a pince-nez with blue lenses he was reading a book that stood on a reading desk, while in his beautiful hand he held a half-burned cigar carefully away from him.

His handsome, delicate, and still youthful-looking face, to which his curly, glistening silvery hair gave a still more aristocratic air, lighted up with a smile when he saw Levin.

"Capital! I intended to send to you. How's Kitty? Sit here, it's more comfortable." He got up and pushed up a rocking chair. "Have you read the last circular in the Journal de St Petersburg? I think it's excellent," he said with a slight French accent.

Levin told him what he had heard from Katavassov was being said in Peterburg, and, after talking a little about politics, he told him of his interview with Metrov, and the learned society's meeting. To Lvov it was very interesting.

"That's what I envy you, that you are able to mix in these interesting scientific circles," he said. And as he talked, he passed as usual into French, which was easier for him. "It's true I haven't the time for it. My official work and the children leave me no time; and then I'm not ashamed to own that my education has been too defective."

"That I don't believe," said Levin with a smile, feeling, as he always did, touched at Lvov's low opinion of himself, which was not in the least put on from a desire to seem or to be modest, but was absolutely sincere.

"Oh, yes, indeed! I feel now how badly educated I am. To educate my children I positively have to look up a great deal, and, in fact, actually to study myself. For it's not enough to have teachers there must be someone to look after them; just as on your land you want laborers and an overseer. See what I'm reading" he pointed to Buslaev's Grammar on the desk "it's expected of Misha, and it's so difficult.... Come, explain to me.... Here he says..."

Levin tried to explain to him that it couldn't be understood, but that it had to be taught; but Lvov would not agree with him.

"Oh, you're laughing at it!"

"On the contrary, you can't imagine how, when I look at you, I'm always learning the task that lies before me that is, the education of one's children."

"Well, there's nothing for you to learn," said Lvov.

"All I know," said Levin, "is that I have never seen better brought-up children than yours, and I wouldn't wish for children better than yours."

Lvov visibly tried to restrain the expression of his delight, but he was positively radiant with smiles.

## Anna Karenina

"If only they're better than I! That's all I desire. You don't know yet all the work," he said, "with boys who've been left like mine to run wild abroad."

"You'll catch up with all that. They're such clever children. The great thing is the education of character. That's what I learn when I look at your children."

"You talk of the education of character. You can't imagine how difficult that is! You have hardly succeeded in combating one tendency when others crop up, and the struggle begins again. If one had not a support in religion you remember we talked about that no father could bring children up relying on his own strength alone, without that help."

This subject, which always interested Levin, was cut short by the entrance of the beauty Natalya Alexandrovna, dressed to go out.

"I didn't know you were here," she said, unmistakably feeling no regret, but a positive pleasure, in interrupting this conversation on a topic she had heard so much of that she was by now weary of it. "Well, how is Kitty? I am dining with you today. I tell you what, Arsenii," she turned to her husband, "you take the carriage."

And the husband and wife began to discuss their arrangements for the day. As the husband had to drive to meet someone on official business, while the wife had to go to the concert and some public meeting of a committee on the South-Eastern Question, there was a great deal to consider and settle. Levin had to take part in their plans as one of themselves. It was settled that Levin should go with Natalie to the concert and the meeting, and that from there they should send the carriage to the office for Arsenii and he should call for her and take her to Kitty's; or that, if he had not finished his work, he should send the carriage back and Levin would go with her.

"He's spoiling me," Lvov said to his wife: "he assures me that our children are splendid, when I know how much bad there is in them."

"Arsenii goes to extremes, I always say," said his wife. "If you look for perfection, you will never be satisfied. And it's true, as papa says that when we were brought up there was one extreme we were kept in the attic, while our parents lived in the best rooms; now it's just the other way the parents are in the washhouse, while the children are in the best rooms. Parents now are not expected to live at all, but to exist altogether for their children."

"Well, what if they like it better? Lvov said, with his beautiful smile, touching her hand. "Anyone who didn't know you would think you were a stepmother, not a true mother."

"No, extremes are not good in anything," Natalie said serenely, putting his paper knife straight in its proper place on the table.

"Well, come here, you perfect children," Lvov said to the two handsome boys who came in, and, after bowing to Levin, went up to their father, obviously wishing to ask him about something.

Levin would have liked to talk to them, to hear what they would say to their father, but Natalie began talking to him, and then Lvov's colleague in the service, Makhotin, walked in, wearing his Court dress, to go with him to meet someone, and a conversation was kept up without a break upon Herzegovina, Princess Korzinskaya, the town council, and the sudden death of Madame Apraksina.

Levin even forgot the commission intrusted to him. He recollected it as he was going into the hall.

## Anna Karenina

"O, Kitty told me to talk to you about Oblonsky," he said, as Lvov was standing on the stairs, seeing his wife and Levin off.

"Yes, yes, maman wants us, les beaux-freres, to attack him," he said, blushing. "But why should I?"

"Well, then, I will attack him," said Madame Lvova, with a smile, standing in her round white dogskin opera cloak waiting till they had finished speaking. "Come, let us go."

### V.

At the concert in the afternoon two very interesting things were performed.

One was a fantasia, King Lear in the Heath; the other was a quartette dedicated to the memory of Bach. Both were new and in the new style, and Levin was eager to form an opinion of them. After escorting his sister-in-law to her stall, he stood against a column and tried to listen as attentively and conscientiously as possible. He tried not to let his attention be distracted, and not to spoil his impression by looking at the conductor in a white tie, waving his arms, which always disturbed his enjoyment of music so much, or the ladies in bonnets, the ribbons of which, since it was a concert, they had carefully tied over their ears, and all these people either thinking of nothing at all, or thinking of all sorts of things except the music. He tried to avoid meeting musical connoisseurs or talkative acquaintances, and stood looking at the floor straight before him, listening.

But the more he listened to the fantasia of King Lear the further he felt from forming any definite opinion of it. There was, as it were, a continual beginning, a preparation of the musical expression of some feeling, but it fell to pieces again directly, breaking into new musical motifs, or simply nothing but the whims of the composer exceedingly complex but disconnected sounds. And these fragmentary musical expressions, though sometimes beautiful, were disagreeable, because they were utterly unexpected and not led up to by anything. Gaiety and grief and despair and tenderness and triumph followed one another without any ground, like the emotions of a madman. And those emotions, like a madman's, sprang up quite unexpectedly.

During the whole performance Levin felt like a deaf man watching people dancing, and was in a state of complete bewilderment when the fantasia was over, and felt a great weariness from the fruitless strain on his attention. Loud applause resounded on all sides. Everyone got up, moved about, and began talking. Anxious to throw some light on his own perplexity from the impressions of others, Levin began to walk about, looking for connoisseurs, and was glad to see a well-known musical amateur in conversation with Pestsov, whom he knew.

"Marvelous!" Pestsov was saying in his deep bass. "How are you, Konstantin Dmitrievich? Particularly sculptresque and plastic, so to say, and richly colored is that passage where you feel Cordelia's approach, where woman, das ewig Weibliche, enters into conflict with fate. Isn't it?"

"You mean... What has Cordelia to do with it?" Levin asked timidly, forgetting that the fantasia was supposed to represent King Lear.

"Cordelia comes in... See here!" said Pestsov, tapping his finger on the satiny surface of the program he held in his hand and passing it to Levin.

Only then Levin recollected the title of the fantasia, and made haste to read in the Russian translation the lines from Shakespeare that were printed on the back of the program.

"You can't follow it without that," said Pestsov, addressing Levin, as the person he had been speaking to had gone away, and he had no one to talk to.

## Anna Karenina

In the entr'acte Levin and Pestsov fell into an argument upon the merits and defects of the music of the Wagner school. Levin maintained that the mistake of Wagner and all his followers lay in their trying to take music into the sphere of another art, just as poetry goes wrong when it tries to paint a face as the art of painting ought to do, and as an instance of this mistake he cited the sculptor who carved in marble certain poetic phantasms flitting round the figure of the poet on the pedestal. "These phantoms were so far from being phantoms that they were positively clinging to the stairs," said Levin. The comparison pleased him, but he could not remember whether he had not used the same phrase before, and to Pestsov, too, and as he said it he felt confused.

Pestsov maintained that art is one, and that it can attain its highest manifestations only by the conjunction of all kinds of art.

The second piece that was performed Levin could not hear. Pestsov, who was standing beside him, was talking to him almost all the time, condemning the music for its excessive affected assumption of simplicity, and comparing it with the simplicity of the Pre-Raphaelites in painting. As he went out Levin met many more acquaintances, with whom he talked of politics, of music, and of common acquaintances. Among others he met Count Bol, whom he had utterly forgotten to call upon.

"Well, go at once then," Madame Lvova said, when he told her; "perhaps they'll not be at home, and then you can come to the meeting to fetch me. You'll find me still there."

## VI.

"Perhaps they're not at home?" said Levin, as he went into the hall of Countess Bol's house.

"At home; please walk in," said the porter, resolutely removing his overcoat.

"How annoying!" thought Levin with a sigh, taking off one glove and stroking his hat. "What did I come for? What have I to say to them?"

As he passed through the first drawing room Levin met in the doorway Countess Bol, with a careworn and severe face, giving some order to a servant. On seeing Levin she smiled, and asked him to come into the next little drawing room where he heard voices. In this room there were sitting in armchairs the two daughters of the Countess, and a Moscow colonel, whom Levin knew. Levin walked up, greeted them, and sat down beside the sofa, with his hat on his knees.

"How is your wife? Have you been at the concert? We couldn't go. Mamma had to be at the requiem."

"Yes, I heard.... What a sudden death!" said Levin.

The Countess came in, sat down on the sofa, and she too asked after his wife and inquired about the concert.

Levin answered, and repeated an inquiry about Madame Apraksina's sudden death.

"But she was always in poor health."

"Were you at the opera yesterday?"

"Yes, I was."

"Lucca was very good."



"Yes, very good," he said, and, as it was utterly of no consequence to him what they thought of him, he began repeating what they had heard a hundred times about the characteristics of the singer's talent. Countess Bol pretended to be listening. Then, when he had said enough and had paused, the colonel, who had been silent till then, began to talk. The colonel too talked of the opera and illumination. At last, after speaking of the proposed folle journee at Turin's, the colonel laughed, got up noisily, and went away. Levin too rose, but he saw by the face of the Countess that it was not yet time for him to go. He must stay two minutes longer. He sat down.

But as he was thinking all the while how stupid it was, he could not find a subject for conversation, and sat silent.

"You are not going to the public meeting? They say it will be very interesting," began the Countess.

"No, I promised my belle-soeur to fetch her from it," said Levin.

A silence followed. The mother once more exchanged glances with one of the daughters.

"Well, now I think the time has come," thought Levin, and he got up. The ladies shook hands with him, and begged him to say mille choses to his wife for them.

The porter asked him, as he gave him his coat: "Where is Your Honor staying?" and immediately wrote down his address in a big handsomely bound book.

"Of course I don't care, but still I feel ashamed and awfully stupid," thought Levin, consoling himself with the reflection that everyone does it. He drove to the public meeting, where he was to find his sister-in-law, so as to drive home with her.

At the public meeting of the committee there were a great many people, and almost all the highest society. Levin was in time for the report which, as everyone said, was very interesting. When the reading of the report was over, people moved about, and Levin met Sviiazhsy, who invited him very pressingly to come that evening to a meeting of the Society of Agriculture, where a celebrated report was to be delivered, and Stepan Arkadyevich, who had only just come from the races, and many other acquaintances; and Levin heard and uttered various criticisms on the meeting, on the new play, and on a public trial. But, probably from the mental fatigue he was beginning to feel, he made a blunder in speaking of the trial, and this blunder he recalled several times with vexation. Speaking of the sentence upon a foreigner who had been condemned in Russia, and of how unfair it would be to punish him by exile abroad, Levin repeated what he had heard the day before in conversation from an acquaintance.

"I think sending him abroad is much the same as punishing a carp by putting it into the water," said Levin. Then he recollected that this idea, which he had heard from an acquaintance and uttered as his own, came from a fable of Krilov's, and that the acquaintance had picked it up from a newspaper article.

After driving home with his sister-in-law, and finding Kitty in good spirits and quite well, Levin drove to the club.

## VII.

Levin reached the club just at the right time. Members and visitors were driving up as he arrived. Levin had not been at the club for a very long while not since he lived in Moscow, when he was leaving the university and going into society. He remembered the club, the external details of its arrangement, but he had completely forgotten the impression it had made on him in old days. But as soon as, driving into the wide semicircular court and getting out of the cab, he mounted the steps, and the hall porter, adorned with a crossbelt, noiselessly opened

## Anna Karenina

the door to him with a bow; as soon as he saw in the porter's room the cloaks and galoshes of members who thought it less trouble to take them off downstairs; as soon as he heard the mysterious ringing bell that preceded him as he ascended the low-stepped, carpeted staircase, and saw the statue on the landing, and the third porter at the top doors, a familiar figure grown older, in the club livery, opening the door without haste or delay, and scanning the visitors as they passed in Levin felt the old impression of the club come back in a rush, an impression of repose, comfort, and propriety.

"Your hat, please," the porter said to Levin, who forgot the club rule of checking his hat in the porter's room. "Long time since you've been here. The Prince put your name down yesterday. Prince Stepan Arkadyevich is not here yet."

The porter not only knew Levin, but also all his connections and relationships, and so immediately mentioned his intimate friends.

Passing through the outer hall, divided up by screens, and the room partitioned on the right, where a man sits at the fruit buffet, Levin passed by a shuffling old man, and entered the dining room, full of noise and people.

He walked along the tables, almost all full, and scrutinized the visitors. He saw people of all sorts, old and young; some he knew a little; some were intimate friends. There was not a single cross or worried-looking face. All seemed to have checked their cares and anxieties in the porter's room with their hats, and were all deliberately getting ready to enjoy the material blessings of life. Sviiashsky was here and Shcherbatsky, Neviedovsky and the old Prince, and Vronsky and Sergei Ivanovich.

"Ah! Why are you late?" the Prince said smiling, and giving him his hand over his own shoulder. "How's Kitty?" he added, smoothing out the napkin he had tucked in at his waistcoat buttons.

"Very well; they are dining at home, all three of them."

"Ah, 'Alines-Nadines' to be sure! There's no room with us. Go to that table, and make haste and take a seat," said the Prince, and turning away he carefully took a plate of burbot soup.

"Levin, this way!" a good-natured voice shouted a little farther on. It was Turovtsin. He was sitting with a young officer, and beside them were two chairs tipped over. Levin gladly went up to them. He had always liked the goodhearted rake, Turovtsin he was associated in his mind with memories of his courtship and at that moment, after the strain of intellectual conversation, the sight of Turovtsin's good-natured face was particularly welcome.

"For you and Oblonsky. He'll be here directly."

The young man, holding himself very erect, with eyes forever twinkling with enjoyment, was an officer from Petersburg, Gaghin. Turovtsin introduced them.

"Oblonsky's always late."

"Ah, here he is!"

"Have you only just come?" said Oblonsky, coming quickly toward them. "Good day. Had some vodka? Well, come along then."

Levin got up and went with him to the big table spread with spirits and appetizers of the most varied kinds. One would have thought that out of two dozen delicacies one might find something to one's taste, but Stepan

## Anna Karenina

Arkadyevich asked for something special, and one of the liveried waiters standing by immediately brought what was required. They drank a pony each and returned to their table.

At once, while they were still at their soup, Gaghin was served with champagne, and told the waiter to fill four glasses. Levin did not refuse the wine, and asked for a second bottle. He was very hungry, and ate and drank with great enjoyment, and with still greater enjoyment took part in the lively and simple conversation of his companions. Gaghin, dropping his voice, told the last good story from Peterburg, and the story, though improper and stupid, was so ludicrous that Levin broke into roars of laughter so loud that those near looked round.

"That's in the same style as, 'that's a thing I can't endure!' You know the story?" said Stepan Arkadyevich. "Ah, that's exquisite! Another bottle," he said to the waiter, and he began to relate his good story.

"Piotr Illyich Vinovsky invites you to drink with him," a little old waiter interrupted Stepan Arkadyevich, bringing two delicate glasses of sparkling champagne, and addressing Stepan Arkadyevich and Levin. Stepan Arkadyevich took the glass, and looking toward a bald man with red mustaches at the other end of the table, he nodded to him, smiling.

"Who's that?" asked Levin.

"You met him once at my place, don't you remember? A good-natured fellow."

Levin did the same as Stepan Arkadyevich and took the glass.

Stepan Arkadyevich's anecdote too was very amusing. Levin told his story, and that too was successful. Then they talked of horses, of the races, of what they had been doing that day, and of how smartly Vronsky's Atlas had won the first prize. Levin did not notice how the time passed at dinner.

"Ah! And here they are!" Stepan Arkadyevich said toward the end of dinner, leaning over the back of his chair and holding out his hand to Vronsky, who came up with a tall colonel of the Guards. Vronsky's face too beamed with the look of good-humored enjoyment that was general in the club. He propped his elbow playfully on Stepan Arkadyevich's shoulder, whispering something to him, and he held out his hand to Levin with the same good-humored smile.

"Very glad to meet you," he said. "I looked out for you at the election, but I was told you had gone away."

"Yes, I left the same day. We've just been talking of your horse. I congratulate you," said Levin. "It was run in very fast time."

"Yes; you've race horses too, haven't you?"

"No, my father had; but I remember and know something about them."

"Where have you dined?" asked Stepan Arkadyevich.

"We were at the second table, behind the columns."

"We've been celebrating his success," said the tall colonel. "It's his second Imperial prize. I wish I might have the luck at cards he has with horses."

"Well, why waste precious time? I'm going to the 'infernal regions,'" added the colonel, and he walked away.

"That's Iashvin," Vronsky said in answer to Turovtsin, and he sat down in the vacated seat beside them. He drank the glass offered him, and ordered a bottle of wine. Under the influence of the club atmosphere or the wine he had drunk, Levin chatted away to Vronsky of the best breeds of cattle, and was very glad not to feel the slightest hostility to this man. He even told him, among other things, that he had heard from his wife that she had met him at Princess Marya Borissovna's.

"Ah, Princess Marya Borissovna she's exquisite!" said Stepan Arkadyevich, and he told an anecdote about her which set them all laughing. Vronsky in particular laughed with such simplehearted amusement that Levin felt quite reconciled to him.

"Well, have we finished?" said Stepan Arkadyevich, getting up with a smile. "Let us go."

## VIII.

Getting up from the table, Levin walked with Gaghin through the lofty rooms to the billiard room, feeling his arms swing as he walked with a peculiar lightness and ease. As he crossed the big room, he came upon his father-in-law.

"Well, how do you like our Temple of Indolence?" said the Prince, taking his arm. "Come along, come along!"

"Yes, I wanted to walk about and look at everything. It's interesting."

"Yes, it's interesting for you. But its interest for me is quite different. You look at such little ancients, now," he said, pointing to a club member with bent back and pendulous lip, shuffling toward them in his soft boots, "and imagine that they were shlupiks like that from their birth up."

"Shlupiks?"

"I see you don't know that name. That's our club designation. You know the game of rolling eggs: when one's rolled a long while it becomes a shlupik. So it is with us; one goes on coming and coming to the club, and ends by becoming a shlupik. Ah, you laugh! but we look out, for fear of dropping into it ourselves. You know Prince Chechensky?" inquired the Prince; and Levin saw by his face that he was just going to relate something funny.

"No, I don't know him."

"You don't say so! Well, Prince Chechensky is a well-known figure. No matter, though. He's always playing billiards here. Only three years ago he was not a shlupik, and kept up his spirits, and even used to call other people shlupiks. But one day he turns up, and our porter... You know Vassilii? Why, that fat one; he's famous for his bons mots. And so Prince Chechensky asks him, 'Come, Vassilii who's here? Any shlupiks here yet?' And he says: 'You're the third.' Yes, my dear boy, that he did!"

Talking and greeting the friends they met, Levin and the Prince walked through all the rooms: the great room where tables had already been set, and the usual partners were playing for small stakes; the divan room, where they were playing chess, and Sergei Ivanovich was sitting talking to somebody; the billiard room, where, about the sofa in a recess, there was a lively party drinking champagne Gaghin was one of them. They peeped into the "infernal regions," where a good many men were crowding round one table, at which Iashvin was sitting. Trying not to make a noise, they walked into the dark reading room, where under the shaded lamps there sat a young man with a wrathful countenance, turning over one journal after another, and a bald general buried in a book. They went, too, into what the Prince called the intellectual room, where three gentlemen were engaged in a heated discussion of the latest political news.

## Anna Karenina

"Prince, please come, we're ready," said one of his card party, who had come to look for him, and the Prince went off. Levin sat down and listened, but recalling all the conversation of the morning he felt all of a sudden fearfully bored. He got up hurriedly, and went to look for Oblonsky and Turovtsin, with whom it had been so pleasant.

Turovtsin was one of the circle drinking in the billiard room, and Stepan Arkadyevich was talking with Vronsky near the door at the farther corner of the room.

"It's not that she's dull; but this undefined, this unsettled position," Levin caught, and he was going to hurry away, but Stepan Arkadyevich called him.

"Levin!" said Stepan Arkadyevich; and Levin noticed that his eyes were not full of tears exactly, but moist, which always happened when he had been drinking, or when he was touched. Today it was due to both causes. "Levin, don't go," he said, and he warmly squeezed his arm above the elbow, obviously not at all wishing to let him go.

"This is a true friend of mine almost my greatest friend," he said to Vronsky. "You also are still closer and dearer to me. And I want you, and I know you ought, to be friends, and great friends, because you're both splendid fellows."

"Well, there's nothing for us now but to kiss and be friends," Vronsky said, with good-natured playfulness, holding out his hand.

Levin quickly took the offered hand, and squeezed it warmly.

"I'm very, very glad," said Levin.

"Waiter, a bottle of champagne," said Stepan Arkadyevich.

"And I'm very glad," said Vronsky.

But in spite of Stepan Arkadyevich's desire, and their own desire, they had nothing to talk about, and both felt it.

"Do you know, he has never met Anna?" Stepan Arkadyevich said to Vronsky. "And I want above everything to take him to see her. Let us go, Levin!"

"Really?" said Vronsky. "She will be very glad to see you. I should be going home at once," he added, "but I'm worried about Iashvin, and I want to stay on till he finishes."

"Why, is he losing?"

"He keeps losing, and I'm the only friend that can restrain him."

"Well, what do you say to pyramids? Levin, will you play? Capital!" said Stepan Arkadyevich. "Get the table ready," he said to the marker.

"It has been ready a long while," answered the marker, who had already set the balls in a triangle, and was knocking the red one about for his own diversion.

"Well, let us begin."

After the game Vronsky and Levin sat down at Gaghin's table, and at Stepan Arkadyevich's suggestion Levin took a hand in the game. Vronsky sat down at the table, surrounded by friends, who were incessantly coming up to

## Anna Karenina

him. Every now and then he went to the "infernial" to keep an eye on Iashvin. Levin was enjoying a delightful sense of repose after the mental fatigue of the morning. He was glad that all hostility was at an end with Vronsky, and the sense of peace, decorum and comfort never left him.

When the game was over, Stepan Arkadyevich took Levin's arm.

"Well, let us go to Anna's, then. At once? Eh? She is at home. I promised her long ago to bring you. Where were you intending to spend the evening?"

"Oh, nowhere specially. I promised Sviiazhsky to go to the Society of Agriculture. By all means, let us go," said Levin.

"Very good; come along. Find out if my carriage is here," Stepan Arkadyevich said to the waiter.

Levin went up to the table, paid the forty roubles he had lost; paid his bill, the amount of which was in some mysterious way ascertained by the little old waiter who stood at the counter, and, swinging his arms, he walked through all the rooms to the exit.

## IX.

"Oblonsky's carriage!" the porter shouted in an angry bass. The carriage drove up and both got in. It was only for the first few moments, while the carriage was driving out of the clubhouse gates, that Levin was still under the influence of the club atmosphere of repose, comfort, and unimpeachable good form. But as soon as the carriage drove out into the street, and he felt it jolting over the uneven road, heard the angry shout of a driver coming toward them, saw in the uncertain light the red blind of a tavern and the shops, this impression was dissipated, and he began to think over his actions, and to wonder whether he was doing right in going to see Anna. What would Kitty say? But Stepan Arkadyevich gave him no time for reflection, and, as though divining his doubts, he dispersed them.

"How glad I am," he said, "that you should know her! You know Dolly has long wished for it. And Lvov's been to see her, and often goes. Though she is my sister," Stepan Arkadyevich pursued, "I don't hesitate to say that she's a remarkable woman.... But you will see. Her position is very painful, especially now."

"Why especially now?"

"We are carrying on negotiations with her husband about a divorce. And he's agreed; but there are difficulties in regard to the son, and the business, which ought to have been arranged long ago, has been dragging on for three months past. As soon as the divorce is over, she will marry Vronsky. How stupid these old ritual forms are 'Isaiah, rejoice!' which no one believes in, and which only prevent people being comfortable!" Stepan Arkadyevich put in. "Well, then their position will be as regular as mine, as yours."

"What is the difficulty?" said Levin.

"Oh, it's a long and tedious story. The whole business is in such an indefinite state with us. But the point is, she has been for three months in Moscow, where everyone knows her, waiting for the divorce; she goes out nowhere, sees no woman except Dolly, because, do you understand, she doesn't care to have people come as a favor. That fool Princess Varvara, even she has left her, considering this a breach of propriety. Well, you see, in such a position any other woman would not have found resources in herself. But you'll see how she has arranged her life—how calm, how dignified she is. To the left, in the alley opposite the church!" shouted Stepan Arkadyevich, leaning out of the window of the carriage. "Phew! How hot it is!" he said, in spite of twelve degrees of frost, flinging open his

unbuttoned overcoat still more.

"But she has a daughter: no doubt she's busy looking after her?" said Levin.

"I believe you picture every woman simply as a female, une couveuse," said Stepan Arkadyevich. "If she's occupied, it must be with her children. No, she brings her up capitably, I believe, but one doesn't hear about her. She's busy, in the first place, with what she writes. I see you're smiling ironically, but you're wrong. She's writing a children's book, and doesn't talk about it to anyone, but she read it to me and I gave the manuscript to Vorkuev... you know, the publisher.... And he's an author himself too, I fancy. He understands those things, and he says it's a remarkable piece of work. But are you fancying she's a writing woman? Not a bit of it. She's a woman with a heart, before everything, but you'll see. Now she has a little English girl with her, and a whole family she's looking after."

"Oh, something in a philanthropic way?"

"Why, you will look at everything in the worst light. It's not from philanthropy, it's from the heart. They that is, Vronsky had a trainer, an Englishman, first-rate in his own line, but a drunkard. He's completely given up to drink delirium tremens and the family were cast on the world. She saw them, helped them, got more and more interested in them, and now the whole family is on her hands. But not by way of patronage, you know, helping with money; she's herself preparing the boys in Russian for the high school, and she's taken the little girl to live with her. But you'll see her for yourself."

The carriage drove into the courtyard, and Stepan Arkadyevich rang loudly at the entrance where a sleigh was standing.

And, without asking the servant who opened the door whether the lady were at home, Stepan Arkadyevich walked into the hall. Levin followed him, more and more doubtful whether he were doing right or wrong.

Looking at himself in the glass, Levin noticed that he was red in the face, but he felt certain he was not drunk, and he followed Stepan Arkadyevich up the carpeted stairs. At the top Stepan Arkadyevich inquired of the footman, who bowed to him as to an intimate friend, who was with Anna Arkadyevna, and received the answer that it was M. Vorkuev.

"Where are they?"

"In the study."

Passing through the dining room, a room not very large, with dark paneled walls, Stepan Arkadyevich and Levin walked over the soft carpet to the half-dark study, lighted up by a single lamp with a big dark shade. Another lamp with a reflector was hanging on the wall, lighting up a big full-length portrait of a woman, which Levin could not help looking at. It was the portrait of Anna, painted in Italy by Mikhailov. While Stepan Arkadyevich went behind the treillage, and the man's voice which had been speaking paused, Levin gazed at the portrait, which stood out from the frame in the brilliant light thrown on it, and he could not tear himself away from it. He positively forgot where he was, and not even hearing what was said, he could not take his eyes off the marvelous portrait. It was not a picture, but a living, charming woman, with black curling hair, with bare arms and shoulders, with a pensive smile on the lips, covered with soft down; triumphantly and softly she looked at him with eyes that baffled him. She was not living, only because she was more beautiful than any living woman can be.

"I am delighted." He heard suddenly near him a voice, unmistakably addressing him, the voice of the very woman he had been admiring in the portrait. Anna had come from behind the treillage to meet him, and Levin saw in the dim light of the study the very woman of the portrait, in a dark-blue gown of changeable blue, not in the same

## Anna Karenina

position nor with the same expression, but with the same perfection of beauty which the artist had caught in the portrait. She was less dazzling in reality, but, on the other hand, there was something fresh and seductive in the living woman which was not in the portrait.

### X.

She had risen to meet him, without concealing her pleasure at seeing him; and in the quiet ease with which she held out her little and vigorous hand, introduced him to Vorkuev, and indicated a red-haired, pretty little girl who was sitting at work, calling her her pupil, Levin recognized and liked the manners of a woman of the great world, always self-possessed and natural.

"I am delighted, delighted," she repeated, and on her lips these simple words took for Levin's ears a special significance. "I have known you and liked you for a long while, both from your friendship with Stiva and for your wife's sake.... I knew her for a very short time, but she left on me the impression of an exquisite flower just a flower. And to think she will soon be a mother!"

She spoke easily and without haste, looking now and then from Levin to her brother, and Levin felt that the impression he was making was good, and he felt immediately at home, at ease and happy with her, as though he had known her from childhood.

"Ivan Petrovich and I settled in Alexei's study," she said in answer to Stepan Arkadyevich's question whether he might smoke, "just so as to be able to smoke" and glancing at Levin, instead of asking whether he would smoke, she pulled closer a tortoise-shell cigarette case and took a corn-leaf cigarette.

"How are you feeling today?" her brother asked her.

"Oh, nothing. Nerves, as usual."

"Yes, isn't it extraordinarily fine?" said Stepan Arkadyevich, noticing that Levin was glancing at the picture.

"I have never seen a better portrait."

"And extraordinarily like, isn't it?" said Vorkuev.

Levin looked from the portrait to the original. A peculiar brilliance lighted up Anna's face when she felt his eyes on her. Levin flushed, and to cover his confusion would have asked whether she had seen Darya Alexandrovna lately; but at that moment Anna spoke:

"We were just talking, Ivan Petrovich and I, of Vashchenkov's last pictures. Have you seen them?"

"Yes, I have seen them," answered Levin.

"But, I beg your pardon, I interrupted you... You were saying?..."

Levin asked if she had seen Dolly lately.

"She was here yesterday. She was very indignant with the high school people on Grisha's account. The Latin teacher, it seems, had been unfair to him."

"Yes, I have seen his pictures. I didn't care for them very much," Levin went back to the subject she had started.



## Anna Karenina

Levin talked now not at all with that purely businesslike attitude to the subject with which he had been talking all the morning. Every word in his conversation with her had a special significance. And talking to her was pleasant; still pleasanter was it to listen to her.

Anna talked not merely naturally and cleverly, but cleverly and carelessly, attaching no value to her own ideas and giving great weight to the ideas of the person she was talking to.

The conversation turned on the new movement in art, on the new illustrations of the Bible by a French artist. Vorkuev attacked the artist for a realism carried to the point of coarseness. Levin said that the French had carried conventionality further than anyone, and that consequently they see a great merit in the return to realism. In the fact of not lying they see poetry.

Never had anything clever said by Levin given him so much pleasure as this remark. Anna's face lighted up at once, as she immediately appreciated the thought. She laughed.

"I laugh," she said, "as one laughs when one sees a very true portrait. What you said so perfectly hits off French art now, painting and literature too, indeed Zola, Daudet. But perhaps it is always so, that men form their conceptions from fictitious, conventional types, and then all the combinaisons made they are tired of the fictitious figures and begin to invent more natural, true figures."

"That's perfectly true," said Vorkuev.

"So you've been at the club?" she said to her brother.

"Yes, yes, this a woman!" Levin thought, forgetting himself and staring persistently at her lovely, mobile face, which at that moment was all at once completely transformed. Levin did not hear what she was talking of as she leaned over to her brother, but he was struck by the change of her expression. Her face so handsome a moment before in its repose suddenly wore a look of strange curiosity, anger, and pride. But this lasted only an instant. She half-closed her eyes, as though recollecting something.

"Oh, well, but that's of no interest to anyone," she said, and she turned to the English girl.

"Please order the tea in the drawing room," she said in English.

The girl got up and went out.

"Well, how did she get through her examination?" asked Stepan Arkadyevich.

"Splendidly! She's a very gifted child and a sweet character."

"It will end in your loving her more than your own."

"There a man speaks. In love there's no such thing as more or less. I love my daughter with one love, and her with another."

"I was just telling Anna Arkadyevna," said Vorkuev, "that if she were to put a hundredth part of the energy she devotes to this English girl to the public question of the education of Russian children, she would be doing a great and useful work."

"Yes, but I can't help it; I couldn't do it. Count Alexei Kirillovich urged me very much" (as she uttered the words Count Alexei Kirillovich she glanced with appealing timidity at Levin, and he unconsciously responded with a

## Anna Karenina

respectful and reassuring look), "he urged me to take up the school in the village. I visited it several times. The children were very dear, but I could not feel drawn to the work. You speak of energy. Energy rests upon love; and, come as it will, there's no forcing it. I took to this child I could not myself say why."

And she glanced again at Levin. And her smile and her glance all told him that it was to him only she was addressing her words, valuing his good opinion, and at the same time sure beforehand that they understood one another.

"I quite understand that," Levin answered. "It's impossible to give one's heart to a school or such institutions in general, and I believe that that's just why philanthropic institutions always give such poor results."

She was silent for a while, then she smiled. "Yes, yes," she agreed; "I never could. Je n'ai pas le coeur assez large to love a whole asylum of horrid little girls. Cela ne m'a jamais reussi. There are so many women who have made themselves une position sociale in that way. And now more than ever," she said with a mournful, confiding expression, ostensibly addressing her brother, but unmistakably intending her words only for Levin, "now when I have such need of some occupation, I cannot." And suddenly frowning (Levin saw that she was frowning at herself for talking about herself) she changed the subject. "I know about you," she said to Levin; "that you're not a public-spirited citizen, and I have defended you to the best of my ability."

"How have you defended me?"

"Oh, according to the attacks made on you. But won't you have some tea?" She rose and took up a book bound in morocco.

"Give it to me, Anna Arkadyevna," said Vorkuev, indicating the book. "It's well worth taking up."

"Oh, no, it's all so sketchy."

"I told him about it," Stepan Arkadyevich said to his sister, nodding at Levin.

"You shouldn't have. My writing is something after the fashion of those little baskets and carvings which Liza Mertsalova used to sell me from the prisons. She had the direction of the prison department in that society," she turned to Levin; "and they were miracles of patience, the work of those poor wretches."

And Levin saw a new trait in this woman, who attracted him so extraordinarily. Besides wit, grace, and beauty, she had truth. She had no wish to hide from him all the bitterness of her position. As she said that she sighed, and her face, suddenly assuming a hard expression, looked, as it were, turned to stone. With that expression on her face she was more beautiful than ever; but the expression was new; it was utterly unlike that expression, radiant with happiness and creating happiness, which had been caught by the painter in her portrait. Levin looked more than once at the portrait and at her figure, as taking her brother's arm she walked with him to the high doors, and he felt for her a tenderness and pity at which he wondered himself.

She asked Levin and Vorkuev to go into the drawing room, while she stayed behind to say a few words to her brother. "About her divorce, about Vronsky, and what he's doing at the club, about me?" wondered Levin. And he was so keenly interested by the question of what she was saying to Stepan Arkadyevich, that he scarcely heard what Vorkuev was telling him of the qualities of the story for children Anna Arkadyevna had written.

At tea the same pleasant sort of talk, full of interesting matter, continued. There was not a single instant when a subject for conversation was to seek; on the contrary, it was felt that one had hardly time to say what one had to say, and eagerly held back to hear what the others were saying. And all that was said, not only by her, but by Vorkuev and Stepan Arkadyevich all, so it seemed to Levin, gained peculiar significance from her attention to

him and her criticism.

While he followed this interesting conversation, Levin was all the time admiring her her beauty, her intelligence, her culture, and at the same time her directness and her cordiality. He listened and talked, and all the while he was thinking of her inner life, trying to divine her feelings. And though he had judged her so severely hitherto, now by some strange chain of reasoning he was justifying her and also was sorry for her, and afraid that Vronsky did not fully understand her. At ten o'clock, when Stepan Arkadyevich got up to go (Vorkuev had left earlier), it seemed to Levin that he had only just come. Regretfully Levin too rose.

"Good-by," she said, holding his hand and glancing into his face with a winning look. "I am very glad que la glace est rompue."

She dropped his hand, and half-closed her eyes.

"Tell your wife that I love her as before, and that if she cannot pardon me my position, then my wish for her is that she may never pardon me. To pardon it, one must go through what I have gone through, and may God spare her that."

"Certainly, yes, I will tell her..." Levin said, blushing.

## XI.

"What a marvelous, sweet and unhappy woman!" he was thinking, as he stepped out into the frosty air with Stepan Arkadyevich.

"Well, didn't I tell you?" said Stepan Arkadyevich, seeing that Levin had been completely won over.

"Yes," said Levin pensively, "an extraordinary woman! It's not her cleverness, but she has such wonderful depth of feeling. I'm awfully sorry for her!"

"Now, please God everything will soon be settled. Well, well, don't be hard on people in future," said Stepan Arkadyevich, opening the carriage door. "Good-by; we don't go the same way."

Still thinking of Anna, of everything, even the simplest phrase in their conversation with her, and recalling the minutest changes in her expression, entering more and more into her position, and feeling sympathy for her, Levin reached home.

At home Kouzma told Levin that Katerina Alexandrovna was quite well, and that her sisters had just gone, and he handed him two letters. Levin read them at once in the hall, that he might not overlook them later. One was from Sokolov, his bailiff. Sokolov wrote that the wheat could not be sold, that the price was only five and a half roubles, and that he did not know where he had to get the money. The other letter was from his sister. She scolded him for her business being still unsettled.

"Well, we must sell it at five and a half if we can't get more," Levin decided on the spot the first question which had always before seemed such a weighty one, with extraordinary facility. "It's extraordinary how all one's time is taken up here," he thought, considering the second letter. He felt himself to blame for not having got done what his sister had asked him to do for her. "Today, again, I've not been to court, but today I've certainly not had time." And resolving that he would not fail to do it next day, he went up to his wife. As he went in, Levin mentally ran rapidly through the day he had spent. All the events of the day were conversations: conversations he had heard and taken part in. All the conversations were upon subjects which, if he had been alone in the country, he would

## Anna Karenina

never have taken up, but here they were very interesting. And all these conversations were right enough, only in two places there was something not quite right. One was what he had said about the carp, the other was something not quite the thing in the tender sympathy he was feeling for Anna.

Levin found his wife low-spirited and dull. The dinner of the three sisters had gone off very well, but then they had waited and waited for him, all of them had felt dull, the sisters had departed, and she had been left alone.

"Well, and what have you been doing?" she asked him, looking straight into his eyes, which shone with rather a suspicious brightness. But that she might not prevent his telling her everything, she concealed her close scrutiny of him, and with an approving smile listened to his account of how he had spent the evening.

"Well, I'm very glad I met Vronsky. I felt quite at ease and natural with him. You understand, I shall try not to see him, but I'm glad that this awkwardness is all over," he said, and remembering that, by way of trying not to see him, he had immediately gone to call on Anna, he blushed. "We talk about the peasants drinking; I don't know who drinks most, the peasantry or our own class; the peasants do it on holidays, but..."

But Kitty took not the slightest interest in discussing the drinking habits of the peasants. She saw that he blushed, and she wanted to know why.

"Well, and then where did you go?"

"Stiva urged me awfully to go and see Anna Arkadyevna."

And as he said this, Levin blushed even more, and his doubts as to whether he had done right in going to see Anna were settled once for all. He knew now that he ought not to have done so.

Kitty's eyes opened in a curious way and gleamed at Anna's name, but controlling herself with an effort, she concealed her emotion and deceived him.

"Oh!" was all she said.

"I'm sure you won't be angry at my going. Stiva begged me to, and Dolly wished it," Levin went on.

"Oh, no!" she said, but he saw in her eyes a constraint that boded him no good.

"She is a very sweet, a very, very unhappy, good woman," he said, telling her about Anna, her occupations, and what she had told him to say to her.

"Yes, of course, she is very much to be pitied," said Kitty, when he had finished. "Whom was your letter from?"

He told her, and believing in her calm tone, he went to change his coat.

Coming back, he found Kitty in the same easy chair. When he went up to her, she glanced at him and broke into sobs.

"What? What is it?" he asked, knowing beforehand what.

"You're in love with that hateful woman; she has bewitched you! I saw it in your eyes. Yes, yes! What can it all lead to? You were drinking at the club, drinking and gambling, and then you went... Where? No, we must go away... I shall go away tomorrow."

## Anna Karenina

It was a long while before Levin could soothe his wife. At last he succeeded in calming her, only by confessing that a feeling of pity, in conjunction with the wine he had drunk, had been too much for him; that he had succumbed to Anna's artful influence, and that he would avoid her. One thing he did with more sincerity confess to was that living so long in Moscow, a life of nothing but conversation, eating and drinking, he was growing crazy. They talked till three o'clock in the morning. Only at three o'clock were they sufficiently reconciled to be able to go to sleep.

### XII.

After taking leave of her guests, Anna did not sit down, but began walking up and down the room. She had unconsciously the whole evening done her utmost to arouse in Levin a feeling of love as of late she had fallen into doing with all young men and she knew she had attained her aim, as far as was possible in one evening, with a married and conscientious man. She liked him very much indeed, and, in spite of the striking difference, from the masculine point of view, between Vronsky and Levin, as a woman she saw something they had in common, which had made Kitty able to love both. Yet as soon as he was out of the room, she ceased to think of him.

One thought, and one only, pursued her in different forms, and refused to be shaken off. "If I have so much effect on others, on this man, who loves his home and his wife, why is it he is so cold to me?... Not cold exactly he loves me, I know that! But something new is drawing us apart now. Why wasn't he here all the evening? He told Stiva to say he could not leave Iashvin, and must watch over his play. Is Iashvin a child? But supposing it's true. He never tells a lie. But there's something else in it if it's true. He is glad of an opportunity of showing me that he has other duties; I know that, I submit to that. But why prove that to me? He wants to show me that his love for me is not to interfere with his freedom. But I need no proofs I need love. He ought to understand all the bitterness of this life for me here in Moscow. Is this life? I am not living, but waiting for an event, which is continually put off and put off. No answer again! And Stiva says he cannot go to Alexei Alexandrovich. And I can't write again. I can do nothing, can begin nothing, can alter nothing; I hold myself in, I wait, inventing amusements for myself the English family, writing, reading but it's all nothing but a sham, it's all the same as morphine. He ought to feel for me," she said, feeling tears of self-pity coming into her eyes.

She heard Vronsky's abrupt ring and hurriedly dried her tears not only dried her tears, but sat down by a lamp and opened a book, affecting composure. She wanted to show him that she was displeased that he had not come home as he had promised displeased only, and not on any account to let him see her distress, and, least of all, her self-pity. She might pity herself, but he must not pity her. She did not want strife, she blamed him for wanting to quarrel, but unconsciously put herself into an attitude of antagonism.

"Well, you've not been dull?" he said, eagerly and good-humoredly, going up to her. "What a terrible passion it is gambling!"

"No, I've not been dull; I've learned long ago not to be dull. Stiva has been here, and Levin."

"Yes, they meant to come and see you. Well, how did you like Levin?" he said, sitting down beside her.

"Very much. They have not been gone long. What was Iashvin doing?"

"He was winning seventeen thousand. I got him away. He had really started home, but he went back again, and now he's losing."

"Then what did you stay for?" she asked, suddenly lifting her eyes to him. The expression of her face was cold and ungracious. "You told Stiva you were staying on to get Iashvin away. And you have left him there."

## Anna Karenina

The same expression of cold readiness for the conflict appeared on his face too.

"In the first place, I did not ask him to give you any message; and secondly, I never tell lies. But the chief point is, I wanted to stay, and I stayed," he said, frowning. "Anna, what is it for, why will you do this?" he said after a moment's silence, bending over toward her; and he opened his hand, hoping she would lay hers in it.

She was glad of this appeal for tenderness. But some strange force of evil would not let her give herself up to her feelings, as though the rules of warfare would not permit her to surrender.

"Of course you wanted to stay, and you stayed. You do everything you want to. But what do you tell me that for? With what object?" she said, getting more and more excited. "Does anyone contest your rights? But you want to be right, and you're welcome to be right."

His hand closed, he turned away, and his face wore a still more obstinate expression.

"For you it's a matter of obstinacy," she said, watching him intently and suddenly finding the right word for that expression that irritated her, "simply obstinacy. For you it's a question of whether you keep the upper hand of me, while for me..." Again she felt sorry for herself, and she almost burst into tears. "If you knew what it is for me! When I feel as I do now, that you are hostile yes, hostile to me if you knew what this means for me! If you knew how I feel on the brink of calamity at this instant, how afraid I am of myself!" And she turned away, hiding her sobs.

"But what are you talking about?" he said, horrified at her expression of despair and again bending over her, he took her hand and kissed it. "What is it for? Do I seek amusements outside our home? Don't I avoid the society of women?"

"Well, yes! If that were all!" she said.

"Come, tell me what I ought to do to give you peace of mind? I am ready to do anything to make you happy," he said, touched by her expression of despair; "what wouldn't I do to save you from distress of any sort, as now, Anna!" he said.

"It's nothing, nothing!" she said. "I don't know myself whether it's the solitary life, my nerves... Come, don't let us talk of it. What about the race? You haven't told me!" she inquired, trying to conceal her triumph at the victory, which had been on her side after all.

He asked for supper, and began telling her about the races; but in his tone, in his eyes, which became more and more cold, she saw that he did not forgive her for her victory, that the feeling of obstinacy with which she had been struggling had asserted itself again in him. He was colder to her than before, as though he were regretting his surrender. And she, remembering the words that had given her the victory, "how I feel on the brink of calamity, how afraid I am of myself," saw that this weapon was a dangerous one, and that it could not be used a second time. And she felt that beside the love that bound them together there had grown up between them some evil spirit of strife, which she could not exorcise from his heart, and still less from her own.

### XIII.

There are no conditions to which a man cannot become used, especially if he sees that all around him are living in the same way. Levin could not have believed three months before that he could have gone quietly to sleep in the state in which he was that day that leading an aimless, irrational life, also living beyond his means, after drinking to excess (he could not call what happened at the club anything else), forming inappropriately friendly

relations with a man with whom his wife had once been in love, and after a still more inappropriate call upon a woman who could only be called a lost woman, after being fascinated by that woman and causing his wife distress he could still go quietly to sleep. But under the influence of fatigue, a sleepless night, and the wine he had drunk, his sleep was sound and untroubled.

At five o'clock the creak of a door opening waked him. He jumped up and looked round. Kitty was not in bed beside him. But there was a light moving behind the screen, and he heard her steps.

"What is it?... What is it?" he said, half-asleep. "Kitty! What is it?"

"Nothing," she said, coming from behind the screen with a candle in her hand. "I felt unwell," she said, smiling a particularly sweet and meaning smile.

"What? Has it begun?" he said in terror. "We ought to send..." and hurriedly he reached after his clothes.

"No, no," she said, smiling and holding his hand. "It's sure to be nothing. I was rather unwell, only a little. It's all over now."

And, getting into bed, she blew out the candle, lay down and was still. Though he thought her stillness suspicious, as though she were holding her breath, and still more suspicious the expression of peculiar tenderness and excitement with which, as she came from behind the screen, she had said "Nothing," he was so sleepy that he fell asleep at once. Only later he remembered the stillness of her breathing, and understood all that must have been passing in her sweet, precious heart while she lay beside him, not stirring, in anticipation of the greatest event in a woman's life. At seven o'clock he was waked by the touch of her hand on his shoulder, and a gentle whisper. She seemed struggling between regret at waking him, and the desire to talk to him.

"Kostia, don't be frightened. It's all right. But I fancy... We ought to send for Lizaveta Petrovna."

The candle was lighted again. She was sitting up in bed, holding some knitting, which she had been busy upon during the last few days.

"Please, don't be frightened, it's all right. I'm not a bit afraid," she said, seeing his scared face, and she pressed his hand to her bosom and then to her lips.

He hurriedly jumped up, hardly awake, and kept his eyes fixed on her, as he put on his dressing gown; then he stopped, still looking at her. He had to go, but he could not tear himself away from her eyes. He thought he loved her face, knew her expression, her eyes, but never had he seen it like this. How hateful and horrible he seemed to himself, thinking of the distress he had caused her yesterday. Her flushed face, fringed with soft curling hair under her nightcap, was radiant with joy and courage.

Though there was so little that was artificial or pretended in Kitty's character in general, Levin was struck by what was revealed now, when suddenly all disguises were thrown off and the very kernel of her soul shone in her eyes. And in this simplicity and nakedness of her soul, she, the very woman he loved in her, was more manifest than ever. She looked at him, smiling; but all at once her brows twitched, she threw up her head, and, going quickly up to him, clutched his hand and pressed close up to him, breathing her hot breath upon him. She was in pain and was, as it were, complaining to him of her suffering. And for the first minute, from habit, it seemed to him that he was to blame. But in her eyes there was a tenderness that told him that she was far from reproaching him, that she loved him for her sufferings. "If not I, who is to blame for it?" he thought unconsciously, seeking someone responsible for this suffering for him to punish; but there was no one responsible. She was suffering, complaining, and triumphing in her sufferings, and rejoicing in them, and loving them. He saw that something sublime was being accomplished in her soul, but what? He could not make it out. It was beyond his understanding.

## Anna Karenina

"I have sent to mamma. You go quickly to fetch Lizaveta Petrovna.... Kostia!... Never mind it's over."

She moved away from him and rang the bell.

"Well, go now; Pasha's coming. I am all right."

And Levin saw with astonishment that she had taken up the knitting she had brought in in the night, and had begun working at it again.

As Levin was going out of one door, he heard the maidservant come in at the other. He stood at the door and heard Kitty giving exact directions to the maid, and beginning to help her move the bedstead.

He dressed, and while they were putting in his horse, as there were no hacks about as yet, he ran again up to the bedroom, not on tiptoe, it seemed to him, but on wings. Two maidservants were carefully shifting something about in the bedroom. Kitty was walking about knitting rapidly and giving directions.

"I'm going for the doctor. They have sent for Lizaveta Petrovna, but I'll go on there too. Isn't there anything wanted? Yes shall I go to Dolly's?"

She looked at him, obviously not hearing what he was saying.

"Yes, yes. Do go," she said quickly, frowning and waving her hand to him.

He had just gone into the drawing room, when suddenly a plaintive moan sounded from the bedroom, smothered instantly. He stood still, and for a long while he could not understand.

"Yes, that is she," he said to himself, and, clutching at his head, he ran downstairs.

"Lord have mercy on us! Forgive us! Help us!" he repeated the words that for some reason came suddenly to his lips. And he, an unbeliever, repeated these words not with his lips only. At that instant he knew that all his doubts, even the impossibility of believing with his reason, of which he was aware in himself, did not in the least hinder his turning to God. All of that now floated out of his soul like dust. To whom was he to turn if not to Him in whose hands he felt himself, his soul, and his love?

The horse was not yet ready, but feeling a peculiar concentration of his physical forces and his intellect on what he had to do, he, losing no minute, started off on foot without waiting for the horse, and told Kouzma to overtake him.

At the corner he met a night hack driving hurriedly. In the little sleigh, wrapped in a velvet cloak, sat Lizaveta Petrovna with a kerchief round her head. "Thank God! thank God!" he said, overjoyed to recognize her little fair face which wore a peculiarly serious, even stern expression. Telling the driver not to stop, he ran along beside her.

"For two hours, then? Not more?" she inquired. "You should let Piotr Dmitrievich know, but don't hurry him. And get some opium at the chemist's."

"So you think that it will go well? Lord have mercy on us and help us!" Levin said, seeing his own horse driving out of the gate. Jumping into the sleigh beside Kouzma, he told him to drive to the doctor's.



XIV.

The doctor was not yet up, and the footman said that "he had been up late, and had given orders not to be waked, but would get up soon." The footman was cleaning the lamp chimneys, and seemed very busy about them. This concentration of the footman upon his lamps, and his indifference to what was passing in Levin, at first astounded him, but immediately on considering the question he realized that no one knew or was bound to know his feelings, and that it was all the more necessary to act calmly, sensibly, and resolutely to get through this wall of indifference and attain his aim. "Don't be in a hurry or let anything slip," Levin said to himself, feeling a greater and greater flow of physical energy and attention to all he had yet to do.

Having ascertained that the doctor was not getting up, Levin considered various plans, and decided on the following one; that Kouzma should go for another doctor, while he himself should go to the chemist's for opium, and if, when he came back, the doctor had not yet begun to get up, he would, either by tipping the footman, or by force, wake the doctor at all hazards.

At the chemist's the lank pharmacist wafered a packet of powders for a coachman who stood waiting, and refused him opium with the same callousness with which the doctor's footman had cleaned his lamp chimneys. Trying not to get flustered or out of temper, Levin mentioned the names of the doctor and midwife, and explaining what the opium was needed for, tried to persuade him. The assistant inquired in German whether he should give it, and receiving an affirmative reply from behind the partition, he took out a bottle and a funnel, deliberately poured the opium from a bigger bottle into a little one, stuck on a label, sealed it up, in spite of Levin's request that he would not do so, and was about to wrap it up too. This was more than Levin could stand; he took the bottle firmly out of his hands, and ran to the big glass doors. The doctor was not even now getting up, and the footman, busy now in putting down the rugs, refused to wake him. Levin deliberately took out a ten-rouble note, and careful to speak slowly, though losing no time over the business, he handed him the note, and explained that Piotr Dmitrievich (what a great and important personage he seemed to Levin now, this Piotr Dmitrievich, who had been of so little consequence in his eyes before) had promised to come at any time; that he would certainly not be angry! And that he must therefore wake him at once.

The footman agreed, and went upstairs, taking Levin into the waiting room.

Levin could hear through the door the doctor coughing, moving about, washing, and saying something. Three minutes passed; it seemed to Levin that more than an hour had gone by. He could not wait any longer.

"Piotr Dmitrievich, Piotr Dmitrievich?" he said in an imploring voice at the open door. "For God's sake, forgive me! See me as you are. It's been going on more than two hours already."

"In a minute; in a minute!" answered a voice, and to his amazement heard that the doctor was smiling as he spoke.

"For one instant!"...

"In a minute."

Two minutes more passed while the doctor was putting on his boots, and two minutes more while the doctor put on his coat and combed his hair.

"Piotr Dmitrievich!" Levin was beginning again in a plaintive voice, just as the doctor came in, dressed and ready. "These people have no conscience," thought Levin. "Combing his hair, while we're dying!"

"Good morning!" the doctor said to him, shaking hands, and, as it were, teasing him with his composure. "There's

no hurry. Well, now?"

Trying to be as accurate as possible, Levin began to tell him every unnecessary detail of his wife's condition, interrupting his account repeatedly with entreaties that the doctor would come with him at once.

"Oh, you needn't be in any hurry. You don't understand, you know. I'm certain I'm not wanted; still I've promised, and, if you like, I'll come. But there's no hurry. Please sit down; won't you have some coffee?"

Levin stared at him with eyes that asked whether he was laughing at him; but the doctor had no notion of making fun of him.

"I know, I know," the doctor said, smiling; "I'm a married man myself; and at these moments we husbands are very much to be pitied. I've a patient whose husband always takes refuge in the stables on such occasions."

"But what do you think, Piotr Dmitrievich? Do you suppose it will go all right?"

"Everything points to a favorable issue."

"So you'll come immediately?" said Levin, looking wrathfully at the servant who was bringing in the coffee.

"In just an hour."

"Oh, for God's sake!"

"Well, let me drink my coffee, anyway."

The doctor started upon his coffee. Both were silent.

"The Turks are really getting beaten, though. Did you read yesterday's telegrams?" said the doctor, thoroughly masticating a roll.

"No, I can't stand it!" said Levin, jumping up. "So you'll be with us in a quarter of an hour?"

"In half an hour."

"On your honor?"

When Levin got home, he drove up at the same time as the Princess, and they went up to the bedroom together. The Princess had tears in her eyes, and her hands were shaking. Seeing Levin, she embraced him, and burst into tears.

"Well, my dear Lizaveta Petrovna?" she queried, clasping the hand of the midwife, who came out to meet them with a beaming and anxious face.

"Everything is going on well," she said; "persuade her to lie down. She will feel easier that way."

From the moment when he had waked up and understood what was going on, Levin had prepared his mind to bear resolutely what was before him, and without considering or anticipating anything, to avoid upsetting his wife, and, on the contrary, to soothe her and keep up her courage. Without allowing himself even to think of what was to come, of how it would end, judging from his inquiries as to the usual duration of these ordeals, Levin had in his imagination braced himself to bear up and to keep a tight rein on his feelings for five hours, and it had seemed to

him he could do this. But when he came back from the doctor's and saw her sufferings again, he fell to repeating more and more frequently: "Lord, have mercy on us, and succor us!" He sighed, and flung his head up, and began to feel afraid he could not bear it, that he would burst into tears or run away such agony it was to him. Yet only one hour had passed.

But after that hour there passed another hour, two hours, three, the full five hours he had fixed as the furthest limit of his sufferings, and the situation was still unchanged; and he was still bearing it because there was nothing to be done but bear it every instant feeling that he had reached the utmost limits of his endurance, and that his heart would break with sympathy and pain.

But still the minutes passed by, and the hours, and still more hours, and his misery and horror grew and were more and more intense.

All the ordinary conditions of life, without which one can form no conception of anything, had ceased to exist for Levin. He lost all sense of time. Minutes those minutes when she sent for him and he held her moist hand, that would squeeze his hand with extraordinary violence and then push it away seemed to him hours, and hours seemed to him minutes. He was surprised when Lizaveta Petrovna asked him to light a candle behind a screen, and he found that it was five o'clock in the afternoon. If he had been told it was only ten o'clock in the morning he would not have been surprised. Where he was all this time, he knew as little as the time of anything. He saw her swollen face, sometimes bewildered and in agony, sometimes smiling and trying to reassure him. He saw the old Princess too, flushed and overwrought, with her gray curls in disorder, forcing herself to gulp down her tears, biting her lips; he saw Dolly too, and the doctor, smoking thick cigarettes, and Lizaveta Petrovna with a firm, resolute, reassuring face, and the old Prince walking up and down the hall with a frowning face. But why they came in and went out, where they were, he did not know. The Princess was with the doctor in the bedroom, then in the study, where a table set for dinner suddenly appeared; then she was not there, but Dolly was. Then Levin remembered he had been sent somewhere. Once he had been sent to move a table and sofa. He had done this eagerly, thinking it had to be done for her sake, and only later on he found it was his own bed he had been getting ready. Then he had been sent to the study to ask the doctor something. The doctor had answered and then had said something about the irregularities in the municipal council. Then he had been sent to the bedroom to help the old Princess move the holy image in its silver-gilt setting, and with the Princess's old waiting maid he had clambered on a shelf to reach it and had broken the lampad, and the old servant had tried to reassure him about the lampad and about his wife, and he carried the holy image in and set it at the head of Kitty's bed, carefully tucking the image in behind the pillow. But where, when, and why all this had happened, he could not tell. He did not understand why the old Princess took his hand, and looking compassionately at him, begged him not to worry himself, and Dolly persuaded him to eat something and led him out of the room, and even the doctor looked seriously and with commiseration at him, and offered him a drop of something.

All he knew and felt was that what was happening was what had happened nearly a year before in the hotel of the country town at the deathbed of his brother Nikolai. But that had been grief this was joy. Yet that grief and this joy were alike outside all the ordinary conditions of life; they were loopholes, as it were, in that ordinary life, through which there came glimpses of something sublime. And in the contemplation of this sublime something the soul was exalted to inconceivable heights of which it had before had no conception, while reason lagged behind, unable to keep up with it.

"Lord, have mercy on us, and succor us!" he repeated to himself incessantly, feeling, in spite of his long and, as it seemed, complete alienation from religion, that he turned to God just as trustfully and simply as he had in his childhood and first youth.

All this time he had two distinct moods. One was away from her, with the doctor, who kept smoking one thick cigarette after another and extinguishing them on the edge of a full ash tray; with Dolly, and with the old Prince, where there was talk about dinner, about politics, about Maria Petrovna's illness, and where Levin suddenly forgot

for a minute what was happening, and felt as though he had waked up from sleep; the other mood was in her presence, at her pillow, where his heart seemed breaking, and still did not break, from sympathetic suffering, and he prayed to God without ceasing. And every time he was brought back from a moment of oblivion by a scream reaching him from the bedroom, he fell into the same strange terror that had come upon him the first minute. Every time he heard a shriek, he jumped up, ran to justify himself, remembered on the way that he was not to blame, and he longed to defend her, to help her. But as he looked at her, he saw again that help was impossible, and he was filled with terror and prayed: "Lord, have mercy on us, and help us!" And as time went on, both these moods became more intense; the calmer he became away from her, completely forgetting her, the more agonizing became both her sufferings and his feeling of helplessness before them. He jumped up, would have liked to run away, but ran to her.

Sometimes, when again and again she called upon him, he blamed her; but seeing her submissive, smiling face, and hearing the words "I am worrying you," he threw the blame on God; but thinking of God, at once he fell beseeching God to forgive him and have mercy.

## XV.

He did not know whether it was late or early. The candles had all burned out. Dolly had just been in the study and had suggested to the doctor that he should lie down. Levin sat listening to the doctor's stories of a quack mesmerizer and looking at the ashes of his cigarette. There had been a period of repose, and he had sunk into oblivion. He had completely forgotten what was going on now. He heard the doctor's chat and understood it. Suddenly there came an unearthly shriek. The shriek was so awful that Levin did not even jump up, but, holding his breath, gazed in terrified inquiry at the doctor. The doctor put his head on one side, listened, and smiled approvingly. Everything was so extraordinary that nothing could strike Levin as strange. "I suppose it must be so," he thought, and still sat where he was. Whose scream was this? He jumped up, ran on tiptoe to the bedroom, edged round Lizaveta Petrovna and the Princess, and took up his position at Kitty's pillow. The scream had subsided, but there was some change now. What it was he did not see and did not comprehend, and he had no wish to see or comprehend. But he saw it by the face of Lizaveta Petrovna. Lizaveta Petrovna's face was stern and pale, and still as resolute, though her jaws were twitching, and her eyes were fixed intently on Kitty. Kitty's swollen and agonized face, a tress of hair clinging to her moist brow, was turned to him and sought his eyes. Her lifted hands asked for his hands. Clutching his chill hands in her moist ones, she began squeezing them to her face.

"Don't go, don't go! I'm not afraid, I'm not afraid!" she said rapidly. "Mamma, take my earrings. They bother me. You're not afraid? Soon, soon, Lizaveta Petrovna..."

She spoke quickly, very quickly, and tried to smile. But suddenly her face was drawn she pushed him away.

"Oh, this is awful! I'm dying, I'm dying! Go away!" she shrieked, and again he heard that unearthly scream.

Levin clutched at his head and ran out of the room.

"It's nothing, it's nothing, it's all right," Dolly called after him.

But they might say what they liked, he knew now that all was over. He stood in the next room, his head leaning against the doorpost, and heard shrieks, howls, such as he had never heard before, and he knew that what had been Kitty was uttering these shrieks. He had long ago ceased to wish for the child. By now he loathed this child. He did not even pray for her life now all he longed for was the cessation of this awful anguish.

"Doctor! What is it? What is it? My God!" he said, snatching at the doctor's hand as he came up.

"It's the end," said the doctor. And the doctor's face was so grave as he said it that Levin took the end as meaning her death.

Beside himself, he ran into the bedroom. The first thing he saw was the face of Lizaveta Petrovna. It was even more frowning and stern. Kitty's face he did not know. In the place where it had been was something that was fearful in its strained distortion and in the sounds that came from it. He fell down with his head on the wooden framework of the bed, feeling that his heart was bursting. The awful scream never paused, it became still more awful, and as though it had reached the utmost limit of terror, suddenly it ceased. Levin could not believe his ears, but there could be no doubt; the scream had ceased and he heard a subdued stir and bustle, and hurried breathing, and her voice, gasping, alive, tender, and blissful, uttered softly: "It's over!"

He lifted his head. With her hands hanging exhausted on the quilt, looking extraordinarily lovely and serene, she looked at him in silence and tried to smile, and could not.

And suddenly, from the mysterious and awful faraway world in which he had been living for the last twenty-two hours, Levin felt himself all in an instant borne back to the old everyday world, though glorified now by such a radiance of happiness that he could not bear it. The strained chords snapped; sobs and tears of joy which he had never foreseen rose up with such violence that his whole body shook, and for long they prevented him from speaking.

Falling on his knees before the bed, he held his wife's hand before his lips and kissed it, and the hand, with a weak movement of the fingers, responded to his kiss. And meanwhile, there at the foot of the bed, in the deft hands of Lizaveta Petrovna, like a flickering light in a lamp, lay the life of a human creature, which had never existed before, and which would now with the same right, with the same importance to itself, live and create in its own image.

"Alive! alive! And a boy too! Set your mind at rest!" Levin heard Lizaveta Petrovna saying, as she slapped the baby's back with a shaking hand.

"Mamma, is it true?" said Kitty's voice.

The Princess's sobs were all the answer she could make.

And in the midst of the silence there came in unmistakable reply to the mother's question, a voice quite unlike the subdued voices speaking in the room. It was the bold, clamorous, self-assertive squall of the new human being, which had so incomprehensibly appeared.

If Levin had been told before that Kitty was dead, and that he had died with her, and that their children were angels, and that God was standing before him, he would have been surprised at nothing. But now, coming back to the world of reality, he had to make great mental efforts to take in that she was alive and well, and that the creature squalling so desperately was his son. Kitty was alive, her agony was over. And he was unutterably happy. That he understood; and he was completely happy in it. But the baby? Whence, why, who was he?... He could not get used to the idea. It seemed to him something extraneous, superfluous, to which he could not accustom himself.

## XVI.

At ten o'clock the old Prince, Sergei Ivanovich, and Stepan Arkadyevich, were sitting at Levin's. Having inquired after Kitty, they had dropped into conversation upon other subjects. Levin heard them, and unconsciously, as they talked, going over the past, over what they had been up to that morning, he thought of himself as he had been yesterday till that point. It was as though a hundred years had passed since then. He felt himself exalted to

unattainable heights, from which he studiously lowered himself so as not to wound the people he was talking to. He talked, and was all the time thinking of his wife, of her present condition, of his son, in whose existence he tried to school himself into believing. The whole world of woman, which had taken for him since his marriage a new value he had never suspected before, was now so exalted that his imagination could not embrace it. He heard them talk of yesterday's dinner at the club, and thought: "What is happening with her now? Is she asleep? How is she? What is she thinking of? Is he crying my son Dmitrii?" And in the middle of the conversation, in the middle of a sentence, he jumped up and went out of the room.

"Send me word if I can see her," said the Prince.

"Very well, in a minute," answered Levin, and without stopping, he went to her room.

She was not asleep, she was talking gently with her mother, making plans about the christening.

Carefully set to rights, with hair well brushed, in a smart little cap with some blue in it, her arms out on the quilt, she was lying on her back. Meeting his eyes, her eyes drew him to her. Her face, bright before, brightened still more as he drew near her. There was the same change in it from earthly to unearthly that is seen in the face of the dead. But there it means farewell here it meant welcome. Again a rush of emotion, such as he had felt at the moment of the child's birth, flooded his heart. She took his hand and asked him if he had slept. He could not answer, and turned away, realizing his weakness.

"I have had a nap, Kostia!" she said to him. "And I am so comfortable now."

She looked at him, but suddenly her expression changed.

"Give him to me," she said, hearing the baby's cry. "Give him to me, Lizaveta Petrovna, and he shall look at him."

"To be sure, his papa shall look at him," said Lizaveta Petrovna, getting up and bringing something red, and queer and wriggling. "Wait a minute, we'll array ourselves first," and Lizaveta Petrovna laid the red wobbling thing on the bed, began untrussing and trussing up the baby, lifting it up and turning it over with one finger and powdering it with something.

Levin, looking at the tiny, pitiful creature, made strenuous efforts to discover in his heart some traces of fatherly feeling for it. He felt nothing toward it but disgust. But when it was undressed and he caught a glimpse of wee, wee, little hands, little feet, saffron-colored, with little toes, too; and even with a little big toe different from the rest, and when he saw Lizaveta Petrovna closing the wide-open little hands, as though they were soft springs, and putting them into linen garments, such pity for the little creature came upon him, and such terror that she would hurt it, that he held her hand back.

Lizaveta Petrovna laughed.

"Don't be frightened, don't be frightened!"

When the baby had been arrayed and transformed into a solid doll, Lizaveta Petrovna dandled it as though proud of her handiwork, and stood a little away so that Levin might see his son in all his glory.

Kitty looked sideways in the same direction, never taking her eyes off the baby. "Give him to me! Give him to me!" she said, and even made as though she would sit up.

"What are you thinking of, Katerina Alexandrovna, you mustn't move like that! Wait a minute. I'll give him to you. Here we're showing papa what a fine fellow we are!"

## Anna Karenina

And Lizaveta Petrovna, with one hand supporting the wobbling head, lifted up on the other arm the strange, limp, red creature, whose head was lost in its swaddling clothes. But it had a nose, too, and slanting eyes, and smacking lips.

"A splendid baby!" said Lizaveta Petrovna.

Levin sighed with mortification. This splendid baby excited in him no feeling but disgust and compassion. It was not at all the feeling he had looked forward to.

He turned away while Lizaveta Petrovna put the baby to the unaccustomed breast.

Suddenly laughter made him look round. The baby had taken the breast.

"Come that's enough, that's enough!" said Lizaveta Petrovna, but Kitty would not let the baby go. He fell asleep in her arms.

"Look, now," said Kitty, turning the baby so that he could see it. The aged-looking little face suddenly puckered up still more, and the baby sneezed.

Smiling, hardly able to restrain his tears, Levin kissed his wife and went out of the dark room.

What he felt toward this little creature was utterly unlike what he had expected. There was nothing cheerful and joyous in the feeling; on the contrary, it was a new torture of apprehension. It was the consciousness of a new sphere of liability to pain. And this sense was so painful at first, the apprehension lest this helpless creature should suffer was so intense, that it prevented him from noticing the strange thrill of senseless joy and even pride that he had felt when the baby had sneezed.

## XVII.

Stepan Arkadyevich's affairs were in a very bad way.

The money for two-thirds of the forest had all been spent already, and he had borrowed from the merchant in advance at ten per cent discount almost all the remaining third. The merchant would not give more, especially as Darya Alexandrovna, for the first time that winter insisting on her right to her own property, had refused to sign the receipt for the payment of the last third of the forest. All his salary went on household expenses and in payment of petty debts that could not be put off. There was positively no money.

This was unpleasant and awkward, and in Stepan Arkadyevich's opinion things could not go on like this. The explanation of the position was, in his view, to be found in the fact that his salary was too small. The post he filled had been unmistakably very good five years ago, but it was so no longer. Petrov, the bank director, had twelve thousand; Sventitsky, a company director, had seventeen thousand; Mitin, who had founded a bank, received fifty thousand. "Clearly I've been napping, and they've overlooked me," Stepan Arkadyevich thought about himself. And he began keeping his eyes and ears open, and toward the end of the winter he had discovered a very good berth and had formed a plan of attack upon it, at first from Moscow through aunts, uncles, and friends, and then, when the matter was well advanced, in the spring, he went himself to Petersburg. It was one of those berths (with incomes ranging from one thousand to fifty thousand roubles), of which there are so many more nowadays than there were snug, bribable ones in the past. It was the post of secretary of the committee of the amalgamated agency of the Southern Railways, and of certain banking companies. This position, like all such appointments, called for such immense energy and such varied qualifications, that it was difficult for them to be found united in any one man. And since a man combining all the qualifications was not to be found, it was at least better that the

post be filled by an honest than by a dishonest man. And Stepan Arkadyevich was not merely an honest man, unemphatically, in the common acceptation of the word; he was an honest man, emphatically, in that special sense which the word has in Moscow, when they talk of an "honest" politician, an "honest" writer, an "honest" newspaper, an "honest" institution, an "honest" tendency, meaning not simply that the man or the institution is not dishonest, but that they are capable on occasion of stinging the authorities. Stepan Arkadyevich moved in those circles in Moscow in which that expression had come into use, was regarded there as an honest man, and so had more right to this appointment than others.

The appointment yielded an income of from seven to ten thousand a year, and Oblonsky could fill it without giving up his government position. It was in the hands of two ministers, one lady, and two Jews, and all these people, though the way had been paved already with them, Stepan Arkadyevich had to see in Peterburg. Besides this business, Stepan Arkadyevich had promised his sister Anna to obtain from Karenin a definite answer on the question of divorce. And begging fifty roubles from Dolly, he set off for Peterburg.

Stepan Arkadyevich sat in Karenin's study listening to his report on the causes of the unsatisfactory position of Russian finance, and only waiting for the moment when he would finish to speak about his own business or about Anna.

"Yes, that's very true," he said, when Alexei Alexandrovich took off the pince-nez, without which he could not read now, and looked inquiringly at his quondam brother-in-law, "that's very true in particular cases, but still, the principle of our day is freedom."

"Yes, but I lay down another principle, embracing the principle of freedom," said Alexei Alexandrovich, with emphasis on the word "embracing", and he put on his pince-nez again, so as to read the passage in which this statement was made.

And turning over the beautifully written, wide-margined manuscript, Alexei Alexandrovich read aloud the conclusive passage once more.

"I don't advocate protection for the sake of private interest, but for the public weal and for the lower and upper classes equally," he said, looking over his pince-nez at Oblonsky. "But they cannot grasp that, they are taken up now with personal interests, and carried away by phrases."

Stepan Arkadyevich knew that when Karenin began to talk of what they were doing and thinking, the persons who would not accept his report and were the cause of everything wrong in Russia, that it was coming near the end. And so now he eagerly abandoned the principle of free trade, and fully agreed. Alexei Alexandrovich paused, thoughtfully turning over the pages of his manuscript.

"Oh, by the way," said Stepan Arkadyevich, "I wanted to ask you, some time when you see Pomorsky, to drop him a hint that I should be very glad to get that new appointment of member of the committee of the amalgamated agency of the Southern Railways and banking companies." Stepan Arkadyevich was familiar by now with the title of the post he coveted, and he brought it out rapidly without mistake.

Alexei Alexandrovich questioned him as to the duties of this new committee, and pondered. He was considering whether the new committee would not be acting in some way contrary to the views he had been advocating. But as the influence of the new committee was of a very complex nature, and his views were of very wide application, he could not decide this straight off, and taking off his pince-nez, he said:

"Of course, I can mention it to him; but what is your reason precisely for wishing to obtain the appointment?"

"It's a good salary, rising to nine thousand, and my means..."



"Nine thousand!" repeated Alexei Alexandrovich, and he frowned.

The high figure of the salary made him reflect that on that side Stepan Arkadyevich's proposed position ran counter to the main tendency of his own projects of reform, which always leaned toward economy.

"I consider, and I have embodied my views in a note on the subject, that in our day these immense salaries are evidence of the unsound economic assiette of our finances."

"But what's to be done?" said Stepan Arkadyevich. "Suppose a bank director gets ten thousand well, he's worth it; or an engineer gets twenty thousand after all, it's a growing thing, you know!"

"I assume that a salary is the price paid for a commodity, and it ought to conform with the law of supply and demand. If the salary is fixed without any regard for that law, as, for instance, when I see two engineers leaving college together, both equally well trained and efficient, and one getting forty thousand while the other is satisfied with two; or when I see lawyers and hussars, having no special qualifications, appointed directors of banking companies with immense salaries, I conclude that the salary is not fixed in accordance with the law of supply and demand, but simply through personal interest. And this is an abuse of great gravity in itself, and one that reacts injuriously on the government service. I consider..."

Stepan Arkadyevich made haste to interrupt his brother-in-law.

"Yes; but you must agree that the new institution being started is of undoubted utility. After all, you know, it's a growing thing! What they lay particular stress on is the thing being carried on honestly," said Stepan Arkadyevich with emphasis.

But the Moscow significance of the word honest was lost on Alexei Alexandrovich.

"Honesty is only a negative qualification," he said.

"Well, you'll do me a great service, anyway," said Stepan Arkadyevich, "by putting in a word to Pomorsky just in the way of conversation..."

"But I fancy it depends more on Bolgarinov," said Alexei Alexandrovich.

"Bolgarinov has fully assented, as far as he's concerned," said Stepan Arkadyevich, turning red. Stepan Arkadyevich reddened at the mention of that name, because he had been that morning at the Jew Bolgarinov's, and the visit had left an unpleasant recollection.

Stepan Arkadyevich believed most positively that the committee in which he was trying to get an appointment was a new, genuine, and honest public body, but that morning when Bolgarinov had intentionally, beyond a doubt kept him two hours waiting with other petitioners in his waiting room, he had suddenly felt uneasy.

Whether he was uncomfortable because he, a descendant of Rurik, Prince Oblonsky, had been kept for two hours waiting to see a Jew, or that for the first time in his life he was not following the example of his ancestors in serving the government, but was turning off into a new career at any rate he was very uncomfortable. During those two hours in Bolgarinov's waiting room Stepan Arkadyevich, stepping jauntily about the room, pulling his side whiskers, entering into conversation with the other petitioners, and inventing a calembour dealing with his wait in the Jew's anteroom, assiduously concealed from others, and even from himself, the feeling he was experiencing.

But all the time he was uncomfortable and perturbed, he could not have said why whether because he could not get his calembour just right, or from some other reason. When at last Bolgarinov had received him with exaggerated politeness and unmistakable triumph at his humiliation, and had all but refused the favor asked of him, Stepan Arkadyevich had made haste to forget it all as soon as possible. And now, at the mere recollection, he blushed.

## XVIII.

"Now there is something I want to talk about, and you know what it is... about Anna," Stepan Arkadyevich said, pausing for a brief space, and shaking off the unpleasant impression.

As soon as Oblonsky uttered Anna's name, the face of Alexei Alexandrovich became completely transformed; all the life went out of it, and it looked weary and dead.

"What is it exactly that you want from me?" he said, moving in his chair and snapping his pince-nez.

"A definite settlement, Alexei Alexandrovich some settlement of the situation. I'm appealing to you" ("not as to an injured husband," Stepan Arkadyevich was going to say, but, afraid of wrecking his negotiation by this, he changed the words) "not as to a statesman" (which did not sound apropos), "but simply as to a man, and a goodhearted man, and a Christian. You must have pity on her," he said.

"That is, in what way, precisely?" Karenin said softly.

"Yes, pity on her. If you had seen her as I have! I have been spending all the winter with her you would have pity on her. Her position is awful, simply awful!"

"I had imagined," answered Alexei Alexandrovich in a higher, almost shrill voice, "that Anna Arkadyevna had everything she had desired for herself."

"Oh, Alexei Alexandrovich, for God's sake, let's not indulge in recriminations! What is past is past, and you know what she wants and is waiting for a divorce."

"But I believe Anna Arkadyevna refuses a divorce, if I make it a condition to leave me my son. I replied in that sense, and supposed that the matter was ended. I consider it at an end," shrieked Alexei Alexandrovich.

"But, for heaven's sake, don't get excited!" said Stepan Arkadyevich, touching his brother-in-law's knee. "The matter is not ended. If you will allow me to recapitulate, it was like this: when you parted, you were as magnanimous as could possibly be; you were ready to give her everything freedom, even divorce. She appreciated that. No, make no doubt. She did appreciate it to such a degree that, at the first moment, feeling how she had wronged you, she did not consider and could not consider everything. She gave up everything. But experience, time, have shown that her position is unbearable, impossible."

"The life of Anna Arkadyevna can have no interest for me," Alexei Alexandrovich put in, raising his eyebrows.

"Allow me to disbelieve that," Stepan Arkadyevich replied gently. "Her position is intolerable for her, and of no benefit to anyone whatever. She has deserved it, you will say. She knows that and asks you for nothing; she says plainly that she dare not ask you. But I, all of us her relatives, all who love her beg you, entreat you. Why should she suffer? Who is any the better for it?"

"Excuse me, you seem to put me in the position of the guilty party," observed Alexei Alexandrovich.

## Anna Karenina

"Oh, no, oh, no, not at all! Please understand me," said Stepan Arkadyevich again touching him this time his hand as though feeling sure this physical contact would soften his brother-in-law. "All I say is this: her position is intolerable, and it might be alleviated by you, and you will lose nothing by it. I will arrange it all for you, so that you'll never notice it. You did promise it, you know."

"The promise was given before. And I had supposed that the question of my son had settled the matter. Besides, I hoped that Anna Arkadyevna had enough magnanimity..." Alexei Alexandrovich articulated with difficulty, his lips twitching and his face white.

"She leaves it all to your magnanimity. She begs, she implores one thing of you to extricate her from the impossible position in which she is placed. She does not ask for her son now. Alexei Alexandrovich, you are a good man. Put yourself in her position for a minute. The question of divorce for her in her position is a question of life and death. If you had not promised it once, she would have reconciled herself to her position, she would have gone on living in the country. But you promised it, and she wrote to you, and moved to Moscow. And here she's been for six months in Moscow, where every chance meeting cuts her to the heart, every day expecting an answer. Why, it's like keeping a condemned criminal for six months with the rope round his neck, promising him perhaps death, perhaps mercy. Have pity on her, and I will undertake to arrange everything.... Vos scrupules..."

"I am not talking about that, about that..." Alexei Alexandrovich interrupted with disgust. "But, perhaps, I promised what I had no right to promise."

"So you go back on your promise?"

"I have never refused to do all that is possible, but I want time to consider how much of what I promised is possible."

"No, Alexei Alexandrovich!" cried Oblonsky, jumping up. "I won't believe that! She's unhappy as only a woman can be unhappy, and you cannot refuse in such..."

"As much of what I promised as is possible. Vous professez d'etre libre penseur. But I, as a believer, cannot, in a matter of such gravity, act in opposition to the Christian law."

"But in Christian societies and among us, as far as I'm aware, divorce is allowed," said Stepan Arkadyevich. "Divorce is sanctioned even by our church. And we see..."

"It is allowed, but not in the sense..."

"Alexei Alexandrovich, you are not like yourself," said Oblonsky, after a brief pause. "Wasn't it you (and didn't we all appreciate it in you?) who forgave everything, and, moved simply by Christian feeling, were ready to make any sacrifice? You said yourself: if a man take thy cloak, give him thy coat also, and now..."

"I beg," said Alexei Alexandrovich shrilly, getting suddenly onto his feet, his face white and his jaws twitching, "I beg you to drop this... to drop... this subject!"

"Oh, no! Oh, forgive me, forgive me if I have wounded you," said Stepan Arkadyevich, holding out his hand with a smile of embarrassment; "but like a messenger I have simply performed the commission given me."

Alexei Alexandrovich gave him his hand, pondered a little, and said:

"I must think it over and seek for guidance. The day after tomorrow I will give you a final answer," he said, after considering a moment.

**XIX.**

Stepan Arkadyevich was about to go away when Kornei came in to announce:

"Sergei Alexeevich!"

"Who's Sergei Alexeevich?" Stepan Arkadyevich was about to ask, but he remembered immediately.

"Ah, Seriozha!" he said aloud. "Sergei Alexeevich! I thought it was the director of some department. Anna asked me to see him too," he remembered.

And he recalled the timid, piteous expression with which Anna had said to him at parting: "Anyway, you will see him. Find out exactly where he is, who is looking after him. And Stiva... If it were possible! Could it be possible?" Stepan Arkadyevich knew what was meant by that "if it were possible," if it were possible to arrange the divorce so as to let her have her son.... Stepan Arkadyevich saw now that it was useless to dream of that, but still he was glad to see his nephew.

Alexei Alexandrovich reminded his brother-in-law that they never spoke to the boy of his mother, and he begged him not to mention a single word about her.

"He was very ill after that interview with his mother, which we had not foreseen," said Alexei Alexandrovich. "Indeed, we feared for his life. But with rational treatment, and sea bathing in the summer, he regained his strength, and now, by the doctor's advice, I have let him go to school. And certainly the companionship at school has had a good effect on him, and he is perfectly well, and making good progress."

"What a fine fellow he's grown! And he's no longer Seriozha, but quite full-fledged Sergei Alexeevich!" said Stepan Arkadyevich, smiling, as he looked at the handsome, broad-shouldered lad in blue jacket and long trousers, who walked in alertly and confidently. The boy looked healthy and good-humored. He bowed to his uncle as to a stranger, but, recognizing him, he blushed and turned hurriedly away from him, as though offended and irritated at something. The boy went up to his father and handed him a note of the marks he had gained in school.

"Well, that's very fair," said his father, "you may go."

"He's thinner and taller, and has grown from a child into a boy; I like that," said Stepan Arkadyevich. "Do you remember me?"

The boy looked back quickly at his uncle.

"Yes, mon oncle," he answered, glancing at his father, and again he looked downcast.

His uncle called him to him, and took his hand.

"Well, and how are you getting on?" he said, wanting to talk to him, and not knowing what to say.

The boy, blushing and making no answer, cautiously drew his hand away. As soon as Stepan Arkadyevich let go his hand, he glanced doubtfully at his father, and, like a bird set free, he darted out of the room.

A year had passed since the last time Seriozha had seen his mother. Since then he had heard nothing more of her. And in the course of that year he had gone to school, and made friends among his schoolfellows. The dreams and

## Anna Karenina

memories of his mother, which had made him ill after seeing her, did not occupy his thoughts now. When they came back to him, he studiously drove them away, regarding them as shameful and girlish, below the dignity of a boy and a schoolboy. He knew that his father and mother were separated by some quarrel, he knew that he had to remain with his father, and he tried to get used to that idea.

He disliked seeing his uncle, so like his mother, for it called up those memories which he was ashamed of. He disliked it all the more as, from certain words he had caught as he waited at the study door, and still more from the faces of his father and uncle, he had guessed that they must have been talking of his mother. And to avoid condemning the father with whom he lived and on whom he was dependent, and, above all, to avoid giving way to sentimentality, which he considered so degrading, Seriozha tried not to look at his uncle, who had come to disturb his peace of mind, and not to think of what he recalled to him.

But when Stepan Arkadyevich, going out after him, saw him on the stairs, and, calling to him, asked him how he spent his playtime at school, Seriozha talked more freely to him away from his father's presence.

"We have a railway now," he said in answer to his uncle's question. "It's like this, you see: two sit on a bench they're the passengers; and one stands up straight on the bench. And all are harnessed to it by their arms or by their belts, and they run through all the rooms the doors are left open beforehand. Well, and it's pretty hard work being the conductor!"

"That's the one that stands?" Stepan Arkadyevich inquired, smiling.

"Yes, you want pluck for it, and cleverness too, especially when they stop all of a sudden, or someone falls down."

"Yes, that must be a serious matter," said Stepan Arkadyevich, watching with mournful interest the eager eyes, like his mother's; not childish now no longer fully innocent. And though he had promised Alexei Alexandrovich not to speak of Anna, he could not restrain himself.

"Do you remember your mother?" he asked suddenly.

"No, I don't," Seriozha said quickly. He blushed crimson, his eyes drooping. And his uncle could get nothing more out of him.

His Slavic tutor found his pupil on the staircase half an hour later, and for a long while he could not make out whether he was ill-tempered or crying.

"What is it? I expect you hurt yourself when you fell down?" said the tutor. "I told you it was a dangerous game. And we shall have to speak to the director."

"If I had hurt myself, nobody should have found it out, that's certain."

"Well, what is it, then?"

"Leave me alone! If I remember, or if I don't remember?... What business is it of his? Why should I remember? Leave me in peace!" he said, addressing not his tutor, but the whole world.

## XX.

Stepan Arkadyevich, as usual, did not waste his time in Peterburg. In Peterburg, besides business, his sister's

divorce, and his coveted appointment, he wanted, as he always did, to freshen himself up, as he said, after the mustiness of Moscow.

In spite of its cafes chantants and its omnibuses, Moscow was yet a stagnant bog. Stepan Arkadyevich always felt it. After living for some time in Moscow, especially in close relations with his family, he was conscious of a depression of spirits. After being a long time in Moscow without a change, he reached a point when he positively began to be worrying himself over his wife's ill-humor and reproaches, over his children's health and education, and the petty details of his official work; even the fact of being in debt worried him. But he had only to go and stay a little while in Petersburg, in the circle in which he moved there, where people lived really lived instead of vegetating as in Moscow, and all such ideas vanished and melted away at once, like wax before the fire.

A wife?... Only that day he had been talking to Prince Chechensky. Prince Chechensky had a wife and family, grown-up children in the Corps of Pages.... And he had another illegitimate family of children also. Though the first family was very fine too, Prince Chechensky felt happier in his second family; and he used to take his eldest son with him to his second family, and told Stepan Arkadyevich that he thought it good for his son, enlarging his ideas. What would have been said to that in Moscow?

Children?... In Petersburg children did not prevent their parents from enjoying life. The children were brought up in schools, and there was no trace of the wild idea that prevailed in Moscow, in Lvov's household, for instance, that all the luxuries of life were for the children, while the parents have nothing but work and anxiety. Here people understood that a man is in duty bound to live for himself, as every man of culture should live.

Official duties?... Official work here was not the stiff, hopeless drudgery that it was in Moscow. Here there was some interest in official life. A chance meeting, a service rendered, a happy phrase, a knack of facetious mimicry, and a man's career might be made in a trice. So it had been with Briantsev, whom Stepan Arkadyevich had met the previous day, and who was one of the highest functionaries in government now. There was some interest in official work like that.

The Petersburg attitude on pecuniary matters had an especially soothing effect on Stepan Arkadyevich. Bartniansky, who must spend at least fifty thousand to judge by the style he lived in, had made a remarkable comment the day before on that subject.

As they were talking before dinner, Stepan Arkadyevich said to Bartniansky:

"You're friendly, I fancy, with Mordvinsky; you might do me a favor: say a word to him, please, for me. There's an appointment I should like to get member of the agency..."

"Oh, I shan't remember all that, if you tell it to me.... But what possesses you to have to do with railways and Yids?... Take it as you will, it's a low business."

Stepan Arkadyevich did not say to Bartniansky that it was a "growing thing" Bartniansky would not have understood that.

"I want the money I've nothing to live on."

"You're living, aren't you?"

"Yes, but in debt."

"Are you, though? Heavily?" said Bartniansky sympathetically.

"Very heavily: twenty thousand."

Bartniansky broke into good-humored laughter.

"Oh, lucky fellow!" said he. "My debts mount up to a million and a half, and I've nothing, and still I can live, as you see!"

And Stepan Arkadyevich saw the correctness of this view not in words only but in actual fact. Zhivakhov owed three hundred thousand, and hadn't a copper to bless himself with, and he lived, and in style too! Count Krivtsov was considered a hopeless case by everyone, and yet he kept two mistresses. Petrovsky had run through five millions, and still lived in just the same style, and was even a manager in the financial department with a salary of twenty thousand. But besides this, Petersburg had physically an agreeable effect on Stepan Arkadyevich. It made him younger. In Moscow he sometimes found a gray hair in his head, dropped asleep after dinner, stretched, walked slowly upstairs, breathing heavily, was bored by the society of young women, and did not dance at balls. In Petersburg he always felt ten years younger.

His experience in Petersburg was exactly what had been described to him on the previous day by Prince Piotr Oblonsky, a man of sixty, who had just come back from abroad:

"We don't know how to live here," said Piotr Oblonsky. "I spent the summer in Baden, and you wouldn't believe it, I felt quite a young man. At a glimpse of a pretty woman, my thoughts... One dines and drinks a glass of wine, and feels strong and ready for anything. I came home to Russia had to see my wife, and, what's more, go to my country place; and there, you'd hardly believe it, in a fortnight I'd got into a dressing gown and given up dressing for dinner. Needn't say I had no thoughts left for pretty women. I became quite an old gentleman. There was nothing left for me but to think of my eternal salvation. I went off to Paris I was at once as right as could be."

Stepan Arkadyevich felt exactly the difference that Piotr Oblonsky described. In Moscow he degenerated so much that if he had had to be there for long together, he might in good earnest have come to considering his salvation; in Petersburg he felt himself a man of the world again.

Between Princess Betsy Tverskaia and Stepan Arkadyevich there had long existed rather curious relations. Stepan Arkadyevich always flirted with her in jest, and used to say to her, also in jest, the most unseemly things, knowing that nothing delighted her so much. The day after his conversation with Karenin, Stepan Arkadyevich went to see her, and felt so youthful that in this jesting flirtation and nonsense he recklessly went so far that he did not know how to extricate himself, as unluckily he was so far from being attracted by her that he thought her positively disagreeable. What made it hard to change the conversation was the fact that he was very attractive to her. So that he was considerably relieved at the arrival of Princess Miaghkaia, which cut short their *tete-a-tete*.

"Ah, so you're here!" said she when she saw him. "Well, and what news of your poor sister? You needn't look at me like that," she added. "Ever since they've all turned against her, all those who're a thousand times worse than she, I've thought she did a very fine thing. I can't forgive Vronsky for not letting me know when she was in Petersburg. I'd have gone to see her and gone about with her everywhere. Please give her my love. Come, tell me about her."

"Yes, her position is very difficult; she..." began Stepan Arkadyevich, in the simplicity of his heart accepting as sterling coin Princess Miaghkaia's words: "Tell me about her." Princess Miaghkaia interrupted him immediately, as she always did, and began talking herself.

"She's done what they all do, except me only the others hide it. But she wouldn't be deceitful, and she did a fine thing. And she did better still in throwing up that crazy brother-in-law of yours. You must excuse me. Everybody used to say he was so clever, so very clever; I was the only one that said he was a fool. Now that he's so thick with

## Anna Karenina

Lidia Ivanovna and Landau, they all say he's crazy, and I should prefer not to agree with everybody, but this time I can't help it."

"Oh, do please explain," said Stepan Arkadyevich; "what does it mean? Yesterday I was seeing him on my sister's behalf, and I asked him to give me a final answer. He gave me no answer, and said he would think it over. But this morning, instead of an answer, I received an invitation from Countess Lidia Ivanovna for this evening."

"Ah, so that's it, that's it!" said Princess Miaghkaia gleefully, "they're going to ask Landau what he's to say."

"Ask Landau? What for? Who or what's Landau?"

"What! you don't know Jules Landau, le fameux Jules Landau, le clairvoyant? He's crazy too, but on him your sister's fate depends. See what comes of living in the provinces you know nothing about anything. Landau, do you see, was a commis in a shop in Paris, and he went to a doctor's; and in the doctor's waiting room he fell asleep, and in his sleep he began giving advice to all the patients. And wonderful advice it was! Then the wife of Iury Meledinsky you know, the invalid? heard of this Landau, and had him to see her husband. And he cures her husband, though I can't say that I see he did him much good, for he's just as feeble a creature as ever he was, but they believed in him, and took him along with them, and brought him to Russia. Here there's been a general rush to him, and he's begun doctoring everyone. He cured Countess Bezzubova, and she took such a fancy to him that she adopted him."

"Adopted him?"

"Yes, as her son. He's not Landau any more now, but Count Bezzubov. That's neither here nor there, though; but Lidia I'm very fond of her, but she has a screw loose somewhere has lost her heart to this Landau now, and nothing is settled now in her house or Alexei Alexandrovich's without him, and so your sister's fate is now in the hands of Landau, alias Count Bezzubov."

## XXI.

After a capital dinner and a great deal of cognac drunk at Bartniansky's, Stepan Arkadyevich, only a little later than the appointed time, went in to Countess Lidia Ivanovna's.

"Who else is with the countess? A Frenchman?" Stepan Arkadyevich asked the hall porter, as he glanced at the familiar overcoat of Alexei Alexandrovich and a queer, rather naive-looking overcoat with clasps.

"Alexei Alexandrovich Karenin and Count Bezzubov," the porter answered austere.

"Princess Miaghkaia guessed right," thought Stepan Arkadyevich, as he went upstairs. "Curious! It would be quite as well, though, to get on friendly terms with her. She has immense influence. If she would say a word to Pomorsky, the thing would be a certainty."

It was still quite light out-of-doors, but in Countess Lidia Ivanovna's little drawing room the blinds were drawn and the lamps lighted.

At a round table under a lamp sat the Countess and Alexei Alexandrovich, talking softly. A short, thinnish man, very pale and handsome, with feminine hips and knock-kneed legs, with fine brilliant eyes and long hair lying on the collar of his coat, was standing at the other end of the room gazing at the portraits on the wall. After greeting the lady of the house and Alexei Alexandrovich, Stepan Arkadyevich could not resist glancing once more at the unknown man.



## Anna Karenina

"Monsieur Landau!" the Countess addressed him with a suavity and circumspection that impressed Oblonsky. And she introduced them.

Landau looked round hurriedly, came up, and, smiling, laid his moist, lifeless hand in Stepan Arkadyevich's outstretched hand and immediately walked away, and fell to gazing at the portraits again. The Countess and Alexei Alexandrovich looked at each other significantly.

"I am very glad to see you, particularly today," said Countess Lidia Ivanovna, pointing out to Stepan Arkadyevich a seat beside Karenin.

"I introduced you to him as Landau," she said in a soft voice, glancing at the Frenchman and again immediately after at Alexei Alexandrovich, "but he is really Count Bezzubov, as you're probably aware. Only he does not like the title."

"Yes, I heard so," answered Stepan Arkadyevich; "they say he completely cured Countess Bezzubova."

"She was here today, poor thing!" the Countess said, turning to Alexei Alexandrovich. "This separation is awful for her. It's such a blow to her!"

"And he positively is going?" queried Alexei Alexandrovich.

"Yes, he's going to Paris. He heard a voice yesterday," said Countess Lidia Ivanovna, looking at Stepan Arkadyevich.

"Ah, a voice!" repeated Oblonsky, feeling that he must be as circumspect as he possibly could in this society, where something peculiar was happening, or was about to happen, to which he had not the key.

A moment's silence followed, after which Countess Lidia Ivanovna, as though approaching the main topic of conversation, said with a fine smile to Oblonsky:

"I've known you for a long while, and am very glad to make a closer acquaintance with you. Les amis de nos amis sont nos amis. But to be a true friend, one must enter into the spiritual state of one's friend, and I fear that you are not doing so in the case of Alexei Alexandrovich. You understand what I mean?" she said, lifting her fine pensive eyes.

"In part, Countess, I understand the position of Alexei Alexandrovich..." said Oblonsky. Having no clear idea what they were talking about, he wanted to confine himself to generalities.

"The change is not in his external position," Countess Lidia Ivanovna said sternly, following with eyes of love the figure of Alexei Alexandrovich as he got up and crossed over to Landau; "his heart is changed, a new heart has been vouchsafed him, and I fear you don't fully apprehend the change that has taken place in him."

"Oh, well, in general outlines I can conceive the change. We have always been friendly, and now..." said Stepan Arkadyevich, responding with a sympathetic glance to the expression of the Countess, and mentally balancing the question with which of the two ministers she was more intimate, so as to know which to have her speak to.

"The change that has taken place in him cannot lessen his love for his neighbors; on the contrary, that change can only intensify love in his heart. But I am afraid you do not understand me. Won't you have some tea?" she said, with her eyes indicating the footman, who was handing round tea on a tray.

"Not quite, Countess. Of course, his misfortune..."

## Anna Karenina

"Yes, a misfortune which has proved the highest happiness, when his heart was made new, was filled to the full with it," she said, gazing with eyes full of love at Stepan Arkadyevich.

"I do believe I might ask her to speak to both of them," thought Stepan Arkadyevich.

"Oh, of course, Countess," he said; "but I imagine such changes are a matter so private that no one, even the most intimate friend, would care to speak of them."

"On the contrary! We ought to speak freely and help one another."

"Yes, undoubtedly so, but there is such a difference of convictions, and besides..." said Oblonsky with a soft smile.

"There can be no difference where it is a question of holy truth."

"Oh, no, of course; but..." and Stepan Arkadyevich paused in confusion. He understood at last that they were talking of religion.

"I fancy he will go into a trance immediately," said Alexei Alexandrovich in a whisper full of meaning, going up to Lidia Ivanovna.

Stepan Arkadyevich looked round. Landau was sitting at the window, leaning on his elbow and the back of his chair, his head drooping. Noticing that all eyes were turned on him, he raised his head and smiled a smile of childlike artlessness.

"Don't take any notice," said Lidia Ivanovna, and she lightly moved a chair up for Alexei Alexandrovich. "I have observed..." she was beginning, when a footman came into the room with a letter. Lidia Ivanovna rapidly ran her eyes over the note, and, excusing herself, wrote an answer with extraordinary rapidity, handed it to the man, and came back to the table. "I have observed," she went on, "that Moscow people, especially the men, are more than all others indifferent to religion."

"Oh, no, Countess, I thought Moscow people had the reputation of being the firmest in the faith," answered Stepan Arkadyevich.

"But as far as I can make out, you are unfortunately one of the indifferent ones," said Alexei Alexandrovich, turning to him with a weary smile.

"How anyone can be indifferent!" said Lidia Ivanovna.

"I am not so much indifferent on that subject as I am waiting in suspense," said Stepan Arkadyevich, with his most deprecating smile. "I hardly think that the time for such questions has come yet for me."

Alexei Alexandrovich and Lidia Ivanovna looked at each other.

"We can never tell whether the time has come for us or not," said Alexei Alexandrovich sternly. "We ought not to think whether we are ready or not ready. God's grace is not guided by human considerations: sometimes it comes not to those who strive for it, and comes to those who are unprepared, like Saul."

"No, I believe it won't be just yet," said Lidia Ivanovna, who had been meanwhile watching the movements of the Frenchman. Landau got up and came to them.

"Do you allow me to listen?" he asked.

"Oh, yes; I did not want to disturb you," said Lidia Ivanovna, gazing tenderly at him; "sit here with us."

"One has only not to close one's eyes to shut out the light," Alexei Alexandrovich went on.

"Ah, if you knew the happiness we know, feeling His presence ever in our hearts!" said Countess Lidia Ivanovna with a rapturous smile.

"But a man may feel himself inapt sometimes to rise to that height," said Stepan Arkadyevich, conscious of hypocrisy in admitting this religious height, but at the same time unable to bring himself to acknowledge his freethinking views before a person who, by a single word to Pomorsky, might procure him the coveted appointment.

"That is, you mean that sin keeps him back?" said Lidia Ivanovna. "But that is a false idea. There is no sin for believers, their sin has been atoned for. Pardon," she added, looking at the footman, who came in again with another letter. She read it and gave a verbal answer: "Tomorrow at the Grand Duchess's, say. For the believer sin is not," she went on.

"Yes, but faith without works is dead," said Stepan Arkadyevich, recalling the phrase from the catechism, and only by his smile clinging to his independence.

"There you have it from the epistle of St. James," said Alexei Alexandrovich, addressing Lidia Ivanovna, with a certain reproachfulness in his tone. It was unmistakably a subject they had discussed more than once before. "What harm has been done by the false interpretation of that passage! Nothing holds men back from belief like that misinterpretation. 'I have not works, so I cannot believe,' though all the while that's not what is said, but the very opposite."

"Striving for God, saving the soul by fasting," said Countess Lidia Ivanovna, with disgusted contempt, "those are the crude ideas of our monks.... Yet that is nowhere said. It is far simpler and easier," she added, looking at Oblonsky with the same encouraging smile with which at Court she encouraged youthful maids of honor, disconcerted by the new surroundings of the Court.

"We are saved by Christ who suffered for us. We are saved by faith," Alexei Alexandrovich chimed in, with a glance of approval at her words.

"Vous comprenez l'anglais?" asked Lidia Ivanovna, and receiving a reply in the affirmative, she got up and began looking through a shelf of books.

"I want to read him *Safe and Happy*, or *Under the Wing*," she said, looking inquiringly at Karenin. And finding the book, and sitting down again in her place, she opened it. "It's very short. In it is described the way by which faith can be reached, and the happiness, above all earthly bliss, with which it fills the soul. The believer cannot be unhappy because he is not alone. But you will see." She was just settling herself to read when the footman came in again. "Madame Borozdina? Tell her tomorrow, at two o'clock. Yes," she said, marking the place in the book by inserting a finger, and gazing before her with her fine pensive eyes, "that is how true faith acts. You know Marie Sanina? You know about her trouble? She lost her only child. She was in despair. And what happened? She found this comforter, and she thanks God now for the death of her child. Such is the happiness faith brings!"

"Oh, yes, that is most..." said Stepan Arkadyevich, glad they were going to read, and let him have a chance to collect his faculties. "No, I see I'd better not ask her about anything today," he thought. "If only I can get out of this without putting my foot in it!"

"It will be dull for you," said Countess Lidia Ivanovna, addressing Landau; "you don't know English but it's short."

"Oh, I shall understand," said Landau, with the same smile, and he closed his eyes.

Alexei Alexandrovich and Lidia Ivanovna exchanged meaning glances, and the reading began.

## XXII.

Stepan Arkadyevich felt completely nonplused by the strange talk which he was hearing for the first time. The complexity of Petersburg, as a rule, had a stimulating effect on him, rousing him out of his Moscow stagnation. But he liked these complications, and understood them only in the circles he knew and was at home in. In these unfamiliar surroundings he was puzzled and disconcerted, and could not get his bearings. As he listened to Countess Lidia Ivanovna, aware of the beautiful, naive or perhaps knavish, he could not decide which eyes of Landau fixed upon him, Stepan Arkadyevich began to be conscious of a peculiar heaviness in his head.

The most incongruous ideas were in confusion in his head. "Marie Sanina is glad her child's dead.... How good a smoke would be now!... To be saved, one need only believe, and the monks don't know how the thing's to be done, but Countess Lidia Ivanovna does know.... And why is my head so heavy? Is it the cognac, or the fact of all this being so very queer? Anyway, I fancy I've done nothing unseemly so far. But, anyway, it won't do to ask her now. They say they make one pray. I only hope they won't make me! That'll be too imbecile. And what stuff it is she's reading! But she has a good accent. Landau Bezzubov what's he Bezzubov for?" All at once Stepan Arkadyevich became aware that his lower jaw was uncontrollably forming a yawn. He pulled his whiskers to cover the yawn, and shook himself together. But soon after he became aware that he was dropping asleep and on the very point of snoring. He recovered himself at the very moment when the voice of Countess Lidia Ivanovna was saying "he's asleep."

Stepan Arkadyevich started with dismay, feeling guilty and caught. But he was reassured at once by seeing that the words "he's asleep" asleep referred not to him, but to Landau. The Frenchman had fallen asleep as well as Stepan Arkadyevich. But Stepan Arkadyevich's being asleep would have offended them, as he thought (though even this, he thought, might not be so, as everything seemed so queer), while Landau's being asleep delighted them extremely, especially Countess Lidia Ivanovna.

"Mon ami," said Lidia Ivanovna, carefully holding the folds of her silk gown so as not to rustle, and in her excitement calling Karenin not Alexei Alexandrovich, but mon ami, "donnez-lui la main. Vous voyez? Sh!" she hissed at the footman as he came in again. "Not at home!"

The Frenchman was asleep, or pretending to be asleep, with his head on the back of his chair, and his moist hand, as it lay on his knee, made faint movements, as though trying to catch something. Alexei Alexandrovich got up, tried to move carefully, but stumbled against the table, drew up, and laid his hand in the Frenchman's hand. Stepan Arkadyevich got up too, and opening his eyes wide, trying to wake himself up if he was asleep, he looked first at one and then at the other. It was all real. Stepan Arkadyevich felt that his head was getting worse and worse.

"Que la personne qui est arrivee la derniere, celle qui demande, qu'elle sorte! Qu'elle sorte!" articulated the Frenchman, without opening his eyes.

"Vous m'excuserez, mais vous voyez... Revenez vers dix heures, encore mieux demain."

"Qu'elle sorte!" repeated the Frenchman impatiently.

## Anna Karenina

"C'est moi, n'est-ce pas?" And receiving an answer in the affirmative, Stepan Arkadyevich, forgetting the favor he had meant to ask of Lidia Ivanovna, and forgetting his sister's affairs, caring for nothing, but filled with the sole desire to escape as soon as possible, went out on tiptoe and ran out into the street as though from a plague-stricken house. For a long while he chatted and joked with his driver, trying to recover his spirits.

At the French theater where he arrived for the last act, and afterward at the Tatar restaurant after his champagne, Stepan Arkadyevich felt a little refreshed in the atmosphere he was used to. But still he felt quite unlike himself all that evening.

On getting home to Piotr Oblonsky's, where he was staying, Stepan Arkadyevich found a note from Betsy. She wrote to him that she was very anxious to finish their interrupted conversation, and begged him to come the next day. He had scarcely read this note, and frowned at its contents, when he heard below the ponderous tramp of the servants carrying something heavy.

Stepan Arkadyevich went out to look. It was the rejuvenated Piotr Oblonsky. He was so drunk that he could not walk upstairs; but he told them to set him on his legs when he saw Stepan Arkadyevich, and, clinging to him, walked with him into his room, and there began telling him how he had spent the evening, and fell asleep doing so.

Stepan Arkadyevich was in very low spirits, which happened rarely with him, and for a long while he could not go to sleep. Everything he could recall to his mind, everything was disgusting; but, most disgusting of all, as if it were something shameful, was the memory of the evening he had spent at Countess Lidia Ivanovna's.

Next day he received from Alexei Alexandrovich a final answer, refusing to grant Anna's divorce, and he understood that his decision was based on what the Frenchman had said in his real or pretended trance.

### XXIII.

In order to carry through any undertaking in family life, there must necessarily be either complete dissension between the husband and wife, or loving agreement. When the relations of a couple are vacillating and neither one thing nor the other, no sort of enterprise can be undertaken.

Many families remain for years in the same place, though both husband and wife are sick of it, simply because there is neither complete dissension nor agreement between them.

Both Vronsky and Anna felt life in Moscow insupportable in the heat and dust, when the spring sunshine was followed by the glare of summer, and all the trees in the boulevards had long since been in full leaf, and the leaves were covered with dust. But they did not go back to Vozdvizhenskoe, as they had arranged to do long before; they went staying on in Moscow, though they both loathed it, because of late there had been no agreement between them.

The irritability that kept them apart had no external cause, and all efforts to come to an understanding intensified it, instead of removing it. It was an inner irritation, grounded in her mind on the conviction that his love had grown less; in his, on regret that he had put himself for her sake in a difficult position, which she, instead of lightening, made still more difficult. Neither of them gave full utterance to his or her sense of grievance, but they considered each other in the wrong, and tried on every pretext to prove this to one another.

In her eyes the whole of him, with all his habits, ideas, desires, with all his spiritual and physical temperament, was one thing—love for women, and that love, as she felt, ought to be entirely concentrated on her alone. That love was less; consequently, as she reasoned, he must have transferred part of his love to other women or to

another woman and she was jealous. She was jealous not of any particular woman but of the decrease of his love. Not having found an object for her jealousy, she was on the lookout for it. At the slightest hint she transferred her jealousy from one object to another. At one time she was jealous of those low women with whom he might so easily renew his old bachelor ties; then she was jealous of the society women he might meet; then she was jealous of the imaginary girl whom he might want to marry, for whose sake he would break with her. And this last form of jealousy tortured her most of all, especially as he had unwarily told her, in a moment of frankness, that his mother knew him so little that she had had audacity to try to persuade him to marry the young Princess Sorokina.

And being jealous of him, Anna was indignant against him and found grounds for indignation in everything. For everything that was difficult in her position she blamed him. The agonizing condition of suspense she had passed at Moscow, the tardiness and indecision of Alexei Alexandrovich, her solitude she put it all down to him. If he had loved her he would have seen all the bitterness of her position, and would have rescued her from it. For her being in Moscow and not in the country, he was to blame too. He could not live buried in the country as she would have liked to do. He must have society, and he had put her in this awful position, the bitterness of which he would not see. And again, it was his fault that she was forever separated from her son.

Even the rare moments of tenderness that came from time to time did not soothe her; in his tenderness now she saw a shade of complacency, of self-confidence, which had not been of old and which exasperated her.

It was already dusk. Anna was alone, and waiting for him to come back from a bachelor dinner. She walked up and down in his study (the room where the noise from the street was least heard), and thought over every detail of their yesterday's quarrel. Going back from the well-remembered, offensive words of the quarrel to what had been the ground of it, she arrived at last at its origin. For a long while she could hardly believe that their dissension had arisen from a conversation so inoffensive, of so little moment to either. But so it actually had been. It all arose from his laughing at the girls' high schools, declaring they were useless, while she defended them. He had spoken slightly of women's education in general, and had said that Hannah, Anna's English protegee, had not the slightest need to know anything of physics.

This had irritated Anna. She saw in this a contemptuous reference to her occupations. And she had bethought her of a phrase to pay him back for the pain he had inflicted upon her, and had uttered it.

"I don't expect you to understand me, my feelings, as anyone who loved me might, but simple delicacy I did expect," she had said.

And he had actually flushed with vexation, and had said something unpleasant. She could not recall her answer, but at that point, with an unmistakable desire to wound her too, he had said:

"I feel no interest in your infatuation over this girl, that's true, because I see it's unnatural."

The cruelty with which he shattered the world she had built up for herself so laboriously to enable her to endure her hard life, the injustice with which he had accused her of affectation, of artificiality, aroused her.

"I am very sorry that nothing but the coarse and material is comprehensible and natural to you," she had said, and walked out of the room.

When he had come in to her yesterday evening, they had not referred to the quarrel; both felt that the quarrel had been smoothed over, but was not at an end.

Today he had not been at home all day, and she felt so lonely and wretched in being on bad terms with him that she wanted to forget it all, to forgive him, and be reconciled with him; she wanted to throw the blame on herself

and to justify him.

"I am myself to blame. I'm irritable, I'm insanely jealous. I will make it up with him, and we'll go away to the country; there I shall be more at peace," she said to herself.

"Unnatural!" She suddenly recalled the word that had stung her most of all, not so much the word itself as the intent to wound her with which it was said. "I know what he meant; he meant unnatural, not loving my own daughter to love another person's child. What does he know of love for children, of my love for Seriozha, whom I've sacrificed for him? But that wish to wound me! No, he loves another woman, it can't be otherwise."

And perceiving that, while trying to regain her peace of mind, she had gone round the same circle that she had been round so often before, and had come back to her former state of exasperation, she was horrified at herself. "Can it be impossible? Can I really take the blame on myself?" she said to herself, and began again from the beginning. "He's truthful, he's honest, he loves me. I love him, and in a few days the divorce will come. What more do I want? I want peace of mind and trust, and I will take the blame on myself. Yes, now when he comes in, I will tell him I was wrong, though I was not wrong, and we will go away."

And to escape thinking any more, and being overcome by irritability, she rang and ordered the boxes to be brought up for packing their things for the country.

At ten o'clock Vronsky came in.

## XXIV.

"Well, was it amusing?" she asked, coming out to meet him with a penitent and meek expression.

"Just as usual," he answered, seeing at a glance that she was in one of her good moods. He was used by now to these transitions, and he was particularly glad to see it today, as he was in a specially good humor himself.

"What do I see? Come, that's good!" he said, pointing to the boxes in the passage.

"Yes, we must go. I went out for a drive, and it was so fine I longed to be in the country. There's nothing to keep you, is there?"

"It's the one thing I desire. I'll be back directly, and we'll talk it over; I only want to change my coat. Order some tea."

And he went into his room.

There was something mortifying in the way he had said "Come, that's good," as one says to a child when it leaves off being naughty, and still more mortifying was the contrast between her penitent and his self-confident tone; and for one instant she felt the lust of strife rising up in her again, but making an effort she conquered it, and met Vronsky as good-humoredly as before.

When he came in she told him, partly repeating phrases she had prepared beforehand, how she had spent the day, and her plans for going away.

"You know, it came to me almost like an inspiration," she said. "Why wait here for the divorce? Won't it be just the same in the country? I can't wait any longer! I don't want to go on hoping, I don't want to hear anything about the divorce. I have made up my mind it shall not have any more influence on my life. Do you agree?"

## Anna Karenina

"Oh, yes!" he said, glancing uneasily at her excited face.

"What did you do? Who was there?" she said, after a pause.

Vronsky mentioned the names of the guests. "The dinner was first-rate, and the boat race, and it was all pleasant enough, but in Moscow they can never do anything without something ridiculous. A lady of a sort appeared on the scene, teacher of swimming to the Queen of Sweden, and gave us an exhibition of her skill."

"How? Did she swim?" asked Anna, frowning.

"In an absurd red costume de natation; she was old and hideous too. So when shall we go?"

"What an absurd fancy! Why, did she swim in some special way, then?" said Anna, not answering.

"There was absolutely nothing in it. That's just what I say it was awfully stupid. Well, then, when do you think of going?"

Anna shook her head as though trying to drive away some unpleasant idea.

"When? Why, the sooner the better! By tomorrow we shan't be ready. The day after tomorrow."

"Yes.... Oh, no, wait a minute! The day after tomorrow's Sunday I have to be at maman's," said Vronsky, embarrassed, because as soon as he uttered his mother's name he was aware of her intent, suspicious eyes. His embarrassment confirmed her suspicion. She flushed hotly and drew away from him. It was now not the Queen of Sweden's swimming mistress who filled Anna's imagination, but the young Princess Sorokina. She was staying in a village near Moscow with Countess Vronsky.

"Can't you go tomorrow?" she said.

"Well, no! The deeds and the money for the business I'm going there for I can't get by tomorrow," he answered.

"If so, we won't go at all."

"But why so?"

"I shall not go later. Monday or never!"

"What for?" said Vronsky, as though in amazement. "Why, there's no meaning in it!"

"There's no meaning in it to you, because you care nothing for me. You don't care to understand my life. The one thing that I cared for here was Hannah. You say it's affectation. Why, you said yesterday that I don't love my daughter, that I love this English girl, that it's unnatural. I should like to know what life there is for me that could be natural!"

For an instant she had a clear vision of what she was doing, and was horrified at how she had fallen away from her resolution. But even though she knew it was her own ruin, she could not restrain herself, could not keep herself from proving to him that he was wrong, could not give way to him.

"I never said that; I said I did not sympathize with this sudden passion."

"How is it, though you boast of your straightforwardness, you don't tell the truth?"



## Anna Karenina

"I never boast, and I never tell lies," he said slowly, restraining his rising anger. "It's a great pity if you can't respect..."

"Respect was invented to cover the empty place where love should be.... And if you don't love me any more, it would be better and more honest to say so."

"No, this is becoming unbearable!" cried Vronsky, getting up from his chair; and stopping short, facing her, he said speaking deliberately:

"What do you try my patience for?" looking as though he might have said much more, but was restraining himself. "It has limits."

"What do you mean by that?" she cried, looking with terror at the undisguised hatred in his whole face, and especially in his cruel, sinister eyes.

"I mean to say..." he was beginning, but he checked himself. "I must ask what it is you want of me?"

"What I can want? All I can want is that you should not desert me, as you think of doing," she said, understanding all he had not uttered. "But that I don't want; that's secondary. I want love, and there is none. So then, all is at an end."

She turned toward the door.

"Stop! sto—op!" said Vronsky, with no change in the gloomy lines of his brows, though he held her by the hand. "What is it all about? I said that we must put off going for three days, and on that you told me I was lying, that I was not an honorable man."

"Yes, and I repeat that the man who reproaches me with having sacrificed everything for me," she said, recalling the words of a still earlier quarrel, "is worse than a dishonorable man—he's a heartless man."

"Oh, there are limits to endurance!" he cried, and hastily let go her hand.

"He hates me, that's clear," she thought, and in silence, without looking round, she walked with faltering steps out of the room. "He loves another woman, that's even clearer," she said to herself as she went into her own room. "I want love, and there is none. So, then, all is at an end," she repeated the words she had said, "and it must be put to an end."

"But how?" she asked herself, and she sat down in a low chair before the looking glass.

Thoughts of where she would go now, whether to the aunt who had brought her up, to Dolly, or simply alone, abroad, and of what he was doing now alone in his study; whether this was the final quarrel, or whether reconciliation were still possible; and of what all her old friends at Peterburg would say of her now; and of how Alexei Alexandrovich would look at it, and many other ideas of what would happen now after the rupture, came into her head; but she did not give herself up to them with all her heart. At the bottom of her heart was some obscure idea that alone interested her, but she could not get clear sight of it. Thinking once more of Alexei Alexandrovich, she recalled the time of her illness after her confinement, and the feeling which never left her at that time. "Why didn't I die?" she recalled the words and the feeling of that time. And all at once she knew what was in her soul. Yes, it was that idea which alone solved all. "Yes, to die!..."

"And the shame and disgrace of Alexei Alexandrovich and of Seriozha, and my awful shame—death will be the salvation of everything. To die! And he will feel remorse; will be sorry; will love me; he will suffer on my

## Anna Karenina

account." With a fixed smile of commiseration for herself she sat down in the armchair, taking off and putting on the rings on her left hand, vividly picturing from different sides his feelings after her death.

Approaching footsteps his steps distracted her attention. As though absorbed in the arrangement of her rings, she did not even turn to him.

He went up to her, and taking her by the hand, said softly:

"Anna, we'll go the day after tomorrow, if you like. I agree to everything."

She did not speak.

"What is it?" he urged.

"You know," she said, and at the same instant, unable to restrain herself any longer, she burst into sobs.

"Cast me off do!" she articulated between her sobs. "I'll go away tomorrow.... I'll do more than that. What am I? A depraved woman! A stone round your neck. I don't want to make you wretched; I don't want to! I'll set you free. You don't love me; you love someone else!"

Vronsky besought her to be calm, and declared that there was no trace of foundation for her jealousy; that he had never ceased, and never would cease, to love her; that he loved her more than ever.

"Anna, why distress yourself and me so?" he said to her, kissing her hands. There was tenderness now in his face, and she fancied she caught the sound of tears in his voice, and she felt them wet on her hand. And instantly Anna's despairing jealousy changed to a despairing passion of tenderness. She put her arms round him, and covered with kisses his head, his neck, his hands.

## XXV.

Feeling that the reconciliation was complete, Anna set eagerly to work in the morning preparing for their departure. Though it was not settled whether they should go on Monday or Tuesday, as they had each given way to the other, Anna packed busily, feeling absolutely indifferent whether they went a day earlier or later. She was standing in her room over an open box, taking things out of it, when he came in to see her earlier than usual, dressed to go out.

"I'm going off at once to see maman; she can send me the money by Iegorov. And I shall be ready to go tomorrow," he said.

Though she was in such a good mood, the mention of his visit to his mother's gave her a pang.

"No, I shan't be ready by then myself," she said; and at once reflected, "so then it was possible to arrange to do as I wished." "No, do as you meant to do. Go into the dining room, I'm coming directly. It's only to turn out those things that aren't wanted," she said, putting something more on the heap of frippery that lay in Annushka's arms.

Vronsky was eating his beefsteak when she came into the dining room.

"You wouldn't believe how distasteful these rooms have become to me," she said, sitting down beside him to her coffee. "There's nothing more awful than these chambres garnies. There's no individuality in them, no soul. These clocks, and curtains, and, worst of all, the wallpapers they're a nightmare. I think of Vozdvizhenskoe as the

promised land. You're not sending the horses off yet?"

"No, they will come after us. Where are you going to?"

"I wanted to go to Wilson's to take some dresses to her. So it's really to be tomorrow?" she said in a cheerful voice; but suddenly her face changed.

Vronsky's valet came in to ask him to sign a receipt for a telegram from Peterburg. There was nothing out of the way in Vronsky's getting a telegram, but he said, as though anxious to conceal something from her, that the receipt was in his study, and he turned hurriedly to her.

"By tomorrow, without fail, I will finish it all."

"From whom is the telegram?" she asked, not hearing him.

"From Stiva," he answered reluctantly.

"Why didn't you show it to me? What secret can there be between Stiva and me?"

Vronsky called the valet back, and told him to bring the telegram.

"I didn't want to show it to you, because Stiva has such a passion for telegraphing: why telegraph when nothing is settled?"

"About the divorce?"

"Yes; but he says he has not been able to come at anything yet. He has promised a decisive answer in a day or two. But here it is; read it."

With trembling hands Anna took the telegram, and read what Vronsky had told her. At the end was added: "little hope; but I will do everything possible and impossible."

"I said yesterday that it's absolutely nothing to me when I get a divorce, or whether I never get it," she said, flushing crimson. "There was not the slightest necessity to hide it from me." "So he may hide, and does hide, his correspondence with women from me," she thought.

"Iashvin meant to come this morning with Voitov," said Vronsky; "I believe he's won from Pievtsov all and more than he can pay about sixty thousand."

"No," she said, further irritated by his so obviously showing by this change of subject that he knew she was irritated, "why did you suppose that this news would affect me so, that you must even try to hide it? I said I don't want to consider it, and I should have liked you to care as little about it as I do."

"I care about it because I like definiteness," he said.

"Definiteness is not in the form, but in love," she said, more and more irritated, not by his words, but by the tone of cool composure in which he spoke. "What do you want it for?"

"My God! Love again," he thought, frowning.

"Oh, you know what for; for your sake and your children's in the future."

"There won't be any children in the future."

"That's a great pity," he said.

"You want it for the children's sake, but you don't think of me?" she said, quite forgetting, or not having heard that he had said, "For your sake and the children's."

The question of the possibility of having children had long been a subject of dispute and irritation to her. His desire to have children she interpreted as a proof he did not prize her beauty.

"Oh, I said: for your sake. Above all for your sake," he repeated, frowning as though in pain, "because I am certain that the greater part of your irritability comes from the indefiniteness of the position."

"Yes, now he has laid aside all pretense, and all his cold hatred for me is apparent," she thought, not hearing his words, but watching with terror the cold, cruel judge who, mocking her, looked out of his eyes.

"The cause isn't that," she said, "and, indeed, I don't see how the cause of my irritability, as you call it, can be in my being completely in your power. What indefiniteness is there in the position? On the contrary."

"I am very sorry that you don't care to understand," he interrupted, obstinately anxious to give utterance to his thought. "The indefiniteness consists in your imagining that I am free."

"On that score you can set your mind quite at rest," she said, and turning away from him, she began drinking her coffee.

She lifted her cup, with her little finger held apart, and put it to her lips. After drinking a few sips she glanced at him, and by his expression she saw clearly that he was repelled by her hand, and her gesture, and the sound made by her lips.

"I don't care in the least what your mother thinks, and what match she wants to make for you," she said, putting the cup down with a shaking hand.

"But we are not talking about that."

"Yes, that's just what we are talking about. And let me tell you that a heartless woman, whether she's old or not old, your mother or anyone else, is of no consequence to me, and I would not consent to know her."

"Anna, I beg you not to speak disrespectfully of my mother."

"A woman whose heart does not tell her where her son's happiness and honor lie has no heart."

"I repeat my request that you will not speak disrespectfully of my mother, whom I respect," he said, raising his voice and looking sternly at her.

She did not answer. Looking intently at him, at his face, his hands, she recalled all the details of their reconciliation the previous day, and his passionate caresses. "There, just such caresses he has lavished, and will lavish, and longs to lavish on other women!" she thought.

"You don't love your mother. That's all talk, and talk, and talk!" she said, looking at him with hatred in her eyes.

"Even if so, you must..."

## Anna Karenina

"Must decide, and I have decided," she said, and she would have gone away, but at that moment Iashvin walked into the room. Anna greeted him and remained.

Why, when there was a tempest in her soul, and she felt she was standing at a turning point in her life, which might have fearful consequences why, at that minute, she had to keep up appearances before an outsider, who sooner or later must know it all she did not know. But at once quelling the storm within her, she sat down and began talking to their guest.

"Well, how are you getting on? Has your debt been paid you?" she asked Iashvin.

"Oh, pretty fair; I fancy I shan't get it all, while I ought to go on Wednesday. And when are you off?" said Iashvin, looking at Vronsky, and unmistakably surmising a quarrel.

"The day after tomorrow, I think," said Vronsky.

"You've been intending to go so long, though."

"But now it's quite decided," said Anna, looking Vronsky straight in the face with a look which told him not to dream of the possibility of reconciliation.

"Don't you feel sorry for that unlucky Pievtsov?" she went on, talking to Iashvin.

"I've never asked myself the question, Anna Arkadyevna, whether I'm sorry for him or not. You see, all my fortune's here" he touched his breast pocket "and just now I'm a wealthy man. But today I'm going to the club, and I may come out a beggar. You see, whoever sits down to play with me wants to leave me without a shirt to my back, and I wish the same to him. And so we fight it out, and that's the pleasure of it."

"Well, but suppose you were married," said Anna, "how would it be for your wife?"

Iashvin laughed.

"That's to all appearance why I'm not married, and never mean to be."

"And Helsingfors?" said Vronsky, entering into the conversation and glancing at Anna's smiling face. Meeting his eyes, Anna's face instantly took a coldly severe expression as though she were saying to him: "It's not forgotten. It's all the same."

"Were you really in love?" she said to Iashvin.

"Oh heavens! Ever so many times! But, you see, some men can play, but only so that they can always lay down their cards when the hour of a rendez-vous comes, while I can take up love, but only so as not to be late for my cards in the evening. That's how I manage things."

"No, I didn't mean that, but the real thing." She would have said Helsingfors, but would not repeat the word used by Vronsky.

Voitov, who was buying the horse, came in. Anna got up and went out of the room.

Before leaving the house, Vronsky went into her room. She would have pretended to be looking for something on the table, but ashamed of making a pretense, she looked straight in his face with cold eyes.

"What do you want?" she asked in French.

"To get the guarantee for Gambetta I've sold him," he said, in a tone which said more clearly than words, "I've no time for discussing things, and it would lead to nothing."

"I'm not to blame in any way," he thought. "If she will punish herself, tant pis pour elle." But as he was going he fancied that she said something, and his heart suddenly ached with pity for her.

"Eh, Anna?" he queried.

"I said nothing," she answered just as coldly and calmly.

"Oh, nothing, tant pis then," he thought, feeling cold again, and he turned and went out. As he was going out he caught a glimpse in the looking glass of her face, white, with quivering lips. He even wanted to stop and to say some comforting word to her, but his legs carried him out of the room before he could think what to say. The whole of that day he spent away from home, and when he came in late in the evening the maid told him that Anna Arkadyevna had a headache and begged him not to go in to her.

## XXVI.

Never before had a day been passed in quarrel. Today was the first time. And this was not a quarrel. It was the open acknowledgment of complete coldness. Was it possible to glance at her as he had glanced when he came into the room for the guarantee? to look at her, see her heart was breaking with despair, and go out without a word with that face of callous composure? He was not merely cold to her, he hated her because he loved another woman that was clear.

And remembering all the cruel words he had said, Anna supplied, too, the words that he had unmistakably wished to say and could have said to her, and she grew more and more exasperated.

"I won't prevent you," he might say. "You can go where you like. You were unwilling to be divorced from your husband, no doubt so that you might go back to him. Go back to him. If you want money, I'll give it to you. How many roubles do you want?"

All the most cruel words that a brutal man could say, he said to her in her imagination, and she could not forgive him for them, as though he had actually said them.

"But didn't he only yesterday swear he loved me, he, a truthful and sincere man? Haven't I despaired for nothing many times already?" she said to herself right after this.

All that day, except for the visit to Wilson's, which occupied two hours, Anna spent in doubts whether everything were over or whether there were still hope of reconciliation; whether she should go away at once or see him once more. She was expecting him the whole day, and in the evening, as she went to her own room, leaving a message for him that her head ached, she said to herself, "If he comes in spite of what the maid says, it means that he loves me still. If not, it means that all is over, and then I will decide what I am to do!..."

In the evening she heard the rumbling of his carriage stop at the entrance, his ring, his steps, and his conversation with the servant; he believed what was told him, did not care to find out more, and went to his own room. So then, everything was at an end.

And death rose clearly and vividly before her mind as the sole means of bringing back love for her in his heart, of

punishing him and of gaining the victory in that strife which the evil spirit in possession of her heart was waging with him.

Now nothing mattered: going or not going to Vozdvizhenskoe, getting or not getting a divorce from her husband all that did not matter. The one thing that mattered was punishing him.

When she poured herself out her usual dose of opium, and thought that she had only to drink off the whole bottle to die, it seemed to her so simple and easy, that she began musing with enjoyment on how he would suffer, and repent, and love her memory when it would be too late. She lay in bed with open eyes, by the light of a single guttering candle, gazing at the carved cornice of the ceiling and at the shadow of the screen that covered part of it, while she vividly pictured to herself how he would feel when she would be no more, when she would be only a memory to him. "How could I say such cruel things to her?" he would say. "How could I go out of the room without saying anything to her? But now she is no more. She has gone away from us forever. She is..." Suddenly the shadow of the screen wavered, pounced on the whole cornice, the whole ceiling; other shadows from the other side swooped to meet it; for an instant the shadows flitted back, but then with fresh swiftness they darted forward, wavered, mingled, and all was darkness. "Death!" she thought. And such horror came upon her that for a long while she could not realize where she was, and for a long while her trembling hands could not find the matches and light another candle, instead of the one that had burned down and gone out. "No, anything only to live! Why, I love him! Why, he loves me! This has been before and will pass," she said, feeling that tears of joy at the return to life were trickling down her cheeks. And to escape from her panic she went hurriedly to his room.

He was asleep there, and sleeping soundly. She went up to him, and holding the light above his face, she gazed a long while at him. Now when he was asleep, she loved him so that at the sight of him she could not keep back tears of tenderness. But she knew that if he waked up he would look at her with cold eyes, convinced that he was right, and that before telling him of her love, she would have to prove to him that he had been wrong in his treatment of her. Without waking him, she went back, and after a second dose of opium she fell toward morning into a heavy, incomplete sleep, during which she never quite lost consciousness.

In the morning she was waked by a horrible nightmare, which had recurred several times in her dreams, even before her connection with Vronsky. A little old man with unkempt beard was doing something, stooping over some iron, muttering meaningless French words, and she, as she always did in this nightmare (it was what made the horror of it), felt that this peasant was taking no notice of her, but was doing something horrible with the iron over her. And she waked up in a cold sweat.

When she got up, the previous day came back to her as though veiled in mist.

"There was a quarrel. Just what has happened several times. I said I had a headache, and he did not come in to see me. Tomorrow we're going away; I must see him and get ready for the journey," she said to herself. And learning that he was in his study, she went down to him. As she passed through the drawing room she heard a carriage stop at the entrance, and looking out of the window she saw the carriage, from which a young girl in a lilac hat was leaning out, giving some direction to the footman who was ringing the bell. After a parley in the hall, someone came upstairs, and Vronsky's steps could be heard passing the drawing room. He went rapidly downstairs. Anna went again to the window. She saw him come out on the steps without his hat and go up to the carriage. The young girl in the lilac hat handed him a parcel. Vronsky, smiling, said something to her. The carriage drove away; he ran rapidly upstairs again.

The mists that had shrouded everything in her soul parted suddenly. The feelings of yesterday pierced the sick heart with a fresh pang. She could not understand now how she could have lowered herself by spending a whole day with him in his house. She went into his room to announce her determination.

## Anna Karenina

"That was Madame Sorokina and her daughter. They came and brought me the money and the deeds from maman. I couldn't get them yesterday. How is your head, better?" he said quietly, not wishing to see and to understand the gloomy and solemn expression of her face.

She looked silently, intently at him, standing in the middle of the room. He glanced at her, frowned for a moment, and went on reading a letter. She turned, and went deliberately out of the room. He still might have turned her back, but she had reached the door, he was still silent, and the only sound audible was the rustling of the note paper as he turned it.

"Oh, by the way," he said at the very moment she was in the doorway, "we're going tomorrow for certain, aren't we?"

"You, but not I," she said, turning round to him.

"Anna, we can't go on like this..."

"You, but not I," she repeated.

"This is getting unbearable!"

"You... You will be sorry for this," she said, and went out.

Frightened by the desperate expression with which these words were uttered, he jumped up and would have run after her, but on second thoughts he sat down and scowled, setting his teeth. This vulgar as he thought threat of something vague exasperated him. "I've tried everything," he thought; "the only thing left is not to pay attention," and he began to get ready to drive into town, and again to his mother's, to get her signature to the deeds.

She heard the sound of his steps about the study and the dining room. At the drawing room he stood still. But he did not turn in to see her; he merely gave an order that the horse should be given to Voitov if he came while he was away. Then she heard the carriage brought round, the door opened, and he came out again. But he went back into the porch again, and someone was running upstairs. It was the valet running up for his forgotten gloves. She went to the window and saw him take the gloves without looking, and, touching the coachman on the back, he said something to him. Then, without looking up at the window, he settled himself in his usual attitude in the carriage, with his legs crossed, and, drawing on his gloves, he vanished round the corner.

## XXVII.

"He has gone! It is the end!" Anna said to herself, standing at the window; and in answer to this question the impression of the darkness when the candle had flickered out and of her fearful dream, mingling into one, filled her heart with cold terror.

"No, that cannot be!" she cried, and crossing the room she rang the bell. She was afraid now of being alone, that, without waiting for the servant to come in, she went out to meet him.

"Inquire where the Count has gone," she said.

The servant answered that the Count had gone to the stable.

"His Honor left word that if you cared to drive out, the carriage would be back immediately."



"Very good. Wait a minute. I'll write a note at once. Send Mikhail with the note to the stables. Make haste."

She sat down and wrote:

"I was wrong. Come back home; I must explain. For God's sake come! I'm afraid."

She sealed it up and gave it to the servant.

She was afraid of being left alone now; she followed the servant out of the room, and went to the nursery.

"Why, this isn't it this isn't he! Where are his blue eyes, his sweet, shy smile?" was her first thought when she saw her chubby, rosy little girl, with her black, curly hair, instead of Seriozha, whom in the tangle of her ideas she had expected to see in the nursery. The little girl sitting at the table was obstinately and violently battering on it with a cork, and staring aimlessly at her mother with her pitch-black eyes. Answering the English nurse that she was quite well, and that she was going to the country tomorrow, Anna sat down by the little girl and began spinning the cork to show her. But the child's loud, ringing laugh, and the motion of her eyebrows, recalled Vronsky so vividly that she got up hurriedly, restraining her sobs, and went away. "Can it be all over? No, it cannot be!" she thought. "He will come back. But how can he explain that smile, that excitement after he had been talking to her? But even if he doesn't explain, I will believe. If I don't believe, there's only one thing left for me... and I can't do it."

She looked at her watch. Twenty minutes had passed. "By now he has received the note and is coming back. Not long, ten minutes more.... But what if he doesn't come? No, that cannot be. He mustn't see me with tear-stained eyes. I'll go and wash. Yes, yes; did I do my hair or not?" she asked herself. And she could not remember. She felt her head with her hand. "Yes, my hair has been done, but when I did it I can't in the least remember." She could not believe the evidence of her hand, and went up to the pier glass to see whether she really had done her hair. She certainly had, but she could not think when she had done it. "Who's that?" she thought, looking in the looking glass at the swollen face with strangely glittering eyes, that looked in a scared way at her. "Why, it's I!" she suddenly understood, and, looking round, she seemed all at once to feel his kisses on her, and twitched her shoulders, shuddering. Then she lifted her hand to her lips and kissed it.

"What is it? Why, I'm going out of my mind!" And she went into her bedroom, where Annushka was tidying the room.

"Annushka," she said, coming to a standstill before her, and she stared at the maid, not knowing what to say to her.

"You meant to go and see Darya Alexandrovna," said the maid, as though she understood.

"Darya Alexandrovna? Yes, I'll go."

"Fifteen minutes there, fifteen minutes back. He's coming, he'll be here soon." She took out her watch and looked at it. "But how could he go away, leaving me in such a state? How can he live, without making it up with me?" She went to the window and began looking into the street. Judging by the time, he might be back now. But her calculations might be wrong, and she began once more to recall when he had started and to count the minutes.

At the moment when she had moved away to the big clock to compare it with her watch, someone drove up. Glancing out of the window, she saw his carriage. But no one came upstairs, and voices could be heard below. It was the messenger who had come back in the carriage. She went down to him.

"We didn't catch the Count. The Count had driven off on the Nizhny-Novgorod line."

## Anna Karenina

"What do you say? What!..." she said to the rosy, good-humored Mikhail, as he handed her back her note.

"Why, then, he has never received it!" she thought.

"Go with this note to Countess Vronsky's place in the country do you know where it is? And bring an answer back immediately," she said to the messenger.

"And I what am I going to do?" she thought. "Yes, I'm going to Dolly's that's best, or else I shall go out of my mind. Yes, and I can telegraph, too." And she wrote a telegram:

"I absolutely must talk to you; come at once."

After sending off the telegram, she went to dress. When she was dressed and in her hat, she glanced again into the eyes of the plump, comfortable-looking Annushka. There was unmistakable sympathy in those good-natured little gray eyes.

"Annushka, dear, what am I to do?" said Anna, sobbing and sinking helplessly into a chair.

"Why fret yourself so, Anna Arkadyevna? Why, there's nothing out of the way. You drive out a little, and it'll cheer you up," said the maid.

"Yes, I'm going," said Anna, rousing herself and getting up. "And if there's a telegram while I'm away, send it on to Darya Alexandrovna's.... But no, I shall be back myself."

"Yes, I mustn't think; I must do something, drive somewhere, and, most of all, get out of this house," she said, feeling with terror the strange turmoil going on in her own heart, and she made haste to go out, and get into the carriage.

"Where to?" asked Piotr before getting on the box.

"The Znamenka the Oblonskys'."

## XXVIII.

It was bright and sunny. A fine rain had been falling all the morning, and now it had not long cleared up. The iron roofs, the flags of the sidewalks, the cobbles of the pavements, the wheels and leather, the brass and the tinplate of the carriages all glistened brightly in the May sunshine. It was three o'clock, and the very liveliest time in the streets.

As she sat in a corner of the comfortable carriage that hardly swayed on its supple springs, while the grays trotted swiftly, in the midst of the unceasing rattle of wheels and the changing impressions in the pure air, Anna ran over the events of the last days, and she saw her position quite differently from what it had seemed at home. Now the thought of death seemed no longer so terrible and so clear to her, and death itself no longer seemed so inevitable. Now she blamed herself for the humiliation to which she had lowered herself. "I entreat him to forgive me. I have given in to him. I have owned myself in fault. What for? Can't I live without him?" And leaving unanswered the question how she was going to live without him, she fell to reading the signs on the shops. "Office and warehouse. Dental surgeon. Yes, I'll tell Dolly all about it. She doesn't like Vronsky. I shall be sick and ashamed, but I'll tell her everything. She loves me, and I'll follow her advice. I won't give in to him; I won't let him train me as he pleases. Filippov, 'Kalaches.' They say he sends his dough to Peterburg. The Moscow water is so good for it. And the wells at Mitishchy, and the pancakes." And she remembered how, long, long ago, when she was a girl of

seventeen, she had gone with her aunt to Troitsa. "By horses at that time. Was that really me, with red hands? How much of that which seemed to me then splendid and out of reach has become worthless, while what I had then has gone out of my reach forever! Could I ever have believed then that I could come to such humiliation? How proud and satisfied he will be when he gets my note! But I will show him.... How horrid that paint smells! Why is it they're always painting and building? Modes et robes!" she read. A man bowed to her. It was Annushka's husband. "Our parasites," she remembered how Vronsky had said that. "Our? Why our? What's so awful is that one can't tear up the past by its roots. One can't tear it out, but one can hide one's memory of it. And I'll hide it." And then she thought of her past with Alexei Alexandrovich, of how she had blotted it out of her memory. "Dolly will think I'm leaving my second husband, and so I certainly must be in the wrong. As if I cared to be right! I can't help it!" she said, and she wanted to cry. But at once she fell to wondering what those two girls could be smiling about. "Love, most likely. They don't know how dreary it is, how low.... The boulevard and the children. Three boys running, playing at horses. Seriozha! And I'm losing everything and not getting him back. Yes, I'm losing everything, if he doesn't return. Perhaps he was late for the train and has come back by now. Longing for humiliation again!" she said to herself. "No, I'll go to Dolly, and say straight out to her: I'm unhappy, I deserve this, I'm to blame, but still I'm unhappy, help me. These horses, this carriage how loathsome I am to myself in this carriage all his; but I won't see them again."

Thinking over the words in which she would tell Dolly, and intentionally working her heart up to great bitterness, Anna went upstairs.

"Is there anyone with her?" she asked in the hall.

"Katerina Alexandrovna Levina," answered the footman.

"Kitty! Kitty, whom Vronsky was in love with!" thought Anna. "The girl he thinks of with love. He's sorry he didn't marry her. But me he thinks of with hatred, and is sorry he had anything to do with me."

The sisters were having a consultation about nursing when Anna called. Dolly went down alone to see the visitor who had interrupted their conversation.

"Well, so you've not gone away yet? I meant to have come to you," she said; "I had a letter from Stiva today."

"We had a telegram too," answered Anna, looking round for Kitty.

"He writes that he can't make out quite what Alexei Alexandrovich wants, but he won't go away without a decisive answer."

"I thought you had someone with you. Can I see the letter?"

"Yes it's Kitty," said Dolly, embarrassed. "She stayed in the nursery. She has been very ill."

"So I heard. May I see the letter?"

"I'll get it directly. But he doesn't refuse; on the contrary, Stiva has hopes," said Dolly, stopping in the doorway.

"I haven't, and indeed I don't wish it," said Anna.

"What's this? Does Kitty consider it degrading to meet me?" thought Anna when she was alone. "Perhaps she's right, too. But it's not for her, the girl who was in love with Vronsky, it's not for her to show me that, even if it is true. I know that in my position I can't be received by any decent woman. I knew that from the first moment I sacrificed everything to him. And this is my reward! Oh, how I hate him! And what did I come here for? I'm

## Anna Karenina

worse here, more miserable." She heard from the next room the sisters' voices in consultation. "And what am I going to say to Dolly now? Amuse Kitty by the sight of my wretchedness, submit to her patronizing? No; and besides, Dolly wouldn't understand. And it would be no good my telling her. It would only be interesting to see Kitty, to show her how I despise everyone and everything, how nothing matters to me now."

Dolly came in with the letter. Anna read it and handed it back in silence.

"I knew all that," she said, "and it doesn't interest me in the least."

"Oh, why so? On the contrary, I have hopes," said Dolly, looking inquisitively at Anna. She had never seen her in such a strangely irritable condition. "When are you going away?" she asked.

Anna, half-closing her eyes, looked straight before her and did not answer.

"Why does Kitty shrink from me?" she said, looking at the door and flushing red.

"Oh, what nonsense! She's nursing, and things aren't going right with her, and I've been advising her.... She's delighted. She'll be here in a minute," said Dolly awkwardly, not clever at lying. "Yes, here she is."

Hearing that Anna had called, Kitty had wanted not to appear, but Dolly persuaded her. Rallying her forces, Kitty went in, walked up to her, blushing, and shook hands.

"I am so glad to see you," she said with a trembling voice.

Kitty had been thrown into confusion by the inward conflict between her antagonism to this bad woman and her desire to be kind to her. But as soon as she saw Anna's lovely and attractive face, all feeling of antagonism disappeared.

"I should not have been surprised if you had not cared to meet me. I'm used to everything. You have been ill? Yes, you are changed," said Anna.

Kitty felt that Anna was looking at her with hostile eyes. She ascribed this hostility to the awkward position in which Anna, who had once patronized her, must feel with her now, and she felt sorry for her.

They talked of Kitty's illness, of the baby, of Stiva, but it was obvious that nothing interested Anna.

"I came to say good-bye to you," she said, getting up.

"Oh, when are you going?"

But again not answering, Anna turned to Kitty.

"Yes, I am very glad to have seen you," she said with a smile. "I have heard so much of you from everyone, even from your husband. He came to see me, and I liked him very much," she said, unmistakably with malicious intent. "Where is he?"

"He has gone back to the country," said Kitty, blushing.

"Remember me to him be sure you do."

"I'll be sure to!" Kitty said naively, looking compassionately into her eyes.

"Good-by, then, Dolly." And kissing Dolly and shaking hands with Kitty, Anna went out hurriedly.

"She's just the same and just as charming! She's very lovely!" said Kitty, when she was alone with her sister. "But there's something piteous about her. Awfully piteous!"

"Yes, there's something unusual about her today," said Dolly. "When I went with her into the hall, I fancied she was almost crying."

## XXIX.

Anna got into the carriage again in an even worse frame of mind than when she set out from home. To her previous tortures was added now that sense of mortification and of being an outcast, which she had felt so distinctly on meeting Kitty.

"Where to? Home?" asked Piotr.

"Yes, home," she said, not even thinking now where she was going.

"How they looked at me as something dreadful, incomprehensible, and curious! What can he be telling the other with such warmth?" she thought, staring at two men who walked by. "Can one ever tell anyone what one is feeling? I meant to tell Dolly, and it's a good thing I didn't tell her. How pleased she would have been at my misery! She would have concealed it, but her chief feeling would have been delight at my being punished for the happiness she envied me for. Kitty she would have been even more pleased. How I can see through her! She knows I was more than usually kind to her husband. And she's jealous and hates me. And she despises me. In her eyes I'm an immoral woman. If I were an immoral woman I could have made her husband fall in love with me.... If I'd cared to. And, indeed, I did care to. There's someone who's pleased with himself," she thought, as she saw a fat, rubicund gentleman coming toward her. He took her for an acquaintance, and lifted his glossy hat above his bald, glossy head, and then perceived his mistake. "He thought he knew me. Well, he knows me as well as anyone in the world knows me. I don't know myself. I know my appetites, as the French say. They want that hokey-pokey, that they do know for certain," she thought, looking at two boys stopping an ice-cream seller, who took a barrel off his head and began wiping his perspiring face with a towel. "We all want what is sweet and tastes good. If there are no sweetmeats, then a hokey-pokey will do. And Kitty's the same if not Vronsky, then Levin. And she envies me. And hates me. And we all hate each other. I Kitty Kitty me. Yes, that's the truth. Tiutkin, coiffeur.... Je me fais coiffer par Tiutkin.... I'll tell him that when he comes," she thought and smiled. But the same instant she remembered that she had no one now to tell anything amusing to. "And there's nothing amusing, nothing mirthful, really. It's all hateful. Vesper bells and how carefully that merchant crosses himself! As if he were afraid of missing something. Why these churches, and these bells, and this humbug? Simply to conceal that we all hate each other like these cabdrivers, who are abusing each other so angrily. Iashvin says, 'He wants to strip me of my shirt, and I wish him the same.' Yes, that's the truth!"

She was plunged in these thoughts, which so engrossed her that she left off thinking of her own position, when the carriage drew up at the steps of her house. It was only when she saw the porter running out to meet her that she remembered she had sent the note and the telegram.

"Is there any answer?" she inquired.

"I'll see this minute," answered the porter, and, glancing into his room, he took out and gave her the thin square envelope of a telegram. "I can't come before ten o'clock. Vronsky," she read.

"And hasn't the messenger come back?"

"No," answered the porter.

"Then, since it's so, I know what I must do," she said, and feeling a vague fury and craving for revenge rising up within her, she ran upstairs. "I'll go to him myself. Before going away forever, I'll tell him all. Never have I hated anyone as I hate that man!" she thought. Seeing his hat on the rack, she shuddered with aversion. She did not consider that this telegram was an answer to her telegram and that he had not yet received her note. She pictured him to herself as talking calmly to his mother and Princess Sorokina, and rejoicing at her sufferings. "Yes, I must go quickly," she said, not knowing yet where she was going. She longed to get away as quickly as possible from the feelings she had gone through in that awful house. The servants, the walls, the things in that house all aroused repulsion and hatred in her and lay like a weight upon her.

"Yes, I must go to the railway station, and if he's not there, then go there and catch him." Anna looked at the railway timetable in the newspapers. An evening train went at two minutes past eight. "Yes, I shall be in time." She gave orders for the other horses to be put in the carriage, and packed in a traveling bag the things needed for a few days. She knew she would never come back here again.

Among the plans that came into her head she vaguely determined that after what would happen at the station or at the Countess's house, she would go as far as the first town on the Nizhny-Novgorod railway and stop there.

Dinner was on the table; she went up, but the smell of the bread and cheese was enough to make her feel that all food was disgusting. She ordered the carriage and went out. The house threw a shadow now right across the street, but it was a bright evening and still warm in the sunshine. Annushka, who came down with her things, and Piotr, who put the things in the carriage, and the coachman, evidently out of humor, were all hateful to her, and irritated her by their words and actions.

"I don't want you, Piotr."

"But how about the ticket?"

"Well, as you like, it doesn't matter," she said crossly.

Piotr jumped on the box, and putting his arms akimbo, told the coachman to drive to the station.

### XXX.

"Here it is again! Again I understand it all!" Anna said to herself, as soon as the carriage had started and swaying lightly, rumbled over the small cobbles of the paved road, and again one impression followed rapidly upon another.

"Yes; what was the last thing I thought of so clearly?" she tried to recall. "Tiutkin, coiffeur? No, not that. Yes, of what Iashvin says, the struggle for existence and hatred is all that holds men together. No, it's a useless journey you're making," she said, mentally addressing a party in a coach and four, evidently going for an excursion into the country. "And the dog you're taking with you will be no help to you. You can't get away from yourselves." Turning her eyes in the direction Piotr had turned to look, she saw a factory hand almost dead-drunk, with hanging head, being led away by a policeman. "Come, he's found a quicker way," she thought. "Count Vronsky and I did not find that happiness either, though we expected so much from it." And now for the first time Anna turned that glaring light in which she was seeing everything on her relations with him, which she had hitherto avoided thinking about. "What was it he sought in me? Not love so much as the satisfaction of vanity." She remembered his words, the expression of his face, that recalled a submissive setter dog, in the early days of their connection. And everything now confirmed this. "Yes, there was the triumph of vanity in him. Of course there

was love too, but the chief element was the pride of success. He boasted of me. Now that's over. There's nothing to be proud of. Not to be proud of, but to be ashamed of. He has taken from me all he could, and now I am no use to him. He is weary of me and is trying not to be dishonorable in his behavior to me. He let that out yesterday he wants divorce and marriage so as to burn his ships. He loves me, but how? The zest is gone, as the English say. That fellow wants everyone to admire him and is very much pleased with himself," she thought, looking at a red-faced clerk, riding on a riding-school horse. "Yes, there's not the same zest about me for him now. If I go away from him, at the bottom of his heart he will be glad."

This was not mere supposition, she saw it distinctly in the piercing light which revealed to her now the meaning of life and human relations.

"My love keeps growing more passionate and egoistic, while his is waning and waning, and that's why we're drifting apart." She went on musing. "And there's no help for it. He is everything for me, and I want him more and more to give himself up to me entirely. And he wants more and more to get away from me. Precisely: we went to meet one another up to the time of our liaison, and since then we have been irresistibly drifting in different directions. And there's no altering that. He tells me I'm insanely jealous, and I have told myself that I am insanely jealous; but it's not true. I'm not jealous, but I'm unsatisfied. But..." she opened her lips, and shifted her place in the carriage in the excitement, aroused by the thought that suddenly struck her. "If I could be anything but a mistress, passionately caring for nothing but his caresses; but I can't, and I don't care to be anything else. And by that desire I rouse aversion in him, and he rouses fury in me, and it cannot be different. Don't I know that he wouldn't deceive me, that he has no schemes about Princess Sorokina, that he's not in love with Kitty, that he won't desert me! I know all that, but it makes it no better for me. If without loving me, from duty, he'll be good and kind to me, without what I want that's a thousand times worse than unkindness! That's hell! And that's just how it is. For a long while now he hasn't loved me. And where love ends, hate begins. I don't know these streets at all. Hills, apparently, and still houses, and houses.... And in the houses always people and people.... How many of them no end, and all hating each other! Come, let me try and think what I want to make me happy. Well? Suppose I am divorced, and Alexei Alexandrovich lets me have Seriozha, and I marry Vronsky." Thinking of Alexei Alexandrovich, she at once pictured him with extraordinary vividness as though he were alive before her, with his mild, lifeless, dull eyes, the blue veins on his white hands, his intonations, and the cracking of his fingers, and remembering the feeling which had existed between them, and which was also called love, she shuddered with loathing. "Well, I'm divorced, and become Vronsky's wife. Well, will Kitty cease looking at me as she looked at me today? No. And will Seriozha leave off asking and wondering about my two husbands? And is there any new feeling I can awaken between Vronsky and me? Is there possible, if not happiness, some sort of ease from misery? No, no!" she answered now without the slightest hesitation. "Impossible! We are drawn apart by life, and I make his unhappiness, and he mine, and there's no altering him or me. Every attempt has been made, the screw has come unscrewed. Oh, a beggar woman with a baby. She thinks I'm sorry for her. Aren't we all flung into the world only to hate each other, and so to torture ourselves and each other? Schoolboys coming laughing Seriozha?" she thought. "I thought, too, that I loved him, and used to be touched by my own tenderness. But I have lived without him, I gave him up for another love, and did not regret the exchange till that love was satisfied." And with loathing she thought of what she meant by that love. And the clearness with which she saw life now, her own and all men's was a pleasure to her. "It's so with me and Piotr, and Fiodor the coachman, and that merchant, and all the people living along the Volga, where those placards invite one to go, and everywhere and always," she thought when she had driven under the low-pitched roof of the Nizhny-Novgorod station and the porters ran to meet her.

"A ticket to Obiralovka?" said Piotr.

She had utterly forgotten where and why she was going, and only by a great effort she understood the question.

"Yes," she said, handing him her purse, and, taking a little red bag in her hand, she got out of the carriage.

Making her way through the crowd to the first-class waiting room, she gradually recollected all the details of her position, and the plans between which she was hesitating. And again at the old sore places, hope and then despair scraped the wounds of her tortured, fearfully throbbing heart. As she sat on the star-shaped sofa waiting for the train, she gazed with aversion at the people coming and going (they were all hateful to her), and thought how she would arrive at the station, would write him a note, and what she would write to him, and how he was at this moment complaining to his mother of his position, not understanding her sufferings, and how she would go into the room, and what she would say to him. Then she thought that life might still be happy, and how miserably she loved and hated him, and how fearfully her heart was beating.

### XXXI.

A bell rang, some young men, ugly and impudent, and at the same time careful of the impression they were making, hurried by. Piotr, too, crossed the room in his livery and spatterdashes with his dull, brutish face, and came up to her to take her to the train. The noisy young men were quiet as she passed them on the platform, and one whispered something about her to another something vile, no doubt. She stepped up on the high step, and sat down in a carriage by herself on a dirty spring seat that had once been white. Her bag lay beside her, shaken up and down by the springiness of the seat. With a foolish smile Piotr raised his hat, with its gallooned band, at the window, in token of farewell; an impudent conductor slammed the door and the latch. A grotesque-looking lady wearing a bustle (Anna mentally undressed the woman, and was appalled at her hideousness), and a little girl laughing affectedly, ran down the platform.

"Katerina Andreevna, she's got them all, ma tante!" cried the girl.

"Even the child's hideous and affected," thought Anna. To avoid seeing anyone, she got up quickly and seated herself at the opposite window of the empty carriage. A misshapen-looking peasant covered with dirt, in a cap from which his tangled hair stuck out all around, passed by that window, stooping down to the carriage wheels. "There's something familiar about that hideous peasant," thought Anna. And remembering her dream, she moved away to the opposite door, shaking with terror. The conductor opened the door and let in a man and his wife.

"Do you wish to get out?"

Anna made no answer. The conductor and her two fellow passengers did not notice under her veil her panic-stricken face. She went back to her corner and sat down. The couple seated themselves on the opposite side, and intently but surreptitiously scrutinized her clothes. Both husband and wife seemed repulsive to Anna. The husband asked if she would allow him to smoke, obviously not with a view to smoking, but to getting into conversation with her. Receiving her assent, he said to his wife in French something about caring less to smoke than to talk. They made inane and affected remarks to one another, entirely for her benefit. Anna saw clearly that they were sick of each other, and hated each other. And no one could have helped hating such miserable monstrosities.

A second bell sounded, and was followed by moving of luggage, noise, shouting and laughter. It was so clear to Anna that there was nothing for anyone to be glad of, that this laughter irritated her agonizingly, and she would have liked to stop up her ears not to hear it. At last the third bell rang, there was a whistle and a hiss of steam, and a clank of chains, and the man in her carriage crossed himself. "It would be interesting to ask him what meaning he attaches to that," thought Anna, looking angrily at him. She looked past the lady out of the window at the people who seemed whirling by, as they ran beside the train or stood on the platform. The train, jerking at regular intervals at the junctions of the rails, rolled by the platform, past a stone wall, a signal box, past other trains; the wheels, moving more smoothly and evenly, resounded with a slight clang on the rails. The window was lighted up by the bright evening sun, and a slight breeze fluttered the curtain. Anna forgot her fellow passengers, and to the light swaying of the train she fell to thinking again, as she breathed the fresh air.



"Yes, what did I stop at? That I couldn't find a condition in which life would not be a misery, that we are all created to be miserable, and that we all know it, and all invent means of deceiving each other. And when one sees the truth, what is one to do?"

"That's why reason is given to man, to escape from what worries him," said the lady in French, lisping affectedly, and obviously pleased with her phrase.

The words seemed an answer to Anna's thoughts.

"To escape from what worries him," repeated Anna. And glancing at the red-cheeked husband and the thin wife, she saw that the sickly wife considered herself misunderstood, and the husband deceived her and encouraged her in that idea of herself. Anna seemed to see all their history and all the crannies of their souls, turning a light upon them, as it were. But there was nothing interesting in them, and she pursued her thought.

"Yes, I'm very much worried, and that's why reason was given me, to escape; so then, one must escape: why not put out the light when there's nothing more to look at, when it's sickening to look at it all? But how? Why did the conductor run along the footboard, why are they shrieking, those young men in that train? Why are they talking, why are they laughing? It's all falsehood, all lying, all humbug, all cruelty!..."

When the train came into the station, Anna got out into the crowd of passengers, and moving apart from them as if they were lepers, she stood on the platform, trying to think what she had come here for, and what she meant to do. Everything that had seemed to her possible before was now so difficult to consider, especially in this noisy crowd of hideous people who would not leave her alone. At one moment porters ran up to her proffering their services, then young men clacking their heels on the planks of the platform and talking loudly, stared at her, then people meeting her dodged past on the wrong side. Remembering that she had meant to go on farther if there was no answer, she stopped a porter and asked if her coachman were not here with a note from Count Vronsky.

"Count Vronsky? They sent up here from the Vronskys just this minute, to meet Princess Sorokina and her daughter. And what is the coachman like?"

Just as she was talking to the porter, the coachman Mikhail, red and cheerful in his smart blue coat and chain, evidently proud of having so successfully performed his commission, came up to her and gave her a letter. She broke it open, and her heart ached before she had read it.

"I am very sorry your note did not reach me. I will be home at ten," Vronsky had written carelessly.

"Yes, that's what I expected!" she said to herself with an evil smile.

"Very good, you can go home now," she said softly, addressing Mikhail. She spoke softly because the rapidity of her heart's beating hindered her breathing. "No, I won't let Thee make me miserable," she thought menacingly, addressing not him, not herself, but the power that made her suffer, and she walked along the platform.

Two maidservants walking along the platform turned their heads, staring at her and making some remarks about her dress. "Real," they said of the lace she was wearing. The young men would not leave her in peace. Again they passed by, peering into her face, and with a laugh shouting something in an unnatural voice. The stationmaster coming up asked her whether she was going by the train. A boy selling kvass never took his eyes off her. "My God! Where am I to go?" she thought, going farther and farther along the platform. At the end she stopped. Some ladies and children, who had come to meet a gentleman in spectacles, paused in their loud laughter and talking, and stared at her as she reached them. She quickened her pace and walked away from them to the edge of the platform. A goods train was coming in. The platform began to sway, and she fancied she was in the train again.

## Anna Karenina

And all at once she thought of the man crushed by the train the day she had first met Vronsky, and she knew what she had to do. With a rapid, light step she went down the steps that led from the platform to the rails and stopped quite near the approaching train. She looked at the lower part of the carriages, at the screws and chains, and the tall cast-iron wheel of the first carriage slowly moving up, and tried to measure the middle between the front and back wheels, and the very minute when that middle point would be opposite her.

"There," she said to herself, looking into the shadow of the carriage, at the sand and coal dust which covered the sleepers "there, in the very middle, and I will punish him and escape from everyone and from myself."

She tried to fling herself below the wheels of the first car as it reached her; but the red bag which she tried to drop out of her hand delayed her, and she was too late; she missed the middle of the car. She had to wait for the next one. A feeling such as she had known when about to take the first plunge in bathing came upon her, and she crossed herself. That familiar gesture of crossing brought back into her soul a whole series of girlish and childish memories, and suddenly the darkness that had covered everything for her was torn apart, and life rose up before her for an instant with all its bright past joys. But she did not take her eyes from the wheels of the second car. And exactly at the moment when the space between the wheels came opposite her, she dropped the red bag, and drawing her head back into her shoulders, fell on her hands under the car, and lightly, as though she would rise again at once, dropped onto her knees. And at the same instant she was terror-stricken at what she was doing. "Where am I? What am I doing? What for?" She tried to get up, to drop backward; but something huge and merciless struck her on the head and drew along on her back. "Lord, forgive me all!" she said, feeling it impossible to struggle. A peasant, muttering something, was working at the iron. And the candle by which she had been reading the book filled with troubles, falsehoods, sorrow, and evil, flared up more brightly than ever before, lighted up for her all that had been in darkness, sputtered, began to grow dim, and was quenched forever.

## PART EIGHT

### I.

Almost two months had passed. The hot summer was half over, but Sergei Ivanovich was only just preparing to leave Moscow.

Sergei Ivanovich's life had not been uneventful during this time. A year ago he had finished his book, the fruit of six years' labor. An Inquiry Concerning the Principles and Forms of Government in Europe and Russia. Several sections of this book and its introduction had appeared in periodical publications, and other parts had been read by Sergei Ivanovich to persons of his circle, so that the leading ideas of the work could not be entirely novel to the public. But still, Sergei Ivanovich had expected that on its appearance his book would be sure to make a serious impression on society, and if it did not cause a revolution in social science it would, at any rate, make a great stir in the scientific world.

After the most conscientious revision the book had last year been published, and had been distributed among the booksellers.

Though he asked no one about it, reluctantly and with feigned indifference answered his friends' inquiries as to how the book was going, and did not even inquire of the booksellers how the book was selling, Sergei Ivanovich was all on the alert, with strained attention, watching for the first impression his book would make in the world and in literature.

But a week passed, a second, a third, and in society no impression whatever could be detected. Those of his friends, who were specialists and savants, occasionally unmistakably from politeness alluded to it. The rest of his acquaintances, not interested in a book on a learned subject, did not talk of it at all. And society generally

just now especially absorbed in other things was absolutely indifferent. In the press, too, for a whole month there was not a word about his book.

Sergei Ivanovich had calculated to a nicety the time necessary for writing a review, but a month passed, and a second, and still there was silence.

Only in the Northern Beetle, in a comic article on the singer Drabanti, who had lost his voice, there was a contemptuous allusion to Koznishev's book, suggesting that the book had been long ago seen through by everyone, and was a subject of general ridicule.

At last, in the third month, a critical article appeared in a serious review. Sergei Ivanovich knew the author of the article. He had met him once at Golubtsov's.

The author of the article was a young man, an invalid, very bold as a writer, but extremely deficient in breeding and shy in personal relations.

In spite of his absolute contempt for the author, it was with complete respect that Sergei Ivanovich set about reading the article. The article was awful.

The critic had undoubtedly put an interpretation upon the book which could not possibly be put on it. But he had selected quotations so adroitly that for people who had not read the book (and obviously scarcely anyone had read it) it seemed absolutely clear that the whole book was nothing but a medley of high-flown phrases, not even as suggested by marks of interrogation used appropriately, and that the author of the book was a person absolutely without knowledge of the subject. And all this was so wittily done that Sergei Ivanovich would not have disowned such wit himself. But that was just what was so awful.

In spite of the scrupulous conscientiousness with which Sergei Ivanovich verified the correctness of the critic's arguments, he did not for a minute stop to ponder over the faults and mistakes which were ridiculed; but unconsciously he began immediately trying to recall every detail of his meeting and conversation with the author of the article.

"Didn't I offend him in some way?" Sergei Ivanovich wondered.

And remembering that when they met he had corrected the young man about something he had said that betrayed ignorance, Sergei Ivanovich found the explanation for the trend of the article.

This article was followed by a deadly silence about the book both in the press and in conversation, and Sergei Ivanovich saw that his six years' task, toiled at with such love and labor, had gone, leaving no trace.

Sergei Ivanovich's position was still more difficult from the fact that, since he had finished his book, he had had more literary work to do, such as had hitherto occupied the greater part of his time.

Sergei Ivanovich was clever, cultivated healthy and energetic, and he did not know what use to make of his energy. Conversations in drawing rooms, in meetings, assemblies, and committees everywhere where talk was possible took up part of his time. But being used for years to town life, he did not waste all his energies in talk, as his less experienced younger brother did, when he was in Moscow. He had a great deal of leisure and intellectual energy still to dispose of.

Fortunately for him, at this period so difficult for him because of the failure of his book, the various public questions of the dissenting sects, of the American Friends, of the Samara famine, of exhibition, and of spiritualism, were definitely replaced in public interest by the Slavonic question, which had hitherto rather

languidly interested society, and Sergei Ivanovich, who had been one of the first to raise this subject, threw himself into it heart and soul.

In the circle to which Sergei Ivanovich belonged, nothing was talked of or written about just now but the Servian war. Everything that the idle crowd usually does to kill time was done now for the benefit of the Slavonic peoples. Balls, concerts, dinners, speeches, ladies' dresses, beer, taverns everything testified to sympathy with the Slavonic peoples.

From much of what was spoken and written on the subject, Sergei Ivanovich differed on various points. He saw that the Slavonic question had become one of those fashionable distractions which succeed one another in providing society with an object and an occupation. He saw, too, that a great many people were taking up the subject from motives of self-interest and self-advertisement. He recognized that the newspapers published a great deal that was superfluous and exaggerated, with the sole aim of attracting attention and talking one another down. He saw that in this general movement those who thrust themselves most forward and shouted the loudest were men who had failed and were smarting under a sense of injury generals without armies, ministers not in the ministry, journalists not on any paper, party leaders without followers. He saw that there was a great deal in it that was frivolous and absurd. But he saw and recognized an unmistakable growing enthusiasm, uniting all classes, with which it was impossible not to sympathize. The massacre of men who were fellow Christians, and of the same Slavonic race, excited sympathy for the sufferers and indignation against the oppressors. And the heroism of the Servians and Montenegrins struggling for a great cause begot in the whole people a longing to help their brothers not in word but in deed.

But in this there was another aspect that made Sergei Ivanovich rejoice. That was the manifestation of public opinion. The public had definitely expressed its desire. The soul of the people had, as Sergei Ivanovich said, found expression. And the more he worked in this cause, the more incontestable it seemed to him that it was a cause destined to assume vast dimensions, to create an epoch.

He threw himself heart and soul into the service of this great cause, and forgot to think about his book.

His whole time now was engrossed by it, so that he could scarcely manage to answer all the letters and appeals addressed to him.

He worked the whole spring and part of the summer, and it was only in July that he prepared to go away to his brother's country place.

He was going both to rest for a fortnight, and in the very heart of the people, in the farthest wilds of the country, to enjoy the sight of that uplifting of the spirit of the people, of which, like all residents in the capital and big towns, he was fully persuaded. Katavassov had long intended to carry out his promise to stay with Levin, and so he was going with him.

## II.

Sergei Ivanovich and Katavassov had just reached the station of the Kursk line, which was particularly busy and full of people that day, when, looking round for the groom who was following with their things, they saw a party of volunteers driving up in four cabs. Ladies met them with bouquets of flowers, and, followed by the rushing crowd, they went into the station.

One of the ladies who had met the volunteers, came out of the hall and addressed Sergei Ivanovich.

"You also come to see them off?" she asked in French.

## Anna Karenina

"No, I'm going away myself, Princess. To my brother's for a holiday. Do you always see them off?" said Sergei Ivanovich with a barely perceptible smile.

"Oh, that would be impossible!" answered the Princess. "Is it true that eight hundred have been sent from us already? Malvinsky wouldn't believe me."

"More than eight hundred. If you reckon those who have been sent not directly from Moscow, over a thousand," answered Sergei Ivanovich.

"There! That's just what I said!" exclaimed the lady joyously. "And it's true too, I suppose, that about a million has been subscribed?"

"Yes, Princess."

"What do you say to today's telegram? The Turks have been overwhelmed again."

"Yes, so I saw," answered Sergei Ivanovich. They were speaking of the last telegram stating that the Turks had been for three days in succession beaten at all points and put to flight, and that tomorrow a decisive engagement was expected.

"Ah, by the way, a splendid young fellow has asked leave to go, and they've made some difficulty I don't know why. I meant to ask you; I know him; please write a note about his case. He's being sent by Countess Lidia Ivanovna."

Sergei Ivanovich asked for all the details the Princess knew about the young man, and, going into the first-class waiting room, wrote a note to the person on whom the granting of leave of absence depended, and handed it to the Princess.

"You know Count Vronsky, the notorious one... is going by this train?" said the Princess with a smile full of triumph and meaning, when he found her again and gave her the letter.

"I had heard he was going, but I did not know when. By this train?"

"I've seen him. He's here: there's only his mother seeing him off. It's the best thing, anyway, that he could do."

"Oh, yes, of course."

While they were talking the crowd streamed by them toward the dining table. They went forward too, and heard a gentleman with a glass in his hand delivering a loud discourse to the volunteers. "In the service of religion, humanity, and our brethren," the gentleman said, his voice growing louder and louder; "to this great cause mother Moscow dedicates you with her blessing. Jivio!" he concluded, concluded, loudly and tearfully.

Everyone shouted Jivio! and a fresh crowd dashed into the hall, almost carrying the Princess off her feet.

"Ah, Princess! That was something like!" said Stepan Arkadyevich, suddenly appearing in the midst of the crowd and beaming upon them with a delighted smile. "Capitally, warmly said, wasn't it? Bravo! And Sergei Ivanovich! Why, you ought to have said something just a few words, you know, to encourage them; you do that so well," he added with a soft, respectful, and discreet smile, moving Sergei Ivanovich forward a little by the arm.

"No, I'm just off."

"Where to?"

"To the country, to my brother's," answered Sergei Ivanovich.

"Then you'll see my wife. I've written to her, but you'll see her first. Please tell her that they've seen me and that it's 'all right,' as the English say. She'll understand. Oh, and be so good as to tell her I'm appointed member of the committee.... But she'll understand! You know, *les petites miseres de la vie humaine*," he said, as it were apologizing to the Princess. "And Princess Miaghkaia not Liza, but Bibish is sending a thousand guns and twelve nurses, after all. Did I tell you?"

"Yes, I heard so," answered Koznishev indifferently.

"It's a pity you're going away," said Stepan Arkadyevich. "Tomorrow we're giving a dinner to two who are setting off Dimer-Biartniansky from Peterburg and our Veslovsky, Grisha. They're both going. Veslovsky's only lately married. There's a fine fellow for you! Eh, Princess?" he turned to the lady.

The Princess looked at Koznishev without replying. But the fact that Sergei Ivanovich and the Princess seemed anxious to get rid of him did not in the least disconcert Stepan Arkadyevich. Smiling, he stared at the feather in the Princess's hat, and then about him as though he were going to pick something up. Seeing a lady approaching with a collection box, he beckoned her up and put in a five-rouble note.

"I can never see these collection boxes unmoved while I've money in my pocket," he said. "And how about today's telegram? Fine chaps those Montenegrins!"

"You don't say so!" he cried, when the Princess told him that Vronsky was going by this train. For an instant Stepan Arkadyevich's face looked sad, but a minute later, when, stroking his whiskers and swinging as he walked, he went into the hall where Vronsky was, he had completely forgotten his own despairing sobs over his sister's corpse, and he saw in Vronsky only a hero and an old friend.

"With all his faults one can't refuse to do him justice," said the Princess to Sergei Ivanovich, as soon as Stepan Arkadyevich had left them. "What a typically Russian, Slav nature! Only, I'm afraid it won't be pleasant for Vronsky to see him. Say what you will, I'm touched by that man's fate. Do talk to him a little on the way," said the Princess.

"Yes, perhaps, if the occasion arises."

"I never liked him. But this atones for a great deal. He's not merely going himself he's taking a squadron at his own expense."

"Yes, so I heard."

A bell sounded. Everyone crowded to the doors.

"Here he is!" said the Princess, indicating Vronsky, who, with his mother on his arm walked by, wearing a long overcoat and wide-brimmed black hat. Oblonsky was walking beside him, talking eagerly of something.

Vronsky was frowning and looking straight before him, as though he did not hear what Stepan Arkadyevich was saying.

Probably on Oblonsky's pointing them out, he looked round in the direction where the Princess and Sergei Ivanovich were standing, and, without speaking, lifted his hat. His face, aged and worn by suffering, looked

stony.

Going onto the platform, Vronsky left his mother and disappeared into a compartment.

On the platform there rang out "God save the Czar," then shouts of "Hurrah!" and "Jivio!" One of the volunteers, a tall, very young man with a hollow chest, was particularly conspicuous, bowing and waving his felt hat and a nosegay over his head. Then two officers emerged, bowing too, and a stout man with a big beard, wearing a greasy forage cap.

### III.

Having said good-bye to the Princess, Sergei Ivanovich was joined by Katavassov; together they got into a carriage full to overflowing, and the train started.

At Czaritsino station the train was met by a chorus of young men singing "Hail to Thee!" Again the volunteers bowed and poked their heads out, but Sergei Ivanovich paid no attention to them. He had had so much to do with the volunteers that the type was familiar to him and did not interest him. Katavassov, whose scientific work had prevented his having a chance of observing them hitherto, was very much interested in them and questioned Sergei Ivanovich.

Sergei Ivanovich advised him to go into the second class and talk to them himself. At the next station Katavassov acted on this suggestion.

At the first stop he moved into the second class and made the acquaintance of the volunteers. They were sitting in a corner of the carriage, talking loudly and obviously aware that the attention of the passengers, and of Katavassov, as he got in, was concentrated upon them. More loudly than all talked the tall, hollow-chested young man. He was unmistakably tipsy, and was relating some story that had occurred at his school. Facing him sat a middle-aged officer in the Austrian military jacket of the Guards' uniform. He was listening with a smile to the hollow-chested youth, and occasionally pulling him up. The third, in an artillery uniform, was sitting on a portmanteau beside them. A fourth was asleep.

Entering into conversation with the youth, Katavassov learned that he was a wealthy Moscow merchant who had run through a large fortune before he was two-and-twenty. Katavassov did not like him, because he was unmanly and effeminate and sickly. He was obviously convinced, especially now after drinking, that he was performing a heroic action, and he bragged of it in the most unpleasant way.

The second, the retired officer, made an unpleasant impression too upon Katavassov. He was, it seemed, a man who had tried everything. He had been on a railway, had been a land steward, and had started factories, and he talked, quite without necessity, of everything, and used learned expressions quite inappropriately.

The third, the artilleryman, on the contrary, struck Katavassov very favorably. He was a quiet, modest fellow, unmistakably impressed by the knowledge of the officer and the heroic self-sacrifice of the merchant, and saying nothing about himself. When Katavassov asked him what had impelled him to go to Servia, he answered modestly:

"Oh, well, everyone's going. The Servians want help, too. I'm sorry for them."

"Yes, you artillerymen are especially scarce there," said Katavassov.

"Oh, I wasn't long in the artillery; maybe they'll put me into the infantry or the cavalry."

## Anna Karenina

"Into the infantry, when they need artillery more than anything?" said Katavassov, fancying from the artilleryman's apparent age that he must have reached a fairly high grade.

"I wasn't long in the artillery; I'm a junker, in reserve," he said, and he began to explain how he had failed in his examination.

All of this together made a disagreeable impression on Katavassov, and when the volunteers got out at a station for a drink, Katavassov would have liked to compare his unfavorable impression in conversation with someone. There was an old man in the carriage, wearing a military overcoat, who had been listening all the while to Katavassov's conversation with the volunteers. When they were left alone, Katavassov addressed him.

"What different positions they come from, all those fellows who are going off there," Katavassov said vaguely, not wishing to express his own opinion, and at the same time anxious to find out the old man's views.

The old man was an officer who had served in two campaigns. He knew what makes a soldier, and, judging by the appearance and the talk of those persons, by the swagger with which they had recourse to the bottle on the journey, he considered them poor soldiers. Moreover, he lived in a district town, and he was longing to tell how one soldier had volunteered from his town, a drunkard and a thief whom no one would employ as a laborer. But knowing by experience that in the present condition of the public temper it was dangerous to express an opinion opposed to the general one, and especially to criticize the volunteers unfavorably, he too watched Katavassov without committing himself.

"Well, men are wanted there," he said, laughing with his eyes. And they fell to talking of the last war news, and each concealed from the other his perplexity as to the engagement expected next day, since the Turks had been beaten, according to the latest news, all along the line. And so they parted, neither giving expression to his opinion.

Katavassov went back to his own carriage, and with reluctant hypocrisy reported to Sergei Ivanovich his observations of the volunteers, from which it would appear that they were capital fellows.

At a big station at a town the volunteers were again greeted with shouts and singing, again men and women with collection boxes appeared, and provincial ladies brought bouquets to the volunteers and followed them into the refreshment room; but all this was on a much smaller and feebler scale than in Moscow.

## IV.

While the train was stopping at the provincial town, Sergei Ivanovich did not go to the refreshment room, but walked up and down the platform.

The first time he passed Vronsky's compartment he noticed that the curtain was drawn over the window; but as he passed it the second time he saw the old Countess at the window. She beckoned to Koznishev.

"I'm going, you see taking him as far as Kursk," she said.

"Yes, so I heard," said Sergei Ivanovich, standing at her window and peeping in. "What a noble act on his part!" he added, noticing that Vronsky was not in the compartment.

"Yes, after his misfortune, what was there for him to do?"

"What a terrible thing it was!" said Sergei Ivanovich.



## Anna Karenina

"Ah, what I have been through! But do get in.... Ah, what I have been through!" she repeated, when Sergei Ivanovich had got in and sat down beside her. "You can't conceive it! For six weeks he did not speak to anyone, and would not touch food except when I implored him. And not for one minute could we leave him alone. We took away everything he could have used against himself. We lived on the ground floor, but there was no reckoning on anything. You know, of course, that he had shot himself once already on her account," she said, and the old lady's brows contracted at the recollection. "Yes, hers was the fitting end for such a woman. Even the death she chose was low and vulgar."

"It's not for us to judge, Countess," said Sergei Ivanovich sighing; "but I can understand that it has been very hard for you."

"Ah, don't speak of it! I was staying on my estate, and he was with me. A note was brought him. He wrote an answer and sent it off. We hadn't an idea that she was close by at the station. In the evening I had only just gone to my room, when my Mary told me a lady had thrown herself under the train. Something seemed to strike me at once. I knew it was she. The first thing I said was that he was not to be told. But they'd told him already. His coachman was there and saw it all. When I ran into his room, he was beside himself it was frightful to see him. He didn't say a word, but galloped off there. I don't know to this day what happened there, but he was brought back at death's door. I shouldn't have known him. Prostration complete, the doctor said. And that was followed almost by madness. Oh, why talk of it!" said the Countess with a wave of her hand. "It was an awful time! No, say what you will, she was a bad woman. Why, what is the meaning of such desperate passions? It was all to show herself something out of the ordinary. Well, and that she did do. She brought herself to ruin and two good men her husband, and my unhappy son."

"And what did her husband do?" asked Sergei Ivanovich.

"He has taken her daughter. Aliosha was ready to agree to anything at first. Now it worries him terribly that he should have given his own child away to another man. But he can't take back his word. Karenin came to the funeral. But we tried to prevent his meeting Aliosha. For him, for her husband, it was easier, anyway. She had set him free. But my poor son was utterly given up to her. He had thrown up everything, his career, me, and even then she had no mercy on him, but of set purpose she made his ruin complete. No, say what you will, her very death was the death of a vile woman, of no religious feeling. God forgive me, but I can't help hating the memory of her, when I look at my son's misery!"

"But how is he now?"

"It was a blessing from Providence for us this Servian war. I'm old, and I don't understand the rights and wrongs of it, but it's come as a providential blessing to him. Of course for me, as his mother, it's terrible; and what's worse, they say, *ce n'est pas tres bien vu a Petersbourg*. But it can't be helped! It was the one thing that could rouse him. Iashvin a friend of his he had lost all he had at cards and he was going to Servia. He came to see him and persuaded him to go. Now it's an interest for him. Do please talk to him a little. I want to distract his mind. He's so low-spirited. And, as bad luck would have it, he has toothache too. But he'll be delighted to see you. Please do talk to him; he's walking up and down on that side."

Sergei Ivanovich said he would be very glad to, and crossed over to the other side of the station.

## V.

In the slanting evening shadows cast by the baggage piled up on the platform, Vronsky in his long overcoat and slouch hat, with his hands in his pockets, strode up and down, like a wild beast in a cage, turning sharply every twenty paces. Sergei Ivanovich fancied, as he approached him, that Vronsky saw him but was pretending not to

see. This did not affect Sergei Ivanovich in the slightest. He was above all personal considerations with Vronsky.

At that moment Sergei Ivanovich looked upon Vronsky as a man taking an important part in a great cause, and Koznishev thought it his duty to encourage him and express his approval. He went up to him.

Vronsky stood still, looked intently at him, recognized him, and going a few steps forward to meet him, shook hands with him very warmly.

"Possibly you didn't wish to see me," said Sergei Ivanovich, "but couldn't I be of use to you?"

"There's no one I should less dislike seeing than you," said Vronsky. "Forgive me. There's nothing in life for me to like."

"I quite understand, and I merely meant to offer you my services," said Sergei Ivanovich, scanning Vronsky's face, full of unmistakable suffering. "Wouldn't it be of use to you to have a letter to Ristich, to Milan?"

"Oh, no!" Vronsky said, seeming to understand him with difficulty. "If you don't mind, let's walk on. It's so stuffy among the cars. A letter? No, thank you; to meet death one needs no letters of introduction. The Turks take..." he said, with a smile that was merely of the lips. His eyes still kept their look of angry suffering.

"Yes; but you might find it easier to get into relations, which are after all essential, with anyone prepared to see you. But that's as you like. I was very glad to hear of your intention. There have been so many attacks made on the volunteers, and a man like you raises them in public estimation."

"My use as a man," said Vronsky, "is that life's worth nothing to me. And that I've enough bodily energy to cut my way into their ranks, and to trample on them or fall I know that. I'm glad there's something to give my life for, for it's not simply useless but loathsome to me. Anyone's welcome to it." And his jaw twitched impatiently from the incessant nagging toothache, that prevented him from even speaking with a natural expression.

"You will become another man, I predict," said Sergei Ivanovich, feeling touched. "To deliver one's brethren from bondage is an aim worth death and life. God grant you success outwardly and inwardly peace," he added, and he held out his hand.

Vronsky warmly squeezed his outstretched hand.

"Yes, as a weapon I may be of some use. But as a man, I'm a wreck," he jerked out.

He could hardly speak for the throbbing ache in his strong tooth, his mouth being filled up with saliva. He was silent, and his eyes rested on the wheels of the tender, slowly and smoothly rolling along the rails.

And all at once a different pain, not an ache, but an inner trouble, that set his whole being in anguish, made him for an instant forget his toothache. As he glanced at the tender and the rails, under the influence of the conversation with a friend he had not met since his misfortune, he suddenly recalled her—that is, what was left of her when he had run like one distraught into the barrack of the railway station: on the table, shamelessly sprawling out among strangers, the bloodstained body so lately full of life; the head unhurt dropping back with its weight of hair, and the curling tresses about the temples, and the exquisite face, with red, half-opened mouth, the strange, fixed expression, piteous on the lips and awful in the still open eyes, that seemed to utter that fearful phrase—that he would be sorry for it—which she had said when they were quarreling.

And he tried to think of her as she was when he met her the first time, at a railway station too, mysterious, exquisite, loving, seeking and giving happiness, and not cruelly revengeful as he remembered her at that last

moment. He tried to recall his best moments with her, but those moments were poisoned forever. He could only think of her as triumphant, successful in her menace of a wholly useless remorse, never to be effaced. He lost all consciousness of toothache, and his face worked with sobs.

Passing twice up and down beside the baggage in silence and regaining his self-possession, he addressed Sergei Ivanovich calmly:

"You have had no telegrams since yesterday's? Yes, driven back for a third time, but a decisive engagement expected for tomorrow."

And after talking a little more of the proclaiming of Milan as King, and the immense effect this might have, they parted, going to their cars on hearing the second bell.

## VI.

Sergei Ivanovich had not telegraphed to his brother to send to meet him, as he did not know when he should be able to leave Moscow. Levin was not at home when Katavassov and Sergei Ivanovich, in a wagonette hired at the station, drove up to the steps of the Pokrovskoe house, as black as Negroes from the dust of the road. Kitty, sitting on the balcony with her father and sister, recognized her brother-in-law, and ran down to meet him.

"What a shame not to have let us know," she said, giving her hand to Sergei Ivanovich, and putting her forehead up for him to kiss.

"We drove here capitally, and have not put you out," answered Sergei Ivanovich. "I'm so dirty. I'm afraid to touch you. I've been so busy, I didn't know when I should be able to tear myself away. And so you're still as ever enjoying your peaceful, quiet happiness," he said, smiling, "out of the reach of the current in your peaceful backwater. Here's our friend Fiodor Vassilievich, successful in getting here at last."

"But I'm not a Negro; I shall look like a human being when I wash," said Katavassov in his jesting fashion, and he shook hands and smiled, his teeth flashing white in his black face.

"Kostia will be delighted. He has gone to his grange. It's time he should be home."

"Busy as ever with his farming. It really is a peaceful backwater," said Katavassov; "while we in town think of nothing but the Servian war. Well, how does our friend look at it? He's sure not to think like other people."

"Oh, I don't know, he's like everybody else," Kitty answered, a little embarrassed, looking round at Sergei Ivanovich. "I'll send to fetch him. Papa's staying with us. He's only just come home from abroad."

And making arrangements to send for Levin and for the guests to wash, one in his room and the other in what had been Dolly's, and giving orders for their luncheon, Kitty ran out on the balcony, enjoying the freedom and rapidity of movement, of which she had been deprived during the months of her pregnancy.

"It's Sergei Ivanovich and Katavassov, a professor," she said.

"Oh, it's hard in such a heat," said the Prince.

"No, papa, he's very nice, and Kostia's very fond of him," Kitty said, with a deprecating smile, noticing the irony on her father's face.

"Oh, I didn't say anything."

"You go to them, darling," said Kitty to her sister, "and entertain them. They saw Stiva at the station; he was quite well. And I must run to Mitia. As ill luck would have it, I haven't fed him since tea. He's awake now, and sure to be screaming." And, feeling a rush of milk, she hurried to the nursery.

This was not a mere guess; her connection with the child was still so close that she could gauge by the flow of her milk his need of food, and knew for certain he was hungry.

She knew he was crying before she reached the nursery. And he was indeed crying. She heard him and hastened. But the faster she went the louder he screamed. It was a fine healthy scream, hungry and impatient.

"Has he been screaming long, nurse very long?" said Kitty, hurriedly seating herself on a chair, and preparing to give the baby the breast. "But give me him quickly. Oh, nurse, how tiresome you are! There, tie the cap afterward, do!"

The baby's greedy scream was passing into sobs.

"But you can't manage so, ma'am," said Agathya Mikhailovna, who was almost always to be found in the nursery. "He must be put straight. A—oo! A—oo!" she chanted over him, paying no attention to the mother.

The nurse brought the baby to his mother. Agathya Mikhailovna followed him with a face melting with tenderness.

"He knows me, he knows me. In God's faith, Katerina Alexandrovna, ma'am, he recognized me!" Agathya Mikhailovna cried above the baby's screams.

But Kitty did not hear her words. Her impatience kept growing, like the baby's.

Their impatience hindered things for a while. The baby could not get hold of the breast right, and was furious.

At last, after despairing, breathless screaming, and vain sucking, things went right, and mother and child felt simultaneously soothed, and both subsided into calm.

"But poor darling, he's all in perspiration!" said Kitty in a whisper, touching the baby. "What makes you think he knows you?" she added, with a sidelong glance at the baby's eyes, that peered roguishly, as she fancied, from under his cap, at his rhythmically puffing cheeks, and the little red—palmed hand he was waving.

"Impossible! If he knew anyone, he would have known me," said Kitty, in response to Agathya Mikhailovna's statement, and she smiled.

She smiled because, though she said he could not know her, in her heart she was sure that he knew not merely Agathya Mikhailovna, but that he knew and understood everything, and knew and understood a great deal too that no one else knew, and that she, his mother, had learned and come to understand only through him. To Agathya Mikhailovna, to the nurse, to his grandfather, to his father even, Mitia was a living being, requiring only material care, but for his mother he had long been a moral being, with whom there had been a whole series of spiritual relations already.

"When he wakes up, please God, you shall see for yourself. Then when I do like this, he simply beams on me, the darling! Simply beams like a sunny day!" said Agathya Mikhailovna.

"Well, well; then we shall see," whispered Kitty. "But now go away, he's going to sleep."

## VII.

Agathya Mikhailovna went out on tiptoe; the nurse let down the blind, chased flies out from under the muslin canopy of the crib, and a hornet struggling on the window frame, and sat down waving a faded branch of birch over the mother and the baby.

"How hot it is! If God would send a drop of rain," she said.

"Yes, yes, sh sh sh—" was all Kitty answered, rocking a little, and tenderly squeezing the plump little arm, with rolls of fat at the wrist, which Mitia still waved feebly as he opened and shut his eyes. That hand worried Kitty; she longed to kiss the little hand, but was afraid to for fear of waking the baby. At last the little hand ceased waving, and the eyes closed. Only from time to time, as he went on sucking, the baby raised his long, curly eyelashes and peeped at his mother with humid eyes, that looked black in the twilight. The nurse had left off fanning, and was dozing. From above came the peals of the old Prince's voice, and the chuckle of Katavassov.

"They have got into talk, without me," thought Kitty, "but still it's vexing that Kostia's out. He's sure to have gone to the beehouse again. Though, it's a pity he's there so often, still I'm glad. It distracts his mind. He's become altogether happier and better now than in the spring. He used to be so gloomy and worried that I felt frightened for him. And how absurd he is!" she whispered, smiling.

She knew what worried her husband. It was his unbelief. Although, if she had been asked whether she supposed that in the future life, if he did not believe, he would be damned, she would have had to admit that he would be damned, his unbelief did not cause her unhappiness. And she, confessing that for an unbeliever there can be no salvation, and loving her husband's soul more than anything in the world, thought with a smile of his unbelief, and told herself that he was absurd.

"What does he keep reading philosophy of some sort for all this year?" she wondered. "If it's all written in those books, he can understand them. If it's all wrong, why does he read them? He says himself that he would like to believe. Then why is it he doesn't believe? Surely from his thinking so much? And he thinks so much from being solitary. He's always alone, alone. He can't talk about it all to us. I fancy he'll be glad of these visitors, especially Katavassov. He likes discussions with them," she thought, and passed instantly to the consideration of where it would be more convenient to put Katavassov, to sleep alone or to share Sergei Ivanovich's room. And then an idea suddenly struck her, which made her shudder and even disturb Mitia, who glanced severely at her. "I do believe the laundress hasn't sent the washing yet, and all the guests' sheets are in use. If I don't see to it, Agathya Mikhailovna will give Sergei Ivanovich the used sheets," and at the very idea of this the blood rushed to Kitty's face.

"Yes, I will arrange it," she decided, and going back to her former thoughts, she remembered that some spiritual question of importance had been interrupted, and she began to recall what. "Yes, Kostia, an unbeliever," she thought again with a smile.

"Well, an unbeliever then! Better let him always be one than like Madame Stahl, or what I tried to be in those days abroad. No, he won't ever sham anything."

And a recent instance of his goodness rose vividly to her mind. A fortnight ago a penitent letter had come from Stepan Arkadyevich to Dolly. He besought her to save his honor, to sell her estate to pay his debts. Dolly was in despair, she detested her husband, despised him, pitied him, resolved on a separation, resolved to refuse, but ended by agreeing to sell part of her property. After that, with an irrepressible smile of tenderness, Kitty recalled

her husband's shamefaced embarrassment, his repeated awkward efforts to approach the subject, and how at last, having thought of the one means of helping Dolly without wounding her pride, he had suggested to Kitty what had not occurred to her before that she should give up her share of the property.

"He an unbeliever indeed! With his heart, his dread of offending anyone, even a child! Everything for others, nothing for himself. Sergei Ivanovich simply considers it as Kostia's duty to be his bailiff. And it's the same with his sister. Now Dolly and her children are under his guardianship; all these peasants who come to him every day, as though he were bound to be at their service."

"Yes, only be like your father only like him," she said, handing Mitia over to the nurse, and putting her lips to his cheek.

## VIII.

Ever since, by his beloved brother's deathbed, Levin had first glanced into the questions of life and death in the light of these new convictions, as he called them, which had during the period from his twentieth to his thirty-fourth year imperceptibly replaced his childish and youthful beliefs he had been stricken with horror, not so much of death, as of life, without any knowledge of whence, and why, and how, and what it was. The physical organization, its decay, the Indestructibility of matter, the law of the conservation of energy, evolution, were the words which usurped the place of his old belief. These words and the ideas associated with them were very well for intellectual purposes. But for life they yielded nothing, and Levin felt suddenly like a man who has changed his warm fur cloak for a muslin garment, and going for the first time into the frost is immediately convinced, not by reason, but by his whole nature, that he is as good as naked, and that he must infallibly perish miserably.

From that moment, though he did not distinctly face it, and still went on living as before, Levin had never lost this sense of terror at his lack of knowledge.

He vaguely felt, too, that what he called his new convictions were not merely lack of knowledge, but that they were part of a whole order of ideas, in which no knowledge of what he needed was possible.

At first, marriage, with the new joys and duties bound up with it, had completely crowded out these thoughts. But of late, while he was staying in Moscow after his wife's confinement, with nothing to do, the question that clamored for solution had more and more often, more and more insistently, haunted Levin's mind.

The question was summed up for him thus: "If I do not accept the answers Christianity gives to the problems of my life, what answers do I accept?" And in the whole arsenal of his convictions, so far from finding any satisfactory answers, he was utterly unable to find anything at all like an answer.

He was in the position of a man seeking food in toyshops and firearm shops.

Instinctively, unconsciously, with every book, with every conversation, with every man he met, he was on the lookout for light on these questions and their solution.

What puzzled and distracted him above everything was that the majority of men of his age and circle had, like him, exchanged their old beliefs for the same new convictions, and yet saw nothing to lament in this, and were perfectly satisfied and serene. So that, apart from the principal question, Levin was tortured by other questions too: were these people sincere? or were they playing a part? or was it that they understood the answers science gave to these problems in some different, clearer sense than he did? And he assiduously studied both these men's opinions and the books which treated of these scientific explanations.

One fact he had found out since these questions had engrossed his mind that he had been quite wrong in supposing, from the recollections of the university circle of his young days, that religion had outlived its day, and that it was now practically nonexistent. All the people nearest to him who were good in their lives were believers. The old Prince, and Lvov, whom he liked so much, and Sergei Ivanovich; and all the women believed; and his wife believed as simply as he had believed in his earliest childhood; and ninety-nine hundredths of the Russian people, all the people for whose life he felt the deepest respect, believed.

Another fact of which he became convinced, after reading many books, was that the men who shared his views had no other construction to put on them, and that they gave no explanation of the questions which he felt he could not live without answering, but simply ignored their existence and attempted to explain other questions of no possible interest to him, such as the evolution of organisms, the mechanistic theory of the soul, etc.

Moreover, during his wife's confinement, something had happened that seemed extraordinary to him. He, an unbeliever, had fallen into praying, and at the moment he prayed, he believed. But that moment had passed, and he could not make his state of mind at that moment fit into the rest of his life.

He could not admit that at that moment he knew the truth, and that now he was wrong; for as soon as he began thinking calmly about it, it all fell to pieces. He could not admit that he was mistaken then, for his spiritual condition then was precious to him, and to admit that it was a proof of weakness would have been to desecrate those moments. He was miserably divided against himself, and strained all his spiritual forces to the utmost to escape from this condition.

## IX.

These doubts fretted and harassed him, growing weaker or stronger from time to time, but never leaving him. He read and thought, and the more he read and the more he thought, the further he felt from the aim he was pursuing.

Of late in Moscow and in the country, since he had become convinced that he would find no solution in the materialists, he had read and reread thoroughly Plato, Spinoza, Kant, Schelling, Hegel, and Schopenhauer those philosophers who gave a nonmaterialistic explanation of life.

Their ideas seemed to him fruitful when he was reading or was himself seeking arguments to refute other theories, especially those of the materialists; but as soon as he began to read or sought for himself a solution of problems, the same thing always happened. As long as he followed the fixed definition of vague words such as spirit, will, freedom, substance, purposely letting himself go into the snare of words the philosophers, or he himself, set for him, he seemed to comprehend something. But he had only to forget the artificial train of reasoning, and to turn from life itself to what had satisfied him while thinking in accordance with the fixed definitions, and all this artificial edifice fell to pieces at once like a house of cards, and it became clear that the edifice had been built up out of those transposed words, apart from a something in life that was more important than reason.

At one time, reading Schopenhauer, he put in place of his will the word love, and for a couple of days this new philosophy consoled him, till he removed away from it. But then, when he turned from life itself to glance at it again, it fell away too, and proved to be the same muslin garment with no warmth in it.

His brother Sergei Ivanovich advised him to read the theological works of Khomiakov. Levin read the second volume of Khomiakov's works, and in spite of the elegant, epigrammatic, polemic style which at first repelled him, he was impressed by the doctrine of the church he found in them. He was struck at first by the idea that the apprehension of divine truths had not been vouchsafed to man, but to a corporation of men bound together by love to Church. What delighted him was the thought how much easier it was to believe in a still existing living Church, embracing all the beliefs of men, and having God at its head, and therefore holy and infallible, and from

## Anna Karenina

it to accept the faith in God, in the creation, the fall, the redemption, than to begin with God, a mysterious, faraway God, the creation, etc. But afterward, on reading a Catholic writer's history of the Church, and then a Greek orthodox writer's history of the Church, and seeing that the two Churches, in their very conception infallible, each deny the authority of the other, Khomiakov's doctrine of the Church lost all its charm for him, and this edifice crumbled into dust like the philosophers' edifices.

All that spring he was not himself, and went through fearful moments of horror.

"Without knowing what I am and why I am here, life's impossible; and that I can't know, and so I can't live," Levin said to himself.

"In infinite time, in infinite matter, in infinite space, is formed a bubble organism, and that bubble lasts a while and bursts, and that bubble is Me."

It was an agonizing error, but it was the sole logical result of ages of human thought in that direction.

This was the ultimate belief on which all the systems elaborated by human thought, in almost all their ramifications, rested. It was the prevalent conviction, and of all other explanations Levin had unconsciously, not knowing when or how, chosen it, as the clearest at any rate, and made it his own.

But it was not merely a falsehood, it was the cruel jeer of some wicked power, some evil, hateful power, to whom one could not submit.

He must escape from this power. And the means of escape every man had in his own hands. He had but to cut short this dependence on evil. And there was one means death.

And Levin, a happy father and a man in perfect health, was several times so near suicide that he hid the cord, lest he be tempted to hang himself, and was afraid to go out with his gun, for fear of shooting himself.

But Levin did not shoot himself, and did not hang himself; he went on living.

## X.

When Levin thought what he was and what he was living for, he could find no answer to the questions and was reduced to despair; but when he left off questioning himself about it, it seemed as though he knew both what he was and what he was living for, acting and living resolutely and without hesitation; even in these latter days he was far more decided and unhesitating in life than he had ever been.

When he went back to the country at the beginning of June, he went back also to his usual pursuits. His agriculture, his relations with the peasants and the neighbors, the care of his household, the management of his sister's and brother's property, of which he had the direction, his relations with his wife and kindred, the care of his child, and the new beekeeping hobby he had taken up that spring, filled all his time.

These things occupied him now, not because he justified them to himself by any sort of general principles, as he had done in former days; on the contrary, disappointed by the failure of his former efforts for the general welfare, and too much occupied with his own thought and the mass of business with which he was burdened from all sides, he had completely given up thinking of the general good, and he busied himself with all this work simply because it seemed to him that he must do what he was doing that he could not do otherwise.

In former days almost from childhood, and increasingly up to full manhood when he had tried to do anything



that would be good for all, for humanity, for Russia, for the whole village, he had noticed that the idea of it had been pleasant, but the work itself had always been incoherent, that then he had never had a full conviction of its absolute necessity, and that the work that had begun by seeming so great, had grown less and less, till it vanished into nothing. But now, since his marriage, when he had begun to confine himself more and more to living for himself, though he experienced no delight at all at the thought of the work he was doing, he felt a complete conviction of its necessity, saw that it succeeded far better than in old days, and that it kept on growing more and more.

Now, involuntarily it seemed, he cut more and more deeply into the soil like a plough, so that he could not be drawn out without turning aside the furrow.

To live the same family life as his father and forefathers that is, in the same condition of culture and to bring up his children in the same, was incontestably necessary. It was as necessary as dining when one was hungry; and to do this, just as it was necessary to cook dinner, it was necessary to keep the mechanism of agriculture at Pokrovskoe going so as to yield an income. Just as incontestably as it was necessary to repay a debt was it necessary to keep the patrimonial estate in such a condition that his son, when he received it as a heritage, would say "Thank you" to his father as Levin had said "Thank you" to the grandfather for all he had built and planted. And to do this it was necessary to look after the land himself, not to let it, and to breed cattle, manure the fields, and plant timber.

It was impossible not to look after the affairs of Sergei Ivanovich, of his sister, of all the peasants who came to him for advice and were accustomed to do so as impossible as to fling down a child one is carrying in one's arms. It was necessary to look after the comfort of his sister-in-law and her children, and of his wife and baby, and it was impossible not to spend with them at least a short time each day.

And all this, together with shooting and his new beekeeping, filled up the whole of Levin's life, which had no meaning at all for him, when he began to think.

But besides knowing thoroughly what he had to do, Levin knew in just the same way how he had to do it all, and what was of more importance than the rest.

He knew he must hire laborers as cheaply as possible; but to hire men under bond, paying them in advance at less than the current rate of wages, was what he must not do, even though it was very profitable. Selling straw to the peasants in times of scarcity of provender was what he might do, even though he felt sorry for them; but the tavern and the pothouse must be put down, though they were a source of income. Felling timber must be punished as severely as possible, but he could not exact forfeits for cattle being driven into his fields; and though it annoyed the keeper and made the peasants not afraid to graze their cattle on his land, he could not keep their cattle as a punishment.

To Piotr, who was paying a moneylender ten per cent a month, he must lend a sum of money to set him free; but he could not let off peasants who did not pay their rent, nor let them fall into arrears. It was impossible to overlook the bailiff's not having mown the meadows and letting the hay spoil; and it was equally impossible to mow eighty dessiatinas where a young copse had been planted. It was impossible to excuse a laborer who had gone home in the busy season because his father was dying, however sorry he might feel for him, and he must subtract from his pay those costly months of idleness, but it was impossible not to allow monthly rations to the old servants who were of absolutely no use.

Levin knew also that when he got home he must first of all go to his wife, who was unwell, and that the peasants who had been waiting for three hours to see him could wait a little longer. He knew too that, regardless of all the pleasure he felt in taking a swarm, he must forego that pleasure, and leave the old man to see to the bees alone, while he talked to the peasants who had come after him to the beehouse.

Whether he were acting rightly or wrongly he did not know, and far from trying to prove which it was nowadays he avoided all thought or talk about it.

Reasoning had brought him to doubt, and prevented him from seeing what he ought to do and what he ought not. When he did not think, but simply lived, he was continually aware of the presence of an infallible judge in his soul, determining which of two possible courses of action was the better and which was the worse; and as soon as he did not act rightly, he was at once aware of it.

So he lived, not knowing and not seeing any chance of knowing what he was and what he was living for, and harassed at this lack of knowledge to such a point that he was afraid of suicide, and yet firmly laying down his own individual definite path in life.

## XI.

The day on which Sergei Ivanovich came to Pokrovskoe was one of Levin's most painful days.

It was the very busiest working time, when all the peasantry show an extraordinary intensity of self-sacrifice in labor, such as is not to be found in any other conditions of life and would be highly esteemed if the men who showed these qualities themselves thought highly of them, and if it were not repeated every year, and if the results of this intense labor were not so simple.

To reap and bind and cart off the rye and oats; to mow the meadows, turn over the fallows, thresh the seed and sow the winter corn all this seems so simple and ordinary; but to succeed in getting through it all everyone in the village, from the old man to the young child, must toil incessantly for three or four weeks, three times as hard as usual, living on kvass, onions, and black bread, threshing and carrying the sheaves at night, and not giving more than two or three hours in the twenty-four to sleep. And every year this is done all over Russia.

Having lived the greater part of his life in the country and in the closest relations with the peasants, Levin always felt in this busy time that he was infected by this general quickening of energy in the people.

In the early morning he rode over to the first sowing of the rye, and to the oats, which were being carried to the stacks, and, returning home at the time his wife and sister-in-law were getting up, he drank coffee with them and walked to the grange, where a new threshing machine was to be set working to get ready the seed.

All this day Levin, while talking with the bailiff and the peasants, and, at home, with his wife, and Dolly, and her children, and his father-in-law, kept on thinking of one thing, and one thing only that which at this time engrossed him most outside of the cares of his estate; and in everything he sought a relation to his questioning: "What am I, then? And where am I? And why am I here?"

He was standing in the cool threshing barn, still fragrant with the leaves of the hazel branches interlaced on the freshly peeled aspen beams of the new thatch roof. He gazed through the open door in which the dry bitter chaff dust swirled and played; at the grass of the threshing floor in the sunlight and the fresh straw that had been brought in from the barn; then at the speckly-headed, white-breasted swallows that flew chirping in under the roof and, fluttering their wings, settled in the crevices of the doorway; then at the peasants bustling in the dark, dusty barn, and he thought strange thoughts.

"Why is all this being done?" he thought. "Why am I standing here, making them work? What are they all so busy for, trying to show their zeal before me? For what reason is old Matriona, my old friend, toiling? (I doctored her, when the beam fell on her in the fire)," he thought, looking at a thin old woman who was raking up the grain, moving painfully with her bare, sun-blackened feet over the uneven, rough floor. "Then she recovered, but today

## Anna Karenina

or tomorrow or in ten years she won't; they'll bury her, and nothing will be left either of her or of that dashing woman in the red skirt, who with that skillful, gentle action is shaking the ears out of their husks. They'll bury her, as well as this piebald gelding, and very soon too," he thought, gazing at the heavily moving, panting horse that kept walking up the treadwheel that turned under him. "And they will bury her, and Fiodor the thresher with his curly beard full of chaff, and his shirt torn on his white shoulders they will bury him. He's untying the sheaves, and giving orders, and shouting to the women, and quickly setting straight the strap on the moving wheel. And what's more, it's not them alone they'll bury me too, and nothing will be left. What for? "

He thought this, and at the same time looked at his watch to reckon how much they threshed in an hour. He wanted to know this so as to judge by it the task to set for the day.

"It'll soon be one, and they're only beginning the third sheaf," thought Levin. He went up to the man who was feeding the machine, and shouting over the roar of the machine, he told him to feed it more slowly.

"You put in too much at a time, Fiodor. Do you see it gets choked, that's why it isn't getting on. Do it evenly."

Fiodor, black with the dust that clung to his moist face, shouted something in response, but still went on doing as Levin did not want him to.

Levin, going up to the machine, moved Fiodor aside, and began feeding the machine himself.

Working on till the peasants' dinner hour, which was not long in coming, he went out of the barn with Fiodor and fell into talk with him, stopping beside a neat yellow sheaf of rye laid on the threshing floor for seed.

Fiodor came from a village at some distance from the one in which Levin had once allotted land to his co-operative association. Now it had been let to the innkeeper.

Levin talked to Fiodor about this land and asked whether Platon, a well-to-do peasant of good character belonging to the same village, would not take the land for the coming year.

"It's a high rent; it wouldn't pay Platon, Konstantin Dmitrich," answered the peasant, picking the ears off his sweat-drenched shirt.

"But how does Kirillov make it pay?"

"Mitukha!" (So the peasant called the innkeeper in a tone of contempt.) "You may be sure he'll make it pay, Konstantin Dmitrich! He'll get his share, however he has to squeeze to get it! He's no mercy on a peasant. But Uncle Fokanich" (so he called the old peasant Platon) "do you suppose he'd flay the skin off a man? Where there's debt, he'll let anyone off. And he'll suffer losses. He's human, too."

"But why will he let anyone off?"

"Oh, well, of course, folks are different. One man lives for his own wants and nothing else, like Mitukha, thinking only of filling his belly; but Fokanich is a righteous old man. He lives for his soul. He does not forget God."

"How does he think of God? How does he live for his soul?" Levin almost shouted.

"Why, to be sure, in truth, in God's way. Folks are different. Take you, now you wouldn't wrong a man..."

"Yes, yes good-by!" said Levin, breathless with excitement, and turning round he took his stick and walked quickly away toward home. At the peasant's words that Fokanich lived for his soul, in truth, in God's way,

undefined but significant ideas seemed to burst forth, as though they had been locked up, and, all of them striving toward one goal, they thronged whirling through his head, blinding him with their light.

## XII.

Levin strode along the highroad, absorbed not so much in his thoughts (he could not yet disentangle them), as in his spiritual condition, unlike anything he had experienced before.

The words uttered by the peasant had acted on his soul like an electric shock, suddenly transforming and combining into a single whole the whole swarm of disjointed, impotent, separate thoughts that incessantly occupied his mind. These thoughts had unconsciously been in his mind even when he was talking about the land.

He was aware of something new in his soul, and joyfully tested this new thing, not yet knowing what it was.

"Not living for his own wants, but for God? For what God? And could one say anything more senseless than what he said? He said that one must not live for one's own wants, that is, that one must not live for what we understand, what we are attracted by, what we desire but must live for something incomprehensible, for God, whom no one can understand nor even define. What of it? Didn't I understand those senseless words of Fiodor's? And understanding them, did I doubt their truth? Did I think them stupid, obscure, inexact?"

"No, I understood him, and exactly as he understands the words. I understood them more fully and clearly than I understand anything in life, and never in my life have I doubted nor can I doubt about them. And not only I, but everyone, the whole world, understands nothing fully but this, and about this only they have no doubt, and are always agreed.

"Fiodor says that Kirillov, the innkeeper, lives for his belly. That's comprehensible and rational. All of us as rational beings can't do anything else but live for our belly. And all of a sudden the same Fiodor says that one mustn't live for one's belly, but must live for truth, for God, and, at a hint, I understand him! And I and millions of men, men who lived ages ago and men living now peasants, the poor in spirit and the sages, who have thought and written about it, in their obscure words saying the same thing we are all agreed about this one thing: what we must live for and what is good. I and all men have only one firm, incontestable, clear knowledge, and that knowledge cannot be explained by reason it is outside it, and has no causes, and can have no effects.

"If goodness has causes, it is not goodness; if it has effects a reward it is not goodness either. So goodness is outside the chain of cause and effect.

"And yet I know it, and we all know it.

"And I sought miracles, complained that I did not see a miracle which would convince me. And here is a miracle, the sole miracle possible, continually existing, surrounding me on all sides, and I never noticed it!

"What could be a greater miracle than that?"

"Can I have found the solution of it all? Can my sufferings be over?" thought Levin, striding along the dusty road, not noticing the heat nor his weariness, and experiencing a sense of relief from prolonged suffering. This feeling was so delicious that it seemed to him incredible. He was breathless with emotion and incapable of going farther; he turned off the road into the forest and lay down in the shade of an aspen on the uncut grass. He took his hat off his hot head and lay propped on his elbow in the lush, feathery, woodland grass.

"Yes, I must make it clear to myself and understand," he thought, looking intently at the untrampled grass before him, and following the movements of a green beetle, advancing along a blade of couch grass and lifting up in its

progress a leaf of goatweed. "Everything from beginning?" he asked himself, bending aside the leaf of goatweed out of the beetle's way and twisting another blade of grass above for the beetle to cross over to. "What is it makes me glad? What have I discovered?"

"Of old I used to say that in my body, that in the body of this grass and of this beetle (there, she didn't care for the grass, she's opened her wings and flown away), there was going on a transformation of matter in accordance with physical, chemical, and physiological laws. And in all of us, as well as in the aspens and clouds and nebulae, there was a process of evolution. Evolution from what? Into what? Eternal evolution and struggle... As though there could be any sort of tendency and struggle in the eternal! And I was astonished that in spite of utmost effort of thought in this direction I could not discover the meaning of life, the meaning of my impulses and yearnings. And the meaning of my impulses is so clear within me, that I was living according to them all the time, and I was astonished and rejoiced, when the peasant expressed it to me: to live for God, for my soul.

"I have discovered nothing. I have only found out what I knew. I understand the force that in the past gave me life, and now too gives me life. I have been set free from falsity, I have found the Master."

And he briefly went through, mentally, the whole course of his ideas during the last two years, the beginning of which was the clear confronting of death at the sight of his dear brother hopelessly ill.

Then, for the first time, grasping that for every man, and himself too, there was nothing in store but suffering, death and eternal oblivion, he had made up his mind that life was impossible like that, and that he must either interpret life so that it would not present itself to him as the evil jest of some devil, or else shoot himself.

But he had not done either, but had gone on living, thinking, and feeling, and had even at that very time married, and had had many joys, and had been happy, when he was not thinking of the meaning of his life.

What did this mean? It meant that he had been living rightly, but thinking wrongly.

He had lived (without being aware of it) on those spiritual truths that he had sucked in with his mother's milk, but he had thought, not merely without recognition of these truths, but studiously ignoring them.

Now it was clear to him that he could live only by virtue of the beliefs in which he had been brought up.

"What should I have been, and how should I have spent my life, if I had not had these beliefs, if I had not known that I must live for God and not for my own wants? I should have robbed and lied and killed. Nothing of what makes the chief happiness of my life would have existed for me." And with the utmost stretch of imagination he could not conceive the brutal creature he would have been himself, if he had not known what he was living for.

"I looked for an answer to my question. And thought could not give an answer to my question it is incommensurable with my question. The answer has been given me by life itself, in my knowledge of what is right and what is wrong. And that knowledge I did not arrive at in any way, it was given to me as to all men, given, because I could not have got it from anywhere.

"Where could I have got it? Could I have arrived through reason at knowing that I must love my neighbor and not oppress him? I was told that in my childhood, and I believed it gladly, for they told me what was already in my soul. But who discovered it? Not reason. Reason discovered the struggle for existence, and the law that requires us to oppress all who hinder the satisfaction of our desires. That is the deduction of reason. But loving one's neighbor reason could never discover, because that is unreasonable.

"Yes, pride," he said to himself, turning over on his abdomen and beginning to tie a noose of blades of grass, trying not to break them.

"And not merely pride of intellect, but dullness of intellect. And most of all, its knavishness; yes, the knavishness of intellect. The cheating knavishness of intellect that's it," he repeated.

### XIII.

And Levin remembered a scene he had lately witnessed between Dolly and her children. The children, left to themselves, had begun cooking raspberries over the candles and squirting milk into each other's mouths with a syringe. Their mother, catching them at these pranks, began reminding them in Levin's presence of the trouble their mischief gave to the grown-up people, and that this trouble was all for their sake, and that if they smashed the cups they would have nothing to drink their tea out of, and that if they wasted the milk, they would have nothing to eat, and die of hunger.

And Levin had been struck by the passive, weary incredulity with which the children heard what their mother said to them. They were simply annoyed that their amusing play had been interrupted, and did not believe a word of what their mother was saying. They could not believe it indeed, for they could not take in the immensity of all they habitually enjoyed, and so could not conceive that what they were destroying was the very thing they lived by.

"That all comes of itself," they thought, "and there's nothing interesting or important about it, because it has always been so, and always will be so. And it's all always the same. We've no need to think about that, it's all ready; but we want to invent something of our own, and new. So we thought of putting raspberries in a cup, and cooking them over a candle, and squirting milk straight into each other's mouths. That's fun, and something new, and not a bit worse than drinking out of cups."

"Isn't it just the same that we do, that I did, searching by the aid of reason for the significance of the forces of nature and the meaning of the life of man?" he thought.

"And don't all the theories of philosophy do the same, trying by the path of thought, which is strange and not natural to man, to bring him to a knowledge of what he has known long ago, and knows so certainly that he could not live at all without it? Isn't it distinctly to be seen in the development of each philosopher's theory, that he knows what is the chief significance of life beforehand, just as positively as the peasant Fiodor, and not a bit more clearly than he, and is simply trying by a dubious intellectual path to come back to what everyone knows?"

"Now then, leave the children to themselves to get things alone and make their crockery, get the milk from the cows, and so on. Would they be naughty then? Why, they'd die of hunger! Well, then, leave us with our passions and thoughts, without any idea of the one God, of the Creator, or without any idea of what is right, without any idea of moral evil.

"Just try and build up anything without those ideas!

"We destroy them only because we're spiritually provided for. Exactly like the children!

"Whence have I that joyful knowledge, shared with the peasant, that alone gives peace to my soul? Whence did I get it?"

"Brought up with an idea of God, a Christian, my whole life filled with the spiritual blessings Christianity has given me, full of them, and living on these blessings, like the children I did not understand them, and destroy that is, try to destroy what I live by. And as soon as an important moment of life comes, like the children when they are cold and hungry, I turn to Him, and even less than the children when their mother's scold them for their childish mischief, do I feel that my childish efforts at wanton madness are reckoned against me.

"Yes, what I know, I know not by reason but it has been given to me, revealed to me, and I know it with my heart, by faith in the chief thing taught by the Church.

"The Church? The Church!" Levin repeated to himself. He turned over on the other side, and, leaning on his elbow, fell to gazing into the distance at a herd of cattle crossing over to the river.

"But can I believe in all the Church teaches?" he thought, putting himself to the test, and thinking of everything that could destroy his present peace of mind. Intentionally he recalled all those doctrines of the Church which had always seemed most strange and had always been a stumbling block to him. The Creation? But how did I explain existence? By existence? By nothing? The devil and sin. But how do I explain evil?... The Redeemer?...

"But I know nothing, nothing, and I can know nothing but what has been told to me and all men."

And it seemed to him now that there was not a single article of faith of the Church which could destroy the chief thing faith in God, in goodness, as the one goal of man's destiny.

Under every article of faith of the Church could be put the faith in the service of truth instead of one's wants. And each doctrine did not simply leave that faith unshaken each doctrine seemed essential to complete that great miracle, continually manifest upon earth, that made it possible for each man, and millions of different sorts of men wise men and imbeciles, old men and children all men, peasants, Lvov, Kitty, beggars and kings, to understand perfectly the same one thing, and to build up thereby that life of the soul which alone is worth living, and which alone is precious to us.

Lying on his back, he gazed up now into the high, cloudless sky. "Do I not know that that is infinite space, and that it is not a round arch? But, however I screw up my eyes and strain my sight, I cannot see it as not round and not bounded, and, in spite of my knowing about infinite space, I am incontestably right when I see a solid blue dome, and more right than when I strain my eyes to see beyond it."

Levin ceased thinking, and only, as it were, listened to mysterious voices that seemed talking joyfully and earnestly with each other.

"Can this be faith?" he thought, afraid to believe in his happiness. "My God, I thank Thee!" he said, gulping down his sobs, and with both hands brushing away the tears that filled his eyes.

#### XIV.

Levin looked before him and saw a herd of cattle, then he caught sight of his wagonette with Black in the shafts, and the coachman, who, driving up to the herd, said something to the herdsman. Then he heard the rattle of the wheels and the snort of the sleek horse close by him. But he was so buried in his thoughts that he did not even wonder why the coachman had come for him.

He only thought of that when the coachman had driven quite up to him and shouted to him.

"The mistress sent me. Your brother has come, and some gentleman with him."

Levin got into the wagonette and took the reins.

As though just roused out of sleep, for a long while Levin could not collect his faculties. He stared at the sleek horse flecked with lather between his haunches and on his neck, where the harness rubbed, stared at Ivan the coachman, sitting beside him, and remembered that he was expecting his brother, thought that his wife was most

likely uneasy at his long absence, and tried to guess who was the visitor who had come with his brother. And his brother and his wife and the unknown guest seemed to him now quite different from before. He fancied that now his relations with all men would be different.

"With my brother there will be none of that aloofness there always used to be between us, there will be no disputes; with Kitty there shall never be quarrels; with the visitor, whoever he may be, I will be friendly and amiable; and with the servants, with Ivan it will all be different."

Pulling the stiff rein and holding in the good horse that snorted with impatience and begged to be let go, Levin looked round at Ivan sitting beside him, not knowing what to do with his unoccupied hands, continually pressing down his shirt as it puffed out, and he tried to find something to start a conversation about with him. He would have said that Ivan had pulled the saddle girth up too high, but that was like blame, and he longed for friendly, warm talk. Nothing else occurred to him.

"Your Honor must keep to the right and mind that stump," said the coachman, pulling the rein Levin held.

"Please don't touch anything and don't teach me!" said Levin, angered by this interference. Now, as always, interference made him angry, and he felt sorrowfully at once how mistaken had been his supposition that his spiritual condition could immediately change him in contact with reality.

He was not a quarter of a versta from home when he saw Grisha and Tania running to meet him.

"Uncle Kostia! Mamma's coming, and grandfather, and Sergei Ivanovich, and someone else," they said, clambering up into the wagonette.

"Who is he?"

"An awfully terrible person! And he does like this with his arms," said Tania, getting up in the wagonette and mimicking Katavassov.

"Old or young?" asked Levin, laughing, reminded of someone, he did not know whom, by Tania's performance.

"Oh, I hope it's not a tiresome person!" thought Levin.

As soon as he turned, at a bend in the road, and saw the party coming, Levin recognized Katavassov in a straw hat, walking along swinging his arms just as Tania had shown him.

Katavassov was very fond of discussing metaphysics, having derived his notions from natural science writers who had never studied metaphysics, and in Moscow Levin had had many arguments with him of late.

And one of these arguments, in which Katavassov had obviously considered that he came off victorious, was the first thing Levin thought of as he recognized him.

"No, whatever I do, I won't argue and give utterance to my ideas lightly," he thought.

Getting out of the wagonette and greeting his brother and Katavassov, Levin asked about his wife.

"She has taken Mitia to Kolok" (a copse near the house). "She meant to have him out there because it's so hot indoors," said Dolly. Levin had always advised his wife not to take the baby to the wood, thinking it unsafe, and he was not pleased to hear this.



## Anna Karenina

"She rushes about from place to place with him," said the Prince, smiling. "I advised her to try putting him in the icehouse."

"She meant to come to the apiary. She thought you would be there. We are going there," said Dolly.

"Well, and what are you doing?" said Sergei Ivanovich, falling back from the rest and walking beside him.

"Oh, nothing special. Busy as usual with the land," answered Levin. "Well, and what about you? Come for long? We have been expecting you for such a long time."

"Only for a fortnight. I've a great deal to do in Moscow."

At these words the brothers' eyes met, and Levin, in spite of the desire he always had, stronger than ever just now, to be on affectionate and still more open terms with his brother, felt an awkwardness in looking at him. He dropped his eyes and did not know what to say.

Casting over the subjects of conversation that would be pleasant to Sergei Ivanovich, and would keep him off the subject of the Servian war and the Slavonic question, at which he had hinted by alluding to what he had to do in Moscow, Levin began to talk of Sergei Ivanovich's book.

"Well, have there been any reviews of your book?" he asked.

Sergei Ivanovich smiled at the intentional character of the question.

"No one is interested in that now, and I least of all," he said. "Just look, Darya Alexandrovna, we shall have a shower," he added, pointing with a sunshade at the white rain clouds that showed above the aspen treetops.

And these words were enough to reestablish again between the brothers that tone hardly hostile, but chilly which Levin had been so longing to avoid.

Levin went up to Katavassov.

"It was jolly of you to make up your mind to come," he said to him.

"I've been intending to a long while. Now we shall have some discussion we'll see to that. Have you been reading Spencer?"

"No, I've not finished reading him," said Levin. "But I don't need him now."

"How's that? That's interesting. Why so?"

"I mean that I'm fully convinced that the solution of the problems that interest me I shall never find in him and his like. Now..."

But Katavassov's serene and good-humored expression suddenly struck him, and he felt such tenderness for his own happy mood, which he was unmistakably disturbing by this conversation, that he remembered his resolution and stopped short.

"But we'll talk later on," he added. "If we're going to the apiary, it's this way, along this little path," he said, addressing them all.

## Anna Karenina

Going along the narrow path to a little uncut meadow covered on one side with thick clumps of brilliant heartsease, among which stood up here and there tall, dark green tufts of hellebore, Levin settled his guests in the dense, cool shade of the young aspens on a bench and some stumps purposely put there for visitors to the apiary who might be afraid of the bees, and he went off himself to the hut to get bread, cucumbers, and fresh honey, to regale them with.

Trying to make his movements as deliberate as possible, and listening to the bees that buzzed more and more frequently past him, he walked along the little path to the hut. In the very entry one bee hummed angrily, caught in his beard, but he carefully extricated it. Going into the shady outer room, he took down from the wall his veil, that hung on a peg, and putting it on, and thrusting his hands into his pockets, he went into the fenced-in bee garden, where there stood in the midst of a closely mown space in regular rows, fastened with bast on posts, all the hives he knew so well, the old stocks, each with its own history, and along the fences the younger swarms hived that year. In front of the openings of the hives, it made his eyes giddy to watch the bees and drones whirling round and round about the same spot, while among them the worker bees flew in and out with spoils, or in search of them, always in the same direction, into the wood, to the flowering linden trees, and back to the hives.

His ears were filled with the incessant hum in various notes now the busy hum of the worker bee flying quickly off, then the blaring of the lazy drone, and the excited buzz of the bees on guard, protecting their property from the enemy and preparing to sting. On the farther side of the fence the old beekeeper was shaving a hoop for a tub, and he did not see Levin. Levin stood still in the midst of the apiary and did not call him.

He was glad of a chance to be alone to recover from the influence of ordinary actual life, which had already depressed his happy mood.

He thought that he had already had time to lose his temper with Ivan, to show coolness to his brother, and to talk flippantly with Katavassov.

"Can it have been only a momentary mood, and will it pass and leave no trace?" he thought.

But the same instant, going back to his mood, he felt with delight that something new and important had happened to him. Real life had only for a time overcast the spiritual peace he had found, but it was still untouched within him.

Just as the bees, whirling round him, now menacing him and distracting his attention, prevented him from enjoying complete physical peace, forced him to restrain his movements to avoid them, so had the petty cares that had swarmed about him from the moment he got into the trap, restricted his spiritual freedom; but that lasted only so long as he was among them. Just as his bodily strength was still unaffected, in spite of the bees, so too was the spiritual strength that he had just become aware of.

## XV.

"Do you know, Kostia, with whom Sergei Ivanovich traveled on his way here?" said Dolly, doling out cucumbers and honey to the children. "With Vronsky! He's going to Servia."

"And not alone; he's taking a squadron out with him at his own expense," said Katavassov.

"That's the right thing for him," said Levin. "Are volunteers still going out then?" he added, glancing at Sergei Ivanovich.

Sergei Ivanovich did not answer. He was carefully, with a blunt knife, getting a live bee covered with sticky

honey out of a cup full of white honeycomb.

"I should think so! You should have seen what was going on at the station yesterday!" said Katavassov, biting with a succulent sound into a cucumber.

"Well, what is one to make of it? In Christ's name, do explain to me, Sergei Ivanovich, where are all those volunteers going, whom are they fighting with," asked the old Prince, unmistakably taking up a conversation that had sprung up in Levin's absence.

"With the Turks," Sergei Ivanovich answered, smiling serenely, as he extricated the bee, dark with honey and helplessly kicking, and transferred it with the knife to a stout aspen leaf.

"But who has declared war on the Turks? Ivan Ivanovich Ragozov and Countess Lidia Ivanovna, assisted by Madame Stahl?"

"No one has declared war, but people sympathize with their neighbors' suffering, and are eager to help them," said Sergei Ivanovich.

"But the Prince is not speaking of help," said Levin, coming to the assistance of his father-in-law, "but of war. The Prince says that private persons cannot take part in war without the permission of the government."

"Kostia, mind, that's a bee! Really, they'll sting us!" said Dolly, waving away a wasp.

"But that's not a bee it's a wasp," said Levin.

"Well now, well what's your own theory?" Katavassov said to Levin with a smile, distinctly challenging him to a discussion. "Why haven't private persons the right to do so?"

"Oh, my theory's this: war is on one side such a beastly, cruel and awful thing, that no one man, not to speak of a Christian, can individually take upon himself the responsibility of beginning wars; that can only be done by a government, which is called upon to do this, and is driven inevitably into war. On the other hand, both political science and common sense teach us that in matters of state, and especially in the matter of war, private citizens must forego their personal individual will."

Sergei Ivanovich and Katavassov had their replies ready, and both began speaking at the same time.

"But the point is, my dear fellow, that there may be cases when the government does not carry out the will of the citizens, and then the public asserts its will," said Katavassov.

But evidently Sergei Ivanovich did not approve of this answer. His brows contracted at Katavassov's words, and he said something else.

"You don't put the matter in its true light. There is no question here of a declaration of war, but simply the expression of a human Christian feeling. Our brothers, one with us in religion and in race, are being massacred. Even supposing they were not our brothers, nor fellow Christians, but simply children, women, old people, feeling is aroused and Russians go eagerly to help in stopping these atrocities. Fancy, if you were going along the street and saw drunken men beating a woman or a child I imagine you would not stop to inquire whether war had been declared on the men, but would throw yourself on them, and protect the victim."

"But I should not kill them," said Levin.

"Yes, you would kill them."

"I don't know. If I saw that, I might give way to my impulse of the moment, but I can't say beforehand. And such a momentary impulse there is not, and there cannot be, in the case of the oppression of the Slavonic peoples."

"Possibly for you there is not; but for others there is," said Sergei Ivanovich, frowning with displeasure. "There are traditions still extant among our people about orthodox men, suffering under the yoke of the 'impious Hagarites.' The people have heard of the sufferings of their brethren, and have spoken."

"Perhaps so," said Levin evasively; "but I don't see it. I'm one of the people myself, and I don't feel it."

"Here am I, too," said the old Prince. "I've been staying abroad and reading the papers, and I must own, up to the time of the Bulgarian atrocities, I couldn't make out why it was all the Russians were all of a sudden so fond of their Slavonic brethren, while I didn't feel the slightest affection for them. I was very much upset, thought I was a monster, or that it was the influence of Carlsbad on me. But since I have been here, my mind's been set at rest. I see that there are people besides me who're only interested in Russia, and not in their Slavonic brethren. Here's Konstantin, too."

"Personal opinions mean nothing in such a case," said Sergei Ivanovich; "it's not a matter of personal opinions when all Russia the whole people has expressed its will."

"But excuse me, I don't see that. The people don't know anything about it, if you come to that," said the old Prince.

"Oh, papa!... How can you say that? And last Sunday in church?..." said Dolly, listening to the conversation. "Please give me a towel," she said to the old man, who was looking at the children with a smile. "Why, it's not possible that all..."

"But what was it in church on Sunday? The priest had been told to read that. He read it. They didn't understand a word of it, sighed as they do at every sermon," pursued the old Prince. "Then they were told that there was to be a collection for a pious object in church; well, they pulled out their coppers and gave them, but what for they couldn't say."

"The people cannot help knowing; the sense of their own destinies is always in the people, and at such moments as the present that sense finds utterance," said Sergei Ivanovich with conviction, glancing at the old beekeeper.

The handsome old man, with black grizzled beard and thick silvery hair, stood motionless, holding a cup of honey, looking down from the height of his tall figure with friendly serenity at the gentlefolk, obviously understanding nothing of their conversation and not caring to understand it.

"That's so, no doubt," he said, with a significant shake of his head at Sergei Ivanovich's words.

"Here, then, ask him. He knows nothing about it and thinks nothing," said Levin. "Have you heard about the war, Mikhailich?" he said, turning to him. "What they read in the church? What do you think about it? Ought we to fight for the Christians?"

"What should we think? Alexander Nikolaevich our Emperor has thought for us; he thinks for us indeed in all things. It's clearer for him to see. Shall I bring a bit more bread? Give the little lad some more?" he said, addressing Darya Alexandrovna and pointing to Grisha, who was finishing his crust.

"I don't need to ask," said Sergei Ivanovich, "we have seen and are seeing hundreds and hundreds of people who give up everything to serve a just cause, come from every part of Russia, and directly and clearly express their thought and aim. They bring their coppers, or go themselves and say directly what's what. What does it mean?"

"It means, to my thinking," said Levin, who was beginning to get warm, "that among eighty millions of people there can always be found not hundreds, as now, but tens of thousands of people who have lost caste, ne'er-do-wells, who are always ready to go anywhere to Pugachiov's bands, to Khiva, to Servia..."

"I tell you that it's not a case of hundreds or of ne'er-do-wells, but the best representatives of the people!" said Sergei Ivanovich, with as much irritation as if he were defending the last penny of his fortune. "And what of the subscriptions? In this case it is a whole people directly expressing their will."

"That word 'people' is so vague," said Levin. "Parish clerks, schoolmasters, and one in a thousand of the peasants, maybe, know what it's all about. The rest of the eighty millions, like Mikhailich, far from expressing their will, haven't the faintest idea what there is for them to express their will about. What right have we to say that this is the people's will?"

## XVI.

Sergei Ivanovich, being practiced in dialectics, did not reply, but at once turned the conversation to another aspect of the subject.

"Oh, if you want to learn the spirit of the people by arithmetical computation, of course it's very difficult to arrive at it. And voting has not been introduced among us, and cannot be introduced, for it does not express the will of the people; but there are other ways of reaching that. It is felt in the air, it is felt by the heart. I won't speak of those deep currents which are astir in the still ocean of the people, and which are evident to every unprejudiced man let us look at society in the narrow sense. All the most diverse sections of the intelligent people, hostile before, are merged in one. Every division is at an end, all the public organs say the same thing over and over again, all feel the mighty torrent that has overtaken them and is carrying them in one direction."

"Yes, all the newspapers do say the same thing," said the Prince. "That's true. But so it is the same thing that all the frogs croak before storm. One can hear nothing for them."

"Frogs or no frogs, I'm not the publisher of newspapers and I don't want to defend them; but I am speaking of the unanimity in the intellectual world," said Sergei Ivanovich, addressing his brother. Levin would have answered, but the old Prince interrupted him.

"Well, about that unanimity, that's another thing, one may say," said the Prince. "There's my son-in-law, Stepan Arkadyevich you know him. He's got a place now on the committee of a commission and something or other, I don't remember. Only there's nothing to do in it why, Dolly, it's no secret and a salary of eight thousand! You try asking him whether his post is of any use he'll prove to you that it's most necessary. And he's a truthful man, too, but one can't help but believe in the utility of eight thousand roubles."

"Yes he asked me to give a message to Darya Alexandrovna about the post," said Sergei Ivanovich reluctantly, feeling the Prince's remark to be ill-timed.

"So it is with the unanimity of the press. That's been explained to me: as soon as there's war their incomes are doubled. How can they help believing in the destinies of the people and the Slavonic races and all that sort of thing?..."

"I don't care for many of the papers, but that's unjust," said Sergei Ivanovich.

"I would only make one condition," pursued the old Prince. "Alphonse Karr said a capital thing before the war with Prussia: 'You consider war to be inevitable? Very good. Let everyone who advocates war be enrolled in a special regiment of advance guards, for the vanguard of every assault, of every attack, to lead them all!'"

"A nice lot the editors would make!" said Katavassov, with a loud roar, as he pictured the editors he knew in this picked legion.

"But they'd run," said Dolly. "They'd only be in the way."

"Oh, if they ran away, then we'd have grapeshot or Cossacks with whips behind them," said the Prince.

"But that's a joke, and a poor one too, if you'll excuse me saying so, Prince," said Sergei Ivanovich.

"I don't see that it was a joke, that... Levin was beginning, but Sergei Ivanovich interrupted him.

"Every member of society is called upon to do his own special work," said he. "And men of thought are doing their work when they express public opinion. And the singlehearted and full expression of public opinion is the service of the press, and a phenomenon to rejoice us at the same time. Twenty years ago we should have been silent, but now we have heard the voice of the Russian people, which is ready to rise as one man and ready to sacrifice itself for its oppressed brethren; that is a great step and a proof of strength."

"But it's not only making a sacrifice, but killing Turks," said Levin timidly. "The people make sacrifices and are ready to make sacrifices for their soul, but not for murder," he added, instinctively connecting the conversation with the ideas that had been absorbing his mind.

"For their soul? That, you understand, is a most puzzling expression for a student of the natural sciences. What sort of thing is the soul?" said Katavassov, smiling.

"Oh, you know!"

"No, by God, I haven't the faintest idea!" said Katavassov with a loud roar of laughter.

"I bring not peace, but a sword,' says Christ," Sergei Ivanovich rejoined for his part, quoting as simply as though it were the easiest thing to understand the very passage that had always puzzled Levin most.

"That's so, no doubt," the old man repeated again. He was standing near them and responded to a chance glance turned in his direction.

"Ah, my dear fellow, you're defeated, utterly defeated!" cried Katavassov good-humoredly.

Levin reddened with vexation, not at being defeated, but at having failed to control himself and being drawn into argument.

"No, I can't argue with them," he thought; "they wear impenetrable armor, while I'm naked."

He saw that it was impossible to convince his brother and Katavassov, and he saw even less possibility of himself agreeing with them. What they advocated was the very pride of intellect that had almost been his ruin. He could not admit that some dozens of men, among them his brother, had the right, on the ground of what they were told by some hundreds of glib volunteers swarming to the capital, to say that they and the newspapers were expressing

the will and feeling of the people, and a feeling which was expressed in vengeance and murder. He could not admit this, because he neither saw the expression of such feelings in the people among whom he was living, nor found them in himself (and he could not but consider himself one of the persons making up the Russian people), and most of all because he, like the people, did not know and could not know what is for the general good, though he knew beyond a doubt that this general good could be attained only by the strict observance of that law of right and wrong which has been revealed to every man, and therefore he could not wish for war or advocate war for any general objects whatever. He said as Mikhailich did and the people, who had expressed their feeling in the traditional invitations to the Variaghi: "Be princes and rule over us. Gladly we promise complete submission. All the labor, all humiliations, all sacrifices we take upon ourselves; but we will not judge and decide." And now, according to Sergei Ivanovich's account, the people had foregone this privilege they had bought at such a costly price.

He wanted to say, too, that if public opinion were an infallible guide, then why were not revolutions and the commune as lawful as the movement in favor of the Slavonic peoples? But these were merely thoughts that could settle nothing. One thing could be seen beyond doubt that at the actual moment the discussion was irritating Sergei Ivanovich, and so it was wrong to continue it. And Levin ceased speaking and then called the attention of his guests to the fact that the storm clouds were gathering, and that they had better be going home before it rained.

## XVII.

The old Prince and Sergei Ivanovich got into the wagonette and drove off; the rest of the party hastened homeward on foot.

But the storm clouds, turning white and then black, moved down so quickly that they had to quicken their pace to get home before the rain. The foremost clouds, lowering and black as soot-laden smoke, rushed with extraordinary swiftness over the sky. They were still two hundred paces from home and a gust of wind had already blown up, and every second the downpour might be looked for.

The children ran ahead with frightened and gleeful shrieks. Darya Alexandrovna, struggling painfully with her skirts clinging round her legs, was not walking, but running, her eyes fixed on the children. The men of the party, holding their hats on, strode with long steps beside her. They were just at the steps when a big drop fell splashing on the edge of the iron guttering. The children and their elders after them ran into the shelter of the house, talking merrily.

"Katerina Alexandrovna?" Levin asked of Agathya Mikhailovna, who met them with shawls and plaids in the hall.

"We thought she was with you," she said.

"And Mitia?"

"In Kolok, he must be, and the nurse with him."

Levin snatched up the plaids and ran toward the copse.

In that brief interval of time the storm clouds had moved on, covering the sun so completely that it was dark as an eclipse. Stubbornly, as though insisting on its rights, the wind stopped Levin, and tearing the leaves and flowers off the linden trees and stripping the white birch branches into strange unseemly nakedness, it twisted everything to one side acacias, flowers, burdocks, long grass, and tall treetops. The peasant girls working in the garden ran shrieking into shelter in the servants' quarters. The streaming rain had already flung its white veil over all the

distant forest and half the fields close by, and was rapidly swooping down upon the copse. The wet of the rain spurting up in tiny drops could be smelled in the air.

Holding his head bent down before him, and struggling with the wind that strove to tear the wraps away from him, Levin was moving up to the copse and had just caught sight of something white behind the oak tree, when there was a sudden flash, the whole earth seemed on fire, and the vault of heaven seemed crashing overhead. Opening his blinded eyes, Levin gazed through the thick veil of rain that separated him now from the copse, and to his horror the first thing he saw was the green crest of the familiar oak tree in the middle of the copse uncannily changing its position. "Can it have been struck?" Levin hardly had time to think when, moving more and more rapidly, the oak tree vanished behind the other trees, and he heard the crash of the great tree falling upon the others.

The flash of lightning, the crash of thunder, and the instantaneous chill that ran through him were all merged for Levin in one sense of terror.

"My God! My God! Not on them!" he said.

And though he thought at once how senseless was his prayer that they should not have been killed by the oak which had fallen now, he repeated it, knowing that he could do nothing better than utter this senseless prayer.

Running up to the place where they usually went, he did not find them there.

They were at the other end of the copse under an old linden tree; they were calling him. Two figures in dark dresses (they had been light summer dresses when they started out) were standing bending over something. It was Kitty with the nurse. The rain was already ceasing, and it was beginning to get light when Levin reached them. The nurse was not wet on the lower part of her dress, but Kitty was drenched through, and her soaked clothes clung to her. Though the rain was over, they still stood in the same position in which they had been standing when the storm broke. Both stood bending over a perambulator with a green umbrella.

"Alive? Unhurt? Thank God!" he said, splashing with his soaked boots through the standing water and running up to them.

Kitty's rosy wet face was turned toward him, and she smiled timidly under her shapeless sopping hat.

"Aren't you ashamed of yourself? I can't think how you can be so reckless!" he said angrily to his wife.

"It wasn't my fault, really. We were just intending to go, when he made such a to-do that we had to change him. We were just..." Kitty began defending herself.

Mitka was unharmed, dry, and still fast asleep.

"Well, thank God! I don't know what I'm saying!"

They gathered up the baby's wet belongings; the nurse picked up the baby and carried it. Levin walked beside his wife, and, penitent for having been angry, he squeezed her hand when the nurse was not looking.

## XVIII.

During the whole of that day, in the extremely varied conversations in which he took part, only as it were with the top layer of his mind, in spite of the disappointment of not finding the change he expected in himself, Levin had



been all the while joyfully conscious of the fullness of his heart.

After the rain it was too wet to go for a walk; besides, the storm clouds still hung about the horizon, and gathered here and there, black and thundery, on the rim of the sky. The whole party spent the rest of the day in the house.

No more discussions sprang up; on the contrary, after dinner everyone was in the most amiable frame of mind.

At first Katavassov amused the ladies by his original jokes, which always pleased people on their first acquaintance with him. Then Sergei Ivanovich induced him to tell them about the very interesting observations he had made on the difference between the female and male common houseflies in their characters and even physiognomies, and their frame of life. Sergei Ivanovich, too, was in good spirits, and at tea his brother drew him on to explain his views of the future of the Eastern question, and he spoke so simply and so well, that everyone listened eagerly.

Kitty was the only one who did not hear it all she was summoned to give Mitia his bath.

A few minutes after Kitty had left the room she sent for Levin to come to the nursery.

Leaving his tea, and regretfully interrupting the interesting conversation, and at the same time uneasily wondering why he had been sent for, as this only happened on important occasions, Levin went to the nursery.

Although he had been much interested by Sergei Ivanovich's views of the new epoch in history that would be created by the emancipation of forty millions of men of Slavonic race acting with Russia a conception quite new to him and although he was disturbed by uneasy wonder at being sent for by Kitty, as soon as he came out of the drawing room and was alone, his mind reverted at once to the thoughts of the morning. And all the theories of the significance of the Slav element in the history of the world seemed to him so trivial compared with what was passing in his own soul, that he instantly forgot it all and dropped back into the same frame of mind that he had been in that morning.

He did not, as he had done at other times recall the whole train of thought that was not necessary for him. He fell back at once into the feeling which had guided him, which was connected with those thoughts, and he found that feeling in his soul even stronger and more definite than before. He did not, as he had had to do with previous attempts to find comforting arguments, need to revive a whole chain of thought to find the feeling. Now, on the contrary, the feeling of joy and peace was keener than ever, and thought could not keep pace with feeling.

He walked across the terrace and looked at two stars that had come out in the darkening sky, and suddenly he remembered. "Yes, looking at the sky, I thought that the dome that I see is not a deception, and then I did not think over something to the last I shirked facing something," he mused. "But whatever it was, there can be no disproving it! I have but to think, and all will come clear!"

Just as he was going into the nursery he remembered what it was he had shirked facing. It was that if the chief proof of the Divinity was His revelation of what is right, how is it this revelation is confined to the Christian Church alone? What relation to this revelation have the beliefs of the Buddhists, Mohammedans, who preached and did good too?

It seemed to him that he had an answer to this question; but he had not time to formulate it to himself before he went into the nursery.

Kitty was standing, with her sleeves tucked up, over the baby in the bath. Hearing her husband's footstep, she turned toward him, summoning him to her with her smile. With one hand she was supporting the fat baby that lay floating and sprawling on its back, while with the other she squeezed the sponge over him.

## Anna Karenina

"Come, look, look!" she said, when her husband came up to her. "Agathya Mikhailovna's right. He knows us!"

Mitja had on that day given unmistakable, incontestable signs of recognizing all his friends.

As soon as Levin approached the bath, the experiment was tried, and it was completely successful. The cook, sent for with this object, bent over the baby. He frowned and shook his head disapprovingly. Kitty bent down to him, he gave her a beaming smile, propped his little hands on the sponge and chirruped, making such a queer little contented sound with his lips that Kitty and the nurse were not alone in their admiration. Levin, too, was surprised and delighted.

The baby was taken out of the bath, drenched with water, wrapped in towels, dried, and, after a piercing scream, handed to his mother.

"Well, I am glad you are beginning to love him," said Kitty to her husband, when she had settled herself comfortably in her usual place, with the baby at her breast. "I am so glad! It had begun to distress me. You said you had no feeling for him."

"No; did I say that? I only said I was disappointed."

"What! Disappointed in him?"

"Not disappointed in him, but in my own feeling; I had expected more. I had expected a rush of new delightful emotion to come as a surprise. And then instead of that disgust, pity..."

She listened attentively, looking at him over the baby, while she put back on her slender fingers the rings she had taken off while giving Mitja his bath.

"And most of all, at there being far more apprehension and pity than pleasure. Today, after that fright during the storm, I understand how I love him."

Kitty's smile was radiant.

"Were you very much frightened?" she said. "So was I, too, but I feel it more now that it's over. I'm going to look at the oak. How charming Katavassov is! And what a happy day we've had altogether. And you're so amiable with Sergei Ivanovich, when you care to be... Well, go back to them. It's always so hot and steamy here after the bath...."

## XIX.

Going out of the nursery and being again alone, Levin went back at once to the thought, in which there was something not clear.

Instead of going into the drawing room, where he heard voices, he stopped on the terrace, and, leaning his elbows on the parapet, he gazed up at the sky.

It was quite dark now, and in the south, where he was looking, there were no clouds. The storm had drifted on to the opposite side of the sky, and there were flashes of lightning and distant thunder from that quarter. Levin listened to the monotonous drip from the linden trees in the garden, and looked at the triangle of stars he knew so well, and the Milky Way with its branches, that ran through its midst. At each flash of lightning the Milky Way, and even the bright stars, vanished, but as soon as the lightning died away, they reappeared in their places as

though some hand had flung them back with careful aim.

"Well, what is it that perplexes me?" Levin said to himself, feeling beforehand that the solution of his difficulties was ready in his soul, though he did not know it yet.

"Yes, the one unmistakable, incontestable manifestation of the Divinity is the law of right and wrong, which has come into the world by revelation, and which I feel within myself, and in the recognition of which I not so much make myself but, willy-nilly, am made, one with other men in one body of believers, which is called the Church. Well, but the Jews, the Mohammedans, the Confucians, the Buddhists what of them?" he put to himself the question he had feared to face. "Can these hundreds of millions of men be deprived of that highest blessing without which life has no meaning?" He pondered a moment, but immediately corrected himself. "But what am I questioning?" he said to himself. "I am questioning the relation to Divinity of all the different religions of all mankind. I am questioning the universal manifestation of God to all the world with all these nebulae. What am I about? To me individually, to my heart has been revealed a knowledge beyond all doubt, and unattainable by reason, and here I am obstinately trying to express that knowledge in reason and words.

"Don't I know that the stars don't move?" he asked himself, gazing at the bright planet which had shifted its position up to the topmost twig of a birch tree. "But looking at the movements of the stars, I can't picture to myself the rotation of the earth, and I'm right in saying that the stars move.

"And could the astronomers have understood and calculated anything, if they had taken into account all the complicated and varied motions of the earth? All the marvelous conclusions they have reached about the distances, weights, revolutions, and perturbations of the heavenly bodies, are only founded on the apparent motions of the heavenly bodies round the stationary earth, on that very motion I see before me now, which has been so for millions of men during long ages has been and always will be alike, and can always be verified. And just as the conclusions of the astronomers would have been vain and uncertain if not founded on observations of the visible heavens, in relation to a single meridian and a single horizon, so would my conclusions be vain and uncertain if not founded on that conception of right, which has been and will always be alike for all men, which has been revealed to me by Christianity, and which can always be verified in my soul. The question of other religions and their relations to Divinity I have no right to decide, and no possibility of deciding."

"Oh, you haven't gone in then?" he heard Kitty's voice suddenly, as she came by the same way to the drawing room. "What is it? You're not worried about anything?" she said, looking intently at his face in the starlight.

But she could not have seen his face if a flash of lightning had not hidden the stars and revealed it. In that flash she saw his face distinctly, and seeing him calm and happy, she smiled at him.

"She understands," he thought; "she knows what I'm thinking about. Shall I tell her or not? Yes, I'll tell her." But at the moment he was about to speak, she began speaking.

"Kostia! Do something for me," she said; "go into the corner room and see if they've made it all ready for Sergei Ivanovich. I can't very well. See if they've put the new washstand in it."

"Very well, I'll go directly," said Levin, standing up and kissing her.

"No, I'd better not speak of it," he thought, when she had gone in before him. "It is a secret for me alone, of vital importance for me, and not to be put into words.

"This new feeling has not changed me, has not made me happy and enlightened all of a sudden, as I had dreamed, just like the feeling for my child. There was no surprise in this either. Whether it is faith or not I don't know what it is but this feeling has come just as imperceptibly through suffering, and has taken firm root in my soul.

## Anna Karenina

"I shall go on in the same way, losing my temper with Ivan the coachman, falling into angry discussions, expressing my opinions tactlessly; there will be still the same wall between the holy of holies of my soul and other people, even my wife; I shall still go on scolding her for my own fright and being remorseful for it; I shall still be as unable to understand with my reason why I pray, and I shall still go on praying; but my life now, my whole life apart from anything that can happen to me, every minute of it is no more meaningless, as it was before, but it has the positive meaning of goodness, which I have the power to put into it."

THE END